

# अथामरकोशः।

श्रीमदमरसिंहविरचितः।

सुरादाबादवास्तव्यश्रीयुक्तगाँढवंशावतंसभोद्धाः नाथात्मजपण्डितरामस्वरूपकृतभाषाँठीकथा शब्दानुकमाणिकया च समेतः।

TO THE PROPERTY.

स्केमराज श्रीकृष्णहास्यः अध्यक्ष-"श्रीवंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

संवत २००९ शके १८७४.

## सुद्रक और प्रकाशक-

### बेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार ''श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्राख्याध्यक्षके अधीन है।

#### **AMARKOSHA**

**OF** 

#### **AMARSINGH**

WITH AN INDEX AND A COMMENTARY

BY

Ramaswarupa Bholanath Pandit

Printed and Published

BY

#### KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS,

AT HIS

SHRI VENKATESHWAR STEAM PRESS,

BOMBAY.



1952

All rights are reserved.

श्रीः। अकारादिक्रमेण अमरकोश-शब्दानुक्रमणिका ।

शब्द.	দূন্ত.	श्लोक.	शब्द.	वृष्ट.	श्लोक'	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक,
	쬐.		त्रक्षिकूटक	909	३८	अग्न्युत्पात	5 98	90
<b>ચ</b>	990	99	<b>अक्षिगत</b>	१३९	86	ઝન્યુલાલ	े १६२	५८
अंश	9 <b>२</b> ४	૯૬	श्रद्मीव -	86	३१		( 84	92
<b>শ্বা</b> হ্য	98	÷ ₹	l '	( ११७	४१	ग्रप्र	\$ 388 .	40
श्रंगुक	دلع	994	<b>अन्तोट</b>	४८	२९		900	१८३
<b>त्रं</b> शुमती	५७	,994	<b>अ</b> चौहिणी	900	<b>د</b> ۹	श्रप्रज	હષ	* 3
श्रंशुमत्फला	_	993	श्चखण्ड	१४२	ĘŊ	अयजन्मन् अग्रजन्मन्	•	Υ
र्श्यंस	<b>L</b> 0	७८	त्रबात	३५	२७	श्रयतःसर	904	७२
श्रंसत्त	७५	88	श्रखिल	983	ĘŊ		966	२४६
<b>अं</b> हति	९२	३०	श्रग	940	98	श्रयतस् {	940	9
<b>अं</b> हस्	96	२३	श्रगद	995	فهه	<b>अप्रमांस</b>	96	- <del>£</del> ¥
<b>श्र</b> करिया	२१६	39	श्रगदंकार	<b>6</b> 6	•4,७		<b>19</b> 14	8.5
श्रकूपार	३२	4	श्रगम	88	- 49	ऋश्रिय }	383 23	عروة
· <b>अकृ</b> ष्णकर्मन	288	86	श्रगस्त्य	93	२०	श्रद्रीय	989	4,2
(	49	५८	श्चगाध	३४ ४ <b>१</b>	914	अभाप अग्रेदिघिषु		5 <b>3</b>
	996	83	श्चगार	-	6	श्रवेसर श्रवेसर	904	193
श्रद्धा -{	923	6		49	६२	श्रम्य	989	46
ł	932	४५	त्रगुरु 🕽	<b>6</b> 9	978		5 90	,- <b>२३</b>
į	968	२२१		77	१२७	<b>শ্ব</b> ঘ	2 946	٠ <u>٠</u> ٦७
श्रन्त	996	४७	श्रगुरुशिशपा	<u> </u>	€ २	श्रघमर्षश	94	80
श्रक्षदर्शक	90	وم	श्रप्राची	<b>S9</b>	29	श्रद्या	920	Ęø
अत्रदेविन्	१३२	४३	श्रमि	6	4, इ		93	90
<del>श्र</del> वघूर्त	77	٠ ۶۶	श्रक्षिकगा	<b>S</b>	• ५७	श्रंक {	944	*
श्रत्र	906	१८२	श्रमिवित्	50	92	श्रंकुर	४४	*
<b>श्र</b> क्षरचंचु	96	94	श्रिप्रज्वाला	46	928	श्चंकुश	<b>१</b> ०२	*1
~ श्रद्धरचग्र	77	94	श्रमित्रय	<b>59</b>	२०	श्रकोट	४८	२९
श्चत्रविन्यार		9	श्रमिभू	હ	३९	श्चंक्य	२६	<b>લ</b>
श्चच्वती	9 ३२	४४	श्रिमिमन्थ	45	६६	(	७९	¥0
<b>अज्ञाप्रकी</b> लव		५६	श्रिमुखी	४९	४२	श्रंग }	968	9
श्रदान्ति	२८	२४	श्रमिशिख	٤٤ -	१२४	(	959	99
श्रक्षि"	<b>९</b> ८२ १ २९०	९३	अग्निशिखा -	40	996		<b>68</b>	900
₹*	( २९०	22		<b>€</b> ∘	3 3 6	श्रंगण	· <b>*?</b>	93

						1	
ग्रब्द.	पृष्ठ.	श्होक.	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.	शब्द, पृष्ठ.	<b>र</b> लीक.
શ્રંગના	§ 99 ·	. 4	श्रजहा ्	, e4.8	८६	, ( 3x	90
	<b>}</b> ६९	ą	<b>শ্বজা</b>	१२२	७६	श्रंडज र् ६८	३३
<b>अंगविचेप</b>	२७	98	<b>শ্বজা</b> জী	998	३६	ं ६ १४०	49
श्रगसंस्कार	८६	929	<b>শ্বজাজী</b> ৰ	926	99	श्रतट ४३	8
ऋगहार	२७	96	श्रजित	962	६२	अतार्वेत २७६	v
<b>डेंगार</b>	998	३०	গ্ম <b>জি</b> ন	84	४६	श्रतलस्पर्श ३४	94
श्रृंगारक	94 <u>. રે</u> દા:	२५	श्रजिनषत्रा	६७	२६	श्रतसी ११४	२०
श्रेगारघा निक	र ११६ '	२९	<b>अ</b> जिनयो <b>नि</b>	६५	c	900	२४१
श्रंगारवह्नरी	90 )	86		४२	93	श्रति - १९९	٦,٠٠
श्रंगोरवह्नी	48	90	ऋजिर (	900	969	588	vg.
श्रंगास्त्रकटी	998	२९	শ্বজিह্বা	985	৬২		, "
श्रगीकार 🚜	1299	4	श्रजिह्यग	906	८६	श्रतिकम { १५३	३३ १५०
श्रगीकृत	<u></u> 980	906	श्रज्जुका	२६	99	•	
श्रंगुलिमान	9 <b>२</b> ३	واح	अज्मरा	षुषु	920	श्रतिचरा ६१	186
ऋगुलिसुद्रा	68	906		936	३८	श्रतिच्छत्र ६३	950
श्चगुली	. 69	૮ર	श्रज्ञ (	180	४८	श्रतिच्छत्रा ६१	947
श्रंजुलीयकृ	68	900	শ্বহান	98	v	श्रतिजव १०६	<b>ب</b> کو ج
<b>અંગુ</b> ષ્ઠ	. 69	43	श्रंवित	386	९८	श्रतिथि ९३	३४
श्रंघ्रि	,'''\'\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	9	<b>শ্বা</b> জন	99	2	श्रतिनिहारिन् २०	90
% व्रिनामक	84	93	श्रंजनकेशी	49	930	श्रतितु ३३	98
अप्रिपार्यीका	فربر	97	श्रंजनावती	99	eg	श्रतिपथिन् ६३	9 €
श्रवंडी	<b>ว</b> ีจ	Vo	<b>इं</b> जलि	45.	حاد	श्रतिपात र्	् । ३७
श्चन	<b>8</b> 8	9	इंजसा {	965	) <b>२</b>	(174	1 33
श्रचला	<b>રે</b>	- ع	, (	980	92	श्रितिप्रसिद्ध १८३	२१७
श्रविक्या	968	२ <b>२</b> ५	श्रटनी	900	68	ऋतिमात्र ९	: ६६
श्चान्छ	33	, <b>१</b> ४	श्रदक्ष	ष६	<b>े १</b> ०३	श्रतिमुक्त ५२	५०
अच्छ्मल	<b>, 4</b> 8	` , , s	श्रटबी	88	9	श्रतिमुक्तक ४७	२६
श्रच्युत		98	श्रटादचा	<b>5</b> ₹	34	श्रतिरिक्त १४३	७५
अच्युता <b>प्रज</b>	, <b>8</b>	<b>₹</b> ३	श्रहर र्	४२	92	अतिवक्त १३८	३५
,51-3(115151	455	v <b>ę</b>	•	909	939	श्रतिवाद २३	18
য়জ {	946	३०	<b>श्र</b> णक	180	da	श्रतिविषा ५५	95
श्रजगीधका	Ęo	१३९	ऋगाव्य	993		श्रतिवेल ९	<b>££</b>
श्रजगर	₹0	4	ુ <b>ઝા</b> ણ	308	<b>५</b> ६	_	१०२
श्रजगव	Ę	ع لا	आरामन्	•	₹६		ĘĘ
श्रजन्य	390	<b>9</b> 08	SALIGH	989	६२	(1,30	99
ऋजमोदा	¥9	38H		998	२०	श्रितिशस्त १६०	89
श्रजशंती श्रजशंती	43 46		श्रंड,	989	६२	त्र्यतिशोभन १७१	• 40
अनस			1	46	३७	श्रतिसस्ङत १६५	
ज्यन्त्र (त	<b>.</b> 5	44	श्रदकोश	60 ,	७६	श्रतिसर्जन १५३	, २८

			•					المراجع	
स्रतिसीरम ४८ रेरे स्रविक १२२ ८० स्रवा ५ १५ स्रवित १६० १४ स्रवित १८० १० स्रवित १८० १८० स	शब्द.	দূষ.	इलोक,	शब्द.	<b>9</b> 8.	रलोक.	शब्द.	पृष्ठ.	<b>इलोक</b>
स्रतित १९१ १० व्यक्तित १२१ १० व्यक्तित १९१ १० व्यक्तित १९१ १० व्यक्तित १२१ १० व्यक्तित १२१ वर्ष व्यक्तित १२१ १० वर्ष व्यक्तित १२१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष १३१ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष		96	५९	श्रधामार्गव	48	66	<b>अनद्धर</b>	२४	<b>₹</b> 9-
स्रतीत १९१ १७ स्रविकार १०० ३१ स्रविकार १०० अधिय ११ ११ स्रविकार १०० अधिय ११ ११ स्रविकार १०० अधिय ११ ११ स्रविकार १०० अधिया ११० ११० स्रविकार १०० अधियास ८८ ११४ स्रविकार १०० अधियास ८८ ११४ स्रविकार १०० अधियास ८८ ११४ स्रविकार १०० अधिवास ८८ ११४ स्रविकार १०० अधिवास ११ १०० स्रविकार १०० अधिवास ११ १०० स्रविकार १०० स्रवि		४८	\$\$	श्रधिक		60		بع	<b>ગ્</b> ષ્
स्वतित १९१ १७ स्विकांग १०४ ६३ सनहा १९९ ६० स्वतित १३१ ४४ स्विकार १०० स्वितित १३१ ४४ स्वितित १३१ ४४ स्वितित १३९ ४४ स्वितित १३९ ४४ स्वितित १३० १ स्वितित १३० स्वितित १३० १ स्वितित १३० १ स्वितित १३० १ स्वितित १३० १ स्वितित ८८ १३४ मा स्वितित १३० १ स्वितित १३० १ स्वितित १३० १ स्वितित १३० स्वितित १०० स्वतित १३० स्वतित १०० स्		950	९४	श्रधिक्रिंद्ध	१३४	99	श्रनच्छ		18
स्वतित्तिक ३३ १४ व्यक्तित १०० ३१ व्यक्तितिक ३३ वर्ष व्यक्तिति १८९ २ व्यक्तितिक १८० १ व्यक्तिति १८९ २ व्यक्तितिक १८० वर्ष व्यक्तिति १८९ २ व्यक्तिति १३९ वर्ष व्यक्तिति १३४ ११ वर्ष व्यक्तिति १३९ वर्ष व्यक्तित्व १६४ वर्ष व्यक्तित १६४ वर्ष व्यक्ति १६४ वर्ष व्यक्तित १६		१९१	90	त्र्रधिकांग		ξ3	श्रनडुद्य	998	ξo
स्वतीव १८९ र प्राविक्षित १८० ६ स्विन्त १८० स्वितिव १८९ र प्राविक्षित ११९ पर स्वितिव १८९ र प्राविक्षित ११९ पर स्वितिव १८० र प्राविक्ष ११० स्वित्व ११० स्वत्व			98		900		(	90	9
स्वतीव १८९ र स्वितिक १७ १५ स्वितिक १० १६ स्वितिक १० १६ स्वितिक १० १६ स्वितिक १० १६ स्वितिक १६४ स्वतिक १६४ स		१४३	७९	<b>অ</b> धिकृत	९७		श्रनन्त }	-	
ब्रात्सका १७ वर्ष ब्राव्यका ४४ ७ वर्ष प्रमान्य १०० ११२ व्याव्यक्ति १६० ११६ व्याव्यक्ति १६४ १८ व्याव्यक्ति १८४ १८ व्याव्यक्ति १६४ व्याव्यक्ति १६४ व्याव्यक्ति १६४ व्याव्यक्ति १६४ व्याव्यक्ति १८४ व्यावक्ति १८४ व्याव		१८९	२	<b>অ</b> धिक्षिप्त	१३९	४२			
स्रत्य-तिथि १०६	श्रतिका	२७	94		४४		[		
स्रत्यति	श्चत्यन्तकोपन	१३७	३२	श्रिधिप	१३४	99	श्रास्त्रमा र्		_
स्रत्यय	श्रत्यन्तीय	१०६	७६	श्रिधिम्		99	201-(11		-
सत्थर्थ १३ ६६ स्थितिया ७० ७ स्थान्यता ५ १६ स्थितिया ७० ७ स्थान्यता १४१ ५० स्थान्यता १४१ ५० स्थान्यता १६४ ७७ स्थान्यता १६४ ७७ स्थान्य १८० २४० स्थान्य १८० १८० स्थान्य १८०	श्राहराम ४			ऋधिरोहिणी	४२	96	į		
स्त्रत्यथे ११ ६६ स्थितिहा ७० च्यान्यवृत्ति १४३ णढ् स्रत्यावित १६४ ७७ स्रति १६४ ७७ स्रत्या १८७ २४७ स्रत्यो १८७ २४७ स्रत्यो १८७ २४७ स्रत्यो १८७ २४७ स्रत्यो १८७ २४७ स्रत्यो १५२ २१ स्रत्या १५० ३० स्रत्या १५० १० स्रत्या १५० १०		-		श्रिधवासन	66	१३४	श्चनन्यज	ų	२६
स्वतिय १६४ ए० स्वित्त १६४ ए० स्वति १८० १४० स्वति १६६ १६ स्वति १८० १४० स्वति १६६ १६ स्वति १६६ १६६ स्वति १६६ स्वति १६६ स्वति १६६ १६६ स्वति १६६ स्वति १६६ १६६ स्वति १		-		श्रधिविन्ना	७०				
स्रित १४ १७ स्था १८० १४० स्था १८० १८० स्था १८० स्था १८० १०० स्था १८० १८० स्था १८० १०० स्था १८० १८० स्या १८० १८० स्था १८० स्था १८० १८० स्था १८० स			1	ऋधिश्रयणी	998	२९		968	985
स्राज १४४ २७ अधीन १३५ १६ अनल ८ ५५४ अस्य १८० २४७ असी १८० २४७ असी १८० २४७ असी १८० २४७ असी स्र १६ असी स्र १८० असी स	-			ऋधिष्ठान	900	925	त्र्यतर्थक	२४	२०
स्रयो १८७ २४७ स्थाप स्थाप १६६ १६ स्थाप स्थाप १६६ स्था			1	त्र्राघीन	१३५		श्रनल	c	
अवा १८७ २४७ व्यवस्त			1	श्रघीर	936	२६	श्रनवधानता	<b>२</b> ९	
स्रदेश १४१ १६ सहस्र १४१ १६ सहस्र १४१ १६ स्ट स्रद्रिया १५६ १६ स्रद्रिया १५६ १६ स्रद्रिया १५६ स्ट स्रद्रिया १५६ स्ट स्रद्रिया १५६ स्ट स्रद्रिया १५० स्ट स्ट स्रद्रिया १५० १६ स्रद्रिया १६० १६ स्रद्रिया १६० १६ स्रद्रिया १६० १६ स्रद्रिया १६० १६ स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० १६ स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० १६ स्रद्र्या १६० स्रद्र्य स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० स्रद्र्या १६० स्रद्र्य स्रद्र्या १६० स्रद्र्य स्				श्रधीश्वर	९६			९	_
अदेशन १ पेर रेर अविदितनन्दन ४ अविदित १ १ १ अविदत १ १ १ अविदित १ १ १ अविदित १ १ १ अविदित १ १ १ अविदित १ १ १ अविदत १ १ १ ४ अविदत १ १ ४ ४ अविदत १	_		1	त्रधुना	१९२	२३		989	
अहार निनन्दन है जिस्से पुरुष प्राचित प्राचित पुरुष प्राचित पुरुष प्राचित पुरुष प्राचित पुरुष प्राचित प्राचच प्राचित प्राचच प्राचच प्राचच प्रा			l I	<b>শ্বদূ</b> ন্ত	936		_		•
अहिए १०० ३० अयोद्धाल ५ ११ अनागतार्तावा ७० ८ अहिए १०० अयोध्याल १३७ ३३ अनादर १८ २२ अयोध्याल १३७ ३३ अनादर १८ २२ अयोध्याल १३७ १३७ अयोध्याल १३७ ३३ अनादर १८ २२ अव्यास १०३ अव्यास १०० व्यास १०० व्यास १०० व्यास १०० व्यास १०० व्य	•		1	श्रधों ग्रुक	28	1			
अहिष्ट ३० ३७ अधेभुवन ३० १ अनातप १७५ १५७ अधेभुवन ३० १ अनातप १७५ १५७ अधोभुवन १३७ ३३ अनादर २८ २२ अधाभुवन १३७ ३३ अनादर २८ २२ अध्याप १६० १० अध्याप १६० १६० अन्याप १६०	•			श्रधोत्तज	4	1		·	
अहा १९० १२ अहा १९० १२ अहमत २७ १० अहमत २० १९ अहमर १३५ २० अहमत १३५ २० अहमत १३५ २० अहमतामा १०३ १४५ १४० अहमतामा १०३ अनामा १५४ अनामा १५४ १४४ अहमतामा १०३ अनामा १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ १५४ अहमार १५४ १० अहमार १५४ १० अहमार १५४ १० अहमार १५४ १० अहमार १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ ११४ अहमार १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ ११८ अहमार १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ अनामा १५४ ११८ अहमार १५४ अनामा १५४ ११८ अहमार १५४ १०० अन्य १८४ १०० अन्य अनामा १५४ १०० अहमार १५४ १०० अन्य १८४ १००			₹0		३०			१७५	940
अवस्थित			२७)	<b>त्रधोमु</b> ख	१३७	33	श्रनादर	26	
अदस्त	अद्ध। १		74	(					
श्रद्धर १३५ २० श्रद्ध १९२ २० श्रद्ध १९२ १० श्रद्ध १९६ ६३ श्रद्ध १९६ ६३ श्रद्ध १९६ ६३ श्रद्ध १९६ ६३ श्रद्ध १९६ ६३ श्रद्ध १९८ १९ श्रद्ध १९८ १९८ १९८ १९८ १९८ १९८ १९८ १९८ १९८ १९८	श्रद्भुत }			अध्यक्ष र्	२४०				
अहा १९२ २० अहियापक ८९ ७ अनारत १२ ६५ अहियापक ८९ ७ अनारत १२ ६५ अहियापक ८९ ७ अनारत १२ ६५ अत्रावित्त ६० १४३ अत्राहत ११२ ११२ अत्राहत ११२ ११२ अत्राहत ११२ ११२ अतिमिष १८३ २१८ अत्राहत ११२ ११८ अतिमिष १८३ २१८ अत्राहत ११२ ११८ अतिमिष १८३ २१८ अतिहत ६ २७ अतिहत ६ २७ अतिहत ६ २७ अतिहत ६ १७ अतिहत १०० अतिहत ६ १७ अतिहत ६ १७	व्यासार ०	-	[5	ग्रध्यवसाय	२९				
स्रिंद			12	श्रघ्यात्म	१७३	. 1			
श्रद्भि । १९६ ६३ अन्यहार १९ ३ अनाहत ११२ ११२ अन्यद्भाव । ११२ ११२ अन्यद्भाव । ११२ ११२ अन्यवादित् ५ १४४ अन्यवादित् ५ १४४ अन्यवादित् ५ १४४ अन्यवाद्भाव १३३ ३२ अनिहद्ध ६ २७ अन्यवाद्धा १३० १५४ अन्वत् १८० अन्वत् १८० १५४ अन्वत् १८० अन्वत् १९० अन	_			श्रध्यापक	८९				
श्रद्धयवादिन ५ १४ त्रुष्ट्वा ७० ७ श्रुनिमिष १८३ २१८ श्रुष्ट्वा ५० ७ श्रुनिमिष १८३ २१८ श्रुष्ट्वा ५० ७ श्रुनिहृद्ध ६ २७ श्रुष्ट्वा ९८ १७ श्रुष्ट्वा ९८ १७ श्रुष्ट्वा ९८ १७ श्रुष्ट्वा ९८ १७ श्रुष्ट्वा १८० १५ श्रुष्ट्वा १८० १७ श्रुष्ट्वा १८० १७ श्रुष्ट्वा १८० श्रुष्ट्वा १८० १७ श्रुष्ट्वा १८० १८० श्रुष्ट्वा १८० १०० १०० श्रुष्ट्वा १८० १०० १००	আহি ২	<b>-</b> <del>-</del>	'1.	श्रध्याहार	99	_ 1		992	
श्रवम { १७३ १४४ व्यविषाा ९३ ३२ श्रान्तरह ६ २७ श्रवम १४० ५४ श्रवम ९८ १७ श्रवम १९० १५ श्रवम १९० १५ श्रवम १९० १५ श्रवम १९० १५ श्रवम १९० १८९ श्रवमीन ९८ १७ श्रवमीन ९८ १७ श्रवमीन ९८ १७ श्रवमीन १८० १७ श्रवमीन १९० १८९ श्रवमा १९० १३ श्रवमीक १९२ ७८ श्रवमीक १९२ १९			15	<b>ब्र</b> ध्यू ढा	७०				
अध्म ( १४० ५४ मध्यम ९८ १७ म्राचित ( १० १० मध्यमण ११२ ५ मध्यमण ११२ ५ मध्यमण १८० १५ मध्यमण १९२ १० मध्यमण १८० १७ मध्यमण १८० १८० मध्यमण १८० १७ मध्यमण १८० मध्यमण १८० मध्यमण १९२ १०६ ७८ मध्यमण १९२ ११ मध्यमण १९२ १०६ १०० १०४	<b>.</b>		15	त्रन्येष <b>गा</b>	९३				
श्रवमर्ण ११२ ५ श्रव्यन् ४० १५ श्रान्त { ९ ६३ श्रव्य ६२ ९० श्रव्यनीत ९८ १७ श्रिन्श ९ ६५ श्रव्य ९८ १७ श्रव्य ९८ १७			•	ब्र <sup>ध्</sup> वग	96	90		·	
अधुर { ८२ ९० व्राध्वनीन ९८ १७ व्रानिश ९ ६५ १७९ १८९ व्राध्वन्य ९८ १७ व्याघरेशुस् १९२ २१ व्याध्वर ९० १३	~			प्रध्वन्	४०	1.	श्रानेल {		=
अवर रे १७९ १८९ अध्वत्य ९८ १७ (१०६ ७८) अवरेशुस् १९२ २१ अध्वर ९० १३ अनीक (११० १०४	(		-1	प्रध्वनीन	90	1	ग्रनिश	<b>Q</b>	
अवरेशुस् १९२ २१ अव्वर ९० १३ अनाक (११० १०४	عود کی م			प्रध्वन्य	96	90	(	_	
		53	२१ इ	ग्रब्द	९०	1	श्रनीक {	-	
	श्रवस्	३०	٩	म्र <sup>च्</sup> वर्यु	<b>९9</b>		<b>त्रनीकस्थ</b>	•	

शब्द.	ध्य.	इलोक.	शब्द.	पृष्ठ.	क्लोक.	शब्द.	gg.	रलॉक.
श्चनीकिनी	<b>∫</b> ५०६	७८	श्रनु <sup>द</sup> ग्।	१२९	96	र्श्रान्तका	998	<b>३</b> ९
श्रमा, कमा	रे १०७	۶ م	श्रनुहार	949	90	श्रन्तिकाश्रय	969	98
श्रनु	929	२४८	श्चनूक	१५६	93	श्रतेवासिन् {	९०	99
श्रनुक	१३६	२३	श्रनूचान	९०	90	अतमासम् र	१२९	२०
श्र <sub>नुकस्</sub> पा	२७	१८	<b>त्र्यत्</b> नक	१४२	६५	ग्रन्त्य	१४३	۶۵
श्र <mark>ा</mark> तुकर्ष	१०४	५७	ऋनूप	३९	90	अन्त्र	७९	६६
श्रनुकल्प	९४	४०	श्रनूह	१४	३२	<b>ग्रन्दुक</b>	909	४१
श्चनुकामीन	१०६	७६	श्रमृजु '	१४०	४६	श्चन्ध {	66	६१
श्चनुकार	969	१७	श्रमृत {	२४	२१	(	१६८	१०३
श्चनुक्रम	९३	३६	( )	192	२	श्चन्धकरिपु	Ę	३४
<b>श्र</b> नुकोश	२७	96	· ·	00	३४	श्रन्धकार	₹ 0	Ę
श्चनुग	१४३	७८	श्रनेहस्	94	٩	त्रम्धतमस	३०	३
श्रनुप्रह	993	५३	श्रनोकह	४४	4	श्रन्धस्	996	86
श्रनुचर	904	۱۶ و٠	श्रन्त {	999	998	श्रन्धु	# 64	२६
<b>त्र</b> मुस	७५	४३	(	१४३	۱۹۶	श्रप्त र्	996	86
<b>अनुजीविन्</b>	९७	٩	श्रन्तःपुर	४१	99	(	986	999
<del>%</del> नुतर्षेण	१३२	४३	श्रन्तक	٩,	48	श्चन्य	988	૮ર
श्रनुताप	<b>∫</b> २८		श्चन्तर	908	966	श्रन्यतर	988	८२
23011	े १७३		श्रन्तरा	१९०	90	श्रन्यतरेषुस्	988	*9
श्चनुत्तम	989	५७	श्रतराभवसत्त्व '	१७१	१३२	श्चन्येषुस्	993	₹9
श्रनुत्तर	909	१९०	श्रन्तराय '	149	95	श्रन्वक	185	46
श्रनुनय	२७९		म्रन्तराल	99	Ę	श्चन्वस्	983	96
श्रनुपद	१४३	७८	श्रन्तरिच्	90	٦	श्चन्बय	۷۹	٩
<b>अनुप</b> दीना	430	३०	<b>अ</b> न्तरीप	३२	ح	श्चनवाय	८९	٩
श्रनुपमा	99	૪	श्चन्तरीय	८६	996	श्चन्बाहाये	९२	₹9
<b>श्र</b> नुप्लव	904	७१	त्रन्तरे	१९०	101	<b>अन्विष्ट</b>	986	900
श्रनुबन्ध	960	90	श्रन्तरे {	968		<b>अ</b> न्वेषगा	९३	३१
श्रनुबोध	८६	977	(	१९०	90	श्रन्वेषित	986	904
श्रनुभव	१५२	२७	श्रन्तर्गत्	988	٤٤	श्चर्	३२	Ę
श्रहुभाव	<b>{</b> २८ १८२	२१		92	92	<b>अपकारगी</b>	२३	98
_	•		श्चन्तर्धि	95		अपक्रम	999	999
त्रानुमती 	9 €		श्रन्तद्वीर	४२	98	श्रपघन	७९	७०
<b>श्र</b> नुयोग	२२	90	श्रन्तर्मनम्	१३४	۷	श्रपचय	949	9 Ę
श्रनुरोघ	<b>९८</b>		श्रन्तर्वत्नी	७२	28		986	909
श्रनुताप कार्यसम्बद्ध	२३		श्रन्तर्वाशि	933	Ę	श्रप चित	१४७	909
श्रनुलेपन	999		श्रन्तर्वेशिक	९७	C	श्रपचित्ति {	९३	3.R
श्रमुवर्त्तन	96		श्रन्तावसायिन्	926	90		963	६७
श्रानुवाक	996		श्रन्तिक	982	ĘC	श्रपटु	<b>6</b>	<b>4</b> < .
श्चनुशय	१७३	786	श्रन्ति₹तम	१४२	. & <	श्चपत्य	७३	२८

शब्द.	25.	इलोक.	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.	शब्द. पृष्ठ.	<b>३लोक</b> .
श्चपत्रपा	२८	२३	श्रवामार्ग	48	66	श्रभिग्रह १५०	93
श्चपत्रपिष्णु	१३६	२८	श्रपादृत	9३५	१५	श्रभिग्रहण १५१	90
ऋपथ	<b>¥</b> 0	ঀৢৢৢ	श्रणसन	999	993	श्रभिघातिन् ९७	99
श्चपथि <b>न्</b>	४०	१७	ऋपि	960	२४९	श्रभिचर १०५	৬৭
<b>अपदान्तर</b>	१४२	६८	ऋपिधान	97	4 3	श्रभिचार १५१	98
श्चरदिश	99	45	ऋपिनद्ध	904	<b>&amp;</b> 4	श्रभिजन { ८९	9
ऋपदेश -	<b>१९</b>	**	श्रप्प	996	४८	अभिजन रे १६८	906
	८ १८३	२१६	श्रपोगंड	७६	४६	श्रभिजात १६५	८२
श्च्य-वस्त	१३८	३९	श्रप्यति	٩.	६१	श्रभिज्ञ १३३	K
श्रपश्रंश	29	२	ऋप्पित्त	ć	५ ६	(987	६७
श्रपयान	999	299	श्रप्रकाण्ड	४५	9	श्रवितस् {१४२	744
श्रपरस्पर	986	٩	श्रप्रगुरा	१४२	७२	श्रभिधान २२	6
श्रपराजिता -	<b>९</b> ५६	908	श्रप्रत्यज्ञ	१४३	७९	श्रिभिन्या २८	२४
	<b>}</b>	<b>9</b>	श्रप्रधान	989	Ę٥	श्रभिनय २७	9 Ę
श्रपराद्धपृषत्व		६८	श्रप्रहत	३८	فع	। श्रमिनव १४३	৬৬
श्रपराध	९९	२६	श्रमाध्य	989	६०	ग्रभिनवोद्भिद ४४	*
श्चपराह	94	3	श्रप्सरस्	<b>\  \</b>	99	अभिनिर्मुक्त ९६	५६
<b>अपरेशु</b> स्	१९२	<b>₹</b> 9	· ·	( c	45	श्रभिनिर्याण १०९	•
श्रपग्री	•	३७	श्रफल	४५	G		२४
भपलाप	२३	90	श्रवद्ध	२४	१ ०	श्रमिनीत र १६५	<b>دع</b>
अपवर्ग	95	G	श्रबद्धमुख		₹६	श्रमिपन्न १७१	976
अपवर्जन	43	३०	अवला	६९	२	श्चिमिप्राय १५१	२०
श्रपवाद {	२३	93	श्रवाध	388	८३	श्रमिभूत १३८	४०
	<b>१४३</b>	८९	গ্ৰহন	<b>∫</b> 9₹ `	98	श्रिमिमर १८२	२१४
श्रपवारगा	<b>९ १२</b> १९७०	9 <i>२</i> 9 <i>२५</i>		े वेषड	३२	श्रिभिमान } २८	२३
श्रपशब्द	<b>₹9</b>	<b>4</b>	<b>श्च</b> न्जयोगि		90	असमाम रे १६९	990
	988	۲ ۲۵	श्रब्द	<b>₹</b> 96	२० ८८	श्रभियोग १५०	93
श्चरमञ्				903	१४६	श्रामहर्प १७१	939
श्चपसद	976	96	' -	<b>∫</b> ₹₹ •	9	विकारिकाल १५३	२४
श्रपसप	9,0	ን <b>የ</b> ሪሄ	স্থা <b>তি</b> ঘ	र् १६७	909	श्रभिलाष २८	<b>२८</b>
श्चपसञ्च	486	د ه نو نو	1	<b>ह</b> १२५	904		२२
श्रपस्कर क्षाप्टाट	१०३ १३५	9 <i>9</i>		१७	98		२८
श्चपस्नात		4 É	I are serve	६३	9 6 2	अभिवादन ९४	98
श्रपहार श्रपांपति	949 22	٦ <del>٩</del>	I ATTURES	५१	فرو	अभिन्याप्ति १४९	Ę
(	३२ ८३	۶ ۶			३६	श्रमिशस्त १३९	४३
श्र्याङ्ग {	८२ १५७	٠ ٦٩		936		श्रमिशस्ति १९३	३२
6	\$	٠, ډ ۶	1 ^		96		99
•अपान {	۷۰		श्रमिस्या		946	श्रमिषङ्ग १५७	२४

			1					
शब्द.	<b>y</b> g.	<del>र</del> लोक.	शब्द्र	दृष्ठ.	श्लोक.	शब्द.	ष्ट्रप्र.	<b>रलोक</b> .
श्रभिषव	5 94	४७	श्रभ्युपगम	95	4	अमृतान्त्रस्	8	٥
	रे १३१	४२	अभ्युपपत्ति	940	9 ३	श्रमोद्या	49	48
श्रभिषेगान	908	<b>९</b> ५	श्रम्यूप	996	४७	श्रम्बर {	90	9
श्रमिष्टुत	906	990	羽羽	ه و ک	9	State 5	966	969
श्रमिसपात	902	१०५		( 99	Ę	श्र∓वरीष	998	३०
श्रमिसारिका	<b>60</b>	90	श्रभ्रक	154	900	अम्बष्ठ	१२६	<b>२</b>
श्रमिहार -	<b>विभव</b>	90	श्रभ्रपुष्प	४८	३०		( ५२	৬৭
,	(900	986	अभातग	۵	A.£.	अम्बष्टा -	} 48	82
श्रमिहित	986	900	श्रम्रमु	99	४	(	ξo	980
श्रभीक	१३६	.२४	त्रभ्रमुवह्नभ		४६	श्रम्बा	२७	98
श्रमीक्याम्	∫ १८९ } १९०	9	श्रिश्रय	99	٥	श्रम्बिका	હ	३७
	( 170 ( 170	1	শ্বন্ধি	\$ \$	93	श्रम्बु	३२	8
श्रमीप्सित	986	43 992	<b>শ্ৰম্ম</b>	99	२४	श्रम्बुक्रग	93	99
श्रभीह	بربع		<b>স্থ</b> মস	998	३३	श्र <b>म्बु</b> ल	49	દ ૧
त्रभीक्पत्री	<b>પ્</b> રુપ્	9.0	श्चमर	ሄ	ا	श्रम्बुसृत्	99	و
श्रमीषग	१४९	اء	श्रमरावती	હ	४५	<b>अम्बु</b> वेतस्	86	३०
શ્રમીયુ	963		श्चमत्र्य °	ጸ	٥	श्रम्बुसरगा	33	99
श्रभीष्ट ^	980	1	अमर्ष	२८	२६	<b>अम्ब्</b> कृत	२४	२०
श्रभ्यप्र	१४२	ا	श्रदर्षण	१३७	३२	श्रमम्	३२	8
श्रभ्यन्तर	99	اء	श्रमल	954	900	श्रम्भोरह	र्ष	४१
श्रभ्यमित	66	أراه	श्रमला	48	१२७	अस्मय	३२	1 4
श्रभ्यमित्रीग्र	908	1,010	थ्रमा ं	966	२५०	<b>স</b> ম্ল	२०	9
श्रभ्यमित्र्य	908	101.	श्रम ांस	७५	88	<b>अम्ललोणिका</b>	६०	980
श्रभ्यर्ण	१४२	ا ا ا	श्रमात्य	९७	٧	त्र्रम्लवेतस	ę٥	989
श्रभ्यहिंत	954		प्रमावस्या	9 €	6	श्रम्लान	५३	६७
श्रभ्यवकर्ष <mark>ण</mark>	949	I	<b>अमावस्या</b>	98	د	श्रम्लिका	४९	४३
श्रभ्यवस्कद्न	990	ا موه	श्रमित्र	90	92	श्रय	90	२७
श्रभ्यवहृत	986	224	अमुत्र	१९०	د		9 ६	93
श्रभ्याख्यान	<b>२२</b>	90	<b>अ</b> म्णाल		१६४	श्रयन {	80	99
अभ्यागम	990	904	ſ	• 6	४८	श्रयस्	928	96
श्रभ्यागारिक	१३४	98	Į	98		श्रयःप्रतिमा	939	३५
श्रभ्यादान	942	1		३२		अयाचित <b>ः</b>	992	
श्रभ्यान्त	96	46	श्रमृत ┤	९२		श्रयि	989	<b>ફ</b>
अभ्यामर्द	990	904	ļ	992	1	श्रयोध श्रयोध	994	96
श्रभ्याश	१४२	ĘĠ	ļ	१६४	`1.	त्रयोदन	१५९ १५९	7 <i>4</i>
श्रभ्यासादन	990	990	Ĺ		- 1	श्रर		₹ <b>७</b>
अभ्युत्थान	९३	_ 1		\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \	46	त्रर अरघट	९ १९८	48
श्र+युदित	36	यप	श्रमृता -	{	7,5	ञरपट श्रारणि	•	9 c
<del>-</del>	•	1.31		~ 70	८२	-41 (-4	59	95

शब्द.	<b>78.</b>	श्लोक. शब्द.	<b>9</b> 5.	श्लोक.	शब्द.	<b>gg.</b>	श्लोक.
श्चरण्य {	88	१ अवा {	<b>९३</b>	38	ऋर्य {	992	9
C	988	77)	9 3 9	\$ 6		१७३	986
श्चरण्यानी	88	श्री ऋचिंत {	986	909	त्रर्थमन्	98	२८
श्ररित	८२	٧٤ (	954	ح لم	त्रर्था	७१	18
ऋरर	४२	१७ त्रार्चेस् }	९ १८५	9.0 . E E	त्रयाणी	৬৭	98
<b>अस्</b>	<b>49</b>	५७ ग्रर्जिक	५३ १३	२३०	श्रयीं .	७१	94
<b>अरविद</b>	३७	4.)	<b>२२</b> २०	93	श्चर्वन् {	902	88
श्रवति	<b>९७</b>	११ य्रार्जुन	४९	7 4 % 64	, ζ	980	48
श्रराज	१४२	(	€ ₹	950	<b>স্মৰ্</b> ক	959	9 Ę
<b>श्र</b> ि	<b>50</b>	१० त्र्राजुनी	920	Ę٠	त्रशंस्	66	५४
<b>अरित्र</b>	३३	98 . (	३२	,	श्रशंस	७८	५९
श्ररिमेढ	مله	५० প্ৰত্যৰ {	9 ६ २	৸ড়	त्रशींघ	६२	१५७
ſ	४१	८ ऋर्षस्	३२	४	श्रशीरोगयुत	৬८	५९
	86	३१ अर्तन	१५३	३२	श्रहेगा	९३	३४
	५१	६२ श्रार्ति	\$€₹	६८	<b>श्र</b> हिंत	१४७	909
শ্ববিছ 🚽	٠. ٤٩	१४८ अर्थ {	928	९०	त्र्रालक	८३	९६
31(2)		1 (	9 ६ ५	८६	<b>श्रलका</b>	90	,60
	995	५३ अर्थना {	९३	३२	<b>শ্ব</b> লক	260	354
j	६६	۲۰) . ر	१४९	Ę	श्रलक्ष्मी	₹9	२
Į	949	३६ ऋर्थृपयोग	992	४	श्रलगदे	३१	4
<b>ऋरिष्टदुष्ट</b> घी	१३९	४४ ऋर्थशास्त्र	२२	فع	श्रलंक∘ {	ેટર	900
(	98	२९ अर्थिन् {	90	8		१३७	75
श्रहण 🔾	38	३२	980	४९	अलंकत <sup>े</sup>	८३	900
200	<b>२</b> 9	१५ अर्थ {	१२५	908	श्रलंकेम्मी <b>या</b> 	ब इंद	36
	9 <b> </b>	४८ ी ( ९९ श्रदंना	१७५	980	त्र्रांकार	۷۶	909
<b>अ</b> स्या	ey cy	1 05	989 986	Ę	<b>স্থ</b> ল্ভন	૯૧	900
श्ररुन्तुद	988		988	९७	श्रलिकया	८२	909
<b>अरु</b> ष्कर	<b>४९</b> १ १७९	१८९ अर्ध {	9२ 9२	<b>3</b> &	श्रलम् }	१८८ १९०	२५ <b>२</b> <b>११</b>
श्रहस्	७७	५४ अधेचन्द्रा	v <sub>a</sub> s	905			
<b>अरोक</b>	988	१०० श्रिधनाव	*** 33	98	श्रलके }	५४ १ <b>२</b> ९	८ <b>१</b> २२
_	98		4 4 9 4				
श्चकं {	षुष्	२९ अधरात्र ४ अधेर्च	905	६ ३२	त्र्रातस	925	96
श्चकंपर्ण	6.8	८१ अधिहार	68		त्र्रात	<b>1</b> 98	• Ę
श्रकंबन्धु	4	१५ अर्धोरुक	८६	90E	শ্ব <b>তাৰু</b>	६२	<b>9</b> 4६
अकृष्टि	48	1	99£	<b>११</b> ९ १९	श्रति 🏅	६५ ६७	<b>9</b> ४ २९
श्चर्गल	४२	त्रुं अर्बुद {	२० <b>२</b>	# <b>#</b>	श्रतिक	۲۰ 6٦	<b>९</b> २
শ্বৰ	946	२७ अभेक	ęد	36	श्रालनर श्रालनर	198	39
শ্বৰ্ম	९३	३३ अर्म	<b>२</b> ०२		श्रालन् श्रालन्	Ę U	35
	• •	221 241	1-1	₹ 0	-district	7.	4,3

शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.	शब्द.		ZB.	श्लोक.	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.
श्रक्षेप	२३	93		(	990	906	श्रादिनव	१५३	२९
श्राखण्डल	v	88	श्राडम्बर	1	900	950	4	954	૮ષ
<b>স্মা</b> ত্ত	६५	92	<b>স্মা</b> ত্তি		६७	२५	श्रादेष्ट (ध)	69	v
त्राखुमु <b>ज्</b>	६४	Ę	त्र्याढक		१२३	66	<b>স্মা</b> হ্য	१४३	60
श्राखेट	925	53	<b>ब्राह</b> िकक		११३	90	त्राद्यमाषक	१२३	८५
श्राख्या	१२	۷	श्राढकी	<b>§</b>	५९	१३०	श्राव्यून	998	२ <b>१</b>
श्राख्यात	986	१०७		(	984	৬	श्राधार	३६	२९
श्राख्यायिका	२२	4	श्राद्य		१३४	90	আঘি -	, २९	२८
श्रागन्तु	९३	३४	श्रागावीन		992	હ	3114	<b>े १६</b> ७	९७
	. ९९	२६	श्रातक		348	90	श्राधृत	988	८७
श्रागम् {	9	२३०	त्र्यातश्चन		१६९	994	श्राघोरण	908	५९
श्रागू	48	م	त्राततायि	न्	१३९	४४	श्राध्यान	२९	<b>२</b> ९
श्रामीध्र	59	90	श्रातप	{	98	३४	(	₹ €	Ę
श्राप्रहायिगक		98		(	986	<b>ર</b> ૦	त्र्यानक {	944	3
श्राग्रहायग्री	93	२३	त्रातपत्र		900	३२	श्रानकदुन्दुमि	4	. २२
श्राहृ	928	230	श्रातर		<b>३३</b>		त्रानतः श्रानतः	9 Y Z	U o
আদ্ধিক	. २७	9.	श्रातापिन् ———		ĘĘ	29	त्रान <b>द</b>	२५	8
श्राङ्गिरस	93	2~	त्रातिथेय ——		९३	३३	श्रान्न	٠٠. ۷٦	. ८९
श्राचमन	९३	36	श्चातिथ्य		९३	३३	श्चानन्द	96	२५
श्राचाम	996	ye l	त्रातुर 		<b>6</b> 6	مرد	श्रानन्दशु	90	<b>ર</b> ધ
श्राचार्य	۷٩		त्रातोद्य 		34	4	श्रानन्दन	988	•
श्राचार्या	७१	9~1	श्रात्तगर्व	•	१३८	80	श्रानर्त	963	६४
श्राचार्यांनी	งๆ	ا .ره	श्रात्मगुप्ता		५४	- "	श्रानाय श्रानाय	३४	96
श्राचित	923	ا وار	श्रात्मघोष		६६	70	ज्ञानाय्य ज्ञानाय्य	9	<b>₹</b> 9
(	92		<b>य्रात्मज</b>	,	હ રૂ	30	<b>आनाह</b>	ভ	فرنع
श्राच्छा-	ટેષ્	994	<b>यात्मन्</b>	}	96 986	3.5	<b>यानुपूर्वी</b>	<b>९</b> ३	₹
दन (	900	934					आन्धसिक	94	, २८
श्राच्छुरितक	२९	३४	<b>य्रात्मभू</b>	}	4	74	य्रान्वीक्षिकी	२२	وم
श्चाच्छोदन	935	. 23		٠,	Ę	77 .	ग्रापक्व	196	४७
<b>স্থা</b> লক	१२२	1	ब्रात्मम्भरि ब्रात्रयी		7 4 4	٠,١٠٠	आपगा	3,4	३०
श्चाजानेय	902	~~	त्रात्रय। स्राथर्वेषा		७२	रु	आपर्या	80	ર
(	990		श्रायवश्र ब्रादश		२२७	٠٠١,	<b>आपियाक</b>	922	96
श्राजि {	946	32			948	196	<b>यापत्र्याप्त</b>	939	**
স্মাজীব	192	1 '	ब्राद <del>ि</del>		185	,,	<b>प्रापद्</b>	900	CR
<b>আ</b> ত্	31	_ I`	श्रादिकारग्र		96	٦٠,	श्रापन	925	४२
<b>সা</b> লা	55	२६	म्म दितेय	_	×.	်  ့	प्रापन्नसत्त्वा	७२	र्दश्
आज्य	196		<b>प्रादि</b> त्य	{	४ ሄ	61	प्रापमित्यक	,998 •	
श्राटि	Ęu	24	-11 1 A/A	₹	'9.Y	26		122	**
	-	)		-		,-,-		- 4 5	. 7. 7

			1					
शब्द.	<u> বৃদ্ধ</u>	श्लोक.	शब्द.	धृष्ठ.	श्लोक.	शब्द.	58.	श्लोक,
श्रापीड	66	935	श्राम्रातक	<b>४</b> ७	२७	ऋार्षभ्य	920	६२
श्रापीन	२२१	७३	त्राम्रेडित	२३	92	श्रात	१२५	९०३
श्रापूपिक {	994	२८	श्रायत	१४२	६९	श्रातम्भ	999	994
•	948	४०	श्रायतन	४१	v	श्रालय	89	<b>ધ્</b> ય
श्रप्त	९८	93	श्रायति	{ 900 { 9€8	<b>२</b> ९	श्रालवाल	३६	२९
ऋप्य	३२	6	į		७२	श्रावस्य	990	96
श्चायन	988	994	श्रायत	454	96	त्र्यालान	909	४१
<b>স্থা</b> সন্জন	985	U	श्रायाम	دى	998	श्रालाप	२३	94
श्चाप्रपद	۶۶	999	ऋायुध	900	८२		( €∘	98
श्चाप्रपदीन	۶ ک	999	आयुघिक	ا م ہم	<b>କ୍</b> ଓ	স্মালি	3 88	8
श्चाप्लव	٤٤	929	श्रायुधीय	904	६७		( १८६	92
श्राप्लाव	۶۶	929	श्रायुष्मत्	<b>१</b> ९३	Ę	श्रा लिंग्य	<b>₹</b> ६	4
श्राबन्ध	992	93	श्रायुस्	१६५	970	श्रातिन्द	४२	97
श्राभरण	८४	909	श्च,योधन	990	व ० ३	श्राली सामीन	960	996
श्राभाषग्	73	94	श्रारकूट	१२४	९७	श्रालीढ श्राछ	१०० ११६	८५
श्राभास्वर	ų	-	श्रार्ग्वध	४७	२३	আন্ত আন্তীক	4 64 64	₹9 <b>3</b>
श्राभीर	११९	دېره	श्रारनालक	990	34	त्रालाक श्रालोकन	44 <i>4</i>	. 39
श्रा <b>भीर</b> पल्ली	४३	२०	श्रारति	948	३७	श्रावपन	996	¥ 1
त्र्याभीरी 	<b>9</b> و د	93	श्रारम	948	२६	आवर्त	, , ५ ३२	* * §
श्राभील	३२	8	आरव	• २४	२३	श्रावित	88	*
त्राभोग	66	१३७	अरा	939	३४	श्राव सित	992	२ <b>३</b>
श्रामगधिन्	₹•	9 २	त्रारात्	966	२४२	श्रावाप	, , <u>,</u> , ,	,
श्रामनस्य	<b>२</b> ०	3	त्राराधन	900	<b>१२५</b> -	आवापक	८४	400
त्र्यामेय	७६	49	श्राराम	<b>አ</b> ጸ	ર	श्रावाल	₹६	78
त्र्यामयाविन् 	30	५८	आरालिक	994	२८	श्राविप्त	42	ĘĠ
श्रामलक	908	३३	श्राराव	२४	२३		र् १४२	60
श्रामलकी	49	थ्७	श्चारेवत	४७	₹ <b>४</b>	श्राविद्व	886	20
श्रामित्ता (	88	२३	श्चारोग्य	90	ولأه	श्राविध	१५३	3.6
ञ्चामिष }	968	€ <b>२</b> २२३	श्रारोह	} 24	११४ १३८	श्राविल	३३	98
श्रामिषाशिन्	. १३५		भारोहगा	४२	94	श्राविस्	950	93
-त्रामुक्त -त्रामुक्त	94		श्रातराल श्रातराल	५३	હજ	<b>শ্বা</b> ন্তক	<b>₹</b> ६	98
· · · /	96		आर्तव आर्तव	7	<b>₹</b> 9	<b>আ</b> ন্তুत	२६	92
त्र्यामोद रे	२o		श्राद	980	904	<b>স্মান্ব</b>	23	₹
(	9 <b>Ç</b> Ę	. 1	भारेक भारेक	990	30	श्चावृत	984	90
श्रामोदिन्	२०	99		( 40		श्रावेगी	ۥ	930
AUGUSTAT S	99	3	त्रार्थ	{	3 A B	श्चावेशन	49	•
श्राम्नाय र्	386	u	श्चर्वा	•	اغ	<b>आवेशि</b> क	<b>5</b> ₹,	₹ <b>४</b>
आम्र	Ac		भार्यावर्त	<b>₹</b> \$		_	936	२७

शब्द.	gg.	इलोक,	शब्द. पृष्ठ	. इलोक.	शब्द.	99.	₹लं क -
त्र्याशसु	935	२७		99	इग -	१४३	४४
श्राशय	949	२०	श्रासार { ११४	<b>८</b> ९६	'	८ १५१	9 6
श्राशर	94	५९	त्रासुरी <b>१९</b>	४ १९	इगित	949	9 00
त्र्याशा {	98		श्रासेचनक २०५	५ ५ ३	इगुदी	40	४६
•	१८३	२१६	<b>ऋास्कन्दन</b> ११	१०४	इच्छा	२८	२७
श्राशितगवी		५९	श्रास्कन्दित १०३	४८	इच्छावती	<b>9</b> 0	9,
श्राशीविष	३१	৬	श्रास्तरमा १५:	१ ४ <b>२</b>	इज्याशील	८९	6
श्राशिस्	964	२३८	त्र्यास्था १६६		इट्चर	920	६२
ষ্মান্ত {	९५	६५	श्रास्थान १३	द <b>१</b> ५	इडा	980	४२
	१३४	م و	श्रास्थानी ९	• 9 kg	(	476	9\$
	• 92	<b>६</b> २	श्रास्पद १६५	<b>१</b> ९४	इतर -	988	૮ર
त्राशुग }	९०८ - १५७	८६ १९	त्रास्फोट ५	8 60	(	960	985
	•	94	श्रास्फोटनी १९०	. 33	इतरेखुन्	१९२	२०
মায়ুরী <u>হি</u>	998	યુષ	श्रास्कोटा } भ	, ,	इति	960	२४५
श्राशुशुद्धारि श्राश्चर्य			आस्यादा रे ४०	908	इतिह	90	१२
	३७	99	श्रास्य ८:	१ ८९	इतिहास	२ २	Æ
श्राश्रम	<b>2</b> %	8	श्रास्या २२	३ २४	इत्वरी	७९	90
ऋाश्रया १	१४६ २ <b>२</b> १	9 c 9 9	প্রাহার ৭५:	<b>२</b> ९	ददानीम्	१९२	२३
श्राध्रया <b>श</b>	۷ ، ۱	<sup>થ</sup> ે ક	ज्ञातच्य ∫ हे।	• २१	इध्मा	४६	93
(	98	4	आहत { १२	४ ९५	इन	१६९	999
त्र्याध्रव {	935	<b>ર</b> ૪	त्राहितलच्चा १३	8 90	इन्दीवर	३७	३७
श्राश्रुत	986	906	श्राहव ११	0 906	इन्दीवरी	ष्प	900
<b>শ্বাধ</b>	40२	86	<b>आहवनीय ९.</b> ५	1 94	इन्दु	१२	93
श्राभत्थ	४६	96	आहार ११	٠, چ		ه ک	४१
श्राध्यु न्	90	৭ ৩	त्राहाव ३'	<b>,</b>	इन्द्र :	रे ११	2
श्राश्विन	90	90	ब्राहेय ३		इन्द्रह	४९	४५
श्राधिनेय	4	ધ્યુ	त्राहो १८		इन्द्रयव	५२	Ęus
श्राश्चीन	१०२	४७	आहोपुर्शवका १०	९ ५८५	इन्द्रवाहगी	६२	१५६
	( 96	9 \$	İ	<b>ર</b> (	इ-द्रमुरस	५२	६८
স্থাষ্যত	र् ९४	84	•	.૨ ૮	इन्द्राणिका	५२	६८
श्रासक	१३४	9	श्राह्वान २		ì	<b>∫</b> ६	३६
	( "	9.36	1	· 5	इन्द्राणी	રે હ	४५
त्र्यासन -	}	40	€ <b>3</b> €		इन्द्रायुध	99	90
	( १०१	३९	ر بر		इन्द्रारि	8	98
श्रासना	१५२	२१	١ / و			ų	२०
श्चसन्दी	954	9	इस्रान्धा ) ९	9 940	र जिल्ला	( २०	.6.
त्रासन	१४२	<b>ę</b>		३ ५६३	शन्द्रय	2 ه	દ ર
त्र्यासव	939	<b>୪</b> ٩	<b>इ</b> श्चर ५	4 9 P		२०	• 6
श्रासादित	68,	808	इक्षाकु इ	२ १५६	इन्धन	४६	97

			1					==;
शब्द.	ঘূছ.	श्लोक.	शब्द.	<b>2</b> 3.	श्होक.	शब्द.	Sa'	ন্তীক.
इभ	900	३५	ईषत्	950	۷		( 980	909
इस्य	१३४	90	ईषत्पाण्डु	२०	93	<b>उ</b> त	3 960	२४३
इरम्मद	99	90	ईषा	993	98		( 968	4
##TT 5	939	३९	ईषिका	5 909	३८	उताहो	968	4
इरा {	900	१७६	_	े १३०	३२	उत्क	१३४	, 6
इल्वला	93	२३	ईहा	२८	२७	उत्कट	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	158
इव	990	9	ईहासग	Ę <sup>t</sup> ę	v	<b>उ</b> त्दण्ठा	( १३६	43
इष	90	90		उ		उत्कर	<b>२९</b>	75
<b>£</b> 3	906	60	उ	909	ا ر	उत्कर उत्क <b>र्ष</b>	ĘS.	४१
इषुवि	906	66		959	9 <i>6</i> 900	उत्क <b>ष</b> उत्कलिका	940	33
₹ <b>E</b> {	२२	२८	ওক্ষ ওক্ষি	986		उत्कालका उत्कार	<b>₹</b> \$	<b>35</b>
C	998	५७		<b>२</b> ९		उत्कार उत्कोश	948	₹€
इष्टकापथ	६३	<b>ब</b> ह ५	उक्थ	२०१	30		€0 ev	<b>₹</b> ₹
इष्टगन्ध	२०	11	<b>उक्षन्</b>	998	ખુલ	उत्त ंग	98	904
इष्टार्थीयुक्त		8	उखा	996	३ <i>१</i> ४५	<b>उत्तंस</b>	968	११७
इष्टि	948	३९	उक्ष	990	•	उत्तम	96	<b>£</b> .3
इंग्वास	945	८३	उप्र	<b>६</b> २८	<b>३</b> २ २०	उत्तम	989 •	40
	¥		97	८ १२६	```	उत्तमर्ग	992	4
	(			( ५६	902	उत्तमा	90	<b>*</b>
<b>र्व</b> ण	<b>८२</b> १५३	3 e	उपगन्वा	<b>{</b> \$9	984	उत्तमांग	<b>4</b> ڳ ج ۾ ج	94
ईचुणिका	6 174	<b>३</b> 9	उच	988	٧o	उत्तर	{ ५६ { ५७९	90
इंडित	186	<b>२</b> ०	उचटा	ĘĘ	980	उत्तरा	90	<b>9</b> 50 2
इति इति	963	990 &८	उचण्ड	988	٤٤	उत्तरासंग	۶Ę	190
ईरिया	144 944	५८ ५७	उचार	७९	ફ ંહ	उत्तरीय	۶¢	996
ईरित	188	70 60	उचाव च	148	٤٤	उत्तरेद्युस्	, 988	२०
<b>ईर्म</b>	<b>9</b> 9	48	उचैःश्रदम्		*4	उत्तान	' ३४	94
ईविष	६२	944	उचैंघुष्ट	२३	99	उत्तानशय	७५	*3
ईर्ग्या	26	<b>48</b>	उचैस्	989	90	उत्थान	900	376
.ईजित	186	909	उच्छ्रय	૪ૡ	4,0	उत्थित	964	64
<b>ई</b> ली	906	39	उच्छ्राय	819	90	उत्पतिमृ	१३७	75
	<b>∫</b> ' €			∫ १४२	<b>6</b> 0		96	₹0
ईश	<b>{ 99</b>	\$ o	उच्छ्रित	र् १६५	واح		930	35
ईशान	Ę	<b>३</b> o	उज्ञासन	999	994		984	૮ષ
ईशित्व	19	<b>,</b> ३६	उज्ज्वल	२७	90		∫ ३७	₹ <b>७</b>
-ईशिकु	138	90	उटन	89	€:	उत्पत्त	{ ye	126
	∫ €	30	उडु	93	₹9:	उत्पत्तशा	-	993
<b>ई</b> र्वर	( १३४	-	उडुप	33		उत्पात	990	905
ईस्वरा	•		उड्डीन	ĘC		.ড?ডুন্ব	84	v

शब्द.		<b>9</b> 9.	स्तीक.	शब्द.		gg.	इलोक.	शब्द.	ন্তুত্ব.	श्लोक.
उत्स		४३	<b>ب</b>	7777	5	४७	२२		5 909	३६
उत्सर्जन		97	75	उदुम्बर	₹	१२४	6.0	उद्घान्त	रे १४६	90
	5	३०	३८	उदुम्बरपर	र्धी	ę٩	988	उद्वासन	999	394
उत्सव	Į	962	२०९	उद्खल		994	२५	उद्वाह	<b>९६</b>	ष६
उत्सादन		८६	929	उद्गत		१४६	९७	उद्वेग	₹ €%	955
	5	२९	२९	उद्गमनीय		ولع	992		( 9:0	92
द्धत्साह	ζ	36	75	उद्गाढ		9	44	उन्दुरु	940	92
उत्साहन		955	996	उद्गतृ		59	90	उन्नत	982	90
उत्साहवर्ध	न	२७	96	उद्गार		948	ફેહ	उन्नतानत	988	<b>§ S</b>
<b>उत्सुक</b>		938	5	उद्गीथ		156		ভন্মৱ	964	ڪ <sup>ر</sup> و <sub>ي</sub>
उत्सृष्ट		980	900				99.	उप्तय	940	12
	(	84	90	उद्ग् <b>र्ध</b> उदग्र		<b>२१३</b>	<b>د</b> و د	उन्नाय	940	12
उत्सेघ	{	950	4.6	उद्ग्राह		,१५४	<b>३</b> ७	उन्मत्त	५३	<b>66</b>
उदक्	•	932	२३	उद्घ		96	२७	उन्मथ	( ७८ १११	Ę o
उदक		32	``\ *	उद्घन		१५३	₹ <b>५</b>	उन्मदिन्यु		994
°उदक्या		७२	79	उद्घाटन		१३०	રૂહ	उन्मनम्	936 <b>93</b> 8	<b>२३</b> ८
<b>उद्य</b>		983	٠,	उद्घात		945	२६	जन्मनस् <u>र</u>	140	
<b>उद</b> ज		948	३९	उद्दान		99	२६	उन्माथ -	925	<b>૧૧</b> ५ २६
उद्ध		33	9	उद्दाल		86	३४		े २८	<b>२</b> ६
उद-त उदन्त		<b>7</b> 7		<b>उ</b> ह्ति		386	84	उन्माद	935	4.3
उद-या उदन्या		195		उद्दाव		999	999	उन्मादवत्	ي د	Ęo
<b>उ</b> दन्वत्		35	فعوتم	उद्ध्ये		३०	३८	उपकण्ठ	१४२	Ęu
उदपान <b>उदपान</b>		₹ <b>₹</b>	<b>9</b>	उद्धव		३०	३८	उपकारिका	89	90
<b>उ</b> दय		83	२६ २	उद्धान		995	२९	उपकार्या	४१	90
उदर		6 q		<b>उद्धार</b>		992	४	उपकुष्टिका	عبد ک	924
<b>उद्</b> क		900	<b>૭</b> ७ <b>૨</b> ૬	उद्भृत		984	९०	उपञ्चान्यका	( ११७	३७
<b>उद</b> वसित		89	8	उद्भव		90	३०	उपकुल्या	ومودم	<b>4</b> §
<b>उद</b> श्चित्		195	५ ३	उद्भिज		980	49	(	९०	93
उदात्त		77	24	उद्भिद्	•	980	५१	उपक्रम	942	7 €
उदान		3	६३	उद्भिद		980	1.0			939
	C			<b>उद्</b> श्रम		940	Į	उपकोश	२३	9 \$
उदार	}	१३४ १८०	८ <b>१</b> ९२	<b>उद्य</b> त		984			986	905
उदासीन	•	50	9.	उद्यम		940		उपगृह् <b>न</b>	१५३	₹०
उदाहार		<b>7</b> 9		<b>ड्यान</b>				उपग्रह	999	115
उदित		480		<b>उद्या</b> न उद्यान		955		उपप्राह्य	900	२८
. <b>उद्दी</b> ची		90		उथान उद्योग		88		उपन	949 224	• 44
	,			(		२,०२		उपचरित	980	902
उदीच्य	}	३८ ५८	<i>0</i>	उद		₹४		<b>उ</b> पचाय्य	59	<b>~</b> % o
	C	10	<b>उ</b> रस्	<b>स्ट्र</b> तंन		€8	923[	उपचित	988	<b>دع</b>

		· ·							<b>-</b>
शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.	शब्द,	9B.	इलोक.	शब्द,	<b>22.</b>		স্ভীক্,
उःचित्रा	५४	ده	उपवास	९३	३८	उपासना	९३		\$0
उपृजाप	९९	२१	उपविषा	ष्प	5,5	उपासित	980	•	908
उपज्ञा	90	93	उपबीत	94	४८		( 95		90
उपतप्तृ	940	98	उपशल्ब	४३	२०	उपाहित	र् १४५		<b>૧</b> ૨
उपताप	७६	५१	उपशाय	943	३२	उपेन्द्र	4		२०
उपत्यका	88	৬	<b>उगश्च</b> त	380	909	<b>उपोदिका</b>	<i>ډ</i> ې		940
उपदा	900	२८	उपसव्यान	۶۶	११७	उपोद्घात	<b>२</b> २		3
उपघा	55	٦ <b>٩</b>	उपसंपन्न	∮ ९२	२६	उप्तकृष्ट	993		
उपवान	66	१३७	- 1	1996	४५	उमये <b>खु</b> स्	158	,	. 33
उपि	२९	३०	उपसर	942	२५	(	•		.36
<b>उपनाह</b>	२६	<b>u</b>	उपसर्ग	190	908	उमा {	998		20
उपनिधि	922	۷۹	उपस्रजन	989	ξo	<b>उमापति</b>	Ę		₹४
उपनिषद्	9 ६ ६	९३	उपसर्या	929	<b>U</b> o	उम्य	992		•
उपनिष्कर	80	96	उपसूर्यक	98	३२	उरःसूत्रिक			908
उपन्यास	<b>२२</b>	9,	उपस्कर	998	3 4	उरग	39		6
उपपति	४७	34	उपस्थ	૮૦	હધ	उरग	908		<b>७</b> €
उपबह	66	१३७	उपस्पश	43	36	उरगाख्य	६१	•	986
उपसृत्	९ <b>२</b>	२५	उपहार	900	२८	उरम	922		υĘ
उपमोग	949	२०	उपह्नर	946	१८३	उररी	966		२५४
TENTO T	9३१	३७	उपांशु	<b>5</b> 5	२३	उररा उररी <b>क</b> त	980		906
उपमा	( १३१	३७	उपाकरण	98	80	i			६४
उपमातृ	966	१७६	उपाकृत	53	<b>२</b> ५	उर३छद	१०४ ८०		40 96
उपमान	939	३६	उपात्य <b>य</b>	<b>₹</b> 93	<b>७</b> ६ <i>६६</i>	उरस्			96
<b>उपयम</b>	<b>5</b> Ę	બુફ		् १५३ १५१	३३ १६	उरसिल	१०६ ७३		२८
उपयाम	९६	<i>ब</i> ६	उपादान	( २८	74 <b>2</b> 6	उस्य	905		vę
Series*	9 9	90	उदाधि	र १३४	12	उरस्वत् उ <b>रु</b>	189		ĘÌ
डपरक्त	८ १३९	४३	उपाच्याय	وی	v	उ <b>रवृ</b> क	40		49
<sup>-</sup> डपरक्षगा	900	33	उपाध्याया	9	98	उर्वरा उर्वरा	₹¢		8
उपराग	95	9			• 94		6		५२
उपराम	· 948	3 ७		( 69	98	0 32	<b>Ę</b> ₹		844
उपरि	906	963	उपाध्यायी	<b>\ 69</b>	94	1 - 11 4			
उपल	४३	¥	उपानह	930	₹∘	उर्वी	\$ C		Ę
उपलब्धाथ	ि२२	t <sub>e</sub>	। उपाय(चतु		₹0	उत्तप	४५		9
उपलब्ब	98	9		900	२८	उल्लक	६५		94
उप्लम्भ	१५२	२७	उपालम्भ	२३		उत्स्खल	994		२५
उपला	969	999	उपावृत	9 o R.	५०	उँॡ्रबलक	86		ЗK
<b>खप्</b> वन	• 88	२	<b>उपासं</b> ग	9,0,6	46		₹४		96,
उपवर्त्तन	३९	4	उपासन	906	<b>د</b> و	उल्का	954		6

		1		احا			
शब्द.	28.	श्लोक. शब्द.	<b>E8.</b>		शब्द.	<b>9</b> 8.	<b>र</b> लोक
उत्सुक	998	६० ठर्जस्			<b>म</b> स्	x	6
उल्ब	७५	३८ कर्णना			<b>त्रमुक्षिन्</b>	v	<b>ጸ</b> ጹ.
उल्वग्र	485	८१ ड्या	989		ऋष्य	६५	90
उन्नाघ	<b>u</b>	५७ सम्ब	यु		ऋष्यकेतु	ч	२७
उह्नोच	८६	170	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	900	(	२५	9
उल्लोन	३२	६ कर्षक		५ ४७	ऋषभ 👌	५७	996
उशनस्	95	२५ छर्षि	•		1	995	५९ ७०
उशीर	<b>६३</b>	१६४ कर्षश्च		४७	ے۔	989	५९
उषग्रा	44	९७ कर्मि	33	٩	ऋषि	98	<b>₹</b>
उषक्षंघ	E	५४ कर्मिक		900	ऋष्यप्रोक्ता {	دم دم م	20°
उषस्	94	२ कर्मिंम		وی			,
उषा	959	१८ स <b>म</b>	३८	8		<b>E</b>	49.
उषापति	Ę	२७ জঘ্যা		36	एक }	JRR	८२
<b>ভ</b> षित	986	९९ कषर	· ३८	فع	\\ \ \ \ \	१५६	96
उष्ट्र	133	७५ ऊषवर		4	एकक	988	૮૨
उन्म	§ 96	१९ कष्मा		99	एकगुरु	90	92
a	<b>् १</b> २८	१९ कह	95	3	एकतान	988	45
उष्णरिःम	. 18	२९	鸦		एकताल	२५	3
उष्णिका	996	५० ऋक्श		90	एकदन्त	y	३८
उच्जीप	963	२२०	13	29	एकदा	958	<b>२</b> २
उच्छोपगम		१९ ऋत	{ ५१ <b>६</b> ४	५७ ४	1	17.	64
उष्मक	90	76	_	१ १३७	i	920	<b>ξ</b> '9
বন্ধ	48	" " " " " " " " " " " " " " " " " " " "	गन्धा ६०	140 <b>39</b> 0		92.	Ęų
उह्या	930	, , ,	गन्धिका ५६	) 11°	1 ^	80	94
	æ	স্কৃত্	•	र इइ	~	90	६९
<b>अ</b> त	986	<b>৭০</b> গ		۲ - د د	1	48	908
<b>क</b> षस्	929	৬ ই	, १४२ हरोहित १ <b>१</b>	96	2	१४३	60
<b>स्त</b>	909	7761			३ एकहायनी	920	६८
<del>क्रम्</del>	959	१८ ऋग		\$	1 ^	. 988	63
<b>छर</b> री	966	२५४ ऋत	<sup>र</sup> {	•		१४३	७९
<b>करव्य</b>	113	_1	तीया १५३	Ę	। एकाभ 🤰	909	95 0
<del>छ</del> री	966	<b>२५४</b>			३ एकाप्र्य	१४३	60
करी <b>कृ</b> त	986	906 35	₹ { १६ १९२		९ एकान्त	\$	Ęv
5. <b>6</b>	60	७३ ऋ			१ एकाच्दा	920	Ę
<b>अरुज</b>	1998	9 %	ते १८९	`	३ एकायन	१४३	90
<b>ऊरुपर्वन्</b>	60		त्विज् । ५१	, 9	७ एकायनगत	983	20
<b>जर्</b>	10	96 零	•	•	३ एकावली	6.8	906
कुत्रस्वल		७५ %	*		२ एकाडील	48	2

शब्द.	yg.	स्टोक, शब्द.	gy.	खोक.	शब्द.	28.	श्लोक.
एकाष्ट्रीला	48	८५ ऐषमस्	998	२०	<b>कं</b> स	196	<b>३</b> २
एड	હ દ્	86	শ্বী		<b>कं</b> साराति	4	<b>₹</b> 9
एडक	922	७६ श्रोकस्	964	२३३	क्कुद	<b>9</b> 66	<b>5</b> 3
एडगज	६१	980	२६	4	क्कुदाती	60	ey.
एडमूक	936	३८ श्रोघ	६८	३९	<b>क</b> कुन्दर	۷۰	७५
एड्क	49	8	746	२७	#30.41	90	1
एस	६५	१० श्रीकार	२२	٧	<b>क्कुम्</b>	२६	•
<b>ए</b> त	39	१७ श्रोजस्	964	२३३	(	85	*4
एतहिं	158	३२ श्रोण्ड्रपुष्प	५३	७६	{	۲9	৬૬
एघ	ΧÉ	१३ त्र्योतु	ÉR	Ę	कव {	9<₹	२१९
एथस्	४६	१३ श्रोदन	996	, 86		१०२	४२
एधा	940	१० श्रोम्	990	98	कस्या {	904	946
एधित एधित	185	७६  श्रोष	988	\$	毒毒	६६	36
एनस् एनस्	96	२३ श्रोष <b>धी</b>	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	Ę	कंकटक	308	ÉA
<b>एरण्ड</b>	40	4.0	• • •	934	कंकगा	٧٤	906
<b>ए</b> ला	46	१२५ <u>च</u> ्चा श्रीषधीश	92	98	<b>\$</b> कतिका	66	935
	₹o	१४० श्रोष्ठ	८२	90	कंकाल	45	45
एलापर्गी		129	श्री		कंकोलक	' دی	, वर्
एलावाङ्क	96	त्राज्य	998	Ęo	क्यु	198	२०
ł	966 980	र ५० हो चिती	२०३	39	क्व	૮રૂ	دنع
एवम् -	990	१२ औचित्य	२०३	३९	कचर	189	فونع
"	159	१५ श्रीत्तानपारि	१ १३	२०	कचित्	151	18
į	959	१६ श्रोत्सक्य	964	२२९	कच्छप	38	71
एषणिका	१३०	३२ श्रोदनिक	994	२८	कच्छपी	909	933
	ģ	श्रीदरिक	१३५	29			40
ऐकागारिक	125	२४ श्रोपगवक	948	३९	कच्छी {	68	926
ऐंगुद	४६	१८ श्रीपयिक	55	२४	कच्छुर	96	46
ऐश	Ęų	८ श्रोपवस्तु	९३	३८	कच्छुरा	44	93
ऐणेय	ę̈́Υ	८ श्रोमीन	192	y	कच्छू	99	43
<b>ऐ</b> तिह्य	₹0	१२ श्रीरभ्रक	922.	99		<b>₹</b> 9	3
<b>ऐं</b> द्रिथक	188	७९ श्रोरस	७३	२८	कंचुक	908	ĘĘ
ऐरावर्ख	6	४६ जीर्घदेहिक		३०	कंचुकिन्	30	6
4(14W	٤	४६ बीर्व	Š	५६			u¥.
ऐरावत न	99	३ झौशीर	१७९	964	1 (	909	३७
30.00	85	36		934	165 2	994	च ६
ऐरावती	99	् श्रीषघ	{ ५९ १ ७६	40	(	949	३४
ऐलंबिल	90	६९ श्रीष्ट्रक	922	<b>19</b> (9		४३	وم
<u> ऐ</u> खेय •	40	939	<b>4</b> 5		कटक	68	900
रेखर्य ऐखर्य	, <u>o</u>	३६ क	944	6	कटभी	६१	940

शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक.	शब्द.	দূৱ.	स्रोक	. शब्द.	9g.	
	6 48	૮ષ	कथा	22	<b>\$</b>	1	_	_
कटभरा	£ 59	943	कदघ्वन्	¥0	9	1	७९ इ	53
कटाच	٤٤	9.8	कदम्ब	४९	४२	1 _ '	द्र ६४	<b>₹</b> ₹
कटाह	956	29		<b>5</b> 89	80	1	५४	₹:
कटि	60	७४	कद्बक	1998	90	1 -	7.• ४७	29
कटिप्रोथ	60	७५	कदर	40	40		8° 89	<b>ર</b> ૧ ૧૬
कटी -	5 60	७५	कदर्ख	980	86		( 99	14 <b>Y</b>
4101	<b>१०३</b>	३८	कदलिन्	5 40	993	कपिला	} 49	ξ₹
(	२•	•	•	રે ६५	9		( 46	920.
कट्ट }	da	•	कदाचित्	968	૪	कपिवल्ली	فونع	٩.6
(	948	३५ :	<b>इ</b> दुब्स	98	34	कंपिश	29	48
कटुतुम्बी	६३	946	कद्	₹9	96	ł	( 80	२७
कटुरोहिणी	५४	د وم	<b>ब्रह्</b>	936	36	कपी तन	} 89	४३
कद्रफल	४९	४०	म्नक	928	98	_	( ५१	६३
कट्वंग	43	५६ ह	<b>क्रनका</b> ध्यत्त	40	હ	कपोत	६५	98
<b>च</b> ठिजर	وم ځ	७९	<b>क</b> नकालुका	900	3,2	कपोतपालि	का ४२	9 6
कृठिन	185	७६ व	<b>क्तका</b> ह्य	५३	99	क्पोताधि	५९	925
कंठिल्लक .	६२	948	हनिष्ठ	5 64	૪રૂં	कपोल	८२	90
कठोर	<b>38</b> \$	હદ્દ	हानष्ठ	े १६०	*9	क्क	65	६२
कडंगर	998	२२ व	विष्ठा	49	८२	किम्	66	Ęœ
कडंब	996	३५ व	नीनिका	८२	९२	कफोणि	69	60
क्टार	₹.9	, £ a	नीयस्	§ 989	६२	कबन्ध	<b>∮</b> ३२	*
कण {	989	६२	•	( १८५	२३५		( 999	996
•	940	४६ व	न्था	994	ما	A	( \$ 0	938
कसा {	44	९६ क	न्द	६२	940	कबरी	{ ८३ ( १ <b>१</b> ७	<b>९७</b> ४०
कणिका	996	, , 1	न्दर	8.5	Ę	कम्	966	<b>४•</b> २५०
	45	६६ व	न्दराल	∫ ७२	56	कमट	३५	29
कणिश <del>दं</del>	998	२१	•	( 88	×31	कमठी	34	<b>7</b> 8
कंटक	२०२	, ,	न्द्प	4		कमण्डलु	38	<b>%</b> £
कटकारिका कण्टकिफल	<b>ધ્</b> યુ હતુ	,	न्दलि <b>न्</b>	० ६ <i>५</i>	e l	कमन	936	₹%:
क <b>्</b> ठ	43		न्दु	998	30		३२	\$
कण्डभूषा कण्डभूषा	<b>د</b> ۶	1	न्दुक	66	936	कमल -	३७	80
केह् इंट	۶۶	१०४ क		८२	66	(	960	988
नेह्या चेह्या	66		न्यकाजात	७३	२४	कमला	Ę	२७:
कण्डूरा	<b>19</b> 19	५३ क		90		<b>इ</b> मलासन	فع	90
कण्ड्रस कण्डो <del>ल</del>	48		पट्	२९		क्रमलोत्तर	१२६	908
कण्डाख कण्डोखवीस्मा	994	The state of the s	વર્દ	É	३५	किसितृ	१३६	23
	930		पर्दिन्	ę	३२	हस्प	₹• .	३६
कतृगा	<b>£ §</b>	9 5 6 1 45	वाट	४२	96	<b>इ</b> च्पन	8×8	u¥.

शब्द.	æ.	श्लोक∙	शब्द्र	5â·	क्लोक.	शब्द.	ঘূছ.	<b>३लोक</b>
कम्प	188	৬४	करिणी	909	३६	कप्री	924	909
कम्बल	€ کو	998	कस्नि	900	हे४:	कर्पूर	25	१३०
-204-14 (I	रे १८०	988	करिपिष्पली	५५	<b>5</b> \( \sigma	١,	( 5	<b>\$</b> :0
कम्ब लिवा	यक १०३	५२	करिशावक	909	३५	कबुंर	} २१	90
कम्बि	998	38	(	48	७७		( १२४	58
कम्बु	<b>∫</b> ३५	२ ३	करीर	900	१७३	कर्मकर	् १२८ १३५	94 95
	( १७१	988	करीष	196	49	कर्मकार	१३५	15
<b>कम्बु</b> प्रीवा	८२	CC	क <b>रु</b> ण	२७	90	कर्मक्षम	4 <del>\$</del> 6	96
कम	936	२४	करुणा	२७	96	कर्मठ	4 \$ pt	96
-	( ,8	23	करेढ	ĘĘ	99	कर्मण्या	147 489	` ₹ <i>6</i>
कर	3 99	२७	करेणु	359	५२	कर्मन्	986	3
	( 908,	968	करोटि	७९	६९	कर्मन्दिन्	९४	४9
करक	र्व ५२ १ <b>१</b> ५५	€ ¥	कर्क	908	४६	कर्मवृत्त	986	₹
करका	98	92	कर्कटक	३४	२१	कर्मशील	934	10
	٠, ٩٥	80	<b>क</b> र्केटी	44	فعرفع	वर्मशूर्	934	96
करज	£ 49	125	कर्कन्धू	*	३६	कर्मसचिव	90	*
करजन	40	VI.	कर्करी	998	३१	कर्मार	६३	980
क्रस्ट	<b>९</b> ६	₹0	कर्करेटु	€ €	95	कर्मेन्द्रिय	<b>२</b> ०	~
701/5	रे १५९	3.8	(	<b>\$</b> 3	988	कर्ष	960	८६
करमा	<b>∮ १२६</b>	२	ककेश }	983	७६	कर्षक	998 '	Ę
	८ १६१	48	(	, 98\$	२१७	कर्षफल	५9	46
करण्ड	996	90	कर्कारु	६२	944	कध्रे	968	२ <b>२१</b>
करतोया	३६	33	कचूर	६२	968	कल	२५	2
क्रंपत्र	939		कर्चृगक	ष्ड	934	कलकल	२५	24
करभ	<b>S</b> 69		कर्ण	८३	4.8		92	14
SCTATIFOR	( १२२	७५	कर्णजलीकस्	६५	93	कलक र्	944	8
कर <b>भूष</b> ण करमर्दक	68	906	<b>क</b> र्णघार	३३	92	কলঙ্গ	906	906
कर <b>म्भ</b>	५२	Ęu ;	क्योपूर	968	२२७	कलघौत	958	હ ફ્
कर <b>र</b> ह	996		क्र्यावेष्टन	58	1	कलभ	909	३५
<sup>करपह</sup> करवात्त	9	ر ۶ ا	कर्णिका {	८४.		क्लम	994	२४
करवालिका	906			१५६°	94	कलंब {	906	60
क <sup>र्</sup> वीर	906		कर्णिकार —	49	40	(	998	34
करशाखा	५३		कर्गीरथ 	903	1	कलम्बी	६२	940
करशाखा करशीकर	<b>د</b> ۹		कर्रेाजप 	980		कलरव	६५	78
	909 210		कर्त्तरी ~^~	9 3 9	1	कलल	७५	35
करहाट	३७ ५०		कर्दम 	३३		कलविक	६६	96
<b>⊸</b> त्रसहाटक	<b>4</b> 0		क्रपेट <del>र्</del> टेन	८५		कलश	998	<b>₹</b> 9
कराल करिगार्जित	969		क्रपेर ट्येन्स्य	<b>19</b> 9	1	कलशी	પુષ્	\$\$
कारणाजत	990	900	कप <b>राश</b>	900	م ن در ا و	क्लह	990	208

				•			
शब्द.	<b>23.</b>	श्लोक. शब्द.	<b>28</b> .	श्होक.	शब्द.	<b>2</b> 8.	श्लोक.
कलहंस	६७	२३ कवोष्ण	69	३५	कांची	५९	939
(	98	१५ कव्य	१ ३९	9.8	1	१२५	99
कला }	२३	११ कशा	930	३१		930	३०
· ·	960	१९८ कशाई	१३९	४४		१५८	२८
क्लाद	964	े कशिपु	909	१३०	काचस्थाली	49	48
कलानिधि	98	१४ कशेर	<b>२५</b> ०	93	काचित्	984	८९
<b>ड</b> लाप	909	१२९ करोरका	७९	६९	का <b>श्व</b> न	928	ه نع
<b>स्</b> लाब	998	१६ कश्मल	9 <b>9</b> 0	909	कांचनाह्वय	45	& ed
कवि }	990 960	988	( १०२	४७	कांचनी	990	४१
कविका	8.6	१६ कश्य	3 989	४०	कांची	८५	906
	( ५२	Ę	( १३९	88	कांजिक	940	३९
<b>क</b> श्चित्र	<b>{</b>	५६ कष	9 ३०	३२	कांड	960	४३
कलिद्रुम	49	10.0	( २९	8	काण्डपृष्ठ	904	६७
कलिमारक	40	४८ कषाय	ર્ટ ૧૭૪	१५३	काण्डवत्	948	६९
कलिल	988	ديرا	<b>(</b> ३२	٧	काण्डीर	१५६	ĘŖ
(	96	३३ कप्ट	<b>{</b> 948	39	काण्डेक्षु	48	408
<b>क</b> छव {	३३	१४ कस्तूरी	60	979	कातर	936	२६
कलेवर	७९	७० कहार	३७	३६		v	₹ €
426.42	. 946	१४ कह	ęę	२२	कात्यायनी {	७२	90
	· 96	२१ कांस्यत		8	काद्म्ब	Ęu	२ 🖣
1	9'6	२२ काक	ĘĘ	२०	कादम्बरी	939	३९
करप र्	903	३९ काकचि		96	कादम्बिनी	99	, 4
(		२४ कार्कातः	न्दुक ४९	३९	काद्रवेय	३०	¥
कल्पना	908	४२ काकना		116	कानन	XX	1
कस्पबृद्ध	6	५० काकपद	८३	९६	कानीन	994	२४
क्रमान्त	96	२२ काकपी	<b>ङ्घक</b> ४९	39	कान्त	180	५२
<b>ब्रह्म</b> ष	96	२३ काकमा	की ६१	949	कान्तलक	५९	१२८
वस्माष	२१	१७ वाकमुद्र		993	कान्ता	६९	Ę
(	२१	र काकली	२५	२		६३	90
कल्व }	9.0	५७ काकांगी		996	कान्तार {	100	१७२
(	१७५	, , ,   =- <del>Co</del> nf		1	कान्तारक	963	963
कल्या	२४	16	૮રૂ	9 ₹	कान्तार्थिनी	90	90
<b>क</b> ल्याया <b>क</b> ह्योल	9 <i>c</i>	7.7	૮ર	39	(	90	90
<b>फ</b> हारा <b>फवच</b>	३२ १०४	६४ काकेन्दु		३९	कांति {	988	6
•नव •व	998	५४ काकोद		`.	कादंबिक	994	२८
-	45		म्बरिका ५१			१३९	४२
कवि }	<sup>१२</sup> ८९		₹9	90	कापय	80	98
<b>फ</b> विका	903	४९ काकोल	<b>{</b>	39	कापोत	१३६	908
<b>क</b> िम्रिय	२०२	३५ कांचा	<b>२८</b>		कापोर्ताजन	१२५ १२५	9000
124	1-1	द ⊅ किस्सी।	70	79	च्यापाता <b>जन</b>	153	700

शब्द.	2 <b>3.</b>	<b>रलोक</b> , शब्द.	<b>5</b> 8.	श्लोक.	शब्द.	<b>2</b> 9.	श्लोक•
	( ,4	२५ कारोत्तर	932	४२	कालाय	998	96
काम	) २८ ) ११९	२८ कार्त्तस्वर	१२४	९५	कालायस	978	96
	( 902	१३८ कात्तीतिक	96	98	कालिका	१५६	96
कामगा	• •	७६ कार्तिक	90	90	कालिन्दी	५६	<b>३२</b>
कामन	136	कात्ताकक	90	96	कालिन्दीमे	द्न ५	२४
कामपाल		२३ कार्त्तिकेय	હ	39	काली	v	3,5
कासम्	२४५	१३ कात्स्न्य	906	900	कालीयक	وی	926
कामयिह		२४ कार्पास	6 64	999	कालेयक	<b>५</b> ६	909
•	, ( <b>5</b>	2	( २०२	1	काल्पक	<b>પુ</b> ષ્	934
कामिनी	2 9 5 5	११२ कार्पासी	५७		काल्या	२२१	<b>v</b> o
कामुक	936	३ ३ <sup>१का</sup> म	<b>.</b> 9 ३ ५		काबचिक	م ه لع	ę <b>ę</b>
कामुका	992	े कार्मग	186	8	कावेरी	<b>₹</b> €	રૂપ
कामुकी	992	<b>े</b> कार्मुक	900	1	काव्य	93	<b>२</b> ५
कांपिल्य	<b>ξ9</b>	कार्य	४९	88	काश	ं ६३	942
काम्बल	943	१४६ कार्षापरा	१२३		कारमरी	86	34
काम्बविव		५४ कार्षिक	१२३		काइमर्थ	86	¥ <b>ę</b>
क्त∓बोज	902	أ	(		<b>हा</b> श्मीर	Ę٩	१४५
काम्बोजी		४५ १३८ काल	94		गरमीरज	۔ دو آ	928
काम्यदान	•	`	<b>२०</b>		गङ्यपि	98	32
	<b>5</b> 49	Ę	(960	00 - i	गश्यपी	<b>३</b> ८	3
काय	<b>{</b>	७१ ५०	٧¥		নম্ভ	ΧÉ	9₹
कायस्था	49	कालकण्डक	ξĘ		गष्ठकुद्दाल	33	98
कारण	31 96	<sup>५९</sup> कालकूट	39		ाष्ठतस्र	926	\$
कारणा	₹9	२८ कालखंड	७९	६६		( 90	,
कारणिक		<sup>३</sup> कालघर्म	999		ाष्ठा -	99	99
काराणक <b>का</b> रंडव	9	कालपृष्ठ	900	٤٤	(	1960	89
	ĘC	३४ ५६ कालमेषिका	§ 48		ाष्ठा <b>म्</b> बुवा	हेनी ३३	99
कारमा	49		रे ५६	१०९ क	ाष्ट्रीला	५७	993
	40	१११ कालमेषी	ध्युष्		ास _	40	42
कारवी	\$ 69	१५२ कालशेय	१३९ -	५३ क	ासमर्दे	996	98
	996	३७ कालसूत्र	३५	२ क	ासर	६४	. ४
कारवेल्ल		४० कालस्कन्ध	४९	३८ क	सार	३५	२८
कारपश्च कारा	६२	, , , ,	५२	६८ क	सू	१६३	ĘĘ
कारा कारिका	999	998	. 44	९४ वि	वदन्ती	२२	U
भारका कारीष	.94६	१५ काला	<b>५</b> ६	9 º S   Fá	त्र्याह {	998	79
काराय <del>दिहेन</del>	<b>२२७</b>	85 (	996	३७ 🗀	•	१७६	१६३
<del>ार</del> कारुणिक	<b>२२७</b>	५ कालागुरु	<b>د</b> ه		शुक	86	२९
काराणक करिण्य	. 934	१५ कालानु- {	40		कीदिवि	<i>é</i>	9 €
<b>क्राक्</b> य	₹७ .	१८/सार्य रे	20	१२७ कि	कर	१२८	90

शब्द.	ąя.	<b>श्लोक</b>	शब्द.	<b>2</b> 8.	श्लोक.	शब्द.	<b>75.</b>	स्तोक.
किंकिणी	८५	990	कीर	६६	29		( ४१	Ę
किचित्	990		कीर्ति	99	29	कुटी	र् २३८	₹ ે
किचुलक	३५	22		( 9	40	<b>कुटुम्ब</b> व्या	पृत १३४	99
किजल्क	રૂંહ	४३	कील	( 960	१९७	कुटु <b>म्विनी</b>	-	Ę
किटि	ÉR	२	कीलक	929	७३	कुट्टनी	७२	98
किङ	७९	६५	कीलाल	∫ ३२	३	कुट्टिम	२०२	३४
किस	986	96		रे १८१	२००	कुठर	929	48
किस्मिही	48	८९	कीलित	१३९	४२		906	९२
किण्व	932	४२	कीश	ξ¥	ą	कुठार कुछेरक	_	५९ ७९
कितव	∫ ५३	હહ	<b>3</b> 5	36	3	कुईंगक	લ્ફ	•
1-0/14	् १३२	४४		१ १८६	२४०	,	94	9 (5.
क्रित्रर	<b>\</b> \ \	99	कुकर	υĘ	86	कुडव	923	८९
	( 90		कुकुन्दर	60	به به ج	कुड्मल	४६	96
किन्नरेश	90	, -1	কুকুল কুকুল	969	२०३ <b>१</b> ७	कुड्य	89	ጸ
किम्	966	, , , ,	कुक्कु <b>र</b> करमा	६६	34 34	253777	5 999	996
किसु	( 968		कुक्कुभ	<b>५</b> ८	<b>1</b> 32	कुणप	रे १९८	२०
। असी	968	4	কুৰকুং	{ ५९ { १ <b>२</b> ९	79	कुणि	5 46	926
किसुत	1969	२	कुक्षि	٥٥ .	<b>.</b>	જીાળ	} v&	86
किम्पचान	1 965	4	कुक्षिम्म <u>ि</u>		29	कुंठ	१३५	90
		88	कुकुम	र ।२५ ८६	973		( ७४	3 €
कि <b></b> ग्पुरुष किरग्र	90	٠9		د م ده	00	कुण्ह .	रे ११६	₹9
करण किरात	98	33	कुच कुचन्दन	د ب د ب		कुण्डल	85	903
करात किरातति	908	اه <b>۶</b>		१३८	3,0	कुण्डलिन	: 49	<b>u</b>
करातात किरि	•	485	कुचर कुचाग्र	٥٥ -	ر. ده	कुण्डी	48	\$8
किरीट	<i>ڊ</i> لا ج	٦ ٦	কুজ	93	<b>ર</b> પ	कुतप	<u> </u>	39
किर्मीर		908	कुश्चित	982	9 ی	<b>कुतुक</b>	<b>?</b> \$	39
किल	<b>89</b>	90	3.1.4.1	( 88	6	कुतुप	998	<b>3 3</b>
किलास	966	268	কুজ	1 946	३९	कुत <u>ू</u>	998	३३
किलासिन सिन्		५३		900	३४	कुत् <b>ह</b> ल	28	39
किलि <b>ज</b> क	•	-	कुझर	र् अ४१	७९	कुत्सा कुत्सा	<b>२३</b>	93
।काराज्य प		3 €	कुझराश	न ४७	२०	कुरिसत	980	48
किल्विष	96	<b>२३</b>	<b>কুজ</b> ল	990	३९	Sura.	( \$3	966
C-2-	( १९४	<b>२२</b> ३		\ xx	4	कुथ	902	88
किशोर	902	४६	कुट	रे ११६	३२		४७	<b>२२</b>
<b>कि</b> च्कु	9 44	9	कुरक	993	93	कुद्दाल	8 <b>७</b> १ २ ६	906
<b>किस</b> लय	8€	98	9	५२	€€	कुनटी		
कीकस	७९	<b>Ę</b>	<b>1 1 1 1 1 1 1 1 1 1</b>	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	५७	कुनाशक	44	6 3 245-
कीचक	Ę϶	989	ł	રે ५૬	939	कुन्त	906	९३ <b>इ</b> प्
कीनाश	१८३	284	कुटिल	१४२	vg	कुन्तल	૮રૂ	54

शब्द. पृष्ठ.	श्लोक, शब्द	দুষ.		शब्ह.	<u> বৃদ্ধ</u>	<b>रलोक</b>
( الم	७३ कुरर	Ę७	े २३	कुशेशय	३७	80
कुन्द } ५८	<sup>९२५</sup> कुरुवि		949	•	46	<b>૧</b> ૨ <sup>(</sup> ૬
( 996	१९ कुरुवि		1	कुष्ठ }	ve	48
कुन्दुरु ५८	929	<b>∫</b>	×9	(	२०२	źĸ
कुन्दुस्की ५८	१२४ डिल	(	9	कुसी <b>द</b>	993	¥,
कुपूच १४०	<b>6</b> ,8	( ૪૬,	39	कुसीदिक	992	4
कुप्य १२४	९ ९ कुलव	4 -		कुसुम	<b>8</b>	90
_	80	( १२७	1	कुसुमाजन	924	१०३
कुवेर <b>१</b> ११	्रें इ. कुलट		90	कुसुमेषु	Ę	74
कुबेरक ५९		त्थेका <b>१</b> २५	902	कुसुम्म {	978	906
कुबैराव्वी ५१		ालिका ७०	৩	-	902	१३६
ক্সভন ৬६	४८ कुल्हे	रेष्ठिन् १२७	21	इस्ति	<b>३</b> ९	30
- S	४० कुलस	म्भव ८९	7.1	क्तुम्बुरु	990	36
कुमार { २७	१२ कुलह	री ७०	v	कुहना	९५	43
कुमारक ४७	२५ कुला	य ६८	३७	कुहर	३०	9
कुमारी र ५३	७३ कुला	त १२७	ε	<b>3</b> -5	96	<b>S</b>
( 33	८   कला		१०२	क <del>ुकु</del> द	१३४	% '¥
कुमुद <b>्र ११</b>	३ ३ <b>७</b> कुति		४७	कूट {	४३ ६९	ે ૪ <b>૨</b>
( 40	<b>कु</b> ली		९४	*** \	१५९	30
•••	१३ कुली		3,	कृटयन्त्र	928	<b>२</b> ६
	कली	र ३४	२१	क्रुटशाल्मलि	40	¥0
कुमुंदिका ४९	80	( 998	96	कूटस्थ	983	, इं
कुमुदिनी ३ं७	३९ कुल्म	ाष १९८	₹	कूप	३५	२६
कुमुद्रत् ३९	् ।	।।षाभिषुक् १९७	રૂષ		₹₹	90
कु'मुद्धती ३७	३८ कत्स्य		<b>§</b> 4	क्रुपक {	<b>३</b> ३	ባት
कुम्बा ९१	76		३४	कूबर	908	५७
28	<b>48</b>	( ४९	₹€	कूच	८२	<b>५</b> २
कुम्म { १०१ ( १७२	३७ कुबर <b>१</b> ३४	त { २०४	४२	कूचशीर्ष	ę.	, १४४
कुम्भकार १२७	ें <sub>६</sub> कुवर	तय ३७	३७	कूर्चिका	990	88
कुम्भसम्भव १३	ु कुवा	द १३८०	३७	कूद्रैन	<b>₹</b> ९	\$\$
कुम्भिका ३७	्रे कुवि इवि	न्द १२७	Ę	कूर्पर	<b>6</b> 9	60
कुम्मी ४९	४० कुवे	गी ३४	१६	_	35	996
कुम्मीर ३५	30	( ६३	9६६	l -	₹४	39
क्ररंग ६५	र <sub>े</sub> कुश	₹ 9€	२१६		३२	•
कुरंगक १२९	28	( 90	२६	कृष्माण्डक	ĘĘ	944
, ( 63	७४ कुश	<b>1</b>	8	<b>क</b> कगा	६६	98
कुरण्टक { ५३	હ્ય	( 969	२०४	कुक्लास	Ęų	१२
· 43	৬४ ক্রর্ঘ	ो १२५	९९	<b>ভ</b> কবাক্ত	६६	90
कुरबक र्	৬५ कुर्श	ोलव १२८	93	<del>ত</del> কাতিকা	63	66

शब्द.	58°	स्टोक.	शब्द.	ইছ-	ख्तीक '	शब्द.	<b>22.</b>	<b>रलोक</b> ्
क्रच्छ्र {	३२	٧)	<b>25</b>	११३	ć		३७	×ξ
* (	54	५३	ক্তছি	68	Ę	केसर रे	80	<b>२५</b>
<b>ভ</b> ন	१६४	<b>৩</b> ৩	(	4	96	- (	५२ ५२	<i>48</i>
<del>क</del> ृतपुंख	904	६८	कृष्ण }	२०	98	केसरिन्		<b>ፍ</b> ዓ
<b>%</b> तमाल	४७	२४	(	990	३६	_	é۶	-
कृतमुख	938	8	<b>कृष्णपाकफ</b> त्त	५२	६७	<b>कैटम</b> जित्	ď	45
<del>श</del> ्रतलच्या	938	10	<b>क</b> व्याफला	५५	९६	केडर्य	85	80
<b>छ</b> तसापनिका	Vo	v	<b>कृष्णभेदि</b>	48	۶۶	कैतव {	२९	३०
<b>इ</b> तहस्त	904	٩c	कृष्णुला	५५	९८		132	SS
<i>(</i>	,	·	<b>कृष्णुलोहित</b>	39	9 ६	केंदारक	993	99
कृतान्त }	१६३	46 <b>4</b> 8	<b>छ</b> ण्यावत्मीन्	4	48	केंदारिक	773	99
<del>क</del> ्ताभिषेका		· ·	कृष्णश्रुन्ता	49	લ લ્	केंदार्य	993	99
_	<b>90</b>	فع	कृष्णसार	६५	90	केरव	३७	₩
कृतिन् {	25	Ę	कृ ह्या।	44	98	केलास	90	Vo
_	933	*	कृष्णिका	998	99	केवर्त	३४	94
<b>इ</b> त्त	980	903	केकर	હફ	४९	केवतींमुस्तक	48	732
ছুদ্রি	९५	*4	केका	ę۷	źą	केवस्य	95	é
<b>क</b> त्तिवासस्	• •	39	केकिन्	<b>§</b> 6	₹•	केशिक	८३	<b>5 ¢</b>
<b>इ</b> त्या	904	946		-		केश्य	८३	54
<b>क</b> त्रिमघूपक	6	१२८	केतकी	έA	900	कोक {	६५	49
<b>क</b> त्स्न	385	इष	केतन {	905	99	(	Ę	२२
कृपस	४९०	*6	•	963	998	कोकनद	३७	४२
क्रपा	२७	96	केंद्र	165	ξo	कोकनदच्छवि	२१	94
<b>छ</b> पाया	906	65	केदर	956	२०	कोकिल	ĘĘ	95
कुपाणी	939	३३	केदार	993	99	कोकिलाज्ञ	५६	908
<b>क</b> पाछ	454	94	केनिपातक	३३	93	कोटर	λέ	93
<b>कृ</b> पीटथोनि	6	4 इ	केयूर	68	900	कोप्टवी	७२	. 96
क्रिम ।	Ęų	93	केलि	28	३२	(	900	68
<b>कृ</b> मिकोशोत्थ	64	199	केवल	969	२०३	कोटि }	905	९३
क्रमिष्न	५६	906		-८३	९५	(	945	३८
क्रमिज	८७		केशपर्णी	48		कोटिवर्षा	49	933
कुश	989		केशपाशी	૮રૂ		कोटिश	993	92
<b>क</b> शानु	6	48		4	96	कोद्यर	986	96
<b>क</b> शानुरेतस्	٠ ۾	38		७५	૪५	कोठ	99	48
<b>छ</b> शाश्विन्	926	92	•	८३	3.0		२६	Ę
<b>कृ</b> षि	993		केशाम्बुनाम	46	922	-	905	4.5 6.
कृषिक {	993	é	कोशक	94		कोदंड	900	
(	993		केशिन	७५		कोद्रव	998	<b>8</b> E
कृषीवल	993	Ę	केशिनी	46	926	। कोप	२८	२६

शब्द.	ys.	स्रोक,	शब्द,	~~	-2-			
कोपना				<b>E8</b> -	श्लोक,	शब्द.	<b>28</b> .	श्लोक.
कापना कोपिन्	00	8	कीमारी	Ę	३५	कीडा	<b>र् २९</b>	35
कापन् कोमल	<i>१३७</i>	३२	कौमुदी	92	98		रे २१	₹ <del>₹</del>
कोयष्टिक	१४३ ६८	96 315	कौमोदकी	ŧ		कुञच्	ĘĘ	<b>₹</b> ₹
कारक कोरक		₹ <i>५</i>	कौलटिनेय	७३	२७	<del>रु</del> घ्	२८	74
कारक कोरंगी	86	<b>3</b> 4	कौलटेय	७३	२६	कुष्ट	<b>२</b> ९	३५
कोरदूष	<i>ب</i> د موب	<b>9</b> 74	_	८ ७३	२७		( 180	<b>ሃ</b> ७
कारपूप	998	96	कौलटेर	<b>७</b> ह	२६	बूर	3 988	७६
कोल	<b>१३</b>	99	<b>को</b> लीन	१६९	998	A-3-11	( 905	959
444	{ && &&	₹ <b>६</b>	कौलेयक	975	२९	केतव्य केन	988	69
	_		को शिक	86	३४	केय	977	<b>د</b> ۲
कोलक	{	979	, ,	१५६	90	कोड	} &*	<b>.</b>
		Źć	कौशेय	૮५	999	कोघ	( 60	90
कोलदल	५९	१३०	कोस्तुभ	Ę	२८	<sub>काष</sub> क्रोघन	<b>२८</b>	<b>२६</b>
कोलम्बक	<b>२६</b>	<b>'</b>	ककच	939	२३	1	930	38
कोलवल्ली	<b>લ</b> લ્	90	क्रकर {	५३	<b>৬ १</b>	कोशयुग	80	96
कोला	ष्ष	<b>९</b> ७	•	. ६६	७९	कोन्ड	Ę¥	3.
कोलाहल 	२५	24	ऋतु	90	93	कोष्ट्र <b>वि</b> न्ना	<i>ध्दध्द</i>	. ९३
कोली कोविद	४९	३६	ऋतुष्वंसिन्	É	\$8	कोध्री कॉॅंच	५ ६	990
का।पद कोविदार	68	4	ऋतुभु <b>ज्</b>	*	\$	काय कौंचदारण	ĘĘ	<b>२२</b>
का।वदार	80	<b>२२</b>	क्रथन	999	994		910-	80
कोश	{ €	३७ <b>२</b> २१	क्रन्दन {	990	900	क्लम	940	10
कोशफल	•		•	900	923	क्लमथ	940	90
काराक्ल कोशातकी	<b>2</b> 0	930	क्रन्दित	२९	३५	क्लिन किंलना द	980	904
कारमतका कोष	944	٥	क्रम	९४	३९	ानचानाच्य विचारित	9.VE	Ęa
काष कोष्ठ	१२४ १६०	<b>59</b>	(	89	89	ાવલાસલ	186	96
कोष्ण	98	80	क्रमुक }	89	४१	<b>বি</b> ল্ড	<b>१४</b>	95
कीक्कुटि <b>क</b>		₹ <i>५</i>		. <i>é</i> &	185	•	रे १४६	96
को <del>त</del> ्वयक	196	9 o 69	क्रमेलक	922	৬৬	क्लीतक	५६	908
कौटतच	970		क्रयविक्रयिक	932.	96	क्लीतिकका		98
· कौटिक	926		क्रयिक	922	७९	ক্লীব(ৰ)	<b>६ ५५</b> १८२	३९
कीयाप	3	9४ ५९	<b>क</b> य्य	122	<b>د</b> ۹			<b>२</b> १३
कौतुक	<b>7</b> 5	<b>5</b> 4	क्रब्य	96	६३	क्सेश	१५३	79
कोत्हल	75	<b>39</b>	क्रव्यात्	\$		क्लोमन	७९	ĘŊ
कौद्रवीया	992		क्रव्याद	8	<i>पुष</i>	कसा	<b>88</b>	२४
काद्रवाण <del>क</del> ्रोन्ती	५८	9.0	क्रायिक	922	७९		्रे १४९ ( १४९	ک حد
का-त। कौन्तीक	904	9 <b>२</b> ० ७०	किया }	१७५	9	क्रणुन स्थान	२४ १४६	<b>२४</b> e ७
कान्ताक कॉपीन	900		( ਵਿਗਾਕਤ	१३५		क्रथित <del>काम</del>		9 Y
कापान	100	3451	क्रियावत्	162	76	काग्र	२४	58

-				1		
-शब्द.	<b>प्र</b> ष्ठ.	रलोक. शब्द.	মূন্ত,	श्लोक. शब्द.	25.	<sup>र</sup> लोक.
	( १६	१५ क्षिप्त	१४४	60	90	25
च्रा	३०	३८ क्षिप्तु	१३७	३० चित्रहा	2 949	<b>5</b> 5
	( १६१	४७ 🔓 क्षिप	5 9	६४ चेत्राजीव		ę
संगदा	94	-1	र् १४८	११२ चिवसा	940	
च्चान	999	9१४ क्षिया	<b>9</b>	७ च्चेपणी	\$\$	99
च्याप्रभ	Π 99	s (	. ३२	के चिपिष्ठ		98
<b>न्त्</b> तज	७८	६४ चीर }	996	49	986	999
<b>क्षत</b> वत	9€	48	१७८	१८२ चेम	<b>∫</b> 9€ 49	२६
	6 908	५९ क्षीरविकृति		88	( 205	976
चतृ	र्रे १२७	३  क्षीरविदारी	५६	११० ह्यांनी	36	ź.k
	( પદર	६३ चीरग्रका	५६	१९० चोद	105	7
चंत्रिय	९६	५ चीरावी	فإلغ	१०० चांदिष्ठ		99
चित्रिया	69	१४ चीरिका	40	४५ (चीह	986	199
चित्रयी	٠ و٧	१५ चीरोद	३२	र विश	१२६	900
च्चिया	-	१४) चीव	936	२३ चौम	<b>े ४२</b>	98
चतृ	१३७	३५ धत	UU	. 1	( 64	993
च्चपा	- 94	र्भक्षत	<b>ড</b> ঙ		984	89
		( sanfara		- 1 ,	३८	3
च्चपाकर ===	93	, ,	980	१९ हमाभृत	्र ४ <b>३</b>	9
च्स	१७३	ने ४२   शहर <b>व</b>	906	४८   भीता । १७७   <sub>स्तिस</sub>	( ९६	3
<b>च्</b> मा	१७३	१४२ अद्रष्टिका	૮५	1446	<b>₹9</b>	9
न्दमितृ	930	P 7 ATRICIT	-	११० क्वेडा	990	900
क्षभिन्	१३७	३५ सिहराख	३५	२३	( १६०	४३
	( 96	२२ खदा	५५ •	९४ विवित	२०२	३४
क्षय	ي دو	ر ا	966	900	ख	
	988	े श्रुद्राण्डमत्स्यः	-	१९ ख	90	9
_	( १७३	१४५ श्रुवि	998	48 (	. 94	96
च्चव {	99	५२ अधित	934	२० (	Şc	इ२
(	998	<b>१९</b> ह्युप	84	८ खिग }	906	ટેફ
च्चथु	७७	५२ झिमा	998	20	940	90
क्षान्त	386	९७ धुर }	ँ ५६	१०४ खगेश्वर	Ę	२९
क्षान्ति	२८	२४ <b>धर</b> {	956	२० खजाका	998	38
चार	924	९९ धुरक	85	४० खड	<b>હ</b> દ્	85
क्षारक	४६	१६ श्रुरम	986	२० खडान	६६	
चारमृत्तिका		४ धुरिन्	926	९० खडारीट	ĘĘ	<b>9 4</b>
चारित	१३९	४३ अखक	926	१६ खट	954	9 %
	<b>∫</b> ₹c	7 (200 )	989	६१ खद्रवा	66	96
क्षिति '	( 9 ६ ३	۶ ] ا	146	90		936
क्षिपा	940	चेत्र {	c d ś	११ जिल्ल	६४ १०८	4
	<b>▼ A</b>	११ चित्र {	906	१८० खिन्न	€ & 105	ي
				A made of	70	¥

शब्द.	<b>73.</b>	श्लोक.	शब्द.	ga.	<b>खोक.</b>	शब्द.	58°	<b>रलीक</b>
(	92	96		५९	930		૮ર	ق٥
खण्ड {	₹. <b>9</b>	४३	खुर {	903	४९	गण्ड {	909	ર્ફ
सम्बद्धारशु	Ę	३१	खरणस्	७६	४७	गण्डक	६४	¥
खण्डविकार	990	४३	खुरगुस	७६	४७	गण्डकारी	Ęo	989
<b>खण्डिक</b>	998	96	खेट	980	6,8	गंडशेल	**	Ę
खदिर	40	85	खेय	३६	<b>ર</b> ે	गंडाली	६२	948
खदिरा	ξo	989	खेला	२९	33	मडीर	ĘÞ	940
खद्योत	Ęu	२८	खोड	७६	89	गंड्पद	३५	२२
खनि	४४	٠ و	ख्यात	938	5	गंड्रपदी	३५	२४
खनित्र	993	92	ख्यातगहेख	<b>9</b> 84	€.\$	गंड्षा	994	90
खपुर	£&	955	ख्याति	18".	5	गतनासिक	७६	४६
. (	98	३५	}	ग		गद	७६	49
खर {	922	99	गगन	90	•	गञ्च	२०१	₹9
खरग्रस्	७६	४६	गंगा	३६	३१	गंत्री	१०३	45
खरग्रस	υĘ	8€	गङ्गाधर	Ę	-	गम्ध	१९	•
खरपुष्पा	ξò	935	गज	900	३४	_	46	१२३
खरमज्जरी	48	 دع	गजता	909	•	गंधन	१६९	194
खरा	५२	६९	गजबन्धनी	305	४३	गन्धनाकुली		998
खराःवा	५७	199	गजभक्ष्या	46	923	गंधफली	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	५६
खर्जू	- او و	५३	गजानन	હ	३८		•	<i>é</i> &
,	ÉR	. ` 9 ७ ०	गङ्गा	४१	<	गंबमादन	४३	Ę
खर्जूर {	928	, 100 9 é	गडक	३४	90	गंधमूली गंबरस	६२ १२५	१५४ १०४
खर्जूरी			गडु	१९८	90	144(4)	<b>*</b>	17
• • •	£8	900	गडुल	७६	४८	1	٥	५२
-खर्व }	9४२ <b>9</b> ४२	8 é		६९	४०	गन्धर्व 🕹	ફ પ્	99
खल	980	४७	गया }	900	۶۹ ا		902	88
ৰূৱ <b>ু</b>	१३५		1	980	४६	l	909	933
खलिनी	944	<b>૧</b> ७ <b>४</b> २	गग्रक	९८	98	गन्धर्वहस्त <sup>ः</sup>	ह ५०	4.0
खलीन खलीन	903		गगादेवता	٨.	90	गन्धवह	5	६२
ৰনা <b>ৰ</b> ন্ত	966	४९ २५५	નવાના બ	984	६४		८२	۷\$
क्लेदार	993	94	1 461713	94		गन्धवाह	٩,	६२
खल्या खल्या	948	<u> </u>	( TITILIANI	48	४८	गन्धसार	وی	939
-खात -	<i>₹५</i>	۶۲ ۶۰	गणहासक	५९	१२८	गन्धाश्मन्	924	902
			1 મશાાધ્ર	ঙ	३८	गन्धिक	926	<b>९०</b> ३
खादित न्यस्ट	986	190	गणिका {	५२	৬৭	गन्धिनी	५८	173
<u>ज्</u> यारी	१२३	۷۵	1	७२	99	गन्धोत्तमा		35
* खारीक 	993	90	गणिकारिका	५२	६६	गन्धोली	६८	<b>२७</b>
-सारीवाप	993	40	गणित	983		गंभंस्ति	18	33
रिवस	\$6	L.	गणेय	181	Ę¥	गर्भीर	३४	94

			1					
शब्द.	বৃষ্ট•	स्रोक.	शब्द.	<b>28.</b>	इलोक.	शब्द.	<b>9</b> 8.	श्लोक.
गम	909	९५	गलकम्बल	920	\$ 3	गिरि	∫ ४३	*
गम् न	905	९५	गलन्तिका	996	39	14114	£ 940	19
गम्भारी	86	३५	गलित	986	908	गिरिकर्णी	ष६	908
गंमीर	३४	94	गलोद्देश	902	86	गिरिका	.۾ بر	92
गस्य	984	९२	गल्य	948	४२	गिरिज	924	908
गरगा	948	३७	गवय	६५	99	गिरिजा	U	३७
गरल	३१	8	गवल	924		गिरिजामल	924	900
गरा	७९	३९	गवाद्य	४१	2.1	गिरिमल्लिका	५२	६६
गरिमन्	99	६६	गवाक्षी	६२	948	ग्हिरिश	Ę	<b>₹</b> 9
गरिष्ठ	986		गवीश्वर	995	,4	गिरी <b>श</b>	É	३१
गरी	५२	६९	गवेधु	994		गिलित	986	990
गहड	É	२९	गवेधुका	994		गीत	24	२६
गरुडध्वज	4	98	गवेषगा	4.5	941	<b>गीर्था</b>	१४८	99
गरुडाग्रज	98	३२	गवेषित	380	7041	<b>पीर्वाग्र</b>	8	9
गरुत्	६८	36	गठ्य	196	701	<b>गीष्पति</b>	93	२४
. [	Ę		गट्य	999	ξo	गुग्गुल	28	źA
गरुरमज-	६८	38	गब्यूति	४०	96	गुरुझ	<b>S C8</b>	१०५
ے۔	9६२	40	गहन {	<b>አ</b> ጸ	9		८ ११४	<b>२</b> 9
गर्गरी	929	• • •		988	6.71	गुच्छक ———	84	76
गर्जित 🖁	99 909	ے ع	गह्नर {	*3	7	<b>गुच्छा</b> दें	68	904
गर्त	₹0	``,	(	966	1.	पुजा पन	44	56
गर्देभ	922	ย่ง	गांगेय 🖁	१९४ १७५		ig Ge	960	४२
गर्देभांड	88		गांगेरकी	५७		गुडवुष् <b>व</b>	86	ર્હ
गर्द्धन	938	1	गाढ	30	į ·	<b>पुडफ</b> ल	<b>86</b>	२८
गर्भ {	७५		गा <b>णिक्य</b>	ું હર્	1	पुरा पुरुष	५६	904
(	१७२		गां डिव	900	1	र्डू <b>ची</b>	५४ १८	८२ <b>२</b> ९
गर्भक	66	1	ार्ड्य गांडीव	900	جه الاه	i	160	80 73
गर्भागर	४१	٧	.,	७९	८४ र	ख्य -{	900	64
गर्भाशय	७५	₹८ ३	गात्र {	909	४०	Ì	994	२८
गर्भिणी	७२	२२ :	गात्रानुलेपनी	۷۵	100		१३०	२७
गर्भोपघातिनि	989		गान	÷ 4	1 4		३३	५१
गर्भुत्			गान्धार	ર	. 1 4	(गित	388	66
गर्व	२८		गायत्री	40	૪૬ વિ	<b>ि</b> ठत	984	८९
गर्वित	२४६	903	गारुत्मत	१२४	° 2   Ω	<u>इ</u>	60	12
गर्वित गर्ह्या गर्ह्य गर्ह्यवादिन्	२३	93	गार्भिया	७२	२२ गु	<sub>ब</sub> न्द	६३	982
गह्ये	980		गाईपत्य	९१	99	<u>न्द्रा</u>	्रिष्	ام الله هـ الله الله الله الله الله الله الله الله
गहांवादिन्	936	३७	गालव	86	३३		988	. 45
ग्ल	८२	66	गिरू	२१	۶۱و`	<b>ुस</b>	980	108
		-			-	· ·		1 " 4

श ब्द.	पृष्ठ.	क्लोक.	राब्द्र,	वृष्ठ		श्लोक	शब्द.	पृष्ठ.	क्लोक. इलोक.
गुप्तवाद	9:58	9504	पृहिन		68	. 3	गोपति	120	Ę tę
गुप्ति -	968		(		६९	४३	गोपरस	924	308
गुर <b>ग</b>	, 940	99	एहाक {		934	95	गोपानसी	88	9%
3.4	9.5	28	गेन्दुक		66	936	गोपाथित	986	90€
ग्रह }	68		गेह		४१	8	गोपाल	998	40
<b>J</b> . (	१७६	96:1	गैरिक {		88	٤	गोपी	, પૃહ	99*
गुर्विगी	७२	२२	गारक र्		948	98	(	૪ <b>૨</b>	9€
गुल्फ	60	७३	गेरेय		१२५	१०४	गोपुर }	५९	937
. (	* 6	٩.	_	(	995	६०	(	906	968
}	હશુ		गो (गौ)	) }	920	६६	गोप्यक	986	90
गुल्म 🕽	900	69	_	(	946	२५	गोमत्	995	46
(	१७३	985	गोकण्टक		<i>e</i> 4,4	4,9	गोभय	116	ų o
गुल्मिनी	४५	5	गोकग्र	<b>{</b>	६५	90	गोमायु	६४	4
गुवाक	६४	989		(	<b>دع</b>	८३	गोमिन्	998	46
गुह	v	₹९	गोकर्गी		48	68	गोरस .	995	५३
गुहा {	४३	Ę	गोकुल		998	५८	गोदं	७९	६५
•	مربع	85	गोक्षरक		درنع	<i>९</i> ,९	गोल	986	20
गुह्म	908	948	गोचर		२०	e	गोलक	. <b>৬</b> ४	₹€.
गुह्यक	٠ ٧	99	गोजिह्या		46	999	गोला	976	906
गुह्यकेश्वर	90	ĘZ	गोडुस्बा		६२	346	गोलीड	89	\$ <i>ġ</i> .
गूढ	. 88.	૮૧	गोड		996	96	(	<b>ષ્ક</b>	908
गूढपाद	₹9	v			४ ३	9	गोलोमी }	६२	9 44
गूढपुरुष	96	93	गोत्र		68	9	(	924	113
गूथ	७९	६८	i '		966	960	गोवन्दनी	49	44
गून	१४६	9.6	गोत्रभिद्	,_	U	४२	गोविड	996	40
गुजन	६१	986	गो	{	३८	<b>ે</b>	गोविन्द {	ષ્	14-
गृष्तु	336	२२	i '	L	999	६०		966	23:
रध	६६	२१	गोदारख		993	98	1 416714	69	15%
गृध्रसी	994	90	गोदुहू		995	<i>ب</i> ن	1 4118	३९	15
गृष्टि	६१	949	गोघन		995	५८	गोष्ठपति	909	114
/ (	४१	8			900	82	गोष्ठी	90	<b>چ</b> الة
<b>∕</b> एह	, 89	<b>b</b> y		Ī	46	999	गोध्यह	966	54
(	14. 966	२३८		٠	८२	. 65	This was	998	
गृहगोधिका	्रे/ ६९	35	1		३५	25	. mas	68	904
गृहपति /	36	94	1 - 7		198	10	<u>ज</u> ोस्टकी	५६	206
गृह्याछ 🗗	356	20			ષ્ <b>ર</b>	933	गोस्थानक	35	9₹
गृहस्थूग	२०१	\$ 0			है o	*	٦	4	14
रिहागत	<b>5</b> ₹	37	a	<b>S</b>	995	ر <b>ن</b> ېز	<u> </u>	₹ <b>¥</b>	
गृहाराम	. ** **		गीप	}	909	7. 9. g. j.	गोधेव	€¥	. \$
र्यहावप्रहर्णा १	1 84 <b>1</b>	, <b>3</b> 3			, - ,	- •	T.M.		4

शब्द.	<b>T</b> 8.	क्लोक	शब्द.	द्व.	श्लोक.	शब्द.		<b>28.</b>	श्लोक.
गोचेर	és	Ę	<b>ग्रीष्म</b>	90	96	<b>वृ</b> षि।		18	३३
<u> </u>	20	93	प्रैंवेयक	6.8	308	<b>घृत</b>	<b>{</b>	196	५२
गीर }	<b>₹</b> 9	. 98	ग्लस्त	100	, 999	l	(	368	v Ę
	948	१८९	ग्लह	9 8 9	४५	वृष्टि ———		4.8	3
गौरी }	<b>.</b> 	३६ ८	ग्लान	96	५८	घोटक		१०२	À.\$
यौद्यीन	39	93	ग्लास्तु	66	५८	घो <b>रा।</b>		८२	69
प्रान्थ <b>श</b> न्थ	906	969	ग्ली		98	घोिणन्	_	ÉR	२
সংখ শ্ৰখি	ξ <b>ξ</b> .	952		घ	1	घोंटा	{	<b>89</b>	३ ७
जै <b>थिक</b>	976	990	घट	994,	३२	घोर	(	éA	968
जायर, <b>जै</b> यित	188	28	घटना	190'	700			२७	२०
त्रीयपर्या	48	250	घटा	990	1001	घोष		Rβ	₹•
<i>*</i>	<b>%</b> \$	30	घरीयन्त्र	930	\-	घोषक		40	996
श्रंथिल {	મુફ	42	घट	986 ,	96	घोषग्रा	_	२ ३	92
	<b>7</b> 8	20	र्वटापथ	80	96/1	त्राया	<b>{</b>	८२	65
त्रस्त {	386	999	घण्टापाटि	র ४९	३९		C	984	90
	98	ع ا	वण्टारवा	५६	,	गणतर्पग		२०	11
班 }	, 985	اء		<b>र</b> २१	6	गत		984	5.
(	966	२३६		२५	8		_	च	
ब्रह् <b>णीरुज्</b>	UU	५५ ह	<b>व</b> न	२६	8 =	r	}	<b>२८६</b>	688
ग्रहपति	98	३०		906	99	कोरक	· ·	969	وح
शृहीतृ	736	२७		1989	999	1कारक	_	<b>§</b> 6	3,64
आम {	* ₹	99 8	ग्नरस	३२	4		1	६ ३२	२८
4	१७३		नसार	<b>6</b> 9	930		1	दर ६७	<b>ه</b> ۶۶
श्चामणी	989		नाघन	968		42	4		**
श्रामतक्ष	920		र्म	75	33		ĺ	903	44
श्चामता	948	४२ घ	स्मर	934	20		ļ	908	96
क्रामस्पीन ्	. <b>9</b> ₹७	९ घ	<b>ন্ধ</b>	94	_ #		L	968	१८२
<b>ज्ञा</b> मान्त	*\$	२० घ	ाटा	ં ૮૨	17	ककारक		48	925
ज्ञामीया /	٠ ٩٩ ;		ाटिक '	109	९७ च	कपाणि		4	₹●
<del>ग्राम्य</del>	२४	32		7		कमद्क		<b>49</b>	980
क्रास्यवर्ग	<b>9</b> §	५७ व	ातुक	<b>१ १४०</b> १३७		कयान		१०३ 🍴	49
मानुत }	85	. 9	LTP	•	ı	कला		<b>43</b> )	960
	*} ' 9\$6	१०६ व		, <b>६३</b>		कवर्तिन्	1	<b>5</b> 6	₹
आंब	195 '		टिका T	60	· 1	कवर्तिनी		<b>4</b> 2	१५३
<u> </u>	<b>\$</b> 4	५४ वि	ष र्यात	. 4956		काहक		Ęv	२१
FR {	9¥\$	२१ द्वा	WG.	130	३२ च	<b>क</b> वाल	{	11	F
त्रोहित् 🦠	80	سماوج	isur (	्र २७ ी	اره			A.Ś	*
त्रीया 🔭	42	₹7 <del>9</del> 4	uri -	943	३२ वा	FIN'		ço .	23
		[	•	C 989 -	५१ वा	EIN	٠ (	44	e É

शब्द.	হন্ত,	ऋोक.	शब्द.	Sa.	श्लोक	शब्द.	Z2.	श्लोद.
चित्रन्	३१	v		( 98	93	चर्मकषा	ξo	983
चक्रीवत्	988	vv	चन्द्र	3 89	986	चर्मकार	120	•
चक्षुःश्रवस्	३१	v	<b>.</b>	( 966	१८२	کے (	94	YĘ
चक्षुस्	८२	53	चन्द्रक	<b>\$</b> 6	<b>₹</b> 9	वर्मन् {	906	\$0
नक्षुध्या	१२५	9-2	चन्द्रभागा	३६	₹४	चर्मप्रमेदिका	131	३४
ব্দ্বন্ত	983	७५	चन्द्रमस्	98	93	चर्मप्रसेबिका	939	<b>ફે</b> ફે
चम्रला	99	9	चन्द्रवाला	46	924	चर्मिन् {	५०	AÉ
चंचु	٧٠	49	चन्द्रशेखर	Ę	३०		904	9
43	६ ६८	₹€	चन्द्रसंज्ञ	60	9३०	चर्या	<b>5</b> ₹	34
चटक	€ €	96	चन्द्रहास	906	68	चर्वित	386	990
चटका	€ <b>€</b>	96	चन्द्रिका	92	· ·	चल	ΥĘ	30
चटकाशिरस	१२६	90		( 5		चलदल	80	90
चगुक	118	96	चपल	<b>न १२</b> ५	99	चलन	185	48
ৰ্ণ্ড'	१३७	३२		( १३९		वलाचल	98§	GR
चण्डा	५९	१२८	चपला	<b>§ 33</b>	3	चितत {	905	9.6
<b>ৰ</b> ण্डান্ত	98	39	चपेट	<b>L</b> 44		(	388	49
चण्डात	५३	७६		<b>دع</b>		चिका	<b>પુ</b> પુ	. %
चण्डातक	૮ફ	995	चमर चमरिक	<b>۾</b> دمين	1	चन्य	44	36
(	930	٧	•	89		चषक	१३२	۲ş
चण्डाल }	356	9	चमस	२०२		चषाल	59	34
(	. १२९	98	चमसी	994		चाक्रिक	908	30
चण्डालवल्लकी	930	39	चमू	\$ 908 } 900		चांगेरी	<b>₹</b> o	980
चंडिका	u	30	STUR	६५	ا ہ	चाटकेर	ĘĘ	58
चतुःशाल	89	· §	चमूर चम्पक	47			985	₹०
चतुर	925	94	4444	<b>6</b> 80	₹ ₹   ₹	वाण्डा लिका	930	₹1
चतुरंगुल	४७	23	चय	{	Val	वातक	६६	. 70
चतुरानन	4	96		5 94	28	<b>वातुर्व</b> ण्य	68	' <b>R</b>
चतुर्भद्र	é	46	चर	{ 98}	80	वाप	900	ं ' ८३
चतुर्भुज	4		चरक	308.	33	वामर	900	) <sup>)</sup>
चतुर्धर्भ	36		चरण	७९	99	वामीकर	188	34
चतुष्पथ	**	90	चरणायुध	' ६ ६		त्रामुण्डा	٩	34
चतुरब्दा	980	96	चरम	485	د٩] ۽	गम्पेय {	49	<b>\$</b> 3
चतुह्यिणी	930	ا . م	<b>चरमक्ष्मा</b> मृत		'3	ا	48	44
		15	वराचर	488	७४ =	गरं {	\$6	j 93
चत्वर {	¥₹ <b>\$</b> 9	6 4 1	वरिष्णु	988	98	(	940	. 98
ंचन 🔍	969	, 10	व <b>र्</b> वर्चेरी	59	7, 71	गर <b>टी</b>	<b>49</b>	286
			वचरा	554			<b>9</b> 96	99
चुन्दन {	< <b>4</b>	1 988	चर्चा {	15	१ ३	ार्डिक्टा एडिक्टा	980	48
· (	80	131	` (	F	११२ =	।।।पपप	6	972

शब्द,	पृष्ठ- श्ली	<b>ह</b> ' शब्द.	<b>85.</b>	श्लोक	शब्द.	<b>79.</b>	स्टोक.
<sup>-</sup> चालनी	994 3	६ चिरप्रसूता	929	vg	वैत्रस्थ	90	Vo
<b>ৰা</b> ष	६६ १	६ चिरबिल्व	५०	७,७	चैत्रिक	90	94
<b>चिकि</b> त्सक	<b>4</b>	७ विररात्राय	968	9	चैल {	<b>د</b> لع	994
विकिल्सा	હદ્દ ય	॰ विरस्य	"	9	461 {	969	202
<u> </u>	د ۲	५ चिराय	"	9	बोच {	५९	138
्बिकुर {	१३० ४	६ चिरिटी	y o	٩	(	२०१	३०
·चिक्कग् °	19¢ ¥	६ विलिचिम	३४	96	चोरपुष्पी	46	ं १२६
चिक्कस व	२०२ ३	ر ادا	ĘĘ	<b>२</b> 9	चोल	८६	996
चिंचा	<b>89</b> 8	है चिल्ल {	96	ξo	चौर	925	२४
<del>-</del>	99	रे चिन्ह	92	90	चौरिका	928	24
	१८९	१ चीन	ĘĿ	9	चौर्थ	985	<b>२</b> ५
· <b>चिता</b> १	199 99		२०१	39	च्युत	986	908
'শিবি ৭	199 99		ĘU	۲ ، ۶ د	<b>.</b>	<b>3</b>	,- ,
<b>चि</b> त्त	95 3		२०९		छगलक	122	υę
वित्तविभ्रम	२८ २		ξo	7.1	<b>छगलां</b> त्री	Ę o	930
	२८ र	1 (	198	, , , ,	গুরু	900	<i>₹₹</i>
चित्ताओग,			986	20	77	५६	904
		्र • चिकिका	Ęo		क्षप्रा {	६३	107 9 <b>६</b> ७
Ł.	<b>२</b> ९ 9		96	Ęo	77 (	996	30
चित्र {	२७ १	1 -	198	· 1	छत्राकी	५७	994
	७८ १७	<b>पू</b> चुक	€0		(	४६	98
"" (	ين يون	1 300	ęد	1	छद {	Ęċ	7 €
	५३. ८		9 <del>2</del> 8	<b>₹</b> 9	छदन	86	98
•	८६ १२	चूडाम िया	<b>68</b>		छदिस्	•	
मित्रकर १	२७., (	चूडाता	£\$		· ·	४२	98
্রিস্কুর	४७ ३।	चूत	४१ ४८	9 <b>६</b> ० 33	छ्यन् (	१९	₹•
	५६ 90		66	1	<b>ध</b> न्द }	94 <b>9</b> 9 <b>६</b> ६	<b>₹</b> 0
चित्रपणी	५५ ५	4 '	905	938	(	144 <b>59</b>	66
(	چ م	चर्णकन्तल	43	٩,६	छन्दम् }	964	२२ <b>५३</b> २
	8.g 3	वर्षि	<b>99</b> 4	1	•		
	१६८ १०	चातका	909	<b>३</b> ८	ह्यम {	98E	77
	<b>3</b> 8 <b>\$</b>	चेटक	986		<b>इ</b> त	770	36
् चित्रशिखंधिज		र्ष चेंत	990	93		` 9 <b>२</b>	906
्वित्रा }	46	محداق	49		छ्वि {	98	<b>1</b> 677
•	\$ <b>?</b> 94	۲ اغص	16	49	_		
चिन्ता चिपिटक १	२ <b>४</b> १९७ ४	ਾੇ ਜੇਕੜਾ	95		झाग	988	υĘ
विषुक विषुक	१९४ ४ ८ <b>९</b> ९	- 1 5	15	<b>₹</b> 1	<b>ड्रा</b> गी	122	_ 4
'चिरिक्रिय '		७ चैत्य	γŊ	41	द्यात {	64 ******	YY
		७ बेन्न	40			180 "	-303
	-	* ' 7 <b>'</b> 3	14	- тұ[	南沟	. <b>%•</b>	77

						7		
शब्द,	वृष्ठ.	श्लोक.	शब्द.	ZB.	<b>श्लोकै</b> '	शब्द.	<b>9</b> 8.	গুৰু,
म्रादित	986	96	<b>ज</b> टिला	48	१३४	जम्बाल	33	5
छान्दस	68	Ę	(	60	৬৩	जम्बीर {	४७	२४
छाया'	904	१५७	जठर रे	983	७६	MANIE S	५३	45
न्त्रित	986	903		909	968	जम्बु	80	98
व्यक्	३०	२	जड.	93	98	जंबुक {	Ę¥	4
ञ्जिदित	186	99	1007	१३८	३८	जंबुक {	944	ই
<b>ল্ঞি</b> দ	980	903	<b>ज</b> ङ्खल	७६	४९	जम्बु	<b>Y</b> 6	98
<b>ল্গিন্ন</b> হা	48	₹ 68	<b>ज</b> तु	60	924	जम्भ	४७	२४
छुरिका	906	९२	<b>ज</b> तुक	990	<b>∀•</b>	जम्भभेदिन	८७ :	४३
छेक	ĘS	४३	जतुका	६७	२६	जम्भल	४७	२४
छेदन	988	U	<b>जतुकृत्</b>	६२	943	जम्भीर	४७	२४
• • •	জ		जत्का	६२	943	(	५२ <sup>,</sup>	ĘĘ
(	રેલ	Ę	ज्ञु	۷۰	96	जय }	990	990
जगत् }	१६५ १६५	60	ज <b>न</b> क	ξυ	२८		940	97
	₹6	Ę	जनंगम	125	99	जयन	940	१२
जगती {	988	હવે	जनता	948	87	जयन्त	۵	*4
जगत्त्राग्रा	•	६२	SI-KII	96	30	जयन्ती	. ५२	६५
जगर जगर	908	Ę¥	जनन }	<b>دع</b>	<b>`</b> 9	जया	५२	۽ ۾
	939	89	जननी	७३	<b>ર</b> ૬	जय्य	908	n&
जगल	141 <b>9</b> 86	199	जनपद	<b>₹</b> ९	6	जरण	998	3 €
जग्ध जग्धि	=	• 44	जनयित्री	७३	<b>२</b> ९	जरत्	७५	¥4.
	998	רר <b>צט</b>	जनश्रुति	22	y	जरद्गव	920	· <b>ę</b> .g
जघन जघनेफला	60		जनादन	4	99	जरा	હહ્	89.
जनमञ्जा (	<b>49</b>	Ęg	जनाश्रय	89	8	जरायु	હષ્	36
जघन्य }	१४३ १७५	<b>८</b> १ १५९	जनात्रय जनि			जरायुज	980	40
(	७५	8.5	जान	96	३०	- (	३२	· 3
जघन्यज }	१२६	9	जनी }	६२ ७०	143 3	जल {	988	२३
जङ्गम	983	७४	ज <u>नु</u> स्	96	े ३०	जलजन्तु	इ४	२०
जंगमेत्रर	983	७३		-		जलधर	99	v
जंघा	60		जन्तु जन्मस्य	96 80 '	३०	जलनिधि	<b>३२</b>	ર
जवा जंघाकरिक	908		जन्तुफल		• 22	जलनिर्गम	३२	4
जवाकारक जंघाल	908	५०	जन्मन् जन्मिन्	96		जलनीली	३७	३८
<b>जवा</b> ल ८	<b>8</b> 4	- I	जान्मन्	96		जलपुष्प	988	२३
ł	49	99 928	जन्य {	<b>9</b> 6		जलप्राय जलपन	३९ <b>११</b>	90 <b>U</b>
जटा 🚽	, ,	'``	7	990 <b>96</b> 4		जलमुच् जलव्याल		4
	૮રૂ	९७	जन्यु	96		সর্বাহ্যক্রি সর্বহ্যক্রি	<b>₹9</b>	
- i	949	३८	जप	९५			₹ <i>\</i> q	<b>२३</b>
जटाजूट .	Ç	<b>३</b> ५		4 <b>5</b>	vę	जलाधार	३५ ८३५	<i>₹ \</i>
बंटिन	84		जम्पती	पुर ७४	₹¢	जलाशय	<b>}</b> ३५ ६३	વૃંધ વૃંધ
		,	** ****	<b>J</b>	2.1		. 11	160

शब्द.	<b>93.</b>	ऱ्लोक.	शब्द.		5a.	श्लोक.	शब्द ,		হন্ত.		श्लोक,
<b>ज</b> लोच्छ्वास	źξ	90	जायाजीव		986	<b>9</b> २	जीवंतिका	{	48		८२
<b>जलो</b> कम्	३५	२२	जायापति		48	३८		l	48		८३
जलीका	३५	<b>२</b> २	जायु		υĘ	५०	जीवन्ती		ęο		985
बल्पाक	336	₹ \$	जार		48	३५	जीवा		ξo		188
<b>ज</b> िएत	980	900	जाल	5	źĸ	96	<b>जीबा</b> तु		999		980
<b>जव</b>	٠ ۽	६४	<b>ા</b> ણ	ſ	969	२००	जीवांतक		986		ጎሄ
(	906	७३	जालक		४६	96	जीविका		992		9
ſ	908	૪ૡ	जालिक		176	98	जीवितकाल		999		920
जवत -	906	७३	जाली		<b>দু</b> ও	996	जुगुप्सा		१३		93
, (	948	३८		5	926	15	<b>जुंग</b>		Ęo		936
व्यवनिका	ح۶	920	जाल्म	Į	934	90	ভাষ্ট্র		42		२५
बहुतनया	₹€	39	जिघत्सु		934	२०	जूति		948		₹6
<b>जागरा</b>	949		র্জিগী		48	50	जूर्ति		948		₹€
<b>जागरितृ</b>	130	३२	जित्वर		908	७७	जुम्म		२९		34
जागस्क	930	३२	<b>জি</b> ন		ч	93	ज्ञामगा		28		<b>34</b>
जागर्या	141	98	e	(	•	४२	54	,			
जागृतिक	३१	99	<b>জি</b> ণ্ড্য	ί	906	งง	जेतृ	}	90E		७४ ७७
जांचिक	,9 o Ę	१०	<b>जिह्य</b>	5	982	وي	जेमन	•	198		
बास {	96	39	।जक्ष	j	908	989	जनन जेय				५६
micr S	964	<b>د</b> لا	जिह्नग		39	e	গণ জীঙ্গ		906		48
<b>जातरू</b> प	988	94	<b>जिह्</b> ।		८२	59	<b>অ</b> স		905		4
<b>जातवेदस्</b>	6	५३	जीन		હધ	४२	۰	(	92		48
जातापत्या	90	16		(	11	v	जैवातृक	1	9 3 3		Ę
. [	96	₹9	जीमूत	}	५२	69		(	५५६		99
षाति -{	45	७२	-•	(	962	40	जॉगके		60		975
, ι	963	६८	जीरक		996	38	जोत्स्नी		40		995
बाती	80	99.	जीर्ण		<b>હ</b> ષ્	४२	जोषम्		966		२५१
<b>जातीकोरा</b>	64	9 8 2	जीर्णवस्त्र		دي		হা		68		4
वातीफल	৫৩	9 2 2	जीर्गी		185		इपित		986		36
बातु	968	٧		(	. 93	२४	इस		985		36
जातीक्ष	120	<b>Ę</b> 9	<b>जाव</b>	ί	111	999			95		9
बानु	60	७२	जीवक	Š	85		शात सिद्धान्त	Ŧ	9,6		44
बावाल	926	11	ગાવમ	Į	Ęo		श्चाति	٠,	७४		₹8
बामातृ	४७	३१	जीवंजीव		Ęć	· ·	ज्ञातृ		130		₹•
जाप्ति	903	988		(	33		<sub>शास</sub> ज्ञातेय		40		34
नामव	¥ø	99	जीवन	1	112		शासन ज्ञान		95		
जास्मृतद	928	94	जीवनी	•	Ęo	982	शाय ज्ञानिन्		35		€ 9 <b>8</b>
वायक	64	924			Ę0	982	di i ziaT	_			
वाया	4.	•	जीवनीषध		111	900	ज्या	{	३८	•	3
		• 1	-113-1134		,	7*01		(	900		<b>د ب</b>

शब्द.	9इ.	' स्लोक	शब्द.		<b>9</b> 8.	क्लोक.	शब्द.	Za.	खीड़
ज्यावातवारग	900	68	डम्ह		२६	6	तनय	ξυ	34
ज्यानि	988	. ,	डयन		903	५२		७९	49
(	७५	४३	<u> इह</u>		49	Ęο	ন <u>ৰ</u>	989	43
ज्यायस {	964	२३५	<b>डिं</b> डिम		२६	6	1" 1	१४२ १६९	99 998
ज्येष्ठ {	90	98	<b>डिंडीर</b>		924	904		908	44
(	960	89	डिम्ब		940	98	तनुत्र	45	44
<b>ज्योतिरिंगग्र</b>	Ęo	२८	डिम्भ	5	६८	३८	तनू	186	55
ज्योतिषिक	56	98	1044	ſ	902	9 ई४	तन् इत	6	4
ज्योतिष्मती	<b>६</b> 9	940	डिम्भा		७५	89	तन्त्रपात्	<b>§</b> 6	₹.
ज्योतिस्	964	२३०	<b>डुंडु</b> म		<b>₹9</b>	م	तनू रह	<b>4</b> 0 63	<b>કર્</b>
ज्योत्स्ना	92	98	<b>ভু</b> বি		इं५	२४	तन्तु	930	24
ज्योत्स्नी	40	996			ढ		तन्तुम	198	99
ज्यौत्स्नी	94	٠,	ढक्का		२६	Ę	(1.8.1	Ę'n	92
ज्वर {	99	५६			त		तन्तुवाय {	920	Ę
346	948	३८	तक		115	48	तन्त्र	968	964
उच्लन	6	والخام	तत्त्वक		944	8	तन्त्रक	64	998
<b>ज्वा</b> ल	٩,	५७	तच्चन्		१२७	9	तन्त्रिका	48	टर
	<b>₹</b>		तर		३२	৬		ई०	₹ <b>'</b>
<b>म</b> टा	49	920	तरिनी		≨€	. ३०	तन्द्री {	900	90€
क्रिटिति	968	3	तडाग		३५	36	तप	30	98;
कर	४३	4	तडित्		99	9	तपःक्लेशसह	58	* 5
<b>क्र</b> क्तें र	२६	E	तडित्वत्		99	v	= S ·	98	\$ 3
<b>ऋ</b> ल्लरी	954	90	तण्डक		२०२	\$ 3	तपन {	३१	. 3
<b>श</b> ष	źR	90	तण्डुल		५६	306	तपनीय	158	28
क्ष	<b>५</b> ७	990	तण्डुलीय		Ęo	936	तपसू {	96	94
काटल	85	39	₁त	<b>{</b>	२५	૪		964	२३३
काटलि	२०३	३८		E	388	٩e	तपस्य	90	96
<b>मा</b> बुक	85	४०	ततस्		968	Per	तपश्चिन्	<b>58</b> ,	४२
किंटी {	43	४४	नत्काल		300	ø.	तपस्विनी	48	35K
•	4	94	तत्व		74		तम	78.	24
<b>झिलिका</b>	Ęu	२८	तत्पर		978	م	(	98	₹ ₹
<b>भीव</b> का	Ęu	२८	तथा		990	ور ور	तमस् 🕇 -	३० १८५ <sub>०</sub>	933
	3		न्थागत		eq.		तमस्विनी	94	¥
रंक <del>िकि</del> शन	२०२	* 33	<sup>नश्</sup> य त <b>द्</b>		२ ४ <b>१</b> ८९	<b>8</b> 8 8	तमात्यमा	५२	96
दिहिंभक - <del>विका</del> र	\$ &	३ <i>५</i> ७	तद्रपेख		122	ر د ع	तमाल {	२०२	. ₹ ₹:
ट्रीका जंगक	9 <b>९</b> ५ <b>५</b> 9	પુદ્	तदा		958	28	तमालपत्र	66	<b>૧</b> २₹
<b>हुं</b> हुक •	41 E	79	त <b>दा</b> त्व		900		तमिस्र	₹•	<b>Ş</b> i
डमर	440	98	तदानीम्		953		वमिस्रा	94	*

<del></del>								
शारह.	<b>9</b> 8.	श्लीक	शब्द.	<b>5</b> 8.	इली है.	शब्द.	gg.	श्लोक
त्रमी	94	8	तस्कर	929	२४	तिक	२०	\$
<b>त</b> मोनुद	966	८९	तांडव	२६	96	तिक्तक {	ं २०	9
त्रमोपह	966	२३८	(11-1	२ : २	३४		६२	944
त्तरध्र	६४	9	तात	५२	२८	तिक्तशाख	४७	२५
<b>स</b> रंग	३२	<b>પ</b> ્	नांत्रि	9,6	44	तिग्म	9 4	35 62
त्रंगिणी	. ३६	३०	तापस	88	४२	तिहसुबन्तचय	२१	२
_~ (	98	३०	तापसतर	40	84	तितउ	994	२६
चरिय र्	\$ \$	० <b>१</b> ५७	तापिच्छ	५२	Ęc	तितिचा	२८	२४
	भ <b>है</b>	-	तामर	३७	४०	तितिश्च	१३७	३१
त्तरपण्य	<b>₹</b> ₹	99	तामलकी	<b>બુ</b> લ્ડ	970	तित्तिरि	६८	३५
सरत }	ሪ४ የ४३	१०२ ७५	तामसी	94	وم	तिथि	44	9
तरका	196	40	ताम्ब्लवली	46	920	तिनिश	४७	3 6
(	94	Ę¥	ताम्बूली	ع به	१२०	तितिडी	<b>୪</b> ९	* \$
वरस् {	990	908	ताम्रक	928	९७	तिंतिडीक	996	34
तरस	30	ĘĘ	ताम्रकर्णी	99	4	तिन्दुक	85	३८
===f:===	904	७३	ताम्रकुटक	१२७	۷	तिदुकी	984	6
त्तरस्विन {	904	936	ताम्रच्ड	६६	96	तिमि	₹४	38
तरि	३३	90	तीर {	ર ધ્	२	ति मिंगिल	\$.8	२०
तर	88	4		106	988	तिमित	980	904
त्रक्ण	ं ७५	४१	तारकजित्	v	80	तिमिर	३०	Ę
त्र्णी	40	6	तारका }	9 <b>३</b> ८२	<b>٦</b> ٩ ج:	तिरस् {	966	<b>२</b> ५६
तर्क	98	Ę	तारा	93	۰. ۲ <b>۹</b>		968	٩
तर्कविद्या	<b>२२</b>	فع	तारुव	હધ્યુ	80 / 1	तिरस्करिणी तिरस्किंया	۶۶	920
तकारी	५२	<b>\$</b> 4	1 /	Ę	<b>₹</b> 9	,	٠٩٥	२२
तर्जनी	८१	69	तार्क्य {	૧૭૨ે	984	तिरीट }	४८ २०१	3 <b>3</b> 30
तर्युक	920	६१	ताक्यंशेल	924	999	तिरोधान	98	93
तर्दू	396	३४	1	२६	9,	तिरोहित	999	998
तर्पण र्	90	98	ताल 🔾	६४	980	<del>Carles</del>	१३८	₹४
वपण न	115 185	46	1	८ <b>१</b> • १२५	ξ <b>δ</b>	''''``` r	88	80
तर्मम्	385 <b>599</b>	४ <b>१</b> ९	तालपत्र	7 4 4 6 Y	9०३ <b>१०</b> ३		৬६	88
•	711 <b>२</b> ८	15 २८	तालपणी	46	923	तिसक -	७९	84
त्रवं {	999	فيم		46	999		<b>'८</b> ६	११३
वल {	100		तालवृत्तक	66	939	l	990	४३
•	969	३० र	ताला	4	48	तिलकालक	७६	<b>୪</b> ९
तक्तिन	969	120		ૡૡ૽	920	तिलपर्गी	<b>69</b>	१३२
तस्पः '	909	939	वाली {	६४	940	<b>নি</b> লি <b>पিজ</b>	998	15
,বাছৰ ক্ৰম	96	२७	নাম্ভ	८२	59	त्रिलपेज	198	- 95
. <b>4</b> 5	386	43	न्तावद	450	१४६	<b>विश्वित्स</b>	¥0	4

	-								=		
शब्द.	g	ছে.	श्लोक.	शब्द.		মূছ.	स्लोक.	शब्द्		ia.	श्लोक.
तिल्य		993	v	तुरङ्ग		902	४३	मृतीया <b>क</b> त		993	\$
तिस्व		86	33	तुरंगम		902	૪)	वृतीया <b>प्र</b> कृति	ſ	હધ્યુ	३९
तिष्य	5	93	२२	तुरंग <b>वद्</b> न		90	७१	<b>तृप्त</b>		986	१०३
।तज्य	J	१७३	986	तुरासा <b>ह</b> ू		৬	88	<b>तृप्ति</b>		998	५६
तिध्यफला	•	49	<b>ध</b> ्र	तुरष्क		69	926	तृष -	<b>S</b>	२८	२७
	(	98	30	तुला		१२३	60	84	l	998	44
तीक्ष्य	1	928	86	तुलाकोटि		داع	909	तृष्याकृ		3 \$ 6	२२
		959	<b>५</b> ३	तुलामान		323	64	तृष्णा		969	49
तीक्ष्यागन्ध	<b></b>	86	39	तुल्य		939	34	तेजन		<b>\$ \$</b>	9 ६ 9
तीर	_	३२	U	तुल्यपान		998	ويونع	तेजनक		६३	१६२
तीथ	3	<i>۹ ب</i>	<b>4</b> 0	तुवर		२०	5	तेजनी		da	८३
	(	9 ६ ६	610	तुवरिका		५९	939	तेजस -	5	96	६३
तीव		9	ĘU		(	49	لإد	রেগ ধ	J	964	3 38
तीव्रवेदना	_	₹9	3	तुष	j	994	2,2	तेजित		984	٩,٩
_	4	9 ८७	२४२	l	5	92	96	तेम		943	२९
बु	•	१८९ १९१	ب م در	तुषार	(	45	- 90	तेमन		990	88
	~	80	<b>२</b> ५	तुषित		8	90	तैनस		9 24	458
ব্ৰঙ্গ	3	98	<b>6</b> 0	तुहिन		93	96	तैजसा		9 30 ^	33
ন্তুন্দী		६०	१३९	त्र्य		906	66	तैत्तिर		ĘS	४३
ন্তুন্তর <b>ন্তু</b> ন্তর		989	46	तूणी		906	69	तैलपर्णिक		٠ ده	939
तुण्ड -		८२	68	तूणीर		906	66	वैलपायिका		Ęw	२६
	(	५७	998	तूद		89	89	वेलंपाता		358	Ę
<sub>ुं</sub> डिकेरी	{	ξo	- 1	तूर्ण		9	६५	तैलीन		492	•
तुत्थ	•	924	909	· ·	5	४९	४२	तैष		98	. 94
	(	षुष	94	तूल	ĺ	924	908	तोक		ত ভ	२८
तुत्था	1	46	924	तूलिका		930	३२	2		=	90
न्तुत्थांजन		9 ૨ ૬	909	त्वर		१७६	१६५	तोकक		६६ ०००	98
तुन्द		60	৬৬	तूष्णीम्		990	٩	तोक्स		998	
तुन्दपरिमृ	ज	935	96	तृष्णीशील		१३८	3 9	तोटक		२०१	30
तुन्दिन्	-	હષ્	88	तूष्णीक		936	\$ 9	तोच्च	{	909 .	89
	(	હહ	88	त्व्णीकाम्		990	٩		(	993	93
<b>तुन्दिम</b>	ð	७८	69	Ì	(	६३	१६५	तोदन		313	95
	Š	७५	**	<b>বৃ</b> য	{	६३	951	तोमर		906	9,3
तुन्दिल	Į	96		तृण्डुम		६४	96	1		३२	1
ব্ৰন্ন		५९		तृगाधान्य		994	٦,	तोयपिप्पती	Ì	५७	999
नुज्ञवाय		980	Ę			६३	98	तोरग		४२	96
<b>तु</b> मुल		990	908	1 "		É&		तैर्वित्रिक		२६	90
तुम्बी		<b>4</b> 2	·	तृणश्रन्य		७९		त्यका		980	901
	-	908		तुण्या		٩¥		(त्याग		58	₹'
<b>ह्य</b> रंग						• •		•			

शब्द.	8	ē.	श्लोक.	शब्द.	<b>2</b> 2.		श्लोक.	शब्द.	ãa•	श्लोक.
त्रपा		२८	२३	न्त्रिविष्टप		*	Ę	दंशित	904	६५
त्रपु	•	9 24	904	l	ŧ	16	906	दंशी	६७	१७
	(	29	έ	त्रिवृता	•	16	906	दंष्ट्रिन्	<b>€</b> 8	<b>२</b>
त्रय।	{	29	3	त्रिसन्ष्य	•	94	3	दच	929	
त्रस	•	१४३	४७	त्रिसीत्य	90	13	٩,	दक्शि	138	
त्रसर	•	142	२४	त्रिस्रोतस्		şĢ	३१	दिचिग्रस्थ	908	έo
<b>त्रस्</b> त	•	136	२६	त्रिहल्य	9	9 3	٩.	दक्तिणा	10	, 1
त्राख	<b>5</b> '	१४७	906	त्रिहायणी	9:	29	६८	दिक्गिमि	59	95
	ξ,	188	6	(		16	924	दक्षिणाद	924	3 88
ञात	•	१४७	908	बुहि {		४१	६२	दक्षिणाई	45	६ ५
त्रायन्ती		89	940			48	३७	दक्षिणीय	9 8 8	4
त्रायमाग्रा		٩9	940	त्रेता {		39	<b>70</b>	द्गध	186	55
त्रास	_	२८	२१	•		६३	६ ९ <b>६</b> ६	द्गिधका	994	¥ <b>9</b>
त्रिक	{	¥0	90	त्रोटि		30	4 4 <b>6</b> 6	r	7:	४ ३१
त्रिककुद्	•	60	હફ	<b>इयब्दा</b>	7	<b>२</b> 9			9.	
		κį	*	<b>ज्यबक</b>		Ę	33	दण्डः -{	99	
त्रिकह		926	999	त्र्यम्बकस <b>ख</b>		0	५८		.90	
त्रिका <i>•</i>	•	₹५	२७	<b>इश्व</b> ण	92		999	Ĺ	96	
त्रिकूट त्रिखद्व		४३	2	797 		. K	45	दण्डघर		५ ५९
त्रिखद्वी		408	89	त्वक्द्वीरी		38	908	दण्डनीति	\$:	
াসভহন। সিয়ুত্তান্তর		१०४	89	<b>ल्क्ष्यप्र</b>		15	938	द्र द्वविष्करम		
17301 <b>9</b> त त्रितक्ष		998	\$	त्वक्सार		<b>\$</b>	9	दण्डाहत	394	
त्रितची		२०४	४१	त्वच	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	-	3 T	दहुष्म	<b>Ę</b> 9	
नित्रश त्रिदश		२०४	४१	त्वविसार	Ę		960	द्धित्य	*4	-
त्रिदशात्त्रय		8	v	त्वरा	94		२६	द्धिफल	*40	• -
ानपरात्रिय त्रिद्विव		8	Ę	-	•	•	48	द्धिसक्तु	994	
निद्वेश		8	ş	त्वरित {	3	o &	५ ह	दनुज	X	9.8
		¥	v	त्वरितोदित	• •	४	30	दन्त	८२	59
त्रिपथगा .		₹६	₹9	त्वष्ट	. 9	86	99	दन्तधानव	do	8\$
त्रिपुटा 🖁		46	906	न्बन्ह {	9:		9	दन्तभाग	909	Yo
त्रिपुरान्तक		ዓሪ <sub>2</sub>	984	4.8	96	18	१५	दन्तशठ	{ x0	29
त्रिफ <b>ला</b>		६ १२६	3 3 3 3	रिवद ( ब्	1 <	44	₹४	` " " "	( , 80	4.2
त्रिभण्डी		v,Ę	106	•	•	<b>୧</b> ४	२२५	दन्तराठा	Ę o	980
त्रियामा		94		त्विषाम्पति		R	ξo	दन्तावल	900	રે જે
त्रिलोचन		ξ	38	₹₩\$		6	6.0	दन्तिका	<b>₹</b> 9	188
त्रिवर्ग {		56	40		द			दन्तिन्	100	₹¥
		38	94	दंश	Ę	U	70	दन्दश्रक	11	ع
त्रिविकम		4	80	दंशनं	90	አ	48	दभ	141	63

शब्द	<b>র</b> ম্ভ	इलोक.	शब्द.	5 <u>8</u> .	स्टोक.	शब्द.	युष्ठ.	इलोक
दम	99	29	दशानीकि	ती १०७	69	दार्वी	५६	902
•	386	\$	5	90	99	दाव	969	२०६
द्मथ	186	3	दस्यु {	925	<b>२</b> ४	दाविक	36	<b>३</b> ६
दमित	984	9,0	दस्र	6	49	दाश	₹8	94
दमुना	6	<u>ષ</u> ફ	दहन	6	<b>५५</b>	दाशपुर	. 49	934
दम्पती	હ્યુ	३८	दाचायणी	v	३७	दास	1986	310-
दस्भ	२९	३०	दाचाय्य	<b>६</b> ६	29	दासी	પુર	७४
दम्भोलि	6		दाडिम	५२	६४	दासीसम	१००	२७
द्स्य	120	६२	दाडिमपुष्प	क ५०	४९	दासेय	926	90
द्या	३७		दांडपाता	998	Ę	दासेर	936	94
दयाञ्च	934	94	दात	. 180	903	दिगम्बर	१३८	३९
द्यित	181	1	दात्युह	६६	२१	दिमाज	99	*
	२८ २८	६३	दात्र	993	93		906	66
दर {	969	29 968	(	53	२९	दिग्ध	<b>१०८</b> १४५	90
दरत्	994	13	दान }	55	२०	दित	986	908
दख्दि		3	(	909	३७	दितिसुत	¥	18
दरी	180		दानव	¥	98	दिधिषु	७२	२२
तरा हर्दर	४३ ३५		दानवारि	ሄ	9	दिधिषू	७२	<b>२</b>
दर्दुर दर्पक			दानशौंड	4 \$ \$	É	दिन	94	?
दर्भण	4	24	<b>दांत</b> {	98	४२	दिनान्त	94	ş
	66	7.00	Ĺ	१४६	९७	<del>G</del> ar	*	ę.
द् <b>भै</b> 	€ ₹		दांति	986	३	दिव	90	5
दर्वि 	996	३४	दापित	256	80	दिवस	94	3
दवींकर	<b>₹9</b>		दामन्	989	७३	दिवस्पति	v	४२
दर्श {	9 €		रामनी	929	७३	दिवा	969	Ę
٠ (	94		रामोदर	4	96	दिवाकर	98	26
दर्शक	90	<b>६</b> व	राम्भिक	940	90	दिवाकीर्ति	996	90
दशन	१५६	३१	रायाद	966	८९	,	१२९	98
द्ल	४६	98 2	रारद	39	99	दिविष <b>द्</b>	x	•
दव	969	२०६ द	<b>रारा</b>	<b>و</b> ه و	Ę	दिवौकस :	8	•
द विष्ठ	988	६९ द	शरित	980	904		968	१२६
दवीयस्	982	<b>६९</b> ह	ाह	<b>र्र</b> ४६	- ' '	दिव्यगायन	909	111
दशन	८२	90	.14	( ५०	५३	दिव्योपपा <b>दुक</b>	900	५०
दशनवासस्	८२	- 1	ारुण	२७	२०	दिश्र,	90	•
दशबल	4		ारुहरिद्रा	५६	903	दिश्य	11	₹
दशमिन्	७५	- 1	, १६६६तक	998	३४	_ (	( 94	9
दशमीस्थ	166		<b>াৰি</b> ঘাত	<b>ξξ</b>	90	दिष्ट	96	36
दशा {	•	११४ द	ार्विका .	§ , 46	999	•	( 945	\$4
(	963	२१६ 🔍		८ १२५	209	दिष्टान्त	111	114

शब्द.	<u>ष्ट्र</u> ा	इलोक.	शब्द.	ह्य .	<b>इलोक</b>	<b>e</b> द.	पृष्ठ.	<b>रलोक</b>
दिष्ट्या	990	90	दुनीमक	99	48	देवकीनन्दन	<b>L</b>	29
दीचान्त	<b>5</b> 2	२७	दुर्नामन्	₹ v	74	देवकुसुम	60	924
दीक्षित	<b>د</b> ٩	د	दुर्बेल	હષ્	88	देवखातक	३५	२७
दीदिवि	196	8	दुर्मनस्	931	s c	देवखातबिल	. ४ <b>३</b>	Ę
दोषिति	98.	<b>3</b> 3	दुर्भुख	१३०	; 3¢	देवच्छन्द	68	904
दीन	980 "	४९	दुर्वर्ण	9 27	s <b>९</b> ६	देवजग्धक	ÉB	966
दीप	66	१३८	दुर्निध	980	४९	देवतरु	* 4	५०
दीपक	946	99	दृहंदू.	९।	90	देवता	¥	\$
दीप्ति	98	३४	दुरच्यवन	٠ ٧	, &A	देवताङ	५२	६९
दीप्य	999	999	दुष्कृत	9.	इ १३	देवत्व	९५	५२
दीर्घ	१४२	Ęq	<i>दु•</i> ह	989	9 9 9		५०	48
दीर्घकोशिका	३५	२५	दुष्पत्र	4		देवद्रथक	१३७	ξ¥
दीर्घदारींन्	८९	Ę	दुहितृ	ঙ		देवन	<b>∮ १३२</b>	84
दीर्घपृष्ठ	३१	- 6	दूत	9			८ १६९	990
दीषवृन्त	५१	५७	दूती	<b>U</b> 1	-	देववात्रभ	४७	२५
दीर्घिका	34	२८	दूर्य	90		देवभूय	54	५२
दु:ख	३२	Ę	दून	981		देवमातृक	३९	12
दुष्प्रधार्षेणी <sup>°</sup>	. 40	198	द्र	983	•	देवयोनि	¥	99
दुःषमम्	१९१	98	दूरदर्शिन्	60	_	देवर	७४	32
<b>दुःस्पर्श</b>	६५६	89	दूर्वा	Ę		<b>ेदेवल</b>	988	11
दुःस्पर्शा	, 444	९४	दूषिका	9	•	A LANGE ANY	949	३५
दुकूल	حام	953	दुष्य	२		1 20 20 20 20	6	*4
दुग्ध	996	49	दुष्या	90		4401304	<b>९</b> ५	48
दुग्धिका	ष्प	900	<b>ह</b> ढ	1 98	९ <b>६</b> ७ ३ ७६	देवाजीव	१२८	99
<b>दु</b> झुम	<b> </b>	3४६	50	7 95	-		( २७	93
दुदुभि	<b>१</b> २६	4	<b>द</b> ढसंधि	98		1 2 27	} 48	८३
	( १७२	934	ਣਰਿ	95		ł	( 49	933
दुरष्व दुरालमा	<b>86</b>	9	-	98		্বস্থ	४४	३२
दुरित	44 96	<b>९ २</b> २ ३	· {		:२ ५३	વશ	३९	93
हुरोदर	966	969	•	8		( दराक्षप	99	२४
दुर्ग	96	94		90		दह	७९	৩ গ
दुर्गत	980	૪ૡ			• 6	46611	85,	93
<b>बु</b> र्गति	३१			9		दतय	¥	98
दुर्ग दुर्गत दुर्गति दुर्गस्य दुर्गसम्बर दुर्गा दुर्जन दुर्दन	२०	٩.	, <b>l</b>		२ ५३	404	¥	98
दुर्गसृद्यर	१५२	व्	'। हाष्ट	े १५	\$ 30	देत्यगुरु	93	२५
दुग्	v	₹,	<sup>3</sup> हष्टेन्द्र	•	<b>६</b>	देखा	46	923
,ব্ৰজন —^-	980	<b>እ</b> ‹	-داره	5	8	द्रयाार	4.	15
ह्यदन	. 17	91	۲] ۳	( 3	<b>\$</b> 9	३ दैन्य	908	943

शब्द.	<b>पृष्ठ.</b>	ख्तोक.	शब्द.	पृष्ठ.	इलोक.	शब्द.	পূন্ত,	क्षोक,
द्दैर्घ .	८५	998	द्राविडक	५९	१३५	द्विज	5 80	<b>३</b> २
	( 96	२८	EQ.	<b>አ</b> ጸ	٤٩	_	र १५८	है०
दैव	} ९२	२४	<b>दुकि</b> लिम	५०	५३	द्रिजराज	92	9 4
_	( ९५	५०	दुवरा	906	99	द्विजा	ष्ट	920
ढेंग्ड	9,6	१४	<b>दु</b> ग	६५	98	द्विजाति	<b>લુ</b> લ્	ሄ
देवज्ञा	७२	२०	दुणी	954		द्विजिङ्ग	969	9 ३ ३
दैवत {	<b>' ' ' '</b>	9	(	9	, ,	द्वितीया	<b>9</b> 5	4
``"	9 <b>9</b> 6	२१	ਰਗ )	984		द्वितीयाञ्चत	993	٩,
दोला {	५५	९५	द्धत }	986		द्विप	900	₹४
•	. १०३	બુફ	(	969	۶, ا	द्विपाच	<b>9</b> 9	३७
दोषज्ञ	88	وم	द्भ	ጻሄ		द्विरद	900	३४
दोषा	968	Ę	दुमायम्	60	354	द्रिरेफ	६७	२९
दोषेंकदक्	१३९	४६	<b>ब्रुमो</b> त्पर्ल	49	ξo	द्विवर्षा	१२०	ę۷
दोस्	۷۹	60	द्भुवय	953	८५	द्विष्	<b>९</b> ७	99
दोहद	२८	२७	द्भहिए।	4	90	द्विषत्	९७	90
दोहदवती	७२	२१	l. (	Ęų	98	द्विसीत्य	993	9
द्युः (स्	) 90	२	द्रोण न्	१२३	22	द्विहल्य	943	<b>^</b> &
खुति {	98	90		969	४९ २ <i>५</i>	द्विहायनी	920	Ęc
,	. 18	३०	द्रोग्रकाक	६६	7.1	द्वीप	३२	
खुमिण	· 98	३०	द्रोगाचीरा	989	७२	द्वीपवती	36	३०
बुग्न	928	90	द्रोग्रहुग्धा	929	~ \	द्वीपिन्	Ę¥	,
<b>गृ</b> त	435	४४	द्रोणी }	३३ ५५	લ વ જ <b>પ</b>	द्वेषरा	90	90
चूतकारक	935	<b>ጸ</b> .୧		<b>33</b>	8,	द्वेष्य	१३९	84
<b>बूतक</b> त्	9 ३ २	४३	द्रोडचिन्तन <del>अस्त</del>	445	90	द्वेघ	96	96
बो (बौः)	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	Ę	द्रौणिक	११२ ६८	₹८	द्वेप	903	48
થા (થા•)	′ રે ૧૦	9	ब्रन्छ }	१८ १४२	२८ २ <b>१</b> २	-	<u> </u>	७५ ३८
बोत	98	३४	द्वयातिग	88		द्वश्र	१२४	<b>९</b> ७
द्रप्स	996	५९	द्वांदशांगु <b>ल</b>	69	68	846	بر. ھ	,•
द्रव •	<b>१९</b>	३२	212012112		२८			
	८ १११	999		98		•	<b>२९८</b>	90
द्रवन्ती	48	20		१९ १७६	g = 5	घत्र	48	<b>UU</b>
	( 990	902	-		953	9	928	5.
द्रविग्र	) 928	५ ५३	द्वार	४२	98		ė	48
	989	<i>55</i>	द्वार	४२		धनद	90	ĘC
	<b>∫</b> 198	<b>\$</b> 0	द्वारपाल	९७	Ę	<b>धनह</b> री	49	986
द्रव्य	170	948		९७	Ę		90	Ęc
क्राष्ट्	968		रू द्वाःस्थित	<b>९</b> ७	Ę	धनिन्	154	90
द्राचा '	५६	901	द्धाःस्थितदर्शेव		Ę	1 ~	५३	35
द्राविष्ठ	186		१ द्विगुयाकृत	113		वतु	*6	₹4
			•					

शब्द.	<b>7</b> 8.	<del>र</del> ुलोक.	शब्द.	पृष्ठ.	श्होक.	शब्द.	पृष्ठ.	श्होक,
भृतुःपट	46	٠.	वात्री	966	१७६	ध्त	180	900
घनुर्घर	904	६९	घाना	996	४७	घूपायित	980	१०२
<b>घे</b> नुष्मत्	904	ę٩	<b>धानुष्क</b>	904	Ę ę	घूपित	980	902
भनुष्	.904	८३	धान्य	998	39	धूमकेतु	982	५८
धन्य	933	₹	घान्यत्वच्	994	77	धूमयोनि	99	9
धन्व	900	८३	धान्याक	990	३८	धृमल	29	95
धन्वन्	३८	6	<b>धान्यांश</b>	940	४६	धूम्या	948	४२
धन्वहास	44	۹.۹	<b>धान्या</b> म्ल	990	રૂલ્	घूम्याट	€ €	9 Ę
वर्न्विन्	904	६९	घामन्	900	128	धूम्र	२१	3 €
भमन	<b>६</b> ३	982	धामार्गव	<b>{</b> ५४ ५७	66	धूर्जंटि	É	३३
धमनि	· 68	इष		( ५७	990		( ५३	৩৩
<b>भ</b> मनी	49	- , ,	घाय्या	59	२२	धूतं	र् १३२	٨ź
धस्मिल	८३	· 1	धारणा	<b>55</b>	२६	2`	( 980	80
भर	Αŝ	- 1	<b>धारा</b>	305	88	धू <b>र्वह</b>	920	६५
घरणि	<b>३८</b>	- 1	<b>घाराघर</b>	99	v	घू <b>ति</b>	90%	96
<b>धरा</b>	ં રૂંદ	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	घारास <b>म्पा</b> त	-	99	धूसर 	२०	93
वरित्री	_ ३८	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	<b>वार्तराष्ट्र</b>	Ęu	२४	<b>भृति</b>	908	80
2	96	* 1.	घाव्नी ०	ં બુલ્યુ	९३	<b>मृष्ट</b>	936	२५
धर्म	<b>₹1</b>		धिक्	968	२४०	<b>भृष्णाज्</b>	936	44
٠	१७२	9 38	घि <b>क्</b> टत	∫ १३८ { १४५	₹९,	घेनु	929	4
<b>धर्म</b> चिन्ता	<b>२८</b>	۲۴]		-	8.8	घेनुका	909	₹ €
धर्म व्यक्तिब	<b>5</b> €	- 1.	वष <b>ण</b> केल्ल	93	२४।	_	( 944	96
धर्मपत्तन	996	111	धषणा घेष्ण्य	98	9	धेनुष्या जैन्स	939	७२
धर्मराज {	•		वज्ज्व ति	908	944	घेतुक रेनन	990	<b>§•</b>
301/101	946		।। ीन्द्रिय	95 70		वेवत वोरस्य	२५ १०४	9
धर्मसंहिता	77		<b>ीमत्</b>	دج دج		नारक गीतकीशेय		५८
<b>धर्षिणी</b>	49	, ,	<b>ीमती</b>	69		गतकासथ गैरितक	૮ <b>પ</b>	99₹
(	98	• • •	•	ر د د د		गारतक गिरेय	90 <b>3</b>	86
धव {	168	३५ व ३०६	ीर :	- 68	a. I		120	44
धवल	२०	१३ वि	विर	₹¥	94	याम	<i>\$</i>	946
घवला	<b>े १२०</b>	६७ र्घ	शिक्ति	949	24	(	" १३ ४५	२० ८
धवित्र	1.59		सिचित्र	50	, , \ <u>}</u>	<b>व</b>	985	७२
धातकी {	46	१२४ छ		188	60	(	968	299
almai {	. <b>9</b> e <b>4</b>	७ घुः		3 6		_ (	46	994
षातु {	, AA .	ু হ ব্রু		408	३० ५५	वा {		24
(	165		स्थर	920		জ '	905	45
<b>बातुपुष्पिका</b>	46	. १२४ धु		120		जिनी	906	
व्यत्	٠ ٧	१७ धुर	र्षे	<b>1</b> 90	६५ व्य		२४	२२

शब्द.	1	<b>29.</b>	३लोक.	शब्द,		gg.	<b>३लोक</b>	शब्द.	<b>5</b> 2.	रलोक.
च्च नित		984	98	नद		२३७	५७	नलिन	३७	३९
॰ वस्त		180	908	नदी		३६	२२	नसिनी	३७	३९
ष्वांच	S	€ €	२०	नदीमातृक		३९	92	नली	48	975
व्य ।ख्	J	963	२१९	नदीसर्ज		४९	26.62	नस्व	80	96
च्वान		२४	35	नद्धी		१३०	<b>₹</b> 9	नव	१४३	UU
ध्वान्त		₹•	3	ननान्ह		५०	79	नवद्दल	थ्र	४३
		न		ननु	{	960	१४८	वननीत	996	५२
न		95.	99	13	l	950	98	नवमालिका	५३	७२
नकुलेष्टा		40	994	नन्दक		ε	२८	नवसूतिका	929	49
<b>লক্ষ</b>		८५	994	नन्दन		U	84	नवास्वर	64	७७
नक्तम्		963	Ę	नन्दिश्च		45	926	नवोद्धृत	996	५२
नंकमाल		40	*9	नन्धावर्त		89	90	नवीन	983	৬৬
नक		३५	29	नपुंसक		७५	34	नव्य	983	وروز
নল্বস		93	२१	नप्त्री		७३	२९	नष्ट	999	992
नव्त्रमाता		68	906	i i	(	90	7	नष्टचेष्टता	45	33
<b>ब</b> स्त्रेश		93	94	नभस्	1	90	96	नष्टामि	94	ય ક્
- नख	5	49	५३०		C	964	२३२	न ष्टेन्दुकला	98	
નલ	{	47	٤٤	नमसंगम		६८	३४	नस्तित	920	ĘĘ
नखर		69	_ ८३	नमस्य		90	9.0	नस्योत	920	ĘĘ
नग		940	99	नमस्वत्		9	६३	नहि	950	99
नगरी		४०	٩	नमस्		959	96	न।	950	99
नगौकस्		६८	३३	नमसित		२१६	909	"	( 8	é
नम		936	<b>રે</b> ૧	नमस्कारी		ę۰	989	नाक	١ ٩٠	<b>ર</b>
नमहू		932	**	नमस्या		43	३४		( 944	3
	C	90		गमात्यत		180	909	নাক্ত	५०	58
नमिका	{	७२	90	नमु।चसूद्	र्न	y	४३	नाकुली	40	998
		49	1 4	नय		985	- 9	1	<b>∫</b> ₹∘	¥
नर	{	986	39	नयन		८२	\$ \$		900	\$8
नदन		₹	1.9	नर		48	9	नाग	- 984	904
नटी		49	. 929	नरक		३१	• , 9	1	989	£9
	•	43	. 951	नरवाहन		3.	. 68	•		
। मह	{	48	950	गराक		36	, 99		५२	Ęų
L. 40	L	२०२	1 3	नर्तकी		२६	6	1		906
नदेप्राय		३९	. •			* 46	30	1 .	५७	990
नडसंहति		43	, 15			् ३२	३्व	i dilate i	190	३८ १८८
नस्वत्		35	,	, नर्मन्		े २९	ं देव		964	
गद्भवल		35	•	, नलकूबर		, 30	, 90		<b>Y</b> \$	३८
नत	•	1988	ود د			. 43		नागलोक	<b>30</b>	3
नत्नासिं	5	64	- *	५। नलमीन		ूं <u>ब्र</u> ेप्ट	. 34	नागवल्ली	ું <i>પુ</i> હ	380
• •				- •		-				

शब्द.	प्रुष्ठ.	रतीक. शब्द.	52°	इलोक' शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक
नागसम्भव	984	१०५ नाला	३७	४२ निकेतन	89	ሄ
नागान्तक	Ę	२९ नालिकेर	६४	१६८ निकोचक	86	२९
नारच	२६	१० नाविक	₹ ₹	१२ निक्रण	२४	२४
नाडिका	१७२	३४ नाव्य	33	१० निक्वाय	२४	२४
नाडिन्धम	920	८ नाश	999	११६ निखिल	१४२	44
(	७९	६५ नासत्य	6	५१ निगड	909	49
नाडी }	998	२२ ना द्रा	<b>∫</b> ४२	१३ निगद	940	98
(	360	• * !	८ ८२	<b>دع</b>	( ४०	9
नाडीवरा	90	५४ नासिका	•	८९ निगम -	922	46
नाथवत्	4 £ r.	१६ नास्तिक		8	८ १७२	980
नाद	२४	३३ निःशला	क ९९	२२ निगाद	940	18
(	४८ ४९	३० निःशेष	१४२	६५ निगार	948	३७
नादेखी 🕇	५२	३८ निःशोध्य ६५ निःशोध्य	र १४१	५६ निगाल	902	86
(	40	997 14.8010	४२	१८ निप्रह	940	93
==== (	960	र ४७ नि.श्रयस		६ निघ	943	36
नाना {	968	ं ३ निःषमम्	*	१४ निघस	998	4€
नानाह्य •	984	९३ निःसरग	४२	१९ निघ्न	9 2 4	9६
ना-दीकर	१३८	३८ निःस्व	980	४९ निचुल	५१	ĘŊ
नान्दीवादिन्	136	३ । निकट	985	६६ निचोल	८६	99६
नापित	986	ानकर	ĘC	३९ निज	<i>५५९</i>	३७
(	908	८ निक्ष्या	४२	<sup>9९</sup> नित#ब	<b>र्ड</b>	4
नामि 🕇	902	१३७ निकष	१३०	३२	( 60	40
1	१९५	९ निक्षा	<b>9</b> 69	७ नितम्बर्न	•	₹
<b></b>	986.	२० ३५० निकषात्म	६ १९२	१९ नितान्त	•	ĘU
नामधेय	166	े भे किस्ता	_	६० नित्य {	90	<b>६</b> ६
	२२	निकाय	999	40	982	<b>७२</b>
नामन्	<b>२२</b>	Commen	Ę S.	४२ निदाघ	96 <b>2</b> 8	9 S
नाय जन्म	~ <b>9</b> 88	1	<b>¥9</b>	५ निदान	96	<b>₹</b> ₹
नायक (	१३४	<sup>भूभ</sup> निकार	949	34/6-6	988	<b>२</b> ८
नीरक {	<b>३१</b> ३१	२ निकारण	(	,,( <del>coo</del>		& <b>Q</b> ,
नारद	6	४८ निकुष्टक	111 973		i 44 . <b>44</b>	53
नौराच	906	<b>৫৩ নিক্তন্ত</b>	88	८८ निदेश {	346	<b>१५</b> १७९ न्
नाराची	930	३२ निक्रम		निद्रा	₹0	
<b>गाँ</b> ययग	· S	१८ निकुरंब	<b>{</b> 9	188		₹ *-
नारायणी	44	9-91	<b>49</b>		१ <b>३</b> ७	\$\$
नारी	٤٩.	निकत	ी १३९ चि	४१ निद्राक् <u>छ</u>	१३७	<b>4</b> 3
<u> </u>	रेक	४२ निकृति	25	11484 7	999. 940	446
alar {	114	२२ निक्रष्ट	, <b>1</b> 80	३७ विस्		148
			,	48. 1.11.4	7- 90	<b>43</b>

शब्द.	<b>23.</b>	<b>इ</b> लोक	शब्द.	पृष्ठ.	म्होक.	शब्द.		প্তন্ত.	<b>रतोक</b> ृ
निधु३न	\$6	40	निरसन	948	<b>₹</b> 9	निवर्धि		958	93
निष्यान	948	39	. (	२४	२०	निर्वासन		999	993
निनद	१४	१२	निरस्त }	906	66	निवृत्त		180	900
निनाद	२४	२२	<u> </u>	985	80	~ <del>**</del>		131	34
निन्दा	२३	93	निस्नकरिष्णु	१३७	३०	निवेश	1	949	**
निप	998	३२	निरा <b>क</b> त	935	80	निर्व्यथन	·	983	२१५
निपठ	943	<b>ર</b> વ્	निराकृति	<b>{</b> ९६ <b>{</b> 9५३	- , ,	।नञ्ययन निर्व्युह	-	86	, <u>\$</u>
निगठ	947	<b>ક્</b> યું	A	-		-		<b>१८६</b>	२३६ं
निपातन	945	२७	निरामय	99		निर्हार <del>८-४८-</del>	·	449	96
निपान	३५	२६	निरीश	198		निर्होरिन्		<b>₹</b> •	99
निपुरा	933	٧	निऋति	<b>₹9</b>		निहाँद		२४	44
निबन्ध	<b>99</b>	فيرنغ	निर्गुडि	{	- 1	नि <b>लय</b>		89	\$\$ \$
निबन्धन	२६	v	- निप्रन्थन	949	L	निबह		56	4.2
निब हेंगा	111	992	। गअन्य ग निर्घोष		1	निवात		964	68
निभ	939	₹७	निजर	<b>२४</b> ४	9	निवाप	,	<b>5</b> 2	<b>₹</b> ∮
निभृत	१३६	<b>२</b> ५	निर्जितंद्रिय	<b>5</b> ¥	४३	निवीत	{	८५ ९५	99₹
निमय	988	60	नि <b>फर</b> नि <b>फर</b>	۶ <b>٤</b>		निवृत	•	998	40 66
निमित्त	988	υĘ	ागकार निर्णय	*	- 1	ानश्चरा निवेश		900	• <b>१</b> ३
निमेष	98	99			- 1	निशा		94	**
निम्न	३४	१५	निार्योक्त	989	.,,	निशाख्या		990	¥3
निम्नगा	\$ £	<b>ફ</b> 0	निर्योजक	126	• • •	निशान्त		89	9
निम्ब	49	६२	निर्देश	90	<b>१</b> ५	निश्तपति		98	18
निम्बतक्	४७	२६	निभर }	90 968	. <b>६</b> ६	निशित		984	59
<b>ं</b> नियति	96	२८	निर्मद	909	36	निशी <b>थ</b>		, 94	Ę
नियन्तृ	908	५९	निर्मुक्त	₹9	Ę	निशीथिनी		94	*
(	98	فع	निर्मोक निर्मोक	<b>₹</b> 9	3	निश्चय		98	
नियम }	88	३७	ानना क निर्याग	909	•	निश्रेपा		४२	14
, ,	94	४९	ानवारा निर्यातन	940		निषङ्ग		206	66
नियामक	33	99	ानथातन निर्यास	956.		निवंगिन्		904	. 63
नियुत	155	२४	निर्वप <b>रा</b>	<sup>1</sup> 24.		निषद्या		. 80	3
नियुद्ध	990	905	ानपप <b>्र</b> निवर्णन	445		निषद्वर		<b>₹</b> ₹	Š
नियोज्य	126	30	निर्वह् <b>या</b>	7.74 <b>2</b> 0		निषध		8\$	
निर	966	२५३	1	_	٩ <i>५</i> ६			२५	
निरन्तर	988	ĘĘ	निर्वाग	<b>₹ 9</b> 9	9,6	निषाद {	,	988	, <b>3</b>
निरय	₹9	9	निर्वात	944	९६	निषादिन्		908	વક
निर्गल	988	૮રૂ	1 /	२३	93	निष्दन		999	4.9.5
निरर्थक	148	69	निर्वाद {	166	<b>9.</b>	'तिष्क	•	. 448	
निरवप्रह	934	94	निर्वापग	1999	998	निष्कला		, 02	- 936 2 9
	થ		•	•				1	7.77

शब्द.	पृष्ठ.	<b>इंलोक.</b> शब्द		<b>पृष्ठ</b> .	स्लोक.	शब्द.	<b>79.</b>	श्रोव.
निष्कासित	135	३९ नीच	5	986	95	नृपलक्ष्मम्	900	३२
নি <b>ল্ড</b> স্থ	XX	91	ι	982	90	नृपसम	२००	२७
निष्कुटि	46	१२५ नीचै	Ę	959	96	1 -	900	39
निष्कुह	44	१३ नीड		Ęc	३७	1.	980	ر , فو
निष्कम	948	२५ नीडो	द्भव	Ęc	३४	<b>ट्र</b> सेन	२०४	४०
निष्ठा {	२७	१५ नीघ्र		४२	98	नेतृ .	१३४	99
1481	360	४१ नीप		. ४९	४३		. <b>२</b> २	و <u>ع</u>
निष्ठान {	990	४४ नीर		32	٧	नेत्र {	966	ेर १८०
	988	११६ नील		२०	98	नेत्राम्बु	૮૨	<b>5</b> ₹
निष्टीवन	348	<b>३८</b> नील	<del>ia</del>	<b>\$</b> 6	₹०	नेदिष्ठ	-	
form S	२४	95	<b>~</b> {	460	¥o	नेपथ्य	9४२	Ę۵
निष्हर {	385	७६ नीत्र	I	६५	93	11100	૮રૂ	<b>5</b> 5
निष्ठयूत	486		तोहित	Ę	<b>3</b> 3	नेमि {	३५	হ্ ৩
निष्ट्युति	948	३८ नीला		५३	40	नेमी	903	५६
निष्ठेय	948	३७ नीला	म्बर	ų	२४	नैक भेद	<b>~</b> 6	24
निष्ठवन	948	- 1	खुजन्मन्	३७	ই ৩	। यक्षम <b>५</b>	988	८३
निष्णात ्र	988	४ नीत्रि		५२	-	नैगम }	922	96
निज्यक्व	986	९५ नीलि	-	५५ ५५	७० ९५	नैचिकी	१७२	980
निष्पतिसुता	<b>59</b>	११ नीसी	-4.	44		ने गली	120	Ęu
निष्पन्न	180	१०० नीवाव	F	१५२	<b>98</b>	ने <b>मे</b> य	9 <b>२६</b>	906
निष्पाव	948	२४ नीवार		994	<b>2</b> 2	गमय नय्ययोध	9 2 2	60 °
निष्प्रभ	986	900	•	922	\$4	_	४६	96
निष्पवाणिन्	64	११२ नीवी	}	144 968	८० ११२	नैऋंत }	\$	éo
निसर्ग	<b>૱</b>	३८ नीवृत्		. 39		नैष्किक	11	7
निस्ट	388	८८ नीशार		٠,٠		ना क्यक नैस्त्रिशक	30	b
<b>विस्तत्व</b>	183	६९ नीहार		-	I	ना जनाक नो	, १०५	90
निस्तहेश	111	. 1		98	96	या नौ	980	59
निशिय	¥06			960	,,,,	गः नौकादंड	<b>₹</b> ₹	90
निवाद	196	19		988			<b>33</b> .	3 8
विस्वन		४९ द्वित	•	23		नौतार्थ	33	90
विस्तान	da sa	२३ तुम		486		न्यक्ष	168	<b>२२५</b>
10(414		२३ न्तन		483	96	न्यप्रोध {	86	<b>३ २</b>
विहनन	333	११४ नूत्न		485	96	(	150	5€
विहाला	३५	११	Ş	966 359	770	न्यप्रोधी	4.8	60
निहिंसन	111		Ĺ		14	न्य <b>ङ्</b>	४२	७०
<b>Links</b>	136	१६ न्युर		64	906	न्यंकु	ĘŊ	9•
1984	२१ १८१	१७ ह		<b>F</b> S	3	न्यस्त	188	66
बीहारा		२०८ नृत्य		3.6	1 70	न्याद	9951	48
बाह्यस	333	३७ तृप		3.5	94	न्याय	55	28

शब्द.	<b>2</b> 5.	श्लोक.	शब्द.	<b>58.</b> ¯	श्लोक.	शब्द.		<b>28.</b> _	ন্তীক
न्याय्य {	33	24	पेचशर	4	24	पण्याजीव		944	46
adlad &	904		पंचशाख	67	65	पतग		46	11
न्यास	933	69	पंचांगुल	40	ધ્યુ		5	ţv	3%
न्युब्ज	46	६१	पंचास्य	₹8	9	पतंग	ί	940	₹●
न्यूख	986	90	पश्चिका	994	v	पतंगिका		Şu	इंड
न्यून	309	976	S	४८	३५	पतव्		46	11
	4		पट {	6	198	पतत्र		<b>§</b> 6	₹ ₹₹
पक्षग्	४३	२०	पढच्चर	64	994	पतित्र		ĘE	23
थक {	984	99	4टल {	४२	98	पत्तित्रन्		96	₹¥
(	986	<b>9</b> \$	1200	969	२०१	पत <b>र्मह</b>	{	66	133
[	95	98	पटलप्रान्त	४२	98		L	196	<b>₹</b> 9
_	<b>\$</b> &	, ३६	पटवासक	66	१३९	पतंयाछ		986	२७
पत्त न	८३ १०८	<b>9</b>	पटह {	38	Ę	पताका		905	4\$
1	963	<b>३</b> २०	اسو ر	990	906	पताकिन्	_	904	40
dete	૪૨	98	(	48	900	पति	<b>{</b>	9	34
पच्क		34 34	पद्ध 🔾	985	95	ł	L	१३४	90
पक्षति 🖁	६८ १६४	र <b>क्</b> ४३		१३८	के <b>प</b>	पतिंवरा		40	•
पक्षद्वार	४२	18	-	948	३९	पतिवत्नी		40	. 15
	909	٧.	पद्धपर्शी	Ęo	936	पतित्रता		40	Ę
<u> </u>	६८	34	पटोल	६२		पत्तन		*•	٦,
पक्षमूल	40 44	** '9	40000	<b>y</b>	996	1 ~	(	9.04	<b>(\$</b>
पत्तान्त पक्षिन्	ĘG	<del>१</del> २	पष्ट	146	90	1	1	900	66
			पहिका	88	५१	م د	•	968	७२
पक्षिग्री	94	4	4184	88	૪૧	A		904	40
पक्षमन्	940	929	पष्टिश	756	२१			<b>40</b>	م
पंक {	96 33	२३		923	ŹG			<b>¥</b> € <b>€</b> ८	<i>3</i>
(	<b>₹</b> ₹	9	1	939	३८	पत्र	3	908	42
पंकिल *}	₹ <b>5</b>	90	1.4	932	<b>४</b> ४ <b>४</b> ५			906	104
पंकेरह	¥७ र	*o		977 960 .	**		Ť	930	191
पंक्ति }	४४ १६४	इ ४७	. 1	_	-	OFFICE STREET		68	908
"," (	७६	Y	רטיון	36	3.4	1		ŞZ	38"
पंगु			1401140	986	904	`\		۶۵	948
ं पचंपचा	<del></del>		पंचित	986	909	<b>'</b> }	(	60	934
पंचा	989	6	1 47	988	63		{	128	797
प्रंचजन	<b>4</b> 5	9	1.0	44	<b>3</b> 4		-	48	922
पंचता <del></del>	999	996	. 1 """	68	v	31	ſ	44	94
पंचद <b>रा</b> ।	94	•	14-4	122	64	1 ^	J	46	३ई
पंचम	ં, ત્રય	9	I Asold tradel	¥•	4		Ţ	106	S.
<b>प्रेचलद्वरा</b>	<b>२</b> २	4	पुण्या	<b>হ</b> 9	940	٠ / اه	L	. 286	908

				1 _						
शब्द.		<b>93.</b>	श्लोक.	शब्द.		<b>2</b> 8.	श्लोक.	शब्द.	S	ष्ठ. इलोक
पद्मीर्थ	5	49	५६		(	₹२	9	परिकर	906	· -
	J	44	993	पयसू	3	996	49	परिकर्मन्		८६ १२१
पषिक		56	90		C	964	२३३	परिक्रम	96	
पर्थिन्		X0	94			116		परिक्रिया	90	19
मध्या		49	५९	पयोघर	_	908		परिक्षिप्त	97	r <6
पद्		45	49	पर	ş	<b>50</b>	19	परिखा	3	६ २९
पद		ξĘ	८३	l	·	909	989	परिप्रह	10	६६ २३७
पद्ग		904	<i>६६</i>	परजात		928	96	परिघ	ه ک	
पद्वी		¥o	<i>م بر</i>	परतन्त्र		१३५	9 Ę		£ 94	
पदाजि		904	६६	परपिण्डाद		934		परिघातिन	•	
पदाति		904	ĘĘ	परमृत्		<b>ę</b> ę	-	परिचय	94	१२ २३
पदिक		904	६७	परसृत		ξĘ		परिचर	90	· -
पद्ग		904	Ęu	परमम्		990	99	पिरिचर्या		३ ३५
पद्धति		80	94	परमाभ	•	58	२४	परिचाय्य	9	9 २०
	(	90	وي	परमेष्टिन्		4	98	परिचारक	१२	८ १७
पड़ा	{	३७	₹९	परम्पराक		. 57	२६	परियात	98	६ ९६
पद्मक	•	909	३९	परवत्		934	, , , ,	परिग्राय	9	६ ५६
पद्मचारिणी	l	<b></b>	१४६	परञ्ज		906		परिणाम	94	.१ १५
पद्मनाभ		ų	२०	परश्वध		906		परिशाय	9 ફ	२ ४५
पद्मपत्र े		६१	984	परक्वस्		953		परिखाह	61	4 918
पद्मराग		128	58	पराक्रम	<b>{</b>	990		परितस्	950	<b>9</b>
	(	Ę	२७		Ļ	१७२		परित्राग	98	4
पद्मा	}	ધ્ય	69	पराग	{	λέ		परिदान	95	९ ८०
	(	٤٩	१४६	liller reser	ľ	940	3	परिदेवन	3	₹ १६
पद्मकर		३५	२८	पराङ्मुख पराचित		१३७		परिधान	€	१९७
पद्माट		[ 6 9	980	पराचीन		979	96	परिधि	5 9	४ ३२
पद्मालया		Ęę	२७			१३७	**		े १६	७ ९७
पद्मिन्		100	34	पराज्य पराजित		999		परिधिस्थ	308	<i>53</i>
पद्मिनी		'.३७	_ 1	पराधीन	•	959	192	परिपरा	95:	₹ 60
पश		२०१	1	परावान पराञ्च		934		परिपेथिन्	50	99
पवा		80		पराभूत पराभूत		134		परिपाटी	63	१ ३६
पनस		49	63	परा <b>जू</b> त परायग्रा		999		परिपूर्णता	6	
पनाचित		986	909			186		परिपेखन	4	
पनित		186		पराध्य		988		परिप्लव	945	•
<b>দ</b> শ		180	3	परासन परासन		989		परिवर्ह	966	
पन्नग		₹9		परासु परासु		799	115		२०	• •
पन्नगाशन		Ę		परा <b>छ</b> परास्कंदिन्		111		रिमाषण	3	
			731	- Chandal		975	34	रिभूत	986	906

शब्द.	বিষ্ণ	ঞ্চীক,	शब्द.	पृष्ठ.	<b>क्</b> लोक	शब्द.	gy.	र <b>लोक</b>
परिमत्त	5 90	90	पर्ख	२४	99	पलाण्ड	٤٩	770
	रे १५०	93	परुस्	<b>£ ₹</b>	952	पन्नान	998	२२
परिरक्स	943	३०	परेत	999	190	(	86	14
परिवर्जन	999	998	परेतराज्	\$	५८	पलाश }	86	29
परिवाद	२३	93	परेद्यवि	959	29	(	६२	944
परिवादिनी	34	ş	परेष्टुका	979	<b>9</b> 0	पलाशिन्	88	4
परिवापित	988	८५	परैधित	938	96	प लिक्नी	9	98
षग्विति	54	५६	परोच्जी	ţv	२६	प <b>लित</b> 	wy	89
<b>प</b> रिवृढ	938	99	पर्कटी	46	३२	पह्यंक	66	१३८
परिवेत्तृ	958	<b>પ</b> પ્	पर्जनी	48	908	पञ्च	७२	18
परिवेष	98	३२	पर्जन्ध	१७३	986	पल्वल	३६	२८
परिव्याघ	5 86	३०		{ 8¢		पव	148	48
	८ ५१	Ęo	पर्ण	386	२९	पवनारान	₹9	•
परित्रज्	48	४१		( 955	२२	पवन {	\$	43
परिषद्	90	94	पर्णशाला	89	٩	C	945	58
परिष्कार	88	909	पण्स	43		पवसान	\$	₹ ₹
परिष्कृत	८४	900	पर्वेक	66	•	पवि	6	A.a
परिष्नंग	365	३०	पर्यटन	48	३५	(	<b>\$</b> ₹	156
परिसर	₹९	98	पर्यन्तभू	३९	1	पवित्र }	48	84
परिसर्प	949	२०	पर्यंय {	4.5	३७	• •	181	وكاوط
परिसर्या	949	29	. (	943		पवित्रक	₹४	16
परिसार	939		पर्यवस्था	949		पञ्चपति	ę	₹•
परिष्कन्द	925		पर्याप्त 	998		पशुप्रेरण	348	39
परिस्तोम	908	४२	पर्याप्ति	988		पशुरज्जु	929	७३
परिष्यन्द	66		पर्याय 🖁	९२ १७३	३७  <b>१</b> ४६	पश्चात्	160	<b>२४३</b>
परिस्रत	939	1	पर्यायशयन	943	32	पश्चात्ताप	२८	२५
परिस्तृता	939	1	पर्युदश्चन	992	3	र्पाश्चम	983	49
परीच्क	933	)	पर्येषणा	93	३२	पश्चिमा	90	•
परीभाव	२८		पर्वत	¥*₹	3	पश्चिमोत्तर	३८	Ψ
परीवर्त	922	60			- 1	पस्त्य	४१	4
परोवाद	२३	93	पर्वन्	<b>६ ६३</b> १ १७०	14.21	<b>গাঁহ্য</b>	909	56
परीव,प	969	129	ार्वसंधि	94		गंशुला	41	11
परीवार	900		रहेका	७९	1	(	96	₹€
परीवाह	<b>₹</b> ₹	90		193	68	ाक {	985	٠.
परीष्टि	53	₹ ₹	ाल	169		गक्ल	46	124
परीसार	949	1	लगण्ड	920	1	ाकशासन	v	89
परीहास '	२९		<b>ग्लंकषा</b>	فونع	- 1	ाक्शासनि	6	43
पस्त्	१९२	20	-	96		ाकस्थान	114	<b>३७</b>

सब्द. पृष्ठ. इलोक, ब्द. पृष्ठ. इलोक. राब्द.	<b>2</b> 8.	_
	<b>5</b> 8.	इलोक.
बाक्य १९७ ४२ पादकटक ८५ १९० पारायण	986	7
र १२६ १०९ पादप्रहरा ९४ ४९ पारावत	६५	48
पासण्ड ९४ ४५ पादप ४४ ५ पारावतांत्रि	Ę٩	940
पाँचजन्य ६ ३८ पादबन्धन १९९ ५८ पारावार <b>ई</b>	३२	9
भारत १३ ३६ ।	२०२	३५ -
पाटचर १२९ २५ पादस्फीट ७७ ५२ पाराशरिन	58	<b>¥9</b>
पाटाम ७९ ७ पारिकांक्षिण्	58	**
पाटल १ १९४ १५ पादांगद ८५ १०९ पारिजातक र्	6	40
C Yu Solution and	*G	२६
पादला ५ । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	82	308
गाउँ । पारिपताव	१४३	७५
पारिसद्र	<b>¥</b> 0	२६
पाठ रे १५३ हर - १५० रे पारिसहक	40	48
पारिसाव्य	46	37€
पारियात्रिक	¥ξ	3
बाठीन ३४ १८ पानपात्र १९२ ४३ पारिषद	v	३५
पाणि ९१ ८१ पानमाजन ११६ ३२ पारिहार्य	68	904
वाणिगृहीती ७० ५ पारी	984	90
वाणव १२८ १३ पानावशातिका ४५ पारुच्य	२३	18
पाणिए। इन ५६ । पान्य ५८ १७ । पार्धिन	9,6	
. प्राप्तवाद १२८ १३(वाव ) <sup>१८</sup> ५२] <sub></sub> ्	34 <b>U</b>	9 -
المراجعة الم	v	<b>र ५</b>
	२१	₹\$
mize 22	948	<i>७९</i> ४ <b>९</b>
	909	¥0
مرا المام و	vs	95
पाताल रे व पामर १२६ १६ पार्धिंग	60	७३
पार्कियामाह	९७	90
पायस र १९८ वालघ	ĘĘ	260
A SA	46	929
नात्र चे १९६ ३३। गाँउ	29	98
	909	58
पत्री २०४ ५२ पर ३१ ८ पाल है	960	990
पित्रीव २०२ १५ मर्प १९ पालिन्दी	५६	306
पायस् ३२ ४ पारप्यापदशः ६० १२ पावक	6	16.8
४४ ७ पारशव १८२ १० पास	८३	36
पहुद है ७९ ७१ पारम्बधिक १०५ ७० पाशक	१३२	¥4
े १२४ ८० प्रारसीक १०२ ४५ पाशिन १६६ ८९ पारहीणेय ७३ ३५ पाशान	<b>\$</b> ^	49
े १६६ ८९ पारक्षेणेय ७३ २४ पाञ्चपत	48	43

			عصد							
शब्द.	पृष्ठ.	स्रोक,	शब्द.		पृष्ठ.	स्टोक.	शब्द.		gy.	হলী <b>ক</b> ণ
पाञ्चपाल्य	112	२	पिण्याक	5	948	5	<b>ਧੀ</b> ਠ		66	936
पाश्चात्त्व	१४३	69	ાવગ્લાক	ſ	२०२	३२	पीडन		990	10%
पा₹या	948	५३	पितरी		৬४	ई ७	पीडा		३२	\$
<b>पाष</b> ाग	٧ş	8	पितामह	{	4	9 ६	पीत		२ <b>९</b>	3.2
पाषाग्यदारग	939	३४		(	48	33	पीतद <b>ार</b>		40	4₹
पिक	६६	90	पितृ		७३	२८	पीतद्	<b>§</b>	49	Şœ
पिङ्ग	29	98	पिमृदान	_	९२	\$9	13	L	५६	303
. (	98	30	पितृपति	}	<b>5</b> 99	५८ २		•	80	<b>२७</b>
पिङ्गल {	29	9६	पितृपितृ -	•	<b>ው</b> ጵ	33	पीतन	1	८६ १२५	१२४ १०३
पिङ्गला	99	98			94	4 4 3	पीतसारक		753 88	A.F
•	२०	ve	पितृप्रसू पितृवन		999		पीता		190	88
पिनंबड {	956	96				996	पाता <b>पीतास्वर</b>		4 K	98
पिर्वंडिल	७५	४४	पितृव्य पितृसिन्निभ		७३ ४८०	<b>₹</b> 9	1 .		1 189	49
पिचु	984	908			४६९ ७८	9 <b>3</b> <b>4 2</b>	पीन		101	4,9
पिचुमन्द	49	<b>६</b> २	पित्र्य		<b>९</b> ५	٠٤	पीनस 		129	43
पिचुल	88	¥0	पित्सत्		€< >7	<b>3</b> 8	पीनोध्नी ।	•	4	٧ <b>د</b>
पि <del>र</del> ुवट	924	9 = 4	पि <b>द्यान</b>		92	۲• 9३	<b>पीयूष</b>	}	198	98
(	Şc	39	पिनद्ध		904	५२		ć	86	26
पिच्छ {	२० १	३०	। पण्छ	c	£ 10.2	<i>₫ ⋈</i> 7 /	पीछ	į	960	953
	५०	४७	पिनाक	}	9 4 Ę	<b>9</b> 8	A	5	48	ሪሄ
पिच्छा {	994	9	पिनाकिन्		· `	39	पीछपर्या	ſ	३९	150
पिच्छिल	996	४६	पिपासा		998	44	पीवर		989	£ 3
पिच्छिला {	५०	४६	पिपीलिका		994	6	पीवन्		189	€\$"
•	49	६२	पिप्पल		80	₹०	पीवरस्तनी		121	43
पिज	999	994	विद्याली		५५	९७	पुंथली		43	30
पिजर {	9 २ ५	१८३	पिप्पत्तीमूल	L	928	990	पुक्कस		125	२०
•	२०१	<b>₹</b> 9	विप्छ		७६	४९	1.7		956	30
पि <b>ड</b> ाल	905	<b>9</b> 9	e		96	<b>ę</b> •	पुगव		989	५९
पिट	994	<b>२६</b>	firstra		ર,૧		पुच्छ		१०३	५०
पिटक {	७७ १३०	५३ २९			8	-	पुष		६९	A\$ .
(	12°	<b>39</b>			96		पुटमेदन		¥0	3
षिठर 👌	714 908	966	· 1	,	८६	128			२०४	85
Č	928	90	I - 1		980	84		(	11	*
षिण्ड 🖁	924	908			949	924	-	₹	३७	89
	156	90	पिञ्जना		५९	933		C	१५६	19
पिण्डक	२७	186	पिष्टक		996	84	1 -	į	4	98
पिण्डिका.	903	५६			998	\$ °	पुंड		ĘĘ	962
पिण्डीतक	५०	५३	पिष्टात		66	939	पुंड्क		43	is.

र्शब्द.		पृष्ठ.	३लोक.	शब्द.		āa.	<b>रलोक</b> ्र	शब्द.		पृष्ठ.	<b>रेलोक</b>
ः पुण्य	S	96	२४	पुरु		989	43			8 €	90
Ø-4	l	904	760		(	96	२९	पुष्पलिह		<b>§ ७</b>	२९
पुण्यक		९३	३७	पु <b>रुष</b>	Ì	४७	<b>३</b> ५	पुष्पवत्ती		७२	२∙
<b>पु</b> ण्यजन		5	Ęo	3	1	49	۶.	पुष्पवन्ती		96	96
पुर्ण्यजनेश्वर		90	६९		(	963	926	पुष्पसमय		90	96
<b>चु</b> ण्यभूमि		३९	ć	पुरुषोत्तम		4	29		(	93	२२
पुण्यवत्		933	ą	प्रहू		989	<b>६३</b>	पुष्य	Į	903	986
युत्तिका		Ę	२७	पु <b>रु</b> हृत		•	४१	प <del>ुस्</del> त		130	२८
पुत्र		υĘ	२७	पुरोग		904	७२		5	48	945
<b>প্র</b> সিকা		130	24	पुरोगम		904	७२	प्ग	J	940	२०
धुन्री		40	र्	पुरोगामिन् 	•	904	७२	पूजा		९३	38
पुद्रल		.996	२०	पुरो <b>डाश</b>		196	29	पू जित		988	96
पुनःपुनः		969	२	पुरोधसू		९७	٩		(	933	ષ
	(	966	<b>३५</b> ३	पुरोभागिन <u>्</u>	,	935	४६	पूज्य	1	908	940
पुनर् .	(	151	9 4	पुरोहित		90	ષ્		•	98	૪૫
पुनर्नवा		39	989	पुत्ताक		944	4	पूत	ļ	994	73
पुनभव		٤٩	63	पुंलिन		3 \$	٩.	,		289	44
<b>પુ</b> નર્મ્યુ	~	७२	<b>२</b> ३	पुलिन्द		125	२०	पूतना		49	५९
पुत्राग		४७	२५	पुलोमजा		U	૪૫	प्तिक		40	¥6
<b>प्रंस</b>		Ę٩	9	पुषित		१४६	९७	पूतिकरज		4.	86
पुर		80	9	1	Ĺ	90	9	n <del>Co</del> error	•	५०	48
177	(	¥¢	३४		ļ	३२	8	प्तिकान्ठ	Į	49	ۥ
पुर	{	906	963	पुष्कर	7	३७ ६१	89	पृतिगन्धि		२०	92
पुरस्		190	v			968	. ४५ ६८	पुतिफली		44	96
पुरःसर		9•६	७३	पुष्कराह्व	•		I	युप		196	¥6
पुरतस्		19.	v	उप्परा <b>इ</b> पुष्करिणी		₹७ ab	२२	प्र		986	₹•
पुरद्वार		**	96	पुष्कल		३५ १४०		पूरणी		40	×¢
पुरन्दर		Ü	89	तेह		188		पुरित		988	96
पुरत्ज्ञी		Vo	Ę	3-	•	४६	- 1	पुरुष		55	1
पुरस्कृत्		954	68	<b>पु</b> ल्प	1	ં હર	::1		•	188	
पुरस्तात्		960	386			999	२३	पूर्व	{	186	કૃષ્ ૧૯
पुरा.		966	३५३	riverse.	(	10		पूर्णकुम्म		800	<b>३</b> २
प्रंराण -	{	28		पुंष्पक	1	924	903	पूर्णिमा		94	v
•	l	385	_ <b>৬</b> ৬	<b>पुष्पके</b> तु		934	903	पूर्त		53	२८
पुरातम		885°	৬৬	पुष्पदन्त		99	8	~"		90	
<b>प्रकृत</b>		· 33	۶.	पुष्पघन्वन्		4		पूर्व , }		185	9
<b>प्रति</b> ्		Ye	•	पुष्पप्रियक		85	88	~ '{		902	११४
<b>प्र</b> धितत्		45		पुष्पफल		४७		पूर्वज		wy	* * * *
<b>डिरीब</b>		<b>65</b> .	. 60	पुष्परथ		903		पूर्वदेव		¥	58
							,	•			,

शब्द.	5a.	-श्लोक'	शब्द.	gg.	श्लोक.	शब्द.	5 a <sup>-</sup>	 स्लोक "
पूर्वपर्वत	४३	३	पेचक {	६५	94	प्रकार	908	१६२
पूर्वेद्युस्	958	39	1440 }	944	•		98	38
यूषम्	18	ર લ્	पेटक	१३०	<b>२</b> ९	प्रकाश {	963	२१८
पृत्ति	340	9	पेटा	१३०	<b>३</b> ९	प्रकींशुक	900	₹9
<b>पृ</b> च्छा	२२	90	पेटी	२०४	४२	प्रकीर्य	५०	46
पृतना {	९०५	44	पेलव	१४२	६६	(	96	<b>3</b> 9
	900	<b>6</b> 9	पेशल {	929	99	प्रकृति 🔾	३०	३ं७
' पृथक्	968	3	परावा {	969	२०५	1881G )	96	96
पृथक्पर्गी	५५	<b>९</b> २	पेशी	€ ८	३७	_ (	. १६४	७३
पृथगात्मा {	15	39	पैटर	990	૪ષ	प्रकोष्ठ	69	60
Educat (	% इ	३८	पैतृष्वसेय	७३	44	प्रक्रम	942	₹
पृथग्जन {	176	24	पै <b>तृष्व</b> स्रीय	ં ફ્ર	३५	प्रकिया	900	39
- (	986	906	10	६३	982	प्रक्वग्र	24	३५
· पृथरिवंध - १८-२	१४५	88	पोटगल '{	६३		प्रक्वाण	<i>' २५</i>	३५
पृथिबी	- ३८	2	पोटा	vg		प्रक् <b>वेडन</b>	5.06	69
	996	३७	_ (	\$6	३८	प्रगंड	<b>د</b> ٩	60
पृथ	590 0~0	૪૦ <b>૬</b> ત	पोत {	962		प्रगतजानुक	७६	٠ ٧٥
<u> </u>	989	४ · । ३८	पोतवणिज्	33	92	प्रगल्भ	938	३५
· प्रथुक }	६८ ११४	<b>२</b> ६ ४७	पोतवाह	\$ 3	98	प्रगाढ	980	**
*** (	944	ą	पोताधान	३४	99	<b>प्रगु</b> ण	988	હર
<b>पृ</b> थुरोमन्	38	94	पोत्र	906	960	प्रगे	997	95
पृथुल	989	ę,	पोबिन्	48	२	(	999	995
(	36	Ę	पौण्डर्य	५९	9 2 0	प्रमह {	966	30
.प्रथ्वी }	996	₹.	पोत्री	७३	29	प्रप्राह	968	३७
(	990	80	पीर	ĘĘ	966	<sub>प्र</sub> शीव	२०३	३५
प्रथ्वीका	५८	924	1	983	60	प्रध्या	४२	99
টুবাক্ত	३१	Ę	पौरस्त्य	७०२ ८२	20	प्रवाख.	४२	93
· प्रुद्धिन	७६	86	पीरुष }	१८४	29 7 <b>7</b> 7	प्रचक	905	94
पृश्निपर्गी	५५	९३	<b>पौरोगव</b>	994	· 30	प्रचलायित	• •	<b>₹</b> ₹
<b>ट्रषत्</b>	₹ २	Ę	पोरागय पोरामास			1	१३७	६३
{	३२	Ę		<i>९५</i>	v	प्रचुर प्रचेतसू	, , , ,	<b>ξ9</b>
ष्ट्रषत {	ĘY	90	1 -	94		प्रचोदनी प्रचोदनी	<b>પુષ્</b>	38
<b>पृष</b> त्क	906	6	पौलस्तम	90	-		۶ <b>ۇ</b>	198
· <b>प्रषद</b> श्च	\$	६३	<b>पो</b> चि	196		प्रच्छद्पट		98
<b>ट्टषदा</b> ज्य	۶ <b>३</b>		<b>दौष</b>	9६	94	1	४२	
पृष्ठ	٤٠	46	पीष्पक	924	903	1	9.0	<i>بو</i> نو جانو
<b>प्र</b> ष्ठ वंशघर	6.	٠Ę	प्याद्ध	168	y	प्रजन	948	۶ <i>۹</i>
<b>प्रष</b> ्ठास्थि	45	६९	प्रकांड {	96	२७	प्रजविन्	908	७९
م	902	४६		*4	90	প্রজা	946	३२
ष्ट्रष्ठष {	948	85	प्रकाम	195	40	प्रजाता	७२	95

			1						
शब्द.	द्रष्ठ.	क्लोक.	शब्द.		पृष्ठ.	<i>স্ট</i> ীক	शब्द.	वृष्ठ.	स्टोब.
त्रजापति	•5	90	प्रतिज्ञान		95	۲.	प्रतीक्ष्य	Ę	ور
प्रजावती	७३	३७	प्रतिदान		922	69	प्रतीची	90	9
प्रज्ञ	vĘ	४७	प्रतिष्दान		74	<b>३</b> ५	प्रतीत {	9 इप्र	\$
मक्का {	95	9	प्रतिनिधि		१३१	3 \$	(	964	८२
ť	49	32	प्रतिपत्	<b>§</b>	94	3	प्रतीप <b>द</b> शिंनी	६ ६९	3
प्रज्ञान	900	922		Ł	98	3	प्रतीर	३२	•
प्रदीन	६८	३७	प्रतिपन्न		980	906		( 88	98
प्रब्द.	पृष्ठ.	इलोकः	प्रतिपादन		58	२९	<b>मतीहरि</b>	3 90	<b>\$</b>
प्रग्रय {	948	२५	प्रतिबद्ध		935	89	-2-0	( 900	900
(	908		प्रतिबन्ध		908	२७	प्रतोली 	80	Ę
<b>प्र</b> ग्रव	३३	4	प्रतिबिम्ब		939	3 6	प्रत्न	188	<b>V U</b>
प्रणाद	२३	99	प्रतिभय		२७	२०	प्रत्यक्पर्गी	48	68
प्रशाली	3 €			त	936	२ ७	प्रत्यक्श्रेणि	} 48	
प्रशिधि	<b>\$ 96</b>	1	प्रतिभू		१३२	**		( 49	188
प्रणिहित	( 140		प्रतिमा		939	३५	प्रत्यस	988	७९
	188	۲۶)	0	(	909	<b>२</b> ९	प्रत्यप्र	१४३	<b>UU</b>
प्रणीत }	59 - 996	900	प्रतिमान	1	939	રેલ	<b>प्रत्यन्त्</b>	953	२१
प्रणुत	116	909	प्रतिमुक्त	•	904	Ęų	प्रत्यन्त 	३८	v
प्रणेय प्रणेय	136	1-21	प्रतिरोधिन्		928	२५	प्रत्यन्तपर्वत 	**	•
<b>प्रतन</b>	१४२ १४३		प्रतियत्न े	•'	986	900	प्रत्यय	१७३	180
(	104 69	90	प्रतियातना		939	36	प्रत्ययित	96	13
मतल {	69	681	प्रतिवाक्य		२२	90	प्रत्यर्थि <b>न्</b>	9.0	99
<b>श्र</b> ताप	<b>55</b>	~ 1	प्रतिविषा		<b>પ</b> ુષ્	99	प्रत्यवसित	386	990
<b>म</b> तापस	48	7-1	पतिशासन		१५३	• \$8	प्रत्याख्यात	938	<b>አ</b> ቀ
प्रति	966		मतिस्याय		u u		प्रत्याख्यान	945	३१
प्रतिक <b>र्मन्</b>	૮ફ		पतिश्रय		908	01.3	प्रत्यादिष्ट	१३९	**
प्रतिकृत	988	1	प्रतिश्रव		98		प्रत्यादेश	345	\$9
प्रतिकृति	131	~ t	पतिश्चत		२५	9.0	प्रत्या <b>ली</b> ढ	900	Ch
प्रतिकृष्ट	980	4 Y	प्रतिष्टम्भ		१५२	2.0	प्रत्यासार	908	৬৪
प्रति <b>क्षिप्त</b>	135	1 sx	पतिसर	•	100	0,00	पत्याहार	949	16
प्रतिख्याति	943		प्रतिसीरा		66	92-1	पत्युत्क <b>म</b>	948	२६
<b>मतिम्रह</b>	900		पतिहत		938		<b>ग्त्युषस्</b>	94	7
त्रतिप्राह	66		पतिहानक		968		<b>ग</b> न्यूष	44	₹.
प्रतिघा	२८		पतिहास		५३	७६	<b>त्युह</b>	949	95
प्रतिघातन	999	994	•				पथम {	185	60
मतिच् <b>छा</b> या	939	34	पत्तीक {		७९ १५५	40	Ĺ	१७३	988
प्रतिज्ञागरः	943		मतीकार				<b>ग्या</b>	186	\$
पतिज्ञात	980		नताकार प्रतीकाश		990		रथित	158	· 5
- 1 51 4 50	•••		ハルマス		939	₹७,1	ादर	906	15%

शब्द.	gg.	इलोक	शब्द.	25.	श्होक,	शब्द.	पृष्ठ.	श्लीक.
प्रदीप	66	१३८	<b>प्रमदा</b>	89	ą	प्रवृत्ति	<b>९</b> ११	u.
प्रदीयन	३१	90	प्रमनस्	१३४	U	78171	रे १५१	36
प्रदेशन	900	<b>३</b> ७	<b>म</b> मा	940	90		( JAS	né
प्रदेशिनी	<b>د</b> ٩	69	प्रमाग्र	157	५४	प्रबद्ध	188	66
प्रदोष	94	५६	प्रमाद	२९	Ę٥		( १६५	<b>دلع</b> است
प्रसुरत	4	२५	<b>भमाप</b> ण	999	929	प्रवेक	989	40
प्रदाव	999	999	<b>म</b> मिति	940	90	प्रवेणी	<b>€३</b>	96
प्रधन	990	903	प्रमीत {	<b>२२</b> .	२६	प्रवेष्ट	( 90R 69	४ <del>२</del> ८०
	90	२९	प्रमीत {	999	990	प्रवष्ट प्रज्यक	48£	69 69
onerer -	90		प्रमीला	} ३० { १७७	३७	प्र <b>स्त</b>	? <b>?</b>	90
प्रघान	] 181	५७	नगर्धा	रे १७७	१७६	प्रश्रय प्रश्रय	142	24
	100	922	प्रमुख	989	<b>৫</b> ৩	प्रश्रित	948	<b>5</b> 4
प्रधि	9•₹	५६	<b>प्र</b> मुदित	980	१०३		904	७१
प्रपंच	946	२८	प्रमोद	96	२४	ਸ <b>ਲ</b> ਜ਼ਰੂਤਾਤ	950	ξ≹
प्रपद	७९		प्रयत	\$8	४५	प्रष्ठवाह ————		4 e
प्रपा	४१	· 1.	प्रयस्त	996	४५।	प्रष्ठौद्दी	129 38	98
प्रपात	४३	8 3	पयाम	948	231	प्रसन	44 93	. d &
प्रितामह	७४	3 3 2	<b>ग्योगार्थ</b>	949	36	प्रसन्नता ए——		3 <del>4.</del> 3 <b>5.</b>
<b>স্</b> যুদ্ধান্ত	६१	980	<b>ग्लम्ब</b> घ्न	٠,	२३	मसन्ना	939	
प्रपौण्डरीक	49	१२७	(	94	25	प्रस <b>म</b>	990	१०८ २३
प्रफुल	४५	9 5	ग्लय }	२९	: 3	प्रसर	942 9•5	5¢
प्रबन्धकल्पना	<b>१</b> २	٩	(	999	996	प्रसर्ग	( 940	<b>do</b> :
प्रबोधन	८६	१२२ प्र	रिलाप	२३	94	प्रसव	1 968	२०८
प्रभंजन	9		विग्र	962	५६	प्रसवबन्धन	3	. ધુવ
प्रभव	१८२		वियस्	७५	~~	प्रसन्य	988	68
प्रभा	98		विह	989	1	पस <b>रा</b>	980	50
प्रभाकर	98		विह	949	90	71104	6 98	36
<b>प्र</b> भात	94	_	वहगा	9०३		प्रसाद	र् १६६	59
मभाव {	96	9 S B	विह्निका	. રેફ		प्रसाधन	٤٤	55
n6	99	२० प्र	वारग	986	1	प्रसाधनी	66	135
भिन्न एक	909	३६	(	२६		प्रसाघित	८३	900
प्रभु	9 ई४		वाल }	१२४	९३	प्रसारिणी	Ę٩̈́	942
<b>प्रभू</b> त	989	<b>6</b> §	C	969	२०४	प्रसारिन्	9 ३ ७	३१
प्रभ्रष्टक	66	१३५ प्र		949	96	प्रसित	930	9
प्रमथ	Ę	३५ प्र		999		प्रसिति	940	98
प्रमथन	999	११५ प्र		vv		प्रसिद्ध	186	908
प्रमथाधिप	Ę	1 1	विदारण	190	908	पसू	<b>∫</b> ⊌₹	88
प्रमद •	96		वि <b>र्तेष</b>	949	,,		रे १८५	२२९
प्रमद्वन	8.8	३ प्र	वीसा	933	8 [	प्रसूता	७२	;£

शब्द.	<u> </u>	रुलोक.	शब्द.	ys.	%ोक∙े	Teg.		<b>9</b> 5.	. श्लोक.
		1	-		1		,	_	
प्रसूति	<b>9</b> 40	1	प्राधार	940	90	प्राप्ति	}	७ १६३	३ <i>६</i> ६ <i>९</i>
प्रसूतिका	७१		प्राघृशक +	65	58	प्राप्य	•	984	<b>5</b> 7
प्रस्तिज	३२	1	प्राचुर्शिक 🕂	<b>43</b>	1.1	गा- <b>प</b> प्रासृत		900	3 <b>7</b>
प्रसून	<b>} ४६</b> } १७०	- 1	प्राचिका	984	9	713(1	(	96	५२
प्रसूजनियता	•		प्राची प्राचीन	' 1•	3	प्राय	{	968	4 <b>4</b> 3
त्रसूजनायता त्रस्त	988	. 1	प्राचीना	¥0	د بر د بر	प्रायस्	•	989	90
मस्ता	60	७२	प्राचीनावीत	<i>ષ</i> ૪ ૬ <i>ષ</i>	40	<b>मार्थिक</b>		188	9,0
मस्ता प्रसृति	49	۶۲ ۲۷			20	प्रालम्ब		66	134
नकारा प्रसेव	194	25	प्राच्य	₹८ <b>१</b> १₹	92	प्राल <b>म्बि</b>	T	48	144
न्यूप प्रसेदक	75	24	भाजन भाजितृ	१० <b>४</b>	५९	मालेय मालेय	•	98	96
	\		সাজন্ত প্রাল্	69	<i>d</i> .	मारूप मावर <b>ण</b>		<b>\$</b> 6	996
प्रस्तर	4 908	959		9		मावार		42 61	990
प्र <b>स्ताव</b>	948	28	সাল্লা			t .			
	( ४३	وم	प्राज्ञी	<b>9</b>	7	मावृत		હધ ભ	993
प्रस्थ	} १२३	69	प्राज्य	989	4 4 4	प्रावृष्	a	90	15
c	( 966	૮૮	प्राइविवाक	9,0		मानुषाय <b>ः</b>	U	५४	95
प्रस्थपुष्प	د بغ	હલ્		۹۹۰	६३ १०३	प्रास		906	4.5
प्रस्थमान	१२३	८५	সাঅ	) 999	998	मासंग प्र:संग्य		908	40
प्रस्थान	१०९	<b>९</b> ५		( 934	908	1		920	68
प्रस्फोटन	994	२६	<b>प्राणिन्</b>	96	३०	श्रासाद श्रासिक		89	<b>\$</b>
मस्रवण	४३	فع	प्राणि <b>द्य</b> त	933	४६	i		१०५	90
प्रसाव	৬९	Ęu	ना ग्हूरा प्रातर्	958	99	प्राह		9 4	3
प्रहर	94	é	प्राथमक हिप		99	प्रिय	<b>\{</b>	98	३५
प्रहरस	900	८२	नायपगरार ।	( 966	२ <i>५</i> ६		(	980	43
ब्रहस्त	41	८४	प्रादुम्	1 990	93	प्रियक	(	89	४२
স্থি	इ५	२६	प्रादेश	<b>.</b> 69	८३	।भथक	1	४९ ५१	४ <b>४</b> ५६
प्रहेलिका	२२	Ę	प्रादेशन	<b>5</b> 2	<b>ફ</b> o	1			
प्रहम	980	१०३	प्राध्वम्	965	8	अियंगु	}	५१ ११४	५० २५
प्रांशु	१४१	७०	प्रान्तर	์ชอ	90	प्रियता	•		
श्राक	<b>}</b> 151	98		( 988	૮૬	1		१८	२७
	( 153	₹₹	श्राप्त	1 980	908	प्रियदद		१३८	₹ .
माकास्य गाउँ ।	G	36	माप्तपद्यत्व	999	990	प्रियाल		86	३५
<b>श्राकार</b>	¥	•	<b>प्राप्त</b> रूप	909	939	प्रीग्रन		985	¥
সান্তব	126	*				प्रीत		980	9•3
भाग्दक्षि <b>या</b>	३८	6	पुस्तक्रमे	नहीं है यह	दिखो।	प्रीति		96	२४
<b>प्राग्वेश</b>	<b>99</b>	98	ļ			সন্ত	_	988	55
प्राप्रहर प्राप्त्य	989	_			व्याभ्युत्थानं	प्रेचा	<b>{</b>	98	, J
Alba	989	96	तु गौरवम्	)		1	(	968	२ <b>२३</b>

शब्द .	5 <b>2</b> .	श्लोक. श	ाब्द,	<b>2</b> 8.	इलोक	, शब्द,	<b>8</b> ā.	<b>२लोक</b> *
प्रेखा	903	५३	ر	906	९०	बहिश	्र हे४	98
प्रेखित	988	60	j	998	. 93	बत	960	288
(	३१	२ प	ख -{	922	60	बद्र	ૄૼ૪૬	३७
प्रेत }	999	996		969	२०१	(	40	998
(	962	€0	L	999	98	बदरा {	49	949
प्रेत्य	950	21	ज् <b>लक</b>	906	<b>9</b> 0	बद्री	88	₹ €
प्रेमन्	२८		ञ्चकपाणि	904	9	बद्ध {	938	ጴቃ
प्रेष्ठ	986	7771	हल <b>त्रिक</b>	924	999		986	84
प्रैष	963	3951	ज्लपाकान्ता 	*4	Ę	षधिर	७६	86
प्रैच्य	126	90	<b>ज्लपूर</b>	4 \$	30	बंदिन्	908	90
त्रोद्धश	53	२६।	त्त्वत <u>्</u>	*4	<b>y</b>	बन्दी	999	998
प्रोक्षित	<b>\$</b> ₹	361	চলা <b>ংৰ</b> ৱ	40	*4	बन्धकी	७१	90
प्रोथ	903	84	हिर्	४५	U	बन्धन	<b>९९</b>	२६
प्रोध्ठपदा	13	२२ (	চলি: <b>ল</b>	४५	U	1.4.	440	98
प्रोव्धी	źR	9619	हिलानी {	49	<b>\$</b> 4	बन्धु	७४	३४
प्रौछपद	90	910	•	Ęo	934	बन्धुजीवक	4 \$	६७
	१४३	. 1	ह्यी 	49	५५	बन्धुता	४४	o £ ₽
प्रोड	86	1	<b>क्लेप्रहि</b>	84	Ę	बन्धुर ·	१४र्र	६९
प्लच्च	8 °S	83	<b>क्र</b> केहा	49	५४	बन्धुत	ृ:७३	₹६
			फल्गु {	49	٤٩		५३	७३
-	<b>ર</b> ર રૂપ		•	989	48	बन्धूक {	88	<b>ሄ</b> ጵ
प्लव 🚽	49	932	<b>কা</b> খিব	990	Υį	ब भू ब बर	900	900
-414	90	38	फांट	998	38		48	\$0
į	925	99	फाल {	८५	999	बर्बरा	Ęo	१३९
प्लवग	٤×	3	· ·	993	93	1 )	48	39
प्लवंग	ÉR	اد	फाल्गुन	90	94		968	२३६
			फाल्गुनिक	90	م د	1	५९	938
<b>प्लवगम</b>	. १७२	१३८ १८	फाल्गुनि	988	Ę		6	48
प्लाच्च	*€		<b>फु</b> छ	84		बहिंग	96	<b>ફ</b> ૦
प्लीहनू	49	46	फेन {	954		बर्हिन्	<b>q</b> c	३०
प्लीहशत्रु	40	४९	"" (	996	99		49	१३२
प्छत .	६०३	86	केनिल {	86	\$		8	2
<b>रह्य</b>	986	९९		<b>ሄ</b> ዔ	<b>ફ</b> (		46	128
प्लोष	984	9	फेरव	ÉR		4 (	4	48
प्सात	986	990	फेर	£&		4	906	30
	<b>फ</b>		फेला	115	4	६ बल 🚽	990	902
फणा	३१	5		<b></b>	_	.	960 955	954 <b>2</b> 3
দ্বণিজ্ঞক •	५३	७९	•	44	3	ا = ا	4 22	8\$
फिएन्	\$9	v	ৰকুজ	48	Ę	४ बलदेव	7	74

शब्द.	<b>58</b> .	श्लोक. शब्द.	মূছ.	श्लोक.	शब्द.	पृष्ठ.	<b>इलो</b> क
बलभद्र	ч	२३ भहुता	५०	924	नाह्यिक	5 998	४५
बलभद्रिका	€ 9	१५८ बहुलीकृत	994	२३	मा । इक	रे २०२	३२
बलवत् {	७५	४४ बहुवारक	86	₹४:	<b>6</b>	1 58	928
(	968	२ बहुविधि	984	83	वाह्निक	4 990	४०
<b>बलविन्या</b> स	906	. ७९ बहुवेतस	३९	9		<b>े १५६</b>	\$
वला	५६	१७७ बहुसुता	५५	900	वाह्य	989	90
बलाका	Ęv	२५ बहुसूति	939	90	बिड	996	४२
बलात्कार	990	१०८ बाकुची	ومودم	9.4	बिडाल <del>२ ३</del>	६४	Ę
चलाराति	y	४३ बाढ {	ع		विडोज <b>स्</b>	<b>.</b>	89
बलाहक	99	4	960		बिन्दु 	३२	Ę
, (	९०	१४ बागा	906	- 1	बिन्दुजालक 	909	३९
बिति }	55	२७	960	~ 11	विस्व	98	94
बलिध्वंसिन्	960	५९५ बागा	45		विग्बिका	Éo	35
बालन्यासन् <b>बलिन्</b>	<b>.</b>	२१ बादर	925	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	बिल 	₹ o _	9
	७६	४५ वाघा	३२	314	बिले <b>रा</b> य	₹0	6
ৰলি <b>ণ্ড</b> ৰলিণ	ĘĘ	२० बांधिकिनेय	७३	'''	वेख	86	३२
बल्भिज्	• <b>६</b>	४५ बांवव	98	701	बेस	३७	४२
व लिर व लिर	ें <b>६</b> ६ ७६	२० बाहत	८६	• • • • • •	विसकठिका	Ę	50
नारार बलिस <b>द्म</b> न्	₹•	88	46		विस <b>प्रसू</b> न	३७	४१
नारायम् नलीवद्	39 <b>5</b>	१ बाल -{ ५९ [	७५ १८१		वेसिनी	३७	₹%
(	994	२७ बालतनय			बस्त	923	86
बह्नव {	995	५७ बाततृश	<b>4</b> 0	४९	ोज {	96	२८
बल्वज	ĘĘ	१६३ बालमू विका	ĘĘ	160	(	96	<b>ब</b> २
बष्कयिणी	129	७१ बाला	€ lg		ोजकोश	३७	४३
बस्त	132	46	<b>₹७</b>	१४ व	जपूर	५३	४८
बस्ति	260	७३ बालिश }	१४० १८३	४८ व		993	٤
बहिद्वरि	४२	१२ बालेय	922	२१८ वी ७७	ो <b>ज्य</b>	८९	२
बंहिष्ठ	<b>२१</b> ८	१११ बालेयशाक	48		ſ	२७	90
<b>रहिस्</b>	189	१७ बाल्य	, 10 kg	<sup>९</sup> ० बी ४०	भत्स 🚽	२७	98
वहु	389	६३ बाब्प	909		-	964	२३४
बहुंकर	934	न वाल्पिका	996	१३० बुब		da	69
बहुगह्यचाक्	१३८	३६ बाह	د <b>۹</b>		<b>কা</b>	96	és
बहुपाइ	86	रे र बाह्य	८६	८० बुद्	[ {	4	9 \$
न्हुप्रद् इसम्य	133	<b>1</b>	₹	1	C	980	906
बहुभूल्य बहु <b>रू</b> प	८५ ८७	1 =====	44 69	३३ बुरि		95	9
.243. L	7 <b>89</b>	* 1	990	७९ बुद्	बुद	936	95
बेहुंल }	186 -	६३ बाहुयुद्ध ११२ बाहुल	96	908	(	93	२६
· · ·	360	१९९ बाहुलेय	9	१८ बुध	<b>'</b> }	65	• •
	, -	1 2	9	80	C	940	100

							==		
शब्द.	ga.	इलोक.	शब्द.	<u> 5</u> 8.	ख्लोक.	शब्द.	!	<b>79.</b>	क्लोक.
बुधित	980	२०८	<b>ब्रह्म</b> {	90	29	भद्रयव		48	६७
बुध्न	84	98	, (	९५	49	भद्र श्री		69	939
बुभुद्धा	995	45	त्राह्मग्र	68	ષ્ટ	भद्रा सन		500	39
बुभु क्षित	934	२०	<b>ब्राह्मण्य</b> ष्टिका	48	८९	भय		36	२१
<b>बु</b> स	198	<b>३</b> २	त्राह्मणी	५४	८९	मयंकर		35	२०
<b>बु</b> स्त	२०२	ર્જે	त्राह्मण्य	948	४१	भयद्गुत		135	४२
<b>चंहि</b> त	990	900	(	Ę	३५	भयानक	{	२७	90
<b>बृ</b> सी	98	४६	त्राह्मी }	२५	٩		į	२७	२०
बृहत्	989	Ęo		Ęo	१३७	भर		9	Ę <b>Ę</b>
बृहतिका	૮૬	990		<b>भ</b>		भरग		4 ई 4	३८
(	५५	* 7	भ	9 ₹		भरण्य		151	३८
बृहती {	968	હય	भक्त	996		भरण्यभुज्		१३५	95
<del>ब</del> ृहत्कुक्षि	હધ	४४	भच्च	4 2 6		मरत		१२८	92
बृहद्भानु	c	બુજ	<b>भक्षित</b>	१४८	990	भरद्वाज		ĘĘ	94
<del>बृह</del> स्पति	93	78	भक्ष्यकार	994	२८	भर्ग		ં ફ	3.5
बोधकर	908	9.0	भग {	60	७६	भर्त	{	४४	34
<b>बोधिद्गु</b> म	४७	२०		946	२६		l	१६२	49
बोत उ	9 8 4	908	भगंदर	<b>9</b> 6	५६	भर्तृदारक		२७	92
ब्रध्त	98	२८	मगवत्	4	93	भर्तृदारिका		२७	93
(	68	3	<b>मगिनी</b>	७३	<b>२</b> ९	भर्त्सन	_	२ ३	98
ब्रह्मचारित् {	58	૪રે	भङ्ग	३२	4	भगन्	{	928	88
ब्रह्मण्य	४९	६१	मङ्गा	998	₹०	,	•	150	३८
<b>ब्रह्मस्व</b>	९५	4,9	भ <b>ङ्गि</b>	994	۷	मञ्ज		996	39
<b>ब्रह्मदर्भा</b>	٤9	984	भंग्य	998	v	<b>भ</b> ह्रात <b>डी</b>		88	४२
ब्रह्मदारु	89	89	भजभान	<b>९९</b>	२४	भल्छक		£.	३
(	4	95	भट	308	६१	भल्द्धक	_	£.A.	*
ब्रह्मन् {	965	998	, भटित्र	990	४५	भव	Ş	Ę	₹¥
ब्रह्मपुत्र	₹9	90	भट्टारक	२७	45		C	169	२०६
ब्रह्मबन्धु	986	908	<b>म</b> ष्टिनी	२७	93	<b>भवन</b>		*9	4
ब्रह्मबिन्दु	58	३९	भटाकी	<b>લે</b> છ	998	भवानी		•	३७
<b>ब्रह्मभू</b> य	९५	49	<b>भं</b> डिल	49	ĘĘ	भविक		96	२६
<b>ब्रह्मय</b> ज्ञ	50	98	<b>मंडी</b>	48	89	भवितृ		930	75
नक्ष <b>्र</b> ब्रह्मवचस	<b>9</b> 3		भद्र {	96	<b>२</b> ५	म:विष्णु		१३७	75
		3 <i>5</i>	" (	995	५९	भव्य		16	948
न्रह्मसायुज्य नहासू	<i>९५</i>	<b>५</b> 9	<b>भद्रकुम्म</b>	900	<b>३</b> २	भषक		939	<b>२२</b> > <b>&gt;</b>
-	<b>ب</b> • اد	२७	भद्रदारु	५०	43	मस्रा	•	910	<b>3</b> 3
ब्रह्मसूत्र ब्रह्मांच्या	<i>94</i>	४९	118301	46	36	भस्मः धिर्न	ı	46	<b>9</b> 70
त्रह्यांजलि • संद्यासन	<b>5</b> ₹		भद्रबला	<b>Ę</b> 9	348			49	६३ ४४
<b>ब्रं</b> झासन	38	३९	भद्रमुस्तक	६२	960	ना		18	₹Ā.

शब्द.	<b>9</b> 8.	श्लोक श	ब्द.	₹ <b>8</b> ,	श्लोक.	शब्द.	gg.	স্থীক
भाग	928	69 ¥	गुष्य	२०१	<b>२</b> १	<b>भुजांतर</b>	60	99
भागधेव	5 96	₹6 ¥	ना <b>स</b>	98	३४	मु जिब्स	996	96
	<b>ે</b>		<b>मास्कर</b>	98	२८		( १२	7
भागिनेय	७४	\$4 2	<b>मास्वत्</b>	98	२८	भुषन	} ३२	3
भागीरथी	₹€	39	37-9 <b>T</b>	986	ę		( ३८	Ę
भागीन	998	- 1	मेल्।	8 968	२२४	भू	३८	8
भाग्य	96	२८ ह	मिध्र	989	४१	भूत	986	99 90%
	( 908		भेत्त	13	98	A.C.1	र १६४	96
भाजन	955 ( 995	331	भित्ति	<b>¥9</b>	¥	भूतकेश	926	999
भांड	<b> </b>	88	भिदा	185	Ŋ	भूतवंशी	42	৬৭
भाद्र	90	الموا	भिदुर	6	80	भूत।स्मन्	986	904
भादःद	90	90 1	भन्दिपाल	906	89	भूतावास	49	40
भाद्रपदा	998		भेन्न •	888	८२	i i	5 0	३६
41744	( 98	20		( 180	900	भूति	र् १६३	६९
भानु	1 98	33 '	भवज्	••	५७	भूतिक	944	
	( 986	904 1	भस्सटा	196	88	भूतेश	Ę	३ %
भामिनी	. 00	~ [	भस्सा	996	38	भूदार	६४	?
भार	988	~ "	<b>₹</b> 1	२८	29	भूदेव	68	¥
भारत	३८	€ F	नीति	२८	<b>₹</b> 9	भूनिस्ब	Ęo	१४३
भारती	२१	9   #	नीम	<b>} \$</b>	<b>3</b> 8	भूप	९ ६	9
भारद्वाजी	<i>પુ</i> છ	998		<b>\                                    </b>	<b>२</b> ०	गूपदी	५२	y o
`भारयष्टि	१३७	३०३	नीरु	<b>६</b> ९ १३६	ह २ ३	भूभृत्	r <b>É</b> 5	६५
मारवाह	१२८	94	<del>fica.</del>	936		भूमन्	२७८	90
भारिक	126	401	रीहक <del>रिक्र</del>	144 936	<b>२६</b> २६	भूमि	३८	8
भाग्व	18	1,1	रीब्रुक रीषग्र			भूमिजम्बु	{ xs	३८
भागेनी	<b>4</b> 8	, ,~,	गावर्ण निब्स	२८ <b>२</b> ८	२०	_	<b>}</b> 40	196
भार्गी	५४	6717	गण्ग गिष्मसू	₹ <b>5</b>	२० <b>३</b> १	भूमिस्पृश्	992	1
<b>সার্য</b>	Vo	`1.		986	191	भूयस्	989	Ęş
भार्यापती	VY.	,-	<i>বুল</i>			भ्यिष्ठ	149	ÉÌ
******	<b>१</b> ६	97 3	<b>पुम</b>	{ं9४२ {े9४५	<b>49</b>	भूरि	3 989	<b>4</b> 3
भाव	<b>१८</b>	57		•			100	1<7
	( 66		मुज	69	60	भूरिफेना	Ęo	183
भाविक	116		<b>भुजग</b>	३१	٩	भूरिमाय	Ę¥	4
	( 980	90619	मुजंग	\$9	•	भूरंडी	45	49
म हिन	96	રદ   રે	पु <b>जं</b> गसु <b>ज्</b>	şc	₹•	મૂર્જ	५०	Ré
भाषा	23	7   3	<b>भुजंगम</b> ^	<b>ξ</b> 9		भूषण	,८३	1-1
भाषित	{	1 3	भु <b>जंगाची</b>	<i>जु</i> ७	994	भषित	૮રૂ	. 700
	( 184	3.00	पुजशिर <b>स्</b>	<b>6</b> •	46	भण्यु	9 रैं 🛡	२९

शब्द,	<b>g</b> 3.	स्त्रीक.	शब्द.	₹ <b>8</b> .	ऌोक.	शब्द.	<b>2</b> 8.	স্ভীক
<b>भ</b> ₹तृ ग	. ६३	१६७ ३	<b>अमरक</b>	٤ ٤		मक्षरि	84	93
मृगु	४३	٧ :	श्रमि	988	9	मिडिष्ठा	48	ું∙
(	५९	१३४ :		986	४०४	मझीर	<b>دم</b>	908
मृङ्ग }	<b>44</b>		<b>त्रष्टय</b> व	994	४७	<b>मं</b> जु	J.A	५२
(	६७		রা জিষ্ণ্য	८३	909	<b>मं</b> जुल	980	५१
<b>भृंगराज</b> •	६१	343 3	त्रातरौ	७४	३६	मजूषा	<b>९३०</b>	25
सगार	900		<b>রানু</b> ज	७४		मठ	89	२८
<b>मृंगारी</b>	६७		त्रातृजाया	७३	हे ०	मङ्हु	२६	6
र्भृतक	996	30/3	त्रातृभगि-यौ	७४	3 €	मणि {	Ę	२८
<b>भृति</b>	१३१		<b>ब्रातृ</b> व्य	१७३	484	•	१२४	<b>९३</b>
<b>स</b> तिभुज्	१२८		<b>ब्रात्रीय</b>	४४	३६	मणिक	998	₹9
्सृत्य	926		श्रांति	93,	8	म णित्रध	69	69
मृत्य!	4 5 4	36	<b>अ</b> .ष्ट्र	196	30	Hog {	40	49
<b>मृशम्</b>	5	1	हें <del>शि</del> ष	२६	99	. · · · ·	996	86
भेक	₹ <i>\</i> 4		हूकुटि	३०	३७	म∘डन {	८४	902
मेकी .	\$ 4		₹ *	62	९२	C	१३७	<b>२९</b>
भेद {	९५	२० :	भूकुस भूकुस	२६	99	मण्डप	89	٠٩,
•	<b>९</b> ९		भूकुटि	३०	३७	T/72=2	33,	<u> </u>
भेदित	१४७	400	• (	9 6 0	४५	मण्डल 🖁	92 98	\$ 5 1 4
भेरी	•२६		भूण }	હહ્	₹ <b>Q</b> ,	मण्डलक	৬৬	. 48
भेषन	७६	٠, و	΄ (	903	3 34	मण्डलात्र	906	68
भैव	९५		भ्रेष	<b>\$</b> \$	२३	मण्डलेखर	44	8
भैरव	२ ७	95		स्		मण्डहारक	926	90
भैषज्य	७६	40	मकर	३४	२०	मण्डित	د <i>۲</i>	900
भोग	940	२३	मकरध्वज	4	76	मण्डीरी	48 *	39
भोगवती	१६३	ಅಂ	मकरन्द	86	90	मं <u>ड</u> ्क	<b>३</b> ५	 <b>ર</b> ૪
भोगिन्	<b>\$</b> 3	٥	मकुष्टक	998	90	मण्डूकपर्ण 	49	५६
भोगिनी	७०		मक्लक	€ 9	388	मण्डूकपर्शी	48	- 59
भोजन	998	<b>પુષ્</b>	मक्षिका	Ę v	२६	मण्डूर	१२४	\$6
भोस्	968		मख	હે હ	93	मतगज	900	३४
भीम	9 ફ		मगघ	908	९७		96	२७
भौरिक	९७		मधवत्.	v	४१	l_a	98	9
<b>अंश</b>	<b>SS</b>		मिश्च	968	ع ع <i>ب</i>	,		
<b>त्रं</b> कुस	२६		मङ्गल	96		मत्त {	<b>9</b> 09 932	३६ २३
প্রকৃতি	३०	7.1	मङ्गल्यक	998	90	1 /	144 986	रर १०३
	98	•	मङ्गल्या	20	. 920	मत्तकाशिनी	90	8
भ्रम	<b>3</b> 5		मचर्चिका स <del>म्बद्ध</del>	9 6 8 kg	<b>२७</b> १२		300	१७२
	१४९			66		मत्त्वर मत्स्य	₹४	100
भ्रमर	Ę o	२९	मध	66	140	Lacca	7.	14
	ષ							

	<u> </u>							
शब्द.	द्रष्ठ.	क्षीक ,	शब्द,	<b>у</b> в.	श्लोक.	शब्द,	58°	इलोष.
मस्यंडी	990	४३		48	८३	<b>मनोजवस</b>	१३४	93
मत्स्यपित्ता	५४	८६	मधुरसा {	હ દ	900	मनोज्ञ	980	५२
मत्स्यवेधन	40	96	मधुरा	६१	948	मनोरथ	२८	२७
मत्स्याक्षी	30	१३७	मधुरिका	५६	904		980	५२
मत्स्यात्खग	१८३	२१८	मधुरिपु	4	२०	मनोहत	938	४१
मत्स्याधानी	५८	9 ६	मधुलिह्	ĘĠ	<b>२</b> ९	मनोहा	926	906
मथित	999	५३	मधुबार	9,39	४०	मन्तु	٩ <b>٩</b>	રદ્દં
' मथिन्	929	७४	मधुव्रत	६७	२९	मन्त्र	१७६	9६७
(	909	३७	मधुशिपु	४८	३१		9.9	8
मद }	920	92	1 - 1 - 1 - 1	५४	४४	मंत्रिन् {	968	२०६
(	966	99	143-014	86	२८	<b>मन्थ</b>	929	७४
मद्कल	909	34	1.136.11	Ęo	988	मन्थदण्डक	999	80
(	4	२५	1	86	२७	मन्द्रनी	929	७४
मदन {	<b>k</b> 0	५३ ७८		996	900	मन्थर	905	७२
	५३	40	मध्लक	86	२८	मन्थान	929	७४
मदस्थ <sub>।</sub> न	939		मधूलिका	५४	४४		975	. 96
मृदिरा राज्या	१३१ ४१	, ¥0	1 (	69	७९	मन्द {	950	94
मदिरागृह .	909		,	६७	989	मन्दगामिन्	२०६	७२
<b>मदोत्क</b> ट	ĘG	₹ <b>4</b>		36	v	मन्दाकिनी	` .	४६
म <b>र्</b> गु महार	₹ <i>5</i>	990	1 (	२५	3	मन्दान्त	२८	२३
मदगुर मध	939	88	1	, ३८	6	· · · ·	ė	५०
44 <i>(</i>	9 v	94		. د <u>۹</u>	७९	मन्दार }	४७	२ ६
\	926	906	मध्यमा }	७० १५	८ ८२		५४	62
#병 }	939	४१	मध्याह	14	ą	मदिर {	४१	4
	986	903	मध्वासव	939	89	الطو كي	908	958
मधुक	५६	908	मनः श्लिला	928	906	मन्दुरा	४१	6
मधुकर	६७	<b>२</b> ९	मनस्	950	<b>₹</b> 9	मंदंभ्या	98	\$ 4
मधुक्स	939	४०	मनसिज	4	94	मन्द्र	२५	२
मधुद्रुम	86	२७	मनस्कार	98	2	मन्मथ {	ų	<b>२</b> ५
मधुप	902	25	मनाक्	980			80	29
मधुपर्शिका	5 xc	३०	मनित	980	906	मन्या	७९	६५
मञ्जूपार्याका	🕻 ५५	98		99	9	मन्यु {	<b>२८</b>	२ ५
मधुपर्गी	48	६३	मनीषिन्	८९		•	968	१५३
मधुमक्षिका	Ęu	२६		२०३	<b>4</b>	मन्बन्तर	96	<b>२</b> २
<b>मधु</b> यष्टिका	५६	909	4 '4	ĘS	<b>३</b> ८ ५	<b>मय</b>	<b>५५</b>	७५
a (	२०		मनुष्य	£8	9	मयु	90	<b>9</b> ی
मधुर 🔭 {	909		मनुष्यधर्मम्	90	Ę C	मयुष्टक	988	90
ु मधुरक	Ę o	987	मनोगुप्ता	985	906	मधूख }	98 e 940	3 } <b>9</b> ¢
			•	• •		(	174	7.4

शब्द.	,	<b>पृष्ठ</b> .	ऋोक,	शब्द.	<b>73.</b>	इतोक.	शब्द.	રૃષ્ટ.	इलोक,
	(	५७	999	मल्ल	996	२९	महिमन्	٠	₹
मयूर	₹	86	३०	मल्लक	२०३	३७	महिता	६९	Ę
	5	<b>પ</b> ્ર	66	मल्लिका	५२	६९	महिलाह्या	ويع	لدلو
मयूरक	{	१२५	909	मल्लिका व	Ęu	२४	महिष	£ 30	6
मरकत		988	99	मल्लिगं <sup>चि</sup>	EU	१२७	महिषी	<b>9</b> c	4
मरगु		999	998	मसी	954	90	मही	३८	4
मरीच		996	३६	मसूर	998	9 3	महीक्षित्	9 €	9
मरीचि	(	98	२७	मसूरविदला	५६	969	महीध्र	83	٩
<b>मरा</b> ।च	{	98	<b>₹</b> ₹	भस्ण	956	४३	महीरुइ	88	نر
मरीचिका		94	३५	मस्कर	६३	9 5 9	महीलता	३५	29
मन	5	३८	ч	मस्करिन्	98	89	महीसुत	93	24
પાય	Ţ	१७६	463	मस्तक	૮રૂ	<b>૭</b> ૫	महेच्छ	9 3 3	Ę
मस्त्	<b>{</b>	9	६२	मस्तिष्क	હવ	Ę۷	महेरुणा	46	928
	Ĺ	99	7	मस्तु	998	५४	महेश्वर	Ę	३०
मरुत्		965	५९	मह	₹,	3 6	महोच्च	920	ę٩
मरुत्वत्		ુ	४१	-16	( 989	ξo	महोत्पत्त	३ं७	રૂલ
मरुन्माला		(	933	महत्	4 4 4	<b>હે</b> ૬	महोत्साह	933	३
मस्ब क	<b>{</b>	40	45	महती	963	६९	महोश्रम	933 *	3
	Ĺ	५३	હશ્	महस्	964	239		( 44	90,
मर्दट		६४	Ę	महाकन्द	<b>Ę</b> 9	186	महोषध	} ६9	386
मकेटक	_	Ęų	9 \$	महाकुल	٥٩	₹	,	( 990	₹८
मर्कटी	<b>{</b>	40	86	nsin .	922	હલ	मांस {	96	<b>६३</b>
	(	هنم	८७	महाजाली	५७	990		955	<b>२२</b>
मर्ख		६९	9	महादेव	, Ę	3,	मांसल े	७५	ጸጸ
म र्न		945	२ २	1	હર્ષ	193	मांसात्पश्च मांसिक	9६० १२८	४२ १४
मद्न		२६	ć	महाधन	994	? · · ·	ł		900
मर्भन्		२०१	₹०	महानस	९७	4	माक्षिक	9२६ <b>9</b> ० <b>९</b>	90
मर्भर		२४	२३	महामात्र	928	م م	मागध }	920	30
मर्मस्पृश्		988	८३	महारजन		906		( पेश	بو و
मर्यादा		<b>९९</b>	२६	महारजन	925	104	मागधी	کی مرکز	9.6
मल	5	७९	Ęq	महारण्य	<b>አ</b> ጸ_		माघ	9 8	94
<b>□</b> 1 -	į	960	१९७	महाराजिक		90	माध्य	५३	६७
मलद् षित	•	989	५५	महारोरव	₹9	9	माठर	98	₹9
मलयज		۷ ۷	939	महाशय	9 \$ \$	ş	माढि	994	6
मत्त्रयू		49	६१	महाश्रदी	<i>u</i> 9	93	 	خ م	४२
मलिन		१४१	بوبو	महार्वेता	५६	990	माणवक	<b>}</b>	905
मलिनी		७२	. 86	प्रशासका	र् ५३	५३	मागुव्य	948	Yo
मलिम्छच	•	१२९	२५		. દે -	१३८	माणिक्य	२०१	ξģ
मलीमस	•	986	द्येष	महासेन	y	ફ્રેલ	माणिमन्थ	996	**

शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक	शब्द.	মূন্ত.	श्लोक	शब्द.	ष्टुष्ठ.	<b>३लोक</b>
	999	99	मायादेवी सुत	. ed	94	मासिक	९२	<b>३</b> 9
मातज्ञ {	940	29	मायु	હ્ટ	६२	मास्म	990	99
मातरपितरी	<b>૭</b> ૪	३ ७	मायूर	६९	४३	माहिष्य	960	३
मातरिश्वन्	9	<b>६</b> 9	मार	ધ્ય	२ ५	माहेथी	966	ĘĘ
मातलि	v	४५	मारजित्	ц	93	माहेश्वरी	÷ξ	\$ 64
ं मातापितरी	७४	३७	मार <b>रा</b>	999	998	मितपच	980	86
मातामह	७४	\$ \$	मारिष	२७	98		98	३०
TT -	५३	૭૮	माक्ष्त	9	६४	मित्र सित्र	90	9
मातुल {	७४	39	माकव	६९	949	। प्राप्त	<b>९</b> ८	१२
मातुलपुत्रक	५३	96	_	9 ६	98		१७६	५६७
. (	इथ	३०	मार्ग {	80	94	मिथस्	966	२५६
मातुलानी {	998	२०	(	906	८७	मिथुन	ĘE	₹2
मातुलाहि	३१	Ę	मार्गेषा }	1980	४९	मिथ्या	959	94
मातुली	७३	şo		943	३०	मिथ्यादिष्ठि	18	8
मातुद्धंगिक	५३	96	मार्गशीष	98	98	मिथ्या भियोग	२३	90
(	Ę	३५	मार्गित	१४७	904	मिथ्या भिशसन	२२	90
मातृ }्	२७	98	मार्जन	४८	३३	मिथ्यामति	98	٧
J	७३	28	माजना	८६	929	मिशी	५९	१३४
	980	ĘĘ	मार्जार	६४	Ę	मिश्रया	५६	وا د لو
मातृष्वसेय	७ ३	44	मार्जिता	990	४४	e-e- \	५६	904
मातृष्वसीय	७३	. 54	मार्तण्ड	98	<b>२</b> ९	मिसि {	६१	948
मात्र	906	१७८	मार्देगिक	926	93	मि <b>हिका</b>	98	96
मात्रा {	989	६२	मार्ष्टि	4	929	मिहिर	98	<b>રુ</b> લ
•	906	900	मालक	५१	६२	मीढ	386	<b>९</b> ६
माद	440	97	मालती	५३	७२	मीन	₹४	90
माधव {	به	96	माला	66	9 ३५	भीनकेतन	4	۶ ۶
•	96	98	मालाकार	१२७	4	मुकुट	68	902
माधवक	939	89	शब्द.	5 <b>7.</b>	श्होक.	मुकुन्द	५८	929
माघवी	५२	७२	मालातृगाक	€ ₹	950	मुकुर	66	939
माध्वीक	939	81	मालिक '	, १५७		मुकुल	8	9 €
मान	२८	२२	माछवान	<b>₹</b> 9	Ę	मुक्तकंचुक	39	Ę
मानव	43	9	माछर	86	. 1	मुक्ता	128	९३
मानस ,	98	39	मास्य	66	3	<b>मुक्तावली</b>	68	904
मानसीकस्	ĘĠ	43	माल्यवत्	४३		<b>मुक्तास्फो</b> ढ	३५	<b>२३</b>
मानिनी	६९	PA.	माषपर्शी	. <b>६</b> 0		मुक्ति	98	Ę
मानुष	६९	٩	माषीया	992	0	मुंख र्	४२	98
मानुष्यक	१५४	४२	भाष्य	<b>E</b> 992	9	मुँख {	८२	68
माथा	986	99	मास	" 98		मुखर	936.7	₹Ę
मायाकार	996	77	मासर	996	४९	मुखवासन	२०	99

शब्द,	2 <b>8</b> .	क्लोक,	शब्द.	gs.	श्वोक.	शब्द.	દુષ્ટ્ર.	रलोक.
_		i	मूच्छा	990	१०९	<b>मृगशिर</b> स्	93	२३
	38	80	मूरुइलि	હ હ	६१	मृमशीर्ष	93	२३
मुख्य }	9४9 <b>9</b> ९ <b>९</b>	५७ २२	(	98É	Ęg	मृगांक	98	98
(	9 b	86	मूर्चिंछत {	964	63	सृगादन	६४	9
मुञ्ड {	<b>२०२</b>	३४	٠ (	96	६१	<b>मृगित</b>	986	904
, (	હદ્	86	मूर्त {	१४३	७६	मृगेन्द्र	ÉR	9
मुडित {	988	64	_22 }	७९	७१	मृजा	<	129
<b>मुं</b> डिन्	926	90	मूर्ति {	965	६६	मृड	ę Ę	<b>₹</b> 9
<b>सुद्</b>	96	२४	मूर्तिमत्	१४३	હફ	मृडानी	•	३७
<b>मुदित</b>	१४६	ورد	मूईन्	८३	द्ष	<b>मृ</b> णाल	8.6	४२
<b>मुदिर</b>	99	v.	मूर्द्धांभिषिक्त	<b>९</b> ९६	9	मृगाली	998	y
<b>मुद्रपर्गी</b>	५७	4 4 3		रे १६२	६१	1 (	999	990
मुद् <u>ग</u> र	906	وع	मूर्वा	48	८३	मृत {	998	3
मुघा	969	૪	मूल {	86	92	मृतस्नात	१३५	98
मुनि {	فع	9.8	•	969	२००	मृतालक	49	938
•	९४	४२	मूलक	<b>६</b> २	940	मृत्तिका	36	8
मुनीन्द्र	4	9.8	मूलकर्मन्	986	8	मृत्यु	999	. 994
मुरज	<b>२</b> ७	4	मूलधन	922	८०	<i>मृ</i> त्यु <b>ड</b> ाय	Ę	39
मुरा	ध्युद	१२३	मूल्य {	988	હલ્	मृत्सा	३८	8
मु षित	188	66		9 \$ 9	३८	मृत्स्ना {	३८	٧
मुष्क	€ 0	७६	मूषक	६५	92	मृत्स्ना {	५९	939
मुष्कक	<del>હ</del> ેલ	३९	मूषा {	१३०	33	मृद्	\$4	8
मुष्टिबन्ध	940	१४	. (	२०३	३८	मृदङ्ग	३५	4
मुसल	994	२५	मूषिकपर्गी	५४	66	मृदु {	१४३	96
मुसलिन्	4	२४	मूषित	988	66	•	9 6 6	<b>5</b> 8
मुससी {	५८	998		<b>६</b> ५	3	मृदुत्वच् सन्दर्	مهره	*\$
3000 }	& cd	92	मृग }	१५३ १५७	<b>३</b> ० २०	<b>स्</b> दुल	988	<b>96</b>
मुसल्य	938	४५	मृगगा	948	30	मृद्वीका	५६	900
मुस्तक	६२	१५९	मृगमृ <b>च्या</b>	96	34	मध मृषा	११० १९१	१०४ १५
मुस्ता	६२	949	मृगद्श्यक	938	1	मृषार्थक	131 30	<b>2</b> 9
मुहुस्	968	9	मृगध् <b>र्तक</b>	६४	` <b>.</b>	मुष्ट सुष्ट	989	<b>પે</b> ફ
मुहुमधि	<b>33</b>	9 8	मृगनाभि मृगनाभि	20	929	यट मेक् लक्टन्यका	₹ €	3.4 3.4
मुहूर्त	98	99	मृगवधाजीव	9 25	29		۶.۲ د	906
मूक	१३४	१३ ४८	मृगबन्धनी	930	<b>२</b> ६	मेखला {	906	90
मूढ	१४० १४६	ड ९५	भृगमद	۷۵	920	मेघ	99	· Ę
मृत मृत्र	७९ ७९	37 <b>5</b> 0	मृगया	१२९	•	मेघज्योति <b>स्</b>	33	90
मूत्रकुच्छ	99	<b>५</b> ६	मृगयु	988	•	मेघनादानु०	Ęc	₹०
मूत्रित -	<b>ँ</b> १४६	9.5	मृगरोम <b>ज</b>	૮૫		मेघनामन्	६२	949
मूर्ख	980		मृगव्य	988	73	मेघनिर्घोष	99	- 6

शब्द.	<b>g</b> g.	श्लोक शब्द.	ঘূষ্ট.	श्होत. शब्द.	5 <b>2</b> .	লীৰ
मेचपुष्प	३२	५ मोह	990	<b>१०९ यथे<sup>दि</sup>सत</b>	998	٠ ५١
मेघमाला	99	८ मी किक	928	९२ यदि	99.0	97
मेघबाहन	હ	४४ मीद्रीन	998	८ यहच्छा	986	7
मेचक {	<b>ર</b> ?	१४ मीन	९३	३६ यन्तु {	908	ų
नपक रे	€ ≤	३१ मीरजिक	926	43	968	6
मेद {	60	<sup>७६</sup> मोवी	900	٥١ (	<b>S</b>	4,6
(	999	८६ मी लि	960	१९३ यम 🕇	<i>९५</i> . <b>१</b> ५१	४: १:
मेदक	939	४१ मीष्ट्रा	958	A 211112	, 171 <b>e</b>	1° 4°
मेदम्	७९	६४ मोहर्त	9,6	वर्ग वनराज्य		\$: J.
मेदिनी	३८	र मौहर्तिक	٥ د	बर्ज वस्तु <sup>न।</sup>	₹ 	
मेदुर	१३७	३० म्लिष्ट	२४	३५ विसुगात्रात्		مود
मेधा	99	र इलेस्बरेश	36	ું <sup>વધુ</sup>	902	81
मेधि	११३	१५ म्लेच्छुनुख	928	र यव	998	91
मेध्य	989	44	• <b></b> •	<b>यवक्य</b>	992	1
मेनकात्मजा	હ	३७ यङ्कत्	् ७९	यवद्गार ६६	976	900
मेरु	6	80 480		विभक्ति	€ ₹	16.
र्मेलक	143	२९ यक्ष	४ <b>१</b> ०	११ यवस	<b>ξ 3</b>	951
मे <b>ष</b> {	98	२७ यक्षकर्दम	-	<sup>६९</sup> यवागू	996	فع
(	५२२	951	<b>6</b> 6	१३३ यवाप्रज	<b>3 2 E</b> .	90
मेषकम्बल	१२६	१०७ यत्त्रधूप	۷۵	१२७ यदानिका	६१	981
मेह	<b>66</b>	५६ यस्मन् यक्मन्	9 o G	६८ यवास	<i>६</i> ९ <i>६</i> ९	9,
मेहन	60	9 8 1		<sup>५</sup> १ यवीयस्	હષ્	8
<b>मैत्रावरुणि</b>	93	२० यजमान २०	८९	८ य-य	992	,
<b>मै</b> त्री	२०३	वजुस् इ९ यज्ञ	२१	३ यशःपटह	२६	(
मैत्र्य '	२०३	३ । यज्ञांग	<b>%</b> 0	१३ यशस्	२ ३	9
<b>A</b> \	९ ६	ू पुष् यिक्स यिक्स	४७	<sup>२ ३</sup> यष्ठि	२०३	₹.
मैथुन {	900	955 91819	९२	<sup>२७</sup> यष्टिमधुक	५६	90
मैरेय	439	ू यज्यन् अ	96	८ यष्ट्र	٤٩	
मोच ॄ	98	् यत्	968	३   याग	٩,٥	9
•	88	३९ यतस्	- 968	·      रे याचक	9360	8
मोघ	185	८१ यति	९४	४३ याचनक	980	8
मोघा	49	५४ यतिन्	९४	४३ याचना	९३	3
मॉचक	86	३१ यथा	990	<sup>९</sup> याचित	192	Ì
	५०	४६ यथाजात	२०६	४८ याचितक		
मोवा {	40	१९३ यथातथम्	989	94	्र ९३	
मोदक	२०२	३३ यथायथम्	999	१४ याच्या	<b>}</b> 988	३
मोरट	938	११० यथार्थम्	99.4	१५ याजक	<b>S</b> 9	1
मोरटा	48	८३ यथाईवर्ण	دع	१३ यातना	 ₹ <b>1</b> ^	•
मोषक	988	१४ यथास्त्रम्	959	१४ यातयाम	948	98

शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक	शब्द.	<u>पृष्ठ.</u>	श्लोक.	शब्द.	<b>48</b> .	श्लीक,
		1						
यातु	٩,	Ęc	युष्	990	905	रक्तक	५३	७३
यातुधान	9	६०	युवति	७०	E	रक्तचंदन	<b>S CU</b>	932
यात्रा {	908	९५	<b>बु</b> बन्	७५	४२		( ११६	999
(	900	904	युवराज	२७	98	रक्तपा	<b>₹4</b>	१२
यादःपति	३२	2	यूथ	६९	४१	रक्तफला	Ę o	935
यादस्	३४	२०	यूथनाथ	909	\$ 4	रक्त संध्यक	३७	₹ €
<b>बा</b> दसाम्पति	9	६१	यूथप	909	३५	रक्तसरोस्ह	३७	<b>¥</b> 1
यान {	९८	96	यूथिका	48	७१	रक्तांग	६१	186
C	908	५८	77 S	४९	४१	रक्तोत्पल	३७	85
यानमुख	१०३	५७	यूप {	२०२	\$ 4	रक्ष:सभ	२००	२७
याप्य	१४०	48	यूपक	۵ ه	99	रचस् {	¥	99
याप्यचान	१०३	५३	यूपकटक	<b>९9</b>	96		8	Ęo
याम {	94	Ę	यूपखण्ड	१७६	१६७	रक्षित	986	905
(	444	96	यूपाप्र	99	90	रक्षिवर्ग	९७	É
य मिनी	વ ખ્	४	यूष	२०२	३५	रक्षा	१४९	6
यामुन	954	900	योक्त्र	993	93	ig	६५	ع و
<b>यायजू</b> क	९ ०	۵	योग	940	२२	रंग	924 -	908
य व े	८७	924	योगेष्ट	924	904	रगाजीव	920	y
यावक	998	96	योश्य	५७	998	रचना	66	१३७
यावत्	960	२४६	योजन	२०१	३०	रजक	926	90
यावन	69	१२८	योजनवल्ली	48	99	रजत {	978	98
याष्ट्रीकः	م الع	७०	योत्र	993	13	(311)	१६५	७९
यास	44	39	योद्धु	508	Ęq	रजनी {	94	ጸ
युक्त	९९	२४	योध योध	908	<b>ξ</b> 9		६२	943
युक्तरसा	६०	980	याय योधसराव	990	900	रजनीमुख	914	Ę
(	६८	3 &	यावसराय योनि		હદ		96	२९
युग {	946	રે૪		60	2	ग्जम् रे	७२	२१
युगकीलक	993	98	योषा २०	६९		- 1	90%	३ <i>१</i>
•	908	५७	योषित्	49	3		१८५	२३१
युगधर {	<b>२०३</b>	34	यौतक	900	२८	रजस्वला	७२	२ ०
युगपत्	988	22	यौतव	9 <del>7</del> ₹	८५	<b>ज्जु</b>	930	२४
युगपत्रक	४७	२२	यौवत्	७२	२२	जन	۷۵	932
युगपाइवीग	920	€ 3	यौवन्	७५	४०	<b>जनी</b>	مربع	و بع
युगल	६८	३८		₹		(	990	906
युगाद्युग	808	<i>પ્</i> હ	रंहस्	9	६४	रख }	* 98°	8
युग्म	६८	३८	1817	٠ २٩	94	(	963	४७
(	908	५८	1	96	48	रण्डा	48	66
युग्य ॄ '	१२०	8.8	रक्त र्	68	928	रत	34	५७
युद्ध	990	१०३	•	9 4 4	60	रतिपति	4	3.6

=						* y-			
शब्द.		<b>9</b> 8.	रलोक.	शब्द,	<b>2</b> 8.	<b>%ोक</b>	शब्द.	पृष्ठ.	दलोक
रतन	}	१२४ १७१	63	ſ	98	U	राजवंश्य	८९	ર
रत्नस	· ·		928		<b>R</b> 0	٩	राजवत्	३९	93
र नाव	-	८ ३२	88	₹स -	३७ १३५	वृद्ध ९९	राजवृक्ष	४७	२३
रणाः रतिन	ρę	२५ ८२	د ق		968	<b>२</b> २७	राजसदन	४१	90
VI(-1	(	४८	3 o	रसगर्भ	924	908	राजसभा	968	<b>e</b>
रथ	{	903	49	रसज्ञा	<b>د</b> ۶	99	र् जस्य	२०१	ž 9
रथक	टचा	903	44	रसना	८२	99	राजहस	६७	48
	(	9 20	٠. ١	रसवती	994	२७	राजादन	\ \ \x \cdot \	₹ ७
रथक	गर {	920	٩	(	३८	٩	-	( 40	४५
रथगु	ਸ਼ਿ	908	لبن	रसा }	48	68	रानाह	۷۵	926
रथद्		४७	<b>₹</b>		46	१२३	राजि	88	x
_	(			रसांजन	950	909	राजिका	998 •	9 9
रथांग	7 }	१०३ १०३	५५ ५६	रसातल	३०	9	राजिल	39	4
zerir					४८	33	राजीव {	<b>3</b> 8	98
रथाः रिथव	ाह्रयना -	ξO	२२	रसाल }	६३	<b>3</b> £ §	·	३७	४१
	,	9•६	હ દ્		996	68	राज्यांग	96	96
र चिन	ξ }	908	Ęo	रसित	99	۷	रात्रि	<b>9</b> 4	8
र थिन	,	908	७६	रसानक	६१	186	रात्रिचर	9	ξo
रथ्य		908	७६	रह	وع	२३	रात्रिंचर	9	६०
(-4	,	908	४६	रहस्	९९	२२	राद्धान्त	98	8
रथ्या	. {	৵৽	, 18	रहस्य	55	२३	राघ	d .a	98
	C	908	`	राका	9 ६	٤	राधा	93	२२
रद		८२	99	राच्चस	9	५९	_ (	4	२३
रदन		८२	59	राचसी	५९	१२८	राम }	5 ri	99
रदन	खद	८२	९०	राचा	۷۵	१२५		१७२	980
रन्ध्र		३०	२	रांकव	6 1	999	रामठ	990	۸o
रमंस		१९८	29	राज्	९६	٩	रामा	<b>६</b> ९	8
रमर्ण		६९	٠ ٧	राजक	९ ६	३	राम्भ	, <b>, ,</b>	४५
र्क्भा	•	६५७	493	राजकशेर	909	966	राल	26	२७
रथ		9	٤×		^ ₹७	93	राशि {	६९	88
Term	. (	۶۷	998	राजन }	9 <b>६</b>	9	_	963	२१४
रह्नक	<b>`</b> {	996	96	राजन्य	२४७	919	राष्ट्र उपहित्रक	909	968
रव		२४	२२	राजन्यक राजन्यक	<b>9 6</b>	9	राष्ट्रिका राष्ट्रिका	44	38
रवग्र	i	136	₹€	राजन्वत्	९६ ३९	8	राष्ट्रिय	<b>३७</b>	98
रविँ		98	39	राजबला	4 % <b>4</b> 9		रासम	988	৬৬
रशन	Т	دلع	906	राजवीजिन्	۹٦ <b>८</b> ९	१५३ १५३	र।स्ना }	५७	998
रिश्म	•	98	\$3	राजराज	90		ਗ <b>ਤ</b>	<b>\$0</b>	980
रार्भ	Į	962		राजिलाग	966	59		, 18 ~	<b>२</b> ६
٤.			- • •		• • •	241	रिक्तक	989	44

						7.75		
शब्द.	<b>দু</b> ন্ত.	रुलोक.	शब्द.	<b>रु</b> ष्ठ.	श्लोक,	ब्द.	<b>T</b> V.	र्लोक.
रिक्थ	928	9,0	ह्माजीवा	७२	99	गेहितक	ųs	૪૬
रिंगगा	३०	36	` (	928	99	रोहिताच	•	ty te
रिपु	<i>ब</i> ़ ७	90	रूप्य }	928	98	गोहिन्	لع د	£ 4,
रिष्ट	१५९	3 6		<b>१७५</b>	१६०	गैद {	२ ७	915
रिष्टि	906	21	रूप्याच्यत्त् <del></del>	4 (y	9	114	२ इ	90
रीढा	२८	231	<b>रू</b> षित ने <del>टि</del>	१४५	<i>د</i> و.	रीमक	११७	Ř.5
रींग	984	९ २ ।	रे <sup>चित</sup>	908	86	रीरव	<del>2</del> %	9
ا عم	928	९ ७ ।	रेणु 	908	, ९८	रीहिणेय	<b>\{</b> \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	78
रीति {	963	401	रेणुका	ष्८	970	रसङ्ग्रज	£ 4.5	<b>म्</b> ६
रीतिपुष्प	924	903	रेतस्	96	६२	गैहिष	<b>\$</b> \$ \$	966
<b>रु</b> क्प्रतिक्रिया	७६	५०	रेफ {	980	५४		<b>}</b> ६५	90
रुक्म	928	ર ધ	) 	969	932		स	_
रुक्मकारक	१२७	ار	रेवतीरमग्र >	<b>e</b> q	२३	लकुच	49	6.9
रुग्ग	984	99	रेश	<b>३</b> ६	30	<b>ত</b> ল্প	906	૮ફ
रुच्	98		रै (स) {	928	९०	लव्या	9 3	90
(	وم	49	(	9 4 8	9,6	लक्ष्मण	9 ३ ५	98
	५ इ	96	रोक	३०	२	नक्मणा	<b>६७</b>	نم ک
रुचक	990	83	रोग	99	49	लक्षमन् {	99	90
	१२६	٩٥٩	रोगहारिन्	७७	لاي		900	958
रुचि {	98	३४	रोचन	te o	४७		Ę	२७ १ <b>१</b> २
(	. १५८	२९	रोचनी {	५६	906	∉क्मी न	<i>५७</i> <b>१</b> ०७	ार ८२
रुचिर	980	५२	•	<b>ξ</b> 9	१४६			•
रुच्य	980	५२	रोचिष्णु	63	909	लक्ष्मीवत्	9 3 4	98
<b>হ</b> জু	७ ६	५१	रोविसू	98	38	लक्य {	₹ <b>९</b>	<b>₹</b> ₹
रुजा	७६	५१	रोदन	८२	43	'	906	૮૬
₹त	२५	२५	रोदनी	وم نع	९२	लगुड	996	96
रुदित	२९	રૂષ	रोदसी	964	2 56	लम	98	* 6
रुद्ध	984	९०	रोदस्य	964	२ <b>२</b> ९	त्रमक	935	ጻሄ
(	४	90	रोधस्	१२	৬	त्रिमम्	<b>.</b>	₹६
<b>रु</b> द्र {	Ę	. ই४	रोप	906	69	<b>_</b> [	٠, د	६४
<b>रु</b> द्रागी	ও	३७	रोमन्	८३	<b>લ્</b> લ	लघु न	५९	933
_	७८	६४	रोमन्थ	996	99	i '	१५८	२८
रुधिर ्	988	२२	रोमहर्षण	२९	३५		६३	9 & 6
<b>4</b>	६५	90	रोमांच	२९	şu	लेका	१९५	v
रुशती	२३	96	रोष	२८	२६	लको पिका		933
रुष्	२८	२ ६	गेहियाँ।	45	درو	लञ्जा	२८	२३
रुहा	६८	१५७	(	= 9	2.	1 -		२८
रूक्ष	• 9८४	२२५	गंहित }	<b>2</b> *	90	<b>लि</b> ज्जित	984	39
<u>e</u> d.	98	v	1	Ę ų		त्रद्भवा	954	90

			1		>-			
शब्द.	<b>প্</b> ছ.	श्लोक	शब्द.	ys.	श्लोक	शब्द.	28.	श्लोक.
ĺ	४५	٩,	लांगलपद्ध वि	7 998	98	लेखा	88	×
	४५	99	लांगलिकी	<i>પ</i> , હ	996	लेपक	970	ŧ
नता 🚽	<b>4</b> 9	५५ ७२	लांगली {	६४	१६८	लेश	१४१	६२
1	५९ ५३	988	(	५७	999	लेब्द्व	997	92
į	<b>Ę</b> 9	946	लांगूल	405	५०	लेह	999	५६
<b>लता</b> र्क	<b>Ę</b> 9	986	लाज	996	४७	लोक {	३८	Ę
लपन	٠ ٦	69	लाञ्छन	97	90	लोक {	944	२
•	39	9	लाभ	922	60	লীৰ जित्	ų	9 4
लिपत {	986	906	लामजक	ÉÌ	9 6 4	लोकायत	२०२	३२
शब्द.	<b>28</b> .	- :लोक	नानसा	<b>र् २८</b>		लोकालोक	४३	२
लञ्घ	६४७	४०६		( १८५	556	लोकेश	٩	98
लब्धवर्गा	८९	€	नाला	७९	६७	लोचन	८२	९ ३
लव्या <b>नु</b> ज्ञ	90	90	लालाटिक	<sup>द</sup> , ध् <u>य</u> ुख	90	लोचमस्तक	५७	999
लभ्य	99	28	लाव	६८	३५	, लोध्र	86	33
लम्बन	68	908	<b>लासिका</b>	<b>२</b> ६	6	लोपासुद्रा	93	२०
<b>जम्बोदर</b>	U	36	लास्य	२६	90	तापासुद्र। तोप्त्र	988	इ ५
त्तय 🗇	₹ ६	و	त्तिकुच	५९	<b>\$</b> 0	लोमन्	43	99
<b>ललना</b>	88	3	लिद्या	१९५	9.	लोमशा	<b>પ</b> હ	१३४
ललतिका	٧ ٧	903	लिग	946	२ ५	. (	१४३	ر. لای
ललाट	८२	93	िगवृत्ति	4 6	५४	लोल {	969	२ ० ५
ललाटि 🕶	८४	7081	लिपि	96	98	लोछप	936	<b>2</b>
ललाम	६७३	7631	लिपिकर	6.6	94	लोछुभ	936	२२
ललामक	66	1271	লি <b>ম</b>	9 2 6	_ 4	लोष्ट	993	92
चलित	<b>ર</b> ર	39	लि <b>प्तक</b>	906		लोष्टभेदन	993	92
लव {	989	2 4 1	लिप्सा २	₹-	२७	(	60	926
(	942	701	লিৰি	९८	9 ६		928	٩,
लवग	<b>८७</b>	9 9 6	त्तीढ	186	990	नोह 🚽	924	<b>९</b> ९
लवण {	२०	٩١	बीला {	28	३२	(	999	२३
(	988	23	(	२६४		तोहकारक	१२७	U
लवग्रोद	ξÞ	٦ ٦	<b>छठित</b>	908		तोहपृष्ठ	६६	9 ६
लवन ल <b>वित्र</b>	942	481	ত্ত্বভন্ন 	938		तोहल	3 3 5	४७
	'१३		हुन् उक	958	29 8	तोहामिसार	909	4.6
लग्रुन	€ ∌		<b>उ</b> त्ताय	ÉR	٧,	तोहित {	२१	94
जस्तक र	9,0	- '1-	<u>इ</u> ता	ξų	٩.	•	96	६४
लाचा {	69	1,2,3	<u>इ</u> न	986	403	ते हितक -	928	९२
् वाच्ह्यप्रसादन	૧૧૫ ૪૦	· 1.	<u>इ</u> स	, o <b>á</b>	40 2	तोहितच ०	٤ ۾	924
जा करने ता प्रम जांगल	४९	1	त्रेख 	8	۶ ک	तो <sup>र</sup> हताङ्ग ,	93	२५
तांगलद्•ङ	998 998	१३	त्रेखक 	96	94		व	
~	118	48/2	द्रेखर्षम	٠	४२।व	ſ	990	

शब्द.	28.	श्लोक,	शब्द.	2 <b>8</b> .	श्लोक.	शब्द.	<b>g</b> g.	खोक,
ſ	<b>£</b> 3	960		60	'ی	वन्ध्य	४५	u
वंश -	69	٠, ٩	वत्स {	920	६२	वन्ध्या	923	<b> </b>
l	१८३	२१४		१८४	<b>२२६</b>	वन्या	४४	¥
वशरोचना	928	900		५२	44	वपा {	३०	8
बशक	८७	926	वत्सतर	9.0	६२	(	96	68
वक्तःय	464	م نور	वत्सनाम	३१	99	वपुस्	46	Vo.
वक्तृ	936	३५	वत्सर {	9 8	3.5	_ (	80	ş
व₹त्र	८२	८९	(	90	२०	वप्र }	११३ १२५	<b>99</b> 904
वक्र	१४२	७१	वत्सल	<b>५३५</b>	ه ۹		<b>6</b> 6	44
वक्षम्	60	96	वत्सादनी	48	८२	वसथु }	909	77 ₹७
वक्षरा	60	७३	वद	१३८	\$ 4	विम	 	برب
ब ा	<b>५२५</b>	904	वदन	८२	८९	वयस्	964	२३०
वचन	. ` ` ` ₹9	. ,	वदान्य {	933	٩		49	46
वचनेस्थित	9 हे ६	<b>ર</b> ૪	`	964	960	वयस्था }	Ęo	१३७
वचस्	* <del>* * *</del> * * * * * * * * * * * * * * *	9	वदावद	१३८	34	(	٤٩	988
वचा	ષ દ	902	वध	993	994	वयस्थ	96	992
771			1	49	9 3 3	वयस्या	<b>৩</b> ৭ -	58
बज्र -{	८ ५६	४७ १०५	ਰਬ੍ਹ <sup>)</sup>	६९	2	(	۶ ۾	928
134 J	9 <b>9 9</b>	968	(	७० १६७	९ १०२	वर }	986	۵۵
वज्रनिर्घोष	99	90	वध्य	188	*4	(	960	१७३
वज्रपुष्प			वधी वधी	१६०		वरटा {	Ę U	२ ५
वज्ररुप वज्रिन्	५३	७६	वध्रा		39		ξo	२७
वाश्रन्	6	४२	] }	४४ इंट	<i>3</i> 2	वरग {	80	3
वचक }	६४ १४०	<i>ष</i> ४७	विन {	909	926	'	४७	२५
वंचित	१३९	89	वनतिक्तिका	48	૮૫	वरण्ड	986	96
71711			वनप्रिय	<b>é</b> é	99	वरत्रा }	१०२ <b>१</b> ३०	3 <b>9</b>
	80	३ ७ ३ ०	वनमक्षिका	६७	२ <i>७</i>	===	१२० १३४	३१ ७
वजुन {	४८ ५२	इ.८ इ.४	वनमालिन्	`u	<b>₹</b> 9	वरद	•	
			] बन <u>मुद्</u> ग	998	90	वरवार्शिनी }	<b>৩</b> ০ <b>৭</b> ৭৩	<b>ሄ</b> ሄ <b>ባ</b>
वट 	86	38	2202817	ધધ	<b>९</b> ९		946	રુ દ્
वटक	986	96		88	8		પવ	938
वटी	930	२७		<sub>8</sub> ષ્	Ę	1	३७	83
वडवा	१०२ '	४६		902	૪૫	वराटक रे	१३०	२७
वडवानल	٠ ٩	५६	1 (	६९	2		२०३	36
बड	१४१	<b>६</b> 9		958	४७	वरारोहा	OV	ሄ
विशिज्	955	<b>७</b> ८	199197	980	४९	वराशि	٤ ۾	116
वणित्रपथ	989	وط پيغ	वनीकस्	६४	3	वराह	£ R	२
वणिज्या	922		वन्दा	48		वरिवसित	980	905
वण्दक	१२४	. 49	्री नन्दारु	१३७	१८	विरवस्या	९३	₹ <i>4</i>

-									
शब्द.	पृष्ठ.	इलोक.	(	52°	<b>श्लो</b> य.	शब्द.	gg.		श्लोक,
वरिवस्यित	१४७	१०२	वर्धमान	40	ه م	ज्ञण किया	986		8
वरिष्ट	928	९७	वर्धमानक	998	३२	वरास्त्रवा	-		
वरिष्ठ	986	999	वर्धिन्त	930	२८	= 917	303		₹ <b>६</b>
वरी	لولغ	900	वर्मन्	908	Ę¥	वशा }	925 923		६ ९ २ <b>९</b> ७
वरीयस्	9 <b>८</b> ६	२३५	वर्भित	808	<b>\$</b> 49	<b>ৰহাি</b>	989		
	9		वर्य	१४१	ধৃঙ				५६
वरुगा }	99	<b>६</b> ٩ ع	वर्या	90	u	वशित्व	<b>9</b>		36
"" (	૪૭	ئر م	वर्षगाः	६७	२६	वशिर }	५५ ११७		९७ <b>~</b> ७
वरुणात्मजा	d 3 d	÷ 9	(	92	99				89
वरूथ	908	ر به وي يا	वर्ष }	३८	Ę	वश्य	936		२५
वरूथ	908	५७		468	२२४	वषद	990		6
वरूथिनी	905	98	वर्षवर	९७	ę	वषद्रकृत	<b>९</b> २		ع <i>ب</i> و
वरेण्य	989	j	वर्षा	96	٩	वसति	3 € \$		€ ,4
वर्कर	१२९ १२९	હ્યુછ	वष[भू	<b>३ ५</b>	२४	वसन	دي		994
वर्ग वर्ग		3 8	वष भ्ती	₹ 4	२४	व नन्त	90		9 6
वर्षु <u>स्</u>	€ <b>९</b>	89	<b>वर्षीयसू</b>	હ ધ્ય	8\$	वसा	७९		ÉA
वर्षस्क	१८५	२३१	वर्षोयल	92	98	1 (	Å		90
4 4(4)	હલ	46	(	હવ	90	वसु 🖁	જ જ		۹۷
वर्ण {	ङ९ १८२	- 1	वर्धन् {	340	923	(	१२४ १८४		<b>90</b>
·· (	969	४२ ४८	वलक्ष	<b>५</b> ०	9 ₹	~			२४८
वर्णक {	۷۵	1	वलज	946	÷ 9	वसुक {	५४ ११७		८० ४२
वणक र्	२०३		<b>द लजा</b>	946	÷ 9	वसुदेव	4		<b>२</b> २
वर्गित	986		वलभी	४२	94	वसुधा	₹ c'		3
वार्शेन्	6.8	- 1	वलय	۲8	- 1	वसुन्धरा	₹<		\$
वर्तक {	Ęc		<b>क्</b> षित	१४५		वसुमती	३८		3
``````````````````````````````````````	308	99 8	ालीक	४२	i	वस्त	دوم		998
वर्त्तन {	998	96 2	खीमु व	६४		नस्तु वस्तु	998		93
(	१३७	<sup>₹९</sup> =	हिक	૪૫	1	नम्ब वस्त्र	૮ષ		994
वर्त्तनी }	४०	१५ व	ल्कल	४५	1	वस्रयोनि	د <i>و</i> م		996
वार्त्त	930	33 9	हिंग र	دًا ه ځ		वस्त्रवेश्मन्	3 S		920
वर्त्तिका	<b>E</b> 6	- 50 g	<b>हि</b> गु	१७३		वस्न	922		
वार्त्तिंग्यु	१३७	4 7 3	ाल्मी <b>क</b>	30		वस्रसा	હ		88
वर्तुत	988	7.71	ाल्लकी	<b>4</b> 4		वह '	. १२०		ξş
	80	4.1	(	980	`\		6		193
वर्त्मन् { वर्षेक	900	५ ५ १ ६ ५	ाल्लभ {	७२		वहिं {	99		•
वधंक	48		ाह्ररि	४६	1	व हिंसज्ञक	५३		۲>
वर्धक	120	1	ह्री	४५ ४५	98	व हि शिख	9 3 8		908
वर्धन् {	१३७	<b>२८</b> व		७८	٩	(	966	•	२४९
777 }	189	's a		१४९	<b>\$ 3</b> 8	या 🔰	१९०		९७
		, ,	• •	. • •	- 1	Ç	993		94

482								
शब्द.	<b>ट</b> ुष्ठ.	<b>र</b> लीक	शब्द.	gg.	श्लोक,	शब्द.	3g.	रलोक,
वाक्पति	१३८	<b>પ્</b> રુ	वातपोथ	86	<b>२</b> ९	वारग	900	₹४
वाक्य	39	२	वातप्रमी	Ęų	ษ	वारगानुसा	ي په	993
वागीश	136	ag by	बातभृग	۾ نم	હ	वारबागा '	908	ÉŚ
वागुरा	930	२६	वातरोगिन्	७८	<b>ે</b>	वारमुख्या	હંર	99
वागुरिक	926	98	वातायन	४१	ع	वारस्री	५ २	95
वाग्ग्मिन्	136	30	वातायु	Ę Ŋ	۷	वाराही {	έ	<b>રૂ</b> પ્
वाङ्सुख	<b>२२</b>	9	वातूल	960	935		<b>4</b> 9	949
वाच्	29	9	वात्या	960	998	वारि	३२	Ť
वाचयम	९४	४२	वात्सक	996	٩o	वारिद	99	9
वाचक	२१	२	वादित्र	इ५	م	वारि-र्शि	ইও	36
वाचस्पति	93	२४	वाद्य	२५	4	परिभवाह	8.5	دع
वाचाट	१३८	3 6	वान	४६	94	वारिवाह — <del>२</del>	99	Ę
वाचाल	१३८	3 €	वानप्रस्थ {	86	२८	वारी <del></del>	902	४३
वाचिक	२३	१७	41444	۷۶	' 1	वारणी	161	42
वाचोयुक्तिपटु	१३८	३५	वानर	€8		वार्त }	७७ १६४	<i>'9'</i>
वाज	906	64	वानस्पत्य	<b>88</b>	Ę			હફ
वाजपेय	२०१	३१	वानीर	86	ξο	वार्ता {	<b>२२</b> १ २	9
वाजिदन्तक	५६	908	वानेय	५९	५३१	····· {	948	७ ५५
, (	66	3,3	वापी	33	२८	वार्ताकी	<b>પુ</b> હ	998
वाजिन् }	904	४४	वाम	१७३	१४४	वातविह	१२८	110 44
	986	१०७	वामदेव	८६	३२	वार्धक	७५	<b>30</b>
वाजिशाला 	*1	U	(	99	રે ૪ <b>૬</b>	वार्ध्वेष	992	ų
वा <b>छा</b>	२८	२७	वामन }	ક્	69 60	वाधुषिक	912	4
वाटी	२०४	४६		988		वार्मण	990	ر لاغ
वाट्यालका	५६	900	वामळूर	३९	२४	वार्षिक	940	۰ ۲ ۶ ۹
	ς,	५६	वामलोचना	ĘS	3	वाल	٤٤	द्रभ
वाडव	८९ १०२	۶ <i>4</i> ۶	वासा	Ę e,	<b>,</b>	वालिध		
वाढव्य	948	४१ ४१	वामी	908	४६	•	१०३	<b>4</b> 0
वाशि वाशि	450	२८	वाववन्ड	930.		वालपाश्या	42; 5 - 8	१०३
नाणिज वाणिज	ع الأه ع لا م		पापप	ĘĘ		वालहस्त	१०३	40
વાાયળ	_	96	वायसाराति	દદ્		वाङ्क	५८ १६०	9 9 9
वाणिज्य {	992		वायसी	٤٩	949		968	ξυ
•	. १२२	७९	वायसाला	Ę٥		वाल्क	<i>د</i> م .	999
वाि्यनी	958	998	9	9	Ę٩		977	<i>છ છ</i> ૬
वाणी	२१	9	113 " "	6		वावदूक	१३८	३५
वात	9	६ ३	वार्	३२	3	वाशिका	९७	dog
वातक •	६१	985		६८		वाशित	<b>२</b> ५	<i>३५</i>
वात किन्	94	५९	बार {	१७६	9 & 0	। वास	४१	Ę

शब्द.	gg.	इलोक	शब्द.	<b>9</b> 7.	रुलोक.	शब्द.	<b>5</b> 5.	इलोक.
वासक	५६	१०३	बिकी (ग्रा	५४	60	विज्ञात	१३४	9
वासगृह .	89	۷	विकुर्वाग	१२७	•	विज्ञान	99	Ę
वांसन्ती	• ५३	५७	विकृत {	२७	99	विद् {	७९	६८
वासयोग	. 66	१३४	1980 र	96	५८	195 }	८९	२
वासर	914	ą	विकृति	949	94	विट	८२	9 3
वासव	હ	४२	विकम {	990	908	विटक	४२	94
वासम्	८५	994		१७२	989	विद्य {	४६	98
वासित {	66	138	विकय	१२३	८३	,401	909	१३१
7	996	४६	विक्रयिक	१२३	७९	विटपिन्	88	2,
वासिता	968	७५	विकान्त	<b>9</b> 0 E	७७	विद्वबदिर	40	40
वासुकि	३०	8	विकिया	949	96	विद्वर	929	२३
वासुदेव	५८	२०	विकेतृ	925	७९	बिड	990	४२
वासू	90	98	विकेय	922	८२	विडग	ું ધ્યુ ૬	१०६
वास्तु	83	99	विक्लव	938		वितडा	984	9
वास्तूक	६८	940	विदाव	948		वितथ	२४	२१
वास्तोष्पति	y	४३	विगतः	9 × 6		वितरण	<b>९</b> ,२	28
गत्र	948		विगत।र्तवा	७२		वितर्दि	४२	9 €
वाह {	905	88.	विम	₹ \$		विनस्ति	69	68
(	9 - 3	66	शब्द.	पृत्र.	इस्तेक	(	८६	920
वाहद्विषन्	६४	8	ſ	<b>હ</b> વ	٥٥	वितान {	3 <b>5</b> \$	993
वाह्न	१४४	५3	विग्रह -	96	96	वितुन्न	ę٩	985
वाहस	३०	u		910	908	(	49	१२६
वाहित्थ	909	34	L	9 ५ २	25	वितुन्नक }	990	30
. (	908	921.	विधस	९,२	२८	(	. १२५	909
बाहिनी }	900	ء ا د ه	वेझ	949	99	(	128	90
	955	ء (```	वेध्नराज	v		वेत्त {	१३४	9
वाहिनीपति	१०४	7 1.	वेचश्र <b>ण</b> `	۷۶	6	(	986	ધ્યુ
वि 8:	\$ 6	~ ~ ,	वेच्य <b>न</b>	3.48		वेदर	989	4
विंशति र	988	- 1	वेचर्चिका	99	५३ वि	वदत	२०२	३२
विकंकत	४९		वेचारणा	२८	२ वि	नेदारक	३३	90
विकच विकर्तन	४५		वेचारि ।	१४६	38	۱ مس	४७	२०
	18	_	विकित्सा	95	₹ 1	वदारी {	५६	990
विकलांग	७६		वेच्छ- <b>द</b> क	४१	99 6	वदारिगन्धा	فعرى	994
विकसा	48	80 f	वच्छाव	२०३	२६	<u> </u>	986	906
विकसित	४५	و ا	वजन {	९९	२२	बदित {	980	904
विकस्वर <del>विक</del> ार	१३७	30	1917	982		दिश	99	4
विकार	949		गजय	990		ाडु	909	३७
विकासिन् <del></del>	१३७	३० वि	<b>া</b> जिल	196	YE	•	86	₹ 0
विकिर	६८	३३ वि	<b>া</b> হ্	993	४	ाद्धर {	86	₹°

शब्द.	ā8'	स्रोक.	शब्द.	<b>да</b> ,	श्लोक	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक,
विदुत्त	१३७	\$ 0	विन्दु	१३७	₹ <b>≎</b>	विभावरी	94,	४
विद्ध	988	9,6	विन्ध्य	७६	3		( <	५६
विद्धकर्गी	48	68	विन्न {	४६	९९	विभावसु	1 18	ξo
विद्याधर	8	99	,	६४७	१०४		6 968	256
विद्युत्	99	•	विपत्त्	६७	99	विमीतक	५१	५८
विद्रधि	৩৩	५६	विपंची	<b>ર</b> ५.	3	विभूति	G	३६
विद्रव	999	999	विषग्र	१२३	८३	विभूषगा	८४	909
विद्भुत	988	900	विपिश	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	२	विभ्रम	<b>२९</b>	<b>३</b> 9
विद्रुम	१२४	6 5	_	( 989	५२	विभ्रा <b>ज्</b>	۶ ک	909
विद्रुमलता	५९	929	विपत्ति	900	८२	विमनस्	१३४	6
विद्वम् {	۷٩	وم	विपथ	४०	9 ६	विमर्दन	१५०	9.5
•	964	२३४	विपद्	906	८२	विमला	ę o	१४३
'विद्वेष	२८	54	विपर्यय	943	३३	विमलार्थक	989	فعوفع
विधवा	9	99	विपर्यास	943	33	विमातृज	७३	३५
विधा {	9 3 9	३८	विपिक्वत्	69	4	विमान	6	86
विधात <u>ु</u>	१६७ ५	१०१ १७	विपाद	३६	33	वियत्	90	२
1441/2	<b>6</b>	90	विपादिका	હ છ	५२	वियद्गगा	6	<b>ል</b> ያ
	96	٦٠ ع د	विपाशा	₹ €	३३	वियम	449	. 96
विधि -	98	39	विपिन	88	9	वियात	१३६	२५
į	960	900	विपुत्त	989	६१	वियाम	949	96
विधिदर्शिन्	९०	9 6	विष्र {	८९	२	विरजस्तमस	-	<b>አ</b> ጸ
_ (	4	२ २	194 2	८९	٧	विरत	२०३	ÉÉ
विधु }	98	98	विप्रकार	949	94	विरति	948	३७
(	960	९९	विष्रकृत	939	४१	विराज्	188	3
विधुत	२४७	906	विप्रकृष्टक	983	۶۶	विराव	58	२३
विधुंतुद	98	२६	विप्रतीसार	२८	<b>२</b> ५	बिरिचि	4	90
विधुर	949	२०	विप्रयोग	१५३	२८	विरूपान्त	<b>§</b>	३२
विधुवन	988	४	विप्रलब्ध	9 3 %	89	विरोचन	\ "8	३०
विधूनन	988	8		<b>∫</b> ₹0	3 6	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	८ १६८	906
विधेय	9 ₹ €	२४	विप्रलम्भ	र्वे १२५°	34	विरोध	२८	२५
विनयप्राहिन्	9 <b>3</b> E	२४			- 1	विरोधन	949	<b>₹</b> 9
विना	968	3	वि ग्लाप	<b>२३</b>	98	विरोधोक्ति	<b>२३</b>	48
. (	५५	98	विशक्तिका	७२	२०	विलक्त	936	? <b>६</b>
विनायक }	G	३८	विप्रुष्	<b>३२</b>	Ę	विलच्च	986	, 5 , 4
C	9 44	Ę	विष्तव	940	98	विलंबित	२६	Ę
विनाश	942	२२	विवंध,	હ	وبردم	विल∓भ	१५३	26
विन।शोन्मुख	984	59	विबुध	8		विलाप	२३	~ ×9
विनीतं र्	908	88	विभव	528		विलास	સ ૬	39
1 7 4 5 7	136	36	विभाकर	98	9.0	विलीन	986	900

			1					
शब्द.	<b>₹</b> ₹.	<b>र</b> लोक	शब्द .	पृष्ठ.	रलोक,	शब्द.	ट्रष्ट.	श्लोक.
विलेपन	<b>}</b>	933	- (	8	90	विष्णुपद	90	२
B 3 A	( ५२	२७	विश्व }	9 9 W	३६ ८१	वि <b>ष्</b> णुपदी	३३	३१
विलेपी जिल्हार	9	<b>4</b> 0		९४२	Ę te	विष्णुरथ	ę	२४
विवध <del></del> -	98	९६	विश्वकद्भ	9 2 4.	<b>३</b> ३	विष्य	१३९	٧.٨
विवर	₹०	9	विश्वकर्मन्	496	969	विष्वक्	१९०	9
विवर्ण	976	9 €	विश्वद्रयस्	१३८	३४	विष्वद्रयच्	936	3 4
विदश	१३९	ጸጸ	विश्वभेषज	990	३८	विष्वक्सेन	٠,	98
विवस्वत्	<b>∫</b> 98	28	विश्वस्भेर	4	२२	दिष्वक्सेना	برم	<b>પ</b> ્રફ
	( १६२	ધ્યુહ	विश्वग्भरा	३८	२	पिष्वक्से <b>न</b> प्रि०	६१	444
विवाद	્રવ	5	विश्वसृज्	4	१७	विसंवाद	\$ o	
विवाह	યુદ્ધ	५६	विश्वस्ता	७९	99	विसर	Ę۷	३६
विविक्त	ر م م م	२२	विश्वा	فإنع	९९	विसर्जन	•	<b>३९</b>
44	( १६५	دی	विश्वास	4 %	२३	ावस <b>णन</b> विस <b>पं</b> शा	<b>9 7</b>	<i>₹ ९</i> ,
विविध	9 6 4	९३	विषू	७९	Ęc		२१४	8 3
विवेक	€ \$	३८	- (	39	`q	विसार	३४	96
विव्वोक	<del>२</del> ९	३५	षि {	928	<b>२</b> २९	विसारिन्	१३७	३१
विश्	992	9	विषधर	३ १	u	विस्त	988	८६
विशंकट	^ 989	. 1	विषमच्छद	لا لا	२३	विस्टस्वर	१३७	३१
विशद	२०	92	ſ	₹.	٠`	विसमर	१३७	ξģ
विशर	999	- 94		રેંડ		विस्तर	948	२२
_	( 48	63	विष्यु -	9 4	99	विस्तार {	8€	98
विशल्या	} ६0	936	Į	१७४	943	(	१५२	२३
_	( १७५	۾ در د	विषयित्	₹०	ے	विस्तृत	<b>188</b>	८६
विशसन	3 9 <b>9</b>	998	विषवैद्य	<del></del>	99	विस्फार	990	906
विशाख	৬	80	विषा	يو ي	99	विस्फोट	99	ધ ફ
विशाखा	१३	22	विषाक्त	96	66	विसाय	৭ ৬	99,
विशाय	[१५३	32	विषागा	9६२		विस्मयान्वित	936	२६
विशारगा	999	992	विषाणी	46	993	विस्मृत	988	۶۵
विशा'द	१६७	90	विषुव	9 €	98	विस्र	२०	98
विशाल	989		विषुवत्	• 96		विसम्भ {	49	२३
विशासता	حام	977	विष्किर	Ęz	44	।वक्षम्म {	902	૧ ફેપ્
विशालत्वच	( ४७	. 1	विष्कस्भ	४२	90	वि <b>स्न</b> सा	७५	89
विशाला	६२		विष्टप	<b>३</b> ८	Ę	विद्य	ş۷	३२
विशिख	906		विष्टर	900	7 1	विहंग	Ęc	३२
विशिखा	४०		विष्टरश्रवस्		143	विहंगम	ĘC	<b>व</b> २
विशे <b>षक</b>	८६		विष्टि विष्टि	, p	10	विहंगिका	9 30	75
विश्रा <b>द्धा</b> न	97	1	विष्ठा विष्ठा	३१ ७९	' '	विहसित	28	₹ <i>\</i>
विधावं	१५३	20	वि <b>ष</b> ण	५०	,-1	विद्दस्त	939	
निश्चन	१३४		विष्णुकान्ता	५६				\$ \$
-	•	:11	7.341.01	7.4	108	विद्यापित -	९२	75

शब्द.	<b>8</b> ₽.	इलोक	शब्द.	<b>9</b> 3.	रतीक.	शब्द.	<b>2</b> 8.	खोक.
Gentarre S	90	٦,	<b>वृ</b> ज्	88	ų	घृन्द	<b>६९</b>	X٥
बिहायम् है	<b>\$6</b>	३२	वृत्त्भेदिन्	939	३४	वृत्दभेद	<b>£</b> \$	83
विद्यायस	90	२	<b>बुक्षरहा</b>	48	८२	बुन्दारक	<b>{</b> १५६	9
विहार	949	96	वृत्त्वा <sup>टि</sup> का	४४	२		_	9 €
विह्वल	938	४४	वृद्धादनी	48	८२	वृन्दिष्ठ	986	115
वीकाश	963	२१५	वृत्ता व	998	३५		<b>\$4</b>	98
वीचि	३२	وح	. (	96	२३	बुश्चिक	र्वे ६५ १५५	9¥ 0
वीगा	24	ą	बुजिन }	982	49	٠	18	२७
<b>नी</b> णानाद	986	93	(	986	\$ 0 <i>8</i> ,		46	२४
बीत	908	४३	बृत	984	<b>९</b> २	_	46	903
वीतत	975	२६	वृति {	¥٥	3	बुष न	40	998
वीति	988	४३		388	6		998	45
<b>वीतिहोत्र</b>	6	५३		१४२ १४५	६९ ९३	Ι ι	१८३	<b>₹</b> ₹0
वीथि {	<b>ጸ</b> ዩ	8	वृत्त }	988	96	वृषग	60	vţ
वाव र्	१६७	60	` (	22	U	<b>मृ</b> षदंशक	48	•
बीध्र	989	५५	वृत्तान्त {	962	ĘĄ	वृषध्वज	•	३४
वीनाह	\$ 14	२७		992	9	वृषभ	198	49
वीर	9.4	<b>৬</b> ৬	वृत्ति }	998	8	<b>बृष</b> ल	925	•
वीरग्र	ξĘ	१६४	(	१६४	७ ३	वृषस्यन्ती	. <b>.</b> .	\$
वीरतर	€ §	१६४	वृत्र	१७६	968	वृषाः {	V	४१
<b>वी</b> रत <b>र</b>	88	*4	<b>व</b> त्रहन्	y	४२	, (	. 6V	۷۵
<b>बीरप</b> त्नी	998	95	वृथा {	966	२४७	वृषाकपायी		948
वीरपान	990	903	18"	968	8	<b>बृषाकपि</b>	909	850
वीरभार्थ!	998	98	_ (	46	988	ৰূছি	48	11
वीरमातृ	998	98	<b>ब</b> द्ध }	७५ १६७	3 e o	वृष्टिगा	977	46
बीरवृत्त	४९	४२	8333	७५		वेग	<b>५५७</b>	२०
वीराशंसन	908	900	बृद्धत्व बृद्धदा <b>रु</b> क	Ęo	0 \$	वेगिन्	908	७३
वीरसू	998	9 6	इद्धरायक दृद्धनामि		१३७	वेशि	<b>6</b>	36
वं रहन्	९५	५२	<b>रह्माम</b> <b>रहश</b> वस	۷٤ ••	<b> </b>	वेणी	५२	ĘS
वीरुध्	84	ع	SKA ACT	હષ્	( )	वेणु वेणुक	\$ <b>3</b>	959
` (	२९	35	श्रद्धाः श्रद्धाः	७१	99	वशुक विशुक्स	907 960	४१ 9₹
बीर्य }	66	६२		33	99	वतन	139	7 <i>€</i> 3 <i>6</i>
	१७४	१५४	बृद्धि {	988	\$		XE	50
वीवघ	9 6 0	<b>९</b> ६	बृद्धिजी विका	998	*		39	
बुक	ę٩	9	<b>बृद्धिमत्</b>	984		वेताल	986	્ડ <b>ર</b> ૧
(	64	926	<b>इद्ध्याजीव</b>	998	4	वेत्रवती	, <b>3</b> ¢	38
વૃજ્યૂપ 🕻 ့	69 69	935	बद्धोत्त	930		वह	36	3.
वृकधूप { ू <b>तृ</b> क्या	980		<sub>श</sub> ्तः	, <b>4</b> ¢	94	नेदना	, <b>१</b> ४ <b>९</b>	÷ F
₩ * ₹	4	•		1		1	. • • •	**

क्द.	पृष्ठ.	श्लोक. शब्द.	<b>L</b> a.	श्लोक.	शब्द.	28.	<b>३</b> लोक
वेदि	٩,٩	१८ वैतनिक	१२८	94	<b>व्यथा</b>	३२	Ę
वेदिका	४२	१६ वैतरणी	३१	२	<b>व्यव</b>	986	6
वेध	२१२	८ वैताखिक	906	९७	व्यच्य	४०	98
वेधनिका	१३०	३३ वैदेहक {	१२७	3	न्यय	949	96
वेधमुख्यक	५९	7441	988	46	व्यलीक	१५६	92
वेधस् {	48	१७ वैदेही	५५	९६	व्यवधा	92	92
•	968	१२८ वैद्य	હહ	५७	व्यवसाय	१८२	२१३
वेधित	986	९९ वैश्वमान्	<b>५</b> ६	903	व्यवहार	३४	٩
वेण्थु	३०	३८ वैधात्र	E	49	व्यवाय	९६	५७
वेमन्	968	२८ वैधेय	980	४८	व्यसन	940	920
वेला	960	१९८ वैनतेय	Ę	<b>२</b> ९	व्यसनार्त	१३९	४३
वेल	•५६	१०६ वैनतिक	908	46	व्यस्त	982	७२
वेह्रज	998	३५ वैमात्रेय	७३	94	न्याकुल	9 8 8	४३
वेल्लित {	988	७१ वैयाघ्र	908	७३	व्याक्रोश	४५	৩
(	१४४	८५ वैर	२८	२५	1	٤×	9
वेश	00	र वैशनियातन	790	990	व्याघ्र {	989	५९
वैशन्त ्र	₹€	२८ वैरशुद्धि	990	990	व्याघ्रनख	५९	925
वेश्मन्	89	४ वैरिन	९७	90	व्याघ्रपाद्	४९	३७
वेश्या	¿' <b>७</b> %	१९ वैवधिक	986	م دم	व्याघ्रपुच्छ	40	५०
वेस्य।जनसम	-	२ वैवस्वत	9	५९	व्याघ्राद्य	ĘĘ	94
वेष	63	९९ वैज्ञाख {	90	98	व्यामी	فرنع	6.8
वेषवार	794	٧٠ . ر	929	४४	(	<b>ર</b> લ્	३०
बेष्टित	984	९० वैस्य	992	9	व्याज {	२९	33
बेहत्	. १२१	६९ विभवस	90	६९	व्याड	950	४३
: <b>{</b>	968	५ विश्वानर	6	५३	व्याडामुध	برع	924.
, (	989	१५ वैञ्चावी	Ę	३५	व्याध	925	રું ૧
वैकाक्षिक	, १३४	११६ वैसारिण	३४	96	(	५८	926
वैकुण्ठ	٠ ٩	१८ नीषद	908	اء	व्याधि {	७६	ધ્યુવ
वैजनन	ૄું <b>૭</b> ષ્	३९ व्यक्त	948	६२	व्याधिघात	<b>-</b> ४७	<b>.</b> ₹.૪
वैजयन्त	6	४६ व्यक्ति	` 95	₹9	व्याधित	७८	५८
वैजयंतिक	904	७१ व्यप्र	909	950	व्यान	5	٩₹
<b>वै</b> जयंतिका	५२	६ ५ व्यक्ता	966	900	व्या <b>पाद</b>	99	8
वैजयन्ती	1908	९९ व्यजन 🖇	66	935	व्याप्य	46	9 <b>२</b> ६
वैज्ञानिक	. 455	A. C	59	८३	<b>व्या</b> म	૮૧	د ک
वैशाव	, A£	१ विष्युष्ठक	२७	1 96]	(	<b>₹</b> 9	y
वैंसाविक	126	१ क्यांनन	9 ६	995	व्यात {	960	् १९६
बैणिक	186	, व्यडम्बक	५०	49	व्यातप्राहिन्	* 39	99
वेगाक	7 909	र्रेषे व्यस्यय	ं १५३	३३	-याश्रत	` 984 <b>°</b>	, 64
वैत सिक	936	• १ई व्यस्यास	१५३	23	<b>ज्या</b> स	4 14 6	× 5.8

शब्द.	<b>28.</b>	श्लोक. श	गुब्द,	<b>E8</b> .	इलोक.	शब्द.	28.	श्लोक.
<b>ब्याहार</b>	29	واو	प्रकुन्त {	904		शतकोटि	6	80
व्युत्थान	900	996	•	968		शतदु	₹ €	३३
व्युष्टि	949	३८ १	राकुन्ति	9 6 8	३२	शत्पत्र	રૂં છ	X0
<b>ब्यू</b> ह	960	૪૫ ક	राकुल	. ३४	98	शतपत्रक	<b>६</b> ६	, 96
व्यूढकंकट	904	६५३	राकुल₁द्धक	६२	948	शतपदी	६५	93
व्यूति	१३०	२८ ु	राकु लादनी	{ ५४	८६	शतपर्वन्	६३	959
(	ĘC	2 1		( ૫૭	909	शतपर्विका {	५६	402
व्यूह }	906 ,		शकुलाभे <b>क</b>	३४	90	•	, £\$.	946
	965		शक्त.	<b>৬</b> ९	ĘĠ	शतपुष्पा	<b>ξ</b> 9	942
न्यू हपार्हिंग 	908	1	शकुत्करि	98	. ६२	शतप्राम ,	५३	७६
व्योकार े	920	٥		. ९.८ . १ <b>१</b> ०	9 °.	शतमन्यु	•	४२
व्योमकेश 	Ę	. 1	शक्ति {	770 <b>9</b> 5	704 <b>6</b> 4	शतमान	२०२	. 38
व्योमन्	90	5	शक्तिधर	9	¥0	शतमूली ्	بإنع	900
व्योमया <b>न</b>	6	**	शाचिर शक्तिहेतिक	909	६९	शतयष्टिका	68	904
व्योष	925		रा। पाहातक <i>र</i>	9	र २ ४ <b>२</b>	शतवीय 🕯	६३	948
व्रज {	<b>\$</b> &	30.	शक }	५२	ĘĘ	शतवे ६ <b>न्</b>	६०	983
Ç	946	₹ ७	शकधनुसू	99	90	शतहदा	99	٠ ٩
व्रज्या }	९ <b>३</b> <b>९</b> ८ <b>९</b>	<b>३</b> ५ <b>९</b> ५	शक्रपादप	40	ષ ર	शतांग	१०ई	49
त्र <b>ग</b>	707	4.8 1. e	शक्रपुहिपका		935	शतावरी	ووقع	909
न्य व्यकार्य	908	969	शक्त	936	<b>₹</b>	9-3 }	90	\$
	९३	30	रांकर	Ę	₹°	शत्रु {	90	99
ृत्रत (	. 84	9	2124	43	<b>२</b> ०	शर्भेश्वर	96	२६
व्रतति }	468	ر 9	शकु र	7 <b>4</b>	``	शनैस्	589	90
व्रतिन्	۷۹	٠,	(	906	९३	शपथ	99	٩
नक्ष <b>न</b>	१३०	३२	٠. (	90	وه 🖺	शपन	<b>१</b> २	3
त्रात	. 86	રૂલ		48	• 33		१०३	४९
ना <b>त्य</b>	94	43	शंख्य	<b>E</b> 4%	1980	शंफरी	₹४	. 95
व्रीडा	٠. ٩ <i>٥</i>	२३	l	940	. 96	शबर	955	7 7 6
,		94	शंखनख	- <b>३</b> ५	23	शबरात्वय	~ ¥\$	76
त्रीहि {	- 998 998	, 5 4	शंखिनी	. %		शवल	29	স্থ
_		اءُ ا	शजी	. · · ·			920	1 4
<b>बैहेय</b>	953	*	शचीपति	. •	, X3		98	- 1
•	श ' <b>२</b> ००		शठी	, ६२	٠ ٩ ٧٧		` २१	•.`
হাৰ	1999	996	शठ	180	84		3,6	. २३
शकर	े १०३	, 96 649	शरापणी	<b>Ę</b> 9	.989	1	. < \$	بأوح
शकत	98	9 6		_	- 900	1	936	₹.
श्कुलिन्	948	. १७	1	। ३४	'9६	1	299	
হাকুন	<b>, १०</b> %	३२				E.	<b>२</b> १ <b>१</b>	, I
' হাকুনি	908	\$ 6	থব	<b>ु १२३</b>	"æ 6	शमथ	, , , ,	

शब्द.	<b>2</b> 8.	श्लोक. शब्द.	<b>7</b> 8.	रलोक.	शब्द.		श्लोक.
{	\$	५८ शरब्य	906	۶۶	হান্ত	ه د ۹	<u> </u>
शमन {	१३९	२६  शराभ्य	ास १०८	68	2141	906	909
शमनस्वस्	₹€	३२ शरारि	६७	२५	रास्नक	१२४	96
शमल	<b>6</b> \$	६७ शराह	१३७		शस्रमाज		G
शमित	984	९७ शराव	996	३२	शस्राजीव	7 904	६७
शमी {	५०	५२ शरावत	ति ३६	₹४	शक्री	906	९२
रामा रे	994	२३ शरास	eof F	ر ۶ ا	शाक	<b>\</b> 49	9 3 \$
शमीघान्य	994	२४ शरीर	৬९	90	2117	( 998	źĸ
शमीर	५०	५२ शरीरिन	٦ 96	361	शाकट	920	६४
शुरुपा	11	٩	( 30	99	शाकुनिव	हे <b>ं १</b> ४	98
शम्पाक	80	२३ शर्करा	} 990	8.8	যাক্ষীক	904	ĘS
शस्य	6	80	( १७७		शाक्यमु		18
शस्वर {	३२	४ शक्राव		99/	शाक्यसि	ह ५	94
(	६५	१० शर्करिल	ा ३ <b>९</b>	99	शाखा	४५	19
शस्वरारि	فع	२६ समेन्	३८	<b>२</b> ५   १	ग्राखानग	₹ <b>¥</b> 0	8
शस्वरी	48	८७ शर्व	Ę	३० र	ाखामृग	₹ <b>¥</b>	Ę
शम्बल	२०२	३४ शर्वरी	94		ग्राखा शिष	हा ४५	19
शम्बाकृत	994	९ शर्वाणी	v	401	गिखिन्	४४	4
शम्बूक	३५	२२ शल	Ę¥	৬ য	गंखिक	१२७	٤
शम्भली	७२	१९ शतभ	Ęu	461	गटक	२०२	33
शस्यु {	Ę	३० शलल	६४	৬   য	गरी	२०३	३८
	105	१३५ शलली	Ę¥	V i	ाठ्य	२९	३०
शम्या	<b>99</b> §	१४ शलाद	४६		ाग्	३०	३२
शय	69	८१ शतक	943	ু   য	ाणी	994	\$
शयनं {	३०	36	( 40	५३	ांडिल्य	86	₹ २
(	66	१३८ शस्य	{\varphi}	े र	ात {	96	44
<b>शक्</b> नीय	66	930	906	6.3		984	89
शयाङ	930	रे रे शव	199	196	तिकुम्भ 	928	38
श्रायित	१३७	३६ राश	६५	99 21	ात्रव (	<b>9</b> &	11
रासु	<b>३</b> ०	५ शराघर	ં ૧૨		ाद {	<b>३३</b> १६६	<b>९</b> ९०
शुख्या	46	१३७ शशलोमः	न १२६	৭০৩ হা		39	90
शर {	६३	१६२ शशादन	44	9४ श		<b>i</b> s	90
•	906	201-2-E	926		न्त	988	30
शरजन्मन्		<b>₹5</b> 1	960	- 4	ति	986	3
शर्ग	960	५३ शकत्	965		बिर	900	33
·	90	36	950		बरी	126	99
शरद }	ÌÙ 856	२० शब्य	43	१६६ शा		90\$	166
	9.46	९३	14		- (	**	23
शुरम	<b>\$</b> 4	पु शस्त	986	१०५ हा	<sup>19</sup> {	160	९५

		• হাব	देशक्रम	मानका ।				
		इतीक शब्द.		ĮĮ.	श्लीक	शब्द.	<b>9</b> 8.	स्तीक,
शब्द.	মূম্ব.	4	•	<b>8</b> \$ -	3	হাকা <b>স</b> ন্ত	924	908
श्रारदी	५७	१११ शिखरि	<b>1</b> }	186	908	হাতী -	३५	58
शारिफल	9 ? ?	86	,	6	५७	মিত্তী <b>মূত্ত</b>	940	96
शारिवा	५७	998	(	96	39	<b>স্থিতী</b> শ্বৰ	४३	1
शार्कर	३९	११ शिखा	3	૮ર	90	হ্যিকৰ	939	३५
शार्तिन्	<b>6</b>	95		940	99	किल्पिन	१३७	4
शादूंब {	ék	५९ शिखा	ात्	6	40	<u> হিল্বেয়ালা</u>	89	•
1.7	989	१८८ शिखा		Ęć	3	1 -	•	₹0 70
शार्वर	909 '	१९ शिखि	प्रीव	924	90'		96	३५
	३४ ४५	५ शिख	<b>=</b> {	\$6	<b>9</b> 0		939	ş
शांव }	88	94	, (	१६८		। श्विमञ्जा	48	69
शालपर्णी	५७	৭৭५ হিডি	वाहन	U	8	1 [	•	३७ ५३
(	88	<sup>६</sup> হািসু	<b>{</b>	86 998		8	५० ५ <b>९</b>	49
शाल {	४५	99	Ę			I Grant J	પુર	920
<b>श</b> ाला त्रक	१५६	<b>৭</b> ২ হিন্ <u>যু</u>		926	99	1 1	68	4
<b>হাা</b> লি	940	२४ शि		२४		18 = 1	962	२१२
शालीन	938	२६ सिंहि	जनी	900		. 1	ें ( १३	, 98
হান্ত্ৰেক	३ं७	` }	হাক	998		<sup>१९</sup> शिशिर ८३	<b>\begin{array}{c}</b>	96
शाहर	₹ <b>'</b> 9	२४ शित		१६५		1 Green	£6	36
(	ष६		तकण्ठ	4		३८ शिशुक	<b>3</b> 8	96
शालेय 🖁	192	- 1	तिसारक	88		३५ शिशुत्व	७५	
	40	941	पिविष्ट	१५९		११ शिशुमा	१६ र	
शाल्मिति	•	४७   হি		84		४३ किस	८०	
शास्मलीवेष्ट	46	7-1	फाकन्द	३७		५३ शिविद	ान १३९	
शावक	86	771	विका	903		३३ शिष्टि	٩, ٩	
शावर	988	- 17	विर	900		२३ शिष्य	90	
शास्त्रत		0.1	क्या	994		९५ शीहर	3	
शाच्क्रतिक	33	7 11	गरस्	63		६४ श्रीव्र		4 44
शासन	4	98	शर्ज	१०२		36	٩	
शास्त्र	9७८	900 1	शरस्य	८३		६५ शीत		ं है व द है
शास शास्त्र विद्		\$ \T	शेरा	<i>ر</i> م د .ه		£ \$	1 99	
	930	₹0  <sup>1</sup>	शरीष	<i>५</i> इ		1		19
शिक्य <del>शिक्ता</del> त		. 69 1	शिरोऽप्र	૪૫		1.00.00	-	42 0
शिवियत किन्	२ः	8	शिरोधि	८२		१०२	414	45 3,
शिद्धा शिक्षित	93	3 8	शिरोरल	67		र ५ शीत		<b>લેવે ૧૪</b>
शिक्षण्ड शिक्षण्ड	Ę,	ر ۱۹۹	शिरी दृष्ट	6		बुष्द्र शीत २	•	
शिखण्डः शिखण्डः	•	1	হাি র	99		1 ^	র্যিৰ }	16 3
	` .		হািতা		<b>ર</b>	१३ शह	""" ( ·	190
शिखर		2 Y	141611	(	<b>!</b>	*	•	

शक् ,	5ंब.	श्लोक, शब्द	. 9 <b>5</b> .	<i>শ্চ</i> ী.	शब्द.	দৃষ্ট.	===== श्लोक
शीधु	939	l		-			•
शीष	૮રૂ	९५ राज्य	िन्वत १४० ( २०	<b>५</b> ० <b>१</b> २	원튀 {	३ <i>५</i> ५५	<b>२</b> ५ <b>५</b> ००
शीर्षक	908	६३ ग्रिभ	1 960	952	्रस्य।	7.7 <b>4</b> 0	136
शीर्षच्छेद्य	9 3 4	४५ शुभ्र	स्ती ११	ષ	श्रङ्गीकनक	928	<b>9</b> 6
शीर्षण्य {	८३	९८ शुम्रां	য় <b>৭</b> ২	98	श्रत	986	54
शावण्य {	90	६४ झुल्क	_	. २७	शेखर	66	936
शील {	२८	२६	( ११४	९७	शेफम्	٤٥	<b>9</b> \$
	963	२०१ ग्रुल्ब	े } १३०	<b>२</b> ७		5 42	ن و
गुक {	५९	935	( 999	२३	शेफालिका	ع مونر	v
. (	ĘĘ	ર ૧ શિશ્ર્		30	शेमुषी	99	9
<b>शुकना</b> स	uq	<sup>দ্</sup> ও গুৰি	३०	ર	शेख	86	₹8
<i>शुन्त</i>	9 & 4	८३ ग्रुष्क	मास ७८	<b>\$</b> 3	शेव घि	90	७१
য়ুকি {	\$ 4	२३ शुब्स	590	१०२	शेवाल	३७	36
(	૫ ૬	१३० शुक्स	न् ८	ولايح	शेष	₹ 0	8
.	८ २५	५६ शूक	194	२३	शैच	٩,٥	99
ग्रुक 🚽	90	१६ ज्ञास	हीट ६५	98	शैखरिक	५४	66
• [	96		बान्य ११५	२४	शैल	٠. <b>٧</b> ٤	1
गुक्रल	963	२२० सुकर	६४	२	शैलालिन्	976	95
गुकशिष्य	¥	१ । श्रक	रिंवि ५४	60	(	84	इंश
(	9 Ę	१२ शहा	<b>৬</b> 9	93	शैल्डष {	926	9 2
<b>3</b> ₩ {	9 €	१२ श्रही	وه	93	शैलेय	५८	923
য়ুৰ্	२८	३५ शून्य	189	५६	शैवल	३७	३८
ſ	e	५६ ग्र	908	৩৩	शैव लिनी	३६	३०
_6_	90	१६ रहप	५१५	२६	शैशव	७५	80
ग्रुचि न्	<b>₹</b> 0	१२ शूल	960	984	शोक	२८	२५
	१७ १५८	१७ राला	া <del>চ</del> ল <b>৭</b> ৭৬	४५	शोचिष्केश		<b>પૃ</b> ૪
গুঙী	996	२८ ह्य	न् ६	३०	शोचिस्	२०	३४
<u> गुं</u> डापान	939	३८ शुहर	1 990	४५	शोग {	29	94
<b>যু</b> বুদ্বি	36	४० श्वा	ाल ६४	4	(	₹६	३४
- (		33	<u>_</u>	908	शोग्रक	49	५७
शुद्धान्त }	६५ १६३		وه و ال	89	शोग्रस्न	928	<b>९</b> २
शुनक	975	<sup>६६</sup> श्रेख	लक २२	७५	शोणित	96	€8
ग्रुनासीर ग्रुनासीर	צ	<b>२</b> २	<b>,</b> ४३	8	शोथ	vv	<i>ખ</i> , સ
<b>ग्रुनी</b>	१२९	४१ প্র	1	982	शोथझी	६१	989
<b>35</b> ···		२२ <sub>२८</sub> श्र	विष्य १५८	२६	शोधनी	४२	96
<b>₹</b>	9 £	, , , ,	•	३७	शोषित {	996	४६
· (	9	`	<sup>पटक</sup> ५९	४०		989	4 8
<b>ग्र</b> मंयु	180	२५ श्ट्रह्म ५ - <del></del>	^		शोफ	99	<b>े ५</b> २
- '9	,	५०   ऋगि	ाणा १२०	६६	शोभन	980	48

					Transport of the same			<b>2</b>
श <del>ब्द</del> .	ga.	रुलोक.	शब्द.	g <b>s</b> .	श्लोक.	स्रब्द.	<b>7</b> 7.	ঞ্চাক -
शोभा	93	90	প্রান্ত	<b>९२</b>	ž d	ओिष	60	98
স্থাশাসন	86	39	श्राद्धदेव	9	<b>હ</b> ૃલ્	श्रीसिफलक	60	७४
হৌষ	७७	५९	श्राय	940	ds	প্রীঙ্গ'	63	58,
शौक	६९	४३	श्रावस	90	94	श्रोत्रिय	69	<b>Q</b> _
शौक्तिकेय	39	90	श्रावणिक	90	98	श्रीषद	950	6
शौक्ह्य	७३	४१	श्री {	Ę	२७	ऋश्य	989	69
য়ীভ	938	२३	m	900	८२	इलेष	940	98.
<b>শী</b> ভিক	926	9.	श्रीकण्ठ	Ę	३२	लेष्मग्र	46	Ę o
शौडी	44	९७	श्रीधन	4	98	<del>रहेष्मन्</del>	96	<b>६</b> २.
शौद्धोदनि	4	94	श्रीद	90	Ęç		86	<b>३</b> २
शाद्धादान शौरि	٦ لام	29	र भीतिक	4	29		944	२
रागर शोर्घ	99°	902	1 - (	५२	€ €	श्रुयस	96	<b>ૄ</b> ં ૨ બ
राजि शोहिनक	१२७			469	6 3	खदंष्टा	५५	96
रागल्यक <b>शो</b> ष्कुल	१३५	99	श्रीपंशिका	४९	४०	श्रम्	125	१२
			श्रीपणा	*4	₹ €	। श्वनिश	२०४	80
<del>इ</del> च्योत	940	90	। आ १५००	86	३२	श्चपच	939	२०
<b>३मशान</b>	999	994	i pariyogii	५५	6,6		३०	*2
इमश्रु	૮રૂ	९९	1 ^	88	80		૧૬૬ *	28
श्याम {	३० १७३	ዓ ያ <b>ዓ አ</b> ዓ	, 1	938	9,8	ા શ્વાસ	99	५१
(	•		श्राल	१३४	6.8	श्ववृत्ति	998	२
<b>इयामल</b>	३०	98	12014(((((((((((((((((((((((((((((((((((	4	२२	श्वशुर	996	<b>३</b> 9
(	49	الع الع العام	1241418	69	9 २९	श्वजुरी	990	३७
इयामा र्	५६ ५७	900 997	I OTI ANI	८७	950	श्वशुर्य	908	985
(	903	983	1 - Carrer	८७	181	Terra	998	<b>ই</b> 9
	ę į	9 6	ਅ <del>ਨੇ ਨ ਜ਼ਿਜ਼</del> ਜ਼ੀ	45	Ę	` .	996	३७
स्या <b>मा</b> क	१२ १९२	, 3:	ो बर क	१६४	(G)	1		` <b>२</b> २
श्याल	9 1 <del>4</del>	9	.   (	२१		ह्म <b>स्</b>	१९२	
<b>ज्याव</b>		ď.	12/10 )	हे S	ų,	1	<b>ج</b> 	£9.
३येत	૪ <sup>ર</sup> ૬ ધ્	9	,	१६४ १२१	\$	7	40	48
<sub>३</sub> येन			\$   3    10	48 171		्रावावन	£8.	y
<b>इयैनपाता</b>	998		1907(III) <	929		৭ শ্বিস	99	٠ ٧٧
श्रद्धा	१६८	ره ر		२६		× (	२०	98
श्रद्धाङ }	७२ १३६	Z,	श्रेयस }	98		६ स्वन	988	<b>९</b> ६
(				9 × 9		10	964	७९
श्रयण	<i>૧૫</i> ૦		1 \	<b>د</b> ۹		९ खेतगस्त	Ęø	23
श्रवस्	<b>ે</b> રે		हे श्रेयसी }	હ ફ બુબ		श्वेतमरिच	१२६	990
श्रवस् श्रविष्ठा	۵. ۹۹	<b>.</b>	के अन्छ ने अन्छ	38 <b>9</b>		वितरक	२१	94
	996		१९ श्रोस	৬ ६		ढ श्रेतसुरसा	48	93:
श्राणा	1 10			•		Ŧ		

शब्द.	धृष्ठ.	श्लोक	शब्द,	<b>9</b> 8.	<b>स्लोक</b> ,	शब्द	<b>2</b> 8.	<b>धोक</b>
		-	संबेश	₹०	34	सगभ्यं	৬४	₹ <b>४</b>
	ष		सन्यान	۶۶	996	सगोत्र	۷¥	₹४
षद्रकर्मन्	68	٧	संशप्तक	908	96	संग्धि	995	44
षद्भपद	Ęo	२९	संशय	98	3	संकट	188	<b>د</b> لا
षडिभिज्ञ	ч	98	संशयापः		ě	संकर	४१	96
षडानन		39	संश्रव	98	٩	सकर्षग	ų,	२४
षड्ग्रन्थ	40	४८	संश्रुत	980	908	संकल्तित	१४५	९,३
षड्प्रन्था	५६	१२०	संदेश संदेखेष	943	<b>30</b>	संकल्प	२८	ع
षड्ग्रंथिका	<b>\$ ?</b>	948	संसक्त	174 982	٩٥ ٩٥	संक्सुक	939	४३
ঘৰ্ত্তন	२५	9	संस <b>द</b>	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	94	संकाश	939	३७
षण्ड	920	έs		,	96	- 0	986	,
षण्ड {	<i>ه ب</i>	३९	सेंसरग	\	५५	सक्रीर्ग	} 988	८५
षष्ठिक	96	9	संसिद्धि	₹0	३७		( १६२	५७
पाष्ठक षष्टिक्य	994	, ,	संस्कृत	964	69	संकुल	{ ३६ {संकुल १४४	98
	992	- 1	सस्तर	908	959	संकोच	८६ १८६	د <i>ب</i> م
षाण्मातुर	<b>u</b>		 संस्तव	942	53	सकन्दन	<i>و</i> م	१२४ ४४
	स	1	संस्ता <b>व</b>	943	7.4 <b>3</b> 8	संक्रम	142	<b>ર</b> બ
संयत्	- 190	405	सस्त्याय	908	949	संक्षेपग्र	949	<b>२</b> 9
संयत	936	~ 5 I	सस्था	99	28	सख्य	990	108
संयम	9 04 9	96	संस्थान	9 G o	928	संख्या	59	7
संयाम	د وراع	96	सस्थित	999	ì	संख्यात	983	é &
संयुग	990	304	सस्पर्शा	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	990	संख्यावत्	<b>دع</b>	4
संयोजित	984	1,4	तस्याः सम्बोट		908	सग	943	<b>२</b> ९
संराव	२४	431	ाः गाट हित	990	904	सगत	*8	96
संजाप	<b>२</b> ३	791.		9 8 g	ره لام	संगम	\$48	79
संवत्	94.9	191.	हतजानुव स्टब्स		80	1	( २०२	₹४
संवत्सर	90		ाहतत्त्व इति	۷9 <b>६</b> ९		संगर	9 0 Ę	966
संवनन	986	XI.	हनन इनन	43 6 <b>9</b>		सघींग	986	909
संवर्त	96	551	हार इंडर	. 39		संगूढ संग्रह	984	९३
संवर्त्तिका	३७		हिति			संत्रह	२२	Ę
संवस्थ	Ę		क्ता इक्ल	<b>२२</b>	-	सम्राम	990	904
संवाहन	948	2 2 1	. कत् इन्द	989		संप्राह	9 ° 6 9 4 0	90 94
संविद्	<b>99</b>	, וי	. इ.स. स <b>इ</b> त्प्रज	9 <b>८७</b> ६६	२४२	संघ		98
त्रावद्	99	٦١.	 वतु फला	4 9 40		त्तव संघात	<b>ξ S</b>	89
संवीच्या	454	3.3	. १७ गरा। इक्थि	٦٠ ده		सपात स <b>चिव</b>	<b>\$6</b>	३९
संबीत	984		 इंखि	96			963	२०६
संवेग	23	<b>E</b>	 उखी	\ <b>\</b> 9	7 <b>7</b> 7 7	सज	904	44
संभेद	185		ख्य	94 94	14	सञ्जन	{	Ę

शब्द.	<b>2</b> 8.	खोक.	शब्द	88	इलीच ∙	शब्द.	gg.	खोक.
स ज्जना	945	85	सदत्त	989	३६	सन्नद्ध	904	३५
संचय	490	३९	सदश	989	3.5	सन्नय	908	949
संचारिका	७२	90	सदेश	982	ĘU	सन्निधि	942	२३
संजवन	89	Ę	सद्मन्	४१	8	सिन्नकर्षेश	9 د ع	२३
संज्वर	4	<b>પ</b> હ	सद्यस्	930	9	सनिइष्ट	982	ĘĘ
संज्ञपन	999	993	संघर्मिणी	93	२०	सन्निवेश	४२	15
संज्ञा	949	33	सध्यञ्च	१३८	३४	सपत्न	९७	90
<b>यं</b> जु	७६	४७	सनत्कुमार	6	५९	(	968	२
सटा	<b>د</b> ٤	९७	सना	999	9 9	सपदि {	990	\$
संडीन	६८	श्रुष्ट	सनातन '	585	७२	सपर्यो	90	18
(	935		सनाभि	७४	₹ ₹	सपिड	७४	३२
सत् {	२२६	٤٤	सनि	९३	३२	सपीति	998	५५
सतत्	\$	Ęu	सनिष्ठीव	१४३	२०	सप्तकी	64	906
सती	90	Ę	सनीड	१४२	६६	सप्तन्तु	90	93
सतीनक	998	9६	सन्तत	e.	६५	सप्तपर्ण	४७	२३
सतीर्थ्य	९०	97	सन्तमस	३०	8	सप्तर्षि	98	રહુ
सत्तम	989	५८	सन्तति	८९	9		५३ -	७२
	95	२९	सन्तप्त	980	908	सप्तला {	Ęo	१४३
सत्त्व {	१८२	398	J	۷	<b>પ</b> ું	सप्तार्चिम्	6	५६
सत्पथ	80	96	सन्तान {	968	9	सप्ताश्व	98	२९
सत्य {	२४	<b>ર</b> ર	सन्ताप	5	५७	<b>स</b> प्ति	902	88
(	908	948	सन्तापित	980	903	सब्रह्मचारिन्	९०	99
सत्यकार	२२३	८२	सन्दान	929	७३	समर्तृका	49	92
सत्यवचस्	९४	४३	सन्दानित	988	९५	(	४१	Ę
सत्थाङ्कति	३२३	८२	सन्दाव	999	999	सभा }	4 0	94
सत्यानृत	992	3	सदित {	988	८६	(	१७२	१३७
सत्यापन	<sup>६</sup> २३	८२		१४६	ح م	सभाजन	985	•
सत्र	906	969	सन्देशवाकू	٤ ۽	90	सभासद्	59	98
सत्रा	968	8	सन्देशहर	٩٥.	96	सभास्तार	98	98
सत्रिन्	86	94		98	३	सभिक	922	88
सत्वर	\$	६५		६८	३९	सभ्य {	८९	3
सदन	89	4		999	999	4.4	<b>59</b>	98
सदस्	<b>9</b> 0	94	सन्धा	966	१०२	सम {	१५३	34
स <b>द</b> स्य स <b>दा</b>	<b>९</b> ० <b>१</b> ९२	96	सन्धान	939	58		934	ξ¥
सदागति सदागति		77		96	96	समञ	988	94
स <b>दा</b> तन	<b>9</b> 9 × 3	<b>६</b> १ ७२	1	<b>९</b> ५० ९२९	99 <b>6</b> 9	संमगा }	६० ५४	<b>९</b> ० १४ <b>१</b>
सदानीरा सदानीरा	987 • 36		•	94	Ś	समज	ξς.	४२
स <b>रक्</b>	989	3 3 3 <b>5</b>		*4	<i>\$</i> \	i	<b>5 5</b>	11
<b>-</b>	• • •	17		• -	1 1	*** ****	• •	•

				- 7					
शब्द.	58,	ऋोक,	शब्द.		<b>वेश्व</b> .	श्लीक	शब्द.	2 <b>5</b> .	<b>श्लोक</b> '
समज्या	९,७	94	समाहति		१२	v	सम्पिधान	900	१२५
स मैजस	<b>લુ</b> ૧	२४	समाह्वय		922	86	सम्पुरक	66	१३९
समधिक	१४३	७५		(	∜_0	م و	सम्प्रति	१९२	२३
समन्ततम्	१९०	93	समिति	3	990	908	सम्प्रदाय	988	v
समन्तदुग्धा	948	908		(	943	<b>U</b> ¢	सम्प्रधारग्र	944	946
समन्तभद्र	ч	93	समित्		990	906	सम्प्रधारणा	99	<b>२</b> ५
समम्	१८९	४	समिघ्		६९	9.5	सम्प्रहार	990	904
समय {	94	9	समीक		990	908	सम्फुल	४५	, o
तमय रे	१७४	१४९	समीप		966	ĘĘ	स• ।।घ	988	૮ષ
समधा {	966	२५२	समीर		9	६२	सम्बोधन	968	Ę,
(	१८९	હ	समीरण	{	٩	६२	सम्भेद	3 €	ب ع <b>دم</b>
समर	990	908		(	५३	<b>હ</b> લ્	diam's	•	र <i>े</i> इ४
समर्थ	9 ६ ६		समुचय		949	98	सम्भ्रम }	२९ १५२	२० <b>५</b> ६
समर्थन	99		समुच्छ्र्य		१७४	વેલ્ટ	सम्मेद	3 €	२४
समध्क	358		समुज्ञिसत		986	900	सम्मार्जनी	४२ ४२	96
समयदि	985	- 1	समुरिपञ्ज		9.9	<i>९</i> ९	सम्मूच्छ्रंम	१४९	Ę
समवर्तिन्	99	1	समुद्क्त		984	8,0			
समगय	६९	80	समुदय	,	Ę	<b>3</b> 0	समृष्ट	996	8.É
समष्टिला	६२	46.	समुदाय	{	<b>६</b> ९	80	सम्यक्	२४	१२
समसन	949	ų٠	_	(	990	908	सम्राज्	લ ફ	3
समस्त	१४२	4-1	समुद्र		996	9 0	सरक	932	8.5
समस्या	२२		समुद्रक		66	१३९	सरधा	६७	२६
समाः	9 ७	* • 1	समुद्गिरण		9 ६ २	44	सरट	Ęų	43
समांसमीना	929	3,1	<b>यमुद्ध</b> त		9 \$ 6	23	सरणा	६१	१५२
समाकर्षिन्	३०	9	म <b>मुद्र</b>		ź:	4	सर्ग्या	४०	94
समाघात	990	94 -		(	44	62	सरित	८ ३	८६
समाज	६९	84	समुद्रान्ता	1	५७	958	सरमा	988	<i>5                                    </i>
समाधि {	99	١,		C	فرعي	933	सरल {	49	ξo
वनाव रे	980	• • •	समुन्दन		१५३	<b>३</b> ९	(	बेइ४	۷
(	9	4.1	समुन्न	•	986	ط ه وم		८७	956
समान }	430	Ęų.	समुनद		986	903	सरला	५६	906
	१७१		ससुपजीवम्	(	990	90	सरम्	¥ <b>6</b> 4	२८
समानोदर्थ	५४	₹४ ं	समृह		५३५	٩	सरसी	३५	२८
समालक्भ	9 0 5	२७	समूह		ĘC	३९	सरसी,रुह	३७	Ko
समाकृत	٥٥	۰,۰	समूह्य		99	<b>₹</b> 0	TTTTTT (	३२	9
समासाद्य	984		समृद्		940	99	सरस्वत् {	962	40
समासार्था	२२		समृद्धि		940	90	- A	२१	9
समाहार	201		सम्पत्ति		900	८२	सरस्वती {	₹ .	१४
स्माहित	986	908	सम्पराय		948	940	सरित्	34	२९

			• शब्द	(ानुक्रमणि	का ।			९१)
शब्द.	<b>2</b> 8.	श्लीक.	शब्द.	gg.	श्लोक	शब्द,	ā ā·	:নৌক
सरित्पति	३२	9	सवन	<b>લ્</b> ધ્યુ	४७	स ंयुगीन	१०६	<b>6</b> 6
सरीस्टप	₹9	હ	सवयसू	و د	92	सांवत्सर	96	98
सर्ग	940	ं २२	सवितृ	98	३१	स <sup>i</sup> शयिक	933	ч
सर्ज	४९	88	सविध	१४२	Ęu	सावस्	968	8
सर्जेक	४९	४४	सवेश	982	<b>\$</b> \o	साकल्य	986	१
स जरस	८७	१२७	सब्य	988	<b>≼</b> ∀	साञ्चात्	960	२४३
सार्जिकाचार	१२६	१०९	सन्येष्ठ	१०४	Ęo	सागर	३२	9
सर्प	३०	Ę	सस्य	४६	१५	साचि	१८९	Ę
सर्पराज	३०	8	सस्यमज्जरी	998	२१	सातला	ξo	१४३
सर्पिं <b>ष्</b>	996	५२	सस्यशु क	998	२ १	(	948	३८
सर्व	988	६४	सस्यसम्बर	४९	ጻሄ	साति }	965	६७
सर्वेसहा	36	3	सह	968	४	_^_(	964	ę,
सर्वज् {	4	93	सहकार	86	\$ 3	सातिसार	66	<sub>ખુ</sub> લુ
•	Ę	3 3	सहचरी	५३	હધ્	सास्विक	३७	14
सर्वतम्	990	93	सहज	७४	३४	सादिन् {	१०४	Ęo
सर्वतोभद्र {	४१	90	सहधर्मिणी	৬০	4		986	9 a u 9 9 <b>s</b>
(	49	£ \$	सहन	१३७	39	साध <b>न</b>	0 <b>4</b> 6	, 115 <b>2</b> 0
सर्वतोभद्रा	86	\$ 6	<b>महभोजन</b>	999	بربع	साधारण	९३५ १९३	२७ ८२
सर्वतोमुख	<b>₹</b> ₹	४	(	9 €	98	साधित	१३८	80
सर्वदा	965	<b>₹</b> ₹	सहस् }	990	१०२	साधिष्ठ	986	992
सर्वधुरावह	920	ĘĘ		964	२३२	साधीयम्	११८६	<b>२३५</b>
सर्वे <u>ध</u> ुरी <b>ण</b>	920	ξĘ	सहसा	१८९	હ	MITITIE	63	3
सर्वमगला	v	३ ७	सहस्य	98	9 4	साधु {	960	<b>પ</b> ર
सर्वरस	८७	<b>1</b> 20	सहस्र	१ - ३	८४		१६ ७	909
सर्वेता	960	45	सहस्रदंष्ट्र	३४	38	साधुवाहिन्	१०२	<b>አ</b> ጸ
सर्वेदि जिन्	88	४५	सहस्रपत्र	३७	४०	साध्य	8	90
सर्ववेदस्	90		सहस्रवीया	६२	946	साध्वस	२८	29
सर्वसन्नहन	908		सहस्रवेधिन्	<b>{</b> €0		साध्वी	<b>9</b> 0	Ę
सर्वानुभूति	५६	906	ł	( 990 -	80	सानु	ЯŹ	4
सर्वान्नमोजिन्	936	२२	1	98	३१	सान्तपन	٩ ٧	५२
सवन्त्रीन	936	<b>२</b> २		v	<b>አ</b> ጸ	l arresser S	१४	96
सर्वाभिसार	908	९४	सहिसन्	908	६२	सान्त्व {	९९	२१
सर्वार्थ सिद्ध	4	94	सहा {	५३	ķυ	सान्दष्टिक	900	२९
सर्वीच	909	88	1	५७	993	1	१४२	ĘĘ
सर्षप	938	9 6	सहाय	م ه و	<b>৩</b> 9	सान्द्रस्निग्ध	930	३०
संचित	३२	₹	महायना	948	४०	शब्द.	पृष्ठ.	श्लोक
सहकी •	40	१२४		१३७	₹٩		<b>5</b> 2	२७
सव	وړه	4 \$	सांयत्रिक	\$ \$	12	साप्तपदीन	9,6	98

		-				
शब्द.	<b>93.</b>	स्रोक, शब्द.	5 <u>8</u> .	श्लोक. शब्द,	पृष्ठ.	श्लो <b>क</b> ,
(	99	२० सिंह	<b>{                                    </b>	9	( ३२	9
सामन् }	29	3	( 989	५९ सिन्धु	<b>3</b> 3	<b>?</b>
(	९९	२ १ सिंहना	_	9 6 6	( १६७	909
सामाजिक	49	१६ सिंहपुच		९३ सिन्धुज		४१
सामान्य	96	३१ सिहसंह		१२ सिन्धुस	ं स ३६	३५
	१ १४३	८२ सिहास		९८ सिह	69	१२८
सामि	966	२४९ सिंहास		<sup>३१</sup> सीता	993	18
सामिधेनी	51	२२ सिहास्ट	_	१०३ सीत्य	9६६	•
सामुद्र	996	४१ सिही	} 48	१०३ सीधु	939	89
साम्परायिक	990	808	( 40	११४ सीमन्	81	२०
सांप्रतम	9 ९०	१५ सिकता		७३ सीमन्त	_	98
	( १९२	२१ सिकता		९ सीमन्ति	तनी ६९	२
<b>स</b> ायक (	944	२ सिक्ता		११ सीमा	४३	२०
सायम् }	९५ १९२	३ सिक्थक <b>१</b> ९	* *	१०७ सिर	992	98
(	४५	98	( २०	१३ सीरपारि	-	२४
सप्त {	999	६७१ सित	) 9४६ ) 9४६	९५ सीवन	988	ч
सारंग {	ξĘ	90	950	<sup>९८</sup> सीसक	974	904
(	940	२३ सितच्छ		<sup>८०</sup>  सीहुण्ड	५६	904
सारथि	908	49	49	६१ स	96	<b>ર</b>
सारमेय	928	२१ सिता	1 990	४३	( 968	·s
सारव	₹Ę	३६ सिताभ्र	८७	१३० सकन्दक		980
सारस {	ध्र	४० सितांमो	ज ३७	४१ सुकरा	9 7 9	<b>6</b> 0
(	Ęø	२२ सिद्ध	<b>{</b>	१९ डुकल	१३४	6
सारसन }	८५	908	( १४७	१०० सुकुमार	१४३	96
सारिका	do.A	६३ सिद्धान्त	99	४ सङ्ग्त	96	२४
सार्थ	१९५ ३९	े सिद्धार्थ	938	१८ सुकृतिन्	933	į
सार्थवाह	4 <b>4</b> 5	४१ सिद्धि	५७	११२ सुख	{   94   955	<i>54</i>
सार्द्र	986	७८ सिष्म	<b>.</b>	५३ सुखवर्चक	े १२६	२३ १०९
सार्यम्	968	१०५ सिंघ्मल	७८	६१ सुखसदोह		199
_	4.d	४ सिघ्मला	954	१० सुगत	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	93
सार्वभौम {	٩ ६	२ सिष्य	9 3	२२ सुगन्धा	५७	998
साल {	*0	३ सिधका	م و بع		२०	99
	४९	४६ सिनीवार्ल		सुगाध	ર્ષ પેંદ	929
सालपर्गी	<u>د</u> به	विषय सिन्हरू		<b>स्वरित्रा</b>	<b>9</b> 0	Ę
सास्ना साहस	990	44		६८ सुचेलक	. 65	998
•	९९ १०४	63	५२	६८ स्त	७६	२७
साहस्र {	948	४३ सिन्द्र	9२५ २ <b>०</b> 9	१०५ व्यवधीय	१६२	Ęo
-	•	• •	4-1	३१ इतश्रेषि	42	66 .

	शब्द.	9g.	श्लोक	शब्द.	<b>g</b> J.	श्लोक.	शब्द.	gg.	<b>∙हो</b> क
	<b>स्तात्म</b> जा	७३	79	सुरविद्रगा	३६	३१	<b>सुसंस्कृत</b>	996	84
	<b>सु</b> त्या	९५	४७	सुरपति	v	४३	<b>सहद्</b>	96	98
	<b>सुत्रामन्</b>	9	४२	_ (	90	96	सुहृद्य	933	¥
	सुत्वन्	90	90	सुरमि }	२०	99	सूकर	ÉR	Ŗ
	सुदर्शन	Ę	२८	(	१७२	१३७	सूक्ष्म {	989	٤٩
	सुदाय	900	२८	<b>सुरभी</b>	५८	953	Con (	१७३	188
	सुदूर	१४२	69	<b>सुरर्षिं</b>	6	86	सूचक	980	80
	सुवर्मा <sup>'</sup>	6	86	<b>सुरतोक</b>	*	Ę	सूचि	994	6
	(	ć	४८	सुरवरमेन्	90	٩ ا	(	908	५९
	सुधा {	986	9०२	<b>सुरसा</b>	५७	998	सूत -	924	
	सुघांशु	98	98	<b>सुरा</b>	939	३ ९	"	<b>9</b>	ફ ૬૨
				मुराचाये	9 ફ	२४	त्र क्रिस्ताम् । स्टिस्ताम्	962	43
	सुघी ^-	८९	4	सुरामण्ड	१३२	४२	सूतिकाग्र <b>ह</b>	89	ą ę
	<b>स्रुनासीर</b>	9	४१	सुरालय	6	४९	स्तिमास	७५	
	<b>सुनिषण्गाक</b>	<b>ξ9</b>	985	'सुराष्ट्रज	939	939	स्त्थान	<b>9 2</b> 9.	15
	सुन्दर	980	५२	सुवचन	२३	<b>9</b> ଓ	सूत्र	930	<b>२८</b>
	<b>सुन्द</b> री	६९	8	युवर्ण {	923	٥ ۾	सूत्रवेष्टन	942	<b>२</b> %
	सुप्थिन्	४०	9 ६	•	१२४	68	सूद {	994 9 <b>६</b> ६	<b>२</b> ८ ९१
./	सुपर्ण	Ę	<b>२</b> ९	सुवर्णक	४७	२४			
ŧ	मुपर्वन्	¥	v	सुवल्लि	44	8,8	सूना	१६९ ७३	993
	मुपार्श्वक	४९	४३	1	૮રૂ	40	स्इ		२७
	सुप्रतीक	99	8		५७	994	सूरृत	२४	99
	सुप्रयोग विशिष	न १०५	६८	सुवहा 🕇	ષ્ટ	998	सूरकार	909	२७
	सुत्रलाप	२३	90	1 1	५८	9२३ 9४ <b>०</b>	सूर	9४ . ६२	२८ १५७
	सुभगासुत	७३	<b>२</b> ४	i	ۥ		सूरण	. 156	94
	युभिद्या सुभिद्या	ષ્ટ	928	स्वास्ता	40	9	सूरत सूरि	65	•
	<b>सुम</b>	४६	9.0	सुव्रता	929	69	सूर्मी	<b>१९</b> ३	34
				सुषम	980	५२	Ser.	. 98	26
	सुमन	998	96	सुषमा	92	90	सूर्य सूर्यतनया	् ३६	33
		ue.	910	. क्यापती	६२ •	944	स् <sup>यरागया</sup> स् <sup>य</sup> प्रिया	ું. <sup>ત્</sup> ર ર ૧ હ ધ	940
	सुमनम् }	४६ ५२	७२	सुषवी {	990			96	170
ć	·			सुष	<b>३</b> ०	२	सूर्येन्दुसंगम 		
F	सम्नोरजस्	84	90	<b>छ</b> । पर	३०	¥	स्रिक्षणी	८२	<b>99</b>
	<b>सु</b> भेर	٤	४९	13	५९	985	स्ग	906	\$1
	<b>पुर</b>	४	v	87	93	99	स्यि	- 9 2 g	<b>لام</b> د
	सुरंगा	954	•	- चिस	48		य <b>िका</b>	७९ ४०	<b>&amp; 14</b>
	सुरज्येष्ट	4	96	सुवैधिका	५६	906	1 ^	₹ <b>0</b>	् दे <b>ड</b> ः
	<b>सुरदीर्धि</b> का	• 6	85		969	२	<b>च्या</b> टी		,
	सुरद्विष	*	. 93	बिह्य {	159	. 95	समर	. 🕻 çi	. 11

						1		
शब्द.	<u> </u>	श्लोक'	शब्द.	gg.	क्ष्रोक.	शब्द.	gy.	इलोक,
सङ	949	३८	ै (सोमवल्क {	40	५०	स्तनित	92	c
सेकपात्र	३३	93	; (	. १५६	9	स्तवक	¥ €	96
सेचन	<b>33</b>	93	सोभवश्लरी	٩o	१३७	स्तब्धरोमन्	६४	२
सेचनक	980	५३	सोमव हिका	44	<b>९</b> ५	स्तम्ब {	४५	, 8
:	३९	98	सोमवल्ली	68	८३	1	198	. 29
सेद्ध {	४७	54	सो मोद्भवा	३६	३२	स्तःबकरि	998	२१
सेना	908	96	(	े ३७	₹	स्तम्बघन	963	३५
सेनांग	900	3 3	स्रोगंधिक }	€ ₹	9 ६ ६	स्तक्बध्न	9 - 3	34
(	v	३९	(	. १२५	908	<b>स्तम्बे</b> रम	900	<b>,</b> 34
सेनानी {	408	६२	सौचिक	१२७	ę	स्तम्भ	१७२	934
सैनामुख	900	61	सौदामिनी	99	٩,	स्तव	<b>२</b> ३	99
सेनःरच	908	६१	सौघ	४१	90	स्तिमित	9४७	906
सेवक	ঙ	٩,	सौभागिनेय	७ ३	२४	स्तुन	986	990
सेवन	988	4	सौम्य {	93	२६	स्तुति	<del>.</del>	99
ससेवा	998	د ۾ لاء		१७५	989	स्तुतिपाठक	908	
सेव्य	६३	१६४	सौरभेय	998	٩o	स्तूप	996	९७
संहिक्य	98	२६	सौरभेथी	420	ં દ્	स्तेन		98
सैकत	3 3	9	सौरान्द्रिक	३१	90	स्तेम	925	१४
सैकतवाहिनी	36	इ३	सौरि	93	२६	स्तम स्तेय	१५३	२९
सैनिक	908	<b>É</b> 9	सीवचेल {	990	४३	स्तैन्य	१२९	<b>३ ५</b>
. (	903	88		926	908	स्तम्ब स्तोक	925	<b>२५</b>
सैन्धव {	990	४र	सौविद	984	٤		१४१	<b>ξ9</b>
4	908	ę٩	सौविदल्ल	१४५	6	स्तोत्र	२३	99
सैन्य {	. 908	96		४९	३७	स्तोम }	. <b>६</b> ८	, इंद
सैन्य५ष्ट	960	७९	सौवीर }	990	३९	. ६ इती	१७३	989
सैरम्ब्री	७२	96	(	953	900	क्रा स्त्रीधर्मिणी	Ę <b>S</b>	<b>ર</b>
सैरिक	920	६४	सौद्दित्य	998	५६		७२	२०
सैरिम	ÉR	٧	स्कन्द	v	३९	<b>ब्री</b> पुस	۶¢	રહે
सैरेयक	५३	७५	(	४५	90	स्त्र्यगार 	89	, 99
सोढ	986	90	स्कन्ध }्र	60	96	स्थंडिल 	59	96
सोदर्थ	. as	३४	(	१६७	900	स्थंडिलशायिन्	ं १४	8.8
सोन्माद	936		<del>र</del> कन्धशाखा	४५	١٩٩	स्थपति {	90	\$
सोपप्तव	9 5		<b>स्</b> कन्न	980	108	(	१६२	<b>६</b> 9
सोपान	. ४२		स्वलन	्र <b>३</b> ०	3 €	स्थल '	३८	
सोभांजन	. 86	39	स्खलित	390		स्थली	३८	<b>b</b>
स्रोम	. 98	1	स्तन	_ 60		स्थ <b>क्रि</b>	७५	£\$.
सोमपा	९०	7	स्तृतंथयी	ંહષ	89	स्थविष्ठ .	986	999
सोमपीथिन्	90		स्त्रनपा	94			Ę	· 38.
सोमराजी '	ष्ष	7	स्तनधित्तु	99 -	<b>i</b> g	स्थाणु } .	84	, ، ، ۶
		• 1		- 3	-4 I	ζ.	989	. 88

٠ ش										
शब्द.	Sa.	श्लोक.	शब्द.		gg.	श्लोक.	शब्द् _		<b>S</b> B	<b>र्</b> लोक
स्थांडिल	9.8	88	चु		४३	4	स्यन्दन •	<b>(</b>	४७	36
ENTE (	و ۾	५९	स्तुक		५६	964		L	305	48
स्थान {	958	११७	स्तुत		984		स्यन्दनारोह		98	Ęo
स्थानीय	80	9	स्तुषा		y o	و	स्यन्दिनी		ર, પ્	ई ७
<b>स्</b> थाने	900	99	सुही		५६	904	स्यन		380	९२
स्थापत्य	९ ७	٤	स्नेह		20		स्यूव {	•	994	२६
स्थापनी	48	४४	l	(	ξ¥	1			२०९	90
स्थामन्	990	905	स्पर्श	{	940	9 8	स्यूति		988	<b>'</b>
स्थायुक	९७	હ		č	9	<b>۾</b> ڊ	स्रोनाक		49	<b>પ્</b> તૃહ
स्थाल	२०२	32	स्पर्शन	}	९२	26	स्रसिन्		86	२८
स्थाली	998	३१	,	ć	9,6	93	स्रज्		66	9 3 %
स्थावर	988	७३	स्पर्श	{	962	२9४	स्रव	•	940	ď
स्थाविर	٠. د د	80	स्पष्ट	•	983	وع	सवद्गा		9:9	ĘS
स्थासक	[८६	922	स्पृक्का		لإرا	935	स्रवन्ती		<b>३</b> ६	३०
स्था <b>र</b> नु	988	७३	स्पृशी		ષ્ <b>ષ</b>	4.3	स्रवा		68	८३
	99	२६	स्पृष्टि स्पृष्टि		940	•	ম্বন্থ		فع	ه ر
स्थिति {	944	29	स्पृहा		, । १८	२७	स्रस्त		980.	908
स्थिरतर	१४३	७ ३	ध्य <sub>ट</sub>		940	9.8	स्र।क्		१८९	ं २
(	36	२	1			ę	स्रुत		१४५ ,	९२
स्थिरा {	५७	994	स्फटा		<b>₹9</b>		स्रुव		९२	24
स्थिरायु	५०	४६	स्फाति		988	٩	सुवावृत्त		४९	३७
स्थ्या {	939	تؤلا	स्फार		989	<b>६</b> ३	स्रोतस्	{	3 3	99
(28.01) S	969	५१	स्फिच्	_	€0	હલ્	1	(	१८५	६३३
19T.2F	989	ં ફ્રુડ	स्फुट	{	૪ૡ	9	स्रोतस्वती		3 <b>5</b>	३०
स्थूल {	969	₹०'≿		(	485	۹۶	स्रोतों ऽजन		984	900
स्थूललक्य	933	Ę	स्फुरण		940	90	₹ }		७४ १८२	३४ <b>२</b> ११
स्थूलश । टक	6	495	स्फुरणा		440	90	खच्छन्द		934	94
<b>स्</b> थूलोचय	908	986	स्फुलिङ्ग		9	, ખુ હ	ख्जन			३४
स्थेयस्	१४२	৬ ই	<b>स्कू</b> जेक		४९	३८	खतंत्र		934	'' ؋ ધ્
स्थीणेय	५९	932			. 93	90	Į.			•
स्थौरिन्	9०२	* 5	स्फेष्ठ		986	392	ख्या		950	ر ک د د د
स्यील्य	960	994	1_	5	469	وم	4		906	<b>6.8</b>
स्नव	940	٩	4 .	ζ	959	५७	<b>1</b> C.		१४	<b>२</b> २
स्नातक	, 58	8	क्राह्म		مع	्र २७	<b>X</b>		984	98
स्नान	r 6 <b>६</b>	923	4 .		Ę	- 13	खप्न		् <b>३</b> ०	, <b>3</b> €
स्नायु	۶ <u>۰</u>	6 6			: <b>२</b> ९	३४			. १३७	े इं
८मञ्ज	- 96	4.1 9.4	/ · ·	5	ं २९	, ६	I.		. <b>३</b> ०	₹<
स्निग्ध }	996	. 8	AGIN	1	१२	. 44			۔ نع	56
(	ું વેર્ષ	. 93		•	9	4.8	खयंवरा		, <b>v</b> o	'n

शब्द.	qg.	रंलोक '	शब्द.	22.	<b>र</b> लोक	शब्द.	gg.	खोक.
खयम्	959	9 \$	स्वेदज	980	५१	हरितक	924	\$8
खयंभू	4	98	स्वेदनी	998	३०	हरिताल	२०२	३२
Ś	ሄ	€	स्वैर	960	99.2	हरितालक	१२५	903
खर {	966	<b>३५४</b>	स्वैरिणी	७१	95	हरिदश्व	98	२९
खर {	२२	8	स्वैरिता	986	२	हरिद्रा	990	89
(	. ३५	٩	स्वैरिन्	१३५	94	हिन्द्राभ	२१	98
खर {	346	ده ۱. مو		ह		हरि <b>द्ध</b>	५६	909
	१७६ ३०	१६७ ३८	<b>ē</b>	969	Ŀ	हरिन्मीश	128	٩.٩
स्त्ररूप }	909	939	. (	ነሄ	39	हरिपिय	४९	४२
खर्ग	٧٠,	•	हंस }	६७	43	हरि <sup>भ्रिया</sup>	Ę	२७
स्वर्ण	928		_ (	_		हरिमंथक	998	96
खर्गकार	976	. 1	<b>ह</b> सक	८५	990	हरिवाछक	46	929
खर्याचीरी	٩o		हं <b>जिका</b>	48	८९	हरिहय	92	४३
खर्णदी	4	४९	हजे	२७	94	हरीतकी	49	48
खर्पातु खर्मातु	18	امد	हरू	956	९८	हरेण {	46	920
स्वर्वेश्या	6	49	<b>इ</b> ट्टविसासिनी	५९	9 \$0		998	२६
स्ववैद्य	· ·	49	इठ	990	906	हर्म्य	89	\$
	७३		इंडे	२७	94	हर्यज्ञ	६४	3
खर खस्ति		28	हत	१३९	४१	हर्ष	96	२४
खासा खस्तिक	9८६ <b>४९</b>	२४१ १०	हनु {	48	१३०	हर्षमा <b>ग्र</b>	938	ø
खाराक खक्षीय	७४		•	८२	80	हल	938	93
			हन्त	966	२४४	हला	२७	94
खाति	<b>२०३</b>		हन	986	9.6	हलायुध	ч	२३
खाडु	966		हय ======	१०२	• • •	हलाहल	<b>₹</b> 9	90
खाडुकंटक	્રિક ધ્યુષ્		हयपुच्छी ज्यापान	ę o	140	हलिन्	4	२४
,	• ••	1	हयमार <b>क</b> ≅र	५३	30	ह <b>स्तिप्रि</b> या	४९	३९
खादुरसा	€o !s€		हर =	90	36	हल्य	993	6
खाद्वी	<b>ν</b> ( <b>ξ</b>		हरण	900	२८	हल्या	948	89
खाच्याय	९५	४७	हरि } .	६४ १७७	904	हल्लक	३७	3 6
खान	₹४	२३			' '1	(	988	37
खान्त	99	39	इरिचन्दन }	6 6	५०	हव {	568	२०७
खाप	₹० •	\$4			989	-B }	<b>લ્</b> ર	२७
खापतेय	928	50	हरिया }	२० ६७	48	हविस् {	996	49
खामन्	138		```````	६५ १६१	49	हव्य	९२	२४
खाराज् (इ)		8.5	हरिणी	9 6 9	40	ह्व्यपाक	59	१२
खाहा }	<b>९</b> 9 <b>9९</b> 0	571	<b>हरित</b> {	•90	. 9	हव्यवाहन	6	96
स्वित्	960		(	986	98	<b>हं</b> स	. २७	96
ासत् स् <b>नेद</b>	- <b>३</b> ९	२४२	हरित {	२१	98	हसनी	196	३०
114	. 43	रर		984	98	<b>ध्यं</b> ती	1996	25

						1		
शब्द.	<b>я</b> в.	श्लोक.	शब्द.	5 <u>8</u> ,	श्लोक.	शब्द.	१ष्ठ.	श्वीक,
(	८२	८६	<b>हि</b> मवाञ्जका	<b>८७</b>	१३०	हेत्र	96	२८
<b>इस्त</b> }	८३	9.6	हिमसंहति	93	9'6	हेतुकूट	ęę	ş
(	१६२	७,९	हिमांशु	92	43	हेमदुग्ध	४७	२२
<b>हस्</b> तघारण	१४९	ىر	हिमानी	93	96	- (	928	९४
हस्तिन्	900	źx	हिमावती	Ęo	१३८	हिमन् {	999	२३
हस्तिनख	४२	90	(	१२८	९०	हेमन्त	90	96
हस्तिपक	<b>५६</b> २	५९	हिरण्य }	१२४	<b>\$ 9</b>	हेमपुष्पक	49	ξĘ
ह <b>स्</b> त्यारोह	908	५९	2	928	९४	हमपुष्पिका	48	9
हास्तिक	909	२५६	हिरज्यगर्भ	بر ج د	96	हेमाद्रि	6	४९
हाटक	928	85	हिरण्यवाह	<b>३</b> ६	₹ <b>४</b>	हेरम्ब	9	₹८
(	90	20	हिरण्यरेतस्	6	<i>५५</i>	हेला	28	३२
हायन {	966	906	हिरुक्	968	*	हेषा है हैम	902	४७
हार	966	२५६		968		100 g	968	•
हारीत	Şe	38	हिलमो चिका	६२	940	हैम	900	२२
हार्द	26	<b>રે</b> હ	ही	950	\$		( ,,	₹
हाला	939	३९	हीन {	986	900	हैमवती •	<b>)</b> ५१ ) ५६	५९ १०३
हालिक	120	Ę¥	l (	909	986		( 60	१३४
हाव	38		हुतभुक्षिया	<b>९</b> 9	29	हैथैगवीन	199 .	. ५२
		३२	हुतभुज्	6	, , ,	होतु	39	10
हास सरीचन	२७	9९	हुम् {	966	३५२	होस	९०	98
हास्तिक	909	٩	8,	999	96	होरा	954	40
हास्य }	<b>ર</b> ્હ	90	हूति }	२ <b>२</b> <b>१</b> ४९	٥	हथस्	968	٠ <b>२२</b>
	२७	99		-	- 1	हद हद	३५	24
हाहा	८२ १८८	<i>पु</i> २	हरू	8	,,,	हसिष्ठ	986	992
<b>8</b>	166 968	२५७ ५	हणीया	१५३	,,,	(	υĘ	•
हिसा	964	<b>२२</b> ९	हद. {	<b>5 S</b>	39	ह्रस्व {	982	<b>४६</b> ७०
हिंसाकर्मनू	949	99	}	७९ १९	६४ ३१	हस्वगवेधुका	५७	990
हिस्र	१३७	२८	हृदय {	७९		हस्वांग	Ę o	१४२
हिक् <b>का</b>	994	1	हृद्यंगम	२४	96	(	` 6	84
हिंगु		Ť	हृद्याछ	933			11	8
हिंगुली	990	<b>.</b>	ह्य	980	५३	हादिनी {	34	30
हिंगुनियां <b>स</b>	<b>40</b>	4.	<sup>हृप</sup> हषीक	२०	3	Ĺ	988	992
ाह्यानवास <b>हिज्</b> उल	49 49	<b>\$ 9</b>	ह <b>बीकेश</b>	<b>.</b>	96	ह्री	२८	२३
हिन्ता <b>ल</b>	६४		हुष्ट	980		ह्रीग्र	984	९१
-4 414	95		हष्टमानस	१३४	8	ह्यीत	984	9
हिम	13	90	E C	968	ال	हीवेर	46	929
· · · (	988	٠ ٦ .	(	9	لون	हेषा	908	819
हिमवत्	४३	: R	हेति {	988	ogli	हादिनी	4,6	१२४

इत्यमरकोशशब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।

# नम्र∸निवेदन.

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रण तथा पूफ संशोधन सम्बन्धी श्रनेक श्रुटियों रह गई है जिन्हें सखेद स्वीकार करते हुये हम श्रपने विज्ञ पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि श्रागामी सस्वरण में उक्त सुटियोंका निराकरण कर दिया जायगा। श्राशा है पाठकवुन्द निम्नांकित शुद्धाशुद्धि-पत्रके श्रनुसार श्रशुद्धियोंको यथा स्थान सुधार छेने की कृपा करेगे।

## निवेदक-खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई

ુ. વૃ. નં.	पं. नं•	শ্বয়ুদ্	ग्रद	g.	पं	श्रगुद्ध	ग्रद
₹,	3•	शोचिस	शोचिस्	ی.	٤٤	घोड़,	घोडे
4,	99	₹,	ने	6	98	मिदुर,	<b>मिं</b> दुर
"	93	इेंग,	ज्ञेयं	"	<b>२</b> ९	ह,	Lyno.
"	२२	<b>द</b> द <sup>्</sup> पि,	्र ददाति	77,	४४	वहुष्व	वहुष्व
77	२३	वस्य । ५, विवपू ,	क्विप् क्विप्	"	५५	पावकोञ्नलः,	पावकोऽनत्तः
			नपुंस्क	"	عها. إ	रपत्त,	, रिप्फ्त
ş,	98	नपूंसक,		٩	90	सज्बरः,	संजव्रः
"	२५	स्रोलिग,	<b>ज</b> िल्ंग	,,	२२	निकप।त्मजः,	निकषात्मजः,
₹,	٩₹,	शब्दी,	शब्दी'	"	२३	पुण्यजना,	पुण्यजनो
"	14,	<u> </u>	₹,	"	२९	प्रवेतो	ं प्रचेता
77	<b>६</b> 9	केव,	केवल	٩,	३२	श्रद्यति,	श्रपति
٧,	•	शब्दोका,	शब्दोका	"	५९	श्रवसंचित,	<b>अंविल</b> म्बित
77	36	मुंमनस,	<b>सु</b> मनस	17 ,	६६	निमरम् ,	नि <b>भर</b> म्
רל,	Ęe	पूर्वे,	पूर्व,	90	.۶۰	चत्रस्य 🏲	, चैत्रर्थ
4	96	, श्रकवन्धु,	श्चकंबन्धु	1,	२४	स्यानका,	स्थानका
י וכ	95	परयेष्ठी,	परमेश्ची,	19	, ` <u> </u>	₹,	
Ę	v	स्वा,	स्या,	"	' فری	<b>गु</b> श्च,	्रे सुष
"	90	आहरि,	श्रीहुँरि	98	<b>3</b> 9	नच्चेत्रंशः,	नस्त्रेशः
"	13	शंखी,	शंखो	٠ ااد	₹ <b>७</b>	28, 11	94
27	44	स्याणु,	स्थांणु	3 <b>31</b> ,2	४६	#賴夏	र्श्वव
413	, <b>4 3</b> 2	, पाषदी र	पार्षद्रों,	.93	५९	विष्रग्र	् <b>धिष</b> श्च
Ų,	\$	- ,मा,	प्राप्ति	13.7	9	सिहिक्यो	सेंहिकेयो
??	. 99	कृत्यायनी,	, कात्यायनी	775	*	स <b>हिकें</b> य	सेंहिकेय

g.	<b>પે</b> .	भग्नेद	<b>छद</b>	g.	<b>4.</b>	পহুৱ	<b>ग्र</b> ब
"	५७	तिदीप्तयः	<b>यु</b> तिदीमयः	,,	48	হি <b>ষি</b> त	दि:जित
"	ĘĘ	थोड	थोडे	२५	98	प्रतिश्र <b>त्</b>	प्रतिश्रुत्
94	२७	पर	परा	"	२६	<b>प</b> डू जं	षड्ज
77	४२	विता	न्विता	"	३०	षड्ज	षइ्ज
۹٤,	90	सोपह्रवी	सोपश्चवो	"	३०	ऋषम	ऋषभ
90	٧٩	उष्मा,	कष्मा,	२६	38 64	नर्तनं	नर्तने
١٥,	Ę	सवर्तः	संवर्तः	70	६५	प्रतिभय	प्रतिभयं
"	88	दिष्ट	दिष्टं	२८	₹0	· भसूच्या_	<b>अ</b> सू चेंगा
"	45	निदान	निदानं	२९	90	•यव	ध्यव
15	(पारंभमें)	षीवर्गः	धीवर्गः	>>	٧o	कुद्नम्	कूर्वनम्
**	•	पथ	पृथ	,7	६६	जम्भूग	<b>स्भ</b> ण
<b>)</b> )	<b>₹</b> 1	सदेहा	सदेह	३०	Ę	<b>बुटश्रो</b>	<b>घु</b> टनी
<b>39</b> ′	५६	ग्रन्यत्र	मन्यत्र	"	6	इत्यापि	इत्यपि
₹0	29	विमद्दिये	विमर्देत्थे	>>	93	প্रকৃতি	भूकुटि
33	२८	शर्वलै	शवले	"	90	कर	पूर
",	३७	शब्दा	शब्दा	"	96	ससिद्धि	संसिद्धि
"	43	न्बिता	न्विता	77	३५	निव्यर्थनं	निष्यर्थन
88	90	षुरार्ग	पुराग्रां			वपां	वपा
,,	<b>!</b> }	किया	किया	**	५०	श्रवतमसू	् अवतमम्
<b>&gt;</b> 7	2)	उसक	डसके	**	<b>६</b> 9	18	٧ -
**	89	भारव्याह	आरव्याहे	**	ξŞ	गोनस्	गोमस
3)	88	पुंकारने	पुकृत्तने	19	98	गूडपा	गूडपा
\$\$	v	शब्द:	शध्द:	77	११	दीध	दीर्घ
37	6	হাতই	. शब्द	7)	89	<b>জা</b> ক্	<sup>'</sup> জাঁযু
<b>33</b>	10	वरासू	थशस्	77	48	तदू	तद्
**	§0	बादः	बादः	38	५८	<b>ভা</b> ৰক	जानेक
7)	ЯA	31	18	35	99	जलोछवासाः	जलोछ्वासाः
*	**	सम्बद्	सम्यक्	77	95	नीताय	मीतार्थ
37	*	44	पक्ष	<b>3)</b> '	41	<b>बॉयाजिक</b>	स्रोयात्रिक
~			•	l			And 4 Miles 64, 46

g.	<b>પં</b> .	<b>भ</b> शुद्ध	भुद	ુ છું. પં	महाद	इद
3.5	<b>\$</b> }	तीनों	<b>तीनों</b>	" 86	₹6	45
36	43	चन्द्रभामा	चन्द्रभागा	, 12 É A	दुण्डकः	पुष्ट्क:
36	४६	वर्षे	वर्षे	ધુષ્ટ ૧	चीतके	<b>बी</b> तेके
४०	4	पदीतिः	पदीति	,, €	विकरिया	विकीर <b>या</b>
**	२०	चतुष्पश्	- अपथ	,, ¥\$	प्रत्यक्छणी	प्रत्यकूछेगी
"	४३	षू:	पूः	५५ १९	निदिन्धिका	निदिग्विक
*9	३५	नित्रघः	निलय:	<i>५६</i> ३७	कुमिन्त	क्रुमिन्न
**	**	<b>?</b> ?	२ उद्यान	J) J2	बिडङ्ग	विडन
"	Ę¥	<b>बु</b> ब्यात्	पुष्पात्	५९ ५१	सीमशा	लोमशा
४५	4	युष्पा	<b>यु</b> ब्दा	<b>،</b> , ﴿ الرَّاءِ الرّ	रवती	रजाती
22	३४	वीरुदू	वीरुद्	६० ३५	म्लोग्रिका	म्ललो <b>याका</b>
"	४२	स्यान्गूला	स्यान्मूला	६१ ७	तूत्रनन्भा	तूप्रगन्धा
75	३५	शलाढुः	शलाटु:	,, ४८	त्रयमाणा	त्रायमागा
"	४०	कुडूमल	कुड्मल	<b>६</b> ७ ६४	पुष्पतिष्ट्	पुष्पतिह
,,	४१	कुडूमल	कुड्मल	» (¢	षद्भद	षट्रपद
"	46	<b>धैंगूदं</b>	<b>भैंगुदं</b>	६८ २	षद्भपद	षद्भवद
*0	94	क्लीबे	क्लीवे	پ, ۶۰	विहायसः	विहायसाः
"	3 &	च्छारदो	शारदी	,, <b>६</b> ६	युग्मंतु	युग्संतु
77	"	विषमः	विषम	६९ ६४	ड <b>.</b> ड डरभूत	डरपो <b>क</b>
".	46	भद्र	भद्रे	७८ ५२	त्वग <b>स्</b> स्था	त्वगस्यग्धरा
४८	२७	गोचकाः	मोचकाः	<b>હ</b> લ ૪	पा	वपा
89	93	व्याघ्रपादू	<u>ष्याघ्रपाद्</u>		न। वर्म	यपा वर्षी
27	३०	वण्टा	घण्टा	,, 6464		-
"	३३	भावको	साइकी	८२ ५२	मलिक	मिल्निक
40	19	मृदुत्वचू	मृदुत्वच्	८४ हैडिंग	शश्रमरको	श्रमरकोश
"	२९ ६१	षडूप्रन्थो	षड्ग्र+थो फलके	,, 99	सध्वगः	मच्यगः
49	३२	<b>দ</b> ত্তক খিৰা	फलक शिवा	८५ ६२ ८६ ११	<b>ग्रह्म</b>	<b>वहा</b> -2-02-
1) "	₹₹ ₹८	स्या इसो			घोती <b>क</b>	घोतीके —
27	२८ ६८	द्रम्। ब्युक	हुमी पुष्पक	» ृ २३ »   ६३	भघो शिख	श्रर्धो
	و السدي	नागरकेसर	्नागकेसर -	y ₹₹	।शख गी <b>ष्यती</b>	शिखं गीव्यती

***************************************							
g. ;	۲.	श्रशुद्ध	ग्रद	ક	ď.	<b>স</b> ত্ত্	_ যুক্ত
<b>९</b> र	४३	विहापित	विहापितं	939	४४	श्राखेटा	श्राखेटी
: 80	४४	प्रतिपानम्	प्रतिपादनम्	,,,	હુવ	मीचकाः	मोषदाः
<b>લ્ફ</b>	98	मर्यार्थे	मर्चार्थे	930	२१	पृत्रिका	ं पुत्रिका
, ee 2,	79	निमिक्त	ृ निमित्त	19 ३२	93	त्रषार्थम्	तर्षग्रम्
دو يو	8	भ्रत्	् भद्धं	१३२	36	समाह्रयः	- समाह्यः
4"	4	- <b>सब रं</b>	सवनं	,,	,,	<b>य</b> तं	, वृतं
~ £	4	:••• स्ह	किर्णीच् नवतः	934	6	रध्र	गृध्सु
<u>"</u> .	५८	पृथ्बीका	पृथ्वीका	,,		स्तृध्याकृ	स्तृध्याक्
९७	99	महायात्राः	महामात्राः	936	२२	कमिला	कमिता
."	२३	रक्षितर्ग	रक्षिकर्ग	, ,,	٠,٠	विथेयो	विधेयो
194.	इ४	चगोऽर	चगोऽसर	१३७	9	वन्दार	र्वदा <b>र</b>
.55	98	उपघी	उपधा	"	३०	र्षिकासी	र्विकासी
72	४१	लभ	् <b>लभ्य</b>	१३९	२२	<b>भयद्रतः</b>	भयद्रुतः
903	ч	यक्या	कक्या	,,	३४	४२	४३
403	9	खलील	खलीन	980	५३	सेचतनक	सेचनकं
904	५०	नैकि शिको	नैक्षिशिको	989	90	करम	स्करम्
906	6	<b>८</b> पत्क	प्टबत्क	1	२९	श्रेयस	श्रेयस्
<i>ት</i>	88	चूरा	चूर्यो	,,,	₹6	श्रपधान	
999	95	विशसन	दि <b>शसनं</b>	, pp			श्रप्रधान
7>	"	मारग	मारगं	' १४२	५९	स् <b>व</b>	त्वप्र
")	२३	सङ्गपन	सङ्गपन	१४३	2	स्थेयसू	स्थेयस्
**	,,	निग्रन्थन	निर्प्रन्थन	**	४१	श्रन्वकू	अन्वक्
èo	२७	<b>क्थ</b> न	ऋथन	7>	४९	<b>ऽ</b> प्येकाप्रयानग	ग्टरोऽप्येकाय <b>न</b>
997 'ii	४६	बार्धुपि	बर्ग्धुवि	"	५९	पश्चिमा.	पश्चिमाः
**	४७	<b>कृ</b> षिबल	<b>कृ</b> षीबल	१४४	90	ल क्पितम्	लम्बितम्
<b>,,</b>	do	<b>च्चत्रं</b>	क्षेत्रं	"	99	शीन्न	शीघ्र
"	<b>&gt;&gt;</b>	बहेय	वैह्य	"	93	प्रम	रर्भ
994	9 \$	<b>ब</b> हुली	<b>ब</b> हुली	93	94	बाघा	बाघा
930	₹9	मासंग्य	प्रासंग्य	' 29	२१	श्चपसन्य	सन्य
.979	98	सयोग	संयोग	"	३२	सकीर्णः	संकीर्ण
ņ,	**	ग्रभ -	गुर्भ	'n	३७	प्रथित	• प्रश्वित

g.	पं.	শ্বহ্যদ্র	হুত্ত	r.	q.	श्रगुद्ध	. গুৰু
), 22	,,	गक्ठे	गण्ठे	964	29	युक्तेऽपि	युक्तें <b>ऽ</b> ति
"	86	निष्ठयूता	निष्ठयूता	39	२५	संस्कार	संस्कार
"	५०	नुका	नुत्त	<i>&gt;&gt;</i>	<b>₹</b> ₹	बूत	पूत
,,	49	निष्ठचत	निष्ठधूत	"	48	शास्त्रोंसे	राष्ट्रींसे
984	२	रूपिते	रूषिते	950	२१	९३ े	9.6
985	٩	संदानित	संदानितं	,,	४८	दवेऽपि	दैवेऽपि
22	9,	<b>मुह्</b> त	मुह्तिं	१६८	३२	मूतात्मानी	भूतात्मानी
"	,,	संदित	सदित	१६९	94	सूय	सूर्वे
1>	99	निर्वात	निर्वाण	و ۱۹ م	ş	<b>उक्ष</b> भ	<b>उत्तम</b>
	<b>ર</b> ષ	श्रिष्ठित	श्रम्बत	<b>3</b> 2	8	विरोधा,	विरोध
,22 !			1	22	१४	स्त	सूत
<b>;</b> >	४०	ब्रिते २०	पूरिते	73	२८	वत्म -	<b>व</b> ट <b>र्म</b>
" <b>ያ</b> ሄቴ	५३ ४	वेघित चीर	वेधित चीरे	969	६२	गवैथे	गवैयेथे
	२६	वृतशाम <u>ू</u>	यार   वृवशाम्	908	96	युद्धापत्योः	युद्धायत्योः
"		•	`	**	४७	भूस्यन्व	भूम्न्यन्त
)) Ali D	<b>₹</b> ₹	प्राप्त <del>रिक्कार</del> े	प्राप्तं	904	9 §	मेद	मेद
943	३१	निराकारके	निराकरग्राके	916	٩٤	षीठाद्य	पीडा <b>च</b>
948	98	निष्ठयति	निश्चूति	!	 ૨૪	नीला	•योता •योता
"	"	निष्ठेवन	निष्ठेवन	99			
,,	३३	पूरियो	पूरियोंके	906	98	चित्रविचिव	चित्रविचित्रैं
946	<b>२</b>	सोभ	सोम	27	५२	दुग्थ	दुग्ध
,,	४२	शकर	शंकर	१७९	96	तीर्थोषधि	तीर्थीषधि
१६०	90	हति	इति	"	49	व्यास <b>कः</b>	व्याशक
,,	२८	सिहनाह	सिहनाद	963	99	स्वभामिवा	स्वभावाभि
"	५१	भग्र	भूण	,,	३८	<b>ब्रु</b> वी	<b>ध्रु</b> वो
168	86	- ਸੂ	<b>न</b> ृपे	१८३	v	निवशो	निर्वेशो
	५२		त्री <b>कु</b> सुमेऽपिच	"	<b>૪</b> ૧	<b>२२९</b>	<b>₹9</b> \$
" <b>ዓፍ</b> ξ	90	<sup>न</sup> हुतुः नहुतुः थेश		))	44	घृषम <del>किल्ल</del> ा	वृषम स्त्रियाम्
145			देश	१८४	2 e	श्चिमाम् ग=1	ग्ल्या <u>न्</u> प्रेत्ता
))	43	प्राह्नि इतौ	माप्ति	"	२६ ४ <b>५</b>	प्रचा वर्षी	नपी वर्षी
988	₹७ <b>*</b> ७	श्रतः निभितं	बुत्ती निमित्त	"	45 45	वपा <b>दिवोकस्</b>	दिवी <b>क</b> स्
1)	**	iન( <i>એ</i> .ટો	ाग <b>ग्र</b> त	"	43	124130	فهريديولاء

g.	पं•	श्रह्यद	<b>ग्रद</b>	į g.	प.	ऋगुद्ध	<b>ग्रद</b>
964	२	सप	सर्प	<b>*</b>	92	कहेंगे	कहेंगे
"	99	ज्योतिसृ	ज्योतिम्	,,	२४	গস	शत्रु
"	90	श्रागसू	श्चागस्	"	३२	बाह्यो	बाह्वी
,,	२४	बुष्पे	पुष्पे	"	ξĘ	सम्मव	सम्भव
27	२९	एथा	तथा	"	88	प्राकू	प्राक्
33	<b>₹</b> 9	छन्दसू	इन्दसू	१९७	-	देह लीदी	देहलीदी
966	8	कनीयसू	कनीयस्	33	ξv	सोमकान्तः	सोमकान्त
9>	५४	प्रगृह्य:	प्रगृह्य:	986	4	खो *	<b>पुं</b> खो
960	4	बितर्के:	बितकें	१९६,	७ ४३	पूर्वीपर	पूर्वीपर
966	४९	प्राहुसू	प्रादुस्	,, 200	०२ ७	न्यश्चन पात्र	व्य <b>ज</b> न
"	५३	तिरसू	तिरस्	; ,,	98	पान एकार्य	पात्रं एकार्थ
950	•	श्रीषद्व	श्रीषद	) // >>	26	षा णिपादं	एकाव पास्मिपादं
"	b	वौषद्व	वौषद	"	४२	दार्स मृहं	दासी गृहे
"	34	श्रन्तरण	श्रन्तरेगा	,,	88	दासीसभ	दासीस <b>भं</b>
23	३८	युक्तद्व	युक्तेद्वे	२०३	¥	वर्ममें	वर्गमें
22	४५	शब्ब	शब्द	"	२१	पुमानू	पुमान्
199	97	र्वेवे	वैंवे	"	२४	षद्भपद	षद्भवद
23	90	<b>भ</b> त	भूत	२०५	6	দ্বি <b>জা</b> খ	द्विजार्थं
<b>29</b>	<b>२</b> ९	नीवैसू	नीचैम्	22 D = 6	÷.	सर्वनाम	सर्वनाम
993	२५	एकाच्	एकाच्	२०६	<b>4</b> 9	रागत्	रागात्
168	<b>₹</b>	<b>द्य</b> चू	<b>बुच्</b>	;	99	यत सज्जना	यत्
"	98	ण्डुचू	<b>श</b> ुच्	•	२६	उन्नः	संहका उन्नै:
996	ч	स्त्रियाम्	स्त्रियाम्	"	३९	लिगा	िंग ।

इति ग्रुमम्।

# अथामरकोशः

## भाषाटीकासमेतः।

### प्रथमं काण्डम् १.

### ग्रय स्वर्गवर्गः १.

यस्य ज्ञानद्यासिन्धोरगाधस्यानया गुणाः । सेन्यतामच्यो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १॥

यस्य भाषा जगद्भाति सदैव सचराचरम् । तं नौमि परमारमानं भक्तानामभयद्वरम् ॥ १ ॥ जटा-द्वीगलद्भंगं चन्द्रच्डामंणि शिवम् । स्मृत्वामरक्षतेः क्वर्वे भाषां व्याख्यासुधानुगाम् ॥ २ ॥

श्चन्द्वयः-हं अनवाः ! भवद्भिः, सः, अन्तयः, श्रीराः, + श्रिये, च, असृताय, च, सेव्यताम् । श्चानद्यासिन्धोः, अगाधस्य, अस्य, ई, अस्ति, श्रणाः, च, सन्ति ॥ १ ॥

द्धार्थ:—हे सज्जने ! तुम उस श्रविनाशी ज्ञान-दाता गुरुष्टी मोग श्रीर मोक्षकी प्राप्ति होनेके अर्थ सेवा करो, जो शास्त्रकरके संपन्न श्रीर दयाकरके पूर्ण तथा विषयोंसे विरक्त हैं, ऐसे इनके गुरुके पास श्रवण्ड सक्ष्मी श्रीर सत्य, शीच, दया, द्वमा श्रादिक गुर्या हैं॥ १॥

प्रथमें क्कन्य विषय दिखलाते हैं:-

समाह्यान्यतन्त्राणि संक्षितः प्रति-संस्कृतेः। सम्पूर्णमुच्यते वर्गेनांमिछिङ्गा-मुशासनम्॥ २॥ अन्वयः-मया, श्रन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षितेः, प्रतिसंस्कृतैः, वर्गेः, युक्तम्, नामर्लिगा-वृशासनं, सम्पूर्णम्, उच्यते ॥ २ ॥

स्रथः—में व्याडि श्रादिकोंके नामिल हानुशासन अथवा सिद्धांतोंका संग्रह करके शब्दोंके कमानुसार कथन करनेसे सुशोभित ऐसे थोड़े २ शब्दोंके वर्गों से श्रायात पृथक् २ प्रकरणोंसे युक्त ऐसा शब्द श्रोर उनके लिंगोंका स्पष्ट रीतिसे बोध करनेवाला कोश परिपूर्ण रीतिसे कहता हूँ ॥ २ ॥

इस प्रथमें लिंगादिन्यवस्था किस प्रकारसे की है वह कहते है:—

प्रायशो रूपभेदैन साहचर्याच कुन-चित् । स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

ग्रन्वयः - श्रत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, श्रीपुंन-पुंसक, हेयम्; च कुत्रचित्, साहचर्यात्, श्रीपुंन-पुंसकं हेयम्; कचित्, तिद्विशेषविधेः, श्रीपुंनपुंसक हेयम् ॥ ३॥

श्रर्थः-इस प्रंथमें बहुत करके रूप, आप विसर्ग श्रोर श्रानुस्तार इनसे श्रीलिंग, पुँक्षिंग श्रोर नपुँसकर्लिंग जानना, जैसे—'पद्मालया' श्रोर 'पद्मा' यह श्रीलिंक हैं । 'पिनाकोऽजगर्व श्राप्र' पिनाकः' यहांपर विसर्ग हैं इससे 'पिनाक' शब्द पुँक्षिक हैं । 'श्राजगव' श्राप्र स्थान श्राप्र स्थान स्थान सर्वनामवासक श्राप्त स्थान स्थान सर्वनामवासक श्राप्त स्थान 
<sup>+</sup> धिंच राति ददापि । 'रा दाने ' श्रस्मात् क्वियु । बीरो ज्ञानपदो गुरुस्तियधः ।

अर्थात्-झानके देनेवाले गुरुको धीर कहते हैं।

भेदसे लिगोमें भेद होता है, जैसा-'तत्परो हनः' यहांपर 'तत्परः' इस विशेषणका पुॅळिगरूप होनेसे उसका विशेष्य जो 'हनु' शब्द है उसका भी पुॅल्लिगहीमे रूप चलता है तथा 'कुतू:कृत्ते:स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान्' यहां 'सा' यह जो सर्व-नामसंज्ञक शब्द है वह 'कुत्' शब्दका विशेषणा है इससे 'सा' इसका स्त्रीलिंग होनेसे <sup>ह</sup>उसका विशेष्य जो 'कुत्' शब्द है उसका भी स्त्रीलिंग है, श्रौर निश्चित है लिग जिसका ऐसा शब्द समीप उचारगा करनेसे उसका जो लिग है वही लिग उस समीप पढ़े हुए अनिश्चित लिगवाले शब्दका जानना, जैसे 'श्रश्वयुगश्विनी' 'भानुः करः' 'वियद्वि-**ण्णुपदम्'** यहांपर ' श्रश्वयुज्' 'भानु' श्रोर 'वियद्' इन श्रनिश्चित लिगवाले शब्दों के समीप निश्चित लिगवाले 'श्रश्विनी' 'कर' श्रौर 'विष्णुपद' ये शब्द होनेसे उनके जो लिग हैं वे ही लिग उन अनिहिचत लिगवाले शब्दोंके जानने ऋर्थात् 'श्रम्युज्' शब्दका स्त्रीलिग, 'भानु'--शब्दका पुँक्षिग और 'वियद्' शब्दका नपूँसक लिंग है, इस प्रकारसे जानने । श्रीर कहीं कहींपर उन स्त्री, पुम्, मपुंसक इनके विशेषरीतिसे कथन करनेसे स्त्रीलिंग, पुँहिंग और नपुंसकलिंग जानना. जैसे 'भेरी स्त्री दुन्द्भिः पुमान्' 'रोविः शोचिरुमे क्लीबे' यहां पर मेरी शब्दके समीप 'स्नी' ऐसा विशेषरीतिसे कथन किया है इसवास्ते 'भेरी' यह शब्द स्त्रोलिंग है श्रीर 'दुन्दुभि' शब्दके समीप 'पुमान्' कथन करनेसे 'दुन्दुभि' शब्द पुंक्लिग है और 'गेचिस्' शोचिस्' शब्दोंके समीप 'उसे क्लीवें' श्रयति दोनों भी नपुंसक यह विशेष करनेसे रोचि-स्' श्रोर 'शोचिस' ये शब्द नष्टंसकलिंग हैं, इस प्रकारसे संवीत्र जानना ॥ ३॥

भेदाख्यानाय न दन्द्रो नैकशेषो न संकरः। कृतोऽत्र भिन्न्छिगाना-मनुक्तानां क्रमाहते॥ ४॥

भन्वयः—अत्र, अनुकानां, भित्रतिहानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः, एकशेषः, न, कृतः, क्रमात्, ऋते, संकरः, न, कृतः ॥ ४॥ भर्यः—इस कोशमें अपने अपने प्रकारने उन्ह

ं **धर्यः**—इस कोशमें अपने अपने पर्यायोमे नहीं षढे हुए भिन्न २ लि**ज**नाले शब्दोंका लिज्जमेंद कहने

के अर्थ द्वन्द्व और एकशेष नहीं किया है, जैसे-'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं 'देवत' शब्द नपुंसक-लिझ है और 'श्रमर' शब्द पुहिंग है, इन भिन्न-भिन्न लिगवाले 'देवता' 'देवत' और 'श्रमर' शब्दों का लिगभेद कहनेके ऋर्थ 'देवतादेवतामराः' ऐसा द्वन्द्रसमास नहीं किया है. द्वन्द्वसमास किया जाय तो 'श्रमर' शब्दका पुॅलिंग ही 'देवता' श्रोर 'देवत इनका होजायगा.कारण द्वन्द्<u>वसमास</u>मे श्रीर तत्पुरुषमें परपदका ही लिंड होता है. वह यहांपर परपद लिंड जो 'त्रमर' शब्दका पुँक्षिक है सी 'देवता' श्रीर 'देवत' शब्दका नहीं होनेके वास्ते द्वन्द्व समास नहीं किया ऐसा सर्वत्र जानना. ऐसे ही 'नभः खं श्रावर्णो नभाः' यहां पर 'श्रश्रावर्णो त नमसी' ऐसा 'नभसी' इस प्रकारका एकशेष भी नहीं किया यदि 'नभाश्र नभश्र नभसी' ऐसा एकशेष करनेसे 'नमसी'यह नपुँसकलिङ्ग शेष रहेगा फिर आकाश-वाचक 'नमस्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होगा परन्तु श्रावरावाचक 'नभसू' शब्द पुँक्लिक है ऐसा नहीं जाना जायगा, इस वास्ते ' खं नभः' श्रीर 'श्राव-गो नभाः' ऐसा पृथक् २ 'नभस्' शब्द कहा है, लिइभेद समझनेके लिये एकशेष 'नभसी' ऐसा नहीं किया, परन्तु ससाव लिङ्गोका तो द्वन्द्रसमास किया ही हैं. जैसे-'स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः' 'पादा रद्म्याघतुर्योशाः' यहां पर एक लिङ्गके ही सब शब्द है, इस वास्ते उनका द्वन्द्व समास किया हें श्रीर जिन शब्दोंके पर्यायशब्द श्रीर लिक्क स्व-तन्त्रतासे अन्य स्थलोंमें कहे हैं, उससे अन्यत्र जो उस भिन्नलिङ्ग राब्दोंका किसी श्रर्थान्तरके अर्थ कथन करनेके लिये द्वन्द्वसमास किया है, जैसे-विद्याधराप्सरोयचरचोगन्धर्वकित्रराः' माताकारी पितरो वहां पर 'अप्सरस्' शब्द अपने पर्याधो 'क्रिया बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः' यहां ही स्त्रीलिङ्ग है ऐसा कहा है, उसी 'श्रप्सरस्' शब्द को देवयोनिमे परिगगानरूप ऋर्थके लिये विद्याधर श्रादिक गणोमे पठित किया है श्रीर 'विद्याधर-'श्रप्सरस्' 'यत्त' 'रक्षस्' 'गन्धर्व' 'किन्नर' इन सब शब्दोंका द्वन्द्व समास किया है, श्रव यहां पर यव्पि सर्वशब्दोका द्वन्द्वसमास होनेसे 'विद्याधरा-प्सरीयक्षरस्त्रोगन्धर्वकित्रराः' ऐसा पुंक्षिक रूप बना

है तो भी 'ऋप्सरस्' यहां पर कथन करनेके अनु-सार स्त्रीतिङ्ग ही है ऐसा समसना श्रीर 'मातापित-री पितरी' यहां पर 'पितरी' इसमें 'मातृ' श्रीर 'पितृ' ऐसे दोनों शब्दोंका एकवद्भाव किया गया है, इसमें 'माल' और 'पिलु' इनमेसे 'पिलु' इस शब्दको 'मातृ' 'पितृ' इन दोनो'का वाचकत्व होने से भी उसके अन्तर्गत यद्यपि 'मातृ' यह शब्द शुब्द वह 'मातृ' है तथापि प्रसूर्माता' इस स्थलमें पर्यायशब्दों के स्त्रीलिङ्ग पठित है इस वास्ते उस 'पितरी' इसके अन्तर्गत 'मातृ' शब्दका स्त्रीलिङ्ग ही है ऐसा जानना । श्रीर इस कोषमें उन भिन्न भिन्न लिक्क वाले शब्दोंका कम छोड़के मित्र २ लिइवाले शब्दोंमें संकर किहेंचे मिश्रगा नहीं किया हैं. जैसे-'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिन्तिः' यहां पर 'स्तव' ऐसा पंलिङ कहा, फिर 'स्तोत्रं' यह नपुंसकलिंग कहा, फिर 'स्तुतिः' 'तुतिः' वे स्त्रीलिंग शब्द कहे हैं 'स्तुतिः स्तोत्रः स्तवो नुतिः' ऐसा लिङ्गोका मिश्रग्रह्म संकर नहीं किया है ऐसा ही 'जनुर्जन-नजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्धवः' यहांपर 'जनुर्जनन-जन्मानि' ये नपुंसक शब्द कहे, फिर 'जनिः' 'उत्पत्ति' ये स्त्रीलिंग शब्द कहे, फिर 'उद्भवः' यह पुलिगशब्द कहा। इस प्रकार से सर्वत्र लिग विषयमें जानना ॥ ४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति । निषिद्धिलगं शेषार्थं त्वन्ता-श्रादि न पूर्वभाक् ॥५ ॥

अन्वयः-त्रिलिङ्गाम्, त्रिषु, इति, पदम्, क्रेयम्, मिथुने, तु, द्वयोः, इतिपदम्, क्रेयम्, निषद्धिलङ्गम्, रोषार्थम्, क्रेयम्, त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, इति ज्ञेयम्॥ ५॥

सर्थ:-इस अथमे जहांपर कोई शब्द तीनों लिगोमें चलता हो वह 'तिषु' ऐसा पद कथन किया है सो जानना, जैसे—'त्रिष्ठ स्फुलिगोऽप्रिक्साः' यहांपर 'स्फुलिग' शब्द तीनों लिगोमें होता है इसवास्ते उस 'स्फुलिक्र' शब्दके समीप 'त्रिष्ठ' यह पद कथन किया है. श्रोर जहांपर सीलिंग और प्रुंलिक्र इन दोनों लिगोमें कोई शब्द होता हो तो वहा 'द्वयोः' ऐसा पद कथन किया

है सो जानना, जैसे-'द्वयोज्वांलक्कीली' यहांपर 'ज्वाल' और 'कील' ये दोनों शब्द पुँछिङ स्रीर स्त्रीलिंग हैं इस वास्ते 'द्वयोः' ऐसा कथन किया है। 'द्वयोः' यह केवल द्विशब्दका उपलक्षण हैं अर्थात् किसी भी तरहसे द्वि--शब्दका जहांकर प्रयोग होगा वहां स्त्रीलिंग श्रीर पुँक्षिङ्ग जाननाः जैसे--'द्विहीनं प्रसवे सर्वम्' श्रीर 'द्वयहीने कुकुन्दरे' इत्यादिक स्थलमें द्वि शब्दसे स्त्रीलिंग स्त्रीर पुँक्तिंग ऐसा अर्थ करनेसे प्रसव-वाचक जितने शब्द 'हैं "वे सर्व स्त्री लिंग श्रीर पुँक्लिंगसे रहित हैं श्रश्नीत् नपंसकलिग है श्रीर क़क़न्दर-शब्द द्रय-कहिये स्त्रीलिंग और पुँक्लिंग इनसे रहित है अर्थात् 'नर्फ़-सकलिंग है ऐसा जानना. तथा जिस शब्दका जौ लिंग निषिद्ध किया हो उसके अतिरिक्त बांकी रहाँ लिंग उस शब्दका जानना. जैसे 'वंज्रमस्त्री' यहाँ-पर 'वज्र' यह शब्द 'ऋत्री' कहिये क्लीलिंग नहीं है, इससे 'वज़' शब्दको स्त्रीलिगत्वका निषेध होनेपर बाकी रहे पुँक्षिग श्रीर नपुंसकर्लिंग इस 'वज्र' शब्दके हैं ऐसा जानना श्रीर जहां जिसं शब्दके पीछे 'त्र' यह शब्द हो वहां उस त्र-शब्द के प्रथम जो शब्द हो उसका पर्यायवाचक शब्द केवल उस त-शब्दके पीछे पढ़ा हुआ ही शब्द होता है, उससे पहला शब्द उस 'तु' के पहले पंठित किये शब्दका पर्यायवाचक शब्द नहीं होता है, जैसे-- 'नगरी' 'त्वमरावती' यहांपर 'तु' वह जी शब्द पठन किया है इसके पूर्व पठित जो 'नगरी' शब्द है उसका पर्यायऋर्यबोधक शब्द 'ऋमरावंती' यह है इस तु-शब्दके कथन करनेसे 'नगरी' इसका सम्बन्ध 'श्रमरावती' इसमें होता है उस 'नगरी' शब्दके प्रथम पठित 'इन्द्राणी' शब्दमें नहीं होता है यह 'तु' अन्तमं जिसके है ऐसे नामपदकी व्यवस्था कही श्रव इसी प्रकारसे 'तु' जिसके अन्तमे हैं ऐसा लिगवाचक पद सर्वनाम-संज्ञक पद और अव्ययसंज्ञक पद इन पदोंका भी सम्बन्ध उस तु-शब्दके पीछे पढे हुए शब्दमें ही होता है, जैसे पुसि त्वन्तर्धिः यहा 'पुंसि' इस लिगवाचक पदका अन्तर्धिः इस पदमें संबन्ध हुआ और 'तस्य त प्रिया' यहा 'तस्य' इस सर्वनाम-संज्ञक पदका त-शब्दके पीछे पठित प्रिया-शब्दमें

सम्बन्ध हुआ श्रोर 'वा तु पुंसि' यहापर 'वा' इस **प**न्यय्संज्ञक पदका तु-शब्दके पीछे पठित 'पुंसि' इसमें सम्बन्ध हुआ, इस प्रकारसे सर्वत्र तु-शब्दके विषयमें जानना । श्रीर इस कोशमे जहांपर जिन शब्दों के प्रथम '<u>अथ</u>' यह शब्द हो वहां उस अथ-शब्दके पीछे पठित नामपद, लिगपद, सर्वनामपद और श्रव्ययपद इनका सम्बन्ध उस श्रथ-के प्रथम पठित शब्दोमें नहीं होता है । उन श्रथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोका सम्बन्ध श्रथ-शब्दके पीछे पठित शब्दोमें ही होता है जैसे-- 'जवोऽथ शीघ्रं ,त्वरितम्' यहांपर श्रथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका सम्बन्ध उस ऋथ-के प्रथम प्रित **अव-**शब्दमें नहीं होता है कितु अथ-शब्दके पीछे पठित 'शीघ्र' इस नामपदका सम्बन्ध उस श्रथ— शब्दके पीछे पठित 'त्वरितम्' 'लघु' 'क्षिप्रम्' 'अरम्' 'द्रुतम्' इन शब्दों में होता है। ऐसे ही 'शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये' यहांपर श्रथ-शब्द्के पीछे पटिन्न 'त्रिषु' इस लिगवाचक पदका द्रव्यवाचक पाप, पुण्य, सुख आदिक पदोमें सम्बन्ध होता है उस अथ-के प्रथम पठित 'शस्तं' इसमें सम्बन्ध बहीं होता है. श्रव जहां श्रथ-शब्दके बदलेमें कहीं कहीं श्रथो-शब्द कहा हो वहां भी इसी प्रकारकी व्यवस्था जाननी. जैसे-- 'श्रनुक्रोशोऽप्यथो हसः' बहांपर श्रथो इस शब्दके पीछे पठित 'हस' इस बामपदका सम्बन्ध उनके पीछे पठित 'हास' 'हास्य' इन शब्दोंमे होता है. उस श्रथो-शब्दके ष्यम पठित अनुक्रोश-शब्दमे नहीं होता है । इस प्रकारसे व्यवस्था इस कोशमें की हैं, सो जिज्ञास . भनोंको जाननी चाहिये॥ ५॥

इति परिभाषा ॥

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिद्शालयाः। 'सुरालोको धोदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिवि-'ष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गके नाम ९-खर् १ खर्ग २ नाक ३ त्रिदिव ४: त्रिदशालय ५ सुरलोक ६ वो ७ दिव् ८ त्रिवि-१ष्टप ९ ॥ ६ ॥ ग्रमरा निर्जरा दैवासिद्शा विद्धधाः सुराः । सुपर्वाणः सुमनसिद्धिदेवेशा दिवौकसः ॥७॥ आदितेया दिविषदो लेखा ग्रदितिनन्दनाः । ग्रादित्या ऋभः वोऽस्वप्ना ग्रमत्यां श्रमृतान्धसः ॥८॥ बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गोर्वाणा दानवा-रयः । वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवता-स्वियाम् ॥९॥

देवता ओं के नाम २६—अमर १ निर्जर २ देव ३ त्रिदश ४ विबुध ५ सुर ६ सुपर्वन् ७ सुमनस् ८ त्रिदिवेश ९ दिवोकस् १०॥ ७॥ आदितेय ११ दिविषद् १२ लेख १३ आदितिनन्दन १४ आदित्य १५ ऋभु १६ अस्त्य- १७ अमर्त्य १८ अमृतान्धस् १९॥ ८॥ बर्हिर्मुख २० कृतुभुष २१ गीर्वास २२ दानवारि २३ वृन्दारक २४ देवत २५ देवता २६॥ ९॥

ग्रादित्यिश्ववसवस्तुषिताभास्वरा-निलाः । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गण्डदेवताः ॥ १० ॥

ग्यादेवताश्रोके नाम ९—श्रादित्य (बारह) १ विश्व (तेरह) २ वसु (श्राठ) ३ तुषित (हत्तिस) ४ श्रामास्वर (चौसठ) ५ श्रानित (उनश्रास) ६ महाराजिक (दो सौ वीस) ७ साध्य (बारह) ८ छर (ग्यारह) ९ ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरोयसरक्षोगन्धर्वकिन्नसः पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भृतोऽमी देव-योनयः ॥ ११ ॥

देवताश्चोंकी जातिके भेद १०---विद्याघर १ अप्सरस् २ यद्ध ३ रक्षस् ४ गैवर्न ५ किन्नर ६ पिशाच ७ गुद्धक ८ सिद्ध ९ भूत १०॥ १९॥

श्रसुरा दैत्यदैतेयदतुजेन्द्रारिदानवाः। े शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुर-द्विषः॥ १२ ॥

दैत्यों के नाम १० अधुर १ दैत्य २ दैतेय ३ दनुज ४ इन्द्रारि ५ दानव ६ शुक्रशिष्य ७ दिति-धुत ८ पूर्वदेव ९ धुरद्विष १०॥ १२॥ सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्म्मराजस्तथा-गतः। समन्तभद्रो भगवान्मारिजिङ्कोकिजि-जिजनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो दशबळोऽ द्यवादी विनायकः । सुनीन्द्रः भीघनः गास्तासुनिः—

बुद्धके नाम १८-सर्वज्ञ १ सुगत २ बुद्ध ३ धर्मराज ४ तथागत ५ समन्तभद्र ६ भगवत् ७ भारजित् ८ लोकजित् ९ जिन १० ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ ११ दशबल १२ श्रद्धयवादिन् १३ विना-षक १४ मुनीन्द्र १५ श्रीघन १६ शास्तु १७ मुनि १८॥-

—शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिद्धः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः। गौतमश्चाकवन्धुश्च मायादेषीसुतश्च सः॥ १५ ।

शाक्यसिंहके नाम ७-शाक्यमुनि १॥ १४॥ शाक्यसिंह २ सर्वार्थसिद्ध ३ शोद्धोदनि ४ गीतम ५ अकबन्ध ६ मायादेवीस्त ७॥ १५॥

ब्रह्मात्मम्: सुरज्येष्टः परयेष्ठी पिता-महः। हिरण्यगर्भो छोकेशः स्वयंभश्चतु-राननः ॥ १६ ॥ धाताव्जयोनिर्दुहिणो विश्विः कमलासनः। स्रष्टा प्रजापति-वेंवा विधाता विश्वसृङ्घिधः॥ १७॥

मह्माजिके नाम २०-मह्मन् १ आत्मभू २ छर-ज्येष्ठ ३ परमेष्टिन् ४ पितामह ५ हिरण्यगर्भ ६ लोकेश ७ स्वयम्भू ८ चतुरानन ९ ॥ १६ ॥ धातृ १० अञ्जयोनि ११ ब्रुहिशा १२ विरिष्ठि १३ कमलासन १४ सष्ट् १५ प्रजापति १६ वेधस् १७ विधातृ १८ विश्वस्य १९ विधि २०॥ १७॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वेकुण्ठो विष्ट-रश्रदाः । दामोदरो हषीकृषः केशवो माधवः स्वषः ॥ १८॥ दैग्यारिःपुण्ड-रीकाक्षो गोबिन्दो गरुहध्वजः । पीता-बरोऽच्युतः शाङ्की विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९॥ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्रकपाणिश्रतु-र्श्वजः । पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्विवि-क्रमः न। २०॥ देवकीनग्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः । वनमाली बिक्ध-ध्वंसी कसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥ विश्व-स्भरः कैटभजिद्धिष्ठः श्रीवत्सकाञ्कनः ।—

विष्णु भगवान्के नाम३९-विष्णु १ नारायसः २ इच्या ३ वैकुण्ठ ४ विष्टरश्रवस् ५ दामोदर ६ इषिकेश ७ केशव ८ माघव ९ स्वभू १० ॥ १८॥ दैत्यारि ११ पुण्डरीकास्त १२ गोविन्द १३ गइड-च्वन १४ पीतास्वर १५ श्रन्युत १६ शार्किन् १७ विष्वक्सेन १८ जनार्दन १९॥ १९॥ उपेन्द्र २० इन्द्रावरज २१ चकपाणि २२ चतुर्भुज २३ पद्मनास् २४ मधुरिपु २५ वासुदेव २६ त्रिविकम २७॥ २०॥ देवकीनन्दन २८ शौरिन् २९ श्रीपित् ३० पुरुषोत्तम ३१ वनमालिन्३२वलिष्वंसिन् ३३कंसा-राति ३४ श्रवोक्षक ३५॥ २१॥ विश्वस्मर ३६ केटमजित् ३७ विश्व ३८ श्रीवत्सलां इन ॥ ३९॥

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकडु न्दुभिः॥ २२ ॥

वसुदेवजीके नाम २-वसुदेव १ त्रानकेंदुन्दुंकि

बल्भद्रः मलम्बद्रो बलदेवोऽच्युता-अजः। रेवतीरमणो रामः कामपालो हता-युधः॥ २३॥ नीलांबरो रौहिणेयस्ता-छांको सुसली हछी। संकर्षणः सीक्ष्म पाणिः कालिन्दीभेदनो बलः॥ २४॥

बलदेवजीके नाम १७—बलसह १ प्रलम्बं २ बलदेव ३ अन्युतायन ४ रेवतीरमण ५ राम ६ कामपाल ७ हलायुघ ८ ॥ २३ ॥ नीलांबर ५ रोहिणेय १० तालांक ११ मुसलिन् १२ हलिन् १३ सर्कर्षण १४ सीरपाणि १५ कालिन्दीमेदन १६ वर्ज १७ ॥ २४ ॥

मद्नो मन्मथो मारः प्रशुम्नो मीत-केतनः। कन्द्रपे दर्पकोऽनगः कामः पश्च-शरः स्मरः ॥ २५ ॥ शम्बरारिर्मनित-जःकुसुमेषुरनन्यजः। पुष्पधन्वा रतिपित-र्मकरध्वज सारमभूः॥ २६ ॥ ब्रह्मसूर्ण्य-ष्पकेतुः— , कामदंवकं नाम २१-मदन १ मन्मथ २ मार रे प्रशुक्त ४ मीनकेतन ५ कन्दर्ष ६ दर्पक ७ श्रनंग ८ काम ९ पश्चरार १० स्मर ११ ॥ २५ ॥ श्वक्वरारि १२ मनसिज १३ कुसुमें छ १४ श्रनन्यज १५ पुष्पधन्वन् १६ रतिपति १७ मकरच्वज १८ श्वत्मभू १९ ॥ २६ ॥ श्रह्मसू २० ऋष्यकेतु २१॥•

—स्थादनिरुद्ध उषापतिः ।—

्रश्रनिरुद्धके नाम २--श्रनिरुद्ध १ उषापति २ ॥ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमलाश्री--इरिप्रिया ॥ २७ ॥

। लक्ष्मीजीके नाम ६— लक्ष्मी १ पद्मालया २ पद्मा ३ कमला ४ श्री ५ हरिप्रिया ६ ॥ २७ ॥

शांखो लक्ष्मीषतेः पाञ्चजन्य--

ृ विष्णु भगवान्के शह्नुका नाम १—पाम्बजन्य १॥—

—श्रकं सुदर्शनम्।

विष्णु भगवान्के चक्रका नाम १-सुदर्शन १॥-
कौमोदकी गंदा--

विष्णुमगवान्की गदाका नाम १ - को मो एकी १ ॥-

- खह्गो नन्दकः-

' 'ब्रिष्णुके खड़का नाम १-नन्दक १ ॥-

∸कौस्तुभो मणिः॥ २८ ॥

विष्णुकी मणिका नाम १-कौस्तुम १ ॥ २८ ॥
'गरुतमानगरुडस्ताक्ष्यों बैनतेयः खगेश्वरः। नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः
पत्रगाश्चनः ॥ २९ ॥

्रं गरुड्जिकि नाम ९--गरुत्मत् १ गरुड २ तार्र्घ ३ वैनतेय ४ खगेश्वर ५ नागान्तक ६ विष्णुरथ ७ इपर्ण ८ पन्नगाशन ९॥ २९॥

भेशम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूळी महेश्वरः । ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्कर-सन्दशेखरः ॥ ३० ॥ भृतेशः खण्डपर-शुगिरीशो गिरिशो मृडः । मृत्युअयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥ उम्रः कपदी श्रोकण्टः शितिकण्टः कपा- लभृत । वामदेवो महादेवो विरूपाच-स्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥ कृशानुरेताः सर्वज्ञोः धूर्जिटर्नीललोहितः । हरः स्मरहरो भर्ग-रूपम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥ गङ्गाधरी-ऽधकरिपुः कतुःवंसी वृष्ध्वजः ॥ व्यो मकेशो भवो भीमः स्थाण् रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

शिवजीके नाम ४८—शम्भु १ ईश २ पशुपति ३
शिव ४ श्रलिन् ५ महेश्वर ६ ईश्वर ७ शर्व ८
ईशान ९ शङ्कर १० चन्द्रशेखर १९॥३० ॥
भूतेश १२ खण्डपरशु १३ गिरीश १४ गिरिश १५
मृड १६ मृत्युजय १७ कृतिबासस् १८ पिनाकिन्
१९ प्रमथाधिप २०॥३१॥ उम्र २१ कपर्दिन्
२२ श्रीकण्ठ २३ शितिकण्ठ २४ कपालस्त ५५
वामदेय २६ महादेव २७ विक्पाच २८ त्रिलोचन
२९॥३२॥ कृशानुरेतस् ३० सर्वे ३१ धूर्जिट
३२ नीललोहित ३३ हर ३४ स्मरहर ३५ मर्ग ३६
व्यक्ष्यक ३७ त्रिपुरान्तक ३८॥३३॥ गंगाधर३९
व्यक्ष्यकरिपु ४० कतुष्वसिन् ४१ वृषमञ्चल ४२
व्योमकेश ४३ मव ४४ मीम ४५ म्याणु ४६ वृद

### कपदोंऽस्य जटाजूटः—

शिवजीके जटाजूटका नाम १-कपर्द १॥-

-पिनाकोऽजगवं धतुः।

शिवजीके धनुषके नाम २-पिनाक १ अज-गव २॥

प्रमथाः स्युः पारिषदा--

शिवजीके पाषदोंके नाम २-प्रमथ १ पारि-षद २ ॥-

— ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५॥ ''ब्राह्मी माहेश्वरी चेव कौमारी वेणवी' तथा। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः॥'

ब्राह्मी आदि शक्तियोंके नाम ७- ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कीमारी ३ वैष्णावी ४ वाराही ५ इन्द्राण ६ चासुण्डा ७॥३५॥

## विभूतिर्भृतिरैश्वर्य--

ऐश्वर्यके नाम ३-विभूति १ भूति २ 'ऐरवर्य ३ ॥--

#### -मिशामादिकमष्ट्रधा।

"त्रिगामा महिमा वैव गरिमा लियमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं वाष्टिसद्ध्यः॥"

ऐरवर्यके <u>भेद</u> ८ - श्रणिमन् १ महिमन् २ गरिमन् ३ लिघमन् ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईश्वित्व ७ वशित्व ८॥

ं उमा कत्यायनी गौरी काली हैमव तीश्वरी ॥ ३६ ॥ शिवा भवानी रुद्राणी थर्वाणी सर्वमङ्गळा । घ्रपणी पार्वती दुर्गी मुडानी चण्डिका-म्बिका ॥ ३७ ॥

"ग्रार्या दान्नायग्री चैव गिरिजा मेन-कारमजा ॥"

पार्वतीके नाम (२१) — उसा १ कान्यायनी २ गौरी ३ काली ४ हैमवर्ता ५ ईश्वरी ६ ॥ ३६॥ शिवा ७ भवानी ८ ख्राणी ९ शर्वाणी ९० सर्वमङ्गला ११ त्रपणी १२ पार्वती १३ दुर्गा १४ मृडानी १५ चिष्डका १६ त्रम्बिका १७॥ ३७॥ श्र्यार्थ १८ दान्नायणी १९ गिरिजा २० मेनका-त्मजा २१

## विनायको विघराजद्वैमातुरगगाधिपाः। अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोद्रगजाननाः ॥३८॥

गणेशके नाम 👉 विनायक १ विष्नराज २ द्वैमातुर ३ गणाधिप ४ एकदन्त ५ हेरम्ब ६ लम्बोदर ७ गजानन ८॥ ३८॥

कं निकेयो महासेनः शरजन्मा षडा-ननः । पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीर-ग्निभूग्रेहः ॥ ३९ ॥ बाहुलेयस्तारकजिद्धि-शाखः शिखिवाहनः । षाण्मातुरः शक्ति-धरः कुमारः क्रीश्वदारग्रः ॥ ४० ॥

स्वामिकार्त्तिकेयके नाम १७—कार्त्तिकेय १ महासेन २ शरजन्मन् ३ षडानन ४ पार्वतीनन्दन ५ स्कन्द ६ सेनानी ७ अप्रिभू ८ गुह ९॥ ३९॥ बाहुळेय १५० तारकजित् ११ विशास्त १२ शिखिवाहन १३ षाण्मातुर ५४ शक्तिधर १५ कुमार १६ कौचदारसा १७॥ ४०॥

इन्द्रो महत्वान् मयवा बिडीजाः पाकशासनः। वृद्धश्रवाः शुनासीरः पुरु-दूतः पुरंदरः॥ ४१॥ जिन्णुर्लेखर्षभः शकः शतमन्युर्दिवस्पतिः। सुत्रामा गोत-भिद्धत्री वासवो वृत्रद्दा वृषा॥ ४२। वास्तोष्पतिः सुरपतिष्ठेलारातिः शची-पतिः। जम्भभेदी हरिद्दयः स्वाराणनस्वि-सुदनः॥ ४३॥ संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तु-राषाण्मेयवाहनः। आखण्डलः सहस्राच्न ऋभुन्ना-

इन्द्रके नाम (१५) इन्द्र १ मस्तवत् २ मघवन्
३ विडोजस् ४ पाकशासन ५ बृद्धश्रवस् ६ शुनासीर ७ पुरुदूत ८ पुरुद्दर ९ ॥ ४९ ॥ जिच्छा ९०
छेखपम ११ शक १२ शतमन्यु १३ दिवस्पति १४
सुत्रांमन् १५ गोत्रभिद् १६ विजित् १७ वासव १८ बृत्रह्न् १९ वृषन् २० ॥ ४२ ॥ वास्तोष्पति २५ सुर्पात २२ बलाराति १३ शकीपति २४ जम्ममेदिन् २५ हस्हिय २६ स्वाराज् २७ नसुन्नि-सूद्त २८ ॥ ४३ ॥ सैकन्द्रन २९ दृह्वच्यवन ३० तुरासाङ् ३१ मेघवाइन ३२ श्राखण्डल ३३ सहस्रास्त् ३४ ऋमुक्षित् ३५ ॥—

— स्त्रैंस्य तु: प्रिया ॥ ४४•॥ पुलोमना शचीन्द्राणी-

इन्द्राणीके नाम ३—॥ ४४ हैं॥ पुलोमजा १ शची २ इन्द्राणी ३—

—नगरी त्वमरावती ।

इन्द्रपुरीका नाम १---श्रमरावती १ ॥-

हय उच्चैःश्रबाः—

इन्द्रके घोड़ेका नाम ृ १ -- उच्चैःश्रवस् १ ॥-:

—सूतो मातलि--

इन्द्रके सारिथके नाम १-मार्तात १॥- , ्. ---र्नन्द्रनं वनम् ॥ ४५॥ इन्द्रके बगीनेका नाम १—नन्दन १॥ ४५॥ स्पात्मासादो वैजयंतो:-इन्द्रके धनरहरका नाम १ वैजयन्त १॥ —जयंतः पाकशासनिः। इन्द्रके पुत्रके नाम २—जयन्त १ पाकशासनिश॥ ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाश्रमुवस्त्रभाः।। ४६॥

हन्द्रके हाथीका नाम ४ ऐरावत १ अञ्चमातज्ञ २ ऐरावरा ३ अञ्चमुवक्षम ४ ॥ ४६ ॥

इादिनी वज्रमञ्जी स्यान्कुळिशं भिदुरं पविः। शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोळि-रशनिद्वयोः॥ ४७॥

वज्रके नाम १० हादिनी १ वज्र २ कुलिश ३ मिदुर ४ पिन ५ शतकोटि ६ स्वरू ७ शस्य ८ इस्मोलि ९ अशनि १०॥ ४७॥

बयोमयानं विमानोऽखीविमानके नाम २ ज्योमयान १ विमान २ ॥
—नारदायाः सुर्वयः ।

पुरऋषियोके नाम-नारद श्रादि ॥
स्यातसुधमा देवसभादेवसभाके नाम २ प्रधर्मा १ देवसभा २ ॥
—पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

श्रमृतके नाम ३ पीयूष १ श्रमृत २ प्रधा ३

मंदाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदी-

स्वर्गनंगाके नाम ४ मन्दाकिनी १ वियक्नंगा २

मेरः सुमेरहमाद्री रतसातुः सुरा-खयः ॥ ५९ ॥

समेर पर्वतके नाम ५ मेर १ समेर २ हेमादि ३ रक्सातु ४ सुरालय ५ ॥ ४९ ॥

पञ्चेते देवतरवो मन्दारः पारिजा-

तकः । संतानः करपबृद्धः पुंसि बा इरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

देववृत्तीके नाम ५ मन्दार १ पारिकालक २ सन्तान ३ कल्पवृत्त ४ हरिचन्दन ५ ॥ ५० ॥

सनत्कुमारो वैधातः-

सनत्कुमारके नाम २ सनत्कुमार १ वैधात्र २ ॥
— स्ववैंद्यावश्विनीसृतौ । नासत्यायश्विनौ दस्नावाश्विनेयौ च ताबुभौ॥५१॥
अधिनीकुमारके नाम ६ स्ववैंद्य१ श्रश्विनीकुमार
२ नासत्य ३ श्रश्विन् ४ दस ५ श्राश्विनेय ६॥५१॥
स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्ववेंश्या उर्वशीसुखाः
श्रप्तराश्चोंके नाम २ श्रप्सरस् १ स्ववेंश्या २
वे उर्वशी श्रादिक श्रप्सराएँ हैं ॥

हाहाहू हु श्रेवमाया गन्धवास्त्रिदिवी-कसाम् ॥ ५२ ॥

गन्धर्वोके नाम २ हाहा १ हुदू २ आदि देवोंके गबैंथे हैं॥ ५२

अग्निवेश्वानरो विद्ववितिहोत्रो धनअयः। कृपीटयोनिज्वंत्वनो जातवेदास्ततूनपात ॥ ५३ ॥ विद्यः शुप्मा कृष्यवरमा शोचिष्केश उपर्बुधः। ग्राश्रयाशो वृहद्भातुः कृशातुः पावकोञ्जलः
॥ ५४ ॥ रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुश्चक्षणिः ॥ हिरण्यरेता हुतभुद्हनो हन्यवाहनः॥ ५५ ॥ सप्तार्चिद्मुनः
शुक्रश्चित्रभातुर्विभावसुः। शुन्वर्ष्यन-

अभिके नाम ३४ अभि १ वैश्वानर २ विह ३ वीतिहोत्र ४ घनअय ५ छपीटयोनि ६ ज्वलन ७ जातवेदस् ८ तन्नपात् ९ ॥ ५३ ॥ बहिंस् १० छुष्मन् ११ छण्यावर्सन् १२ शोचिष्केश १३ उध- बुंघ १४ आश्रयाश १५ वृहद्भानु १६ छशानु १७ पावक १८ अनल १९॥ ५४ ॥ रो (लो ) हिता- ध २० वायुसख २१ विखावत् २२ आञ्चल्य २३ हिरण्यरेतस् २४ हुतसुज् २५ दहन २६ हव्य- वाहन २७॥ ५५ ॥ सप्तार्चिस् २८ दमुनस् २९ छक ३० चित्रमानु ३१ विभावसु ३२ छुचि ३३ अपित ३४॥

—मौर्वस्तु वाडवो वडवःनलः ५६ बडवानलके नाम ३ श्रोवं १ वाडव २ वडवा-नल ३ ॥ ५६ ॥

## बह्रेद्योज्वित्तकीलाविद्धितः शिखा स्त्रियाम् ।

श्वाप्रिकी ज्वालाके नाम ५ ज्वाल १ कील २ श्वर्विस ३ हेति ४ शिखा ५ ॥

## त्रिषु स्फुलिंगोऽग्नि रूणः—

चिनगारिके नाम २ स्फुलिंग १ श्रिशकरा २ ॥
— संतापः सज्वरः समौ ॥ ५७ ॥
सतापके नाम २ सन्ताप १ सङ्ज्वर २ ॥५७॥
धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराइ ।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराङ्गयमः ॥ ५८ ॥ कालो दण्डधरः अाङ्गदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

यमराजके नाम १४—धर्मराज १ पितृपति २ समवर्तिन् १ परेतराज् ४ कतान्त ५ यमुनाश्रातृ ६ समन ७ यमराज् ८ यम ९॥ ५८॥ काल १० इण्डधर ११ श्राद्धदेव १२ वैवस्वत १३ अन्तक १४॥—

राज्ञसः कौगापः क्रव्यात् क्रव्यादोऽ-कृष ग्राश्यः॥ ५९ ॥ राज्ञिचरो रात्रि चरः कर्नुरो निकपात्मजः । यातुधानः पुण्यजना नैकृतो यातुरज्ञसी ॥ ६०॥ यज्ञसोके नाम १५—राज्ञस १ कौगप २ कृष्याद् ३ कृष्याद ४ श्रस्तप ५ श्राशर ६॥ ५९॥ राजिश्वर ७ राजिनर ८ कर्नुर: ९ निक्थात्मज १० बातुधान ११ पुण्यजन १२ नैकृत १३ यातु १४ रच्य १५॥ ६०॥

प्रचेतो वरुणः पाशी यादसां पतिर-

ं वह्याके नाम ५---प्रचेतस् १ वरुण २ पाशित्र ३ बाइसाम्पति ४ अष्पति ५॥

न्यसनः स्पर्शनो चायुर्मातरिश्वा सदा-मतिः ॥ ६१ ॥ पृषद्श्वोगन्धवहो गन्ध- वाहानिलाञ्चगाः । समीरमास्तमरुज्जग्-त्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥ नभस्वद्वातप-वनपवमानप्रभञ्जनाः ॥

वायुके नाम २०— स्वसन १ स्पर्शन २ वायु ३ मातिरवन् ४ सदागित ५ ॥ ६१ ॥ पृषद्व ६ गन्धवह ७ गन्धवाह ८ ऋनिल ९ ऋाञ्चग १७ समीर ११ मास्त १२ मस्त् १३ जगत्प्राण १४ समीरण १५॥ ६२॥ नमस्वत् १६ वात १७ पवन १८ पवमान १९ प्रमञ्जन २०॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानग्यानौ च वायवः॥ ६३ ॥ शरीरस्था इमे -

हृद्यके वायुका नाम १——प्राग् १ ॥ गुद्दाके वायुका नाम १—ऋपान १ ॥ नामिके वायुका नाम १—समान १ ॥ कण्ठके वायुका नाम १—उदाव १ ॥ सब शरीरमें फिरनेवाले वायुका नाम १— व्यान १ ॥ ६३ ॥—

—रंहस्तरसी तुरयः स्यदः। जवी- -वेगके नाम ५-रंहस् १ तरस् २ रय ३ स्यद ४ जव ५ ॥-

—ऽथ शीव्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमर्दे द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सत्वरं चपतं तूर्णमः विलम्बतमाञ्ज्ञ च ।

शीव्रताके नाम १९-शीव्र १ त्वरित २ त्वषु ३ त्विम् ४ अर ५ द्वृत ६॥ ६४॥ सत्वर ७ चपक ८ तुर्ण ९ अवलंबित १० आशु ११॥

सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम्सः ॥ ६५ ॥ नित्यानवरताजस्रमप्य -

्रनिरन्तरके नाम ९-सतत १ अनारत २ अश्रान्त ३ सन्तत ४ अविरत ५ अनिश ६ ॥ ६५॥ नित्य ७ अनवरत ८ अजस ९ ॥--

— थातिशयो भरः। स्रतिवेत्तभृशास्य-यातिभात्रोद्राढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥ तीत्र-कान्तनितान्तानि गाढवाढदढानि च।

वारंवारके नाम १४-श्रातिशय १ भर २ श्राति-वेत ३ मृश ४ अत्यर्थ ५ श्रातिमात्र ६ उद्गाह ७ निर्मर ८॥ ६६ ॥ तीव ९ एकान्त १० नितान्त १९ गांड १२ बांड १३ इंड १४ ॥

क्लीबे शीव्राद्यसत्त्वे स्याश्चिष्वेषां स-रचगामि यत् ॥ ६७ ॥

श्रद्रव्यवाची शीघ्र श्रादि शब्द नपुसक लिङ्गमें होते हैं श्रीर द्रव्यवाची तीनों लिगोमें होते हैं ॥ ६७॥

कुनेरस्व्यम्बकसखो यत्तराङ् गुहाके-श्वरः। मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः॥ ६८॥ किन्नरेशो वैश्रवगः पौलम्स्यो नरवाहनः। यक्षैकपिङ्गेछविल-श्रीदपुण्यजनेश्वराः॥ ६९॥

कुनैरके नाम १७-कुनैर १ त्र्यम्बकसख २ यक्षराज् ३ गुद्यकेरवर ४ मनुष्यधर्मन् ५ धनद ६ आजराज ७ धनाधिपंट॥ ६८॥ किन्नरेश ९ वेश्रवण १० पोलस्य ११ नरवाहन १२ यक्ष १३ एकपिग १४ ऐलिविल १५ श्रीद १६ पुण्यजनेरवर १७॥ ६९॥

अस्योद्यानं चित्ररथम्--कुवेरके बगीवेका नाम १-वैत्ररथ ॥-

-- पुत्रस्तु नलकूबरः । कुवेरके पुत्रका नाम १- नलकूबर १ ॥ कैलासस्थान-कुवेरके स्थानका नाम १-कैलास१॥-

----

--मलका पु--

कुबैरकी पुरीका नाम १-त्र्यलका १॥-

विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥
कुवेरके विमानका नाम १- गुष्पक १ ॥ ७० ॥
स्यात्कित्ररः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो
मग्रः।

किन्नरों के नास ४ किन्नर १ किन्युरुष २ तुरज्ञवदन ३ मयु ४ ॥

निधिनां शेवधि--

खजानेकें नाम २ निधि १ शेवधि २ ॥

—भेंदाः पद्मशंखादयो निधेः॥ ७१ ॥ खजानेके मेद पद्म, शह्ब× इत्यादि॥ ७९ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

ग्रथ व्योमवर्गः २.

बोदिनौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्कर-मम्बरम्। नभोऽन्ति । स्त्रियद्विः गुगनमनन्तं सुर-वर्त्म खम् ॥१॥ वियद्विः गुपदं वा तु पुस्याकाश विद्वायसी । विद्वायसोऽपि नाकोऽपि सुरपि स्यानद्वयम् ॥१॥

श्राकाशके नाम १९ द्यो १ दित २ अश्र १ व्योमन् ४ पुष्कर ५ श्रम्बर ६ नमस् ७ श्रन्त । रिच्च ८ गगन ९ श्रन्त १० सुरवर्सन् ११ ख १२॥१॥ वियत् १३ विष्णुपद १४ श्राकाश १५ विहायस् १६ विहायस १७ नाकस् १८ सुस् १९॥ २०॥

इति व्योमवर्गः ३॥२॥

ग्रथ दिग्वर्गः ३.

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरि-तश्च ताः।

दिशाओं के नाम ५ दिश १ ककुम २ काष्टा 🕏 श्राशा ४ हरित् ५ ॥

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वद्त्तिग्रप-श्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरादिग्रदीची स्याद्—

पूर्व दिशाका नाम १ प्राची १ । दक्षिण दिशाका नाम १ श्रवाची १ । पश्चिम दिशाका नाम १ प्रतीची १ ॥ १ ॥ उत्तर दिशाका नाम १ उदीची ॥ १ ।

× ''पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शंखो मकरकच्छुपो ।
मुकुन्दकुंदनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥'' इति
शब्दार्णवः । भाषाः —पद्म १ महापद्म २ शंख ३
मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व
९ यह नो खजानेके मेद हैं।

- दिश्यं तृ विषु दिग्भवे।

दिशोत्पन्नवस्तुका नाम १ दिश्य १ ।-

इन्द्रो विहः पितृपतिनैर्ऋतो बरुणो मरुत्॥ २॥ कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात।

पूर्व दिशाके स्वामीका नाम इन्द्र १ श्रिप्तिको गाके स्वामीका नाम विद्व १ । दक्षिणादिशाके स्वामीका नाम यमराज १ । नैर्ऋत्य को गाके स्वामीका नाम नैर्ऋत १ । पिर्चमिदिशाके स्वामीका नाम वक्षा १ । वायुको गाके स्वामीका नाम पवन १ । ॥ २ ॥ उत्तर दिशाके स्वामीका नाम कुवैर १ । ईशान को गाके स्वामीका नाम ईश १ ।

ऐरावतः पुण्डरीकं। वामनः कुमुद्दोऽ-श्वनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रती-कश्च दिग्गजाः

पूर्व दिशाके हस्तीका नाम ऐरावत १। श्रमिक्रोणके हस्तीका नाम पुण्डरीक २। दक्षिण दिशा के हस्तीका नाम वामन ३। नै दृश्य कोणके हस्तीका नाम कुमुद ४। पिर्चम दिशाके हस्तीका नाम अज्ञन ५॥ ३॥ वायु कोणके हस्तीका नाम पुष्पदन्त ६। उत्तरदिशाके हस्तीका नाम पार्व भौम ७। ईशान कोणके हस्तीका नाम पुर्व २॥

करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क-मात् ॥ ४॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चा-ङ्गना चाञ्जनावती ।

कपर लिखे हुए ऐरावत आदि आठ हस्तियोंकी इिंगिनयोंके कमसे नास-ऋअमु १ क्पिला २ पिगला ३ अनुपमा ४॥ ४॥ ताम्रकर्गी ५ ग्रुम्र-दन्ती ६ श्रंगना ७ अजनावती ८।

वजीबान्ययं त्त्रपदिशं दिशोर्मध्ये वि-दिक् स्त्रियाम ॥ ५ ॥

श्रक्ति श्रादि को एक नाम २ - अपदिश १ विदिश २ ॥ ५ ॥

ग्रभ्यन्तरं स्वन्तरालं — बीवमाणके नामश्चम्बर्यंतर १ श्रन्तराख २ ।- —चक्रवाकं तु मण्डलम्।

गोलाकार समूहके नाम २—चकवाल १ मण्डल २।

अभ्र मेघो वारिबाहः स्तनयिःहुर्बता-हकः॥ ६॥ धाराधरो जळधरस्तिह-त्वान्वारिदोऽम्बुभृत्। यनजीमृतसुदिरज-लसुग्धूमयोनयः॥ ७॥

बादलके नाम १५—अश्र १ मेघ २ वारिवाह ३ स्तनियत्तु ४ बलाहक ५ ॥ ६ ॥ घाराघर ६ जला घर ७ तडित्वत् ८ वारिद ९ अम्बुमृत् १० घन ११ जीमूत १२ मुदिर १३ जलमुच १४ धूमयोनि १५॥ ७॥

कादम्बिनी मेघमाला-

मेघपंक्तिके नाम २-कादम्बिनी १ मेघमाला र

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।

मेघोत्पन्न वस्तुका नाम १- श्रित्रय १

स्तनितं गर्जित मेथनियोंको रसितादि च ॥ ८॥

गर्जनके नाम ४-स्तिनित १ गर्जित २ मेघनि-घोष ३ रसित ४॥८॥

शम्पाशतहृदाहु।दिन्यैरावत्यः क्षण-प्रभा । तहित्सौदामनी विशुश्चश्वता चपला ग्रपि ॥ ९॥

विजलीके नाम १०-शम्पा १ शतहदारहादिती ३ ऐरावती ४ च्याप्रमा ५ तिहत् ६ सीदामनी अ विश्वत् ८ चम्रला ९ चपला १०॥ ९॥

• स्फूर्जधुर्वज्रनिर्घोषो-

वज़के शब्दोंके नाम २-स्फूर्जधु १ वज़िन-घोष २।-

मेवज्योतिरिरंमदः।

वज्रके अप्रिके नाम २-मंघज्योतिष् १ इर-म्मद २।

—इन्द्रायुधं शक्रवतुस्तदेव ऋजु. रोहितम्॥१०॥ इन्द्रधतुषके नाम ३-इन्द्रायुघ १ शक्रधतुष् २ रोहित ३ । सरल इन्द्रधतुषका नाम रोहित है।।१०॥

#### वृष्टिर्वर्षे—

वषिके नाम २-वृष्टि १ वर्ष २।-

—तद्विचातेऽवग्राहावग्रहौ समी।

इराके ना<sup>45</sup> २—अवग्राह १ अवग्रह २ ॥

## धारासंपात आसारः

ृ निरन्तर मेघघाराके नाम २-धारासम्पात ९ कासार २।-

—शिकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥ वायुरं उड़ाये हुये जलक्तो (फुहारो ) का नाम १-शीकर १ ॥ ११ ॥

#### वर्षोपलस्तु करका-

श्राकाशसे गिरे हुए पत्थरोंके नाम १-वर्षोपल १ करका २ ।--

## —मेयच्छन्नेऽन्हि दुदिनम्।

मेचसे श्राच्छादित हुआ दिनरात्रिका नाम १--इर्दिन १॥

ग्रन्तर्था ज्यवधा पुसि त्वन्तर्धिरपवार-षम् ॥ १२ ॥ अपिधानतिरोधानपिधा-नाच्छादनानि च ॥

स्पनाके नाम ८--श्रन्तर्धा १ व्यवधा २ श्रन्त-वि ३ अपनारण ४ ॥ १२ ॥ अपिधान ५ तिरो-चान ६ पिद्यान ७ आच्छादन ८ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुद्दान्ध्यः॥ १३॥ विश्वुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोन्ध्यीशो निशापतिः। अन्त्रो जैवातृकः सोमो ग्लीर्मृगांकः कलानिधिः॥ १४॥ दिजराजः शशधरो नस्त्रेशः स्पाकरः।

चन्द्रमाके नाम २०-हिमां । चन्द्रमस् २ बन्द्र २ इन्दु ४ कुसुद्दान्धव ५ ॥ १३ ॥ विधु ६ सुषां छु ७ छुआं छु ८ श्रोषधीश ९ किशापति १० -श्रम्ब ११ जैवातृक १२ सोम १३ ग्लो १४ शृगाष्ट्र १५ कलानिधि १६ ॥ १४ ॥ द्विजराज १७ शशधर १८ नक्षत्रेश १९ चपाकर २० ॥

#### कला तु षोडशो भागो--

चन्द्रशाके <sup>9</sup> चें भागका नाम-कला १--कला १ ॥--

—विम्बोऽस्त्रीमण्डलं त्रिष्ठु ॥ १५॥ चन्द्रमण्डलके नाम २-विम्ब १ मंडल ६ ॥ १५॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुस्यधी-

खण्डके नाम ४-भित्त १ शकत २ खण्ड ३ अर्द्धे ४ (पुंक्षिग)॥ /

र्ड्य समेंऽशके। र्रेन्स

समभागका नाम १-श्रद्ध १ (नपुंसकर्लिंग) ॥ चंद्रिका कौमुदी ज्योतस्ना—

ज़ांदनीके नाम ३--चांन्द्रका १ कौमुदी १ ज्योत्स्ना ३ ॥-

—प्रसादस्तु प्रसन्नता॥ १६॥

निर्मतताके नाम २-प्रसाद १ प्रसन्ता २ ॥
॥ १६॥

कलंकांकौ लाञ्छ्नं च चिह्नं लक्ष्म 🖜 लक्षणम् ।

चिहके नाम ६-कलङ्क ९ श्रष्ट २ **तांडन ३** चिह्न ४ लक्ष्मन् ५ लक्ष्मण ६ ॥

सुषमा परमा शोभा---

श्रतिशोभाका नाम १-सुषमा १ ॥-

—शोभाकान्तिर्युतिश्क् विः ॥ १७॥ शोभाके नाम ४—शोभा १ क्रांति २ युति ३ इवि ४॥ १७॥

श्रवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिवं हिमम्। प्रात्तेयं मिहिका चा—

पालेके नाम ७--अवस्थाय १ नीहार १ तुवार १ तुहिन ४ हिम ५ प्रालेख ६ मिहिका ७%- —थ हिमानी हिम्सहितः ॥ १८ ॥ बालेके समूहके नाम २ हिमानी १ हिमसंहित २ ॥ ॥ १८ ॥

शीतं गुणे--

शीतलताका नाम १-शीत १॥-

—तद्वदर्थां; सुषीमः शिशिरो जडः। तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलि-षकाः।। १९॥

शीतलनस्तुके नाम ७ सुषीम १ शिशिर २ चड ३ तुषार ४ शीतल ५ शीत ६ हिम ७ ॥ १९॥

श्रुव ग्रीतानपादिः स्या-

श्रुवजीके नाम २-श्रुव १ श्रीत्तानपादि २ ॥
-द्गस्त्यः कुम्भसम्भवः। मैत्रावदिश्वश्रमस्यके नाम ३-श्रमस्य २ कुम्भसम्यव २
मैत्रावदिणि ३ ॥-

रस्येव लोपामुद्दा संधर्मिणी ॥२०॥ श्रमस्यकी लीका नाम १-लोपामुद्रा १ ॥२०॥ नक्त्रमृक्षं भं दिवारा तारकाप्युडु वा स्थियाम् ।

नक्षत्रीके नाम ६-नक्षत्र १ ऋक्ष २ म ३ तारा ४ तारका ५ उडु ६॥

दान्तायण्योऽश्विनीत्यादितारा अदिवनी आदि २८ नक्षत्रोका नाम १-दाक्षा-वर्षी १ ४-

अश्वयुगश्विनी ॥ २१॥

श्चित्रिनी नक्षत्रके नाम २-श्चरनयुज् १ श्चित्रनी २ ॥ २ ९ ॥

राधा विशाखा

विशाखानक्षत्रके नाम २--राघा १ विशाखा २ ॥---

नुष्ये तु सिध्यतिष्यौ-

पुष्यनक्षत्रके नाम ३-पुष्य १ सिष्य १ तिष्य ३ ॥---

श्रविष्ठया । समा धनिष्ठा--

धनिष्ठानक्षत्रके नाम २-श्रविष्ठा १ धनिष्ठा २॥

स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥२२॥ · पूर्वमाद्रपदा श्रीर उत्तरमाद्रपदा नक्षत्रोंके नाम

२—प्रोष्ठपदा ५ भाद्रपदा २ ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तिसम्नेवाग्रहायणी।

सृगशिरनक्षत्रके नाम ३-सृगशीर्ष १ सृगशिर २ श्राग्रहायणी ३ ॥

इस्वलास्तिच्छरोदेशे तारका निव-सन्ति याः ॥ २३ ॥

सगिशारके मस्तकपर रहनेवाले नक्षत्रोंका नाम १- इत्वल १॥२३॥

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषयो विद्या । जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्वित्र-शिखयिडजः ॥ २४ ॥

बृहस्पतिके नाम ९-बृहस्पति १ सुराचार्य १ गीष्पति ३ घिषया ४ गुरु ५ जीव ६ झांगिरस ७ बाचस्पति ८ चित्रशिंखण्डिज ९ ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यग्रहः काव्य उशना भागवः कविः।

शुक्तके नाम ६ – शुक्र १ दैत्यगुरु २ काव्य ३ उशनस्४ भागव ५ कवि ६ ॥

अंगारकः कुजो भौमो लोहितांगो महीसुतः ॥ २५॥

भंगलके नाम ५-अज्ञारक १ कुन २ भौम ३-लोहितांग ४ महीसुत ५ ॥ २५ ॥

रौहिणेयो बुधः सौम्यः—

बुचके नाम ३-रोहिणेय १ बुघ १ सीम्य ३ ॥

—समी सौरिशनैश्वरी।

शनिके नाम र-सीरि १ शनैखर २ ॥

ं तमस्तु राहुः स्वर्भातुः सैहिकेयो विधु-न्तुदः ॥ २६ ॥

राहुके नाम ५-तमस् १ राहु २ स्वर्मातु ३ सिंहकेय ४ विधुन्तुद ५ ॥ २६ ॥

ं सप्तर्षयो मरीच्यन्नि**ष्टकाश्चित्र**शिख-विडनः । \*

मरीचि त्रति श्रादि सप्तर्षियोंके नाम-चित्र-शिखण्डिन् ॥ १ ॥

#### राशीनामुद्यो असं-

राशियोंके उदयका नाम १-लम १-

—ते तु मेषवृषाद्यः ॥ २७ x

राशियोंके नाम-मेष १ वृष २ आदि ॥ २७ ॥

स्रस्यायमादित्यद्वादशातमदिवाकराः। भास्कराहस्करब्रध्रप्रभाकरावेभाकराः॥ २८॥ भास्यद्विवस्वत्सनाश्यक्षरिदृश्वोत्त्रपर्भयः। विकर्तनार्कमार्नण्डमिहिराहगापूषणः॥ २९ ग्रुमगाम्तरिग्मित्रश्चित्रभाद्विरोषनः। विभावसुर्धेहपतिस्त्वषांपतिरहपैतिः॥ ३० ॥ भानुईसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः।

सूर्यके नाम ३७—सूर १ सूर्य २ अर्थ्यमन् ३ आदित्य ४ द्वादशात्मन् ५ दिवाकर ६ मास्कर ७ आहस्कर ८ अप्र ९ प्रमाकर १० विमाकर ११ ॥ २८ ॥ मास्वत् १२ विवस्तत् १३ सप्तारत १४ हिरद्द्व १५ उच्चारिस्म १६ विकत्तेन १७ अर्क १८ मार्तण्ड १९ मिहिर २० अक्षा २१ पूषन् २२ ॥ २९ ॥ खुमिण २३ तरिण २४ मित्र २५ चित्रमानु २६ विरोचन २७ विभावसु २८ प्रह्मेति २९ तिवशम्पति ३० आहर्पति ३१ ॥ ३० ॥

भातु ३२ हंस ३३ सहस्रां छु ३४ तपन ३५ स्रवितृ ३६ रवि ३७॥

माठरः पिंगलो दण्डश्रहांशोः पारि-पारितकाः ॥३१॥

सूर्यणार्चवर्ती तीनोंके एक एक नाम-माठर १ पिंगल २ दण्ड ३ ॥ ३१ ॥

सूरसुत्तोऽहणोऽनूहः काश्यपिर्गहडा-ग्रजः।

सूर्यके सारथिके नाम ५-सूरसूत १ अरुख २ अनुरु ३ काश्यपि ४ गरुडायज ५ ॥

## परिवेषस्तु परिधिहपसूर्यक्रमण्डले।३२।

सूर्यके मण्डलके श्रर्थात् जो कभी २ उनके चारों श्रोर घेरासा बन जाता है उसके नाम ४परिवेष १ परिधि २ उपसूर्यक ३ मण्डल ४ ॥ ३२॥

किरगोस्नमयुक्षांशुगभस्तिवृश्विरश्मयः। भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोदींश्वितिः स्त्रियाम् ॥ ३३॥

सूर्यके किरगाके नाम ११-किरगा १ उस २ मधूख ३ ऋतु ४ गमस्ति ५ ष्टणि ६ रहिम ७ मानु ८ कर ९ मरीचि १० दीधिति ११॥३३॥

## म्युः प्रभारग्रुचिस्तिबङ्भाभाश्कृषि-युतिदीप्तयः । रोचिःशोचिक्रभे क्लीबे —

दी प्रिके नाम ११-प्रमा १ रुच् २ रुचि ३ तिव ४ भा ५ भास ६ छिन ७ छुति ८ दीप्ति ९ रोचिष् १० शोचिष् ११ ॥-

—प्रकाशो द्यात आतपः ॥ ३४ ॥

धूपके नाम ३-प्रकाश १ द्योत २ श्रातप ३॥३४॥

## को च्यां कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं श्रिष्ठ तद्वाते ।

थोड़े गरमके नाम ४-कोष्ण १ कवोष्ण २ मन्दोष्ण ३ कडुष्ण ४

तिगमं तीक्ष्णं खरं तद्ध-

<sup># &</sup>quot;मरीचिरंगिरा श्रित्रः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । विसन्नश्चेति सप्तैते ज्ञेयादिचत्रशिखाण्डनः" ॥ १ ॥ भाषा मरीचि १ श्रिगिरस २ श्रित्र ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ विसन्न ७ यह सप्तर्षि चित्रशिख-मिड कहलाते हैं।

बहुत गरमके नाम ३-तिग्म ९ तीक्ष्ण २ खर ३॥-

इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

ग्रथ कालवर्गः ४.

कालो विष्टोऽध्यनेहापि समयो-

समयके नाम ४-काल १ दिष्ट २ अनेहस् ३ समय ४ ॥-

—ऽप्यथ पद्मतिः। प्रतिपद् द्वे इमे स्वीग्ये—

प्रतिपदाके नाम २-पक्षति १ प्रतिपत् २ ॥-तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥ प्रतिपदादिका नाम १-तिथि १ ॥ १ ॥

यस्रो दिनाइनी वा तु क्लीवे दिवस-वासरी।

दिनके नाम ५-घस १ दिन २ ऋहन् ३ दिवस ४ वासर ५-

प्रत्यूषोऽद्वर्भुः कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥ प्रभात च —

प्रातःकालके नाम ६-प्रत्यूष १ श्रहर्मुख २ इत्य ३ उषस् ४ प्रत्युषस् ५ ॥ २ ॥ प्रभात ६॥-

—दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसः। सायंकालके नाम ४-दिनान्त ९ सायम् २ सम्ब्या ३ पितृप्रसू ४ ॥

## प्राह्मापर हमध्याहास्त्रिकंश्य-

प्रातःकालका नाम १ प्राह्न १ ॥ मध्याह्नकालका नाम १-मध्याह्न १ ॥ मध्याह्नोत्तर कालका नाम १-स्थपराह्न १-इन तीनों कालोंका इकट्टा नाम त्रिसंध्य १॥-

—मर्थ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिश्चियामा चणदा चुपा । विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

रात्रिके नाम १२-शर्वरी १-॥ ३॥ निशा २ निशीथिनी ३ रात्रि ४ त्रियामा ५ च्चणदा ६ च्चपा ७ विभावरी ८ तमस्विनी ९ रजनी १० यामिनी ११ तमी १२॥ ४॥

तमिस्रा तामसी रात्रि-

अधियारी रात्रिका नाम १-तिमस्रा १॥

-ज्यौत्स्री चिन्द्रक्या दिता।

उजियाली रात्रिका नाम १-ज्यौतस्नी १ ॥

अत्यामिवर्तमानाहर्युक्तायां निश्चि पन्निजी ॥ ५ ॥

वर्तमान और त्रागन्तुक दिनोंके मध्यकी रात्रि-का नाम १-पद्मिणी १॥ ५॥

गणरात्रं निशा बह्नचः — वहुत रात्रियोंका नाम १ गशारात्र १ ॥

-प्रदोषो रजनीमुखम्।

रात्रिके प्रथमभागके नाम २-प्रदोष १ रजनीः मुख २ ॥

अर्धरात्रनिशीयौ द्वौ--

त्राधीरात्रिके नाम २--ऋधरात्र १ निक्सीथ २ 🖡

-द्वौ यामप्रहरौ समी ॥ ६॥

स पर्वसंधिः प्रतिषत्पश्चदश्योर्यदन्तरम्। प्रतिपदा १ श्रौर पंचदशी १५।३० के मध्यके

कालका नाम १-पर्वसन्धि १ k

पद्मान्तौ पश्चदश्यौ द्वे-

**अ**मावस्था और पूर्ींगुमाका नाम १–पद्मान्त १**४** 

—पौर्णमासी तु पृश्चिमा ॥ ७ भ

पूर्विमाके नाम २—पौर्णमाक्षी १ पूर्विमा २ ॥ ७ ॥ कलाईनि सातुमतिः—

जिस पूर्णमासीमें प्रतिपदाके योगसे चन्द्रमाकी कला हीन हो उसका नाम १-श्रतुमति १ ॥

-पूर्णे राका निशाकरे।

जिसमें पूर्ण चन्द्रमा हो उस पूर्शिमाका नाम १-राका १॥

्धमावास्या त्वमावस्या दश्यः सूर्येन्दु-संगमः ॥ ८ ॥

श्रमातस्याके नाम ४-श्रमावास्या १ श्रमा-बस्या २ दशे ३ सूर्येन्द्रसंगम ४ ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः चिनीवाली-

जिसमें चतुर्दशीके घोगसे चन्द्रमाका दर्शन हो उस अमावास्थाका नाम १-सिनीवाळी १ ॥

—सा नष्टेन्दुकला कुहूः।

जिसमें बिलकुल चन्द्रदर्शन न हो उस श्रमा-बस्याका नाम १—कुहू १ ॥

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते तिवन्दी च पुष्णि च ॥ ९ ॥ स्रोप्धतवीपरक्तौ द्वा—

चन्द्रमह्या श्रीर सूर्यमह्याके नाम ४-उपराग १ मह २ ॥ ९ ॥ सोपप्तन ३ उपरक्त ४ ।

—बग्न्युत्पात उपाहितः।

धूमकेतुके नाम २-अग्रन्युत्पात १ उपा-हित २॥

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकर-निशाकरौ॥ १० ॥

सूर्व और चन्द्र दोनोंका इक्टा नाम १-

अष्टाद्श निमेषास्तु काष्ठा—
पत्तक मारनेका नाम १—निमेष १ ॥ अठारह
निमेषोका नाम १—काष्ट्रा १ ॥

—तिंशतु ताः कला। तीस काष्टाओंका नाम १-क्ला १ ॥ तास्तु निंशत्सम्

तीस कलाश्रोका नाम १-क्ष्य १ ॥ —स्ते तु मुहूर्ता द्वादशाश्चियाम् ११ बारह चर्गोका नाम १-मुहर्त्त १॥ १९ ॥ ते तु त्रिशदहोरात्रः— तीस मुहूतोंका नाम १-श्रहोरात्र १॥ -पन्नस्ते दशपश्च च। पंद्रह दिनरातका नाम १-पन्न १॥ पक्षी पूर्वापरी शुक्लकृष्णी-पत्त दो हैं २ - शुक्र १ कृष्ण २ ॥ —मासस्तु ताबुभौ ॥ १२ ॥ 🐇 दो पद्मोका नाम १-मास १ ॥ १२ ॥ दौ दो मार्गादिमासौ स्याहत-मार्गशीर्वाद दो दो मासीका नाम १ ऋतुः १ 👪 - स्तैरयनं विभि:। तीन ऋतुश्रोका नाम १-श्रयन १ ॥ अयने दे गतिहदग्दाच्यार्कस्य-दो श्रयनोके २ भेद-उत्तरायगा १ । दक्षिणा-थन २॥

—वत्सरः ॥ १३॥
दो अयनोका नाम १-वत्सर १ ॥ १३॥
समरात्रिन्दिवे काले विश्ववद्विषुवं च तत्।

जिसमें दिनरात समान होते हैं उस संक्रांति (तुला और मेष) के नाम १-विषुवत् १ विषुव २ ॥

मार्गशीर्षे सहा मार्ग भाग्रहायिक अप सः॥ १४॥

अगहन महीनेके नाम ४-मार्गशीर्ष १ सहस् २ मार्ग ३ आत्रहायणिक ४ ॥ १४ ॥

पौषे तेषसहस्यो द्वौ---प्षमासके नाम ३-पौष १ तैव २ धहस्य ३ %

—तपा माथे—

माघमासके नाम २-तपसू १ माघ २॥

—ऽथ फाल्गुने । स्यात्तपस्यः फाल्गु-निकः-

फाल्गुनमासके नाम ३-फाल्गुन १ तपस्य २ फाल्गुनिक ३॥

स्याच्चैत्रे चैतिको मधुः॥ १५॥

वित्रमासके नाम ३—वैत्र ९ वैत्रिक २ मञ्जू ३॥१५॥

वैशाखे माधवो राधो--

वैशाखमासके नाम ३-वैशाख १ माधव २ राघ ३॥

—ज्येष्ठे शुक्र —

ज्येष्ठके नाम २-ज्येष्ठ १ शुक्र २ ॥

-श्राचिन्त्वयम्। प्राषाहै-

श्राषाढमासके नाम २-शुचि १ श्राषाढ़ २ ॥

-श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६॥

श्रावणमासके नाम ३-श्रावण १नमस् २ श्राव-णिक ३॥ १६॥

स्युनंभस्यः प्रौष्ठपद्भाद्रभाद्रपदाः समाः ।

मादो मासके नाम ४ नमस्य १ प्रीष्ठपद २ माद ३ भाद्रपद ४॥

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि-

कारमासके नाभ ३-श्राधिन् १ इष २ श्राध-युज ३॥

स्यातु कार्त्तिके ॥ १७॥ बाहुलोर्जी कार्तिकको---

कार्तिक मासके नाम ४ कार्तिक १ ॥ १७ ॥ बाहुच २ कर्ज ३ कार्तिकिक ४॥

-हेमन्तः--

श्रगहन पूस माससे सिद्ध हुई ऋतुका नाम १ हेमन्त १ प्र

## -शिशिरोऽश्वियाम्।

माघ फाल्गुणसे सिद्ध हुई ऋतुका नाम ९---शिशिर १॥

वसन्ते पुष्पसमयः सुरिभ — चैत्र वैशाखसे सिद्ध ऋतुके नाम ३ वसन्त १ पुष्पसमय २ सुरिम ३॥

—र्ज्ञीष्म अष्मकः ॥ १८॥ निदाय उष्णोपगम उष्णा उष्मागमस्तपः।

ज्येष्ठ आषाढके ऋतुके नाम ७ प्रीच्म १ ऊष्म क २॥॥ ५८॥ निदाघ ३ उष्योपगम ४ उष्या ५ ऊष्मागम ६ तप ७॥

खियां प्रावृद् खियां भूम्ति वर्णा-

—ग्रथ शरत स्त्रियाम्॥ १९॥

सावन भादों के ऋतुके नाम २ प्रावट् १ वर्षा २॥

क्वार कार्तिकके ऋतुका नाम १ शरद् १॥ १९

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां• युगैः कमात ।

मार्गशीर्ष श्रादि दो दो महीनों के ये छः ऋतु होते है॥

संवत्सरो वत्सरोऽङ्हो हायनोऽ⊜ी शरत्समाः॥२०॥

वर्षका नाम ६ संवत्सर १ वस्स**र २ ऋब्द ३** हायन ४ शरद ५ समा ६ ॥ २० ॥

मासेन स्याद्होरात्रः पैत्रो-

मनुष्योंके एक महीनका पितरोंका ( दिनरात्रि ) दिवस होता है ॥

- वर्षेग्र देवतः।

श्रीर एकवर्षका देवताश्रोंका (दिवसित्र) दिवस होता है।।

दैवे युगसहस्रे दे ब्राह्मः—

देवोंके दो हजार युगका ब्रह्माका (हिनरात्रि) दिवस होता है।

कल्पौ तु तौ नृगाम् ॥ २१ ॥ उन दो युग सहस्रोको मनुष्योका कल्प सहते हैं, ब्रह्माका दिन रुनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी राम्चि जनुष्योंका प्रलयकाल होता है॥ २१॥

द्रन्वन्तरं तु दिख्यानां युगानापेकस-प्रतिः।

इक्हतर दिव्यवर्षका नाम १ मन्वन्तर १॥ सवर्तः प्रलयः कल्पः जयः कल्पान्त इत्यपि॥२२॥

प्रलयके नाम ५ संवर्त १ प्रलय २ कल्प ३ स्वय ४ कल्पान्त ५॥ २२॥

अस्त्री पंकं पुमान्पाप्मा पापं किरिवष-करमषम्। कलुषं वृजिनैनोऽघमंद्रो द्वृरित दुष्कृतम्॥ २३॥

पापके नाम १२ पंक १ पाप्सन् २ पाप ३
किल्बिष ४ कल्मष ५ कञ्चष ६ वृजिन ७ एनस् ८
आया ९ श्रांहस् १० दुरित ११ दुष्कृत १२ ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममिश्चयां पुण्यश्रयसी सुकृतं **दृष**ःग

धर्मके नाम ५ धर्म १ पुण्य २ श्रेयस् ३ सुक्रत ४ वृष ५॥

मुन्धीतिः प्रमद्गे हर्षप्रमोदामोद्संमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्द्युरानन्दः शर्मशात-मुखानि च ।

हर्षके नाम १२ मुद् १ प्रीति २ प्रमद ३ हर्ष ४ प्रमोद ५ स्रामोद ६ सम्मद ७ ॥ २४ ॥ स्रान-न्द्यु ८ स्रानन्द ९ शर्मन् १० शात ११सुख २॥

्रवःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्यांग् मंगळं ग्रुभम् । २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं कु-शळं क्षेममिख्याम् । शस्तं चा— •

कल्याग्राके नाम १२ माःश्रेयम् १ शिव २ मद ३ कल्यांगा ४ मङ्गल ५ ग्रुम ६ ॥ २५ ॥ माद्यक ७ मविक ८ मन्य ९ कुराल १०क्षेम ११ शस्त १२।

—ऽथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

पाप श्रीर पुण्यशःद तथा सुखशब्द पर्यंत जो शब्द हैं वे यदि द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिंगों में होते हैं ॥ २६॥ नतिलका मचिका प्रकाण्डमुद्धत-छुजौ। प्रशस्तवाचकान्यमू--

श्रद्यक्रेके नाम ५-स्तिह्नका १ मचार्चिका २ प्रकाण्ड ३ उद्ध ४ तहज ५॥

--न्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥ शुभकारक विधिका नाम-श्रय १ ॥ २७ ॥ दैवं दिष्ट भागधेयं भाग्यं श्ली नियति, विधिः ।

भाग्यके नाम ६—देव १ दिष्ट २ भागपेय ३ भाग्य ४ नियति ५ विधि ६॥

हेतुनी कारण वीजम्-

चैतन्यके नाम ३-श्लेत्रज्ञ ५ श्रात्मन २ पुरुष ३॥

प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् । प्रकृतिके नाम २-प्रधान १ प्रकृति २ ॥ विशेषः काछिकोऽवस्था— उमरका नाम १-श्रवस्था १ ।

—गुणाः सत्त्वं रक्षस्तमः ॥ २९ ॥ गुणोके नाम ३-सत्त्व १ रजस् २ तमस् ३ ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥ जन्मके नाम ६-जनुस् १ जनन २ जन्मन् ३ जनि ४ उत्पत्ति ५ उद्भव ६ ॥

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरी रिग्रः॥ ३०॥

प्राणिके नाम ६-प्राणिन् १ चेतन २ २ जन्मिन् ३ जन्तु ४ जन्यु ५ शरीरिन् ६ ॥ ३० ॥

जातिजातं च सामान्य— ् जातिमात्रके नाम ३=जाति १ जात २ सामान्य ३ ॥

#### व्यक्तिम्तु पृथगात्मता।

व्यक्तियाचकके नाम २-व्यक्ति १ पृथगा त्मता २ ॥

#### चित्तं तु चेतो हृद्धं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१॥

मनके नाम ७-चित्त १ चेतस् २ हृदय ३ स्वान्त ४ हृद् ५ सानस ६ मनस् ७ ॥ ३१ ॥ इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

#### ग्रथ धीवर्गः ५.

बुद्धिमंनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः । प्रेष्ने पळिष्धिश्वित्संवित्प्रतिपन्ज्ञिम् चैतनाः ॥ १॥

बुद्धिके नाम १४-बुद्धि १ मनीषा २ धिषणा १ घी ४ प्रज्ञा ५ शेमुषी ६ मति ७ प्रेक्षां ८ उप-लब्धि ९ चिन् १० सिवद् ११ प्रतिपद् १२ इप्ति १३ चेतना १४ ॥ १॥

#### धीर्धारेगावती मेधा---

कही हुई वार्त्ताको धारण रखनेवाली बुद्धिका नाम १-मेधा १।।

-- सकल्पः कर्म्म मानसम्।

मनकी कामनाका नाम १-संकल्प १॥

## चित्राभोगो मनस्कार-

किसी वस्तुमें चित्तके तत्पर हो जानेके नाम २-\*चित्तामोग १ मनस्कार २ ॥

#### श्रची संख्या विचारणा॥ २॥

विचारके नाम ३ - चर्चा १ संख्या २ विचा-रणा ३ ॥ २ ॥

#### अध्याहारस्तर्क जहो-

अपूर्व विचारके नाम ३-अध्याहार १ तर्क २ सह ३॥

विचिकित्सा तु संशयः। संदेहाद्वापरौ

सन्देहके नाम ३-विचिकित्सा ूं संशय २. संदेह ३ द्वापर ४।।

## -य समी निर्णयनिश्चयी ॥ ३॥

निश्चयके नाम २-निर्णय १ निश्चय २ ॥ ३ ॥

#### मिथ्यादृष्टिनं क्तिकता—

परलोकको सिथ्या जाननके नास २-सिथ्या-दिष्टि १ नास्तिकता २ ॥

## व्यापादो द्रोहचिन्तनम्।

परद्रोहके नाम २-व्यापाद १ द्रोहचिन्तन २ ॥

## समौ चिद्धान्तराद्धःन्तौ-

निश्चय की हुई वातके नाम २-सिद्धान्त १ राद्धान्त २ ॥

#### भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः॥ ४॥

असके नाम ३-आन्ति १ सिथ्यामिति २ अस ३ ॥ ४ ॥

सविदागः प्रतिज्ञान नियमाश्रवसं-श्रवाः ॥ अंगीकाराम्युपगमप्रतिश्रवसमा-धयः ॥ ५ ॥

र्पातज्ञाके नाम १० सविद् १ आसगू २ प्रसिक्त ज्ञान ३ नियम ४ आश्रव ५ संश्रव ६ आङ्गीकार ७ अभ्युपगम ८ प्रतिश्रव ९ समाधि १० ॥ ५ ॥

#### मोक्षे धीर्जान-

मोक्षमें बुद्धि लगानेका नाम १-ज्ञान १।।

#### –ग्रन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मोक्षसे अन्यत्र शिल्पविद्या श्रीर शास्त्रमें बुद्धि लगानेका नाम-१ विज्ञान १ ॥

मुक्तिः कैवस्यनिर्वा**ग**श्रेयोनिःश्रेयसाः स्तम् ॥ ६ ॥ मोन्तोऽपवर्गो—

मीक्तके नाम ८-मुक्ति १ कैवल्य २ निर्वास ३ श्रेयस् ४ निःश्रेयस् ५ अस्त ६ ॥ ६ ॥ मोद्ध ७ अपवर्ग ८ ॥

थाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम्।

श्रज्ञानके नाम ३-श्रज्ञान १ श्रविद्या २ श्रव्ह-स्मति ३ ॥

कपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषयः समी॥७॥ पश्चिविपयों के नाम ५-इन्प १ शब्द २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५ ॥ ७ ॥

#### गोचरा इन्द्रियार्थाश्च-

इकडे क्यरसादिके नाम ३-विषय १ गोचर २ इन्द्रियार्थ ३॥

#### ह्षीकं विषयीन्द्रियम्।

इद्रियके नाम ३-हषीक ५ विषयी २ इन्द्रिय ३॥

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि--

कर्मेंद्रियोके नाम–गुदा× श्रादि ॥ मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

ं ज्ञानिद्रियों के नाम-५ मनस् १ नेत्र २ आदि\*॥८॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः। तिकोऽम्लश्चरसाःपुसि—

् छः रसोके नाम-तुवर-कषाय १ मधुर २ स्वतमा ३ कद्व ४ तिक्त ५ त्रम्ल ६ ॥

## —तद्धत्सु षडमी त्रिष्ठु॥ ९॥

कषाय श्रादि रसवाचक शब्द यदि द्रव्यवाचक हो तो तीनो लिगोमें होते है ॥ ९ ॥

विमर्होत्ये परिमलो गन्धे जनमनोहरे। मनुष्योके मनको हरनेवाले घिसनेसे उत्पन्न हुए सुगैन्यका नाम १--परिमल १

## ग्रामोदः सोऽतिनिर्दारी-

अस्मन्त मनको हरनेवाले सुगंधका नाम ९०० आसोद १।।

#### —वाच्यक्रिगत्वमागुणात् ॥ १०॥

यहासे लेकर ''गुणे ग्रुक्कादयः पुसि'' इससे पहले जो शब्द है वे वाच्यतिङ्ग अर्थात् विशेष्य-तिग होते हैं।। १०।।

#### समाकर्षी तु निर्हारी-

दूरसे ही जिसकी गन्व आवे उसके नाम २--समाकर्षिन् १ निर्होरिन् २ ॥

— सुरभिन्नौग्यतर्पणः । इष्टगन्धः सुग-न्धिः स्या-

ऋखुत्तमगन्धके नाम ४४-सुरिम १ घ्रागातपैगा २ इष्टगन्ध ३ सुगंधि ४ ॥

-दामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

मुखको सुगंधित करनेवाले ताम्बूल श्रादिकी गंधके नाम २--श्रामोदिन १ मुखवासन २॥ १९॥

## पूरि गन्धिस्तु दुर्गन्धो-

दुर्गन्थके नाम २--पूतिगन्धि १ दुर्गन्थ २ ॥
-विस्नं स्यादामगन्धि यत् ।
कस्ते मांसादिके गन्धका नाम १--विस्न १ ॥

गुक्रगुञ्जगुचिश्वेतविशद्श्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ श्रवद्ातः;सितोगौरो बलचो धव-स्रोऽर्जुनः ।

उज्ज्वलके नाम १३--शुक्क १ शुक्र २ शुचि ३ इवेत ४ विशद ५ रुयेत ६ पांडर ७ ॥ १२ ॥ अवदात ८ सित ९ गौर १० वलच्च ११ धर्वन १२ अर्जुन १३॥

#### हरिणः पाण्डुरः पाण्डु-

कुछ पीलापन मिले हुए सफेदवर्णके नाम ३--हरिया १ पांहुर २ पांहु ३ ।

रीषत्वाण्डुस्तु धूसरः॥ १३॥

किश्चित् उज्ज्वलका नाम १--धूसर १॥ १६॥

कृष्णे नीलाचितश्यामकालश्यामळमे-चकाः ।

काले वर्णके नाम ७--कृष्ण १ नील २ असित ३ क्याम ४ काल ५ क्यामल ६ मेचक ७ ।।

<sup>× &#</sup>x27;पायूपस्थे पाशिपादा वाक्चेतीनिद्रयसं प्रह: ।'' श्रर्थात्-पायु १ उपस्थ २ पाशि३ पादे । श्रोर वाक् ५ यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं ॥

<sup># &</sup>quot;मनः कर्णस्तथा नेत्र रसना च त्वचा सह। नासिका चेति षदतानि घीन्द्रियािश प्रचक्षते।" मर्थात्—मन १ कर्ण २ नेत्र ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ श्रीर नासिका यह ६ ज्ञानेन्द्रिय (धीन्द्रिय) है।।

#### पीतो गौरो हरिद्राभः—

पीले वर्णके नाम ३--पीत १ गौर २ हरि-इाम ३॥

#### -पालाशो हरितो हरित ॥ १४ ॥

हरे वर्णके नाम--पालाश १ हरित २ हरित् ३।। १४।।

## रोहितो लोहितो रक्तः-

लालवर्णके नाम ३--रोहित ९ लोहित २ रक्त ३॥

## -शोगाः कोकनदच्छविः।

लाल कमलके समान वर्णके नाम २--शोगा १ कोकनदच्छवि २ ॥

#### भ्रव्यक्तराग्रस्त्वरुगा-

थोड़े लालक।नाम १--श्रह्या १ ॥

-भ्वेतरक्तस्तु पाटलः॥ १५॥

मिले हुए सफेद श्रीर लालवर्णका नाम १— पाटल १॥ १५॥

#### श्याबः स्यात्कपिशो-

मिले हुए काले श्रीर पील रङ्गके नाम २---झ्याव १ कॉपश २ ॥

## -धूम्रधूमली कृष्णलोहिते।

मिले हुए काले श्रोर लालवर्णके नाम ३-धूम्र १ भूमल २ कृष्णलोहित ३॥

कडारः क<sup>पितः</sup> पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपि-ङ्ग्लौ ॥ १६॥

वानरकेसे रङ्गके नाम ६-कडार १ कपिल २ पिङ्ग ३ पिशङ्ग ४ कद्रु ५ पिङ्गल ६ ॥ १६॥

## चित्रं किमीरकस्माषशर्वलैताश्च कर्डुरे

चित्रवर्णके नाम ६-चित्र १ किमीर २ कल्माष इशवल ४ एत ५ कर्बुर ६॥

#### गुणे शुक्कादयः पुंचि गुणिर्निगस्तु सद्धति ।! १७॥

गुगावाचक गुक्क श्रादि शब्द पुँतिंग होते हैं श्रीर

द्रव्यवाचकशब्द द्रव्यके श्रतुसार लिंगमें होते हैं ॥ १७॥

इति धीवर्गः ॥ १७ ॥

## अथ शब्दादिवर्गः ६.

#### ब्राह्मी तु भारती भाषा गीवांग्वाशी सरस्वती।

सरस्वतीके नाम ७-ब्राह्मी १ भारती २ भाषा ३ गिर गिरा ४ वाच् ५ वाणी ६ सरस्वती ७ ॥

#### न्याहार उक्तिर्छिपितं भाषितं यचनं यचः॥१॥

बोलनेके नाम ६-व्याहार १ उक्ति २ लिपत ३ भाषित ४ वचन ५ वचस् ६॥ १॥

#### ग्रपभ्रशोऽपशब्दः स्या-

श्रपञ्चष्ट श्रर्थात् व्याकरणकी रीतिसे श्रह्यद्व शब्दका नाम १-श्रपञ्चेश १।

## च्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः।

व्याकरणशास्त्रानुसार ग्रुद्ध शब्दका नाम १--शब्द १॥

#### तिङ्सुवन्तचयो वाक्यं क्रिया **वा** कारकान्विता॥२॥

तिङन्तसुबन्तके समृह श्रीर कारकयुक्त किया का नाम १-वाक्य १।।२॥

## श्रुतिः स्त्री वेद ग्राम्नायस्रयी--

वेदके नाम ४ – श्रुति १ वेद २ आम्नाय ३ त्रयी ४॥

#### --धर्मस्तु तद्विधिः।

वैदमें कही हुई संध्या तर्पण आदि विधिकार्

## श्चियामृक्सामयज्ञुषी--

वेदोंके नाम ३—ऋच् १ यजुष् २ सामन् ३ ॥ -इति वेदाख्यख्यी ॥ ३ ॥

इन्हीं तीनों वेदोका इकहा नाम १-त्रयी १ ॥ ३॥

शिक्षेत्यादिश्चतेरङ्ग--

वेदके छः अङ्गोके नाम ६-शिचा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छन्दस् ६॥

मोंकारप्रणवी समी।

श्रोकारके नास २-श्रोकार १ प्रणाव २ ॥

इतिहासः पुरावृत-

इतिहासके नास २-इतिहास १ पुरावृत्त २ ॥ सुदानाचाह्ययः स्वराः ॥ ४ ॥

उदात्त, श्रनुदास, स्वरितका नाम १--स्वर १ ॥ ४॥

## आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थ-शास्त्रयोः।

तर्कविद्याका नाम १--म्रान्वीक्षिकी १ म्रर्थशा-स्नका नाम १--दंडनीति १॥

ग्राख्यायिकोपत्रब्धार्थाः--

जिसका ऋर्थ जान लिया हो उस कथाके नाम र-ऋाख्यायिका १ उपलब्धार्था २ ॥

षुराणं पश्चतक्षणम्॥ ५॥

पुरायोकि नाम २-पुराया १ पञ्चलक्षया २ ॥ ५॥

प्रवंधकस्पना ज्ञया-

कल्पनाकी हुई कार्यवरी त्रादि कथाके नाम २-प्रवन्धकल्पना १ कथा २ ॥

प्रवह्निका बहु छिका--

जिसके सुननेसे सतलव जाना जाय और विचार करनेसे दूसरा सतलव निकले उस (कहानी) के नास २--प्रविका १ प्रहेलिका २

स्मृतिम्तु धर्मसंहिता-

धर्म जाननेको रचना किये हुए श्लोकोके समूह के नाम २--स्पृति १ धर्मसंहिता २ ॥

-समाहतिश्तु संग्रहः ॥ ६ ॥ संग्रहकेनाम २-समाहति १ संग्रह २ ॥ ३ ॥

समस्या तु समासाथ-

जिसमें कुछ त्र्राध पूरा किवा जाय उसकें नाम २--समस्या ५ समासार्था २ ॥ -किंवदन्ती जनश्रुतिः।

लोकप्रवाद अर्थात् दुर्वशके नाम २--किंवदन्ती १ जनश्रुति ॥ २ ॥

वार्ता प्रवृत्तिवृत्तान्त उदन्तः स्या-

वार्ताके नाम ४--वार्ता १ प्रवृत्ति २ वृत्तान्त ३ उदन्त ४।।

द्थाह्यः॥ ७॥ ग्राख्याह्व ग्रिभिधानं च नामधेवं च नाम च ।

नामके नाम ६--आहय १ ॥ ७ ॥ आरुया २ आहा ३ अभियान ४ नामधेय ५ नामन् ६॥

हृतिराकारणाहानं-

पुकारनेके नाल ३--हृति १ आकार**गा २** आह्वान ३॥

--संहृतिर्वेहुभिः कृता ॥ ८ ॥

बहुत जनोंकरके पुंकारनेका नाम ५--संहूति ।। ८।।

विवादो व्यवहारः स्या-

विवादके नाम २--दिवाइ १ व्यवहार २॥

— दुवन्यासन्तु बाह्यस्य।

वार्ताका प्रारम्भ करनेके नास २--उपन्यास १ वाङ्मुख २।।

उपोद्धात उदाहारः--

जो बात श्रागे कही जाय उसके उपयोगी बातके नाम २--उपोद्धात १ उदाहार:२ ॥

-शपनं शपधः युमान्॥ ९॥

सौगन्ध खानेके नास २--शपन १ शपथ ३

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छः च—

प्रश्नके नास ३--प्रश्न १ अनुयोग २ पृच्छा ३॥

—पतिवाक्योत्तरे समे।

उत्तरके नाम २--प्रतिवाक्य १ उत्तर २ ।।

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यान-

झूठे दोष लगानेके नाम २—मिथ्यामियोग १ अभ्याख्यान २ ॥

मथ मिथ्याभिसंशनम् ॥ १० ॥ ग्रभि-शापः —

मदिरादिपान आदिका झ्टा दोष लगानेके नाम २ — भिथ्याक्षिंशसन १॥ १०॥ अभिशाप२

प्रणादस्तु शब्दः स्यादतुरागजः । श्रतुरागज शब्दका नाम १—प्रणाद १॥ यशः कीर्तिः समज्ञा च—

कीर्तिके नाम ३ —यशस् १ कीर्ति २ समज्ञा ३ —स्तवः स्तोवं स्तुतिर्ज्जातेः ॥ ११ ॥

स्तुतिके नाम ४—स्तव १ स्तोत्र २ स्तुति ३ नुति ४॥ ११॥

याम्रेडितं द्विहिस्स-

दोतीनवार कहनेका नास ५--आम्रेडित ५।

— सुच्चैर्जुष्टं तु घोषणा। जोरसे वोलनेके नामर--उच्चैर्जुष्ट १ घेषणा २ काकुः ख्रियां विकारो यः शोकभीत्या-विभिध्वेनेः॥ १२॥

शोकभयकामादियुक्त वचनका नाम १--काकु ॥ १२ ॥

् अवण[त्तेपनिवदिपरीवादापवादवत। उपक्रोशो जुुष्ता च कुत्सा निन्दा च गईग्रो॥१३॥

निन्दाके नाम ५०— अवर्ण १ आक्षेप २ निर्वाद ३ परीवाद-- (परिवाद ) ४ अपवाद ५ उपकोश ६ जुगुप्सा ७ कुरसा ८ निन्दा ९ गहुंगा ५०॥१३॥

पारुष्यमतिषादः स्या-

कटोर भाषग्रके नाम २--पारुष्य १ स्रति-बाद २ ॥

—द्भर्त्सनं त्वपकारगीः। ललकारनेका नाम १--भर्त्सन १॥

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परि-भाषणम्॥ ४१॥ खिजानेका नाम १--पिरभाषरा १ ॥ १४ ॥ तत्र त्वाचारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

परस्त्री या पुरुषसे मैशुनार्थ वार्त्ता करनेका नाम १-श्राक्षारणा (श्राक्तारण १)॥ वाचिक २॥

स्यादाभाषण्यमालापः-

सम्बोधनपूर्वक वार्ला करनेका नाम २--श्रा**भा-**षरा १ श्राजाप २ ॥

प्रलाषोऽत्रथंकं द्यः॥ १५॥ त्र्यतर्थं वचनका नाय १--प्रलाप १॥ १५॥ स्रतुलाषो सुहुभाषा—

चारम्बार भाषगाके नाम २--श्रतुताप १ मुहु-भीषा ॥ २ ॥

—विलापः परिदेवनम्। रोनेके नाम २--विलाप १ परिदेवन २॥ विश्रलापो विरोधोक्तिः—

परस्पर विरुद्ध भाषराके नाम २--विप्रलाप १ विरोधोक्ति ॥ २ ॥

— रंगलापो आध्यां मिथः ॥ १६ ॥ परस्पर योग्यभाषग्रका नाम १--संलाप १ ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचन-

सुन्दर वचनके नाग २--सुप्रलाप ५सुवचन॥२॥

—मप्रापन्तु निह्नवः।

मुकर जानेके नाम २--श्रपलाप १ निहव २ ॥

संदेशवाग्वाचिकं स्या-

संदेशके नाम २--सन्देशवाच् १ वाचिक २॥

–द्राग्धेदास्तु निपूनरे ॥ १७॥

रुशती शब्दसे लेकर सम्यक्शब्दपर्यंत जी शब्द हैं वे तीनों लिंगोंमें होते हैं 11 9% 1

हशती बागकल्याणी—

श्रमंगल वाक्यका नाम १--स्शती ५।।

## स्यात्कल्या तु शुभात्मिका।

शुभवाणीका नाम १--कल्या १।।

#### ग्रत्यर्थमधुरं सान्त्वं —

श्रति मिष्टवचनका नाम १-सान्त्व १॥

## -संगतं हृद्यंगमम् ॥ १८ ॥

सम्बद्ध श्रर्थात् योग्य वचनके नाम २--संगत १ हृद्यगम २ ॥ १८ ॥

#### निष्दुरं परुष-

कठोरवचनके नाम २--निष्हुर १ परुष २।।

#### -ग्राम्यमश्लीछं-

भाँड् श्रादिके वचनोंके नाम २-- प्राम्य १ श्रद्यतील २ ।।

#### सुनृतं प्रिये। सत्ये-

प्रिय श्रीर सत्यवचनका नाम १ सृनृत १॥

-ऽध् सकुल क्लिब्टे परस्परपराहते॥१९॥ पूर्वापर विरुद्ध वचनके नाम ३--सकुल १ लिकष्ट २ परस्परपराहत ३॥१९॥

## छुप्तवर्णपद् ग्रस्तं-

श्चधकहे वचनके नाम २--छप्तवर्णपद १ प्रस्त २।।

## निरस्तं त्वरितोदितम्।

जलदी कहे हुए शब्दके नाम १२--निरस्त १ स्वरितोदित २ ॥

## ध्रम्बूकृतं सनिष्ठीव—

थूकसहित बोलनेके नाम २--श्रम्बूकृत ू9 सनिष्ठीव २ ॥

## —मबदं स्याद्नर्थकम् ॥ २०॥

अर्थन्यूनवचनके नाम २--अबद्ध **५ अन-**र्थक२॥२०॥

#### ग्रनक्षरमवाच्यं स्या-

श्रकथनथोग्य निन्दायुक्त वचनके नाम २--श्रत-द्वर १ श्रवाच्य २ ॥

## -दाइतं तु मृषार्थकम्।

झुठाईका नाम १--श्राहत १ ॥

''सोल्ळुण्ठनं तु सोत्प्रास-

हास्यसिंहत वचनके नाम २--सोल्खुण्ठन १ सोत्प्रास २ ॥

## —भगातं रतिकृजितम्<sup>?}।</sup>

मैथुनके शब्दके नाम २--मियात १ रतिकू-जित २।।

#### ग्रथ म्लिष्टमविस्पष्ट-

अप्रतीकके नाम २-- म्लिष्ट १ अविस्पष्ट २ ॥

--वितथ त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

झूठके नाम २--वितथ १ अनृत २॥२१॥

#### सत्य तथ्यमृतं सम्य--

सत्यके नाम ४--सत्य १ तथ्य २ ऋते ३ सम्यच् ४॥

## --गमृनि त्रिषु तद्वति ।

सत्य आदि शब्द द्रव्यवाचक हो तो तीनो लिगोमें होते हैं।।

# शब्दे निनाद्निनद्ध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिर्धोषिन हाँद्नाद्निस्वाननिस्वनाः। ग्रारवारावसंरावविरावा-

शब्दके नाम १७--शब्द १ निनाद २ निनद ३ ष्विन ४ ष्वान ५ रव ६ स्वन ७ ॥ २२ ॥ स्वान ८ निर्धोप ९ निर्हाद १० नाद ११ निस्वान १२ निस्वन १३ श्चारव १४ श्चाराव १५ सराव १६ विराव १७ ॥

## —ग्रथ मर्मरः ॥ २३ ॥ स्वनिते बस्रप-र्णानां—

वस्त्र त्रीर पत्तीके शब्दका नाम १--मर्मर १॥३३॥

## भूषणानां च शिक्षितम्।

गहनेके खनखनाहटका नाम ५-- शिश्वित १।-

निक्वाणो निक्षणः क्वा**णः क्वणः क्वणः** निक्वणः ॥ २४॥ वीग्रादि शब्दोंके नाम ५--निक्वाग्रा १ निक्रग्र २ काग्रा ३ क्वग्रा ४ क्वग्रान ५ ॥ २४ ॥

वीणायाः क्विशाते प्रादेः प्रक्वाणप्रक्व-जावयः।

केवल वीगाके बाजोंके नाम ३--प्रकाश १ प्रकशा २ उपक्वगान श्रादि ३।।

कोलाहलः कलकलः-

कोलाहल ने नाम २--कोलाहल १ कलकल २ ॥
--स्तिरश्चां वाशित कतम् ॥ २५॥
पिच्योके शब्दके नाम २--वाशित १ कत
२ ॥ २५॥

स्त्री प्रतिश्चनप्रतिश्वाने--श्रानाजकी श्रावाज श्रर्थात् गूँजनेकेशनाम २--प्रतिश्चत् १ प्रतिष्वान २ ॥

--गीतं गानिमिने समे । गानिके नाम २--गीत १ गान २ ॥ इति शञ्दादिवर्गः ४६ ॥

अथ नाटचवर्गः ७.

×निषांदर्षभगान्धारषङ्जमध्यम धैवताः ॥ पश्चमभ्चेत्यमी सप्त तन्त्री-कण्डोत्थिताः स्वराः ॥ १॥

वीगासि वा कठसे उत्पन्न होनेवाले स्वरोके नाम ७--निषाद १ ऋषभ २ गान्धार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धेवत ६ प्रस्तम ७ ॥ १ ॥

## काकली तु कले सूक्ष्मे -

ד षड्जं रौति मय्रस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम्। श्रजाविको च गांधारं कोश्चो नदित मध्यमम्॥॥॥ पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पश्चमम्। श्रश्चस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुज्जरः ॥२॥" अर्थात् भोर षड्ज शब्दको बोलता है। वैल ऋषम शब्द को, सेड बकरी गान्धार स्वरको, कोश्च पत्ती मध्यम स्वरको, घोड़ा वैवत स्वरको, कोश्चिल वसन्त कालमें पश्चम स्वरको श्रीर इस्ती निषाद स्वरको बोक्ता है।

--वीणा तु बल्लकी । विपञ्जी--वीगाके नाम ३--वीगा १ बल्लकी २ विपक्षी ३॥

न्सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी

सात तारोंसे बोलनेवाली विखाका नाम १-परिवादिनी १॥३॥

ततं वीणादिकं व।च-वीणादिक वाजेका नाम १--तत १॥
मानद्र मुरजादिकम्।
मृदगत्रादि वाजेका नाम--१--त्रानद्र १॥
वंशादिकं तु सृषिरं-वंशी त्रादि वाजेका नाम १--सृषिर १॥
कांस्यताळादिकं घनम्॥ ४॥
कांस्यताळादिकं घनम्॥ ४॥
चतुर्विधयदं वाच वादित्रातोचनाम-कम्

तत आदि चारों वाजोंका इक्छा नाम ३--वाद्य १ वादित्र २ आतोद्य ३ ॥

मृदङ्गा मुरजा--

मृदङ्गके नाम २-- मृदङ्ग १ मुरज २ --भेदास्त्वङ्क्ष्यालिङ्गयोध्वकास्त्रयः॥५॥ मृदङ्गके भेद ३--अङ्गय १ त्रालिङ्गय २ कर्षक

३॥५॥

स्याद्यशःषटहो दक्का--नगाडेके नाम २--यशःषटह १ दक्का २ ॥ भेयःमानकदुन्दुभी ।

भोसा नंफीरी श्रादिके नाम ३--मेरी १ श्रानक २ दुन्दुमि ३॥

स्रातकः पटहोऽस्त्री स्यात्--ढोलके नाज २--त्रानक १ पटह २ ॥

- को गा 'वी गा दिवादनम् ॥ ६॥ जिससे वी गादि वजाते हैं उस नक्खी श्रादिका नाम १--को ग १ ॥ ६॥

वीगादण्डः प्रवातः स्या--र्वागाकी डण्डी हा नाम १--प्रवात १ । - स्ककुभर्यु प्रसेवकः ।

वीयाके नीचे जो गोल गोल चर्मसे नढ़ा हुआ होता है उसके नाम २- ककुम १ प्रसेवक २ ॥

कोलम्बकन्तु कायोऽत्या--

बीगाके सर्वाङ्गका नाम ५-कोलम्बक ५

--उपनातो ि बन्धनम् ॥ ७ ॥ वीयामे जहा तार वाधे जाते है उसके नाम २--उपनाह १ निवन्धन २ ॥ ७ ॥

वाचमभेदा डमरुमङङ्कृढिण्डिमसर्भुराः। मर्दलः पणवोऽत्ये च-

डमरुका नाम १---डमरु १ ॥ वडे़ डमरुका नाम १--मइडु १ ॥ डिंडिंग का नाम १--डिडिम १ ॥ क्कांकका नाज १--क्कंकर १ ॥ तथा मदेल, प्राव आदि और मी वाजे हैं॥

--नर्तकीलाचिके समे॥ ८॥

नाचनेवालीके नाम २--नर्तकी १ लासिका २॥८॥ विलम्बितं हुतं मध्यं तत्त्वमो**घो घनं** कमात ।

धीरे धीरे <u>नाचका</u> नाम १--तत्त्व **१॥** शीघ्र नाचका नाम १--श्रोघ १॥ सध्यम नाचका नाम १--घन १

तालः काळकिया २४---समय श्रीर कियाके प्रमाणका नाम १--ताल १॥

--लयः साम्य--

बाजा श्रीर नाचका एक संग ताल छूटनेका नाम १ — लय १॥

--मयाख्यियम् ॥ २ ॥

इसके आगे कहे ये शब्द न्त्रीतिङ्गवाची नहीं हैं ऋर्यात् पुलिगनपुसकलिजवाची होते हे ॥ ९ ॥

नाण्डव नटनं नाटचं लाग्य नृत्यं च नर्तनम् ।

नावके नाम ६—ताडव १ नटन २ नाटय ३ लास्य ४ मृत्य ५ नर्सन ६॥

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं चयम् ॥ १० ॥

नाच गीत वाजा इन तीनके इकड़े नाम २ — तौर्यात्रिक १ नाट्य २ ॥ १० ॥

अङ्गसन्य युकुंसश्च सृङ्गंसश्वेति नर्तके स्त्रीवरधारी पुरुषो--

स्त्रीवेशधारी नाचंत्रवाले पुरुषके नाग ६-अकुस भुकुस २ भूकुस ३॥

- -- नाटचं क्ती गणिकाज्जुका॥ ११॥ केवल नाटकमे ं नाचने गानेवाली वेक्याका नाम १--- श्राज्जुका १॥ ११॥

भगिनीपविरावुत्ती-

बहनोईका नाम ५--- श्राव्यत्त ५॥

--भावा विद्धा--विद्वानुका नाम १---भाव १॥

--नथाबुकः। जनको--पिताका नाम १—-श्राहक १॥ ' युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥१२॥ युवराजके नाम २—कुमार १ भर्तृदारक २॥१२॥

राजा भद्वारको देव--राजाके नाम २--- महारक १ देव २ ॥ --स्तत्सुता भर्त्रदारिका। राजकन्याका नाम १--भर्तृदारिका १॥ देवी कृताभिषकाया--श्रभिषेक की हुई रानीका नाम १ — देवी १ ॥ मितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥ श्रन्य राजिल्लियोंका नाम १ — भट्टिनी १॥१३॥ भ्रब्रह्मण्यमवध्यः स्क्री -श्रवध्य वचनका नाम १—श्रव्रह्मण्य १ ॥ -राजभ्यातस्<sub>वै</sub> राष्ट्रियः <sup>।</sup> राजाके सालेका नाय-- १ राप्ट्रिय १॥ ग्रम्सा माता-माताके नान २—अस्वा १ रातृ २ N ऽथ वाहा स्याद्वासू— कुमारीके नाम २ - वाला १ वासू २॥ -रार्यस्य सारिषः ॥ १४ ॥ श्रेष्ठके नाम २ — स्त्रार्घ १ मारिष २ :॥ १४ ॥ अत्तिकाभगिनी ज्येष्ठा--

जेठी वहन मानाम १— ग्रितिका १॥ निष्टानिर्देहणे मन्त्रे।

नाटककी संित्रयोक नास २—निहास । १ निर्वेहरा २ ॥

हण्डे हओ हलाहाने नीचां चेटीं सर्वी प्रति॥ १५॥

नीच स्त्रीके पुकारनेमें हण्डे १ ॥ चेटीके पुकारनेमें — हला १ ॥ सखीके पुकारनेमे — हला १ ॥ १५ ॥

ऋड़ हारोऽड़ चिह्नेपो--लचकनेके नाम २---श्रहहार १ श्रह्मविक्षेप २॥ -व्यञ्जकाभिनयौ समी।

भाव बतानेके नाम २-व्यञ्जक १ श्रिमनय २॥ निर्वृत्ते त्वंगसत्त्वाभ्यां द्वे विष्वांगिक-सात्त्विके ॥ १६॥

भौंह सटकानेका नास १—श्रांगिक १ अन्तः करराके भावका नाम १—सास्विक १॥१६॥

ऋङ्गारद्वीरकङ्णान्भुतहाम्यभयानका वीभन्सरौद्रो च रसाः-

साहित्यिक रसोंके नाम १०--श्रिशार १ वीर २ करुण ३ श्रद्भुत ४ हास्य ५ भयानक ६ बीमत्स ७ रोद ८ शांति ९ (वात्सल्य १०)

श्रृङ्गारः शुचिरुज्वलः ॥ १७॥ श्रुङ्गारके नाम ३—श्रुङ्गार १ शुचि २ उज्ज्वल ३॥ १७॥

गत्माहवर्धनो वीरः -बीरत्सके नान २—उत्साहपर्धन १ बीर १ ॥ --कः रूप्य कस्या धृया । छत्राद्यानु-कम्पा स्यादनुकोशो -

करुणा रसके नाम ७—ारुण्य १ करुणा २ वृत्या २ कपा ४ दया ५ अनुकपा ६ अनुकोश ७ ॥ -ऽप्यथो हुप्तः ।। १८ ॥ हास्रोहा य च-हास्यग्यकं नाम २-हस १ ॥ १८ ॥ हास २ हास्य ३ ॥

—वीभन्सं विकृत विश्वित द्वयम्। वीभत्तरतके नाम २-वीभत्स १ विकृत २॥ विभाग्यं द्वासमाध्ययं चित्र-श्रद्भुतरके नाम ४-श्रद्भुत १ श्राइचर्य २ विस्ताय ३ वित्र ४॥

मप्यस भैः वस् ॥ १९॥ दः ग्रं भीष्य भी मं ोर भीमं भयान-कम् । भयकुरं प्रतिभय-

भयानक रसके नाम ९-भैरव १ ॥ १९ ॥ दारुण २ भीषण ३ भीष्म ४ घोर ५ भीम ६ भयानक ७ भयंकर ८ प्रतिभय ९॥ -रोद्र त्यरोद्ररसके नाम २-रोद्र १ उत्र ३॥
-ममीत्रिष्ठ ॥ २०॥ चतुर्द्शश्रद्भुतादि चौदह शब्द द्रव्यवाचक हो तो
विशेष्यनिद्रलिङ्ग जानना ॥ २०॥

-द्रस्वास्तो भीतिभीः साध्वसं भयम्। भयके नाम ६-दर १ त्रास २ मीति ३ भी ४ साव्यस ५ भय ६ ॥

विकारो मानवी आवी
सनके विकारका नाम १-भाव १॥

-ऽनुआवो भावबोधकः॥ २१॥

भावप्रकाशकका नाम १-श्रनुसाव १॥ २१॥

गर्वोऽभ सानोऽह्यकारो
श्रहंकारके नाम है ३-गर्व १ श्रिभमान २

श्रहंकार ३॥

-मानिधनसमुत्रतिः। बड्ण्पनण नाम १-मान १॥ अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीटःवमाननावज्ञावहेलनमः सूक्षग्राम्।

निगदरके नाम .९-ग्रनादर १ परिमव २ परीभाव ३ तिरस्किया ४ ॥ २२ ॥ रीढा़ ५ अवमानना ६ अवज्ञा ७ अवहेलन ८ असूर्फ्या ९।

मन्दात्त हीख्रपा ब्रीडा लज्जा-लज्जाके नाम ५-मन्दात्त १ ही २ त्रपा ३ ब्रीडा ४ लज्जा ५॥

-सापत्रपान्यतः ॥ २३॥
दूसरेसे लजानेका नाम १-श्रपत्रपा १॥ २३॥
द्वान्तिस्तितिद्याद्वमाके नाम २-द्वान्ति १ तितिद्या २॥
-ऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृद्धा।
परधन लेनेकी इच्छाका नाम १-श्रभिष्या १॥
अक्षान्तिरीष्यांईष्यंके नाम २-श्रद्यान्ति १ ईष्यां २॥

- Sसूया तु दोषारोपो गुजेष्वपि ॥ २४॥ पराये गुणोमें देश प्रसिद्ध करनेका नाम १-असूया १॥ २४॥

वैरं विरोधो विद्वेषो-वैरके नाम ३-वैर १ विरोध २ विद्वेष ३॥ मन्युशोको तु शुक् स्त्रियाम्। शोकके नाम ३--मन्यु १ शोक २ शुच् ३॥ पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि॥ २५॥

पछतानेके नाम ३--पश्चात्ताप १ ऋतुताप २ विप्रतीसार ३॥ २५॥

कोपकोधामषरोषप्रतिघा स्ट्कुधौ श्चियौ।

कोधके नाम ७--कोप १ कोध २ अप्रम**र्थ ३ रोग** ४ प्रतिघा ५ रुष् ६ कुछ् ७

शुची त चरिते शील-शुद्ध श्राचरणका नाम १-शील १॥ -मुन्मादश्चित्तविश्वमः॥ २६। सिडीपनके नाम २--उन्माद १ वित्तविश्रम २॥ २६॥

प्रमाना प्रियता हाई प्रेम स्नेहो-प्रेमके नाम ५--प्रेमन् १ प्रियता २ हाई ३ प्रेमन् ४ स्नेह ५॥

-ऽथदोहदम् । इच्छा कांचा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा छिप्सा मनोरथः २७ कामो-ऽभिलाषस्त्रेषश्च-

इच्छाके नाम १२—दोहद १ इच्छा २ कांद्वा ३ स्प्रहा ४ ईहा ५ तृष् ६ वांछा ७ लिप्सा ८ मनोरथ ९॥ २७॥ काम १० अभिलाष ११ तर्ष १२॥

-सोऽत्यर्थ लालसा द्वयोः।
बही इच्छाका नाम १-साससा १।
उपाधिको धर्मचिन्ताधर्मचिन्ताके नाम २-उपाधि १ धर्मचिन्ता २।

पुस्य धिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ।।

कः पीड़ाके नाम २ — ऋाधि १ मानसी व्यथा २ मः ८ ॥

#### स्याच्चित्रताम्मृतिराध्यान-

स्मरणके नाम ३-चिता १ स्पृति २ अध्यान ३॥

-मुरकण्डोरकलिके समे।

कासादिसे उत्पन्न स्मृतिके नाम २—उत्कठा ९ उत्कलिका २॥

उत्लाहोऽन्यवसायः स्यात-

उत्साहके नाम २---उत्साह १ श्रघ्यवसाय २॥

-स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९॥

श्रासाच्य साधनमे उत्साहका नाम-१ वीर्य १ ॥ १९ ॥

कपरोऽही ब्याजदंभोषधयः हस्कैतवे । कुस्तिनिकृतिः शाठ्य-

कपटके नाम ९-कपट १ व्याज २ इम्म ३ स्पिधि ४ इच्चन् ५ केंत्रव ६ कुम्मि ७ निकृति ८ साठ्य ९ ॥ २९ ॥

-प्रमाद्ध**नवधा**गता ॥ ३० ॥

असावधानताके नाम २ — प्रमाद १ अपनवधा -नता २ ॥ ३० ॥

कौत्रहरू कौतुकं च कुतुकं च कुत्रह-सम्।

तमासेके नान ४-कोत्हल ५ कीतुक २ कुतुक ३ हत्हल ४ ॥

खीगां विलासविग्वोकविश्रमा लिखतं तथा॥ ३ ॥ हेलाळी हेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।

श्रृज्ञार और भ.वसे उत्पन्न होनेक्नले स्त्रियोंके विसासके नाम ६--विसास १ विक्नोक २ विश्रम ३ सस्ति ४ ॥ ३१ ॥ हेला ५ सीला ६ ॥

द्रवक्षे खिपरीहासाः क्रीडा खेला च नर्म च ॥ ३२१। हॅसा करनेके नाम ६--द्रच्य ९ केलि २ परीहास ३ क्रीडा ४ खेला ५ नर्मन् ६॥ ३२॥

व्याजोऽपदेशः लक्ष्यं च-

बहाना करनंकं नाम ३--व्याज १ श्रपदेश २ लक्ष्य ३॥

-क्रांड: खेला च कुर्दनम्।

बालकोके खेलके नाम ३--क्रीडा १ खेला २ कूर्दन ३॥

घमों निदायः स्वदः स्यात्-

गर्भीके नाम ३-धर्म १ निदाध २ स्वेद ३॥

-प्रस्तयां नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

बैहोशीके नाम २-प्रलय १ नष्टचेष्टता ॥२॥३३॥

ष्मवाहेत्थाऽऽकारगुष्टिः-

शोक्तमें सूरत छिपानेके नाम २-श्रवहित्था ? श्राकारग्रति २ ॥

-समो सध्गसंध्रमी ।

हर्ष श्राटिके कारण शीघ्र कार्य करनेके नाम २~सवेग १ सभ्रम २ ॥

स्यादाच्छारेतकं हासः सांत्रासः-

किसीको खिजानेके लिये हॅसी करनेके नाम १-श्राच्छुरितक १ ॥

-स मनाक् स्मितम् ॥ ३४॥

मुस्कुरानेक नाम १---स्मित १ ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्वाद्धिहासितं-

मध्यम हास्यका नाम १---विहसित १ N

-रोमाखें। रोमहर्षग्रम्।

रोरोके खडें होतेके नाम २—रोमाश्व १ रोमहर्षण २॥

कन्दितं रुदितं कुष्ट-

रोनेके नाम ३---कदित १ रुदित २ कुछ ३ ॥ -- इम्भस्तु निषु जम्भगम्॥ ३५ ॥

जम्माई लेनेके नाम २-जृम्म १ जम्मग्र२ ॥३५॥

विमलाभो विनवाद।-स्वीकार करके कार्यको न करनेके नाम

२-विप्रतम्म १ विसंवाद २ ॥ -रिङ्गणं रखलनं सने ।

धर्मसे चलायमान होनेके श्रथवा बालकों के बुटओं से चलनेके नाम २—रिज्ञगा १ स्वलन २॥

स्यात्रिद्धा शयन स्वापः स्वप्नः संवेश इस्यापि॥ ३६॥

शयन करनेके नाम ५—निहा १ शयन २ स्वाप ३ स्वर्गे ४ सवेश ५॥ ३६॥

तन्द्री प्रमीला-

श्रोघनेके नाम २-तन्द्री १ प्रमीला २ ॥

-भ्रकुटिभुकुटिभु हुटिः ख्रियाम् ।

कोधसहित भौंह चढ़ानेके नाम ३——अकुटि १ भुकुटि २ भूकुटि ३॥

भ्रदृष्टिः म्याद्सौम्येऽिश्या-

करदृष्टिका नाम १---- श्रदृष्टि १ ॥

ससिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३०॥ स्वरूपं च स्वभावश्व निसर्गश्चा-

स्वसावके नाम ५--संसिद्धि १ प्रकृति २ ॥ ३७॥ स्वरूप ३ स्वसाव ४ निसर्ग ५

~Sय वेपथुः । कम्पो-कांपनेके नाम २-वेषयु १ कम्प २॥

-ऽथ **चर्या** उद्धर्षो म**ह उद्ध**व उत्सवः ॥ ३८ ॥

उत्सवके नाम ५<del> दा</del>गा १ उद्धर्ष २ महु ३ उद्धन ४ उत्सन ५ ॥ ३५ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८

अधोभुवन पाताछं बिकसचा रसातल-म् । मागळोको-

पातालके नाम ५—- प्रधोभुवन १ बाताल २ बिसरदान् ३ रसातल ४ नागलोक ५ ॥ -Sथ कुहरं सुषिरं विचरं विज्ञम्॥ १॥ छिद्रं निव्पर्थनं रोकं रन्धं श्वभ्रं नणं शृषिः

छेदके नाम ११ - कुहर १ मुपिर २ विवर ३ बिल ४॥ १॥ छिद्र ५ निर्व्यथन ६ रोक ७ रन्ध्र ८ खन्न ९ वपा १० छुपि ११॥

गतिवटौ भावि श्यभ्र-

पृथ्वीके गडहेके नाम २---गर्त १ अवट २॥

-सरन्द्रे सुषिरं त्रिष्ठु ॥ २ ॥

**छैदयुक्त वस्तुका नाम १**—सुषिर १ ॥ २ ॥

अन्धकारोऽह्यां ध्वान्तं तमिस्रं ति-मिरं तमः।

श्रन्थकारके नास ५—श्रन्थकार १ ग्वान्त २ तमिस ३ तिमिर ४ तमस् ५ ॥

ध्वान्ते गाढेऽन्धतम्हं-

श्रत्यन्त श्रन्थकारका नाम १-श्रन्थतगम् १॥

-ज्ञीणेऽवतपसं-

थोड़ी अधियारीका नाम १-श्रवतमसू १ ॥

-तमः॥ ३॥ विष्वक्सं तमसं-

सब श्रोर फैले हुए श्रन्धकारका नाम १ — सन्तमस् १ ॥ ३ ॥

~नागाः काद्रवेया-

फन श्रीर पूंछवाले मनुष्याकार सर्पेकि नाम २-नाग १ काइवेय २ ॥

-स्तदीश्वरः । शेषोऽनन्तो-

शेषनागके नाम २-शेष १ अनन्त २ ॥

-वाद्वकिस्तु सर्पराजो-

सपैराजके नाम २-वासुकि १ सपैराज २ ॥

-sथ गोनसे ॥ १४ ॥ तिकित्सः स्या-

गोके समान नासिकावाले सर्पके नाम २--गोनस् १॥ ४॥ तिलित्स २॥

' -दजगरे शयुवहिस इत्युभी।

श्रवगरके नाम ३—श्रवगर १ रायु २ वाहस ३॥

#### **प्रलगदी जलव्यालः**-

पानीके सर्पके नाम - रश्रलगर्द १ जलव्याल २।।

-समौ राजिल्डुण्डुभौ॥५॥

द्विमुहा सपैके नाम २-राजिल १ हुण्डम २॥५॥

#### मालुधानो मातुलाहि-

चीते संपंके नाम २-माछ्यान १ मातुलाहि २॥ निर्मुक्तो मुक्तकंचुकः।

कचुली छोडे हुए सब सर्पोंके नाम २--- निर्मुक्त १ मुक्तकचुक २ ॥

सर्पः पृद्ाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुज द्रमः ॥६॥ याशी विषो विषधरश्रकी स्यातः सरीस्रपः। कुण्डळी गृडपाञ्चक्षुः श्रवाः काकोदरः फग्गी ॥७॥ द्वींकरो दीर्थपुष्ठो दृन्दश्को विलेशयः॥ उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः॥८॥

सपैके नाम २५—सपे १ प्रदाकु २ भुजग ३
भुजंग ४ श्रिहि ५ भुजगम ६ ॥ ६ ॥ श्राशीविष ७
विषघर ८ चिकन ९ व्याल १० सरीखप १५
कुण्डलिन १२ गृढपाद १३ चक्षुःश्रवस् १४
काकोदर १५ फिर्सिन् १६ ॥ ७ ॥ दर्वीकर १७
दीघपुष्ठ १८ दन्दराक १९ विलेशय २० उरग २१
पन्नग २२ मोगिन् २३ जिह्मग २४ पवनाशन
१५ ॥ ८॥

निष्वाहेयं विषास्थ्यादि-सर्पके विष श्रीर हह्डी श्रादिका नाम १---श्राहेय १॥

-स्फटायां तु फणा द्वयोः।
सर्वके फनके नाम २-स्फटा १ फणा २॥
समी कंजुकनिर्मोकी-

कबुलीके नाम २-कबुक १ निर्मोक २ ॥
-श्वेहस्तु गरळं विषम्॥ ९ ॥
बिषके नाम ३--श्वेह १ गरल १ विष ३॥९॥
पुंसि कसीबे च काकोलकालक्टहला
इलाः। सीराष्ट्रिकः शीक्लकेयो ब्रह्मपुत्रः

६दीपनः ॥ १० ॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा ग्रमी नव ।

विषके मेद ९-काकोल १ कालकूट २ हलाहल ३ सौराष्ट्रिक ४ शौभिलकेय ५ ब्रह्मपुत्र ६ प्रदीपन ७ ॥ १० ॥ दारद ८ वत्सनाम ९ ॥

#### विषवेद्यां जाङ्गुलिको-

सर्पके विषको दूर करनेकी विद्या जाननेवालेके नाम २—विषवेदा १ जांगुलिक २ ॥

व्यालग्राह्महितुण्डिकः ॥ ११ ॥ सर्पे पकड्नेवालेके नाम २-व्यालग्राहिन् १ श्रहितुण्डिक २ ॥ ११ ॥

स्यात्रारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः ह्यियाम्।

नरकके नाम ४-नारक १ नरक २ निष्म ३ हुर्गति ४॥

तद्भेदास्तपनावीन्विमहारौरवरौरवा ॥ १ ॥ संहारः कालसुत्रं चेत्याचाः-

नरकोकी जातिके भेद-तपन १ ऋषीिच २ महारीरव ३ रीरव ४ ॥ १ ॥ संहार ५ कालसूत्र ६ ऋषि ॥

—सत्त्वास्तु नारकाः। भेता— नरकवासिथोके नाम २-नारक १ प्रेत २॥ —सैतरणी सिंधुः—

प्रतोक्ती नदीका नाम १—वैतरणी १॥ --स्थादछक्ष्मीस्तु निऋंतिः॥ २॥

नरकक्षी श्रशोभाके नाम २—श्रतक्ष्मी १ निर्ऋति २॥२॥

विष्टिर।जू:--

नरकमें जबरदस्ती ढकेलनेके नाम २--- विष्टि १ आजू २ ॥

—कारमा तु यातना तीप्रवेदना

नरककी पीडाके नाम ३—कारणा १ यातना २ तीत्रवेदना ३॥

## पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसु-तिजम ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं ऋच्छुमाभीलं—

पीडाके नाम ९—पीडा १ बाधा २ व्यथा ३ दुःख ४ श्रामनस्य ५ प्रसूतिज ६ ॥ ३ ॥ कष्ट ७ कुच्छू ८ श्रामील ९

— 'ऋष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥ इनशब्दों में जो द्रव्यवाचक हों वे तीनों किंगों में होते हैं ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

#### अय वारिवर्गः १०

समुद्रोऽविधरकूपारः पारावारः सरि-रपतिः। ६दन्वानुद्धिः सिन्धुः सरस्वा-न्सागरोऽर्णवः॥ १॥ रत्नाकरो जल्लनिधि-यादः पतिरपांपतिः।

संमुद्रके नाम १५—समुद्र १ श्राब्य २ श्राकृ-पार ३ पारावार ४ सस्तिपति ५ उदन्वत् ६ उदि । ७ सिन्धु ८ सरस्वत् ९ सागर १० ऋर्णव ११ ॥ १॥ रत्नाकर १२ जलनिधि १३ स्रादःपति १४ ऋपाम्पति १५॥

#### तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लचणोदस्त-थापरे॥२॥

समुद्रके भेद ७—चीरोद १ तनगोद २ (इक्षुर-स्रोद ३ सुरोद ४ दिधमण्डोद ५ स्वा्कूद ६ घृतोद ७ )॥ २॥

श्रापः स्त्री भृम्नि वार्वारि संलिलं कमलं जलम् । पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३॥ कबंधमुद्रकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम्। अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीर-श्रीराम्बु शम्बरम्। । ॥ मेघपुष्वं घनरस-

चलके नाम २७—- अप् १ नार २ नारि ३ स्विल ४ कमल ५ जल ६ पयस् ७ कीलांल ८ अस्त ९ जीवन १० सुवन ११ वन १२॥३॥ कवन्य १३ उदक १४ पाथस् १५ पुष्कर १६ सर्वतोसुस १७ अस्मास् १८ अर्थस् १९ तोय ३०

पानीय २१ नीर २२ चीर २३ श्रम्बु २४ शम्बर २५॥४॥ मेघपुष्प २६ घनरस २७॥

## श्चिषु द्वे ग्राप्यमम्मयम्।

जलविकारके नाम २—श्राप्य १ श्रम्मय २ ॥ भंगस्तरंग ऊर्मिवा ह्यियां वीचि—

जलकी तरंगका नाम ४— मंग १ तरंग २ उर्मि ३ वीचि ४ ॥

## —रथोमिषु ॥ ५ ॥ महत्सुङ्घोलक-ङ्घोबौ—

बड़ी तरङ्गके नाम २---॥ ५॥ उह्नोत्त १ कह्नोत्त २॥

#### स्थादावर्त्तोऽम्भमां भ्रमः।

जलमे भवर पड़नेका नाम १--- श्रावर्त्त १।।

## पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विर्पुषः स्त्रियाम ॥ ६॥

बिन्दुश्चोंके नाम ४--- पृषत् १ बिन्दु २ पृषत ३ विपुष् ४ ॥ ६ ॥

## चकािा पुटभेदाः स्यु-

भँवर पड़कर जलके नीचेको ज्ञानेके नाम २—— चक्त १ पुरमेद २ ॥

## भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ॥

जलके निकलनेके जालके नाम २---भ्रम १ जलनिर्गम २ ॥

## कूछं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं विषु॥७॥

नदीके किनारेके नाम ५ कूल १ रोधस् २ तीर ३ प्रतीर ४ तट ५ ॥ ७ ॥

#### पारावारे पारावाची तीरे-

उस पारका नाम १---पार १ ॥ इस पारका नाम १---श्रवार १ ॥

#### —पात्रं तदन्तरम्

नदीके पाटका नाम १--पात्र १ ॥

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदंतर्वारिषस्त-दम् ॥ ८॥ बेटके नाम २—द्वीप १ श्रन्तरीप २ ॥ ८ ॥ —तोयोत्थितं तत्पुल्लिनं—

छड़ावेका नाम १-पुलिन १॥

## सैकतं सिकतामयम्।

वाञ्चकाधिकस्थानके नाम २—सैकत १ :सिकता-मय २ ॥

## निषद्धरस्तु जम्बालः पंकोऽस्त्री शादक-र्दमी ॥ ९॥

बोदा (कीच) के नाम ५-- निषद्वर १ जम्बाल १ पंक ३ शाद ४ कर्दम ५॥ ९॥

जळोळ्यासाः परीवाहाः-

उफलानेके नाम २-जलोच्छ्वास १ परीवाह २॥

## -कूपकास्तु विदारकाः।

चूहा (सूखी नदीके गड़हें) के नाम २-कूपक ९ विदारक २ ॥

#### नाष्यं त्रिळिंगं नौताय--

नौकार्मे उतरनेके योग्य जलका नाम १—-

## क्षियां नौस्तरणिस्तरिः॥ १०॥

नौकाके नाम ३—नौ १ तरिया २ तरि ३॥१०॥

उड्डपं तु प्लवः कोलः--

पन्नईके नाम ३--- उडुप १ प्लव २ कोल ३॥

—स्रोतोऽम्बुसरगं स्वतः ।

स्रोतका नाम १—स्रोतस् १॥

## **ग्रातर**स्तरपण्यं स्याद्—

उतराईके नाम २-श्रातर १ तरपण्य २॥

## —द्रोगीकाष्टाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

पत्थर वा काष्ठनिर्मित नौकाके खड़ीके नाम २— होणी १ काष्ठाम्झवाहिनी २ ॥ ११ ॥

## सांयात्रिकः पोतवाग्रिक्-

नीका लादनेवाले उद्यमीके नाम २—सांयात्रिक १ पोतविष्युत् २ ॥ —कर्णधारस्तु नाविकः।

खेवा लगानेवालेके नाम २---कर्णधार % नाविक २॥

#### नियामकाः पोतवाहाः--

जो नौकाके पीछे खड़ा हुआ लकड़ी घुमाया करता है उसके नामर—नियामक १ पोतवाहर ॥

क्पको गुग्रवश्कः ॥ १२ ॥

जिस ख्टेमें नौका बांधी जाती है उसके नाम-२-क्पक १ गुगाहत्तक २ ॥ १२ ॥

#### नौकादण्डः क्षेपग्री स्या-

पाता (नौकाके दोनों पसवाड़ोमें बँधे हुए चलानेके काष्ठ) के नाम २—नौकादण्ड १ चेपणी २॥

#### -दिरित्रं केनिपातकः।

करिया ( नौका की पीठमें लगे हुए चलानेके काठ ) के नाम २ — श्ररित्र १ केनिपातक २॥

#### प्रभिः स्त्री काष्ट्रकुहालः-

## —सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३॥

जिससे नौकाका जल उलीवा जाता है उसके नाम २--सेकगत्र १ सेवन २॥१३॥

## क्रीवेऽधनावं नावोऽधं~-

श्राधी नावका नाम १ —श्रद्धनाव १॥

## —ऽवीतनौकेऽतितु त्रिष्ठ ।

जो नौकालायक जल न हो उसका नाम १— अतिंचु १॥

## त्रिष्वागाधात्—

श्रमाध शब्दपर्यत जितने शब्द हैं तीनों लिगों में चलते हैं।

## —प्रसन्नोऽच्छः—

निर्मल जलके नाम २-प्रसन्न १ श्रच्छ २ हि

—कञ्जूषोऽनच्छ आवितः ॥१४॥

मैंके जरुके नास ३-१७७५ १ अनच्छ २ आदिल ३ ॥ १४ ॥

#### निम्तं गभीरं गम्भीर--

गहरे जलके नाम ३-निस्न १ गमीर २ गभीर ३॥

#### —मुनानं तद्विपर्यये।

थाह जलका नाम १-उत्तान १॥

#### ग्रगाधमतलम्पर्शे--

अथाह् जलके नाम २-ऋगाध १ ऋनतस्पर्श २॥ कैवत दाशधीवरो ॥ १५ ॥

सन्नाहके नाम ३-केंग्रर्न १ टारा २ घीवर ३॥१५॥

## ग्रानायः पुंसि जाहं स्या--

जानके नाम २-स्रानाय १ जान २॥ च्छणसूत्र पश्चित्रकम् ।

श्राम् त्र जालके नाम २-श्राम् त्र १ पित्रकर॥

## मत्स्याधानी कुवेग्रा स्या-

जिसमं मछती धरी जाय उसके नाम २-मत्स्या-श्वानी १ कुवेणी २॥

#### --इबडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १३ ॥

मझ्ली पकड़नेके काटेके नाम २ – बडिश १ मत्स्यवेधन २ ॥ १६॥

## पृथुरोम। भषो मत्स्यो मीनो वैसारि-णोऽण्डञ्जः । विसारः शकुली चा—

मञ्ज्जीक नाम ८— पृथुरोमन् १ क्सव २ मत्स्य ३ मीन ४ वैसारिया ५ ऋण्डज ६ विसार ७ ऋकुत्तिन् ८॥

---थ गडकः शकुलाभकः ॥ १७॥

मह्नतीके बचोंके नाम रे---गडक १ शकुला-मक् २ ॥ १७ ॥

## सहस्रदंष्टः पाठीनः--

पहा मञ्जीके नाम २—सहस्रदंष्ट्र १ पाठीत२॥

—उक्षी शिशुकः समी।

मून मञ्जलीके नाग २ — उत्रपन् १ निगुर २॥
नलमीनश्चिलिचिमः —

चेत्हवा मछलीके नाम २—नलमीन १ चिलि-चिम २ ॥

—प्रोष्ठी चु शकरी द्वयोः ॥ १८॥

सहरी मछलीके नाम २—प्रोप्टी १ शफरी २॥ १८॥

## श्चुद्राण्डमत्स्यसंधातः पोताधान-

श्रंडोंने निक्ली हुई छोटी मछलीसमृहका नाम १—पोताधान १॥

--मथो भाषः। रोहितो मद्गुरः शालो राजीयः शकुलस्तिमिः ॥ १९॥ तिमिणि-लादयश्चा--

गेह महलीका नाम— १ गेहित— मगरी मछलीका नाम १ — मदगुर १। गोंगी महलीका नाम १ — शाल १। गया महलीका नाम १ — राजी ११। मीरा महलीका नाम १ — शकुल १। वड़ी महलीका नाम १ — तिनि १॥ १९॥ तिमिके निगलनेवाली महलीका नाम १ —

तिमिगिल १ ऋादि॥

--ऽथ यादांसि जलजन्तवः।

सर्व जन्तुश्रोके नाम २-यादम् १ जलजन्तु २॥

## तद्भेदाः शिश्चमारोद्रशंकवो मकरा-द्यः॥ २०॥

शिरसका नाम १ – शिद्युमार १ । श्रोदका नाम ५ – उद्र ९ । शफूका नाम ५ – शकु • ९ । मकरका नाम १ – मकर १ श्राद्धि ॥ २०॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः—
केकड़ाके नाम २-कुलीर १ कर्कटक २॥
—कुमें कमटकच्छपी।
केखुहेके नाम ३—कूमें १ कमठ २ कच्छप ३॥
प्राहोऽवहारो—

षड़ियालंक नाम २-प्राह १ श्रवहार २ ॥
नक्कस्तु कुम्भीरोनाकेके नाम २-नक १ कुम्भीर २ ॥

## —ऽथ महीलता ॥ २१ :। गण्डूपदः किञ्जलको—

केचुवाके नाम ३—महीलता १॥२१॥ गण्डू-पद २ किचुलक ३॥

## निहाका गोधिका समे।

गोहके नाम २-निहाका १ गोधिका २॥

रक्तपा नु जन्तौ आयां स्त्रियां भूमिन जन्तौकसः॥ ३२॥

जोंककं नाम २--रक्तपा १ जलीका २ जलीं-कसू३॥ २२॥

## मुक्तास्फोट ख्रियां शुक्तिः—

समुद्रकी सीतीक नाम २-मुक्तास्फोट १ शुक्ति २॥

शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।

शखके नाम २-शख १ अम्बु २॥

#### श्रुद्रशंखाः शंखनखाः—

छोटे शलके नाम·२—क्षुद्रशंख **१ शंखनख** २॥

—धम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३॥

सब सीपीकं नाम २-राम्बूक १ जलग्रुक्ति २॥२३॥

भेके मण्डूकवर्षाभूशाल्हरप्लवदर्दुराः । मेढकके नाम ६—भेक १ मण्डूक २ वर्षाभू ३

शासूर ४ प्लब ५ दर्दुर ६॥

## शिली गण्डूपदी—

कळुईके नाम २--शिली १ गण्डूपदी २ ॥

## —भेकी वर्षाम्बी—

सेटकीके नाम २-- भेकी १ वर्षा भ्वी २॥

--कमठी हुलिः॥ २४॥

कबुईके नाम २--कमठी १ इलि २ ॥ २४ ॥

## मइग्ररस्य प्रिया श्रङ्गी

शींगीका नाम १--श्रङ्गी १॥

## -दुर्नामा दीर्घकोशिका।

झिकवाके नाम २--दुर्नामा १ दीर्घकोशिका २॥

#### जलाशयो जलाधार—

तडाग सीतादि सब जलाशयोके नाम २--जनाशय १ जनायार २ ॥

-- मतत्रागाधजलो इदः॥ २५॥

कुण्डका नाम १--इद १॥ २५॥

#### ्याहावम्तु निपानं स्यादुपकूपज्ञता-शये।

कूपके निकटकी चरही (जलके लिये बनायी हुई) के नाम २--आहाव १ निपान २ ॥

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उद्पानं तु पुंसि वा ॥ २६॥

कुण्कं नाम ४--श्रम्धु १ प्रहि २ कून<sub>ः</sub> ३ उत्पान ४॥ २६॥

#### नेमिस्त्रिकाऽस्य—

कुएंकी पाठिकाका नाम १--त्रिका १॥

—वीनाहो मुख्दन्धनमस्य यत्।

पक्की जगन्का नाम १--वीनाह १॥

## पुष्करिण्यां तु खानं स्या—

चौकोने तालाबके नाम २--पुष्करिणी १ खात २॥

## द्खातं देवखातकम् ॥ २७॥

नहीं खोदे हुए तालाबके ट्वनाम २--ऋखात १ देवखातक २॥ २७॥

## पद्माकरस्तडागोऽस्त्री-

जिस तालाबमें कमल हो उसके नाम २-पद्माकर १ तडाग २ ॥

--कासारः सरसी सरः।

सामान्य तालावके नाम ३- कासार १ सरसी२

#### वेशन्तःपरवर्छं चारपसरो-

छोटी तलैयाके नाम २—वेशन्त 🤊 पत्वल २ ऋत्पसरस् ३ ॥

—वापी तु दीर्घिका ॥ २८॥

बावड़ीके नाम २—वापी १ दीर्घिका २॥२८॥

#### खेयं तु परिखा-

खाँचा (खाई) के नाम २—खेय १ परिखा २॥

—धारस्त्वम्भसां यत्र धारग्रम्।

बांघका नाम १-- श्राधार १॥

#### स्यादाळवालमावालमावापो-

्र थाल्हाके नाम २-ऋालवाल १ ऋावाल २ ऋावाप २ ॥

—ऽथ नदी सरित ॥ २९ ॥ तरंगिगी शैवलिनी तटिनी हादिनी धुनी। स्रोत-स्वती हीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा॥३०॥

नदीके नाम १२-नदी १ सरित् २ ॥ २९॥ तरिगणी ३ शैनिलनी ४ तटिनी ५ हादिनी ६ धुनी ७ स्रोतस्वती ८ द्वीपवती ९ स्रवस्ती १० निम्नगा ११ श्रापगा १२ ॥ ३०॥

गंगा विष्णुपदी जह्तुतनया सुरनि-म्नगा। भागीरथी त्रिपथगा त्रिक्रोता भीष्म-सुरपि॥ ३१॥

गंगाजीके नाम ८--गगा १विष्णुपदी २ जहुनु-तनया २ सुरनिम्नगा ४ भागीरथी ५ त्रिपथगा ६ त्रिस्रोतसु ७ भीष्मसु ८ ॥ ३१ ॥

काछिन्दी सूर्यतनया यम्रुना शमन-स्वसा।

यमुनाके नाम ४---कालिन्दी १ सूर्यतनया २ यमुना ३ शमनस्त्रस्ट ४॥

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलक-न्यका॥ ३२॥

नर्भदाके नाम ४--रेवा १ नर्भदा २. सोमोद्भवा ३ मेकलक्त्रमका ४ ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा---

गौरीविवाहमं जो कन्यादानजलसे उत्पन्न हुई उस नदीके नाम २--करतोया १ सदानीरा २॥

## —बाहुदा सैतवाहिनी।

सहस्रवाहुकी नदीके नाम २--बाहुदा १ सैत-वाहिनी ॥ २ ॥

## शतद्भुस्तु शुतुद्रिः स्या---

शतलजके नाम २--शतद् १ शुतुदि २॥

—द्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ३३

व्यास नदीके नाम २--विपाशा १ विपादः २ ॥ ३३ ॥

#### शौणो हिरण्यवाहः स्या-

शोगाभद्रके नाम २--शोगा १ हिरण्यवाह २ ॥

--- कुरुयार्षा कुनिमा सरित्। नहरका नाम १--कुरया १॥

# शरावती वेचवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी---

शरावतीका नाम १-शरावती १। वेत्रवतीका नाम १-वेत्रवती १। चिनावका नाम १-चन्द्र-मामा १। सरस्वतीका नाम १-सरस्वती १। अ ॥ ३४॥ कावेरीका नाम १ कावेरी १।

#### —सरितोऽन्याश्च—

श्रीर भी कोशिकी श्रादि नदियां है।

—संभेदः सिन्धुसंगमः।

जहां एक नदी दूसरीसे मिलती है उस संगमके नाम र-सम्भेद १ सिन्धुसंगम २॥

## द्वयोः प्रणाली पयसः पदध्यां---

पनारका नाम १-प्रणाली १ ॥

—त्रिष्ठ तृत्तरौ॥ ३५॥

श्रागे होनेवाले दोनो शब्द तीनो लिगोमें होते र है॥ ३५॥

## देविकायां सरय्वां च भवेदाविक-सारवी।

देविका नदीमें जो जो उत्पन्न हो उनका नाम

9-दाविक १॥ सरयूमें जो जो उत्पन्न हों उनका नाम १-सारव १ ।

सौगन्धिकं तु कह्नारं-कई ( सध्यामें खित्तनेवाले स्वतकमत्त ) के नाम
२-सौगंधिक १ कह्नार २॥

—हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥ त्ताल कुईके नाम २-हल्लक १ रक्तसन्ध्यक २ ॥ २६ ॥

#### स्यादुत्पळं कुवलय--

कुसुद्कमल साघारगाके नाम २-उत्पत्त १ कुबलय २ ॥

## —मथ नीलाम्बुजन्म च । इन्दीवर च नीलेऽस्मिम्—

काले कमलके नाम २-नीलाम्बुजन्मन् १ इम्हीवर २ ॥

—सितं कुमुदकेरवे॥ ३७॥

उन्ज्वत वसतके नाम २—कुमुद्र १ कैरव २॥३७॥

शाल्कमेषां कन्दः स्या--कमलोके कन्दका नाम १-शाल्क १॥

## द्वारिपर्गी तु कुम्भिका।

जलकुम्मीके नाम २—वारिपर्णी १ कुम्मिका २॥

## जलनीली तु शेवालं शैवलो-

शैबालके नाम ३---- जलनीली १ शेवाल २ शैवल ३॥

- su कुमुद्धती ॥ ३८॥ कुमुद्धिन्यां कुमुदिनी वा कुमुद्युक्त देशके नाम २ - कुमुद्रनी १॥ ३८॥ कुमुदिनी २ ।
- —निस्तिना तु विखिनीपद्मिनीसुखाः।
  कमिलनीके नाम ३—निलनी १ दिसिनी २
  पद्मिनी ३ श्रादि॥

वा पुंसि पद्मं निक्षनमरिवन्दं महोत्प-लम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् । पंकेरुहं तामरसं सारसं सर-सीरुहम् ॥ ४० ॥ बिसमस्नराजीवपुष्क-राम्भोरुहांग्रि च । कमलमात्रके नाम १६-पद्म १ निलन २ अस-विन्द ३ महोत्पल ४॥ ३९॥ सहस्रपत्र ५ कमला ६ शतपत्र ७ कुगेशय ८ पंकेरह ९ तामरस १० सारस ११ सरसीरह १२॥ ४०॥ विसमसून १३ राजीव १४ पुष्कर १५ श्रम्मोरह १६॥

#### पुण्डरीकं सिताम्भोज-

उज्ज्वल कमलके नाम २—पुण्डरीक १ सिवा-स्मोज २ ॥

-मथ रक्तसरोहहे॥४१॥रक्तोत्पलंकोकनर्द लाल कमलके नाम ३-रक्तसरोहह १॥४९ ॥

रक्तोत्पल २ कोकनद ३॥

—नालो नाल—

कमलकी डांडीके नाम २-नाल (पुंक्लिंग ) प १ नाल (नपुंसकलिंग ) २॥

—मथास्त्रियाम् । मृणालं विस— भनीड्के नाम २—मृणाल १ विस २ ॥

—मन्जादिकद्म्वे खंडमिखयाम् ॥४२॥ कन्द्रादिके समूहका नाम १-खण्ड १॥

केवल भी नाम १-लण्ड १ ॥ ४२ ॥ . करहाटः शिफाकन्दः-

कमलकी जड़के नामर-करहाटशिकाकन्दर अ

—िक जल्कः केसरोऽिख्याम् । कमल पुष्पके मध्यमे जो कालर होती है उसके नाम २—िकंजल्क १ केसर २ ॥

संवर्षिका नवद्रकं--कमलके नये पत्तोंके नाम : २-संवर्तिका के नवट स्वर्तिका के नवटल २ ॥

— बीजकोशो वराटकः ॥ ४३॥ प्रमताक्षके नाम २-वीजकोश १ वराटक २॥ ४३॥

उक्त स्वन्यों मिद्क्कालधीशब्दादि गनाट्यकम् । पातालभीनि नरकं वारि चैषां च सङ्कतम् ॥ ४४॥ इत्यमरसिंद्द कृतौ नामिलगानुशासने । स्वरादिकांडः प्रथमः सांग एव समर्थितः ॥ १॥

> इति श्रीमद्मरसिह्विरन्वितामरकोशस्य भाषाटीकायां वारिवर्गः॥ १०॥

इति प्रथमः कांडः समाप्तः ।

## अथ हितीयः काण्डः।

—o={{\}}

#### अथ भूमिवर्गः १.

ं वर्गाः पृथ्वीपुरक्षमासृद्धनौष्यिक्ष्मा-दिभिः। नृबद्धचत्रविद्शुद्धैः सांगोषांगैरि-होदिताः ॥ १॥

इस द्वितीय काण्डमें भूमिवर्ग १, पुरवर्ग २, शैलवर्ग २, वनीषधिवर्ग ४, सिंहादिवर्ग ५. मनुष्य वर्ग ६, ब्रह्मवर्ग ७, अजियवर्ग ८. वैद्यवर्ग ९, शह-वर्ग १० सांगोपांग कहेंगे॥ १॥

भूभूमिरचलानन्ता रता विश्वेत्ररा स्थिरा। घरा घरिनी घरिका क्षोल्डिज्या काश्यपी क्षितिः ॥ ३ ॥ किर्देशहा चलुमती वसुधोर्वी वसुंघरा। गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिमेदिनी मही॥ ३॥

पृथ्वीके नाम २७-भू १ भूमि २ श्रवला ३
श्रिमनता ४ रसा ५ विश्वस्मरा ६ स्थिरा ७ वरा
८ वरित्री ९ घरणि १० चोणि ११ ज्या ५२
काश्यपी १३ क्षिति १४ ॥ २ ॥ सर्वेसहा १५
वसुमती १६ वसुधा १७ उवीं १८ वसुन्धरा १९
गोत्रा २० कु २१ पृथिवो २२ पृथ्वी २३ ६मा
२४ श्रवनि २५ मेदिनी २६ मही २७ ॥ ३॥

## मृत्मृत्तिका—

मिट्टीके नाम २-मृत् १ मृत्तिका २ ॥

्रम्प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका।

अच्छी मिटीके नाम २-मृत्सा १ मृत्स्ना ?॥ उर्वरा सर्वसस्यादया—

जिस मिटीसे सब यन उपने उसका नाम १-उर्वरा १॥

स्यादृषः चारमृत्तिका ॥ ४॥ खारी मिट्टी अर्थात् नोनीके नाम २— छष १– बारमृत्तिका २॥ ४॥

## ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यितगी-

कल्लरभूमिके नाम २— जपवत् १ छपर २॥ —स्थळं स्थती ।

स्थलके नाम २-स्थल १ स्थली २ ॥

## समानौ मरुधन्वानौ—

निर्जल त्र्यशीत् मरुदेशके नाम २---मरु १ धनवन् २॥

— द्वे खिलाप्रहते सने ॥ ५॥ चि— विजोत खेतके नाम २—किल १ अप्रहत २॥ ५॥

## ष्वथो जगती लोको विष्टपं **भुवनं** जगत।

जगत्के नाम ५- जगती १ लोक २ विष्ठप ३ भुवन ४ जगत् ५॥

## लोकोऽयं भारतं वर्षे—

हिमालयसे दक्षिण समुद्रसे उत्तरके देशतक अर्थात् हिन्दुस्तानका नाम १-भारतवर्ष १॥

—शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥६॥ देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य—

शरावती नदीके ॥ ६ ॥ पूर्व दक्षिण देशक नाम १-प्राच्य १ ॥

## - उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।

शरावती नर्दाके पहिचमोत्तरदेशका नाम-९ उदीच्य १॥

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्या-

फारस इस इस ब्रादि देशों के नाम २-प्रत्यन्त १ म्लेच्छ्रदेश २।-

—न्मध्यदेशस्तु मध्यमः॥ 🔉 ॥

विच्याचलसं उत्तर, हिमालयसे दक्षिण, कुर-च्चेत्रसे पूर्व, प्रयागसे पश्चिम देशके नाम २-मध्यदेश १ मध्यम २॥७॥

त्रायविक्तः पुण्यभूभिमध्यं विन्ध्यहिमा-लयोः ।

वंगालके स्दुइसे पश्चिम, ब्रग्दममुद्रमे पूर्व, हिमाचलसे दिक्क्षा, विन्व्याचलसे उतर देशके नान र-क्रायवित्ते १ पुग्यभूनि ॥ २ ॥

#### नीवृज्जनपदो-

राजात्र्योंके वसाये हुए मनध ऋदि देशोंके नाम २-नीवृत् १ जननद २॥

—देशविषयौ तूपवन्तेनम् ॥ ८॥ देशमात्रके नाम ३-देग १ विषय २ उपवर्तन 311611

#### त्रिष्वामोष्टा-

गोष्ट्रपर्वतः जो शब्द है व नीने **लिगोमें** होते हैं भ

— त्रहमाये न इवा त्रइवल इत्यपि । नडाधिकदेशके नाम २-६ इवत् १ न इवल २ ॥ कुमुद्धान्कु**मुद्**प्राय---

जहां बहुत कुमुद हों उम देशका नाम '-

कुसुद्वत् 🤊 ॥ —वेतस्वान्बहुवेतसे ॥९॥

जहां बहुत वेत हो उस देशका नाम १-वेत-स्वत् १॥ ९॥

शाद्धलः शादहरित-

जहां हरी घास हो उसका नाम १-शाद्वल १ n —सजम्बाले तु पंकिलः।

जहां बहुत कीच हो उस देशका नाम १-पंक्तिल १ ॥

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथा-विधः॥ १०॥

जहां बहुत पानी हो उस देशके नाम३-जल-प्राय % अनूप २ कच्छ ३॥ १०॥

## स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करा-वति ।

जहां रेता हो उस देशके नाम ४-शर्करा १ शर्करिल २ शार्कर ३ शर्करावत ४॥

#### देश एवादिमा-

कपर कहे हुए शर्कना ऋदि शब्दों पहले शर्करा १ और शर्करिल यह दोनी देशके ही नाम है॥

—वेवमुन्नेयाः सिकतावति 🖒 ११ ॥ इसी प्रकार सिकता १ श्रीर मिकतिल यह शब्द भी रतेयुक्त देशके ही नाम हे॥ १९॥

देशो नद्यम्बुषृष्टचम्बुलंपन्नबीहिपालितः। **स्यान्नदीमातृको** देवमात्कश्च करम्।। १२।।

जदा केवल नडीजलरी देत मीचे जाय वर्षा न हेती हो उस दशका नाम १-न्डीस एक १ ॥ जहां वर्षांके ही जलसे नीचे जायं उसका नाम १- ० देवमातृक १॥ १२॥

#### सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्या-

थमात्मा राजाके देशका नाम १-राजन्वत् १ ॥

—त्ततोऽन्यत्र राजवान्।

सामान्य राजाके देशका नाम १-राजवत्॥

गोष्ट्रं गोस्थानकं---

गोष्टके नाम २-गोष्ठ १ गोस्थान २॥

ततु गौष्ठीनं भृतपूर्वकम् ॥ १३॥

जहां पूर्वकालमे गाये रही हो उसका नाम १-गौष्ठीन १॥ १३॥

पर्यन्तभः परिसरः-

नदी पर्वतादिके समीपकी भूमिक नाम २-पर्यतभू १ परिसर २ ॥

—सेतुरानौ स्त्रियां—

पुलके नाम २—संतु १ व्यालि २॥

पुमान्। वामॡरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंत्रवंसकम् ॥ १४ ॥

वमईकं नार ३ — वास्लर १ नाकु २ वल्मीक ३ ॥ १४॥

भ्रयनं वर्श्ममागिःवपन्थानः पद्वी सृतिः। सरणिः पद्धतिः पद्यावर्त्तन्येकप-दीतिः च ॥१२॥

मार्गके नाम १२-इध्यन १ वर्ग्सन् २ मार्ग ३ इध्वन् ४ पथिन् ५ पदनी ६ सृति ७ सर्गण ८ पद्धति ९ पद्या १० वर्त्तनी ११ एकपदी १२ ॥ १५॥

द्भतिपन्थाः सुपन्थाश्च मत्पथश्चाचिते -ऽध्वनि ।

अच्छे मार्गके नास ३-इतिपथिन् १ सुपथिन् २ सत्पत्र ३॥

व्यथ्वो दुरध्वो विषयः कद्ध्वा कापयः समाः ॥ १६॥

खराब मार्गके नास ७-म्यध्व १ दुर्ज्य २ विषय ३ कद्वन् ४ कापयः ५॥ १६॥

#### अपन्थास्त्वपथं तुस्ये---

जहां मार्गत हो उसके नाम २-श्रपथिन् १ चतुष्पथ २॥

## 

चौहटा वा चौकके नाम २--श्रङ्गाटक १ चतुष्पथ २॥

## प्रान्तर दूरशून्य ऽध्वा-

जहां बढी द्रतक छाया वा स्मुख्याचि न हों उस मार्गका नाम १-प्रान्तर १॥

कान्तार बन्मं दुर्गवम् ॥ १७॥

चौरकण्टकाव्यिषुक्त सागेका नान १-क्षन्तार १॥ ९७॥

गन्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं-

दो कोशका नाम १-गव्यू नि १॥

-- नलवः किष्कुचतुःशतम्।

४०० हाथका नाम १-नन्द १॥

घण्टापथः संसर्गा—

राजमार्ग अर्थात् सङ्कदे नाम २-घण्टापथ ९ संसरण २ ॥---

## -तःपुरस्योपनिष्करम् ॥ १८॥

थामके निकासका नाम १—उपनिष्कर **१**॥ १८॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २.

## षूः स्त्री पुरीनगयौ वा पत्तनं पुटभेद्-नम्। स्थानीयं निगमे—

शहरके नाम ७-पुर् १ पुरी २ नगरी ३ पत्तन ४ पुटभेदन ५ स्थानीय ६ निगस ७ ॥

#### —ऽन्यतु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥१॥ तच्छाखानगरं—

शहर सम्बन्धी होटे नगरीका नाम १——॥ १॥ शाखानगर १॥

#### **—वेशो वेश्याजनसमाश्रयः।**

वेश्याके स्थानके नाम २-वेश १ वेश्याजन-समाभ्रय २ ॥

## ग्रापग्रस्तु निषद्यायां--

बजारके नाम २-श्रावरा १ निषदा २ ॥

—विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

जहां बाजार न हो परन्तु वस्तु बिक्ती हों उसके ताम २-विपणि १ पण्यवीथिका २ ॥ २ ॥

## रथ्या प्रतोती विशिखा—

वीचगांवकी गर्लाके नाम ३-रथ्या १ प्रतोत्ती २ विशिष्टा ३ ॥

## —स्याज्ञयो वप्रमस्त्रियाम्!

किलेके इपर उधरकी मिडीके नाम २---चय १ वप्र २॥

प्राकारो वरणः सालः-

किलेके नाम ३-प्राकार १ वरण २ साल ३॥

—प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ।।

चारों श्रोर कांटोंकी बाढका नाम ५-प्राचीन १ ॥ ३॥

भित्तिः स्त्री कुड्य--

दीवारके नाम २-भित्ति १ कुड्य २ ॥

—मेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम्॥

जिस दीवारमें मजबूतीके वास्ते हह्डी श्रादि खगाई गई हो उसका नाम १ एडूक १॥

गृहं गेहोद्वसितं वेश्म सन्न निकेतनम् ॥ ४॥ निशान्तपस्त्यसद्नं भवनागारम- निद्रम् । गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्य- निळ्याळ्याः॥ ५॥ वासः कुटी द्वयोः शाला सभा—

गृहके नाम २०-गृह १ गेह २ उदबसित ३ वेदमन् ४ सद्मन् ५ निकेतन ६ ॥ ४ ॥ निशान्त ७ पस्त्य ८ सद्न ९ भवन १० द्यगार ११ मंदिर १२ गृह (पु० बहुबचन) १३ निकाय्य १४ निलय १५ त्रालय १६ ॥ ५ ॥ वास १७ कृटी १८ शाला १९ समा २०॥

संजवनं रिवदम्। चतुःशालं-

जिस गृहमें श्रामने सामने एकसे चार मकान हो उसके नाम २-संजवन १ चतुरशाल २ ॥

मुनीनां तु पर्णशास्त्रोटजोऽस्त्रियाम् ॥६॥ मुनियोकी कुटीके नाम २-पर्णशाला १ उटज २ ॥ ६॥

चैत्यमायतनं तुल्ये-

यज्ञशालाके नाम २-चेत्य १ घायतन २ ॥

वाजिशाला तु मन्दुरा।

घुड़सालके नाम २-वाजिशाला १ मन्दुरा २ ॥ स्थावेशन शिल्पिशाला—

कारीगरोके स्थानके नाम २-श्रावेशन १ शिरिपशाला २॥

—प्रपा पानीयशाक्तिका ॥ ७ ॥

गौशाला त्रर्थात् पानी पिलानेके स्थानके नाम २-प्रपा ३ पानीयशालिका २ ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयः-

विद्यार्थी श्रीर संन्यासी श्रादिक रहनेके स्थानका नाम १-सठ १॥

## -गञा तु मदिरागृहम्।

जहां मद्य बनाया जाय श्रथवा जहां मद्य रखा जाय उस स्थानके नाम २-गजा १ मदिरागृह २॥

#### गर्भागारं वासगृह—

गृहके मध्यभागके नाम २-गर्भागार १ वास-गृह २॥

—मिर्ष्टं सुतिकागृहम् ॥ ८॥ सोवरके (प्रमूतीके) गृहके नाम २-श्रिष्टि १ मृतिकागृह २॥ ८॥

वातायनं गवाची-

मरोखोके नाम २-वातायन १ गवाच २॥

—ऽथ मण्डपोऽह्यी जनाश्रवः।

नण्डपके नान २-नण्डप १ जनाश्रय २॥

हम्यादि धनिनां वासः —

धनवानोंके गृहका नाम १-हम्यं १ त्रादि॥

—प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९॥

देवता श्रीर राजाश्रोंके ग्रहका नाम १-प्रासाद १॥९॥

सौधोऽह्यी राजसदन—

राजाश्चोंके ग्रहके नाम २—सीघ १ राज→ सदन २॥

—मुपकार्योपकारिका।

राजाञ्चोंके साधारण गृहोंक नाम २-उपकार्या १ उपकारिका २॥

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावत्तीद्यो- प ऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

राजगृहोंके भेद जिनमें ४ दरवाजे आदि भेद है ॥ स्वस्तिक १ सर्वतोभद्र २ नन्यावत्ते ३ ॥ १०॥ जिच्छन्दक ४ इत्यादि।

स्यगारं भूभुजामन्तः पुरं स्याद्वरोध-नम् ॥ ११ ॥ शुद्धान्तश्चावरोधश्च— राजक्षियोके न्हर्के एथानके नाम ४-छन्तः-पुर १ श्रवरोगा २ ॥ ११ ॥ गुद्धान्त ३ श्रव-रोष ४ ॥

रपाद्यः श्रीसमारि, यात्। गृहल कार्यः पात २-प्रह १ होस २ ॥ प्रवासः <sup>-</sup>ि. **वहिद्धारत्रको-**ृ**ष्टकं ॥ १२** ॥

दहलीजंके नाम ३-प्रवासा १ प्रयस्य २ ऋलिन्द ३॥ १२॥

#### गृहावग्रहण्यिह—

देहलीके ना १-गुनाप्रमहणी १ ठेहजी १॥

— लजद्गा धाराप्राणिरे ।

श्रांगनके नारा १-श्राणा १ चत्यर १

प्रांगनके नारा १-श्राणा १ चत्यर १

प्रांगनके नारा १-श्राणा १

- नासादारूपरि स्थितम्॥ १३॥

दरवाजेके अपरके काठका नाम - १नासा१ । १३

प्रच्छन्नमन्तद्वरि स्था—

खिड्कीके नाम १-प्रच्छन्न १ श्रन्तद्वरि १॥

— त्पच्चारं तु पच्चम् ।

---त्पच्चारं तु पच्चकम् । बगलेके द्वारंके नाम २-पक्षद्वार १ पद्मक २ ॥

बगलक द्वारक नाम र-पक्षद्वार १ पद्मक २॥ वलीकनीध्र पटम्मप्रान्ते---

वरौनीके नाम ३-वलीक ५ नीध्र २ पटल-प्रान्त ३॥

— ऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

छानिके नाम २-पटल १ छदि २ ॥ १४ ॥

गोपानसी तु वलभी छादने वक्तदारुणि।

छन्नेकं नाम २-गोपानमी १ वलमी २ ॥

कपोतपाछिकायां तु विटंकं पुंनपुंस-ंकम् ॥ १५ ॥

कबूतरखानंके नाम २-कपोतपालिका प् विटक २॥ १५॥ स्ति द्वाड़ीरं प्रतीहादः—
द्वारके नाम २-द्वार् १ द्वार २ प्रतीहार ३॥
— स्वरिक्ति नाम र-दिनारं १ वेदिका ।
वेदिके नाम र-दिनारं १ वेदिका २॥
वोरकोऽप्ति पाड़िक्तारं—
घरके वाम के सामाने नाम २-वोगण १
विद्वित् २-

—पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६॥ नगरके बाहरके फाटकके नास २-पुरद्वार ? गोगुर २॥ १६॥

कुटं पृद्धिः यद्धस्तिनखस्तस्मिन्

नगरके द्वारसे उतरंशेक लिये उतार चढावकी
भूमिका नाम १-हिस्सन १॥

—अथ थिषु र दायाद्यस्य गुरुके —

किशाहोके नाम २-कदाट १ घरर २॥

—तिद्धिष्कम्भोऽर्गलं सना ॥ १७॥

किशाहोके डण्डेलका नाम १-व्यक्ति १॥१०॥

आरोह्णं स्यात्सोपानं—

मिडी पत्थर आदिकी सीढीके नाम २-आरोह्ण
१ सोवान २।

सोपान २ । —निश्रेणिस्त्वधिरोद्धग्ती ।

काठकी सीडीके नाम २-निश्लेण १ ऋधि--रोहणी २ ॥

संमार्जनी शोधनी स्यात्—

बुहारी अर्थात् माङ्के नाम २—समार्जनी १
शोधनी २॥

—संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८॥

करकट वा कूड़ेके नाम २-- मकर १ श्रवकर प

क्षिप्ते मुखं निःसरणं—
निकासके नाम २-मुख १ निःसरण २ ॥
— संनिवेशो निकर्षणम् ।

नगर इत्यादिमें स्थानके निकित्त मापी हुई भूमिके नाम २-संनिवेश १ निकर्षण २॥

# समी संवहध्यामी—

रालय २ ॥ २० ॥

महींध्रे शिखरिक्ष्माभृद्दार्यधरपर्वताः । अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोञ्चयाः ॥ १ ॥

पर्वतके नाम २३ महीध १ शिखरिन् २ क्सामृत् ३ अहार्च ४ घर ५ पर्वत ६ अद्धि ७ गोत्र ८ गिरि ९ प्रावन् १० अचल ११ शैल १२ शिलोच्च १३ ॥ ९ ॥

# लोकालोकश्चकवाल-

जो पर्वत पृथ्वीको धरे हैं उनके नाम २-लोकालोक १ चकवाल २॥

# —ब्रिकूटख्रिककुत्समौ।

त्रिकृट कि जिसपर लंका बसी उसके नाम २-त्रिकृट १ त्रिकहुद् २ ॥

अस्तस्तु चरमक्माभृ— अस्ताचलके नाम २-अस्त १ चरमक्ष्माशृत् २॥ —\_दुद्यः पूर्वपर्वतः॥ २॥ उदयाचलके नाम २-उदय १ पूर्वपर्वत २ ॥२॥ हिमचात्रिषधो हिन्ध्यो माल्यवानपारि यात्रकः । गन्धमाद्नमन्ये च हिमकूटा-द्यो नगाः ॥ ३॥

पर्वतिके भेद ६ - हिस्दत् १ निषध २ विन्व्य ३ सात्यवत् ४ पारियात्रक ५ गन्धसादन ६ तथा हेसकूट आदि अन्य भी पर्वत हैं॥ ३॥

पाषाणप्रस्तरग्रादोपञ्चाश्मानः शिला हषत्।

परथरके नाल ७-पाजाचा १ प्रस्तर २ प्राप्तन् ३ उपल ४ अञ्चन ५ शिला ६ दवत् ७ ॥

#### क्टोऽह्यी शिखरं शृङ्गे-

पहाड़की चोडों वा कंग्राक नाम ३-कूट ९ ९ शिवर २ १८इ ३॥

— प्रधासस्य**तहो भृ**द्धः ॥ ४॥ वीहङ्के नाम ६-प्रपात १ बत्य २ **मृतु** ३॥ ४॥

काटकोऽज्ञी निसन्बेऽङ्गेः— वीच पर्वतका नाम १-कटक १ ॥

—स्तुः प्रस्थः सानुरिख्याम्। पर्वतके किनारेके नास ३-स्तु १ प्रस्थ २

ुपर्वतके किनारेके नास ३~स्तु ९ प्रस्थ २ सातु ३॥

#### उत्सः प्रस्रवणं—

जहां पर्वतसे चूकर पानी बटुरता है अर्थात् कुण्डके नाम २-उत्स १ प्रस्रवण २ ॥

# —वारिप्रवाहो निर्भरो भरः॥ ५॥

• भरनोके नाम ३-वारिप्रवाह १ निर्भर २ भर ३॥ ५॥

# दरी तु कन्दरो वा ञ्ची-

बनाई हुई गुफाके नाम २-दरी १ कन्दर--कन्दरा २॥

# —दैवखातविले गुहा। गहरं—

श्रपने श्राप बनी हुई गुफाके नाम ४−देवखात १ बिल २ गुहा ३ गहर ४ ॥ —गण्डशैलाम्तु च्युताः स्थूलोपला गिरे: ॥६॥

जो कि पर्वतसे भार भारी पत्थर गिरते है उनका नाम १-गण्डशेल १॥६॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्— खानिके नाम २-खनि १ श्राकर २ ॥

#### --पादाः प्रस्यंतपर्वताः ।

पर्वतके समीप छोटे पर्वतके नाज २-पाद १ प्रत्यन्तपर्वत २॥

उपस्यकग्द्रेरासन्ना भूमि**रू**र्ध्वमधि-स्यका॥७॥

पहाड़के नीचेकी भूमिका नाम १-उपत्यका १॥ पहाड़की ऊपरकी भूमिका नाम १-अवित्यका १॥७॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्वेगेरिकं तु विशेषतः।
पर्वतसे उत्पन्न हुण जो मनःशिल आदिका
नाम १ च्यातु १। गैरिक (गृंह) तो घातु शब्दसे
ही विख्यात है।

निकुअकुऔ वा क्लीवे लतादिपिहि-सोदरे॥८॥

जहां कि बहुत लतातृगादिसे घिरा हो उसके माम २-निकुल १ कुल २ ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

ग्रथ वनौषधिवर्गः ४.

भ्रटःयरण्य विपिनं गहनं काननं वनम्।

वनके नाम ६-श्रय्यती १ श्ररण्य २ विषिन <sup>•</sup> ३ गहन ४ कानन ५ वन ६॥

# महारण्यमरण्या नी-

आरामः स्यादुपवनं कृष्त्रमं वनमेव यतः।

गृहसमीपके वनके नाम २-श्राराम १ उपवन २। स्रमात्यगणिकागेहोपवने बृचवाटिका ॥ २॥

जहां राजाके नीकर चाकर और उनकी वेश्या रहें उस बगीवेका नाम १-वृद्धवाटिका १ ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारां॥ वनम् ।

राजाके उस बगीचेका नाम जिसका सब **५६व** भोग कर सके १-म्राकीट १॥

म्यादैतदैवप्रमद्वनमंतःपुरोचितम्॥३॥ जहा राजा स्त्रियों सहित कीडा करे उस वगीवेका नाम ५-प्रमद्वन १॥३॥

वीध्या छिरावितः पंक्तिः श्रेणी-

पक्तिक नाम ५-वीथी १ आित २ आवित ३ पक्ति ४ थ्रेगी ५ ॥

**—तेखास्तु राजयः।** लकीरके नाम २–लेखा १ राजि २ ॥

वन्या वनसमृहे स्या--

वनके झुंडके नाम २-वन्या १ बनसमूह २ ॥

दंकुरोऽभिनवोद्भिद्दि ॥ ४॥

श्रंकरके नाम २-श्रंकर १ श्रिभनवोद्भिद् २ ।४।

नृक्षो महीरुद्दः शास्त्री विटपी पाद्प-म्तरः। अनोकद्दः कुटः शासः पसाशी द्रुदुमागमाः ॥ ५॥

वृक्तके नाप्त १३-वृक्ष १ महीहह २ शाखिन् ३ विटिपन ४ पाटप ५ तह ६ अनोकह ७ क्रुट ८ शान ९ पलाशिन् १० द्व ११ द्वम १२ अगम १३ ॥ ५॥

वानस्पत्यः फलैः ष्रुष्पात-

जो वृत्त फूलकर फरे उसका नाम १-वान-स्पत्य १॥ ्यक्की छातके नास ३—त्वच् १ वल्क २ वल्कत ३ ॥ १२ ॥

#### काष्ठं दा-

काउके नाम २-३। १ ९ दाह २॥

—र्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समितिस्त-याम्।

ईन्धनके नाम २ इन्धन १ एध २ इन्म २ । यज्ञादिके ईन्धनके नाम २ । एधस् १ समिध् २ ॥

#### निष्कु इः कोटर वा ना —

खोकलके नास २—निक्कृह १ कोटर २ ॥

बटल रिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

मेजरीक नाम २-वज्ञरि १ मंजरि २ ॥ १३ ॥

पत्ने पलाशं छद्नं दलं पण छद्ः पुमान् ।

पत्नोके नाम ६-पत्र १ पलाश २ छद्न ३

दल ४ पणे ५ छद्द ६ ॥

#### पल्लबोऽल्ली किसलयं —

कौंपलक नास २-पछव १ किसलय २॥

— विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥ डालोके फैलनेके नाम २-विस्तार १ विटप २ ॥ १४ ॥

#### वृत्तादीनां फलं सस्यं—

बृक्षादिकों के फलका नाम १-सध्य १ ॥

# -वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

नाकूके नाम २-वृन्त १ प्रसवबन्धन २ ॥

# त्रामे फले शलाडुः स्या-

कचे फलका नाम १-शलाई १॥

# —च्छुष्के वान—

सूखे फलका नाम १-वान १

#### —मुभे त्रिष्ठु ॥ १५ ॥

शलाङ श्रोर बान शब्द तीनो लिंगोमें होते हैं ॥ १५॥

#### चारको जालकं क्लीबे —

नई कली व कलीकी डण्डीके नास २ चारक १ जालक २॥

#### - कलिका कोरकः पुनान्।

विना फूली कलीके नास २-कलिका १ कोरक २ ॥

# स्याद्गुच्छकस्तु स्तबकः—

गुच्छेका नाम १-स्तबक १ ॥

— कुडूमलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६॥ श्रिष्ठत्वी कलीके नाम २-कुडूमल १ मुकुल २॥ १६॥

# स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसृतं कुसुमं सुमम्

फूलके नाम ५-सुसनस् १ पुष्प २ प्रसृन ३ कुसुम ४ सम ५॥

#### मकरन्दः पुष्परंसः-

फूलके रसके नाम २-मकरन्द १ पुष्परस २॥

# -परागः सुमनोरजः ॥ १७॥

फूलकी धृलीके नाम २-पराग १ सुमनोरजस् २॥१७॥

# द्विहीनं प्रसचे सर्व—

त्र्यागे अश्वत्य आदिकों के जो फल पुष्पादिकों के नाम कहेंगे वह शन्द केवल नपुसकिलिंगमें होंगे॥

#### —हरीतक्याद्यः स्त्रिया**म्**।

हरीतकी त्रादिकों के फलों के वाचक (हरीतकी) त्रादि शब्द स्त्रीलिंगमें होंगे॥

#### आश्वत्यवैगावण्ळाचनैयप्रोधेङ्गृदं फले ॥ १८॥ बाईतं च—

पीपलके फलका नाम १ श्रास्तरथ १ ॥ बांसका फल-वेंगाव १ ॥

-पाकड़के फलका नाम प्लाच १

वटके फलका नामनैयग्रोध १॥

−इंगुद्दीके फलका नाम ऐक्गुद १ ॥ १८ ॥

-भटकटैयाके फलका नाम बाहत १ ॥

# —फले जम्ब्वा जम्बू ही जम्बु जाम्ब-वम्।

जामुनके फलके नाम ३ जम्बू १ जम्बु २ जाम्बव ३॥

# पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिंगा-

जूहींके फुलका नाम १-जाती १॥

#### - ब्रीहयः फले ॥ १९ ॥

्यव त्रादि धान्योंके फल भी यव त्रादि नामसे ही कहे जाते हैं, जैसे यवका फल यव, माषका फल माष, मुद्रका फल सुद्र ॥ १९॥

#### विदायधािस्तु भृलेऽपि—

विदारी आदिकोंके जड़, पुष्प और फल भी विदारी आदि नामवाले ही होते हैं अर्थात् जाती आदि शब्दोंके पुष्पादिक भी स्वर्लिंग ही होते हैं॥

# -पुष्पे.क्लीबेऽपि पाटला।

पाटलाके पुष्पका नाल १-पाटला १ ॥ यह राज्द पुष्पका नाम होकर भी स्वर्लिंग अर्थात् पाटलाका लिङ्ग जो स्त्रीलिङ्ग उसीमें होता है॥

# वोधिद्रुमश्चलदलः पिष्पतः कुञ्जरा-शनः॥२०॥ ग्रश्वत्थे—

पीपलके नास ५-बोधिद्भुस १ चलदल २ पिप्पल ३ छंजराशन ४॥ २० % श्रश्रद्ध ५॥

#### —ऽथ कपित्थे स्युर्द्धित्थग्राहिम-न्मथाः। तस्मिन्द्धिफलः पुष्पफळद्न्त-शठावपि॥२१॥

कथके नाम ७-कपित्थ १ दिवस्थ २ ग्राहिन् ३ सन्मथ ४ दिवफल ५ पुष्पफल ६ दन्तराठ७ ।२१,

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदु-ग्धकः।

गुलरके नाम ४-उद्धम्बर १ जन्तुफल २ यज्ञांग ३ हेमदुग्यक ४॥

#### कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगप-त्रकः॥२२॥

कचनारके नाम ४-कोबिदार १ चमरिक २ कुद्दात ३ युगपत्रक ४॥ २२॥

# सप्तपर्गौ विशालत्वक्च्छारदा विषमः च्छदः।

छतिवतीके नाम ४-सप्तपर्ण १ विशास्तवच २ शारद ३ विषमच्छद ४॥

# आरग्वथे राजवृत्तशम्याकचतुरंगुला-॥ २३ ॥ आरेवतन्याधिष्यातकृतमाळ-सुवर्णकाः।

अमलतासके नाम ८-छारम्बध ९ राजवृक्ष २ शम्याक ३ चतुरंगुल ४॥ २३ : ॥ आरेवन ५ न्याधिघात ६ इतमाल ७ सुवर्णक ८॥

### स्युर्जम्बीरे द्न्तश्रठजम्मजम्भीरजम्भ-लाः॥ २४॥

जम्बीरीनिंबूके नाम ५ जम्बीर १ दन्तराठ २ जम्म ३ जमीर ४ जमल ५॥ २४॥

#### चरणो व**र**णः सेतुस्तिक्तशाखः कुमा-रकः।

वस्या (वस्या ) के नास ५-वस्या ९ वस्या २ सेतु ३ तिक्तशाख ४ कुसारक ५॥

#### पुत्रागे <mark>पुड्षस्तुङ्गः केसरो देवव</mark>ल्लभः ॥२५॥

नागकेशरके नाम ५-पुत्राग १ पुरुष २ तुङ्ग ३ केशर ४ देववछम ५ ॥ २५ ॥

# पारिभद्र निम्बतस्मन्दारः पारिजातकः

बकायनके नाम ४-पारिमद १ निम्बतक २ मन्दार ३ पारिजातक ४॥

# तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥ वञ्जुळश्चित्रकुच्चा—

वर्जुल वृक्के नाम ७—तिनिश १ स्यन्दन २ नैमि २ रथद्भु ४ अतिमुक्तक ५॥ २६॥ वर्जुल ६ चित्रकृत् ७॥

#### —थ द्वौ पीतनकपीतनौ। आम्रातके—

अम्बाड़ेके नाम २-पीतन १ कपीतन २ आम्रातकृ३॥ —मध्कं तु गुडपुष्पमधुद्रुमः ॥ २७ ॥ वानप्रस्थमधुष्ठीलौ—

महुएके नाम ५—मध्क १ गुडपुष्प २ मबुद्रुम ३॥२७॥ वानप्रस्थ ४ मधुप्रीत ५॥

—जलजेऽत्र मधूळकः । जलके महुएका नाम १—मधूलक १ ॥ पीळौ गुडफलः स्रंसी—

देशी अखरोटके नाम ३---पीछ १ गुडफल २ संसिन् ३॥

—तस्मिस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥ ग्रक्षो-टकन्दरालौ द्वा—

पहाड़ी अखरोटके नाम २—॥ २८॥ अस्तोट १ कन्दराल २॥

-वंकोटे तु निकोचकः।

अकोलके नाम २—- अकोट १ निकोचक २ ॥
पन् शो कि शुकः पर्यो वातपोथो —
पताशके नाम ४-पताश १ किंशुक २ पर्ण ३
बातपोथ ४ ॥

—ऽथ वेतसे ॥ २९ ॥ रथाश्रपुष्पविदुर-शीतवानीरवञ्जुलाः ।

वंतके नाम ७-वंतस १॥ २९ ॥ रथ २ श्रिश्रपुष्प ३ विदुर ४ शीत ५ वानीर ६ वंजुल ७ ॥ द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवे-तसे ॥ ३०॥

पानीके बेतके नाम ४-परिव्याध १ विदुत्त २ नादेथी ३ श्रम्बुवेतस ४ ॥ ३० ॥

शोभाञ्जने शियुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवीगो-चकाः।

सिंहिंजनेके नाम ५ शोभाञ्जन १ शियु २ तीक्ष्यं-गन्यक ३ श्राचीव ४ मोचक ५॥

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्या-

लाल फूलबाले संहिजनेका नाम ५-मधु-शिम्नु १ ॥ -द्रिष्टः फेनिलस्समी ॥ ३१ ॥ रिटेके नाम २-श्रिष्ट १ फेनिल २ ॥ ३१ ॥ बिट्वे शाण्डिल्येशस्त्र्षी मासूरश्रीफला-वपि ।

वेलके नाम ५-बिल्व १ शाण्डिल्य २ शैळूल ३ माळूर ४ श्रीफल ५ ॥

प्तचो जटी पर्कटी स्या— पाकरके नाम ३ प्तक्ष १ जटिन् २ पर्कटिन् ३ —न्न्यग्रोधो बहुपाद्धटः॥ ३२॥

वटके नाम ३-न्यग्रोध १ बहुपा**द् २ वट** ३ ॥ ३२ ॥

गालवः शाबरो लोधस्तिरीटस्तिस्वमा-जनौ।

लोधके नाम ६-गालव १ शाबर २ लोध्र ३ तिरीट ४ तिस्व ५ मार्जन ६।

आम्रश्चूतो रसालो-

गूगलके नाम ५—कुम्म १ उल्लूखलक २ कौशिक ३ गुगगुल ४ पुर ५ ॥

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो **बहु-**वारकः ॥३४´॥

स्ताढेके नाम ५-शेळ १ श्लेष्मातक २ शीत ३ उद्दाल ४ बहुवारक ५॥ ३४॥

राजाद्नं प्रियालः स्यात्सन्नकर्दुधनु-ष्पटः।

निरौजीके नाम ४-राजादन १ प्रियाल २ सन्नकदु ३ घतुष्पट ४।

गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुप-र्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्गी भद्रपर्गी च काश्मर्यका-- खंभारीके नाम ७-गम्भारी १ सर्वतीमदा२ कारमरी ३ मधुपार्थीका ४॥ ३५॥ श्रीपर्थी ५ भद्रपर्थी ६ कारमरी ७॥

— प्यथ द्वयोः । कर्कन्धूबंद्री कोली — बेरके नाम ३-कर्कंधू १ बदरी २ कोली ३ ॥ — कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥ सौधीरं बदरं घोण्टा—

बैरके फलके नाम ६-कोल १ कुबल २ फेनिल ३॥ ३६॥ सौवीर ४ बदर ५ घोण्टा ६॥

—प्यथ स्यात्स्वादुकण्डकः। विकंकतः स्त्रवादुको ग्रन्थिको ग्याञ्चपाद्दपि॥३७॥

टेंटीके नाम ५-स्वादुकण्टक १ विकइत २ स्त्रवावृत्त ३ प्रेथित ४ व्याप्रपादू ५ ॥ ३७ ॥

ऐरावतो नागरंगो नादेयी भूमिजम्बुका॥ नारंगीके नाम ४-ऐरावत १ नागरङ्ग २ नादेयी ३ भूमिजम्बुका ४ ॥

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके॥ ३८॥

तेद्के नाम ४-तिन्दुक १ स्कूर्जेक २ कालस्कन्ध ३ शितिसारक ४॥ ३८॥

काकेन्द्रः कुलकः काकतिन्दुकः काक-पीछुके।

कुचलेके नाम ४-काकेन्दु १ कुलक २ काक-तिन्दुक ३ काकपीछक ४॥

गोळीढो झाटळां घण्टाप।टळिर्मोच्च-सुष्ककौ ॥ ३९ ॥

लोधके भेद मोखाके नाम ५-गोलीड १ स्मटल २ वण्टापाटलि ३ मोक्ष ४ मुक्कक ५ ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्--

तिलकके नाम ३-तिलक १ क्षुरक २ श्रीमत् ३

—समौ पिचुलभावृकौ।

काऊके नाम २-पिचुल १ कावुक २॥

श्रीपर्शिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्य-कटूफळो ॥ ४० ॥ कायफलके नाम ५-श्रीपार्धीका १ कुमुद्दिका २ कुम्मी ३ केंडर्य ४ कट्फल ५ ॥ ४० ॥

ऋमुकः पहिकाख्यः स्यात्पद्वी **साद्याप्र**-साद्नः।

पठानी लोघके नाम ४-ऋगुक १ पिटकाख्य २ पटी ३ लाक्षाप्रसादन ४ ॥

तुरस्तु यूपः ऋमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मद्राद्य च ॥ ४१॥ तृळं च—

पार्विपिप्पत्त वा तूतके नाम ६-तूद १ यूप ३ कमुक ३ ब्रह्मण्य ४ ब्रह्मदारु ५ ॥ ४९ ॥ तूत ६॥

—नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः।

कदम्बके नाम ४-नीप १ प्रियक २ कदम्ब ३ हरिप्रिय ४ ॥

वीरवृद्धोऽरूष्करोऽग्निमुखी अल्लावकी त्रिष्ठु॥ ४२॥

मिलावेके नाम ४-वीरब्रक्ष १ ऋरूका २ ऋप्ति-मुखी ३ महातका ४ ॥ ४२ ॥

गर्दभाण्डे वःन्द्रालकपीतनसुपार्श्व-काः। प्लच्ख

गेठी (पिलखन) के नाम ५-गईभाण्ड १ कन्दराल २ कपीतन ३ सुपाइर्नक ४ प्लस्न ५ ॥

--तिन्तिडी चिश्वाम्लिका--इमलीके नाम ३-तिन्तिडी १ विश्वा २ श्रम्लिका ३ ॥

—ऽष पीतसारके ॥ ४३ ॥ सर्जकासन-बन्धूकपुष्पियकजीवकाः ।

विजयसारके नाम ६-पीतसारक १॥ ४३॥ सजेक-२ असन ३ बन्धृक ४ पुष्पित्रयक ५ जीवक ६॥

साले तु सर्जकाष्याश्वकर्णकाः सस्य-सम्बरः॥ ४४॥

शालके नाम ५-साल १ सर्ज २ कार्घ्य ३ ऋचकर्णक ४ सस्यसंबर ५ ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतहरिन्द्रहुः कक्कभो-ऽर्जुनः। श्चर्जुनवृक्षके नाम ५-नदीसर्ज १ बीग्तह २ इन्द्रह् ३ चकुम ४ श्चर्जुन ५ ॥

राजादनः फलाध्यन्नः श्रीरिकाया-

खिन्नीके नाम ३-राजादन १ फलाध्यक्ष २ चीरिका ३॥

—मथ द्वयोः ॥ ४५ ॥ इंगुदी तापस-तरु—

पांबिके नाम २-इंगुदी १ तापसतह २ ॥४५॥ भूजे चर्मिमृद्धत्वची ॥

भोजपत्रके वृज्ञके नाम २-भूजे १ चर्मिन् २ मृहृत्वच् ३॥

पिच्छिला पूरगी मोचा स्थिरायुः शाल्मिछिर्द्वयोः॥४६॥

सेमलके नाम ५-पिच्छिला १ पूरणी २ मोचा ३ स्थिरायु ४ शाल्मिल ५ ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शात्मलीवेष्टे— चेमलके गोंदके नाम २—पिच्छा १ शाल्म-लीवेष्ट २॥

# -रोचनः कूटशास्मितः।

काले सेमलके नाम २-रोचन १ कूटशाल्मलि२। चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्चंकर-अके॥ ४७॥

करज्ञके नाम ४-चिरबिल्व १ नक्तमाल २ करज ३ करंजक ४ ॥ ४७ ॥

प्रकीर्यः प्रतिकरजः प्रतिकः कलिमा-रकः।

कटीले करंजके नाम ४-प्रकीर्य १ पुतिकर्ज २ पुतिक ३ कलिमारक ४॥

करेअभेदाः षड्यन्थो मर्कटचंगारव-छुरी ॥ ४८ ॥

करंजके भेद ३-षड्ठान्य १ मर्कटी २ अङ्गार-

रोष्ट्री रोहितकः प्लीहशतुर्दांडिमपु-ष्यकः। रोहिडांक नाम ४-गाहिन् १ राहितक २ फ्रीहशाहु ३ राडिमपुष्पक ४॥

गायत्री बालतनयः खदिरो दंतधा-वनः॥ ४९॥

सैर श्रर्थात् करथेके नाम ४-गायत्री १ बाल-तनय २ खदिर ३ दन्तधावन ४ ॥ ४९ ॥

# यरिमेदो विद्खदिरे--

दुर्गधयुक्त खैरके नाम २-श्रिरमेद १ बिट्स-खदिर २ ॥

--कदरः खदिरे खिते। सोमवल्को--सफेद खैरके नाम २-कदर १ स्रोमवल्क १॥

—ऽप्यथ व्याघ्रजुच्छ्गन्धर्षहस्तकौ ॥ ५० ॥ एरण्ड उत्त्रवृक्षश्च रुचकश्चित्रकश्च सः । चञ्चुः पश्चांगुलो मण्डवर्धमानस्य— डम्बकाः ॥ ५१ ॥

रेड अर्थात् एंडके नाम ११ -व्याष्ट्रपुट्छ १ गन्धर्वहस्त २ ॥ ५० ॥ एरण्ड ३ उरुब्रूक ४ रुनक ५ चित्रक ६ चञ्चु ७ पश्चांगुल ८ मंड ९ वर्धमान १० व्यडम्बक ११ ॥ ५१ ॥

अन्या शमी श्रमीरः स्या— छोटी शमी (सॉह) का नाम १-शमीर १॥

—च्छमी सक्तुफलाशिवा।

शमी (जॉटी) के नाम ३-शमी ९ सक्तु-फकार शिवा३॥

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहा-टकः॥ ५२॥ शल्यश्च मद्ने—

मयनफलक नाम ६-पिण्डीतक १ मस्बक २ श्वसन ३ करहाट ४ ॥ ५२ ॥ शल्य ५ मदन ६ ॥

—शक्रपादपः पारिभद्रकः । भद्रदारु दुकि किमं पीतदार च दारु च ॥ ५३॥ प्रतिकाष्ठं च सप्तस्युर्देषदारु—

देवदाहक नाम ८-शकपादप १ पारिसद्रक २ भद्रदाह ३ दुकिलिम ४ पीतदाह ५ दाह ६ ॥५३॥ पूतिकाष्ठ ७ देवदाह ८ ॥ —ण्यथ द्वयोः। पाटलिः बादळा मोया काचस्थाली फलेवहा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृत्ता कुवेराक्षी—

पाढरीके नाम ७-पाटिल १ पाटला २ मोषा ३ स्त्रवस्थाली ४ फलेक्हा ५ ॥ ५४ ॥ इच्लादृन्ता ६ इमेराची ७ ॥

-श्यामा तु महिलाह्या। कता गोवि-न्दिनी गुन्दा प्रियंगुः फलिनी फक्की ॥५५॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रिय-कश्च सा।

का 3 नीके नाम १२ — स्थामा १ महिलाह्नया २ स्तता ३ गोबिन्दिनी ४ गुन्द्रा ५ प्रियंगु ६ फलिनी ७ फली ८ ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना ९ गन्धकली १० कारम्मा ११ प्रियक १२ ॥

मण्ड्कपर्णपत्रोणंनटकर्वगदुण्डकाः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुक्रनासर्चदीर्घश्वनतकुट-स्रदाः । शोणइश्चारली—

सिखन (सोनापाठा) के नाम १२-मण्डूकपर्ण १ पत्रोर्ण २ नट ३ कदवंग ४ दुण्टुक ५ ॥ ५६॥ स्योनाक ६ ग्रुकनास ७ ऋत् ८ दीघेब्रन्त ९ इन्टनट ५० शोगाक ११ ऋर्छ १२॥

तिष्यफेला त्वामलकी त्रिष्ठु ॥ ५७ ॥ स्रमृता च वयःस्था च—

श्रामलोके नाम ४-तिष्यफला १ श्रामलकी २ ॥ ५७ ॥ श्रमृता ३ वयःस्था ४ ॥

त्रिलिङ्गस्तु विभीवकः । नाऽत्रस्तुषः कर्षफलो भृतावासः कलिङ्गमः॥ ५८॥

बहेड़ेके नाम ६-विभीतक १ अस्त २ तुष ३ कमेंफल ४ भूतावास ५ कलिद्रुम ६ ॥ ५८ ॥

स्था त्वव्यथा पथ्या कायस्था पृतनाः सृता । इरीतकी हैमवतः चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९॥

हरडेके नाम ११-अभया १ अञ्चया २ पथ्या ३ कायस्या ४ पूतना ५ अमृता ६ हरीतकी ७ हैमवती टीनेतकी ९ श्रेयसी १० शिवा११ ॥५९॥ ह पीतद्भः सरलः पूतिकाण्ठं चा— सरलाके नाम ३-पीतद्भ १ सरल १ पूतिकाष्ठ ३। ऽथ द्रमोरपतः । कर्षिकारः परिन्याधो— कनेरके नाम ३-द्रमोत्पल १ कर्णिकार २ परिन्याध ३॥

— लकुचो लिकुचो हहुः ॥ ६०॥ बड़हरके नाम ३-लकुच १ लिकुच २ डहु ३॥ ६०॥

पनसः कंटिक फलो— कटहरके नामं २-पनस १ कण्टिकफल २॥\_\_ निजुलो हिजालोऽम्बुजः । समुद्रफलके नामं ३-निवुल १ हिज्जल २ श्रंबल ३॥

काको दुम्बरिका फल्गुर्म**लयूर्जधने-**फला म ६१ ॥

कट्रमरेक नाम ४-काकोदुम्बरिका १ ुं फल्गु २ मलयू ३ जघनेफला ४ ॥ ६१ ॥

ग्ररिष्टः सर्वतोभद्रहिंगुनियांसम्बासकाः पिचुमन्द्रस्य निवे—

नींबके नाम ६-श्रिरिष्ट १ सर्वतोभद्र २ हिंगु-निर्यास ३ मालक ४ पिचुमन्द ५ निंब ६ ॥

— ऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिशपाः ॥ ६२ ॥ सीसमेक नाम ३-पिच्छिल १ अगुरु २ शिशप ३ ॥ ६२ ॥

किपिला भस्मगर्भी सा— कुर्व्यावर्ण सीसमका नाम १-भस्मगर्भा १ ॥ शिरीषस्तु कपीतनः । भण्डिलो— शिरिसके नाम ३-शिरीष १ कपीतन २ संडिल ३ ॥

—ऽप्यथ चाम्पेयश्रम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३॥

चक्पेके नाम ३-चाक्पेय १ चक्पक २ हेम-ष्पक ॥ ३ ॥ ६३ ॥ ह्रयः ।

प्तस्य किलका गन्धकली स्या— चम्पेकं कलीका नाम १—गन्धकली १॥ —द्य केसरे। बकुलो— मौलसिरीकं नाम २—केसर १ वकुल २॥ वञ्जुलोऽशोके— श्रशोककं नाम २—वञ्जुल १ श्रशोक २॥ समौ करकदाडिमौ॥६४॥ श्रनारके नाम २—करक १ दाडिम २॥६४॥ चाम्पेयः केसरो नामकेशरः काश्रना-

चम्पापुष्पके नाम ४-चाम्पय १ केसर २ नाग-र्केशर ३ काश्वनाह्वय ४ ॥

जया जयन्ती तकारी नादेयी बैंजय-न्तिका॥६५॥

. जाहीके नाम ५-जया १ जयंती २ तर्कारी ३ नाहेकी ४ वैजयंतिका ५॥ ६५॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कशिका गश्चि-कारिकः। जयो---

अरणिके नाम ५-अप्रैंपर्ण १ अप्रिमेंथ २ किएका ३ गणिकारिका ४ जय ५ ॥

—ऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिम-ल्लिका ॥ ६६ ॥

कुरैयाके नाम ४-कुटज १ शक २ वत्सक ३ गिरिमह्निका ४॥ ६६॥

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फळे। इन्द्रजव अर्थात् कुरैयाके फलके नाम ३-कर्लिंग १ इन्द्रयव २ भद्रयव ३॥

कृष्यापाकफलावित्रसुषेणाः करमर्द्रके ॥ ६७ ॥

करोदाके नाम ४--- कृष्णापाकफल १ श्रविप्र २ सबेण ३ करमर्दक ४॥ ६७॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तः।पिच्छो---तमालके नाम ३-नालस्कन्ध १ तमाल २ तापिच्छ ३॥

#### —ऽप्यथ सिन्दुके । सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

म्थोडी (सिभाछ् ) के नाम ५-सिदृक १ सिन्दुवार २ इन्द्रसुरस ३ निर्गुण्टी ४ इन्द्रा-णिका ५॥ ६८॥

# वेगी खरा गरी देवताडो जीमृत इत्यपि।

षुन्दाल बृज्ज जो गुजरातमें गोडी प्रसिद्ध है उसके नाम ५-वेणी १ खरा २ गरी ३ देवताङ ४ जीमृत ५॥

# श्रीहस्तिनी तु भूकण्डी-

घुड्यां (श्रारवी) के नाम २-श्रीहस्तिनी १ भूरण्डी २॥

तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६८ ॥ भृषदी शीतभीरुश्च—

बेला (मिल्लिका) के नाम ४-तृग्रक्त्य १ मिल्लिका २॥ ६९॥ भूपदी ३ शीतभी ६४॥

# सैवास्फोटा वनोद्भवा।

बनवेलाका नाम १-श्रास्फोटा १ ॥

#### शेफालिका तु सुबद्दा निर्गुण्डीनी क्रिका च सा ॥ ७० ॥

न्यवारी (काले पुष्पवाली निर्गुण्डी ) के नाम ४-शेफालिका १ सुवहा २ निर्गुण्डी ३ नीलिका ४॥ ७०॥

# सितासी श्वेतसुरसा भूतवेश्य-

उजडी नेवाडीके नाम २-इवेतसुरसा १ भूतवेशी २॥

- —थ मागधी । गिषाका यूथिकाम्बष्टा— जूहीके नाम ४-मागधी १ गणिका २ यूथिका ३ अम्बष्टा ४॥
- स्ता पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
   पीले फूलकी बूहीका नाम १ हेमपुष्पिका १ ७१
   प्रतिमुक्तः पुण्डकः स्याद्वासन्ती
  माधवी छता।

वसन्तीके नाम ५-ग्रातिमुक्त १ पुण्ड्क २ बासन्ती ३ माधवी ४ लता ५ ॥

सुमना मालती जातिः-

चमेलीके नाम ३ - सुमनस् ९ मासती २ जाति ३॥

--सप्तळा नवमाजिका॥ ७२॥ वर्षाकी वेलीके नाम २-सप्तला १ नवमालिका

माध्यं कुन्दं—

र ॥ ७२ ॥

कुन्दकेनाम २-माध्य १ कुन्द २ ॥

-रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः।

दुपहरी फूलके नाम ३-रक्तक १ वंध्रुक २ बंद्रुजीवक ३॥

सहा क्रमारी तरिश-

धीकारके नाम ३-सहा १ कुमारी २ तरणि ३।

-रम्लानस्तु महासहा ॥ ७३॥

कठैयाके नाम २-ग्रम्सान १ महासहा २॥७३॥

तत्र शोणे कुरबक-

लात नटेयाका नाम १ कुरवक १॥

----स्तत्र पीते कुरण्टकः ।

पोली कटैयाका नाम १-कुरण्टक १॥

नीली भिग्दी द्वयोषींणा दासी चार्तग-लक्ष सा॥ ७४॥

नीती क्लिण्डीके नाम २—वास्ता १ दासी २ अपर्तेगल ३॥ ७४॥

सैरेयकस्तु भिण्टी स्या-

किंडी नात्रके नाम २—सैरेयक १ झिग्टी २॥

—तस्मिन्करबकोऽहणे।

लाल सिरण्डीका नाम १ कुरवक १ ॥

पीता कुरण्टको फिडी तस्मिन्सहचरी इस्मे: ॥ ७५ ॥ पीली किंडीके नाम २ कुरण्टक १ सहच**री** २ ॥ ७५ ॥

ग्रोण्ड्पुष्पं जपापुष्पं—

गुडहरके नाम २-श्रोण्ड्रपुष्प १ जपापुष्प २ ॥

**बज्रपुणं** तिलस्ययत्।

तिर्लीके फुलका नाम १---वज्रपुष्प १॥

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमार्काः
॥ ७६॥ करवीरे—

कद्इल (कनेर) के नाम ५-प्रतिहास १ रात-प्रास २ चण्डात ३ हयमान्क ४ ॥७६॥ करनीर ५

करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ।

करीरके नाम ३-वरीर १ ककर २ प्रथिल ३ #

उन्मतः कितवो धूर्ती धृतरः कनका-ह्यः ॥ ७७ ॥ मातुलो मदनश्रा-

धतूरेक नाम ७—उन्मत्त १ कितव २ धूर्त ३ धतूरे ४ कनकाह्मय ५॥७७॥ मातुल ६ मदन ७ ॥

—स्य फले मातुलपुत्रकः।

वत्रक फलका नाम १-मातुल-पुत्रक १॥

फलपूरो बीजपूरो—

विजीरा नींबूके नाम २—फलगूर १ वीजपूर २

—हंबको मातुलुंगके॥ ७८॥

विजीरा नीबूक मेद-मातुलुङ्ग १ रुचक २॥७८॥

समीरगो महबकः प्रस्थपुष्पः फणि-जकः। जम्बीरो--

महन्नाके नाम ५-समरिए। १ मरुवक २ प्रस्थ -शुष्प ३ फणिजनक ४ जबीर ५ ॥

--ऽप्यथ पर्णासे कठिअरकु**ठेरकौ॥७९**॥

पनसके नाम ३-पर्गास १ कठिजर २ कुटेरक ३॥ ७९॥

सितेऽर्जकोऽत्र--

इवेत पनसका नाम १-अर्जक १ II

--पाठी तु चित्रको वहिसंज्ञकः।

चीतके नाम १-पाठी १ चित्रक २ विहसङ्गक ३ श्रीर जितने श्रीमक नाम उतनेमी चीतेके नाम है॥

# श्रकद्विसुकाऽऽस्फोटगग्रह्णविकी-रग्गाः ॥ ८०॥ मन्दारश्चार्कपर्णो—

श्राकके नाम ७-श्रकांह्व १ वसुक २ श्रस्कोट ३ गगाह्य ४ विकरिगा ५ ॥ ८०॥ मन्दार ६ श्रक्पर्ण ७ श्रोर सूर्यके सब नाम श्राकके नाम है॥

# -- ऽत्र शुक्ले ऽलर्क प्रतापसौ।

श्वेत आकने नाम २- अलॉक १ प्रतापस २ ॥ शिवमञ्जी पाशुपत एकाष्ट्रीलो, बुकी वसु: ॥ ८१ ॥

गूमंके नाम ५-जित्रमही ९ पाछु-पन २ एका-ष्टील ३ बुक ४ तसु ५ ॥ ८९ ॥

वन्दा वृक्षादमी वृत्तरुहा जीवन्तिके-स्यपि।

व्याकाशवेलिके नाम ४-वन्दा १ वृत्तादनी २ वृक्षरहा ३ जीवन्तिका ४॥

वत्साद्नी छित्रस्या गुडूची तन्त्रिका-ऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवङ्की विशल्या मधुपण्यंपि!

गिलोयके नाम ९-वत्सादनी १ छित्ररुहा २ गुद्धची ३ तन्त्रिका ४ अमृता ५ ॥ ८२ ॥ जीव-तिका ६ सोमवही ७ विशल्या ८ मधुपर्गी ९ ॥

न्तां देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥८३॥ मधूलिका मधुश्रेषी गोकर्गी पीछुपर्ण्यपि।

किनारेके नाम १०-मूर्वा १ देवी २ मधुरसा ३ मोरटा ४ तेजनी ५ सवा ६ ॥ ८३ ॥ मधूलिकः ७ मधुश्रेणी ८ गोकर्सी ९ पीछपर्सी ॥ १० ॥

पाठाम्बष्टा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी दसा म८४॥ एकाष्टीह्या पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका।

पेठेके नाम १० पाठा १ ऋम्बष्टा २ विद्धकर्यां रे स्थापनी ४ श्रेयसी ५ रसा ६ ॥ ८४॥ एका-कृष्ट्रा ७ पापनेली ८ प्राचीना ९ बनतिक्तिका १०॥ कटुः कटम्भराऽशोकरोहिश्वी कटुरो-हिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपिता कृष्णभेदी चक्रांगी शकुलादनी ॥

कुटकीने नाम ८-कह १ कटन्मरा २ अशोक-रोहिणा ३ कटुरोहिणा ४॥ ८५॥ मत्स्यपिता ५ कृष्णभेदी ६ चकागी ७ शकुलादनी ८॥

म्रात्मगुप्ताजहाऽन्यण्डा कण्डूरा प्राष्टु-षायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी।

कचके नाम ९-श्रात्मगुप्ता १ द्रजहा २ श्रव्यण्डा ३ कण्ट्रा ४ प्रावृष्यणी ५ ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता ६ श्रुक्तशिम्ब ७ कपिकच्छ ८ मर्वेटी९।

चित्रीपचित्रा न्यग्रोधी इवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यवछेगी सुतश्रेगी रण्डा मुषिकपण्यपि ।

म् लिके नाम १-चित्रा १ उपचित्रा २ न्ययोधी ३ इवन्ती ४ शम्बरी ५ ख्वा ६ ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्थेणी ७ सुत्रथेणी ८ रण्डा ९ मृषिक-पर्शी ॥ १०॥

श्रपामार्गः शैखरिकोऽधामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पणीं केशपणीं किणिही खरमञ्जरी।

अपामार्गके नाम ८-अपामार्ग १ शेखरिक २ अधामार्गव ३ मयूरक ४ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्गी ५ केशपर्गी ६ किणिही ७ खरमजरी ८ ॥

हिं जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्ङ्गी ब्राह्मण-यष्टिका ॥ ८९ ॥ स्रङ्गारवङ्की बालेयशाब-बर्वरवर्धकाः ।

भारंगीके नाम ९-इजिका १ ब्राह्मणी २ पद्मा ३ मार्झी ४ ब्राह्मण्यष्टिका ५ ॥ ८९ ॥ श्रंगार-विक्री ६ बालेयशाक ७ वर्बर ८ वर्धक ९ ॥

मंजिष्ठा विकसा जिगी समङ्गा कालमे-विका ॥ ९० ॥ मण्ड्वसपार्गी भण्डीरी भण्डी योजनवञ्चयपि । मझीठके नाम - ९मंजिष्टा १ विकसा २ जिंगी ३ समेगा ४ कालमेषिका ५ ॥ ९०॥ मण्ड्कपर्गी ६ मण्डीरा ७ भण्डी ८ योजनवळ्ळी ९ ॥

# यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशनः ॥९१॥ रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रांता दुरालभा।

जवासेके नाम १०---याम १ यवास २ दुस्परे ३ धन्वयास ४ कुनाशक ५॥ ९१ ॥ रोदनी ६ कच्छुरा ७ अनन्ता ८ समुद्रान्ता ९ दुरालमा १०॥

#### पृश्निपर्शी पृथवपर्शी चित्रपण्येत्रिप-शिका॥९२ ॥ क्रोण्डुविक्षा सिह्युच्छी कलशी धावनी गुटा।

पिठिवनके नाम ९--- पृथ्यिपर्गो १ पृथकपर्गो २ चित्रपर्गा ३ अत्रिपर्गिता ४ । ९२ । कोरपृत्रिका ५ सिहपुच्छी ६ करहरी ७ प्रावनी ८ गुहा ९ ॥

# निदिग्धिका स्पृशी व्यात्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोहनी कुली अद्भा दुःस्पशो राष्ट्रिकेत्यपि ।

भटकटैया (कटेहर्ता ) के नाम १०—.नेहि-निथका १ मृश्री २ व्यात्री ३ ब्रह्म ४४ क्टइ-कारिका ५ ॥ ९३ ॥ प्रचोरती ६ क्रुली ७ सुद्रा ८ दुःस्पर्शा ९ राष्ट्रिका १० ॥

#### नीली काला क्लीतिकका ग्रामीणा मधुपणिका ॥ ९४ ॥ रखनी श्रीफली तुत्था द्रोगी दोला च नीलिनी ।

नीलके नाम ११—नीली १ काला २ क्लीत-किका ३ प्रामीगा ४ मधुपांगेका ७ १९४॥ रंजनी ६ श्रीफली ७ तुन्था ८ द्रोगी ९ टोला १० नीलिनी ११॥

# स्रवलाजः सोमराजी सुविद्धः सोमव-द्धिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला बाकुची प्रतिफरयपि।

बाकुचीके नाम ८-अवत्युज १ सोमराजी २ सुबिह्न ३ सोमबिह्नका ४॥ ९५॥ कालमेषी ५ कृष्णफला ६ बाकुची ७ पुतिफली ८॥

# कृष्ण्रोपकुरपा वैदेही मागधी चपला

#### कत्ता ॥ ९६ ॥ उषमा पिप्पली शौण्डी कोला—

पीपलके नाम १०—कृष्णा १ उपकुल्या २ वैदेही ३ मागधी ४ चपला ५ कगा ६॥९६॥ उषणा ७ पिप्पली ८ शीण्डी ९ कोला १०॥

# -ऽथ करिपिप्पली । कपिवल्ली कौल-वल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान्॥ ९७॥

गजपीपलके नाम ५-करिपिप्पली '१ कपिवर्ह्णा २ कोलवही ३ श्रेयसी ४ वशिर ५ ॥ ९७ ॥

# चव्य तु चविका-

चावकं नाम ५-चव्य १ चिवका २॥

# —काकविश्वागुश्चे तु कृष्णता।

बुंबुदी (चिग्नर्ठा) के नात ३-काकचिच; ९ गुंज २ कृष्णुला ३ ॥

#### पछंदापा स्विक्षुनन्धाः श्वदंग्ट्रा स्वाहु-कण्डकः ॥९८॥ गोवाण्डका गोक्षुरकाः -वनश्रुकाट श्रत्यपि ।

गोखहर्वे ताम ७-पनकपा १ द्रभुगन्धा २ खन्ब्दूर ३ स्वादुकण्टक ४॥ ९८॥ गोकण्टक ५ गोभुगक ६ वनश्रहाट ७॥

# विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपवि-षारुगा॥ ९९॥ शृङ्गी महीषधं चा—

अतीसके नाम ८-विश्वा १ विपा २ प्रतिविषा ३ अतिविपा ४ उपविषा ५ अक्ष्णा ६ ॥ ९९ ॥ १४ क्षी ७ सहीषव ८॥

# -ऽथ क्षीरावी दुग्धिका समे।

दूर्घीके नाम २-चीरावी १ दुग्धिका २ ॥

# शतमृजी बहुसुताऽभीहरिन्दीवरी वरी ॥ १००॥ ऋष्यमोक्ताऽभीहपत्रीनारायण्यः शतावरी ऋहरू—

शतातरीके नाम १०-शतमृती १ बहुमुता २ अर्मे ६ इन्दीवरी ४ वरी ५ ॥ १०० ॥ ऋष्य-प्रोक्ता ६ अभीरुपत्री ७ नारायग्री ८ शतावरी ९ अर्हेर-१०० ॥

# -ऽरथपीतद्रुकालेयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥ दार्वी पचम्पचा दाहहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

दारुहत्तक्षिके नाम ७-पीतझु १ कालेयक २ हरिद्धु ३॥ १०९॥ दावीं ४ पचंपचा ५ दारुह-स्दि। ६ पजनी ७॥

# वचोत्रगन्धा षड्यन्था गोलोमी शत-पविका॥ १०२॥

क्चके नाम ५-क्चा १ उप्रगन्धा २ षड्प्रन्था ३ गोलोमी ४ शतपर्विक ५॥ १०२॥

### शुक्का हैमवती-

जिसका श्रीत जड हो उस यचका नाम १-इसवती १॥

-वेद्यमातृसिद्धौ तु वाशिका । वृषोऽट-रूपः सिद्धास्यो वासिको वाजिद्नतकः ॥ १०३॥

त्र्यक्सिके नाम ८-वैद्यमातृ १ िन्ही २ वाशिका ३ वृष ४ श्राटकप ५ मिहास्य ६ वासिक ७ वाजिद्नतक ८ ॥ १०३ ॥

#### भास्कोटा गिरिकर्गी स्याद्विष्णुकान्तः पराजिता।

विष्णुकान्ताके नाम ४-आस्फोटा १ गिरिकर्गी २ विष्णुकान्ता ३ अपराजिता ४॥

# इक्षुगन्था तु काण्डेश्चकोकिलाचेश्चर-क्षुराः॥१०४॥

नालगखानेक नाम ५-इक्षुगन्धा १ काण्डेक्षु २ कोफिजाच ३ इक्षुर ४ क्षुर ५ ॥ १०४ ॥

# शालेयः स्याच्छीनशिवश्छ्त्रा मधुरिका मिसिः । मिश्रया—

सौफके नाम ६—शालेय १ शीतशिव २ छन्ना ३ मधुरिका ४ मिसि ५ मिश्रेया ६॥

# —प्यथ सीहुण्हो वज्रः स्तुक्ञ्ची स्तुद्धी गुहा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा—

सेहुंड (थृहर) के नाम ६-सीहुंड १ वज्र २ स्ट्रह ३ स्तुही ४ गुडा ५ ॥ १०५ ॥ समन्त-दुग्धा ६ ॥

#### —ऽथा वेल्लममोघा चित्रत्वण्डुला तण्डुलश्च कृमिन्तश्च चिडडू पुन्यंसकम् ॥ १०६॥

वायविंडगके नाम ६ —वेळ १ श्रमोघा २ चित्र-तण्डुला ३ तण्डुल ४ क्रमिन्न ५ विडङ्ग ६ ॥१०६॥

#### बला वाट्यालको--

बरियरा (खरहॅटी) के नाम २-वता १ वाट्यातक २॥

# —घण्टारवा तु शणपुष्पिका।

सनाटाके नाम २-घण्टारवा १ शरापुष्पिका २॥

### ् मृद्धीका गोम्तनी द्राशा स्वाद्धी मधुर-सेति च ॥ १०७॥

दाखके नाम ५-गद्भीका १ गोस्तर्ना २ द्रासा ३ ग्वाद्वी ४ मधुरसा ५॥ १०७॥

#### सर्वानुसूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिःतः। त्रिभण्डी रोचनी—

श्वेत त्रिधारा (निसोत ) के नाम ७-सर्वातु-भूति १ सरला २ त्रिपुटा ३ त्रिवृता ४ त्रिवृत् ५ त्रिभण्डी ६ रोचनी ७॥

# श्यामापालिन्द्यो तु सुवेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसुरविदलाधऽचन्द्रा कालमेषिका

काले त्रिधारे (निसोत) के नाम ७-ऱ्यामा १ पालिन्दी २ सुषेणिका ३ ४ ९०८ ॥ काला ४ सस्रविदला ५ अर्द्धचन्द्रा ६ कालमेषिका ७ ॥

### मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

जेठीमधुके नाम ४-मधुक १ क्लीतक २ यद्टी-राधुक ३ मधुयष्टिक। ४॥ १०९॥

# विदारी क्षीरशुक्तेश्चगन्धा क्रोप्ट्री तु या सिता।

कृष्णभूकूष्माण्डके नाम द्वेष-विदारी १ क्षीर-शुक्ला २ इक्षुगन्धा ३ कोष्ट्री ४ ॥

ं <mark>घन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्च</mark>-गन्धिका ॥११० ॥ शुक्लभूकृष्माण्डके नाम ३-चीरविदारी १ महा-इवेता २ ऋच्गंधिका ३॥ ११०॥

# लांगली शारदी तोयपिष्पली शकुला-दनी।

जलपीपलके नाम ४---लांगली १ शारदी २ नोयपिप्पली ३ शकुलादनी ४ ॥

#### खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोच-मन्तकः ॥१११॥

मयूरशिष्वा वा श्रजमोदके नाम ५-खराश्वा १ कारवी २ दीव्य ३ मयूर ४ लोचमस्तक ५ ।१९९॥

#### गोपी श्वामा शारिवा म्याद्नन्तोत्पल-शारिवा।

कालीशास्त्र ( श्रनन्तमूल ) के नाम ५-गोप्री ९ स्थामा २ शारिवा ३ अनन्ता ४ उप्पन्तशारिवा५॥

#### योग्यमृद्धिः सिद्धित्तक्ष्मयौ-

ऋद्वि स्रोपिधिके नाम ४——योग्य १ ऋद्वि २ सिद्धि ३ लक्ष्मी ४ ॥

#### बुद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥

ये ही नाम बृद्धिनामक श्रोषधिके भी होते हैं॥ १९२॥

#### कद्ली वारणबुसा रम्भा मोचांशुम-रफला। काण्ठीला—

केलेके नाम ६-कदली १ वारणाबुसा २ रस्मा ३ मोबा ४ अञ्चमत्फला ५ काष्ट्रीला ६ ॥

सुद्गपर्शी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥११३॥ सनमूंगके नाम ३-मुद्रपर्शी १ काकमुद्रा २ सहा ३॥ १९३॥

#### वार्ताकी हिंगुली सिद्दी भण्टाकी दुष्प-विषेशी।

वनभाटे ( रानकटेहली ) के नाम ५— वार्ताकी १ हिगुली २ सिही ३ मण्टाकी ४ दुष्प्र धार्षिगी ५ ॥

नाकुली सुरसा रास्ता सुगन्धा गन्ध-नाकुली ॥ ११४॥ नकुलेष्टा भुजंगासी छवाकी सुबद्दा च सा। रासन ( तुलसी ) के नाम ९—नाकुली ९ सुरसा २ रास्ना ३ सुर्गधा ४ गन्धनाकुली ५ ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा ६ सुर्जगाची ७ झत्राकी ८ सुबहा ९ ॥

# विदारिगन्धांशुमती साळपर्या स्थिरा भुवा ॥ ११५ ॥

शालपर्शी वा संस्विनके नाम ५-विदारिगन्ध १ ऋगुमती २ सालपर्शी ३ स्थिरा ४ श्रुवा ५ ॥ ११५॥

#### तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च।

कपासके नाम ४-तुंडिकेरी १ समुद्रांता २ कार्पासी ३ वदरा ४॥

#### भारद्वाजी तु सा बन्या-

वनकी कपास अर्थात् नरनाका नाम १---भारद्वाजी १ ॥

-श्रुङ्गी तु ऋषभो वृषः॥ ११६॥ काकड़ासींगीके नाम ३--१2 ज्ञी १ ऋषम २ वृष ३॥ ११६॥

गांगेरुकी नागवला भाषा हस्वगवेश्वकाम ककही (गँगेरन) के नाम ४-गांगेरूकी १ नागवला २ भाषा ३ हस्वगवेश्वका ४॥

# धामार्गवो घोषकः स्या-

व्वेत तुरईके नाम २—धामार्गव १ घोषक २४ —न्महाजाली स पीतकः॥ ११७॥

पीलेफुलकी दुरईका नःम १—महाजाली १ ॥ ११७ ॥

#### • ज्योरस्ती पटोळिका गाळी--

चर्चेडके नाम ३ — ज्यो म्र्नी १ प्रृतिस्का २ जाली ३॥

# —नादैयी भूमिजम्बुका।

भूमिजामुनके नाम २-नादेशी १ भूमि-जम्बुका २ ॥

# स्याल्लांगळिक्यम्रिशिखा-

करियारी (कलहारी) के नाम २-लांगलिकी १ ऋप्रिशिखा २ ॥

—काकांगां काकनां सिका ॥ ११८ ॥ काकजंघा अर्थात् कौवाटोढी (मकोह) के नाम २-काकागी १ काकनां सिका २ ॥ ११८॥

# गोधापदी तु सुवहा-

हंसपदी (लाजावती) के नाम २-गोधापदी १ सुवहा २ ॥

# मुसकी तालपूलिका।

मुसर्विक नाम २-मुसर्ती १ तालमू तिका २॥ स्राजशृङ्की विषाणी स्या-

मेडासींगीके नाम २-व्यजश्दनी १ विषासा २॥
-होजिहादार्खिके समे॥ ११९॥
गोमीक नाम २-गेजिहा १ दार्डिका२॥१९९॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लय-

नागडेल ऋर्थात् पानके नाम ३-तांबूलवर्छी १ तांबूली २ नागवर्छा ३॥

-प्यथ द्विजा । हरेणू रेणुका कौन्ती-कपिता मस्मगन्धिनी ॥ १२०॥

गगनवृत्कि नाम ६ — द्विजा १ हरेणु २ रेणुक । ३ कीन्ती ४ कपिला ५ भस्मगन्धिनी ६ ॥ १२०॥

# पतावाञ्जकमैलेयं सुगन्यि हरिवाङ्क-कम्। वाङ्ककं चा−

एख्रमा नामक गन्धद्रव्य विशेषके नाम ५—-एलाबालुक १ ऐलेय २ सुगन्धि ३ हरिवालुक ४ बालुक ५ ॥

-थ पार्छकचां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू

पालवाके नाम ४—पालकी १ मुकुन्द २ कुन्द ३ कुन्दुरु ४ ॥ १२१ ॥

वालं हीबेरबर्हिण्डोदीच्यं केशाम्बु नाम च।

नेत्रवा लाके नाम ४ - वाला १ हीवेर २ बहिँछ

३ उदीच्य ४ ॥ एव केशके श्रीर उदकके सब नाम ॥

# कालातुसार्यवृद्धाश्मषुष्पशीवशिवानि तु॥ १२२ ॥ शैलेयं-

शिलाजीतके नाम ५—कालानुसार्य १ इद्व २ श्चरमपुष्प ३ शीतशिव ४॥ १२२॥ शैळेय ५॥

# ताज्ञपर्णी तु दैत्या गंधकुटी सुरा । गंधिनी-

मुरैठी वा तालीसपत्रके नाम ५— तालपर्गी १ दैत्या २ गन्धकुटी ३ मुरा ४ गेधिनी ५ ॥

# -ग्रजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुस्की सङ्घकी हादिनीति च।

कांसके नाग ८ — गजमक्या १ सुनहा २ मुर्राम ३ रसा ४॥ १२३॥ महेरुणा ५ कुन्दुरुकी ६ सहकी ७ इ.दिनी ८॥

# अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातु-पुष्पिका ॥ १२४ ॥

धव (धायफूल ) के नाम ४—श्रिमज्वाला १ सुभिक्षा २ धातकी ३ धातुपुष्पिका ४ ॥ १२४॥

# पृथ्वीका चन्द्रवाळेला निष्कुटिबंहुला-

बड़ी इलायचीके नाम ५-पृथ्वीका १ चन्द्रवाला २ एला ३ निष्कुटी ४ बहुला ५ ॥

# -ऽथ सा। स्क्मोपकुश्चिका तुत्याः कोरंगी त्रिपुटाबुटिः १२५॥

गुजराती (छोटी) इलायचीके नाम ५-उप-कुम्बिका १ तुत्या २ कोरङ्गी ३ त्रिपुटा ४ अटि ५॥ १२५॥

# न्याधिः कुष्ठं पारिभान्यं न्याप्यं पाकल-मुत्पलम् ।

कूठके नाम ६-व्यावि १ कुछ २ पारिभाव्य ३ व्याप्य ४ पाकल ५ उत्पत्त ६ ॥

# शंखिनी चौरपुष्पी स्यात्केशि-

शंखाहुलीके नाम ३---शंखिनी १ चोरपुष्पी २ केशिनी ३॥

# न्यथिवतुत्रकः ॥ १२६ ॥ झटामळा-ज्झटा ताली शिवा तामलकीति च।

भूम्यामलकी अर्थात् ऋँवरीके नाम ७—वितु-त्रक १ ॥ १२६ ॥ भटा २ अमला ३ अज्भटा ४ ताली ५ शिवा ६ तामलकी ७ ॥

#### प्रपौण्डरीकं पौण्डर्य ---

गुलाबके नाम २-प्रपौण्डरीक १ पौण्डर्य २॥

# -मथ तुन्नः कुवेरकः ॥ १२७॥ कुग्गिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृज्ञो—

तुनके नाम ६ – तुन्न १ कुवैरक २ ॥ १२७ ॥ कुथि। ३ कच्छ ४ कान्तलक ५ नदिवृत्त ६ ॥

#### -ऽथ राज्ञसी। चण्डा धनहरी ज्ञेमदुष्प-त्रगणहासकाः॥ १२८॥

धनहरीके नाम ६—राक्षसी १ चण्डा २ धन-हरी ३ क्षेम ४ दुष्पत्र ५ गराहासक ६ ॥ १२८॥

#### व्याडायुधं व्याव्रनखं करजं चक्रकार-कम्।

नखा (गन्धद्रव्य) के नाम ४—व्याडायुध १ व्याघ्रनख २ करज ३ चक्रकारक ४॥

# सुषिरा विद्यमलता कपातांत्रिर्नटी नली॥ १२२॥

मालकांगनीके नाम ५-सुषिरा १ विद्रुमलता २ कपोतांघि ३ नटी ४ नली ५ ॥ १२९ ॥

# धमन्यञ्जनकेशी च हतुईट्टविलासिनी

ककृदनिके नाम ४—धमनि १ ऋजनकेशी २ इनु ३ हृदृविलासिनी ४॥

शुक्तिः शंखः खुरः कोलद्छं नख-- नखी नाम गन्धद्रव्यविशेषके नाम ५-शुक्ति १ शङ्क २ खुर ३ कोलदल ४ नख ५ ॥

# -मथाटकी ॥ १३०॥ वाक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृताळकसुराष्ट्रजे।

त्रपहरके नाम ६—त्र्याहकी १॥ १३०॥ काची २ मृतंस्ना ३ तुवरिका ४ मृत्तालक ५ सुराष्ट्रज ६॥

#### क्रटन्नटं दासपुरं वानेयं परिपेशवम् ॥ १३१ ॥ प्लवगोपुरगोनदंकैवर्तीमुस्त-कानि च ।

नोधाके नाम ९—कुटन्नट १ दाशपुँर २ वानेख ३ परिपेलव ४॥ १३१॥ प्लव ४ गोपुर ६ गोनर्द ७ केवर्सी ८ सस्तक ९॥

# ग्रंथिपर्ण शुकं बर्ह**षु**ष्वं स्थीणेयक्क-क्कुरे ॥ १३२ ॥

ककरों के नाम ५-प्रन्थिपर्ण १ शुक २ बहर्पुष्प३ स्थीणेय ४ क्षत्रकर ५ ॥ १३२ ॥

#### मरुन्माला तु पिशुना स्प्रका देवी बता लघुः । समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लंकी-पिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

अस्परक के नाम १० — महन्साला १ पिछुना २ स्टक्का ३ देवी ४ लता ५ लघु ६ समुद्रान्ता ७ वधू ८ कोटिवर्षा ९ लकोपिका ५०॥ १३३॥

#### तपस्विनी जटा मोली जटिला लीमशा मिशी।

जटामांसीके नाम ६—तपिलती १ जटा २ मांसी ३ जटिला ४ लोमशा ५ मिशी ६ ॥

# त्वक्पत्रह्नुत्कटं भूगं त्वच चौचं वराङ्ग-कम् ॥ १३४॥

तजके नाम ६---त्ववपत्र ५ उत्कट २ मृङ्ग ३: त्वच्च ४ चोच ५ वरांगक ६ ॥ १२४ ॥

# कर्च्यको द्राविडकः काल्पको वेधमु-ख्यकः।

कचूरके नाम ४-कचूरक १ द्राविडक २ काल्पक ३ वेधमुख्यक ४॥

# स्रोषध्यो जातिमात्रे स्यु-

सब अन्नोंका नाम १-श्रोषधि १॥

-रजतौ सर्वमौषधम् ॥ १३५॥

अनमात्रका नाम १-औषध १॥ १३५॥

# शाकाख्यं षुत्रपुष्पादि--

तकरिमात्रका नाम १-शाक १ ॥

# ---तण्डळीयोऽस्पमारिषः।

चौराईके नाम २-तण्डलीय १ श्रत्पमारिष २ ॥ विशाल्पाग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्र-धुप्पिका ।! १२६ ॥

कलियारी (इन्द्रपुष्पीके) नाम ५-विशल्या १ झाझिशिखा २ अनन्ता ३ फलिनी ४ शकपुष्पिका ५ ॥ १३६ ॥

# स्यादचगन्धा छगळाल्यावेगी वृद्धदा-रकः। जुङ्गो—

विधाराके नाम ५-ऋक्षगन्धा १ छगलान्त्री २ आवेगी ३ बृद्धदारक ४ जुङ्ग ५॥

-ब्राह्मी तु मत्स्याची वयस्था सं।मव-स्नरी ॥ १३७ ॥

ब्राह्मीकं नाम ४-ब्राह्मी १ मत्स्याक्ती २ वयस्था ३ सोमवछरी ४॥ १३७॥

# पदुपर्गी हैमवती स्वर्णशीरी हिमावती।

मकोईक नाम ४-परुपर्णा १ हमवती २ स्वर्ण-सीरी ३ हिमावती ४ ॥

#### हयपुच्छी तु काम्बोर्जा माषपणी महा-सद्या॥ १३८॥

मूंगके नाम ४-हयपुन्छी १ काम्बोजी २ -माषपर्णी ३ महासहा ४॥ १३८॥

#### तुषिडकेरी रक्तफला बिम्बिका पीछु-पण्यंपि।

कुंतुरीके नास ४—तुष्टिकेरी १ रक्तफला २ विभिन्नका ३ पीछपर्गी ४॥

ं बर्बरा कबरी तुंगी खरपुष्पाऽजग-निधका॥१३९॥

बर्बराके नाम ५-वर्बरा १ इवरी २ तुंगी ३ सरपुष्ण ४ अजगन्धिका ५॥ १३९॥

# एळापणीं तु सुहवा रास्ना युक्तरसा च सा।

एलाप पाँकि नाम ४-एलापपाँ १ सुबहा २ <sup>ब</sup>रना ३ युक्तरसा ४॥

#### चांगेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्टाम्लो-णिका॥१४०॥

अम्लोना वा चूकाके नाम ५-चागेरी १ चुिकका २ दन्तराठा ३ अम्बष्टा ४ अम्ललोशिका ॥ १४०॥

# सहस्रवेधी चुक्रोऽम्छवेतसः शतवेध्यपि

श्रमलवेतके नाम ४-सहस्रवेधी १ चुक २ श्रम्लवेतस ३ शतवेधी ४ ॥ (किसी किसीके मतसे चांगेरी श्रादि ९ भी श्रमलवेतके नाम हैं) ॥ ९॥

#### नमस्कारी गण्डकारी समंगा खिद्रे-न्यपि ॥। १४१॥

लजाळ्के नाम ४—नमस्कारी १ गण्डकारी १ समंगा ३ लटिरा ४ ॥ १४९ ॥

#### जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुः स्त्रवा।

जिसे गुजरदेशमे दोड़ी कहते हें उस श्रोषधिके नाम ६-जीवंती १ जीवनी २ जीवा ३ जीवनीबा ४ मधु ५ स्रवा ६। (कोई 'मधुस्रवा' एकनाम कहते हैं)॥

# क्चंशीर्षो मधुरकः शृङ्गद्दस्वांगजी-वकाः॥ १४२॥

जीवकके नाम ५-कृचेशीर्ष १ मधुरक २ ऋद्व ३ हस्याग ४ जीवक ५ ॥ १४२ ॥

# किराततिको भूनिम्बोऽनार्यतिको-

चिरायतेके नाम ३-किराततिक्त १ भूनिस्व २ स्रानार्येतिक ३॥

# -ऽथ सप्तला। विमळा सातला भूरि-फेना चर्नकहेत्यपि॥ १४३॥

सीहुण्डमेदके नाम ५-सप्तला १ विमला सातला ३ भूरिफेना ४ चर्मकषा ५ ॥ १४३ ॥

# वायसोली स्वाहुरसा वयस्था-

काकोलीके नाम ३-वायसोली १ स्वादुरसा वयस्था॥३॥

# ्थ मकूलकः । निकुम्भो दन्तिकाप्रत्य-क्क्रुण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥

वज़दन्ती त्रर्थात् देंतियाके नाम (जिसके बीज को 'जयपाल' कहते हैं) ५-मकूलक १ निकुम्म २ दंतिका ३ प्रत्यवश्रोगी ४ उदुम्बरपर्णी ५ ॥ १४४ ॥

#### चाजमोदा तूग्रनन्था ब्रह्मदर्भायवा-निका।

श्रजमोद या श्रजवायनके नाम ४-श्रजमोदा १ उप्रगन्धा २ ब्रह्मदर्भा ३ यवानिका ४ ॥

# मूले पुष्करकाश्मीरवद्मवत्राणि पौष्करं

योहकरमूलके नाम ३-पुष्कर ६ काझ्मीर २ पद्मपत्र ३॥ १४५॥

#### भ्रान्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचा-रिग्री।

पद्माखंक नाम ५-ग्रव्यथा १ श्रतिचरा २ पद्मा ३ चारटी ४ पद्मचारिग्री ५ ॥

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्तांगोरोचनी-त्यपि ॥ १४६॥

कबीलेके नाम ५-कापित्य १ कर्कश २ चन्द्र ३ रक्तांग ४ रोचनी ५॥ १४६॥

# प्रपुत्राडसवेडगजो द्टुच्नश्चक्रमद्कः । पद्माट उरगारुपश्च---

चकवड़ वा पवाड़के नाम ६-प्रपुन्नाड १ एडगज २ द्वुझ ३ चकमर्दक ४ पद्माट ५ उरगााख्य ६॥

-पलां हुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७॥

प्याजके नाम २-पलांडु १ सुक्न्ह्क २ ।१४७॥ लतार्कदुद्धमौ नत्र हरिते--

हरे प्याजके नाम २-लतार्क १ दुद्रुम २ ॥

#### -ऽथ महौषधम्। लशुनं गृंजनारिष्टम-हाकन्दरसोनकाः॥ १४८॥

त्तह्मुनके नाम ६-महौषध १ तद्युन २ गृजन ३ श्ररिष्ट ४ महाकन्द ५ रसोनक ६॥ १४८॥

#### पुनर्नवा तु शोथध्नी-

गदहपुरेना (साठी) के नाम २-पुनर्नवा 🤉 शोषञ्ची २॥

#### -वितुन्नं सुनिषण्याकम्।

विषखपड़ाके नाम २-वितुत्र १ सुनिषण्याक २

#### स्याद्वातकः शीतलाऽपराजिताशणप्र ण्यंपि ॥ १४९ ॥

पटरानके नाम ४-वातक १ शीतल २ अपरा-जिता ३ शरापर्गा ४ ॥ १४९ ॥

#### पारावताङ्घिः कटभी पण्या ज्योति-भ्मती लता।

मालकांगनीके नाम ५-पारावतांत्रि १ कटमी २ पण्या ३ ज्योतिष्मती ४ लता ५ ॥

#### वार्षिकं त्रयमाणा स्यान्नायन्ती वक-भद्रिका ॥ १५० ॥

त्रायमागुके नाम ४-वार्षिक १ त्रायमागा २ त्रायन्ती ३ बलभड़िका ४ ॥ १५० ॥ \*

#### विष्वक्सेनिया गृष्टिवीराही बढ्रे-त्यपि।

वाराहीकन्दके नाम ४-विष्वक्सेनिप्रया १ गृष्टि २ वाराही ३ बदरा ४॥

# मार्कवो भृद्धराजः स्यात्-

भृगराज (भगरा ) के नाम रे—मार्कव ९ भृगराज २ ॥

# -काकमाची तु वायसी॥ १५१॥

कांविया वा कौवाहां की गोर्डाके नाम २-काक-मानी १ वायसी २ ॥ १५१ ॥

# शतपुष्पासितच्छवाऽतिच्छवा मधुरा मिसिः। ग्रवाकपुष्पी कारवी च-

सौंफके नाम ७-शतपुष्पा १ सितच्छत्रा २ श्रतिच्छत्रा ३ मधुरा ४ मिसि ५ श्रवाक्पुष्पी ६ कारबी ७ ॥

~सरणा तु प्रसारिशा ॥१५२ ॥ तस्यां कटम्भरा राजवला भद्रवलेत्यपि । कुञ्जप्रसारिणी वा चांदवेल वा प्रसारिन (खीप) के नाम ७-सरणा १ प्रसारिणी २ ॥ १५२ ॥ कटम्मरा ३ राजबला ४ महबला ५॥

# जनी जतुका रजनी जतुकृञ्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा-

चकवतंकं नाम ६-जनी १ जतूका २ रजनी ३ जतुकृत् ४ चकवर्तिनी ५ ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ६ ॥

# -ऽथ शठी गःधमूली षङ्ग्रन्थिकेत्यपि। कच्चरोऽपि पलाशो-

कच्रके नाम ५--शठी १ गन्धमूली २ षड्-त्रन्थिका ३ कर्च्र ४ पलाश ५ ॥

-ऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ १५४ ॥ सुषवी चा−

करेलों के नाम २—कारवेल ९ कठिलक २ ॥ ९५४ ॥ सुषवी ३ ॥

-ऽथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पट्टः।
पर्वरके नाम ४---कुलक १ पटोल २ तिक्तक
३ पट्ट ४ ॥

# कूष्मांडकम्तु ककरि-

कुम्हडा (कोहला) के नाम २—कूष्माण्डक १ कर्कारु ॥

-रीर्वाडः कर्कटी खियौ ॥ १५५॥ इकड़ीके नाम २-ईश्रीह १ कंकेटी २ ॥ १५५॥

# इक्षाकुः कटुतुम्बी स्या-

रामतुरई श्रर्थात् लोकिके नाम २—इक्ष्वाकु १ कटुतुम्बी २ ॥

तुम्ब्यलाबूक्भे समे॥ तुम्बीके नाम २---तुम्बी १ श्रलाबू २॥ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा→

जठऊ ककरी (गङ्गा) के नाम ३---चित्रा १ अवाक्ती २ गोडुम्बा ३॥

-विशाला त्विन्द्रवारुगी॥ १५६॥

इन्द्रवारुग्रीके नाम २---विशाला १ इन्द्र-वारुग्री २॥ १५६॥

-अशॉघ्नः सूरणः कन्दः-

सूरण श्रर्थात् जमीकन्दके नाम ३---श्रशोंच्र १ सूरण २ कन्द ३ ॥

#### गर्डीरस्तु समष्ठिला।

गंडरीके नाम २---गंडीर १ समष्टिला २॥

#### कलम्ब्यु-

करें बुद्याका नाम १ कलम्बी १॥

-पोदिका---

पोईका नाम १--उपोदिका १॥

-स्त्री तु मूलकं-

मृलीका नाम १---मूलक १ ॥

-हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

हिलसाका नाम १ —हिलमोचिका १ ॥१५७॥

### वास्तूकं-

बशुएका नाम १--वास्तूक १॥

–शाकभेदाः स्यु–

यह सब शाकके भेद कहें ॥

### -र्द्रवी तु शतप्विका। सहस्रवीयौभा-र्गन्यो रुद्दाऽनन्ता-

दूबके नाम ६ — दूर्वा १ शतपर्विका २ सहस्र-वीर्या २ भागवी ४ रुहा ५ श्रवन्ता ६॥

-ऽथ सा खिता ॥ १५८॥ गोलोमी श्रतवीर्याच गण्डाली शक्कलाचकः।

उजली दृबके नाम ४--॥ १५८॥ गोलोमी १ शतवीर्या २ गण्डाली ३ शकुलाच्चक ४ ॥

# कुरुविन्दो मैघनामा सुस्ता सुस्तकम-स्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

मोथाके नाम ४-कुरुविन्द १ मेघनामन् २ मुस्ता ३ मुस्तक ४ ॥ १५९ ॥

स्याद्धद्रमुस्तको गुन्द्रा-

. मोथाविषके नाम ३—चूड़ाला १ चक्रला २ उचटा ३॥

र्यशे स्वक्सारकर्मारस्वचिसारतृणु-ध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपवा यवफलो वेणु-मस्करतेजनाः ।

बांसके नाम १०-वश १ त्वकसार २ कर्मार ३ त्विसार ४ तृष्यच्वज ५ ॥ १६० ॥ शतपर्वन् ६ खबफल ७ वेणु ८ मस्कर ९ तेजन १० ॥

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्यनि-लोद्धताः ॥ १६१ ॥

जो छेदमें वायु जानेसे शब्द करने लगें उन बांसोंका नाम १---कीचक ॥ १ ॥ १६१ ॥

#### ग्रन्थिन पर्वपरुषी-

गांठके नाम ३-प्रंथि १ पर्वन् २ परुष् ३॥

गुन्द्रस्तेजनकः शरः।

शरके नाम ३--गुंद १ तेजनक २ शर ३॥

नडस्त धमनः पोटगलो-

नलके नाम ३---नड १ धमन २ पोटगल ३॥

-ऽथो काशमिख्याम् ॥ १६२ ॥ इक्कु-गन्धा पोटगनः---

काशके नाम ३-काश १ ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा २ पोटगल १ ॥

--- पुंसि मूम्रि तु बल्वजाः । बगईका नाम १-बल्वज १॥

रसाल इक्ष-

अब अर्थात् गन्नाके नाम २—रसाब १ इक्षु २
 स्तद्भेदाः पुंड्रकान्तारकाद्यः ॥ १६३ ॥
 पौण्डा कखके नाम २—पुण्ड्र १ कान्तारक २
 अवि ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरणं वीरतरं-

गांडरके नाम २ वीरसा १ वीरतर २॥

—मूलोऽस्योशीरमिख्याम् । अभयं नलदं सेन्यममृशालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥ लामजाकं लघुक्यमबदादेष्टकापथे ।

गांडरकी जड़ श्रर्थात् खराके नाम १०-उशीर १ अभय २ नलद ३ सेन्य ४ अमृगाल ५ जला-शय ६॥ १६४॥ लामज्ञक ७ लघुलय हैं८ अव-दाह ९ इष्टकापथ १०॥

नडाद्यस्तृंण गर्भुच्छचामाकप्रमुखा ग्रापि ॥१६५॥

नजादि गर्भुत् स्थामक आदिका नाम १-तृष्ट १॥१६५॥

अस्ती कुशं कुथो दर्भः पवित्र—
कृशके नाम ४-कुश १ कुथ २ दर्भ ३ पवित्र४
—मथ कमृण्म । पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरोहिषम् ॥ १६६ ॥

रोहिसके नाम ६—कत्तुरा १ पौर २ म्रौग-न्धिक ३ ध्याम ४ देवजग्धक ५ रोहिष६ ॥५६६॥

#### छ्त्रातिच्छत्रपालघ्री-

पानीके तृष्यके नाम २--- छत्रा १ ऋतिव्छत्र २ पालच्न ३॥

—मालातृणकभूस्तृणे।

तृराविशेषके नाम २-मालातृराक १ भूस्तृरा २

धष्पं बालतृणं--

नये तृराके नाम २-शष्प १ बालतृरा २ ॥

—्घासो यवसं —

घासके नाम २---धास १ यवस २॥

मर्जुनम् ॥ १६७॥

तृरामात्रके नाम २-तृरा ९ ऋर्जुन २॥१६७॥

वृशानां संहतिस्वण्या-

त्यासमृहका नाम १-- १नृण्या ॥

- नड्या तु नडसंहतिः।

नलोंके समृहका नाम १-नडवा १ ॥ दृगाराजाह्नयस्ताबो—

ताङ्के नाम २—तृगाराज १ ताल २ ॥

—नास्टिकेरस्तु 'लाङ्गली ॥ १६८ ॥

नारियलके नाम २—नात्तिकेर १ लांगली
२ ॥ १६८ ॥

खोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो-सुपारीके नाम ५ धोण्टा १ पूग २ क्रमुक ३ गुवाक ४ खपुर ५ ॥

—ऽस्य तु । फलमुद्धेग—

सुपारीके फलका नाम १-उद्देग १॥

— मेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥१६९॥ खर्जूरः केतकी ताळी खर्जूरी च त्यादुमाः खर्जूरिक नाम ४— खर्जूर १ केतकी २ ताली ३ खर्जूरी ४। पेड़का 'त्यादुम' नाम है॥ १६९॥ इति वनौषिवर्गः ४.

अथ सिहादिवर्गः ५.

सिहो स्गेन्द्रः पश्चास्यो हर्यन्नः केसरो हरिः।

सिंहके नाम ६ - सिंह १ मृगेन्द्र २ पञ्चास्य ३ हर्यक्ष ४ केसरिन् ५ हरि ६ ॥

शार्द्लद्वीपिनौ व्याव्रे-

बाघके नाम ३—शार्दूल १ द्वीपिन् २ व्याघ्र ३

—तरक्षुस्तु मृगादनः॥१॥

चीतेके नाम २-ताक्षु १ ुमृगादन २ ॥ ३ ॥

वराहः सुकरो षृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किष्टिः । दंण्ट्री घोग्री स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥

स्त्रारके नाम १२—धराह १ स्कर २ वृष्टि ३ कोल ४ पोत्रिन् ६ किरि ६ किटि ७ दस्ट्रिन् ८ घोणिन् ९ स्तब्धरोमन् १० क्रोड ११ भूदार १२॥२॥

# कपिप्लवङ्गप्लवगशाखाम्गवलीमुखाः। मर्कटो वानरः कीशो वनौका—

वानरके नाम ९-किप १ प्लवङ्ग २ प्लवग ३ शाखामृग ४ वलीमुख ५ मर्कट ६ वानर ७ कीश. ८ वनोकस् ९ ॥

—ग्रय भरलुके ॥३॥ **म**क्षाच्छभष्ठ-भरलूका—

री छके नाम ४---भल्छक १ ॥ ३॥ ऋस २ अञ्चलभळ ३ मल्ह्यक ४ ॥

# —गण्डके खडुखडुनी।

गैडेके नाम ३ - गण्डक १ खङ्ग २ खङ्गिन ३॥ छुलायो महिषो वाह्यह्यित्कासरसे-रिभाः॥ ४॥

भैसेके नाम ५-छताय १ महिष २ वाहद्विषत् ३ कासर ४ सेरिम ५ ॥ ४॥

श्चियां शिवाभूरिमायगोमायुमृगधू-र्तकाः । श्रृगालवश्चकक्रोण्टुफेरफेरवज-म्बुकाः ॥ ५॥

सियार-गीदड़के नाम १०-शिवा १ भूरिमाय २ गोमायु ३ सृगधूर्तक ४ श्रगाल ५ वंचक ६ क्रोब्ट ७ फेरु ८ फेरव ९ जम्बुक १०॥ ५॥

त्रोतुर्बिडालो मार्जारो वृषद्ंशक स्राखुभुक् ।

बिलावके नाम ५—श्रोतुः १ विडाल २ मार्जार ३ वृषदशक ४ श्राखुभुक् ५ ॥

त्रयो गौधेरगोधारगौधेया गोधिका-त्मजे ॥६॥

चन्दनगोह ( गुहेरा ) श्रर्थात् यह जन्तु काले सर्पसे गोहमे उत्पन्न होता है हिसके नाम ३— गौधेर १ गौधार २ गौधेय ३ ॥ ६ ॥

खावित्त शस्य—

साहीके नाम २--धाविद १ शस्य २॥

—स्तङ्घोम्नि शलली शलछं शलम् ॥

साहीके परोके नाम---- ३ शत्तती १ शतत २ शत ३॥

### वातश्मीर्वातमगः—

श्रीतगामी सृगविशेषके नाम २ —वातप्रमी १ वातस्य २॥

# -कोकस्त्वीहामृगो वृकः॥ ७॥

भेडियेके नाम ३—कोक ५ ईहामृग २ बृक ३॥ ७॥

# मृगे कुरंगवातायुहरिणाजिनयोनयः।

मृगके नाम ५—धृग १ कुरङ्ग २ वातायु ३ हरिसा ४ श्रजिनयोनि ५ ॥

#### ऐणेयमेण्याश्चम् च-

हरिशाके चर्म मांस।दिका नाम १-ऐणेय १॥

# —मेगाम्यैगा—

हरिसाके चर्म मांसादिका नाम १-ऐसा १॥

#### — मुभे त्रिषु ॥ ८॥

ऐणेय त्रीर ऐसा ये शब्द तीनी लिंगोमें होते हैं।

#### कदली कंदली चीनश्रम्रहियकाविष । समुरुश्चेति हरिगा ग्रमी अजिनयोनयः ॥९॥

स्गोंके मेद ७-कदिलन् १ कन्दिलन् २ चीन ३ चमुर्हे ४प्रियक ५ समूह ६ हरिण ७॥ ९॥

# कृष्णसारहहन्धंकुरंकुशम्बर्गोहिषाः। गोकर्णपृषतैषार्थरोहिताश्चमरो मृगाः॥ १०॥

तथा मृगोंके भेद १२-कृष्णसार १ रु २ न्यंकु ३ रंकु ४ शम्बर ५ रीहिष ६ गोकर्ण ७ पृषत ८ एसा ९ ऋष्य १० रोहित ११ चमर १२ ॥ १०॥

# गन्धर्वः शरभो रामः समरो गवयः शशः । इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः॥ ११॥

तथा मृगोंके भेद ६-गन्धर्व १ शरम २ राम ३ समर ४ गवय ५ शश ६ इस प्रकार मृग आदि और सिंह आदि तथा गी आदि पशुनाति कह- लाते हैं॥ ११॥

# उन्दुरुर्म् कोऽपालु —

चृहेके नाम ३-उन्दुह १ मूषक २ श्राख ३ ॥ गिरिका बालमधिका।

छोटी चुहियाके नाम २-गिरिका १ बालमू-षिका २॥

#### सरडः कृकलासः स्या-

गिरगटके नाम २-सरट १ कुकलास २॥

-न्मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

छपकलीके नाम २-मुसली १ गृहगोधिका २॥१२॥

# ळ्ता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः।

मकड़ीके नाम ४-छता १ तन्तुवाय २ कर्ण-नाम ३ मर्कटक ४॥

#### नीलंगुस्तु कृमिः-

कीटविशेषके नाम २—नीलंगु १ कृमि २॥

—कर्णजलौकाः शतपद्यभे॥ १३ ।

कानखजूरेके नाम २-कर्णजलौकस् १ शत-पदी २॥ १३॥

### वृश्चिकः शुककीटः स्या-

अनी वस्रके खानेवाले कीड़ेके नाम २-वृश्चिक ९ शुक्रकीट २॥

# -दलिद्रोणौ तु वृश्चिके।

बीछूके नाम ३-श्रिल १ द्रोण २ वृत्तिचक ३ ॥ पारावतः कळरवः कपोतो-

कबूतरके नाम ३-पारावत १ कलरव २ कपोत<sup>े</sup> ३॥

### -sथ शशादनः ॥ १४ ॥ पत्री श्येन-

बाजके नाम ३ - शशादन १ ॥ १४ ॥ पत्रिन् २ क्येन ३ ॥

### उल्लक्त वायसारातिपेचकौ।

उल्लुके नाम ३---उल्लुक १ वायसाराति २ पेचक ३॥ व्याघाटः स्याद्भरद्वाजः-

भरद्वाज पक्षीके नाम २—व्याघाट ' अरद्वाज २ ॥

खअरीटस्तु खअनः॥ १५॥

खडानके नाम २-खडारीट १ खडान २ ॥१५॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्या-

कंक पत्तीके नाम २-लोहपृष्ठ १ कंक २ ॥

' -दथ चाषः किकीदिविः।

नीलकण्ठके नाम २-चाष १ किकीदिवि २॥

कलिङ्गभृ द्रधूम्याटा-

मस्तकचूडपत्तीके नाम ३-कलिग १ भृग २ श्रुम्याट ३ ॥

-अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥ दार्वा-चारो—

खुटबढई पक्षीके नाम २-शतपत्रक १ ॥ १६॥ दार्वाघाट २ ॥

-ऽथ सारंगस्तोककश्चातकः समाः।

पपीहा श्रर्थात् चातकके नाम ३-सारंग १ जोकक २ चातक ३ ॥

कृकवाकुस्ताम्रचृडः कुक्कुटश्चरणा-युधः॥१७॥

मुरगेके नाम ४-इक्क्वाकु १ ताम्रच्ड २ कुक्कुट ३ चरगायुष ४ ॥ १७ ॥

चटकः कलविङ्कः स्यात-

चिरोटे (चिडे) के नाम २—चटक ९ •कवर्षिक २ ॥

-तस्य स्त्री चटकाविविधाका नाम १-चटका १ ॥
तयोः । पुमपत्ये चाटकैरः-इनके बचेका नाम १-चाटकेर १ ॥
-इयपत्ये चटकेव सा ॥ १८॥
इनके बचीका नाम १-चटका १ ॥ १८॥

कर्करेट्टः करेट्टः स्यात-

एक प्रकारके श्रह्मभ शब्द करनेवाले पत्तीके नाम २-कर्करेटु १ करेटु २ ॥

कुक्यक्रकरी समी।

चिडियाविशेषके नाम २-इक्स्या १ ककर २॥

वनिष्रयः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि॥१९॥

कोयलके नाम ४-वनप्रिय १ परमृत २ कोकि-ल ३ पिक ४ ॥ १९ ॥

काके तु करटारिष्टबळिपुष्टसकृत्यजाः। ध्वाङ्चात्मघोषपरभृद्वळिभुग्वायसा अपि ॥ २०॥

को वेके नाम १०-काक १ करट २ ऋरिष्ट ३ विलिपुष्ट ४ सक्टरप्रज ५ ब्हांस्त ६ आत्मघोष ७ परभृत ८ बलिभुज् ९ वायस १०॥ २०॥

द्रोगकाकस्तु काकोली-

डोम कौवेके नाम २-द्रोगाकाक १ काकोल २॥

-दात्यृहः कालकण्डकः।

काले कोवेके नाम २-दात्युह १ कालकण्ठक२॥

ष्मातापिचिस्ली-

चीलके नाम २-आतापि १ चि २

दाचाय्यगृध्री—

गीवके नाम २-दान्ताय्य ९ गृझ २॥

-कीरशुकौ-

तोतेंके नाम २-कीर १ शुक २ 🕯

-समी॥ २१॥

श्रातापि, श्रीर विल्ल, दाक्षाय्य श्रीर गृध्न तथा स्टीर श्रीर शुक शब्द समानलिंग हैं॥ २१॥

कुङ्कीञ्चो-

की अपक्षीके नाम २--- मुंच १ की अ २॥

–ऽथ बकः कहः—

बगुलेके नाम २-बक १ कहां 🖓 ॥

#### पुष्कराहृस्तु सारसः।

सारसके नाम २--पुष्कराह १ सारस २ ॥ कोकश्चक्रश्चकवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२॥

चकई चकवाके नाम ४—कोक १ चक २ चकवाक ३ रथाग ४ ॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्या-वर्त्तक पचीके नाम २-कादम्ब १ कलहंस २ ॥ --दुत्कोशकुररौ समी। कुररी पचीके नाम २-उत्कोश १ कुरर २ ॥ हंसास्त श्वेतगढ्तश्चकांगा मानसौ-

कसः ॥ २३ ॥ इंसके नाम ४—इंस १ व्वेतगस्त् २ चकांग ३

राजइंसास्तु ते चञ्चुचरग्रैलॉहितैः सिताः।

जिन हंसों की चोच खीर पैर लाल हो श्रीर देह उज्ज्वल हो उन हंसोंका नाम १—राजहस १ ॥

मिळिनैमिल्लिकाचास्ते-

मानसीकस् ४॥ २३॥

जिन हसोंके चरखादि मैले हो उनका नाम १--मिलकाच १ ॥

-धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४॥

जिनके चोंच श्रीर चरगा काले हों उन हंसींका नाम १---धार्तराष्ट्र १ ॥ २४ ॥

शरारिराटिराडिश्च-

त्राडी पद्धीके नाम ३─शरारि ९ आटि २ आडि ३॥

-बलाका बिसकविडका ।

बगुलेके दूपरी जातिके नाम २-वताका १ विसकिध्वका २ ॥

, इंसस्य ये।विद्वरटा-इंसनीका नाम १-वरटा १ ॥

-सारसस्य तु लक्ष्ममा ॥ २५ ॥

सारसकी स्त्रीका नाम १-लक्ष्मणा १ ॥ २५ ॥

जतुकाऽजिनपत्रा स्याद-

चिमगादरके नाम २-जतुका १ श्रजिनपत्रा २। -परोग्गा तैलपायिका।

चपरा पद्मीके नाम २-परोष्णी ९ तैल-पायिका २ ॥

वर्वेषा मक्षिका नीळा-

मक्खीके नाम ३-वर्षणा १ मक्षिका २ नीला ३।

-सरघा मधुमक्षिका ॥ २६॥

शहदकी मक्खीके नाम २—सरघा १ मधु-मिक्षका २ ॥ २६ ॥

पतंगिका प्रतिका स्या-

छोटी मक्खीके नाम २-पंतिका । पुत्तिकार।

दंशस्तु वनमक्षिका।

डांसके नाम २-दंश १ वनमक्षिका २ ॥

दंशी तज्जातिरत्वा स्या—

छोटे डांसका नाम १-दंशी १ ४

—द्रन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २० #

गन्धोली मक्खीके नाम २-गंघोली १ वरटा

२ ॥ २७ ॥

भृगारी झीरुका चीरी मिल्लिका च समाइमाः।

सींगरके नाम ४--एंगारी १ फीएका २ चीनी ३ किल्लिका ४ ॥

समी पतंगशलभी-

प्तंगके नाम २-पतंग १ शलभ २ ॥

खद्योतो ज्योतिरिंग्याः॥ २८॥

जुगुनू कीडेके नाम २—खयोत १ ज्योति-रिज्ञण २ ॥ २८ ॥

मञ्जूतो मञ्जूकरो मञ्जूतिण्मञ्जूपाळिनः। द्धिरेकपुष्पळिङ्भंगषदूपद्श्रमरालयः॥२९।

भैवरेके नाम ११--मधुत्रत १ मधुका २

मधुलिह् ३ मधुप ४ श्रक्तिन् ५ द्विरेफ ६ पुष्प-लिह् ७ मृझ ८ षद्वपद ९ अमर १० श्रक्ति १९॥ २९॥

मयूरो वहिंगो वहीं नीलकण्डो भुजंग-भुक्। शिखावलः शिखी कंकी मेघनादा-जलास्यपि॥ ३०॥

मोरक नाम ९-मयूर १ बर्हिश २ बर्हिन् ३ नीलकण्ठ ४ भुजंगभुज् ५ शिखावल ६ शिखिन् ७ केकिन् ८ मेघनादानुलासिन् ९ ॥ ३० ॥

केका वाणी मयूरस्य-

मोरक शब्दका नाम १-केका १ ॥

समी चन्द्रकमेचकौ।

मोरके परोंपर चन्द्राकार चिह्नोके नाम २--चन्द्रक १ मेचक २ ॥

#### शिखा चुडा--

मोरकी चोर्टाके नाम २-शिखा १ चृडा २ ॥

शिखण्डस्तु पिच्छबहें नपुंसके ॥३१॥ मोरक परीक नाम ३ शिखण्ड १ पिच्छ २ बहुं ३॥ ३१॥

खगे विद्दंगविद्दगविद्दंगमविद्दायसः । शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥ पतित्रपत्तिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः नगौकोवाजिविकिरविविष्करपतत्रयः । ॥ ३३ ॥ नीडोद्भवा गहत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः।

पद्मीमात्रके नाम २७—खग १ विहुँग २ विहुग ३ विहुंगम ४ विहायस् ५ शकुन्ति ६ पक्षिन् ७ शकुन्ति ८ शकुन्त ९ शकुन्त ९ शकुन्त १० द्विज ११ ॥३२॥ पतित् १२ पतित् १३ पतग १४ पतत् १५ पत्रस्थ १६ ऋण्डज १० नगौकस् १८ वाजिन् १९ विकिर २० वि २१ विन्कर २२ पतित्र २३॥ ३३॥ नीडोद्भव २४ गरुत्मत् २५ पित्सत् २६ नमसंगम २७॥

वेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः स्वः ॥ ३४॥ वित्तिरः- —कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्वकोरकः॥ कौयष्टिकष्टिहिभको वर्तको वर्तिका-दयः॥३५॥

पक्षियों के मेद १३-हारीत १ मद्गु २ कारण्डव ३ प्लव ४ ॥ ३४ ॥ तित्तिरि ५ कुक्कुम
६ लाव ७ जीवंजीव ८ चकोरक ९ कोयष्टिक १०
टिष्टिमक ११ वर्तक १२ वर्तिका १३ इत्यादि ३५॥
गहत्पच्छ्दाः पत्रं पत्रं च तन्रहृष्म् ।
पक्षियों के परों के नाम ६-गहत् १ पच्च २ छद्द
३ पत्र ४ पतत्र ५ तन्रहृह् ६ ॥

ह्यी पत्ततिः पत्तमूलं-

पिक्षयोके बाजके नाम २-पक्षति १ पद्ममूल २
---चञ्चुखोटिक्भे खियौ ॥ ३६ ॥
चोचके नाम २/चञ्च १ त्रोटि २ ॥ ३६ ॥
प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।

पित्त्यों की चालके मेद ३-प्रडीन १ उड्डीन २ संडीन ३॥

पेशी कोशो द्विद्दीनेऽण्डं—
श्रण्डके नाम ३-पेशी १ कोश २ श्रण्ड ॥३॥
—कुलायो नीडमिश्चयाम् ॥ ३७ ॥
पित्रयोके घरके नाम २-कुलाय १ नीड २ ३७
पोतः पाकोऽभंको सिम्भः पृथुकः
शावकः शिशुः ।

पक्षियोंके वा साधारण बच्चोंके नाम ७-पोत १ पाक २ ऋभेक ३ डिम्म ४ पृशुक ५ शावक ६ शिद्युः ७ ॥

खीपुसी मिथुनं दंदं—

स्त्रीपुरुषके जोडेके नाम ३—स्त्रीपुंस १ मिशुन २ दुन्द्र ३॥

युग्मं तु युगळं युगम् ॥ ३८ ॥
जोडेके नाम ३-युग्म १ युगत २ युग ३ ३८॥
समृद्दो निवद्वव्यूहसंदोह विसरव्रजाः ।
स्वोमोधनिकरवातवारसंघातसं—

चयाः॥ ३९॥ समुदायः समुद्यः, सम-चायश्च यो गणः। स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं ग्निकुरम्बं कदम्बकम्॥ ४०॥

समूहके नाम २२-समूह १ निवह २ व्यूह ३ सन्दोह ४ विसर ५ ब्रज ६ स्तोम ७ खोघ ८ निकर ९ बात १० वार ११ संघात १२ संवध १३ ॥ ३९ ॥ समुदाय १४ ॥ समुद्य १५ समवाय १६ वय १७ गरा १८ संहति १९ वृन्द २० निक्रस्ब २१ कदंबक २२ ॥ ४० ॥

#### वृन्दभेदाः---

श्रथ समूहोंके भेंद कहते है ॥

#### —समैर्बर्गः—

जीव अजीव एकही जातिके समूहका नाम १-सर्ग १-

# संघतार्थीं तु जन्तुभिः।

केवल प्राणियोंके समूहके <u>-</u>नाम २ संघ १ सार्थ २।।

# सजातीयैः कुलं--

एक जातिके ही प्राणियोंके समृहका नाम १-कुल १ ॥

—यथस्तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥ पक्षियोके समृहका नाम १-यूथ १ ॥ ४१ ॥ पशुनां समजो—

पञ्ज्योंके समूहका नाम १-समज १।।

#### ---ऽन्येषां समाजो--

पर्ता और पशुओंसे दसरों के समूहका नाम १-समाज १॥

—ऽथ सर्धामगाम्। स्यातिकायः—
एक धर्मावर्जवियोके समूहका नाम १--निकाय१

-पुअराशी तृत्करः कूटमिख्याम्॥४२॥

श्रकादिक ऊंचे ढेरके नाम ४--पुंज १ राशि २

उतकर ३ कृट ४ ॥ ४२ ॥

कापोतशौकमायूरतेनिरादीनितद्वणे।

(कब्तरोंके समूहका नाम )कापोत॥ (तोतोंके समूहका नाम ) शोक ॥ (मयूरोंके समूहका नाम ) मायूर ॥ (तीतरोंके समृहका नाम ) तैत्तिर इत्यादि॥

गृहासक्ताः पित्तमृगाश्छेकास्ते <mark>गृह्या-</mark> काश्च ते ॥ ४३ ॥

घरके पाले हुए मृगपत्ती श्रादिके नाम २-ब्रेक १ गृह्यक २ ॥ ४३ ।।

इति सिहादिवर्गः ॥ ५ ॥

स्रथ मतुष्यवर्गः ६.

मतुष्या मातुषा मृत्या मतुषा मानवा नराः॥

मनुष्यमात्रके नाम ६--मनुष्य १ मानुष १ मर्त्य ३ मनुज ४ मानव ५ नर ६ ॥

स्युः पुमांसः पश्चजनाः पुरुषाः पूरुषाः नरः ॥१॥

मनुष्यजातिपुरुषके नाम ५०-पुंस् १ पश्चजन २ २ पुरुष ३ पूरुष ४ न ५॥ १॥

ह्यी योषिद्वंला योषा नारी सीमंतिनी-वधूः। प्रतीपद्शिनी वामा वनिता महि-ला तथा॥ २ ॥

स्त्रीके नाम ११--स्त्री १ योषित् २ अवता ३ योषा ४ नारी ५ सीमंतिनी ६ न्यू ७ प्रतीपद-शिंनी ८ वामा ९ वनिता १० महिला ११ ।।२॥

#### विशेषा---

स्त्रियोंके विशेषभेंद कहते हैं।।

--स्वडूना भीरः कामिनी वामलो-चना। प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥३॥ सुन्द्री रमणी रामा-

श्रन्छे श्रंगोवाली स्नीका नाम १-श्रंगना १ # डरभूत स्नीका नाम १-मी६ १ ॥ कामगुतस्नीका नाम १-कामिनी १ ॥ युन्दरनेश्लोवाली स्नीका नाम,१-वामलोचना १ ॥ बहुत कामवती स्नीका नाम १-प्रमदा १ ॥ प्रणुयकोपवाली स्नीका नाम 9-मानिनी १॥ मन हरनेवाली स्त्रीका नाम १-कान्ता १॥ दुलारी स्त्रीके नाम २---ललना १ नितम्बनी २॥ ३॥ सुन्दर श्रंगोवाली स्त्रीका नाम १-सुन्दरी १॥ जिसमें चित्तश्रतिरिमत हो उस स्त्रीका नाम १---रमग्री १॥ विहारके योग्य स्त्रीका नाम १---रामा १॥

# -कोपना सैव भामिनी।

कोपवाली इनिके नाम २ कोपना १ मामिनी २॥ वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरदिणिनी ॥ ४॥

बहुतही उत्तम स्त्रीके नाम ४ वरारोहा १ मत्त-काशिनी २ उत्तमा ३ वरवर्शिनी ४ ॥ ४ ॥

# कृताभिषेका महिषी-

जिस रानीका श्रमिषेक हुश्रा हो उसका नाम १—महिषी १॥

# भोगिन्योऽन्या नृपश्चियः ।

महिषीको छोड़ राजाकी अन्य स्त्रियोंका नाम १---भोगिनी १ ॥ •

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहध-मिंग्री ॥ ५ ॥ आर्या जायाथ पुंभूम्बि द्वाराः—

व्याही हुई स्त्रीके नाम ७—पत्नी १ पाणि-गृहीती २ द्रितीया ३ सहधर्मिणी ४ ॥ ५ ॥ मार्था ५ जाया ६ दार पु॰व॰ ७ ॥

# —स्यातु कुटुम्बिनी । पुरन्त्री—

जिस स्त्रीके पतिपुत्र दोनों विद्यमान हों उसके नाम २---कुटुंबिनी १ पुरन्ध्री २ ।।

—सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिब्रता ॥ ६॥

पतिवता स्त्रीके नाम ४—सुचरित्रा १ सती २ साच्यी ३ पतिवता ४॥६॥

# कृतसापत्निकाध्युढाधिविन्ना-

जिसके बहुतसी क्रियां हो उनमें जो प्रथम क्वाही गयी हो उसके नाम ३—कृतसापिकका १ अन्यूढा २ अधिनिज्ञा ३॥

#### —ऽथे स्वयंवरा। पतिवरा च वयी-

जो श्रपने श्राप स्वयंवराधिमें पतिकी इच्छा करे उस स्त्रीके नाम – ३ स्वयंवरा १ पतिंवरा २ वर्षा ३ ॥

#### —sय कुलख्री कुलपा सिका n ७ n

कुलवती स्त्रीके नाम २—कुलझी १ कुल— पालिका २॥७॥

# कन्या कुमारी---

पांच वर्षकी कन्याके नाम २-कन्या % कुमारी २॥

# —गौरी तु निम्नकाऽनागतार्तवा।

दशवर्षकी कन्याके नाम ३-गौरी १ निमका ३. अनागतार्तवा ३ ॥

#### स्यान्मध्यमा दृष्टरजा-

जिसको रजोधमर्म हो जाय उस श्लीका नाम-१ः मध्यमा १ ॥

—स्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ n

युवा इतिके नाम २-तरुणी १ युवती २ ॥८॥।

# समाः स्तुषाजनीवध्व---

षद्ध (पुत्रवधू) के नाम ३—स्तुषा ९ जनी २० वधू ३॥

# -श्विरण्टी तु सुवासिनी।

जो कि किचित् युवावस्थाको प्राप्त ब्याही हुई निज पिताके घरमें रहती हो उस स्त्रीके नाम २— चिरण्टी १ स्वासिनी २ ॥

# इच्छावती कामुका स्या-

जो धनादिकी इच्छा करती हो उस श्लीके नामः २-इच्छावती १ कामुका २ ॥

# --- द्वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९॥

मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम .२—-वृषस्यन्ती १ कामुकी २ ॥ ९ ॥

कान्तार्थिनी तु सा याति संकेतं साऽभि-सारिका । जो पतिकी इच्छा कर कामार्त्त हो संकेत स्थान को जावे उस ख्लोका नाम १-व्यमिसारिका १॥

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटे-त्वरी॥ १०॥ स्वेरिग्री पांग्रला च स्या-

व्यभिचारिग्री स्त्रीके नाम ८-पुंश्वली १ घर्षिग्री २ बन्धकी ३ श्रसती ४ कुलटा ५ इत्वरी ६ ॥ १० स्वैरिणी ७ पांसुला ८ ॥

# द्शिश्वी शिशुना विना।

विना पुत्रवाली स्त्रीका नाम १-स्रशिक्षी १॥ स्रवीरा निष्पतिस्ता-

जिमके पति पुत्र न हो उस स्त्रीका नाम १---अतीरा १ ॥

#### —विश्वस्ताविधवे समे॥ ११ ॥

विधवा स्त्रीके नाम २--विश्वस्ता १ विधवा २॥ ११॥

ग्राक्तिः सखी वयस्याथ-

सर्ली वा साथ खेलनेवाली स्त्रीके नाम ३-म्ब्रालि १ सर्ली २ वयस्या ३ ॥

# -पतिवली सर्भवृका।

जिस स्त्रीका पति जीता हो उसके नाम २-पतिवरनो १ समतुंका २॥

# वृद्धा पत्तिक्नी-

वृढी स्त्रीके नाम २-वृद्धा १ पलिक्नी २ ॥

-प्राज्ञी तु प्रज्ञा-

कुछ-कुछ समक्कदार इतिके नाम २─प्राज्ञी १ प्रजा २ ॥

-प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२॥

श्रति बुद्धिमती स्त्रीके नाम २—प्राज्ञा १ भीमती २॥१२॥

शुद्रो शुद्रस्य भार्या स्या-

चाहे अन्य जाति भी हो पर शृहकी झी हो उस झीका नाम १-शृही १॥

-च्छूदा तज्जात्रिरेष चा

श्रद्रजातिका नाम १-श्रद्धा १॥ 🌼 🌖 👌 स्राभीरी तु महाशूद्दी जातिपुरोगपा समा ॥ १३ ॥

श्रहिरिनिके नाम ३-श्रामीरी १ ॄ्महाश्रद्धि २॥१३॥

ष्यर्याणी स्वयमर्या स्वात -

बनैनीके नाम २-अर्याणी १ अर्या २ ॥

—त्तुत्त्रिया चित्त्रियाण्यपि । त्तृत्रियानीके नाम २-त्तृत्रिया १ त्रृत्रियाणी२.

उपाध्यायाग्युपाध्यायी-

पंडितानीके नाम २-उपाच्याया १ उपा--च्यायी २॥

-स्यादाचार्यापि च स्वतः॥ १४२॥

जो अपने अपने आप मंत्रोंके अर्थ कह सके उसका नाम १-आचार्या १॥ १४॥

# धाचार्यांनी तु प्रयोगे-

चाहे मंत्रादिकी व्याख्या न कर सके पर आवार्यकी क्रो हो उसका नाम १-श्रावार्थांनी १६

~स्यादर्यी

वैसे ही अर्थ (वैश्य ) की इतीका नाम १—-अर्थी १ ॥

-चत्रियी तथा।

क्षत्रियकी स्त्रीका नाम १-- इत्रिणी १ ॥

उवाध्यायान्युपाष्यायी-

पढ़ानेवाली ल्लाके इसी प्रकारके नाम २-उपा-ध्यायानी १ उपाध्यायी २॥

-पोटा स्त्री उंसलच्या ॥ १५॥

डाढ़ी मूळ श्रादियुक्त स्त्रीका नाम ९~ पोटा १॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभायी

\_ बीरकी स्त्रीके नाम २-वीरपत्नी ु१ वीरमार्थी २:

—वीरमाता तु वीरस्ः।

वीरकी माताके नाम २-वीरमातृ १ वीरसू २ ॥ जातापत्या प्रजाता च प्रस्ता च प्रस्- तिका ॥ १६॥

जिनके बालक पैदा हुआ हो उस इतिके नाम ४-जातापत्या १ प्रजाता २ प्रसूता ३ प्रसू--तिका ४॥ १६॥

ह्वी निम्नका कोटवी स्याद्-

नज्ञी स्त्रीके नाम २ — निप्तका १ कोटवी २ ॥

- द्ती सञ्चारिके समे।

दूतीके नाम २-दूती १ सचारिका २ ॥

कात्यायन्यर्धमृद्धा या काषायवसना-ऽधवा॥ १७॥

गेरू श्रादिसे रॅगे हुए वस्न पहरनेवाली कुछ इद्घ विधवा स्त्रीका नाम १-कात्यायनी १ ॥ १७॥

संरम्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्प-कारिका॥

श्रपनी इच्छाके श्रनुसार पराये गृहमें रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्रीका नाम १-सेरन्त्री १॥

श्रसिकनी स्याद्वृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुर-चारिशा ॥ १८॥

घरके भीतर सेवा आदि कार्य करनेवाली जवान श्रीका नाम १--आसिक्नी १॥१८॥

वारह्वी गणिका वेश्या रूपाजीवा-

वेश्याके नाम ४--वारली १ गणिका २ वेश्या ३ रूपाजीवा ४॥

—ऽथ सा जनैः। सत्कृता वारमुख्या स्यात—

जिसका पुरुष श्रिषक सत्कार करे श्रर्थात् सब-में श्रेष्ठ वेस्थाका नाम १-वारमुख्या १॥

**कुटनी शम्भळी समे ॥ १९ ॥** कुटनीके नाम १-कुटनी १ शम्मली २ ॥१९॥

'विप्रश्निका त्वं स्विणिका देवज्ञा--सामुद्रिक श्रादि शास्त्रानुसार सत्त्वण जानकर शुभाशुभ फैल कहनेवाली स्त्रीके नाम ३-विप्रहित-का १ ईच्चिका २ देवज्ञा ३॥

ऽथ रजस्वला । श्वीधर्मिण्यविरावेयी मिलनी पुष्पवत्यपि ॥२०॥ ऋतुमत्यप्युद-क्यापि—

रजस्वला स्नीके नाम ८-रजस्वला १ स्नीधर्मिणी २ श्रवि ३ श्रात्रेयी ४ मिलनी ५ पुष्पवती ६ ॥२० ऋतुमती ७ उदक्या ८ ॥

-स्याद्रजः पुष्पमातंवम्।

स्त्रीके मासिक रजोधर्मके नाम ३-रजस् १ पुष्प २ श्रातंव ३॥

श्रद्धालुद्दीहद्वती—

गर्भके समय श्रनंक प्रकारकी इच्छा करनेवाली स्त्रीके नाम २-श्रद्वालु १ दोहदवती २ ॥

—निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥

रजोहीन स्त्रीके नाम २-निष्कला १ विगता-र्तवा २ ॥ २१ ॥

भ्रापन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिग्री।

गर्भवाली स्त्रीके नाम ४-त्रापन्नसत्त्वा १ गुर्विणी २ अन्तर्वतनी ३ गर्भिणी ४ ॥

गियाकादेस्तु गाणिक्यं गाभियां यौवतं गुणे॥ २२॥

वेश्याश्चोंके समूहका नाम १ गाणिक्य १॥ गर्भिणियोंके समूहका नाम १-गार्भिण १॥ युवतियोंके समूहका नाम १-योवत १॥ २२॥

# पुनर्भृदिधिषुरूहा द्वि-

जिस स्त्रीका विवाहसंस्कार द्वितीयवार हो उस स्त्रीके नाम २-पुनर्भू १ दिधिषू २ ॥

—स्तस्या दिधिष्ठः पतिः।

उसके पतिका नाम १-दिविषु १।

स तु द्विजोऽप्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटु-म्बिनी ॥ २३॥ जिसका द्वितीयवार विवाहसंस्कार है। वह स्त्री श्रीर उसका पति उन दोनोंसे उत्पन्न बालकका नाम १-श्रप्रेदिधिषू १॥ २३॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतो-

कन्यासे उत्पन्न हुए पुत्रके नाम २- कानीन १ कन्यकाजात २ ॥

su सुभगासुतः । सौभागिनेयः—

सोभाग्यवती श्लोके पुत्रके नाम २- सुमगासुत १ सोमागिनेय २ ॥

—स्यात्पारह्मणेयस्तु परिह्मयाः॥ २४ । परत्नीके पुत्रका नाम १-पारत्नेणेय १ ॥ २४ ॥ पेतृष्वसेयः स्यात्पेतृष्वस्रीयश्च पितृ-ष्वसुः । सुतो—

पिताकी बहन अर्थात् खुवाके पुत्रके नाम २— पैमुष्वसेय १ पैसुष्वस्रीय २ ॥

# —मातृष्वसुश्चैवं—

मौसीके पुत्रके नाम २-मातृष्वसेय १ मातृष्व स्रीय २॥

वैमात्रेयो विमातृजः॥ २५॥

सौतेले भाईके नाम २—वैमात्रय १ विमातृज २ ॥ २५ ॥

श्रथ बान्धकिनेयः स्याद्धन्धुलश्वासती-सुतः। कौलटेरः कोलटेयां—

कुलटाके पुत्रके नाम ५-बान्धिकनेय १ बन्धुल २ स्त्रसतीस्रत ३ कोलटेर ४ कोलटेय ५ ॥

भिश्चकी तुसती यदि ॥ २६ ॥ तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चारमजः।

जो सती मिक्षाके निमित्त घरोमें फिरे ॥ २६ ॥ ृ उसके पुत्रके नाम २— कौलटिनेय १ कौलटेय २ ॥

भारमजस्तनयः सृतुः सुतः पुत्रः— पुत्रके नाम ५-श्रात्मज १ तनय २ स्तु ३ सुत ४ पुत्र ५ ॥

ह्रियां स्वमी ॥ २७ ॥ भ्राहुर्दृद्दितरं सर्वे — जो पुत्रके नाम स्त्रीलिंगमें हो तो पुत्रीके नाम हो जाते हैं॥ २७॥

-- उपत्यं तोकं तयोः समे।

पुत्र पुत्री साधारखके नाम २- ऋपत्य १ तोक २॥

स्वजाते त्वीरसोरस्यी-

संगे पुत्रके नाम २-ग्रीरस १ उरस्य २ ॥

—तातस्तु जनकः पिता॥ २८॥

पिताके नाम ३-तात १ जनक २ पिता ३॥२८॥

जर्नायत्री असूमीता जननी-

माताके नाम ४-जनियत्री १ प्रसू २ मातृ ३ जननी ४॥

भगिनी स्वसा।

बहिनके नाम २-भगिनी १ स्वस् २॥

ननान्दा तु स्वसा पायु-

ननन्दका नाम ५-ननान्द १॥

र्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥

नातिनिके नाम ३-नप्त्री ९ पौत्री २ स्रतात्मना ३॥ २९॥

भायस्ति भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम्।

श्रापसमें भ्रातृवर्गकी स्त्रियोका नाम १-यातृ १४

प्रजावती भ्रातृजाया-

भौजाईके नाम २-प्रजावती १ आतृजाया २ ॥

स्मतुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

मार्मीके नाम २-मातुलानी १ मातुली २ ॥३०॥

पतिपत्न्योः प्रसुः श्वश्रः-

पति श्रीर स्त्रीकी माताका नाम १- सश्रू १ ॥

श्वशुरस्तु पिता तयोः।

पति और स्निके पिताका नाम १ - श्वशुर १ ॥

पितुर्भाता पितृब्यः स्या-

चाचा या तासका नाम १-पितृव्य १॥ -- न्मातुञ्जीता च मातुलः ॥ ३१ ॥ मामाके नाम २-मातुर्शातु १ मातुल २ ॥३१॥ श्यालाः स्युर्भातरः पत्न्याः-शालेका नाम १-इयाल १॥ —स्वामिनो देवदेवरी। देवरके नाम २-देव १ देवर २ ॥ म्बद्धीयो भागिनेयः स्या— भानजेके नाम २-स्वसीय १ भागितेय २ ॥ ज्जामाता दृहितुः पतिः ॥ ३२ ॥ जमाईके नाम १-जामातृ १॥ ३२॥ पितामहः पित्रपिता-दादाके नाम २-पितामह १ पित्रित २ ॥ -- तत्पिता प्रपितामहः। परदादाका नाम १-प्रिपतामह १ ॥ मातुमीतामहाधेर्ध-

इन प्रकार (नानाका नाम ) मातामह (पर-नानाका ) प्रमातामह ॥

स्पिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३॥ सपिण्डके नाम २—सपिण्ड १ सनाभि २॥ ३३॥

समानोदर्यसोद्यंसगर्म्यसहजाःसमाः। सगे भाईके नाम ४—समानोदर्थ १ सोदर्थ २ सगर्भ्य ३ सहज ४॥

सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

एक गोत्रवालोके अर्थात् समगोत्रियोके नाम ६-सगोत्र १ बान्धवं २ झाति ३ बन्धु ४ स्व ५ स्त्रजन ६ ॥ ३४ ॥

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसम्— हयोः।

विरादरीके भावका नाम . १ - इतिय १ ॥ परिवारके समूहका नाम १ - बन्धुता १ ॥ धवः प्रियः पति भेती—

पतिके नाम ४--धव १ प्रिय २ पति ३ भर्तु ४॥

—जारस्तूपपतिः समौ॥ ३५॥

जिसके साथ ब्याही हो उससे ऋतिरिक्त अन्त्र से मैथुन करती हो तो उस पतिके नाम २-जार १ उपपति २ ॥ ३५ ॥

श्रमृते जारजः कुण्डो-

श्रपने पतिके जीते ही श्रन्य गतिसे जो पुत्र हो उसका नाम १-कुण्ड १ ॥

मृते भर्तरि गोलकः।

जो पतिके मरनेपर श्चन्य पतिसे उत्पन्न हो। उसका नाम १-गोलक १ ॥

भ्रात्रीयो भ्रातृजो—

भतीजेके नाम २-श्रात्रीय १ श्रातृज २ ॥

—श्रात्यभिगन्यौ श्रातराबुभौ ॥३६॥ बहिनभाईके नाम २-श्रातृभगिनी (न्यौ) ९० श्रातृ (तरौ) २॥३६॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रस्-जनयितारौ ।

जहां मातापिताको साथ ही कहना हो उसके नाम ४-मातापितृ (तरी) १ पितृ (तरी) २ मातर्रापतृ (तरी) ३ प्रसूजनियतृ (तारी) ४ ॥-

श्रश्यशुरी शशुरी-

ऐसे ही सागु समुरके नाम २--मश्रमञ्जूर (री)। ५ मञ्जूर (री) २॥

— पुत्री पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७॥ इसी प्रकार कन्यापुत्रका नाम १-पुत्र (त्री) १॥३७॥

दंपती जंपती जायापती भायापती च तो।

श्रीपुरुषके इकड़े नाम ४--दम्पति (ती) १-जरूपति (ती) २ जायापति (ती) ३ भार्या-पति (ती) ४॥ गभशियो जरायुः स्या—

गर्भस्थानके नाम २-नार्भाशय १ जरायु २ ॥

— दुर्वं च कलनोऽश्चियाम् ॥ ३८ ॥

गर्भबन्धनके नाम २--उत्ब १ कलल २ ॥३८॥

#### स्तिमासो वैजननो-

गर्भ रहनेसे नवमें वा दशमें मासके नाम जिसमे बालक पैदा होता है २-सूतिमास १ वैजनन २॥

# -गर्भी भ्रुग इमी समी।

गभके नाम २--गर्भ १ भ्रूण २ ॥

तृतीयामकृतिः षण्ढः क्लीबः षण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥

हीजडेंके नाम ५--तृतीयाप्रकृति १ षण्ढ २ क्लीब ३ पण्ड ४ नपुंसक ५ ॥ ३९ ॥

# शिशुत्वं शैशव बाल्यं-

लडकपनके नाम ३--शिशुत्व ९ शैशव २ बाल्य ३॥

#### तारुण्यं यौवनं समे।

यौवनके नाम २--तारुण्य १ यौवन २ :।

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्त्रं —

बुढ़ापेके नाम २--स्थाबिर १ बृद्धत्व २॥

वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

ब्होंके समूहका नाम १--वार्धक १ ॥ ४० ॥

पछितं जरसा शौक्ल्य केशादौ-

श्रतिबुढ़ापेमें केश श्रादिकमें जरा करके जो सफेदी श्राती है उसका नाम १--पिलत १॥

#### -विस्त्रसा जरा।

बुढ़ाईके नाम २--विस्नसा १ जरा २ ॥

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनं. न्धयी ॥ ४१ ॥

दूषपिई छोटी लड़कीके नाम ४---उत्तानशया ९ डिम्मा २ स्तनपा २ स्तनन्घयी ४॥ ४९॥

#### बालम्तु स्यान्माग्रवको-

सोलह वर्षपर्यन्त लड़केके नाम २-- बाल १ माणुवक २ ॥

# —वयःस्थस्तहणो युवा।

जवान पुरुषके नाम ३---वयःस्य १ तरुण स् युवन् ३॥

प्रथयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीगोँः जरत्रपि॥ ४२ ॥

वृद्धेके नाम ६--- प्रवयस् १ स्थविर २ इद ३ जीन ४ जीर्ग ५ जरत् ६ ॥ ४२ ॥

#### वर्षीयान्दशमी ज्यायान्-

श्चतिबृद्धेके नाम २—वर्षीयस् १ दशमिन् २ ज्यायस् ३॥

#### पूर्व जस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

ज्येष्ठ भाईके नाम ३—पूर्वज १ श्रियय १ ऋग्रज २॥

जधन्यजे स्युः क्रनिष्ठयवीयोऽवाःजा-नुजाः॥ ४३॥

छोटे भाईके नाम ५—जघन्यज १ कनिष्ठ र यवीयस् ३ श्रवरज ४ श्रवुज ५ ॥ ४३ ॥

# श्रमांसो दुवंलश्वाती-

दुबलेके नाम ३-श्रमांस १ दुर्बल २ छात ३॥

# -बलवान्मांसलीऽसळः।

बलवान्के नाम ३—बलवत् १ मांसल २ श्रंस- ल ३॥

# तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिच्रिष्डिलः॥ ४४॥

बड़े पेटवालेके नाम ५—तुंदिल १ तुदिभ २ तुंदिन् २ बृहत्कुक्षि ४ पिचण्डिल ५ ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रहो नतनासिके हः

केशवः केशिकः केशी-

श्चन्छे बालवालोंके नाम ३---केशव ९ केशिक २ केशिन ३॥

# —वळिनो वित्रभः समौ ॥ ४५॥

जिसकी बुढ़ापेके मारे खाल सिकुड गयी हो उसके राम २— विलन १ विलम २ ॥४५॥

#### वि कलांग स्वपोगण्डः—

जिसका अपनेहीसे कोई ग्रंग श्रधिक वा कम हो उसके नाम २-विकलांग १ श्रपोगण्ड ॥ २ ॥

#### -खर्वी ह्रस्वश्च वामनः।

बौनेके नाम ३-खर्व ९ हस्व २ वामन ३॥
खरणाः स्यात्खरणसो--

जिसकी तीखी नाक हो उसके नाम २-खरणस् १ खरणम २॥

विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६॥

नकटेके नाम २-वित्र १ गतनासिक २ ॥४५॥

#### खुरगाः स्यात्खुरणसः—

जिसकी पशुके खरके सदश नासिका हो उसके नाम २-खरणसू १ खरणस ॥ २ ॥

#### प्रज्ञुः प्रगतजानुकः।

वातत्रादि रोगसे जिसके घटने बहुत दूर दूर हो गये हो उसके नाम २-प्रज्ञ १ प्रगतजानुक २ ॥

## ऊर्ध्वज्ञुरूर्धनातुः स्यात-

जिसके घुटने छचे हो उसके नाम २- छर्चि छ १९ छर्चिजातु २ ॥

- मंजुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
- 🕻 जिसके घुटने मिले हुए हो उसके नामर-व्यंज्ञ १
- -संहतजानुक २ ॥४७॥

#### स्यादेडे बाधरः-

ं बहिरेके नाम २---एड १ बधिर २

—कु₅जे गडुलः—

जिसके हाथमे रोगादिसे कुछ विकार हो उसके नाम २-कुकर १ कुणि २॥

# पृश्चिरल्पतनौ---

जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो उसके नाम २-पृथ्नि १ ऋत्पतनु २ ॥

#### श्रोणः पंगी--

ल्लेके नामर-श्रीण १ पंगु २॥

# —मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

जिसका शिर मूँड़ा हुआ हो उसके नाम२-मुण्ड १ मुण्डित २ ॥ ४८ ॥

#### बलिरः केकरे—

भेड़े (जिसके नेत्रकी पुतर्ला फिरती हों )उसके नामर-बलिर १ केंकर २ ॥

#### —खोडे खञ्ज—

लॅगडेके नाम २-खोट १ खड़ २॥

# —स्त्रिष्ठ जरावराः । जडुतः कालकः पिष्ठु—

जिसके झगमें लघुनाकारका चिह्न हो उसके नाम ३-जडुल १ कालक २ पिप्छ ३॥

-- स्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥ देहके तिलके नाम २-- तिलक १ तिलकालक

दहक तिलक नाम २—तिलक १ तिलकालक २॥ ४९॥

# ग्रनामयं स्यादारोग्यं—

विना रोगके न म २-अनामय १ आरोग्य२॥

## —चिकित्सा रुक्पतिकिशा।

इलाज करनेके नाम २-चिकित्सा १ हरप्र-तिकिया २ ॥

# भेषजौषधभेषज्यान्यगदो जायुरित्यिष ॥ ५०॥

श्रीषधके नाम ५-सेषज १ श्रीषध २ सेषज्य ३ श्रमद ४ जायु ५ ॥ ५० ॥

स्त्री स्युजा चोपतापरोगव्याधिगदा-मयाः ।

पीनसरोगके नाम २-प्रतिस्थाय १ पीनस २॥५१॥

स्त्री श्रुन्क्षुतं चवः पुंसि—

श्रीकके नाम ३-श्रुत् १ श्रुत २ चव ३ ।

-कासस्तु चवशुः पुमान्—

खांसीके नाम २-कास १ चवशु २ ।

श्रोफस्तु खयशुः शोधः—

सूजनक नाम ३-शोफ १ खयशु २ शोध ३ ॥

-पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

विवासी रोगके नाम २-पादस्फोट १ विपादिका

#### किलाससिधो-

२॥ ५२॥

सेंहुवां (सीप) के नाम २- किलास १ सिध्म२॥
कच्छ्वां तु पामपामे विचर्चिका।
खाजुरोगके नाम ४-कच्छ् १ पामन् २ पामर
३ विचर्चिका ४॥

कण्ड्ः खर्जूश्च कण्ड्या—
खजलीके नाम ३-कण्ड् १ खर्जू २ कण्ड्या ३।।
—विस्फोटः पिटकोऽस्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
फोड़ेके नाम २-विस्फोट १ पिटक २ ॥ ५३ ॥
वणोऽस्त्रियामीर्ममकः क्लीबे—
धावके नाम ३-व्रण १ ईर्म २ ब्रह्म ३ ॥
नाहीवणः पुमान् ।
नासूरका नाम १-नाडीवणः १ ॥

जो गोल उज्ज्वल चन्दे पड़ जाते हैं उस कोढ़के नाम २-कोठ १ मण्डलक २॥

कोठो मण्डलकं-

—क्रष्टरिवने—

छाजनके नाम २--कुष्ट १ वित्र २ ॥

दुर्नामकाशसी॥ ५४॥

वनासीरके नाम २--दुर्शासक १ ऋशस्य २ ॥ ५४॥

आनाहम्तु विबन्धः स्याद्—

कर्जई जिससे मलसूत्र रुक जाय उस रोगवेड नाम २--श्रानाह १ विबन्ध २ ॥

—ग्रहणी स्वप्रवाहि हा।

संग्रहणी रोगके नाम २--प्रहणी १ प्रवाहिकार।

प्रच्छिद्का विभिन्न स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥५५॥

उत्तटी श्रर्थात् वमनके नाम ३--प्रच्छिर्दिका ९ विम २ वमशु ३॥ ५५॥

च्याधिभेदा विद्रिधः श्चा ज्वरमेहभग्-न्द्राः।

व्यरिथया (एक प्रकारका फोड़ा) का नाम १--विद्रिधि १ ॥ ज्वरका नाम १--ज्वर १ ॥ प्रमेहका नाम १--मेह १ ॥ भगन्दर श्रथीत् गुदसमीपके फोड़ेका नाम १--भगन्दर १ ॥

भ्रश्मरी भूजकृत्र हैं स्यात-

कर्करोग अर्थात् पथरीरोगकं नाम २ --श्रहमरी-१ मृत्रकृच्छ्र २॥

—पूर्वे शुक्रावधेश्चिष्ठु॥ ५६॥

यहासे लेकर शुक्रशब्दके पहलेके शब्द तीनो लिंगोमे होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिष्यवैद्यो चिकि-त्सकं॥

वैद्यके नाम ५--रोगहारिन १ अगदंकार २ भिषज् ३ वैद्य ४ विकित्सक ५ ॥

वार्तो निरामयः कत्य उल्लाघौ निर्गतो गदात्॥ ५७॥

रोगरहितके नाम ४--बार्त १ निरामय २ कस्क ३ उक्काघ ४ ॥ ५७ ॥ ग्ळानग्लास्नू--

रोगवशसे क्षीण हो जानेवालेके नाम २--बलान १ ब्लास्तु २ ॥

--आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः। ग्रातुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः--

रोगीके नाम ७--आमया विन् १ विकृत २ व्याधित ३ अपटु ४ आतुर ५ अभ्यमित ६ अभ्यान्त ७॥

—समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८॥

खुजलीवांलके नाम २---पामन १ कच्छुर २ ॥ ५८ ॥

---दद्भुणो दद्भुरोगी स्या---दद्भुरोगके नाम २--दद्भुण १ दद्भुरोगिन् २ ॥

—दशौरोगयुतोऽशंसः।

बवासीररोगीका नाम १--श्रर्शम् १ ॥

वातकी वातरोगी स्यात--वातरोगीके नाम २--वातिकत् १ वातरोगित् २।

—सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९॥

जिसको बहुत दस्त हो उसके नामर-साति-सार १ श्रतिसारिकन् २ ॥ ५९ ॥

स्युः क्लिन्नाचे बुद्धचिद्धपिद्धाः क्लिन्ने-ऽक्ष्णि चाप्यमी।

चुन्धेके नाम ४-क्लिन्नाच १ चुह्न २ चिह्न ३ पित्र ४॥

उन्मत्त उन्माद्वति--

उन्मत्त श्रर्थात् बावलेके नाम २--उन्मत्त १ उन्मादवत् २॥

न्युब्जा भुग्ने बजा--कुषड़ेका नाम १-न्युब्ज १॥ वृद्धनाभी तुन्दिलतुन्दिभी। जिसकी वातरोगसे नामि बढ़ जाय उसके नाम ३-इद्वनाभि १ तुन्दिल २ तुन्दिभ ३॥

#### किलासी सिध्मलो-

किलास (सींप्) रोगीके नाम २—किलासिन् १ सिध्मल २ ॥

—ऽन्धोऽह्यकु—

अन्धेके नाम र-श्रन्ध १ श्रद्धा २ ॥

—मुर्छाळे मूर्तमूर्ज्जितौ ॥६१ ॥

वैहोरावालेके नाम ३-मूच्छील १ मूर्त २ मूर्जित ३॥ ६१॥

शुक्रं तेजोरेतसी च धीजवीर्येन्द्रि-याणि च।

भातुके नाम ६-शुक्त १ तेजस् २ रेतस् ३ वीज ४ वीर्य ५ इंद्रिय ६ ॥

मायुः वित्तं

वित्तके नाम २-मायु १ वित्त २ ॥

—कफःश्लेष्मा—

कफके नाम २-कफ १ इलेब्सन् २ ॥

श्चियां तु त्वगसृधरा ॥ ६२ ॥

खालके नाम २-त्वच् १ श्रम्याथरा २ ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पत्नछं ऋब्यमामि-षम्।

मांसके नाम ६-पिशित १ तरस २ मांस ३ पलल ४ कव्य ५ श्रामिष ६॥

उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वरत्युरं विकि-क्रकम्॥ ६३ ॥

सूखे मांसके नाम ३-उत्तप्त १ ग्रुष्कमांस २ वल्ल्स ३ ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसुग्लोहितास्त्ररक्तत्तत्तत्रशोणितम् रुधिरके नाम ७-रुधिर १ असुष् २ लोहित ३ असु४ रक्त ५ क्षतज ६ शोणित ७ ॥

बुकाग्रमांसं---

कलेंजेके नाम ६- बुक्का १ अप्रमांस २ 🛎

--हद्यं ह-

पश्चाद्धीवाशिया मन्या—
गलेके पीलेकी नसका नाम १-मन्या १ ॥
-नाडी तु धमनिः शिरा ।
नाड़ीके नाम १-नाडी १ धमनि २ शिरा ३ ॥
तिलाकं कलो म—
शरीरके तिलाके नाम २-तिलाक १ क्लोमन् २॥
मस्तिष्कं गोर्दं—
गुदंके नाम २-मिलाक १ गोर्दं २ ॥
—किटं मलो ऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥
मैलके नाम २-किट १ मल २ ॥ ६५ ॥
भन्नं पुरीतद्—
श्रातीके नाम २-श्रन्त १ पुरीतत् २ ॥
—गुल्मस्तु श्लीहा पुं—
पलेया (तिल्ली) रोगके नाम २-गुल्म १
प्लीहन् २ ॥

-स्यथ वस्तसा । स्तायुः ख्वियांनसके नाम २-वज्ञसा १ ज्ञायु २ ॥
-कालखण्ड यङ्गती तु समे इमे ।।६६॥
पेटमें जो दहिनी श्रोर बटिया हो उसके नाम
२-कालखण्ड १ यङ्गत् २ ॥ ६६ ॥
स्टिश्यिका स्यन्दिनी लालालारके नाम ३-स्शिका १ स्यन्दिनी २
लाला ३ ॥

दृषिका नेत्रयोर्मलम् ।
कीवड् (गीड् ) का नाम १—दूषिका १ ॥
मूत्रं प्रकाव-

मृतके नांम २-- मूत्र १ प्रस्नाव २ ॥

-उज्ञारावस्करौ शमलं शकृत्॥ ६७॥ पुरीषं गृथवर्चस्कमस्त्रो विष्ठाविशौ स्त्रियौ।

विष्ठाके नाम ९--उचार १ अवस्कर २ शमल ३ शकुत् ४॥ ६७॥ पुरीष ५ ग्रुथ ६ वर्चस्क ७ विष्ठा ८ विश्र ९॥

स्यारकर्परः कपानोऽस्त्री-कपालके नाम २-कर्पर १ कपाल २ ॥

-कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥ इड्डीके नाम ३ - कीकस १ कुल्य २ अस्थि ३ ॥ ६८ ॥

स्याच्छ रीरास्थित कंकालः—
खांकरका नाम १—कंकाल १ ॥
— एष्टास्थित तु कशेहका ।
पीठकी हर्हकीका नाम १—कंग्रेहका १ ॥
शिरोस्थानि करोटिः स्त्री—
खोपड़ीका नाम १—करोटि १ ॥
— पाश्वस्थिति तु पर्शुका ॥६९॥
पँसलीका नाम १—पर्शुका १ ॥ ६९ ॥
अङ्गं मतीकोऽवयवोऽपयनो—
श्रक्षके नाम ४-ग्रंग १ मतीक २ अन्यव ३
अपयन ४ ॥

—ऽव कल्लेबरम्। गात्रं वपुः संहतनं शरीरं वर्त्मं विग्रहः॥ ७०॥ कायो देहः वलीवपुंतोः श्चियां मृतिस्तनुस्तनूः।

देहके नाम १२-कलेवर १ गात्र २ वपुष् ३ सहनन ४ शरीर ५ वर्धान् ६ विग्रह ७ ४ ७० ॥ काय ८ देह ६ मूर्ति १० ततु ११ तन् १२ ॥

पाद्राग्रं प्रपदं —
पांवके श्रानेके नाम २-पादाग्र १ प्रपद २ ॥
—पादः पदं श्रिश्चरणोऽस्त्रियास् ७१ ॥
पांवके नाम ४-पाद १ पद् २ श्रेषि ३ चरसः
॥ ७९ ॥

तद्भन्थी घुटिकं गुल्फो—
टांकनोके नाम २-- घुटिका १ गुल्फ २
— पुमान्पार्टिणस्तयो ८६४ ।
एड़ीका नाम १-- पार्धिंग १ ॥
जंघा तु प्रसृता—
जंघा (पींडी) के नाम २- जंघा १ प्रसृता २ ॥
— जानू हपवां छी वद् खियाम् । ७२ ॥
जानुक नाम ३ - जानु १ करपर्वन् २ अष्टीवत् ३ ॥ ७२ ॥

सक्यि कतीवे पुमानूष—

निरोहके नाम २-सिक्थ १ ऊ६ २ ॥

स्तत्सिन्धः पुंसि वंच्याः ।

टिहुनीका नाम १-वंद्या १ ॥

गुदं त्वपानं पायुनी—

गुद्के नाम ३-गुद १ अपान २ पायु ३ ॥

—बस्तिनीभिर्धो द्वयोः ॥ ७३ ॥

जहां मूत्र रहता है अर्थात् पेड्का नाम १-विस्त १ ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोग्रिफलकं— कमरके दोने वगलके नाम ३-कट १ श्रोणि २ फलक ३॥

—कटिः श्रोणिः ककुद्मती।

कमरके नाम ३-कटि १ श्रोणि २ ककुद्मती॥

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः—

स्रीके चूतड्का नाम १-नितम्ब १॥ "

-कलींचे तु जचनं पुरः॥७४॥

स्रीके जांचका नाम १-जघन १॥ ७४॥

कूपकौ तु नितम्बस्यौ द्वयद्यीने कुकु
स्रेरे।

नितक। में जो दो गड़ है होते हैं उनका नाम १-ककुन्दर १ ॥ स्त्रियां स्फिन्नी कटिप्रोथा—
क्लेके नामर-स्फिन् १ कटिप्रोथ २ ॥
वुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
लिग्योनिका नाम १-उपस्थ १ ॥ ७५ ॥
भगं योनिर्द्धयोः—
योनिके नाम २- मग १ योनि २ ॥
श्रिश्तो मेद्रो मेद्दनशेफसी ।

र्तिगके नाम ४ — शिश्न १ मेड्र २ मेहन ३ शेफस् ४ ॥

मुकोऽण्डकीशो वृषणः-

ऋण्डकोशके नाम ३—मुक्क १ छण्डकोश २ वृषया ३॥

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६॥ पीठके बांसके नीचे जहां तीन हाड़ मिले हे उस जोड़का नाम १—त्रिक १ ॥ ७६॥

पिचण्डकुची जठरोद्दं तुन्दं— पेटके नाम ५-पिचण्ड १ कुक्षि २ जठर ३ उदर ४ तुन्द ५ ॥

—स्तनी कुची।
कुचने नाम २ स्तन १ कुच २॥
चूचुकं तु कुचाग्रं स्या—
कुचने अप्रभागने नाम २—चूचुक १ कुचाप २
—स्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७०॥
गोदके नाम २—कोड १ भुजान्तर २॥ ००॥
उरो वरसं च वच्चश्र—
इत्यके नाम ३—उरम् १ वरस २ वच्चम् ३॥
—एण्ठं तु चरंन तनोः।
पीठका नाम १ पृष्ठ १॥
स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री—
क्षेके नाम ३—स्कन्ध १ भुजशिरस् २ श्रंस ३
—सन्धी तस्यैव जञ्जणो ॥ ७८॥

हँसलीका नाम १-जनु १ ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उभे क चौ-
वगलोका नाम १-कच्च १ ॥

पार्श्वमम्त्री तयोरधः।

बगलके नीवेका नाम १-पार्श्व १ ॥

मध्यमं चावलंग्न च मध्योऽस्त्री
पंटके नीवेका श्रीर हाथके कपरके भागके नाम
३-मध्यम १ श्रवलप्त २ मध्य ३॥

—द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥ भुजवाहू प्रवेष्टो दोः स्वात्--

बांहके नाम ४-॥ ७९ ॥ भुज १ बार् , प्रवेष्ट ३ दोस्४ ॥

मिश्रिवन्धसे कनिष्ठांगुत्ती र्यन्तका नाम १---करम १ ॥

बहिः।

पश्चशाखः शयः पाणि—
हाथके नाम ३-पश्चशाख १ शय २ पाणि ३॥
स्तर्जनी स्पात्प्रदेशिनी ॥ ८१॥
हाथके अँगूठेके पासकी अँगुलीके नाम २तर्जनी १ प्रदेशिनी २॥ ८१॥

भंगुल्यः करशाखाः स्युः— श्रमुलियोके नाम २-श्रंगुली १ करशाखा २ ॥ -पुंस्यंगुष्टः—

अंगूठाका नाम १-श्रंगुष्ठ १ ॥

—प्रदेशिनी ।

श्रॅंगूठाके पासवाली श्रंगुलीका नाम ९~ प्रदेशिनी ९ ॥

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्॥ ८२॥

बीचवाली अंगुलीका नाम १-मन्यमा १॥ बीचवाली श्रीर कनश्रंगुलीके बीचवालीका नाम १-श्रनामिका १॥

कनश्रंगुलीका नाम १-कनिष्ठा १ ॥ ८२ ॥

पुनभेवः करहरो नखोऽम्त्री नखरो-ऽस्त्रियाम्।

नाख्नोंके नाम ४-पुनर्भव १ करहह २ नच ३ नखर ४॥

पादेशतालगोकणीस्तर्जन्यादियुते तते।
॥ ८३॥

श्रंगुष्ठ तर्जनीतककी लम्बाईका नाम १----प्रादेश १॥

श्रंगुष्ठ श्रीर वीचवालीके फैलानेकी लम्बाईका नाम १-ताल १॥

श्रंगुष्ठ श्रनामिकाके फैलानेकी लम्बाईका नाम १~गोकर्ण १ ॥ ८३॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्धितस्तिद्धीद्-शांगुलः।

नापनेमें विलस्तके नाम २-वितस्ति ? द्वादशांगुल २॥

पाणौ चपेटमत्त्व महाता विस्तृतांगुलौ

थप्पड़के नाम ३-चपेट १ प्रतत्त २ प्रहस्त ३॥८४॥

द्धौ संहतौ संहत लप्नतलौ वामदक्षिणौ दुहत्यदेके नाम २-संहतत १ प्रतत २॥

पाणिविकुल्लः प्रसृति-

चुन्द्रका नाम १—प्रसृति १॥

Ę

—स्तौ युतावश्रिष्ठः पुमान् ॥ ८५॥

श्रजितका नाम १-श्रजित १॥ ८५॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे इस्तो—

हायका नाम १-हस्त १॥

—मुष्ट्या तु बद्ध्या। सरितनः स्या—

मुशी बाधे हाथका नाम १-(सरितः स्या—

न्हरितस्तु निष्किनिष्ठेन मुष्टिना॥८६॥

कनश्रंगुलियोंको छोड़के मुशी बांधे हाथका
नाम १-श्ररित १॥ ८६॥

च्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोःस्तियंग-न्तरम् ।

हाथ फैलानेका नाम १ - ज्याम १ ॥ ज्रध्वं विस्तृतदोः पाणिनृमाने पौरुषं निष्ठु ॥ ८७ ॥

क्यरको हाथ उठाके सापनेका नाम १— योज्य १॥ ८७॥

#### कण्डो गलो--

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा—
तीन रेखासे युक्त गर्दनका नाम १-कम्बुग्रीवा १!
—ऽवड्रघीटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
घाटीके नाम २-अवटु १ वाटा २ कृकाटिका
३ ॥ ८८ ॥

वकास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् मुँहके नाम ७-नक १ श्रास्य २ वदन ३ मुण्ड ४ श्रानन ५ लपन ६ मुख ७ ॥

क्तीबे द्राणं गन्धवहा घोषा नासा च नासिका ॥ ८९॥

नाकके नाम ५-प्राया १ गन्धवहा २ घोया ३ नासा ४ नासिका ५॥ ८९॥ स्पीष्ठाधरौ तु रदमच्छ दौ दशनवाससी। होठके नाम ४-श्रोष्ठ १ अधर २ रदनच्छद ३ दशनवासस् ४॥

ध्रभस्ताच्यि चुकं—

ठोड़ीका नाम १—चिडुक १॥

—गण्डो कपोलो —

गालके नाम २—गण्ड १ कपोल २॥

—तत्परा हृनुः॥ ९०॥

कनपटीका नाम १-हृनु १॥ ९०॥

रद्ना दशना दन्ता रदा—

दांतके नाम ४-रदन १ दशन २ दन्त ३
रद ४॥

—स्तालु तु काकुदम्। ताळुएके नाम २-ताळ १ काकुद २॥ रसज्ञा रसना जिह्वा-जीमके नाम ३ रसज्ञा १ रसना २ जिह्ना ३॥ -प्रान्ताबोष्डस्य सुक्किसी ॥ ९१॥ हों ठोके किनारोका नाम १-स्विकणी १॥९१॥ ळळाटमलिक गोधि-लिलारके नाम ३-ललाट १ श्रतिक २ गोधि ३ रुध्वें हाभ्यां भ्रवी खियौ॥ भौहका नाम १- भृ १॥ कूर्चमस्त्री अवोर्मध्य-भौंहके बीचका नाम १-कूर्च १ ॥ तारकाक्ष्याः कनीनिका ॥ ९२ ॥ श्रांखके तिलका नाम १-तारका १॥ ९२॥ लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरिक्षणी। दृग्दृष्टी चा---

श्रांखके नाम ८-लोचन १ नयन २ नेत्र ३ ईत्तरा ४ चक्षुष् ५ श्रक्षि ६ ह्यू ७ हिष्ट ८ ॥ - ऽश्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्त्रमश्रु च॥९३॥ श्रांसूके नाम ७ श्रश्रु १ नेत्राम्बु २ रोदन ३ श्रह्म ४ श्रश्रु ५॥ ९३॥ ध्रपाङ्गी नेत्रयोरन्तौ-

श्रांखके किनारोका नाम १ - श्रपांग १॥

-कटाक्षोऽपाङ्गद्रशने।

श्रपांगसे देखनेका नाम १-कटा इ १

कर्णशब्दग्रही श्रोत्रं श्रुतिः ह्वी श्रवणं श्रवः॥९४॥

कानके नाम ६ - कर्ण १ शब्दब्रह २ श्रोत्र ३ श्रुति ४ श्रवण ५ श्रवस् ६॥ १३॥

उत्तमांगं शिरः शीर्षं भूद्धां ना मस्तको-ऽक्षियाम् ।

शिरके नाम ५-उत्तमांग १ शिरस् २ शीर्ष ३ मूधन् ४ मस्तक ५॥

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोक्टः ॥ ९५ ॥

बालके नाम ६-चिक्कर ९ कुन्तल २ बाल ३ कच ४ केश ५ शिरोस्ह ६ ॥ ९५ ॥

तद्वृन्दे केशिकं कैरंय-

बालों के समूहके नाम २-केशिक १ केंद्र्य २ ॥

-मळकाश्चूर्णकुन्तज्ञाः ।

ेंटेढे बालें:'के नाम २-अलक १ चूकुर्णन्तल?॥

ते ललाटे भ्रमरकाः-

ललाटपर लटकते हुए बालोका नाम ५-भ्रमरक १

काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६॥

जुल्फों के नाम २—काकपत्ता १ शिख-ण्डक २॥९६॥

कबरी केशवेशो-

मांगके नाम २-कवरी १ केशवेश २॥

-- ऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः।

बंधे हुए बालेंका नाम १ धिममळ १॥

शिखा चूडा वेशपाशी-

चोटीके नाम ३-शिखा १ चूडा २ केशपाशी ३

—व्रतिनस्तु सटा जटा॥ ९७॥

जटाके नाम २-सटा १ जटा २॥ ९७॥

वेगािः प्रवेगाि—

तैलादि न लगानेके हेतु लटरे बाल हो जानेके नाम २-वेणि १ प्रवेणी २ ॥

--शिषण्यशिरस्यौ विशदे कचे॥

साफ बालोंके नाम २-शीर्षण्य १ शिरस्य २ ॥

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचा-त्परे॥ ९८॥

केशसमूहके नाम ३-केशपाश ९ केशपद्ध २ कुन्तलहस्त ३ इत्यादि ने॥ ९८ ॥

तनूरुई रोम लोम-

रोबेंके नाम ३-तनूरह १ रोमन् २ लोमन् ३ ॥

—तद्वृद्धे श्मश्च युमुखे।

डाढी मूछका नाम १ रमश्चा १॥

श्राकरपवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाध-नम्॥ ९९॥

श्चलका धीमाके नाम ५-श्चाकल्प १ वेष २ नेपथ्य ३ प्रतिकर्मन् ४ प्रसाधन ५ ॥ ९९ ॥

द्शिते त्रि-

यह आगे कहें दश शब्द तीनों लिगोमें होते हैं॥

—•वलकर्नाऽलंकरिष्णुश्च—

श्रतकार करनेवालेके नाम २-श्रतंकर्त् १ श्रतंक-रिष्णु २ ॥

—मण्डितः॥ प्रसाधितोऽक्रंकृतश्च भूषि-तश्च परिष्कृतः॥ १००॥

श्चलंकारयुक्तके नाम ५-मंडित १ प्रसाधित २ श्चलंकत ३ भूषित ४ परिष्कृत ५ ॥ १०० ॥

विश्राइ भ्राजिष्णुरोचिष्णू—

श्चलकारादिसे श्रतिशोभित हुएके नाम ३---विभ्राज् १ भ्राजिष्णु २ रोचिष्णु ३॥

भूषग्रं स्यादछंकिया।

संवारने या सिंगारनेके नाम २-भूषणा । अलंकिया २ ॥

## अळंकारसवाभरणं परिष्कारो विभृष-साम्॥ १०१॥ मण्डनं चा—

गहने त्राटिके नाम ५-त्रज्ञकार १ त्राभरण २ परिष्कार ३ विभूषण ४॥ १०१॥ मण्डन ५॥

— तथ मुकुटं किरीटं पुंत्रपुंसकम् । मुकुटके नाम २-मुकुट १ किरीट २ दोनों भी पुं• न• ॥

## चुडामग्रिः शिरोरतनं-

चोटिक मिराके नाम २—चूडामिरा १ शिरो-रतन २ ॥

-- तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥ जो हारके बीचमें सबसे बढ़ा मिण होता है उसका नाम १-- तरल १ ॥ १०२ ॥

#### वालपाश्या पारितथ्या-

चोटीके गहनेके नाम २—चालपाऱ्या ९ ृ पारितथ्या २ ॥

#### -यत्रपाश्या ललाटिका।

वेंदी वा टीकेके नाम २-पत्रपाक्या जलाटिका २॥

कर्णिका तालपत्रं स्यात्-

बाली वा तरकीके नाम २-कार्योका १ तालपत्र २ ॥

—कुण्डलं कर्णवेष्टतम् ॥ १०३ ॥ सुवर्षादिरचित बालीके नाम २-कुण्डल १ कर्णवेष्टन २ ॥ १०३ ॥

## ग्रेवेयकं कण्डभूषा--

कण्ठी वा कण्ठके नाम २-प्रैवेयक १ कण्ठभूषा २ ॥

— लम्बनं स्थारुळलन्तिका।
- जो सूंडीतक सम्बी कण्ठी हो उस कण्ठीके नाम
२-सम्बन १ सस्तितका २ ॥

स्वर्गाः प्रालम्बका—

ऐसे ही यदि सोनेकी कण्ठी हो तो उस कण्ठी का नाम १-प्रालिका १ ॥ —थोरै:स्त्रिका मौक्तिकैः कृता॥१०४॥ श्रौर वैसे ही मोतीसे गूथी हो तो उसका नाम १-उरस्स्त्रिका १॥१०४॥

## हारो मुक्तावली—

मोतीके हारके नाम २-हार १ मुक्तावली २ ॥

## -देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका।

जो सौ लड़का हार हो उसका नाम १∽ देवच्छन्द १॥

हारभेदा यष्टिभेदा गुच्छगुच्छाधगो-स्तनाः॥ १०५॥ अधहारो माग्रवक एका-वल्येकयष्टिका। सैव नचन्नमाला स्यात्स-प्रविशतिमौक्तिकैः॥ १०६॥

बत्तीस लड़का हार हो उसका नाम १-गुच्छार्थ १ ॥ जो२४लड़का हार हो उसका नाम१-गुच्छार्थ १ ॥ चार लड़का हार हो उसका नाम १-गोस्तन १ ॥ १०५ ॥ बारह लड़का हार हो उसका नाम १---श्रद्धेहार १ ॥ बीस लड़का हार हो उसका नाम १---माग्यवक १ ॥ एक लड़का हार हो उसका नाम १--एकानली १ ॥ वही एक लड़ श्रगर सत्ताईस मोतियोंकी हो तो उसका नाम १--

## श्रावापकः पारिहार्यः कटको वलयो-ऽक्षियाम् ।

पहुँचीके नाम ४-श्रावापक १ पारिहार्च २ कटक ३ वलय ४॥

केयूरमङ्गदं तुरुये— बाजूबन्द श्रादि भुजाके गहनोके नाम २— केयूर १ श्रद्भद २॥

—अंगुलीयकमृमिका ॥ १०७ ॥

छक्ले श्रॅगूठीके नाम २—श्रॅगुलीयक १ कार्मेंका २॥१०७॥

साचरांगुळिमुद्रा स्यात्-

मोहर सहित अँगूठीका नाम १-अंगुलिसुहा १॥

-कंकणं करभूषणम्।

कंकनाके नाम २-कंकण १ करभूषण २ ॥

#### स्रीकट्यां मेखला काश्वी सप्तकी रश्चना स्रथा॥ १०८॥ क्लीबे सारसनं चा—

स्रीके कमरकी जंजीर स्थात् मेखलाके नाम ५-मेखला १ काझी २ सप्तकी ३ रसना ४ ॥ १०८॥ सारसन ५ ॥

—ऽथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिष्ठु ॥
पुरुषके जजीरका नाम १-शृङ्खल १॥
पादांगदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽख्वियाम्॥ १०९॥

पेजसा आदि स्त्रीके पांवके गहनेके हुनाम ४-पाधाइद १ तुलाकोटि २ मझीर ३ नूपुर ४ ११ १०९ ॥

उत्पन्न होनेके स्थान हैं॥
—र्दश चिष्ठु॥११०॥
यह दशों शब्द तीनों लिझोमें होते हैं ११०॥
ःवालकं क्षीमादि—

चृत्त आदिकी छालसे बने हुए वस्नोके नाम २ वाल्क १ जीम २ इत्यादि॥

फालं तुं कापिंस बाद्रं च तत्। कपासके बने हुए वल्लोंके नाम ३-फाल १ कापीस २ बादर ३॥

कौशेयं कृतिकोशोत्थं—
रेशमीनल्लोका नाम १-कौशेय १॥
—-राङ्क्वं मृगरोमजम्॥ १११॥
सनी वल्लोका नाम १-राष्ट्रव १॥ १९१॥
श्रनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम्।

कोरे वस्त्रके नास ४-म्रानाहत १ निष्प्रवाणित् २ तम्ब्रक ३ नवाम्बर ४॥

तत्स्याडुह्रमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्यु-गम्॥११२॥

घुले हुए दो वल्लोंके जोडेका ॄ्नाम ृ**१ ─उऱम**-नीय १ ४ ११२ ॥

पत्रोण धौतकौशेयं-

धुले हुए रेशमी वस्त्रका नाम १—पत्रोर्ण 🐧 🗷

बहुमूल्यं महाधनम्।

बडे मोलके बल्लादिका नाम १-महाधन १ अ

स्रोमं दुक्**लं स्याद्**-

डुपट्टेके नाम २-चीम १ दुकूल २ ॥

—द्वे तु नियीतं प्रावृतं त्रिष्ठ ॥ ११२ ॥ कपडेके छीरके नाम २-निवीत १ प्रावृतः २ ॥ ११३ ॥

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्तुर्वस्त-योद्वयोः।

छीराका नाम १--दशा १ ॥

दैर्घमायाम स्रारोहः-

कपढे आदिकी लम्बाईके नाम ३-दैर्घ्य १
 आयाम २ आरोह ३॥

-परिणाहो विशास्त्रता ॥ ११४ ॥ कपडे आदिकी चौड़ाईके .नाम २-परिणाह १ विशासता २ ॥ ११४ ॥

पटचरं जीर्णवस्त्र—

पुराने कपडेके नाम २-पटचर १ जीर्णवस्त्र २॥

—समौ नक्तक कर्पटौ।

फटे चीयरेके नाम २-नक्तक १ कर्पट २ ॥

श्रह्ममाच्छाद्नं वासञ्चेलं वसनमंश्रु-कम् ॥ ११५॥

कपडेमात्रके नाम ६-वस्न १ श्राच्छादन २ वासस ३ चैस ४ वसन ५ श्रायुक ६ ॥ ११५ ॥ सुचेलकः पटोऽस्त्री-

श्राच्छे बस्नके नाम २-सचेलक १ पट २ ॥

--स्याद्धराशिः स्थूलशाटकः।

मोटे वल्लके नाम २-वराशि १ स्थूलशाटक २ निचोलः प्रच्छदपटः-

पालकी आदिके ढकनेके वस्रके नाम २-निचोल १ प्रच्छदपट २॥

-समी रल्लककम्बली ॥ ११६ ॥
कम्बलके नाम २--रल्लक १ कम्बल २ ॥११६॥
अन्तरीयोपसंच्यानपरिधानान्यधोंऽशुके
धोतीक नाम ४-श्रन्तरीय १ उपस्व्यान २

द्धौ प्रावारोत्तरासंगी समी बृहतिका तथा॥ ११७॥ सन्यानमुत्तरीयं च-

परिवान ३ अधों ऽशक ४॥

श्रंगोद्घा (रुमाल श्रादि ) के नाम ५-प्रावार १ उत्तरासंग २ बृहतिका ३॥ ११७॥ संन्यान ४ उत्तरीय ५॥

- चोलः कूपीसकोऽस्त्रियाम्। चोलीके नाम २-चोल १ कूपीसक २ ॥

नीशारः स्यात्मावरणे हिमानिलनिवा-रगो ॥ ११८ ॥

रजाईका नाम १-नीशार १। ११८।

भ्रश्वोरुक वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकम-स्त्रियाम्।

लहंगेका नाम १-चण्डातक १॥
स्यात्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं नहे
यत् ॥ ११९॥

लंबे लहंगेका नाम १-श्राप्रपदीन १ ॥ ११९॥

ग्रह्मी वितानमुख्लोची-

चदोएके नाम २ वितान १ उल्लोच २ ॥

न्दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि । त्रम्बु वा डेराका नाम १-दृष्य १ ॥ मतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा॥ १२०॥

कनातके नाम ३-प्रतिशीश १ जवनिका २ तिरस्करिणी ३॥ १२०॥

परिकर्मागसंस्कार.-

स्नानादि श्रञ्जसंस्कारके नाम २-परिकर्मन् ९º श्रंगसरकार २ ॥

-स्यान्मार्ष्टिमर्जिना मृजा। पोछनेके नाम ३-मार्ष्टि १ मार्जना २ मृजा ३ उद्धतेनोत्सादने द्वे समे-

नहानेके.नाम ३-- श्राप्तात १ श्राप्ताव २ 🔊 १२१ ॥ स्नान ३॥

—चर्चा तु चार्चिक्यंस्थासकी— चन्दनादिसे देहके छेपके नाम ३--चर्चा ९ चार्चिक्य २ स्थासक ३॥

-ऽथ प्रबोधनम् । अनुबोधःगन्धोमटनिके नाम २--प्रवोधन १ श्रनुवोथ २॥
-पत्रत्रेखापत्रांगुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥
स्त्रियोके गाल स्तनादिपर कस्त्री चन्दनसे की
हुई चित्रकारीके नाम २--पत्रंठमा १ पत्रांगुलि
२ ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम्। द्वितीयं च तरीयं च न ख्विया-

मस्तकमें चन्दन कस्तुरी श्रादिसे टीका लगानिके नाम ४-तमालपत्र १ तिलक २ चित्रक ३ विशेषक ४॥

-मथ कुंकुमम् ॥ १२३॥ काश्मीरज-न्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने । रक्तसं-कोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥१२॥।

केशरके नाम ११-ईःकुम १ ॥ १२३ ॥ काइमीरजन्मन् २ श्रिक्षिशख ३ वर ४ बाह्मीक ५ पीतन ६ रक्तसकोच ७ पिशुन ८ घीर ९ लेहिन १० चन्दन ११॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो दुमामयः।

महावरके नाम ६-लाजा १ राक्षः २ जनु ३ याव ४ श्रलक ५ दुमामय ६॥

#### लवङ्गं देवकुषुमं श्रीसंज्ञ-

लांगके नाम ३-लंबग १ देवकुसुम २ श्रीसंत्र ३

—मथ जायकम् ॥ १२५ ॥ कालीयकं , च काळातुसा<sup>य</sup> चा–

पीले चन्दनके नाम ३-जायक १॥ १२५॥ कालीयक २ कालानुसार्य ३॥

-su समायकम्। वंशकागुकराजार्ह-छोहंकुमिजजोडुकम्॥ १२६॥

श्रगरके नाम ६-वंशक १ श्रगुरु २ गजाह ३ लोह ४ कुमिज ५ जो उक ६ ॥ १२६ ॥

#### कालाग्रर्वग्रहः-

कांले श्रगरके नाम २—कालागुरु १ श्रगुरु २ ॥ स्यात्तन्मंगल्या मलिलगन्धि यत् । श्रगरका मेद १—मंगल्या १ ॥

यन्नभूषः सर्जरमा रालसर्वरसाविष ॥ १२७ ॥ बहस्रपी-

रालक नाम ५-यत्त्रधृप १ सर्जरस २ राल ३ सर्वरम ४ ॥ १२७ ॥ बहुह्य ५॥

-ऽप्यथ वृक्षधू रक्तविमधू पको ॥ क्रिम धूपके नाम २-३कब्र १ क्रित्रम-ध्र २॥

तुरुष्कः पिण्डकः सिद्धो यावनी-लोबानके नाम ४-नुरुक १ पिण्डक २ सिल्ह ३ यावन ४ ॥

ऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥ श्रीवासो वृकः-धूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्वो ।

देवदारु धूपके नाम ५---पायस १ ॥ १२८ ॥ श्रीवास २ खकधूप ३ श्रीवेष्ट ४ मग्लद्रव ५ ॥ मृगवाभिमृंगमदः कम्तूरी चा-

कस्त्रीके नाम ३—स्यानामि १ स्यामद २ करत्री ३ ॥

-5य क्षीलकम् ॥१२९॥ कंकीलकं कोशफल--

ककोलके नाम३ — कोलक १ ॥१२९॥ ककोलक २ कोशफल ३ ॥

-मथ कर्ष्-मञ्जियाम् । घनसारश्चन्द्र-संज्ञः सिताश्चा हिमवालुका ॥ १३० ॥

कर्पूरके नाम ५ -- कर्पूर घनगार २ नन्द्रस्त्र र सिताध्र ४ हिमवालुका ५ ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्वंदनेग्ऽह्य-याम् ।

मलयागिरि चन्द्रनके नाम ४—गन्धगार ९ मलयज २ भद्रश्री ३ चन्द्रन ४॥

तेलपर्णिकगोशीषं हरिचन्द्रनमस्त्रिः याम्॥ १३१॥

सफेद चन्द्रनका नास १—तै नपर्शिक १ । जिसमें कमलके समान सन्ध हो उस चन नका नाम १— गोशीर्ष १॥ कपिलवर्ण चन्द्रनका नाम १— हरिचन्द्रन १॥ १२१॥

तिलपर्णी तु पत्रांगं रश्रन रक्तचन्दनम्। कुचन्दनं चा—

लालचन्दनके नाम ५-तिलपर्गी १ पत्राग २ रजन ३ रक्तचन्दन ४ फुचन्दन ५ ॥

-ऽथ जातीकोशजातीफले समे ॥१३२%

जायफलकं नाम २—जातीकोश १ जाती-फल २ ॥ १३२ ॥

कर्रागरकस्त्ररीकंको लेयेशकर्माः।

कपूर अगर करागि श्रीर ककोल इनको बराबर मिलानसे जो छपन बनता है उसका नाम १---यक्षकद्म १ ॥

गात्रात्रतेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्धितप-नम् ॥ १३३ ॥ पिप्ती हुई लेपन वस्तुके नाम २—गात्रानुलेपनी १ वर्ति २ ॥ घिसी (रगड़ी) हुई लेपन वस्तुके नाम २-वर्णक १ विलेपन २ ॥ १३३ ॥

# चूर्णानि वासयोगाः स्यु-

कपड़छान करके जो वस्तु घोली जाय उसके नाम २-चूर्ण १ वासयोग २ ॥

# -भौषितं वासितं त्रिषु।

पुष्प इत्यादिसे बसायी हुई वस्तुके नाम २----भावित १ वासित २ ॥

संस्कारो गंधमाल्यांचैयी स्यानद्धि-बासनम्॥ १३४॥

सुगंप पुष्पादिसे संस्कार करनेका नाम १---श्रिघित्रासन १॥१३४॥

# माल्यं मालास्त्रजी मूर्झि-

सिरपर घारगा करने योग्य मालाके नाम ३---माल्य १ माला २ सज् ३ ॥

## -केशमध्ये तु गर्भकः।

बालोंके बीचमें धारण की हुई मालाका नाम १-गर्भक १॥

## शश्रष्टकं शिखालम्बि-

, जो चोटीमें गुँधी हुई माला हो उसका नाम चै−प्रश्रष्टक १ ॥

-पुरोन्यस्तं ललामकम्॥ १३५॥

जो शिखासे लिलारतक लंपटी माला हो -उसका नाम १--ललामके १॥ १३५॥

प्रात्मबमुजुलम्बि स्यात्कण्ठा -

कटमें पहनी हुई मालाका नाम १-प्रालम्ब १ ॥ द्वैकक्षिकं तु तत । यत्तिर्यक् क्षिप्तमु-

जो यज्ञोपवीतके तुल्य पहनी जाय उस माला-का नाम १—वैकक्षिक १ ॥

नाम १—वकाक्षक १ ॥ -शिखास्वापीडशेखरी ॥ १३६॥

जो शिखामे पहनी जाय उस मालाके नाम २-त्र्यापीड १ शेखर २ ॥ १३६ ॥

## रचना स्यात्परिस्पन्द्-

माला श्रादि बनानेकं नाम २--रचना १ परिस्पन्द २ ॥

## ग्राभोगः परिषृणंता ।

सर्व सामश्रीके पूरे होनेकं नाम २---श्राकोगः १ परिपूर्णता २ ॥

#### उपधान तूपबर्हः-

तिक येके नाम २-उपधान १ उपवर्ह २॥

-शय्यायां शयनीयवत ॥ १३७॥ शयनं-विद्धीनेके नाम ३-शक्या १ शयनीय १ ॥ १३७ ॥शयन ३॥

मञ्जपर्यकपल्यकाःखट्टवया समाः।

पलेग वा खाटके नाम ४-मंग १ पर्यक २ पल्यंक २ खदवा ४ ॥

## गेन्दुकः कन्दुको-

गेंदके नाम २-गेन्दुक १ कन्दुक २॥

–दीपः प्रदीपः–

दियाके नाम २-दीप १ प्रदीप २ ॥

--पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

पीढ़ाके नास २ — पीठ १ क्रासन २ ॥ १३८॥

# समुद्रकः सम्पुटकः-

टिच्बांक नाम २-समुद्रक १ गपुटक २॥

-प्रदियाहः पर्द्यहः।

पीकदानके नाम २-प्रतिप्राह १ पतद्ग्रह २॥

#### प्रसाधनी कंकतिका—

कवीके नाम २---प्रसाधनी १ कंकतिका २ ॥

-पिष्टातः पटवासकः।

युक्काके नाम २-पिद्यात १ पटवासक २ ॥ दर्पणे मुक्करादशों-

दर्पया (सीसे) के नाम ३—दर्पया ९ मुकुर २ आदश ३॥

-व्यजनं तालवृन्तकम् ॥ १३९॥

पत्नेके नाम २-व्यजन १ तालवृन्तक २ ।। १३९॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७.

मेतितग्रीत्रज्ञतनकुळान्यभिजनान्वयौ । वंशाऽन्ववायः सन्तानी-

वशके नाम ९-सन्तति १ गोत्र २ जनव ३ कुल ४ श्रमिजन ५ श्रम्वय ६ वंश ७ अन्ववःय ८ सन्तान ९ ॥

-वर्गाः स्यूत्रीह्मग्राद्यः॥१॥

व्यक्षा श्रादिका नाम १-वर्ण १ ॥ १ ॥

विप्रचित्रयविङ्छूद्राश्चातुर्वेण्यंमिति स्नृतम् ।

प्राक्षण, चरिय, वैदय, शह इन चारीका इक्हा नाम १-चानुर्वर्ण्य १ ॥

राजवीजी राजवंश्यो-

गजांके वंशवालोंके नाम २—राजबीजिन् १ राजवस्य २॥

-बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

कृलीनके नाम २--बीज्य १ कुलसभव २ ॥२॥

महाकुलकुलीनार्यसम्यसज्जनसाधवः।

मजनके नाम ६-महाकुल ९ कुलीन २ श्रार्घ्य ३ स+य ४ सज्जन ५ साबु६॥

त्रहाचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥३॥ ग्राश्रमाऽस्त्री-

त्रक्षचारी, गृही, वानपस्थ, यति इन चारोका उक्ता नाम १-॥ ३ ॥ श्राक्षम १ ॥

--द्विजात्यग्रजन्मभृदेववाडवाः। विप्रश्च ब्राह्मणो--

त्रान्मणके नाम ६—द्विजाति १ त्रायजन्मन् २ भूदेव ३ वाटव ४ विप्र ५ ब्राह्मण् ६ ॥

--ऽसौ षट्कर्णा यागादिभिवृंतः ॥ ४ ॥

इज्या, श्रध्ययन, दान, याजन, श्रध्यापन, प्रतिप्रह इन षद्र कर्मोंकरके युक्त विप्रका नाम १-षद्कर्मन् १॥ ४॥

विद्वान्विपश्चिद्दोण्जः सन्त्रधीः को विदो वृथः । थीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्य ग्रेडतः व विः ॥ ५ ॥ थीमानमूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षाः । दूरदर्शी दीर्घदर्शी--

ंपिटतके नाम २२ - विद्वस् १ विपिद्देवन २ दापज्ञ ३ सत् ४ सुधी ५ कोविद ६ वुष ७ थांग् ८ मनीषिन् ९ ज्ञ १० प्राज्ञ ११ सहयात्रत् १२ पिडत १३ कवि १४ ॥ ५ ॥ धीम्त् १५ स्पि १६ इतिन १७ कृष्टि १८ लब्धवर्ण १९ निचक्षस्य २० दूरदर्शिन् २१ दीर्घदर्शिन् २२ ॥

श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६॥

वेदपाठीके नाम २ श्रोत्रिय १ छान्दस २ ॥ ३॥

उपाध्यायोऽध्यापको--

जो पढ़ाता हो उस पिउतके नाम २--उपाभ्याय १ ऋत्यापक २ ॥

--ऽथ स्यान्त्रिषेकादिकृद् गुरुः।

गर्भावानादि कर्म्म करानेवालेका नाम १--गुरु १॥

मन्त्रव्याख्याकृद्वाचार्य-

सन्त्रकी व्याख्या करनेवाळका नाम ५--श्राचार्य १ ॥

--ग्रादेष्टा त्वध्वरे--

यज्ञमें सब ऋत्विजोंमे सिखानवालेका नाम ९-आदेष्ट्र १॥

--व्रती॥७॥यष्टा च यजमानश्च--

यजमानके नाम ३--र्जातन् १॥ ७॥ यष्टृ २ यजमान ३॥

-स सोमवति दीक्षितः।

सोमयज्ञके यजमानका नाम १--दीक्षित १॥

इज्याशीलो यायजूको--

बारंवार यज्ञ करनेवालेके नाम २--इज्याशील १ यायजूक २॥

--यज्ञातु दिधि चेष्टवान् ॥८॥ जो वििसे यज्ञ करे उसका नाम १--यज्वन्

#### स गीष्वतीष्ट्या स्थपतिः

बृहस्पति यञ्च करनेवांलका नाम १--स्थपति १ सोमपीथी त सोमपाः।

सोसवछिका €स पी वाले नाम २--सोमपी-थिन १ सोमपा २ ॥

सर्ववेदाः स येतेष्टो यागः सर्वस्वद-क्षिणः ॥ ९ ॥

जो यज्ञमे श्रपना सब धन दे ठाले उसका नाम १--सर्ववेदसू १॥ ९॥

श्चनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीतीं--सागोपाग वेद पढनेवालेका नाम १-अन्चान १

-गुरोस्तु यः। लब्धानुज्ञः समायुत्तः-यही अनुवान गुरुकी गृहस्थाश्रमादिमें प्राप्त होनंकी त्राज्ञा पावे तो उसका नाम १-समायुत्त १

--सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥ अभिषव स्नान करे उसका -सुत्वन् १ ॥ ५० ॥

# छात्रान्तेवासिनौ शिप्ये-

विद्यार्थीके नाम ३--छात्र १ श्रम्तेवासिन २ शिष्य ३।।

## --शैचाः प्राथमकल्पिकाः।

छोटे ( नये ) विद्यार्थीके नाम २-शैद्ध १ प्राथमकल्पिक २ ॥

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिगाः ॥ ११ ॥

सहपाठी श्रर्थात् एक साथ एक ही वस्तु पढ़ने-वालेका नाम १—सब्रह्मचारिन् १॥ ११॥

-सतीथ्यस्त्वेकग्रुरव- '

जित्ने एक गुरुसे पढ़ते हो उनका नाम १---सतीर्थ्य १ ॥

#### -श्चितवानश्चिमग्निचित्।

जो श्रमिको वटोरता है उराका नाम १---श्रमिचित् १।।

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिहामितिहान्य-यम् ॥ १२ ॥

परम्पन उपदेशके नाम २---ऐतिह्य १ इतिहा २ । १२ ॥

-उपज्ञा ज्ञानमार्ध स्या-

प्रथम ज्ञानका नाम १--उपज्ञा १॥

--ज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः।

समक्तके अन्थके प्रारम्भ करनेका नाम १-उपक्रम १॥

यज्ञः सर्वोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मवः ऋतः॥ १३।।

यज्ञके नाम ७-च्छा १ सव २ अध्वर ३ याग ४ सप्ततन्तु ५ मख ६ ऋतु ७ ॥ ९३ ॥

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बिनः। एतं पश्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिः नामकाः॥ १४॥

महायक्षके नाम ५--पाठ १ होम २ %तिथिएजा ३ तर्प्या ४ बलि ५ ॥ १४॥

समज्या परिषद्गोष्टी सभासमिति संसदः। आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीन-वुंसकयोः सदः॥ १५॥

सभाके नाम ९-समज्या १ परिषद् २ गोष्टी ३ सभा ४ समिति ५ संसद् ६ आस्थानी ७ आस्थान ८ सदम् ९ ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्वविगेदात्-सदस्योके गृहका नाम १-प्राग्वंश १।।

--सदस्या विधिद्शितः। समाके विवार करनेवालोका नाम १-सदस्य 🦫

# सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाः जित्राश्च ते ।। १६॥

समाभे नैं। नेदा नीक नारा ४-समामद १ समा-स्तार २ मध्य ३ सानाजिक ४॥ १६॥

#### अध्वयूद्धातृहोतारो यज्ञःसामिवदः कमात्।

य उनेद जाननेदांलया नाम १-इव्ह्यु १ ॥ सामपंदीका नाम १ उद्गतु १ ॥ ऋग्वेदीरा नाम १—होतु १ ॥

#### त्रःश्रीधाचा धनैर्वार्था ऋत्विजे। याज-काश्च ते ॥ १७ ॥

जिनको धनमादि देकर यज्ञमें वरण किया लाग उस आसीध श्राटि सोलहके नाम २-मृत्यिष्ठ १ याजक २ ॥ १७ ॥

#### वदिः परिष्कृता भूमिः-

नेदीका नाम १-देदि १॥

--समे स्विद्यलचरवरं।

यजार्थ चयूनगके नाग २-स्थिण्डल १ चत्वर२

#### चषालो यूपकंटकः-

सम्माके ऊपर जो ककशाकार काग्रका रहता है उसके नाम २-चपाल २ यूपकटक २॥

## —कुम्वा सुगहना वृतिः॥ १८॥

यज्ञोंको श्रन्य निति न देखनेके नितित्त जो टर्री श्राटि लगाई जाता है उसका नम्म १-कुम्बा १॥१८॥

## यूपायं हर्म--

जिस लक्द्रीको मथके श्रिप्त निकालते है उसका नाम १ श्रुरणि १॥

#### दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽ-ग्नयः॥ १९॥

यज्ञकी श्रमिके नाम ३-दक्षिणामि १ गाईपत्य २ श्राहवनीय ३॥ १९॥

#### ष्प्रित्रयमिंद नेता—

इन तीनों अफ्रिगोका नाम १-न्रेता १।।

—प्रणीतः सस्य तोऽनतः ।

संस्कारित व्यक्तिका नाम १--प्रणीत १ ॥

#### समुद्धः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयो-गिणः ॥ २० ॥

यज्ञाधिके सम २-सम्ब १ गरिचाण्य २ उप-चाय्य ३ ॥ २०॥

#### यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणक्षिः प्राणी-यतं । तस्मित्रानाय्यो—

गाईपत्यामिसे लेकर जो दक्षिगानि प्रवेश कराया जाय उसका नाम १-म्यानाप्य १ ॥

#### —ऽथःसायी स्वाद्या च हुतभुिमया ॥२१॥

स्वारा स्रर्थात् र्आक्ती स्नीके नाम ३-स्रप्नायी १ स्वाहा २ हन्भुक्पिया ३॥ २१॥

#### ऋक्तामिथेनी बाय्या च या स्याद्ग्नि-समिन्धने ।

अप्रि वालनेके अर्थ जो ऋचा पढी जाब उसके नाम २-सामिधेनी १ घाट्या २॥

## गायत्रीप्रमुखं छन्दो-

गायत्री, उप्लिह, अनुप्रुम् इन्यादिका नाम ९--ज्जन्दम् १ ॥

## -हब्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥

श्रक्षिमे छोटने योग्य साकत्यका नाम १--चरु १ ॥ २२ ॥

## ग्रामिक्षा सा श्रुतोष्णे या क्षार स्याद-धियोगतः।

गरम पके दूबमें दही डातनेसे जो बनता हैं उसका नाम १--आमिन्हा १।।

#### धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥२३॥

मृगचर्मसे बने हुए वीजनेका नाम १--यित्र १ ॥ २३ ॥ पृषद्गाज्य सद्ध्याज्येदही धी मिले हुएका नाम १--पृषदाज्य १॥
-परमात्र तु पायसम्।
नीर्ग्के नाम १--प्रमात्र १ पायस २ ॥
हन्यकन्ये देविषित्र्ये ग्रान्नेदेवताके त्रर्थकी खीरका नाम १--हन्य १ ॥
पात्रं स्वादिवम् ॥ २४ ॥
स्वा श्रादिका नाम १--पात्र १ ॥ २४ ॥
ध्रवोषभृज्जुहूर्ना तु स्ववो भेदाः स्ववः
स्वियः ॥

स्रुवाके भेद ५--ध्रुवा १ उपसृत् २ जुह ३ स्तुव ४ स्त्रुच् --५ ॥

उपाकृतः पशुरस्तै योऽभिमन्त्रय क्रतौ इतः ॥ २५ ॥

र्यज्ञके पशुका नाम १-उपाइत १ ॥ २५ ॥

• परम्पराकं शामनं प्रोत्तांग च वधार्थकम्

यज्ञके स्त्रर्थ पशु मारनेके नाम ३--परम्पराक १
शमन २ प्रोत्तरण ३ ॥

वाञ्यिष्ठंगाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता इते ॥ २६ ॥

यज्ञमें मारे हुए पशुके नाम ३-- प्रमीत १ उप-सम्पन्न २ प्रोक्तित ३ ॥ २६ ॥

#### सात्राय्यं इवि-

साकत्यके नाम २—सान्नाय्य १ हविष् २ ॥

— रस्रो तु हुतं निष्ठु वषट्कृतम् ।

ऋग्निमें जो हुना जावे उसका नाम १—
वषट्कृत १ ॥

दीचान्तोऽवभृथो यज्ञ—
यक्षान्तज्ञानका नाम १—अवस्थ १॥
—स्तत्कमार्हे तु यज्ञियम्।॥३७॥
श्वि—

यज्ञमे कर्मका नाम १---इष्ट १॥

# ---पूर्तं खातादिः कर्म यत ।

वावडी तालाव श्रादि लुदानेका नाम १-प्रताप ग्रमृतं विघसां यज्ञशेषभाजनशेषयोः ॥ २८॥

यजसे बची हुई जाऊरि श्राष्टिका नाम ९-श्रम्त १ ॥ श्रोर भोजनसे बची हुई वस्तुका नाम १-वियस १ ॥ २८ ॥

्त्यागो विद्यापित दानमृत्सर्जनिवान-जन । विश्राणनं वितरणं म्पर्शनं प्रतिपा-नम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपग्रामपवर्जनमं-दृतिः।

दानकं नाम १३--त्याग १ विहापित २ दान ३ उत्सन्जेन ४ विसर्जेन ५ विश्वाणान ६ विनरणा७ स्वरान ८ प्रतिपादन ९॥ २९ ॥ प्रादेशन १० निर्वपणा ११ श्राप्वजेन १२ श्रहति १३॥

मतार्थं तद्हं दानं त्रिषु म्याद्रौध्वंदेहि-कम् ॥ ३० ॥

मृतकंक स्त्रर्थ जो दश दिनंक वीचमें पिशादि दिये जाते हैं उनका नाम १--स्त्री में देहिक १॥३०॥

## पितृदानं निवापः स्या—

ितरोक देनेके निमित्त जो दान दिया जार्थ उनके नाम २−पितृदान १ निवाप २ ॥

## च्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः।

पितरोके देनेके निमित्तके कर्मका नाम १--श्राद्ध १ ॥

## अन्गहार्यं मासिकं--

श्रमावस्याके श्राद्धकं नाम २--श्रन्वाहार्य १ गासिक २॥

पर्येषणा परी छश्चान्वेषणा च गेवे— पणा।

श्राद्धमे ब्राह्मग्राकी मिक्त श्रीर सेवा करनेके नाम २--पर्येषगा १ परिष्टि २ ॥ धर्म श्रादिके खोजनेके नाम २--श्रन्वेषगा १ गवेषगा २ ॥ श्रथवा ये चारो नाम धर्म श्रादिके खोजनेके ही जानने ॥

#### सनि स्त्वध्येषगा--

विनतीके नाम २--सनि १ अच्येषंशा २
--याच्ञाऽभिशस्तियांचनार्थना ॥३२॥
मांगनेके नाम ४याच्ञा १ श्रमिशस्ति २
- याचना ३ श्रथंना ४॥ ३२॥

## -षर् तु त्रि-

यह छः शब्द तीनों किगोमें होते हैं ॥

-- व्यव्यमयीथें पाद्यं पादाय वारिणि ।

पूजार्थ पानी छोड़नेका नाम १--अर्घ्य १॥ पांव घोनेको छोडने घोग्य पानीका नाम १-- पाछ १॥

क्रमादातिथ्यातिथेये स्त्रतिथ्यर्थेऽत्रसा-धुनि ॥ ३३ ॥

श्रीतिथिके श्रर्थ जो कर्म उसका नाम १- श्राति-थ्य १ ॥ श्रीतिथिके निमिक्त जो सिद्द हो बह १-श्रातिथेय १ ॥ ३३ ॥

स्युरावेशिक धागन्तुरतिथिना गृहः-गते।

महिमानके नाम ४--श्रावेशिक १ श्रागन्तु २ श्रातिथि ३ गृहागत ४ ॥

पूजा नमस्याऽपवितिः सपर्याचिहिंगाः समाः॥ ३४॥

पूजाके नाम ६--पूजा १ नमस्या २ अपनिति विस्पर्या ४ अर्जी ५ अर्डुगा ६॥ ३४॥

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचयां युपा-सना।

उपासनाके नाम ४--वरिवस्या १ शुश्रषा २ परिचर्या ३ उपासना ४ ॥ बज्याऽटाटचा पर्यटनं--

त्रिदेशमें भ्रमण करनेके नाम ३--व्रज्या १ श्रटाट्या २ पर्यटन ३॥

— चर्या स्वीयापथे स्थितिः ॥ ३५॥
थोगमार्गमें स्थितिका नाम १-न्वर्यो १ ॥३५॥

उपम्प्रशस्तवाचमन---

श्राचमनके नाम २--उपस्पर्श १ श्राचमन २ ॥

—मथ मौनमभाषणम् ।

चुप रहनेके नाम २--मीन १ श्रमापण २ ॥

त्रातुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी ग्रनु-क्रमः ॥ ३६ ॥ पर्यायश्वा

श्रनुक्रमके नाम ५--म्रानपूर्वी १ श्रावृत् २ परिपाटी ३ श्रनुक्रम ४ ॥ ३६ ॥ पर्ग्याय ५ ॥ ः --ऽतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ।

श्रतिक्रमके नाम ३--श्रतिपात १ पर्य्य २ उपात्यय ३।।

नियमो व्रतमञ्जी-

व्रतके नाम २--नियम १ व्रत २ ॥

-तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥ चान्द्रायगादि व्रतकां नाम १--पुण्यक १. ।। ३७ ॥

ग्रीपवस्तं तूपवासी-

उपवासके नाम २--ग्रीपवस्त १ उपवास २'॥

–विवेकः पृथगात्मता ।

प्रकृतिपुरुषके भेद जाननेके विचारके नाम २--विवेक १ प्रथगात्मता २ ।।

स्यादत्रहावर्चसं वृताध्ययनद्धि-

सदान्त्रारपालन श्रीर वेदाभ्यास करनेसे जा तेज होता है उसका नाम १--ब्रह्मवर्चेस १ ॥

—रथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥ पाठे ब्रह्माञ्जलिः-वेद पढ्नेके समयकी अंजलिका नाम १--ब्रह्मां-जलि १ ॥ ३८ ॥ -पाठे विशुषो ब्रह्मबिन्दवः॥

, वेद पढ़नेके समय जो मुखसे जल चृता है उसका नाम १--ब्रह्मविद् १॥

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं-

च्यान और योगके आसनका न'म १--ब्रह्मा-सन १।।

कर्षे विधिकमौ ॥ ३९॥

नियोगशास्त्रके नाम २--कल्प १ विधि २ क्रम ३ ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्याध्यथमः कल्पो-

प्रथम विविका नाम १--मुख्य १॥

-ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः।

द्वितीय विधिका नाम १--श्रनुकर्ल्प १॥

संस्कारपूर्वे प्रहृ्णां ग्यादुपाकर्णाः श्रुतेः .॥ ४० ॥

सुस्कारपूर्वक वेदके सुननेका नाम १--उपाकरण १ ॥ ४० ॥

समे तु पाद्यहण्णमिनवादनिमित्युभे। नासगोत्रादिपूर्वक प्रणाम करनेक नाम २--पाद-श्रहण १ श्रमिवादन २॥

भिक्षुः परिवाट् कर्मन्दी प.राशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥

संन्यार्गाके नाम ५--मिक्ष १ परिवाच् २ कर्म-न्दिन् ३ पाराशरिन् ४ मस्करिन् ५ ॥ ४१ ॥

वयस्वी तापसः पारिकांशी-

तपस्वीके नाम ३--तपस्तिन् १ तापस २ पारि-कांक्षिन् ३ ॥

-वाचंयमो मुनि:।

मुनिके नाम २-- वाचंयम १ मुनि २ ॥

तपः खंकेशसहो दान्तो-

. -तपस्याके क्लेशके सहनेवालेका नाम १--दान्त १॥ —विश्विनो ब्रह्मचारिगाः ॥ ४२ ॥

ब्रह्मचारीके गास २--वर्गिन् १ अतस्मारन ॥ ४२ ॥

-ऋषयः सत्यवचसः

भद्धिके गाग २ - भद्धि १ सत्यवनास् २ ॥

-स्नातकरत्वाप्टुतो व्रती ।

जो वेदत्रत धारण किथे हुए शुरुकी श्राज्ञाते स्नान करे उसका गा ५-स्नातक १॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥ ४३॥

जितिद्वनः ने नाम २--यतिन् १ यति २ ॥४३॥ यः स्थण्डिले च ात्रशान् क्रेते स्थण्डिल-शास्यसौ । स्थागिडल अ:-

जो बतवश हा प्रविधार चन्त्रा बना उसपर सोचे उसके नाम २-स्थिम्लिशापिन् १ स्थाप्तिन

-- Sथ धिरजन्तमसः स्युद्धंयातिगः॥४४॥ रजोगुण तमं गुण रहिन व्यासादि सुनिकं नाम २-- निकस्तमस १ द्वयातिग २॥ ४४॥

पवित्रः प्रयतः पृतः-

पित्रकं नाम ३--प'्त्र १ प्रयत २ पूरा ३ ॥

-पाखण्डाः सर्वत्हिङ्गिनः।

बौद्धद्वपणकादि दुष्ट शास्त्रशर्विधोके नाम २--पासण्ड १ सर्वेलिंगन् २॥

पालाशो दण्ड भ्राप हो व्रते-व्याचर्यमें पलाशके दण्डका नाम १-श्रापाट १।। -राम्भरस वैणवः ॥ ४५॥

यदि वह दण्ट व सका हो' तो उसके नाम २~ सम्म ५ देखाव २ ॥ ४५ ॥

भाष्ट्री कमण्डलुः कुण्डी
मतियोक सोटेके नाग २-४गण्डल १ कुण्डी २

—वितामासनं यृसी ।

भौर उनके आसनका नग १--यूसी १ ॥

म्राजित चर्म कृत्तिः स्त्री-सगादिके चर्मके नाम ३--श्रजित १ चर्मन

मृगादिके चर्मके नाम ३--श्रजिन १ चर्मन् २ प्रकित्ति ३ ॥

—भन्नं भिन्नाकदम्बकस् ॥ ४६ ॥ भिन्नाके देरका नाम १-भन्न १॥ ४६ ॥ स्वाध्यायः स्याज्जपः—

वेदके श्रभ्यासके नाम २--स्वाध्याय १ जप २। सुत्याऽभिषवः सबनं च सा।

यज्ञीषधिके कूटनेके नाम ३--सुत्या १ श्रमिषव २ सवन ३ ॥

सर्वेनसामपर्ध्वसि जप्यं त्रिष्वधमर्ष-णम् ॥ ४८ ॥

सब पापके नाश करनेबाले मंत्रका नाम १--श्राघमर्षणा १॥ ४७॥

दशश्च पौर्णमासश्च यागी पक्षान्तयोः पृथक् ।

श्रमावसके दिनके यज्ञका नाम १--दर्श, १।। पौर्णमासीके दिनके यज्ञका नाम १--पौर्णमास १॥

शरीरसाधनाभेत्तं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ ४८॥

श्रितिं, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य्य, श्रिपरिग्रह (दान न लेना) इन नित्यकर्म्मका नाम १--यम १ ॥ ४८ ॥

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसा-धनम् ।

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान इन श्रागन्तु कर्मसाधनका नाम १- नियम १०॥

उपवीतं ब्रह्मसूचं घोद्धृते दक्षिणे करे

वार्थे कांधेक जनेऊक नाम २--उपवीत १ ब्रह्म-सूत्र २॥ ४९॥

प्राचीकवीतमन्यस्मिन्-

दिहने कांधेपर रहनेयाले जनेकका नाम १--आचीनाधीत १॥ - निवीतं कण्ठलम्बितम्।

मालाकार यज्ञोपबीत पहिरनेका नाम १--निवीत १॥

अङ्गुल्यत्र तीर्थ दैव—

श्रगुर्तियोका अध्रभाग देवताश्रोंका तीर्थ कहाता है।।

-- स्वरपांगुरयोर्म् हे कायम् ॥ ५० ॥
--कनऋगुलियोके मूलका नाम प्रजापति तीर्थ है॥ ५०॥

मध्येऽङ्गुष्ठांगुरुयोः पित्र्यं—

अगुष्ठ श्रोर तर्जनी श्रं श्रंगुलीक मध्यमें पिनृतीर्थ कहाता है ॥

—मृले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम्।

श्रगुष्टके मूलमें बाह्मतीर्थ कहाता है ॥

स्याद्ब्रह्मभृयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमि-त्यपि॥ ५१॥

श्रह्ममे मिल जानेक नाम ३--ब्रह्मभूय १, ब्रह्मत्व २ ब्रह्मसायुज्य ३ ॥ ५१ ॥

देवभूयादिकं तद्वत-

देवमें मिलजानेके नाम ३--देवभूय १ देवत्व २ देवसायुज्य ३ ॥

—कुच्छ्रं सान्तपनादिकम् ।

गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, धी, कुशोदक इनका भक्षण करने श्रोर एक रात्रिके उपवासका नाम १-कच्छ १॥

सन्यासवत्यनशने प्रमान्त्रायो-

संन्यासपूर्वक मोजनन्यागका नाम १--प्राय १

-थ वीरहाँ॥ ५२॥ नष्टाग्निः—

जिस तपस्वीकी श्रिप्त बुक्त गयी हो उस तप-स्वीके नाम २--वीरहन् १॥ ५२ स्वा नष्टाग्नि २॥

— कुहना छोभान्मिथ्येपापथकहपना।
दम्मसे व्यानादि करनेका नाम १-कुहना १॥
ब्रात्यः संस्कारहीनः स्या—

जिस ब्राह्मणुका गोगाकालमें भी यज्ञोपवीत न हो उसका नाम १-- ब्रात्य १॥

-द्स्वाध्यायो निराकृतिः॥ ५३॥ वेदाभ्यासरिहतका नाम १--निराकृति १॥५३॥ धर्मध्वजी ळिङ्जवृत्ति-

बहुरूपिया ब्राह्मणके नाम २--धर्मध्वजिन् १ लिग-वृत्ति ॥ २ ॥

जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट हो गया हो उसके नाम २--श्रवकीर्योन् १ चतनत २ ॥

सुप्ते यस्मित्रस्तमेति सुप्ते यस्यिन्तुद्ति च ॥ ५४ ॥ अंग्रुमानभिनि मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।

मायंतच्यामें सोनंवालका नाम १-- श्रिमिन-र्भुक्त १।। प्रातःकालकी सन्यामें सोनेवालेका नाम १--श्रम्युदित १॥ ५४॥

परिवेत्ताऽनुजोऽन्दे ज्येष्ठे दारपरिश्र -

जिसका बड़ा भाई न ब्याहा गया हो प्रथम छोटा ब्याहा जाय तो उस छोटेका नाम १--परिवेत ॥ ५५॥

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्--

उसके बड़े भाईका नाम १--परिवित्ति १ ॥

विवाहोषयमौ समौ। तथा परिणयो-द्वाहोपयामाः पाशिपीडनम् ॥ ५६ ॥

विवाहके नाम ६--विवाह १--उपधम २ परि-ग्रय ३ उद्वाह ४ उपयाम ५ पाणिपोडन ६ ॥५६॥

व्यवायो ग्राम्यधर्मी मैथुनं निष्ठवनं रतम्।

मैथुनके नाम ५--व्यवाय १ प्राम्यधर्म २ मैथुन ३ निधुवन ४ रत ५ ॥

त्रिवर्गी धर्मकामार्थे-

वेदविद्वितयज्ञादि विधि, स्नीसेवन, न्यायसे धनोपाजन इनका नाम १--त्रिवर्ग १ । -श्रीतृवर्गः समोचिन्नैः ॥ ५७ ॥ श्रीर मोज्ञकरके युक्त धर्म, श्रूर्थ, काम हो तौ उसका नाम १--चतुर्वर्ग १ ॥ ५७ ॥

# लब्लेस्तैश्चतुभद्रं-

श्रीर वेद धर्मादि सवल हो तो उनका नाम १--चतुर्भद्द १॥

—जन्याः स्निग्धा वरस्य ये॥ ५८॥ त्रराती श्रर्थात् वरके पत्तवालोका नाम १--जन्य १॥ ५८॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

ग्रथ चित्रयवर्गः ८.

# मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहु तः चत्त्रियो विराट्।

च्चत्रियके नाम ५--मूर्द्राभिषिक्त १ राजन्य २ बाहुज ३ क्षत्त्रिय ४ विराज् ५ ॥

राजा राट् पार्यिवक्ष्मामृन्तृपभूपमदी-क्षितः ॥ १ ॥

राजांक नाम ७--राजन् १ राज् २ पांगिय ३ क्सामृत् ४ नृप ५ भूप ६ महीक्षित् ७ ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधी-

जो बहुत राजाश्रोका मालिक हो उसका नाम १--श्रधीखर १।।

#### चक्रवर्ती सार्वभौमी-

समुद्रपर्यन्त पृथ्वीका जिसका राज्य हो उसके नाम २- चक्रवर्तिन् १ सार्वभौम २ ॥

-तृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

चारहजार ४००० कोशके भूमण्डलके राजा का नाम १--मण्डलेश्वर १॥

येनेष्टं राजस्येन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्रा—

वही मण्डलेश्वर राजसूय यज्ञ किये हो श्रीर सब राजाश्रोका शिक्षक हो तो उसका नाम१--सम्राज् -डथ राजकम् ॥ ३॥ राजन्यकं च नृप-तिक्षत्त्रियाणां गणे क्रमात्।

राजात्रोके गयाका नाम १--राजक १॥ ३॥ श्रीर त्वत्त्रियोके गयाका नाम १--राजन्यक १॥

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो-

मन्त्रीके नाम ३--मन्त्रिन् १ घीसन्विव २ त्रमात्य ३ ॥

-ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

मन्त्रीसे छोटे श्रन्य मुसाहिबोका नाम १--कर्मसचिव १ ॥ ४ ॥

महाग्राचाः प्रधानानि--

मुख्यमन्त्रीके नाम २-महामात्र १ प्रधान २ ॥

पुरोधास्तु पुरोहितः।

पुरोहितके नाम २--पुरोधस् १ पुरोहित २ ॥ द्रष्टरि व्यवहारोगां प्राङ्खिवाकाक्षद्-र्शकौ ॥ ५ ॥

पंच अर्थात् न्यायाघीशके नाम२--प्राइविवाक१ श्रवदर्शक २ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो द्वारणलद्धाःस्यद्धाःस्थित-दशकाः।

द्वारपालके नाम ५--प्रतीहार १ द्वारपाल २ द्वाःस्थ ३ द्वाःस्थित ४ दर्शक ५ ॥

रक्षिनर्गस्त्वनीकस्थो-

रखवालेके नाम २--रिक्षवर्ग १ श्रातीकस्थ २ ॥

-ऽथाध्यक्ताधिकृतौ समी ॥ ६ ॥ श्रिवकारीके नाम २--श्रध्यक्त १ श्रिविकृत २ ॥ ६ ॥

स्थायुकीऽधिकृतो ग्रामेएक ग्रामके ठेकेदारके नाम १-स्थायुक १॥
--गोपो ग्रामेषु भृरिषु।
बहुत श्रामोके ठेकेदारका नाम १--गोप १॥

भौरिकः कनकाष्यक्षी-

सोनेके श्रिषकारीके नाम २--भौरिक ? कनकाष्यत्त २ ॥

-रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः॥ ७॥

खजानचीके नाम २<del>-६</del>पाच्यस्त ९ नेक्किक

ष्पन्तःपुरे त्वधिकृतः स्याद्ग्तर्वेशिको जनः ।

जो जनानेकी वस्तुश्चोंका श्रिषकारी हो उसका नाम १-श्रन्तवेंशिक १ ॥

सौविद्धाः कञ्चुकिनः स्थापत्या सौविदाश्च ते॥८॥

राजा वा राजिक्षियों के निकट जो बेंत लियें हुए खड़े रहते हैं उनके नाम ४-सी विदक्ष १ कड़्यु-किन् २ स्थापत्य ३ सी विद ४ ॥ ८ ॥

षण्डो वर्षवंरस्तुल्यौ-

खोजोंके नाम २-- वण्ड १ वर्षवर २ ॥

सेवकार्थ्वज्जिविनः।

सेवक वा नौकरके नाम ३—सेवक १ अधिन् २ श्रमुजीविन् ३॥

विषयानन्तरो राजा शह-

राजाके देशके पासके राजाका नाम १-शत्रु १६

—मित्रमतः परम्॥ ९॥

उसके श्रन्य राजाका नाम १-मित्र १ ॥ ९ ॥ उटासीनः परतरः--

इन शत्रु मित्रोसेपर (जन्य) राजाश्रोका

-पार्षिण्याहस्तु पृष्ठतः।

नाम १-उदासीन १॥

श्रपने राज्यके पीछे राजा जो हो उसका नाम १~पार्थियाह १ ॥

रिपौ वैरिसपत्नारिद्धिषद्द्धेषगादुईदः
॥ १० ॥ द्विद्विपचाहितामिनदस्युशानवशनवः ॥ स्रभिषातिपरारातिमत्यर्थिपरिपंथिनः ॥ ११ ॥

े दुस्मनके नाम १९--रिपु १ दैरिन् २ सपत्न ३
श्वारि ४ द्विषत् ५ द्वेषणा ६ दुईद ७ ॥ १०॥
श्विष् ८ विपक्ष ९ श्रहित १० श्वशित्र १९ दस्य १२
शाश्रव १ई शत्रु १४ श्रमिधातिन् १५ पर १६
श्वराति १७ प्रत्यर्थिन १८ परिपंथिन् १९॥११॥

वयस्यः स्निग्धः सवया---इमजोक्षीके नाम २-न्वयस्य १ स्निग्ध २ सव-वस् ३॥

भाश्य मित्रं सखा सुहत ।

क्रित्रके नाम १-क्रित्र १ सखिन् १ सुहृद् १ ।।

सख्य स्वामपदीनं स्या—

क्रित्रताके नाम १-सम्य १ साप्तपदीन १ ॥

इनुरोधोऽनुन्तिनम् ॥ १२ ॥

शला मनाने (सुलाहिजे ) के नाम १-अनुरोध

शत्रुवर्त्तन १ ॥ १२ ॥

वधाईवर्णः प्रशिधिरपसर्षश्चरः स्पशः । वास्थ्र<sup>\*</sup>गृढपुरुष—

जासूस वा हलकारेके नाम ७-न्यथाईवर्य १ प्रविशिध २ अपसर्प ३ वर ४ स्पश ५ चार ६ बृह्युरुष ७।।

श्वाप्तः यायितौ समी ॥ १३ ॥

्र विश्वासीके नाम २-आप्त ९ प्रत्यायित २ ४। १३ ॥

सांवरसरो ज्योतिषिको देवज्ञगणका-इति । स्युमे हृतिकमौहूर्तज्ञानिक तिन्त-का ग्रापे॥ १४॥

्र ज्योतिषी पिष्टितके नाम ८— सांवरसर १ ज्योतिषिक २ देवज्ञ ३ मगुक ४ मीहर्शिक ५ जीहर्त ६ ज्ञानिन् ७ कार्तान्तिक ८ ॥ १४ ॥

तान्त्रिको इति सिद्धान्तः-

शाक्षीके नाम २ - ताःत्रक १ ज्ञातसिद्धान्त२। सत्त्री गृहपतिः समी ।

मोदोके नाम १-सिन् १ गृहपति २ ॥ जितिपन रोऽसुरचणाऽहसुठचुश्च लेखके हं खकके नाम ४—— लिपिकर १ अक्षरचण २ अक्तरचुक्चु ३ हे खक ४ ॥ १५ ॥

लि स्रतात्तरविन्यासे छिपिलिबिच्ने स्रियौ।

लिखे हुए लेखके नाम ४— लिखित १ अक्षर-विन्यास २ लिपि ३ लिबि ४ ॥

स्यात्संदेशहरो दूतो-इतके नाम २—संदंशहर १ इत २ ४

-दृत्यं तद्भावसर्माया ॥ १६ ॥ दृतपनका नाम १-दृत्य १ ॥ १६ ॥ ।

ग्रध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

रस्तेगीरके नाम ५-श्रध्वनीन १ श्रध्वन २ श्रध्वन्य ३ पान्थ ४ पथिक ५ ॥

म्वाम्यमात्यसुहत्कोशराष्ट्रदुर्गवलानि च ॥ १७ ॥ राज्यांगानि प्रकृतयः पौराणां श्रेषायोऽपि च ।

स्वामी (राजा) श्रमात्य (मन्त्री) छहरू (मित्र) कोश (खजाना) राष्ट्र (देशकी भूमि) हुर्ग (कटा) वल (फौज) ॥ १७ ॥ पुरवासी छौर शिल्पी इन सबके नाम २-राज्याङ १ प्रकृति २ ॥

संधिनां विश्वहो यानमासनं देधमा-श्रयः॥ १८॥ षद्युणाः-

ं सुवधादि देके शत्रुके मिलानेका नाम १-सिम्ध १ ॥ शत्रुके साथ विगड़नेकां नाम १-विश्रह १ ॥ शत्रुपर चढ़ाई करनेका नाम १-यान १ ॥ अपने स्थानपर तैयार रहनेका नाम १-आसन १ ॥ शत्रुके अधिकारियोमें फूट करानेका नाम१-द्वैष १ ॥ दूसरेका आसरा छेनेका नाम १-आअय १ ॥ १८ ॥ ये छः गुण कहलाते हैं ॥

—शक्तयस्तिसः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः।
राजाकी शक्तियोके नाम १—प्रभावण १
उरसाहण १ मन्त्रव १ ॥

क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवे-दिनाम् ॥ १९ ॥

नीतिशास्त्रोक्त स्त्रय स्थान वृद्धिका नाम १-

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशद्ण्ड-जम् ।

खजाना और दंडके प्रभावके नाम २— पताप १ प्रभाव २ ॥

सामदाने भेददण्डाचित्युपायचतुष्टयम् स २०॥

राजाके चारो उपायोंके नाम ४-सामन् १ दान २ मेद ३ दण्ड ४॥ २०॥

साहस तु दमो दण्डः-दण्ड देनेके नाम ३-साहस १ दम २ दण्ड ३॥ --सामसान्तव-

सद्धक करनेके नाम २-सामन् १ सान्त्व २॥
-मधो समौ ॥ भेदोपजापाफरक डालनेके नाम २-भेद १ उपजाप २॥
बुपधौ धर्माद्यैयंत्प रीच्च ग्राम् ॥ २१॥
धर्म श्र्यं काम श्रीर भयसे मन्त्री इत्यादिकोंकी परीक्षा करनेका नाम १--उपधा १ ।२१॥

पश्च म्रि—

अवडत्तीया श्रादि निःशलाक पर्ध्यन्त पांच शब्द तीनो लिंगोमें होते है ।।

•वषद्वश्रीगो यस्तृतीयाद्यगोचरः।
तो जनोकी सी सलाहका नाम १-अषडसीया १ ॥

विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांग्रु चालिगे-

एकान्तके नाम ७--विविक्त १ विजन २ छन्न इ निश्शलाक ४ रहम् ।। २२ ॥ रह ६ उपांछ ७ -रहस्यं तदवे त्रिषु ।

एकान्तकी बात वा कामका नाम १-रहस्य १

समौ विस्नम्भविश्वासौ—
विश्वासके नाम २--विस्नम्म १ विश्वास २ ॥
-भ्रेषो भ्रशो यथोचितात् ॥ २३ ॥
अन्यायका नाम १--भ्रेष १ ॥ २३ ॥
अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समअसम्
न्यायके नाम ५--अभ्रेष १ न्याय २ कल्प ३
देशरूप ४ समझस ५ ॥

युक्तमौपयिकं ल 🔑 भजमानाभिनीतः वत ॥ २४ ॥ न्याय्यं च त्रिषु षङ्—

न्यायसे जो वस्तु ली जावे उसके नाम ६--युक्त १ श्रीपियक २ लभ्य ३ भजमान ४ श्राभिनीत ७ ॥ २४ ॥ न्याय्य ६ ये छः शब्द त्रिलिंग हैं ॥

-संप्रधारका तु समर्थनम्।

यही उचित है ऐसे निश्चय करनेके नाम २~ सम्प्रधारणा १ समर्थन २ ॥

श्रववादस्तु निर्देशो निदेगः शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टिश्चःज्ञा च—

श्राह्मके नाम ६-अवबाद ९ निर्देश २ निर्देश १ शासन ४॥ २५॥ शिष्टि ५ त्राह्मा ६।

-संस्था तु मयदि धारणा स्थितिः। मर्यादाके नाम ४-संस्था १ मर्यादा २ धारणा ३ स्थिति ४ ॥

आगोऽपराधो मन्तुश्च-श्रपराघके नाम ३-श्रागस् १ श्रपराघ २ मन्तु ३ ॥

-समे तूदानबन्धने ॥ २६ ॥
बन्धनके नाम २-उद्दान १ बन्धन २ ॥ २६ ॥
द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डोद्वे दण्डका नाम १-द्विपाध १ ॥
भागधेयः करो बिल्डः।
करके नाम ३-मागधेय १ कर २ बिल ३ ॥
ध्वद्वादिदेयं ग्रहकोऽह्यी-

भाटी वगरहमें देने योग्य महस्कृषे नाम १-शुक्क १॥

-प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

मित्रादिकोको भेट वा नजर देनेके नाम २-प्रामृत १ प्रदेशन २ ॥ २० ॥

उपायनमुपग्राह्ममुपहारस्तथोपदा ।

राजाको मेट वा नजर देनेके'नाम ४-उपायन १ उपप्राद्य २ उपहार ३ उपहा ४ ॥

यौतकादि तु यद्देयं सुदायो **हरमां च** तत् ॥ २८ ॥

**दहेज वा भा**ई बन्धुश्रोके देनेकी वस्तुके नाम १**-ग्र**दाथ १ हरणा २ ॥ २८ ॥

तिकालम्तु तदात्वं स्या-वर्तमानसमयके नाम २-तत्काल १ तदात्व २॥

—दुत्तरः काल श्रायतिः। श्रानेवाले स्मयका नाम १-श्रायति १ ॥

सांदृष्टिकं फळं सद्य--

तुरन्तके फलका नाम १-सांदृष्टिक १ ॥

उद्केः फलमुत्तरम् ॥ २९॥

आगेके होनेवालेका नाम १-उदके १ ॥ २९॥

अदृष्ट वह्नितोयादि-

श्राग लगने श्रीर श्रतिदृष्टि होने श्रादि उत्पात का नाम १-श्रहष्ट १॥

~दृष्टं स्वपरचक्रजम्।

श्रपेने या पराये राज्यसे चौरादिक अयका नाम १-इष्ट १ ॥

मही भुजामहिभयं स्वपन्तप्रभवं भयम्

श्रपने सहायक्से भयका नाम १—श्रहिभय १॥ ३०॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्या-कान्न चलानेके नामश-प्रक्रिया श्रिकारशः

-खामरं तु प्रकीर्णकम्।
चँवरके नाम २-चामर १ प्रकीर्णक २ ॥
नृपासनं यनद्भद्रासनं
मिण श्रादिसे बनी हुई राजगहीके नाम २--नृपासन १ भद्रासन २ ॥

-सिद्दासनं तुत्व ॥ ३१ ॥ हैमं-कदाचित् वही राजाके बैठनेका स्थान सोनेसे बना हो तो उसका नाम १-सिहासन १ ॥ ३१ ॥

—क्वत्रं त्वादपत्रं—

**छतुरीके नाम २**−छत्र १ श्रातपत्र २ ॥

—राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत्।

राजाके छत्रका नाम . १ - नृपलक्ष्मन् १ ॥

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो—

भरे घड़ेके नाम २-भद्रकुरम १ पूर्णकुरम २

भृङ्गारः कनकाळुका ॥ ३२ ॥

भारी या गड़बेके नाम २-मृगार १ कन-कालुका २॥ ३२॥

निवेशः शिबिर षण्डे-हेराके नाम २---निवेश १ शिविर २॥ ---सङ्जनं तूपरक्षणम् । पहरेके नाम २-सज्जन १ उपरक्षण २॥

इम्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्या**ञ्चतुष्ट-**यम्॥ ३३॥

. हाथी, घोड़ा, रथ, सिपाही इन सबका नाम १-सेनाङ्ग १॥ ३३॥

दन्ती दन्तावली हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विषः। मतंगजो गजो नागः कुञ्जरो वारगः करी॥ ३४॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी—

हार्थाके नाम १५-दिन्तन् १ दन्तावल २ हस्तिन् ३ द्विरद ४ अनेकप ५ द्विप ६ मतंगज ७ गज ८ नाग ९ कुझर १० वारण १९ करिन् १२ ॥ ३४ ॥ इस १३ स्तम्बेरम १४ पद्मिन् १५ ॥ --- यूथनाथस्तु यूथपः। '
हाथियोके सरदार हाथीके नाम २-- यूथनाथ
१ यूथप २ ॥

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्व हाथीके नाम २-मदोत्कट १ मदकल२।
कलभः करिशावकः॥ ३५॥

हाथीकं बच्चोंके नाम २-कलभ र् १ करिस्थावक २॥ ३५॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः —

जिसके मद बहता हो उसके नाम ३-प्रभिन्न
त्र गर्जित २ मत्त ३ ॥
स्मायुद्धान्तनिर्मदौ ।
वेमदवालेके नाम २-उद्धान्त ९ निर्मद २ ॥
हास्तिकं गजता युन्दे -हाथियोंके समूहके नाम २-हास्तिक ९ गजता२
--करिग्री थेनुका वशा ॥ ३६॥

हथिनीके नाम ३-करिणी ९ घेतुका २ वशा

गण्डः कटो-हाथीके गालके नाम २-गण्ड १ कट २ ॥
मदो दानंहाथीके मदके नाम २-मद १ दान २ ॥
-वमथुः करशीकरः।
हाथीकी सूद्से पानी निकलनेके नाम २वमथु १ करशीकर २ ॥

3 11 3 5 11

कुम्भी तु पिण्डी शिरस—
हाथीके मस्तकके मांसका नाम १-कुम्म १॥
-स्तयोर्मध्ये विदुः पुमान्॥ ३७॥
-सेनी कुम्भीके मध्यमें जो खाली रहता है
उसका नाम १-विदु १॥ ३०॥
--अवग्रहो ललाटं स्या—
हाथीके लिलारका नाम १-अवग्रह १॥

-दीषिका त्यक्षिक्टकम्। उसके नेत्रोकी गोलाईके नाम २-ईषिका क्र अक्षिक्टक २॥

ग्रपांगदेशो निर्याण-

उसके निहारनेका नाम १-निर्याण १ ॥

--कर्णमूळं तु च्लिका ॥ ३८ ॥ हाथीके जहांसे कान जमते हैं उस जगहका नाम १-च्लिका १ ॥ ३८ ॥

स्रधः कुम्भस्य वाहित्यं-हाथीके तिलारके नीवेका नाम १-वाहित्य १ ॥
प्रतिमानमधोऽस्य यत ।
वाहित्यके नीवेका नाम १-प्रतिमान १ ॥
स्रासनं स्कन्धदेशः स्यात हाथीके कन्धेका नाम १-श्रासन १ ॥
पद्मकं बिन्दुकालफम् ॥ ३९ ॥
हाथीके विंदुश्चोंका नाम १-पद्मक १ ॥ ३९ ॥
पार्श्वभागः पक्षभागो-हाथीकी वगलके नाम १-पार्श्वमाग ९ पद्मभाग २ ॥

--दन्तभागस्तु योऽप्रतः । हार्थाके त्रागेके भागका नाम १-दन्तमाग ५ ॥ द्वौपूर्वपश्चान्जंघादिदेशौ गाबावरे कमात् ॥ ४०॥

हाथीके आगेके जंघादि भागका नाम १-गात्र १॥ हाथीके पीछेके मागका नाम १-अवर१ ४०॥

तोत्रं वेणुक-

चाबुककी डण्डीके नाम २-तोत्र १ वेणुक २ 🗷

- मालानं बन्धस्तम्भे--हार्योके खटेका नाम १ — आलान १ ॥

-ऽप युखते । स्रन्दुको निगहोऽह्यी स्या— हाथीके जंजीरके नाम ३-१२द्वृत ९ अन्दुक २ निगड ३॥

दंकुशोऽस्त्री सृत्याः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥
अंकुराके नाम २-अंकुश १ स्रणि २ ॥ ४९ ॥
दृष्या यक्ष्या वरत्रा च--हाथीकी कमर बांधनेकी रस्तीके नाम २--दृष्या १ कक्ष्या २ वरत्रा ३ ॥

-कल्पना सज्जना समे। मालिकके चढ़नेके वास्ते हाशीको तैयार करनेके नाम २-कल्पना १ सज्जना २ ॥

प्रचिण्या तरण वर्णः परिस्तोमः कुथो द्रयोः ॥ ४२ ॥

गही वा झलके नाम ५-प्रवेणी १ आस्तरसा २ वर्ण ३ परिस्तोम ४ कुथ ५ ॥ ४२ ॥

— बीतं त्वसारं हग्त्यश्व— बुद्धादि करनेमें असमर्थ हाथी घोड़ेका नाम १—बीत १॥

-वारी तु गजबन्धनी।

जिस भूमिमें हाथी बांधे जायँ उसका नाम १-बारी १ ॥

योटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसंधवस-स्रवः।

धं देने नाम १३-घोटक १ वीति २ तुरा ३ तुरा ४ अध्य ५ तुरह्म ६ ॥ ४३ ॥ वाजिन् ७ नाह ८ अर्थन् ९ गन्धर्य १० हय ११ सैन्धव १२ सित्र १३ ॥

पाजानेयाः कुलीनाः स्यु—
कुळीन घोड़ेना नाम १--आजानेय १ ॥
र्विनीताः साधुषाहिनः ॥ ४४ ॥
सीखे हुए घोड़ेका नाम १--विनीत १ ॥ ४४ ॥
वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा
वाहिका हयाः ।

वनार्षु देशमें पैदा हुए घोड़ेना नाम १-वनायुज १ ॥ पारसदेशोत्पन्न घोड़ेका नाम १-पारसीक १ ॥ काबुली घोड़ेका नाम १--बाह्निक १ ॥

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो—

्रश्रमभेषके स्थामकर्णवाले घोड़ेक नाम ५ ययु १।
—जवनस्त जवाधिकः॥ ४५॥

जल्दी चलनेवाले घोड़ेका नाम १-जबन १॥४५॥

पृष्ठचः स्थौ री—

तदनेवाले घोड़ेके नाम २-पृष्ठथ १ स्थौरिन् २१।

-िस्तः कर्को
उजले घोड़ेका नाम १-कक १ ॥

रथ्यो वोटा रयस्य यः ।

रथके घोड़ेका नाम १-रथ्य १ ॥

बालः किशोरो—

घोड़ेके बच्चेका नाम १-किशोर १ ॥

वाम्यश्वा बडवा—

घोड़ीके नाम ३-वामी १ अन्या २ वडवा ३ ॥

-वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

घोड़ीके समूहका नाम १-वाडव १ ॥ ४६ ॥

विष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

घोड़ेके एक दिन चलने योग्य मार्गका नाम १-

कश्यं तु मध्यमाश्वानां—

घोड़ेके मध्यभागका नाम १-कश्य १ ॥

-हेषा हेषा च निःस्वगः ॥ ४४० ॥

घोड़ेके शब्दके नाम २-हेषा' १ हेषाः
२ ॥ ४० ॥

निगालस्तु गलोदेशे—

घोड़ेके गलेका नाम १-निगाल १ ॥

-तुन्दे त्वम्बीयमाश्ववत् ।

घोड़ेके समृहके नाम २-झमीय १ श्राम्व २ ॥

श्राम्दीन १॥

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं धिलातं प्रुतम् ॥ ४८ ॥ गतयोऽमः पश्च धारा—

घोड़ेके पांच प्रकारकी चालोंके नाम ५-आस्कन्दित १ घोरितक २ रचित ३ विन्गत ४ प्रका ५ ॥ ४८ ॥

योणा तु प्रोथमिश्चियाम्।

वोदंकी नाकका नाम १—प्रोथ १ ॥

किविका तु खळीनोऽश्ची—

वोदेकी लगामके नाम १—किवका १ खलील १

—शफं वळीवे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

वोदेके खुरके नाम २—शफ १ खुर १ (श्चुर)

पुच्छोऽस्त्री खमलांगुळे— पूँछके नाम १-पुच्छ १ छम २ लांगूल ३ ॥ -वालहरतश्च वालिधः।

वालसहित पुँछके नाम २—वालहस्त १ बालधि २.॥

त्रिषूपावृत्तलुठितौ , परावृत्ते सुहुर्भुवि

पृथ्वीमें लोटनेके नाम २-उपावृत्त १ छठित २॥५०॥

यानेचिकिणि युद्धार्थे शतांगः स्यन्दनो रयः।

युद्धके रथके नाम ३-शतांग १ स्यन्दन २ स्थ ३॥

असौ पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत्॥ ५१॥

सामान्य रयका नाम १—पुष्यरय १ ॥ ५१ ॥ कर्गारियः प्रवह्यां डयनं च समं त्रयम्। क्रियोकी गाड़ीके नाम ३—कर्गीरय १ प्रवहण २ डवन ३ ॥

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्या— इक्ट्रेके नाम २—अनस् १ शकट २ ॥ द्रन्त्री कम्बलियाह्मकम् ॥ ५२ ॥ गाड़ीके नाम २ गन्त्री १ (गान्त्री ) कम्बलि-वाह्मक २ ॥ ५२ ॥

शिबिका याप्ययानं स्यान

पालतीके नाम २—शिविका १ वाप्यवान २॥
-होळा प्रेखादिका खियाम ।
दोली वा हिंडोलेके नाम २—होला १ प्रेंखा ६
उभौ तु द्वेपवैयान्नी द्वीपिचमित्ते रके
५३॥

जिसमें बचेरके चमड़ेका परदा हो उसके नामा र—हैंप १ वैयाघ २ ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंबीतः स्यन्द्नः पाण्डुक-म्बली।

पील रंगवाले परदेके रथका नाम १—पानकः कम्बली १ ॥

रथे काम्बलवास्त्राचाः कम्बलादिभिरा-वृते॥ ५४ ॥

कम्बल श्रादि परदेवाले रथके नाम २—काम्बल १ नास्र २ श्रादि ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वेपादयो--

द्वेर श्रादि शब्द तीनों र्लिगोंमें होते हैं।

-रथ्या रथकटचा रथक्रजे । रथके समृहके नाम २-रथ्या १ रथकट्या १ ७

धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं-

घूरीके नाम २- धुर् १ यानमुख २ ॥

-स्याद्रथाङ्गमपस्करम् ॥५५॥

तांगेके नाम २--रथाग १ अपस्कर २ ॥ ५५ %

चक्रं रथाङ्गं-

पहियेके नाम २-नक १ त्याझ २ ॥
-तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्वात्मधिः पुमान्
रचकी नेमिके नाम २-नेभि १ प्रधि २ ॥

पिण्डिका नाभि-

पुढीके नाम २-पिण्डिका १ नामि २॥
--रक्षात्रकीलके तुद्धयोरणिः॥ ५६॥
कुलावेका नाम १-अणि १॥ ५६॥
रथगुप्तियेकथो ना--

. लोहे जहे रथके श्रावरगुके नाम २--रथगुप्ति १ चह्य २ ॥

#### , कू**ब**रस्तु युगंधरः।

काठके जुए बांघनेके स्थानके नाम २-कूबर १ युगंघर २ ॥

अतुकर्षो दार्वधःस्थं-धुगनका नाम १-अनुकर्ष १ ॥ प्रासङ्गो ना युगाद्यगः॥ ५७॥ खुएके नाम १-प्रासंग १ युग २ ॥ ५७॥ सर्वे स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोर-णम् ॥

सवारीके नाम ५-वाहन ९ यान २ युग्य ३ पत्र ४ घोरगु ५ ॥

परम्परावादनं यत्तद्वैनीतकमञ्ज्ञियाम् ॥ ५८॥

कहार आदि वाहनोका नाम १—वैनीतक १ अ५८॥

ष्पाधोरमा इस्तिपका इस्त्यारोहा निषादिनः।

हाथीवानके नाम ४-आधोरण १ हस्तिपक २ इस्त्यारोह ३ निवादिन ४ ॥

नियंता प्राजिता यन्ता सृतः स्ता च सारिथः ॥ ५९ ॥ ः सब्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुन्विनः ।

रथादिके हांकनेवालेके नाम८-नियन्तु शाजितृ २ यन्तु ३ सूत ४ चृत्त ५ सारथि ६ ॥ ५९॥ सन्येष्ठ ७ दंजियास्थ ८॥

· रथिनः स्यन्दनारोहा—

रथके ऊपर चढ़के लड़नेवालोंके नाम २-रियन् १ स्यन्दनारोह २॥ पश्यारोद्दास्तु सादिनः॥६०॥ घुड्सवारोके नाम २—अश्वारोह १ सादिन् २

भटा योधाश्च योद्धार:-

लड़नेवालेके नाम ३-भट १ योघ २ योद्धु ३॥ ृ सेनारचास्तु सेनिकाः।

पहरा देनेवालेके नाम २--सेनारच १ सेनिक २

सेनायां समघेता ये सैन्यास्ते सैनिका-श्रा ते ॥ ६१ ॥

सम्पूर्ण सेनाके नाम २— सेन्य १ सेनिक २ । ६९॥

बिलेनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सह-स्रिणः ॥

हजार सिपाहियोंके मालिकके नाम २-साह्स १ सहस्रिन् २ ॥

परिधिस्थः परिचरः-

जो फीज रखानेके अर्थ चारों तरफ घूमता हैं उसके नाम २-- परिधिस्थ १ परिचर २ ॥

सेनानीवहिनीपतिः॥ ६२ ॥

संनाके मालिकके नाम र-सेनानी १ वाहिनी-पति २ ॥ ६२ ॥

## कञ्चुको वारबाग्गोऽस्त्री—

योद्धाश्चोंको युद्धके समय पहरनेके वस्त्रके नाम २-कञ्चक १ वारवाण २ ॥

—यतु मध्ये सकञ्चकाः। वध्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गो—

इसे पहनकर जो योद्धा पट्टी बांधते हैं उसके नाम २-सारसन १ ऋधिकांग २॥

—थ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्षण्यं च शिरंह्य—

टोपके नाम ३---शिर्षेक १ ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य २ शिरस्त ३ ॥

-ऽय ततुत्रं वर्म दंशनम्। उर्रेछदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम्॥६४। कवचके नाम ७-तनुज १ वर्मन् २ देशन ३ उरस्कुद् ४ ककटक ५ जगर ६ कवच ७ ॥ ६४ ॥

धामुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्ध-वत्।

पहिरे हुए कवचके नाम ४-आमुक्त १ प्रतिमुक्त २ पिनद्व ३ श्रपिनद्व ४ ॥

सनद्धो वर्मितः सन्जो दंशितो व्यूढ-कङ्कुटः ॥ ६५ ॥

मंत्रादि कवच धारणा किए हुएके नाम ५— संनद्ध १ वर्मित २ सज्ज ३ दंशित ४ व्यूटककट ५ ॥ ६५॥

## त्रिष्वामुक्तादयो-

श्रामुक्त श्रादि शब्द तीनो किंगोमें होते हैं। -वर्मभृतां काविककं गणे।

क्वच धारण करनेवालों के समृहका नाम १--कावचिक १॥

पदातिपन्निपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६॥ पद्ग<sup>श्च</sup> पदिकश्चा-

पैदलके नाम ७-पदाति १ पत्ति २ पदग ३ पादातिक ४ पदाजि ५॥ ६६॥ पद्ग ६ पदिक ७

-ऽथ पादातं पत्तिसंहतिः॥

पैदलसमूहके नाम २-पादात १ पत्तिसंहति २॥ शस्त्राजीचे काण्डपृष्ठायुधीया युधिकाः समाः॥६७॥

जो इथियार बांधकर जीविका करते हैं उनके नाम ४-शस्त्राजीव १ काण्डपृष्ठ २ श्रायुधीय ३ श्रायुधिक ४॥ ६७॥

कृतहस्तः सुप्रयोगाविशिखः कृतपुंखवत्। तीरन्दाजके नाम ३-कतहस्त १ सुप्रयोगविशिख २ कृतपुंख ३ ॥

अपराद्धपृषस्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसा-यकः ॥ ६८ ॥

जिसका तीर निशानसे चूक जाय उसका नाम '१-व्यपराद्धपृषत्क १॥६८॥ धन्वी धतुष्मान्धातुष्को निषङ्ग्यस्त्री धतुर्धरः।

धनुष वा वाणा बांधनेवालेके नाम ६-धिन्वन् ९ धनुष्मत् २ धानुष्क ३ निष्मिन् ४ श्रस्तिन् ५ धनुर्धर ६॥

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः-

केवल वाग्रा बांधनेवालेके नाम २-काण्डवत् १ काण्डीत २ ॥

-शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥ शक्ति श्रादि शस्त्रधारीके नाम २-शाक्तीक ९ शक्तिहेतिक २ ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहे-तिकौ।

त्तित्या रखनेवालेका नाम १-याष्टीक १ ॥ फरसा बांघनेवालेका नाम १-पारविधक १ ॥

नैखिशिकोऽसिहेतिः स्या-

तरवार बांधे हुएके नाम २-नैलिशिक १ असि-हेति २ ॥

—त्समो प्रासिककौन्तिकौ ७०॥ बल्लमके बांघनेवालेका नाम १—प्रासिक १॥ भालेबालेका नाम १ कौन्तिक १॥ ७०॥ चर्मी फलकपाणिः स्या—

ढाल बांधनेवालेके नाम २-चार्मेन् १ · फलक-पाश्चि २ ॥

--रपताकी वेजयन्तिकः।

निशान बांधनेवालेका नाम २-पताकिन् १ वैज-यंतिकं २॥

भ्रतुष्ठवः सहायश्चातुचरोऽभिचरः समाः॥ ७१॥

सहायके नाम ४-अनुष्तव १ सहाय २ अनुचर ३ अभिचर ४॥ ७१॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्टाग्रतःसरपुरःसराः । पुरोगमः पुरोगामी— श्रव्रगामीके नाम ७-पुरोग १ श्रप्रेसर २ प्रष्ठ ३ अश्रतस्तर ४ पुरसर ५ पुरोगम ६ पुरोगामिन् ७॥

-मन्दगामी तु मन्यरः ॥ ७२ ॥

वीरे चलनेपालेके नाम २---मन्दगामिन् १ मन्धर २॥ ७२॥

जंघालोऽतिजवस्तुस्यो-

जादे चलनेवालेके नाम २---जंघाल १ श्र्वति-जव २ ॥

## —जंघाकरिकजांधिकौ।

जी जंघाके बर से जीता है उसके नाम २-ज्ञाकरिक १ जांधिक २ ॥

तपम्बी त्यरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः॥ ७३

वैश्वासे नलनेपालेके नाम ६—तरिन्तन् १ त्व-, रित २ वेगिन् ३ प्रजविन् ४ जवन ५ जव ६।७३।

जय्यो यः शक्यतं जेतं— जिसे जीत सके उसका नाम १-जय्य १ ॥ जेयो जेतन्यमाचके।

जीतने लायकका नाम १---जेय १॥ जीवस्तु जोना--

जो जीत सके उसके नाम २--जैत्र १ जेतृ १।

न्यो गच्छत्यलं विद्धिषतः प्रति ॥ ७४ ॥ सोऽभ्यक्रियोऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीगा इ-त्यपि ।

सामर्थ्यसे शतुत्रोंके समुख जानेवालेके नाम ३— ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य १ अभ्यमित्रीय २ अभ्य= मित्रीस ३ ॥

कर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य क्रजातिश-यान्वितः ॥ ७५ ॥

पहलवानके नाम ३— अर्जस्वल १ कर्जस्वन् ३ कर्जातिशय ३ ॥ ७५ ॥

· स्यादुरस्वातुरसिळो-

बड़ी छातीवालेके नाम २-उरस्वत् ९ उर-सिल २ ॥

#### -रथिनो रथिको रथी।

#### कामङ्गाम्यतुकामीनो-

जो श्रपने मनसे चलता हो उसका नाम १-श्रनुकामीन १॥

-ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

वारंवार चलनेवाछेका नाम १—- अत्य-न्तीन १॥ ७६॥

शूरो वीरश्च विकान्ती-

शूरके नाम ३-शूर १ वीर २ विकांत ३ **॥** 

—जेता जिंग्णुश्च जित्वरः।

जीतनेवालेके नाम ३---जेष्ट १ जिंग्णु २. जित्वर ३॥

सांयुगीनो रणे साधुः-

युद्धकुशल्का नाम १--सांयुगीन १ ॥

-शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

शस्त्राजीव श्रादि शब्द तीनो लिंगोमें होते हैं ७७

ध्विजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चम्ः। वद्धियेनी वह्नं सैन्यं चक्नं चानीक-मिखियाम्॥ ७८॥

सेनाके नाम ११—व्यजिनी १ वाहिनी १ सेना ३ प्रतना ४ अनीकिनी ५ चमू ६ वर्क्सवेनी ७ बल ८ सेन्य ९ चक्र १० अनीक ११॥ ७८॥

# व्यूहरत बलविन्यासी—

सेनाकी रचनाके नाम २---व्यूह १ बल-विन्यास २ ॥

## -भेदा दण्डादयो युधि।

सेनाकी रचनाके अनेक मेद दण्ड इत्यादि १ है। (ये चक्र, मयूर, कमल आदिक व्यूह हैं॥)

प्रत्यासारो ज्यृहपार्विणः-

# #ग्रहौहिंगी आदि सेनाका प्रमाण।

सेना	पदल (पनि,	मेना- मुख	गुल्म	गण	वाहि- नी	पृतना	चमू	ग्रनी- किनी	अद्यौ- हिणी
हाथी, श्य	8	3	९	२७	८१	<b>२</b> ४३	७२९	२१८०	२१ ८७०
घोड़े	3	९	२७	८१	२४३	७३९			
पेदल	५	१५	४५	१३५	४०५	1244	३६४५	१०९३५	१०९३५-

व्यूहके पीछेके नाम २-प्रत्यासार १ व्यूह-पार्षिण २॥

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

फौजके पीछेके नाम २—सैन्यप्रष्ट ९ प्रति-श्रह २ ॥ ७९ ॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पश्च पदा-तिका।

जिसमें हाथी १ रथ १ घोड़े ३ पैदल ५ हो उस सेनाका नाम-पत्ति १॥

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुर्गोः सर्वेः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेनामुखं गुल्मगगी

वाहिनी पृतना चमुः । प्रानीकिनी --

कमसे तिगुने पित्त (पैदलों) के नाम ७— ॥ ८० ॥ तीन पीत्त (पैदलों) का नाम—सेनामुख १ ॥ तीन सेनामुखका नाम—गुल्म १ ॥ तीन गुल्म का नाम—गण्य १ ॥ तीन गणुका नाम—वाहिनी १॥ तीन वाहिनीका नाम प्रतना १ ॥ तीन प्रतनाका नाम—चमू १ ॥ तीन चमुका नाम—श्रनीकिनी १ ॥

\*-दशानीकिन्यचौहि-

श दश्रनीकिनीका नाम १--श्रद्धौहिणी १ ॥

-ण्यथ संपदि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च—

सम्पत्तिके नाम ४—संपद् १॥८१॥ संपत्ति २ श्री ३ लक्ष्मी ४॥

विपन्धां विपद्मापद्मै ॥

विपरित्तके नाम ३—विपत्ति १ विपद् २ आपद् ३॥ यायुधं तु प्रहर्गं। शखमख—

हथियारके नाम ४---श्रायुव १ प्रहरण २. शस्त्र ३ श्रस्त्र ४ ॥

—मथास्त्रियौ॥ ८२ ॥ धनुश्रापौ धन्व-शरासनकोङ्ग्डकां सुकम् । इष्वासोऽ-

धनुषके नाम ७ ॥ ८२ ॥ धनुष् १ चाप २ धन्वन् ३ शरासन ४ कोदण्ड ५ कार्मुक ६ इष्वास ७ ॥

प्यथ कर्णम्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥८३। राजा कर्णके धतुषका नाम १-कानपृत्र १ ८३॥ कपिथ्वजस्य गाण्डीवगाण्डियौपुनपुर सकौ।

श्रर्जुनके धनुषके नाम २-गाण्डीव १ गाण्डिव२ कोटिरस्याटनी--

धनुषके दोनों कीनोंके नाम २—कोटि ४ श्रदनी २॥

गोधातलेज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥

चमड़ेके दस्तानोंके नाम २ — गोघा १ तल २॥८४॥

लस्तकातु धतुर्मध्यं--

धनुषके मध्यमागका नाम १-लस्तक १॥

मौर्वी ज्या शिक्षिनी गुगाः।

धनुषकी प्रत्यश्वाके नाम ४—मीर्वी १ ज्या २ शिक्षिनी ३ गुगा ४ ॥

स्यात्प्रत्यात्तीढमात्तीढमित्यादि स्थान<del>-</del> पश्चकम् ॥ ८५ ॥ धनुषधारियोंके श्रासनिवशेषके नाम २— प्रत्यातीढ १ श्रातीढ २ इत्यादि पांच स्थान ।८५।

तर्च तक्यं शरव्यं च-

निशानेके नाम ३—तत्तु १त्तक्य २ शरव्य ३॥

-शराभ्यास उपासनम्।

बागा छोड़नेके अभ्यासके नाम २---शरा-भ्यास १ उपासन २॥

पृष्यकबाणचिशिखा धाजिह्यगखगा-शुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इष्ठद्वीः ।

बाग्राके नाम १२---पृषत्क १ बाग्रा २ विशिख ३ अजिझग ४ खग ५ आशुग ६ ॥ ८६ ॥ कल-म्ब ७ मार्गग्रा ८ शर ९ पत्रिन् १०,राप ११ इषु १२॥

पक्ष्वेडनास्तु नाराचाः—

लोहेके तीरके नाम २---प्रक्वडन १ नाराच २॥

–पक्षीबाज–

बागाके पद्धके नाम २-पक्ष १ वाज २ ॥

स्त्रिषूत्तरे॥ ८७॥

लिप्तकपर्यन्त सब शब्द तीनों लिंगोंमें . होते हैं ॥ ८७॥

निरस्तः प्रहिते बाणे-

छोड़े हुए वाग्रका नाम १ — निरस्त १ ॥

विषाके दिग्धिक्रिमकी।

विषयुक्त बाग्रके नाम ३—विषाक्त १ दिग्ध २ लिप्तक ३॥

त्णोपासंगत्यारिनिषंगा इषुधिद्वर्धाः ॥ ८८॥ तृण्यां—

तरकसके नाम ६-तूरा १ उपासङ्ग २ तूणीर ३ निषज्ञ ४ इष्ठिषि ५॥ ८८॥ तूणी ६॥

— खब्गे तु निस्त्रिश वन्द्रहासासिरि-ष्टयः। क्रीक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कुपाग्रवत्॥ ८९॥

तलवीरके नाम ९--खन्न १ निश्चिश २ हास ३ श्रसि ४ रिष्टि ५ कीक्षेयक ६ मण्टलाय ७ करवाल ८ कृपाग्यवत् ९ ॥ ८९ ॥ **∤ त्सरः** खङ्गादिमुष्टौ स्या— नलवार श्रादिकी मूठका नाम १-त्सर १॥ न्मेखला तन्निबन्धनम्। तलवारके म्यानका नाम १-मेखला १॥ फळकोऽस्त्री फळं चर्म--ढालके नाम ३-फलक १ फल २ चर्मन् ३॥ -संग्राह्यो मुष्टिरस्य यः ॥ ९०॥ टालकी मूठका नाम १---मंत्राह १॥ ९०॥ द्रुघगो मुद्गरवनो-मुद्ररके नाम ३-द्वघण १ मुद्रर २ घन ३॥ स्यादीली करवालिका। गुप्तिके नाम २-ईली १ करबालिका २॥ भिन्दिपालः स्टगम्त्रल्यी---तोपनके नाम २-भिन्दिपाल १ स्रग २॥ -परिघः परिघातिनः ॥ ९१ ॥ परिघके नाम २-परिच १ परिचातिन् २ ।९१। द्रयोः कुठारः म्वधितिः परशुश्च पर-श्वधः।

कुल्हाडीकं नाम ४-कुठार १ म्वधिति २ परशु ३ परश्चध ४॥

म्याच्छात्रो चासिपुत्री च छुरिका चासिथेतुका॥९२॥

छ्रीके नाम ४---शङ्की १ श्रसिपुत्री २ छुरिका ३ श्रसिधेतुका ४॥ ९२॥

वा पुंस्ति शाल्यं शाकुनि। बर्जीके नाम २-शल्य १ शकु २॥

न्सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम्-गॅड़ासके नाम २-सर्वला १ तोमर २॥ प्रासस्त क्रन्तः- मालेके नाम २-प्रास १ क्रुन्त २ ॥
को ग्रास्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥९३॥
खन्नादिकी नोंकके नाम ४-कोग्रा १ पालि २
श्रिश्र ३ कोटि ४ ॥ ९३॥

सर्वाभिसारः सर्वोघः सर्वसन्नहनार्थकः। सेनाकी नैयारीके नाम ३—सर्वामिसार ९ सर्वोघ २ सर्वसंनहन ३ ॥

लोहाभिसारोऽख्रभृतां राज्ञां नीराजना-विधिः॥ ९४॥

महानवमीके पहिले लड़ाईके निमित्त राजाश्रीका शल्ल पूजनेका नाम १-लोहाभिसार १ ॥ ९४ ॥ यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषणनम् ॥ शत्रुके ऊपर सेना चढ़नेका नाम १-श्रमि-

यात्रा बज्याऽभिनियांग्रि प्रस्थानं गमनं गमः॥ ९५॥

नतनेके नास ६—यात्रा १ व्रज्या २ व्रिभ-निर्याण ३ प्रस्थान ४ गमन ५ गम ६ ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसर्गा-

षेयान १॥

सेनाके फैलानेके नाम२-त्रासार १ प्रसरण २॥ प्रचक्रं चित्रताथकम्।

चली हुई सेनाके नामर-प्रचक १ चलित २॥
ग्राहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः॥ ९६॥

निडर होकर शत्तुपर चढ़ाईका नाम १---श्रिम-कम १॥ ९६॥

वैतालिका बोधकरा-

प्रातःकालके राजाके जगानेवालोंक नाम २~ वैतालिक १ बोधकर २ ॥

-श्चिक्तका घाण्टिकार्थकाः । घड्यालीके नाम २-चिक्तक ५ घाण्टिक २॥ स्युमीगधास्तु मगधा-- राजाका वंश वर्णन करनेवालेक नाम २~ मागध १ मगध २ ॥

-बन्दिनः स्तुतिपाढकाः ॥ ९७ ॥ भाटके नाम २ बन्दिन् १ स्तुतिपाठक २॥९७॥ संशासकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ॥ शपथ खाकर युद्धमें पीठ न देनेवालेका नाम १-संशासक १ ॥

रेणुर्द्धयोः स्त्रियां धुक्तिः पांसुनी न द्वयो रजः॥ ९८॥

धूर्तिके नाम ४--रेणु ९ घृति २ पांसु ३ रजस्४॥९८॥

चुण होदः—

च्नके नाम २-चूर्ण १ स्रोद २ ॥

-समुत्पिअपिअलौ भृशमाकुले । श्रक्तानेके नाम २-समुत्पिष १ पित्रत २ ॥

पताका वैजयन्ती स्थात्केतनं ध्वजम-स्चियाम् ॥ ९९ ॥

भड़ेके नाम ४-पताका १ वैजयन्ती २ केतन ३ ध्वज ४॥ ९९॥

सा वीराशंसनं युद्धभुमियांऽतिभय्प्रदा।
भयकर युद्धभूमिकं स्थानका नाम १-वीराशंसन १॥

ब्रहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपुर्विका स्त्रियाम् ॥ १००॥

जिसमें वीर कहें कि हम पहले लडेंगे. हम पहले लड़ेगे उस लड़ाईका नाम १-श्रहंपूर्विक। १ ॥ १००॥

त्र्याहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सभावना-त्मनि ।

जिसमें कहे कि हम पुरुष हैं हम ही लड़ेगे उसका नाम १-ऋाहोपुरुषिका १॥

श्रहमहिमका तु सा स्यात्परस्पर यो भवत्यहंकारः ॥ १०१॥ श्राप्तसके इस कहनेको कि हम शक्त हैं हम लड़ सकते है उसका नाम १-श्रहमह<sup>1</sup>रंका १ ॥१०१॥

द्रवियां तरः 'सहोबलशौर्याणस्थाम शुग्न च। शक्तिः पराक्रमः प्रायो—

पराक्रमके नाम १०-इविशा १ तरस् २ सहसू ३ वत ४ शौर्य ५ स्थामन् ६ शुष्म ७ शक्ति ८ पराक्रम ९ प्राया १०॥

—विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥ श्रातिपराक्रमके नाम १-विक्रम १ श्राति-श्राक्तिता २ ॥ १०२ ॥

वीरपानं तु यत्यानं घृत्ते भाविनि वारणे सङ्नेके निक्षित पहले या पीछे नसा साने पीनेका नाम १-वीरपान १ ॥

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम्
॥ १०३ ॥ स्थमास्कन्दनं संख्यं समीकं
साम्परायिकम् । द्वश्चियां समरानीकरणाः
कलद्दविप्रहो ॥ १०४॥ सप्रहाराभिम्पावक्षितं फोटसंयुगाः । प्रभ्याप्तदंसमाधातसंग्रामाभ्यागमा द्वाः॥ १०५॥ समुदायः श्चियः सयरसमित्यांजसमिष्ठधः ।

युद्धके नाम ११-युद्ध १ आयोधन १ खन्य १ प्रधन ४ प्रविद्वारण ५ ॥ १०३ ॥ ध्रम ६ आस्कन्दन ७ संख्य ८ समीक ६ सांपरायिक १० समर ११ अनीक १२ रण १३ कलह १४ विग्रह १५ ॥ १०४॥ संप्रहार १६ अभिसम्पात १७ कलि १८ संस्फोट १९ संयुग २० अभ्यानदे २१ समाचात २२ संप्राम २३ अभ्यानम २४ आहव २५ ॥ १०५॥ समुद्दाय १६ संयत् २७ समित २० आजि २९ समित ३० सुध ३१ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धे स्यात—

भुनाके युद्धके नाम १-नियुद्ध १ बाहुयुद्ध २ ॥

- तुमुछं रगासंकुछे ॥ १०६ ॥

वोर संप्रासका नाम १-इमुल १ ॥ १०६ ॥

श्वेडा तु निष्ठनादः स्याह—

नैरोके गजेनेके नाम १-श्वेडा १ सिंहनाद १॥

-करियां घटना घटा।
हाथियोके समृहके नाम २-घटना १ घटा २।
कन्दनं योधसरावो—
युद्धके शब्दका नाम १ कन्दन १ ॥
-वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥
हाथीके शब्दका नाम १ वृंहित १ ॥ १०७ ॥
विस्फारो धनुषः स्वानः—
धनुषके शब्दका नाम १-विस्फार १ ॥
-पटहाडम्बरीसमी।
नगांडके शब्दके नाम १-पटह १ श्राडंबर २॥
मसमं तु बलात्कारो हठो—
इठके नाम १-प्रसम १ बलात्कार २ हठ ३ ॥
ऽथ स्खिलतं छलम् ॥ १०८॥
धोखा देनेके नाम २-स्बिलत १ छन २

च्यजन्यं क्लीवसुत्पात उपसर्गः समं त्रयम्।

उत्पातके नाम ३-श्वजन्य १ उत्पात २ उपः सर्ग ३ ॥

मुर्छा तु कश्मळं मोहो--मुच्छी ते नाम २-मुच्छी १ कश्मल २ मोह २॥
-ऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९॥
देशादिको उपद्रव देनेके नाम २--श्रवमर्द १
पीडन २॥ १०९॥

धम्यवस्कन्दं स्वम्यासाद्नं । घोषेसे दन लेनेके नाम २-अभ्यवस्कन्दन १ अभ्यासादन २॥

ें वैर दर करनेके नाम ३-वैरछद्धि १ प्रतीकार २ वैरनिर्यातन ३ ॥ ११० ॥ प्रदावोद्रावसन्द्रावसन्दावा विद्रवी द्रवः। स्वपक्रमोऽपयानं च—

पलायन (भागने) के नाम ८-प्रदान १ उद्राव २ सद्राव ३ संदाव ४ विद्रव ५ द्रव ६ अपक्रम ७ अपयान ८ ॥

-रणेभद्भः पराजयः ॥ १११॥ इरिके नाम २-रणेभन्न १ पराजय २ ॥१९१॥ पराजितपराभृती— इरि हुएके नाम २-पराजित १ पराभृत २॥ -- त्रिष्ठ नष्टितरोहिती।

विषे हुएके नाम २-नष्ट १ तिरोहित २ ॥

प्रमापणं निवहंगां निकारणं विशारणम् ॥ १९२ ॥ प्रवासनं परासनं निष्दनं निहि-सनम्। निवसिनं संज्ञपनं निष्दनं निहि-सनम्। निवसिनं संज्ञपनं निहननं चर्णानं परिवर्जनम्। निवपिणं विशसत मारणं प्रविचातनम् ॥ ११४॥ उद्धासनप्रमथनकः थनोज्ञासनानि च। आलम्भिपञ्जविशरयान्तोन्माथववा ग्रापि॥ ११५॥

मारनेके नाम २०-प्रमापर्या १ निबर्ह्या २ निकारण ३ विशारण ४ ॥ ११२ ॥ प्रवासन ५ परासन ६ निजूदन ७ विहिंसन ८ निर्वासन ९ सक्षपन १० निर्वासन ११ धरासन १२ ॥ ११३ ॥ निस्तर्ह्या १३ निहनन १४ क्षणात १५ परिवर्जन १६ निर्वापर्या १७ विशासन १८ मारण १९ प्रति-धातन २० ॥ ११४ ॥ उद्वासन २१ प्रमथन २२ स्थन २३ उज्जासन २४ आलम्म २५ पिज २६ विशार २७ ॥ घात २८ उन्माथ २९ वय ३० ॥ ११५ ॥

स्यात्पश्चता कालधर्मी दिष्टान्तःप्रलयो-ऽत्ययः । प्रन्तो नाशो द्वयोग्रत्युर्मरण निधनोऽश्चियाम् ॥ ११६॥

मृत्युके नाम १०— पद्धता १ कालधर्म २ दिष्टा-न्त ३ प्रलय ४ अत्यय ५ अन्त ६ नाश ७ मृत्यु ८ मरख ९ निधन १० ॥ ११६॥ परासुप्राप्तपश्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः । मृतप्रमीतौ विष्वेते—

मृत्युकी प्राप्त हुएके नाम ७—परासु १ आप्त-प्रधत्व २ परेत ३ मेत ४ संस्थित ५ मृत ६ प्रमित ७ ॥

— चिता चित्या चितिः ञ्चियाम् ॥११७॥ चिताके नाम ३ – चिता १ चित्या २ चिति ३॥११७॥

क्वन्धोऽह्यी क्रियायुक्तमपमुर्धकलेष-रम्।

शिररहित चेष्टा करनेवाले शरीरका नाम १-कन-घ १ ॥

श्मशानं स्यात्पितृवनं— श्मशानके नाम २-श्मशान १ पितृवन २ ॥ -कुणपः शवमिश्चयाम् ॥ ११८ ॥ भुदेंके नाम २-कुणप १ शव २ ॥ ११८ ॥ प्रश्नदेंके नाम २-कुणप १ शव २ ॥ ११८ ॥ प्रश्नदेंके नाम ३-प्रग्नह १ उपग्रह २ बन्दी ३ ॥

-कारा स्याद्धन्धनालये।

जेहलखानेका नाम १-कारा १ ॥

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं-प्राणके नाम २-अन्तु १ प्राण २॥

🛮 "जीवोऽसुधारग्रम् ॥ ११९ ॥.

जीवके नाम २ जीव १ श्रमुघारण २ ॥१५%। भ्रायुजीवितकालो—

<sup>।</sup> "आंयुंका नाम १-आयुष् १ ॥

—ना जीवातुर्जीवनौषधम्।

मृतसंजीवनी बूटीके नाम २-जीनातु % जीवनीषध २॥

इति च्रियवर्गः ॥ ८ ॥ ं , ,

अथ वैश्यवर्गः ९.

करन्या करूजा ग्रया बैश्या भूमिस्पृशो विशः।

वैद्यके नाम ६-सरव्य १ सरज २ ऋर्य ३ वैद्य ४ भूमिस्पृक् ५ विश ६ ॥

ग्राजी दो जीविका वार्ती वृत्तिर्वर्तन-जीवने ॥१॥

जीविकाके नाम ६ - आजीव १ जीविका २ वार्त्ता ३ वृत्ति ४ वर्त्तन ५ जीवन ६ ॥ १ ॥

ह्मियां कृषिः पाशुपाल्यं वाशिग्यं चेति वृत्तयः।

जीविकाके मेद ३-खेती करनेका नाम-कृषि १ षशुपालनका नाम-पाशुपाल्य २ ॥ व्यापारका नाम-वाणिज्य ३ ॥ ये तीनों वैश्य वृत्ति हैं ॥

सेवा श्ववत्त-

परसेवाके नाम २-सेवा १ श्ववृत्ति २॥

-रनृतं कृषि-

खेतीके नाम २-अनृत १ इषि २॥

–रुज्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उद्गेह्यद्वितके नाम ३-उज्र्ह्म १ शिल २ ऋत ३॥२॥

द्धे याचितायाचितयोर्यशसंख्यं मृता-मृते।

मांगनेसे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १-मृत १॥ विना मांगे प्राप्त हुई वस्तुका नाम १-श्रमृत १॥

सत्यानृतं वणिग्भावः स्या-

व्यापारके नाम २-सत्यानृत १ विषमभाव २ ॥ हणं पर्युद्श्वनम् ॥ ३ ॥ उद्धारी-

कर्जके नाम ३-ऋग १ पर्युद्धन २ ॥ ३ ॥ उद्घार ३ ॥

- Sर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका। ब्याजिके नाम ३-अर्थप्रयोग ९ कुसीद २ वृद्धिजीविका ३॥ यार्चञ्जयाप्तं याचितकं—

मांगनेकी वस्तुका नाम १-याचितक १॥

—निमयादापिमत्यकम् ॥ ४॥

वायदेपर ली हुई बस्तुका नाम १—श्वाप-मित्यक १ ॥ ४ ॥

उत्तमगाधिमणीं द्वी प्रयोक्त्रग्राहकी कमात्।

ऋग देनेवालेका नाम १—उत्तमर्ण १ ॥ ऋगा के लेनेवालेका नाम १—अधमर्ण १॥

क्रसीदिको वार्धुषिको वृद्धचाजीवश्च वार्धुषिः॥ ५॥

ब्याजसे जीनेवालेके नाम ४—कुसीदिक १ वार्श्वविक २ बृद्धयाजीव ३ वार्श्वपि ४ ॥ ५ ॥

त्तेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषिवलः

किसानके नाम ४—सेत्राजीव १ कर्षक २ इटिक ३ इपीवल ४॥

क्षत्रं वहेयशालेयं वीहिशाल्युद्धवोषि-तम् ॥ ६ ॥

त्रीहि होनेके योग्य खेतका नाम १-प्रेहेय १ ॥ धानके खेतका नाम १-शालेय १ ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनंहि यतः

जीके खेतका नाम १-यन्य १ ॥ छोटे जैके खेतका नाम १-यवक्य १ ॥ साठीके खेतका नाम १-षष्टिक्य १ ॥

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभगाद्द्विहः-यता॥ ७॥

तिलके खेतके नाम २—तिल्य १ तैलीन
२ ॥ उरद् होनेवालेके नाम २ —माध्य
१ माधीया २ ॥ श्रलसी होनेवालेके नाम
२ —उभ्य १ श्रीमीन २ ॥ श्रणुके होनेवालेके नाम २ —श्रयाच्य १ श्राणुकीन २ ॥ भंग
(भाग)होनेवालेके नाम २ —भंग्य १ भंगीन २ ।७।

मौद्रीनकौद्रवीगादिशेषधान्योद्भवच-मम् । मूंग होनेवालका नाम १--मीर्झान १ ॥ ३ कोदी होनेवाले खेतका नाम १--कीद्रवीण १ ॥ चणे होनेवाले खेतका नाम १--चाणकीन १ ॥ गेहूं होनेवालेका नाम १--गोधूमीन १ इत्यादि ॥

#### बीजाकृत तूमकृष्ट-

बीज बोनेका नाम १--बीजाकृत १।।

—सीत्यं कुष्टं च इल्यवत्॥ ८॥

जोते हुए खेतके नाम ३--सीत्य १ कृष्ट २ इत्य ३ ॥ ८ ॥

#### निगुगाकृतं तृतीय।कृत निहल्यं निसी-रयमपि तस्मिन् ।

तीन बार जुते हुए खेतके नाम ४--त्रिगुगाइत १ तृतीशाइत २ भिहल्य ३ त्रिसीत्य ४ ॥

## दिग्रणाकृते तु सर्व पूर्व शम्बाकृतम-पीइ॥९॥

दो बार जुते हुएके नाम ४-द्विगुगाकृत १ द्वितीयाकृत २ द्विहत्य ३-- द्विसीत्य ४ ॥ ९ ॥

## द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढिक-काद्यः।

जिसमें द्रोगा (१०२४) तोला धान श्रादि बोया जाय उस खेत दा नाम १-द्रौगािक १॥ श्रादक (२५६) तोलाम खालेका नाम १--श्राद-किक १॥ श्रादि॥

#### खारीवापस्त खारीक-

जिसमें खारी (४ द्रोग्रा अथ ४०९६) तोलाभर अन्न बोया जाय उसका नाम '१----खारीक १ ॥

— उत्तमगादियसिष्ठु ॥ १० ॥ उत्तमगादि शब्द तीनो तिंगोमें हो हैं ॥१०॥ पुनपुंसकयोर्वमः केदारः सेत्र— खेतके नाम ३--वप्र १ केदार २ क्षेत्र ३ ॥

मस्य तु । केदारकं स्यात्कैदार्यं होत्रं कैदारिकं गणे ॥ १

खेतके समूहके नाम ४-केदारक १ केदार्थ २। क्षेत्र ३ केदारिक ४॥ ११॥ लोष्टानि लेखाः पुंत्यः— देलेके नाम २-लोष्ट १ लेष्ट्र २॥

—कोटिशो लोएभेदनः।

मृगरीके नाम २-कोटिश ५ लोष्टभेदन २ ॥

—प्राजनं तोद्न तोत्रं —

पैने (लाठी, चाबुक आदि) के नाम ३---प्राजन १ तोदन २ तोत्र ३॥

—खनित्रप्रवदाः णे ॥ १२ ॥

कुदालके नाम ः —खनित्र १ श्रवदारण २॥१२ ॥ दात्रं लिवन—

खुरपा फावड़ा श्रादिके नाम २-दात्र १ तिवत्र २

—माबन्धो योत्रं योक्क—

नाथके नाम ३ — ऋावन्ध १ योत्र २ योक्र ३॥

—मथो फलम्। निरीशं कुटक फालः कृषकी—

फाल अर्थात् हलके नीचे लगे हुए लोहेके नाम ५-फल १ निरीश २ कुटक ३ फाल ४ कुषक ५ ॥ लांगळं हलम् ॥१३॥ गोदारण च सीरो हलके नाम ४-लाङ्गल १ हल २ ॥ १३ ॥ गोदारण ३ सीर ४ ॥

## ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः।

सैले (सिमल) के नाम २---शक्या १ युग-कीलक २॥

ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्—

हत्तस (हात ) के नाम २--ईषा १ लाइन्त-दण्ड २॥

—सीता लाङ्गलपद्धतिः॥ १४

हलकी रेखा (खूड) के नाम २—सीता कु

पुंसिमेधिः खलेदा ह न्यम्तयत्पशुक्रमधने जो घान्यमर्दन करनेके स्थान श्रर्थात् पैरमें गाड़-हुए पशु बांधनेके ख्टे (मेढ़) के नाम २-मेधि १, खलेदा हर॥ म्राशुर्वीहिः षाटलः स्या—

साठी (धान) के नाम ३-- श्र श्र १ ब्रीहि २ पाटल ३॥

च्छितश्कायवी समी॥ १५॥ जीके नाम २-शितश्क १ यव २ ॥ १५॥

तोक्मस्तु तत्र इरिते---

हरे जौका नाम ५-तोक्म १॥

—कलायस्तु सतीनकः। हरेणुखण्डि-फौ चास्मिन्—,

मटरके नाम ४-कलाय १ सतीनक २ हरेणु ३ खण्डिक ४॥

—कोरद्षस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥ कोदोके नाम २—कोरद्ध १ कोद्रव २ ॥१६॥ मंगल्यको मस्रो—

मसूरके नाम २-मङ्गल्यक १ मसूर २ ॥

---सर्षपे तुद्धी तंतुभकद्म्बकी॥१७॥ र्सरसोके नाम ३-सर्षप १ तन्तुभ २ कद-म्बक ३॥ १७॥

मिद्धार्यस्त्वेष धवलो-

सफेद सग्सोका नाम १-सिद्धार्थ १॥

—गोधूमः सुमनः समी।

गेहुके नाम २-गोधूम १ सुमन २॥

स्याचावकस्तु कुल्माप-

कुलथीके नाम २-यावक १ कुल्माप २ ॥

श्वगाको हरिमन्यकः ॥ १८ ॥

श्ररहरे (चने ) के नाम २ — चगाक १ हरि-मन्यक २॥ १८॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिअश्च निष्फले। 'फर्लहीन' 'वाक्तिल' 'रानितल' के नाम २--तिलपेज १ तिलपिज २ ॥

चवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिका ऽऽसुरी।। १९॥

राईके नाम ५-वन १ अनामिजनन २ राजिका ३ क्रिंगिका ४ आसुरी ५॥ १९॥

खियौ कङ्गुप्रियम् द्वे-

कज्जनिके नाम २---कंगु १ प्रियंगु २॥

—श्रवसी स्यादुमा श्रुमा।

अलसीके नाम ३-अतसी १ उमा २ क्षुमा ३॥

मातुलानी तु भंगायाम्-

भक्तके नाम २-मातुलानी १ भंगा २ ॥

—ब्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २०॥

चीना धान्यका नाम १-- श्रणु १ ॥ २० ॥

किशारु:सस्यशूक स्थात्-

जो इत्यादिके तीखे अप्रमाग (सीकुर) के नाम र-विशाद १ सस्यक्षक २॥

-किशां सस्यमञ्जरी।

धान्यकी बालीके नाम २-कियाश १ सस्य-मक्षरी २॥

धान्य ब्रीहिः स्तम्बकरिः—

धान्यमात्रके नाम ३-धान्य ९ वीहि २ स्तम्बकरि ३॥

-स्तम्बोगुच्छस्तृगादिनः ॥ २१॥

यव श्रादिकी जड़के नाम २—— स्तम्ब १ गुच्छ २॥२१॥

नाडी नाळं च काण्डोऽस्य-

नलुश्राके नाम २-नाटी १ नाल २॥

-पलाळोऽह्यी स तिष्फलः।

पयालका नाम २-पलाल १॥

कडड़रो बुसं वलींच-

मोटे भुगंक नाम २-४०तर १ तुम २ ॥

धान्यत्वचि तुषः पुमान्॥ २२ त भूसीका नाम १-तुष १ ॥ २२ ॥ शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे-यव श्राद्दिके चिकने श्रीर तीखे श्रयमागके नाम २-शुक्त १ श्लक्ष्णतीक्षाप्र २ ॥

#### -शमी शिम्बा-

मटर त्रादिकी फलीके नाम२-शमी१ शिम्बा २। त्रिषुत्तरे।

श्रागे कहे हुए सब शब्द तीनो तिंगोमें होंगे ॥ ऋद्धमावसितं धान्यं—

तृगा दूर करके पैरेमें इकट्ठे करने योग्य धान्य के नाम २-ऋदु १ श्रावसित २ ॥

— पूतं तु बहुक्जीकृतम् ॥ २३ ॥ साफ करके इकहे किये घान्यके नाम २-पूत १ बहुसीकृत २ ॥ २३ ॥

माबादयः शमीधान्ये—

फलीके भीतर होनेवाले घान्य माष ऋादि हैं॥

—शूकधान्ये यवादयः।

यव श्रादि श्रक्षधान्य श्रर्थात् र्वं बालीसे पैदा होनेवाले हैं ॥

शालयः कलमाद्याश्च :षष्टिकाद्याश्च— यव श्रादि श्रीर साठी श्रादि शालिधान्य कहताते है ॥

—ंपुरुषमी॥ २४॥

माष श्रादि शब्द पुँत्रिङ्गमें होते हैं ॥ २४ ॥ तृगाधान्यानि नीवाराः—

पशाई स्नादि मुनियोंके धान्यका नाम १— नीवार १॥

# —स्त्री गवेधुर्गनेधुका।

जिसको कोकगादेशमें कसाड़ (कसा ) कहते हैं उन मुनिश्रक्षके नाम २-गवेशु १ गवंशुका २ ग

अयोग्र मुसनोऽस्त्री स्था-मूसनके नाम २-अयोग १ सुनन २॥ दुरूवलमुळूबलम् ॥ २५ ॥

श्रोखलीके नाम २-उद्देखल १ उद्घेखल २ ॥ २५ ॥

प्रस्कोटन शूर्पमञ्जी— 🐧

छाजके नाम २-प्रस्फोटन १ द्यूप २ ॥

-चालनी तितउः पुमान् ।

चलनीके नाम २-चालनी १ तितउ २॥ स्यूतप्रसेचौ-

सण त्रादिसे बने हुए वस्नके थैलेके नाम २— स्यूत १ प्रसेव २ ॥

--कण्डोलिपटौ-

टोकरीके नाम २-कण्डोल १ पिट २॥

—कटकिलिअकौ॥ २६॥

चटाईके नाम २-कट १ किलिजक २ ॥ २६ ॥

समानौ-

२ महानस ३॥

यह समानलिङ्ग है॥

---रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे । रसोईके त्यानके नाम ३-रसवती १ पाकस्थान

पौरोगवस्तदध्यन्नः—

रसोईके श्रिधिकारीके नाम २-पौरोगव १ तद-ध्यक्ष (महानसाच्यक्त ) २॥

-स्पकारास्तु बहुवाः ॥ २७ ॥ ग्राराः क्रिका ग्रान्धिसकाः सूदा ग्रौद्निका गुणाः ।

रसोइयोंके नाम ७-सृपकार १ बह्नव २ ॥२७॥ आरालिक ३ आन्वसिक ४ सूद ५ औदिनिक ६ गुगा ७॥

्राष्ट्रपिकः कान्द्विको भक्ष्यकार इन् विष्रु ॥ २८ ॥

्रश्रा चाहि बनानेबाळके नाम २—आपूपिक १ रान्द्दिक २ मध्यकार ३ ॥ ये शब्द तीनो नियो में होते हैं ॥ २८ ॥

# ग्रर्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुह्रिर-न्तिका।

चृत्हेके नाम ५—श्रक्मन्त १ उद्घान २ श्रधि-श्रयणी ३ चुित ४ श्रन्तिका ५ ॥

# स्रङ्गारधानिकाऽङ्गारशकटचपिद्दसन्त्य-पि॥ २९॥ इसन्य---

बरोसी (सिगड़ीके) नाम ४-इंगारघानिका १ अंगारशकटी २ इसन्ती ३ ॥२९॥ इसनी ४ ॥

ष्यथ न स्त्री स्यादंगारो-॥ श्रंगारका नाम १-श्रंगार १॥

#### -- ऽलातमुल्मुकम्।

चलते हुए काष्ठके नाम २-श्रकात १ उत्सुकर क्लीबेऽम्वरीषं भ्राध्ट्रो-

भाड़के नाम २-ग्रम्बरीष १ आष्ट्र १ ॥

- ना कन्दुवि स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३०॥ कर्जाईके नाम २-कन्दु १ स्वेदनी २ ॥३०॥

#### ग्रळिअरः स्यान्मशिकः-

माठ (बड़ा घड़ा) के नाम २—श्रतिकर १ मिश्रिक २ ॥

# –कर्कयछिर्गलन्तिका।

कठौतीके नाम ३—कर्करी १ खाछ २ गल-न्तिका <u>३</u>॥

विटरः स्थाल्युखा कुण्डं-

बटलोईके नाम ४—पिठर १ स्थाली २ उखा ३ कुण्ड ४॥

---कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥ ध्वटः क्रटनिपा-

घड़ेके नाम ४-कलश १॥ ३१॥ घट २ कुट ३ निप ४॥

--वस्त्री शरावो वर्धमानकः । सरावेके नाम २-शराव १ वर्षमानक २ ॥ ऋजीवं पिष्टपचनं-- तवेके शाम २-ऋजीव १ पिष्टपचन २ ॥
-कंसोऽस्त्री पःनभाजनम् ॥ ३२ ॥
कटोरीके नाम २-कंस १ पानभाजन २ ॥३२॥
कुत्ः कृत्तेः स्नेहपात्रंकुत्वेका नाम १ कृत् १ ॥

सैवाल्पा कुतुपः पुमान्। कुप्पीका नाम १ कुतुप १॥

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाज-नम् ॥ ३३ ॥

बरतनके नाम ५-म्यावपन १ भाण्ड २ पात्र ३ स्रमत्र ४ भाजन ५॥ ३३॥

द्विः कम्बिःखजाका चकहुँ तीके नाम ३-द्विं १ कम्ब २ खजाका ३
-स्यात्तर्दुद्दिहस्तकः ।
डोईके नाम २-तर्दु १ दारहस्तक २ ॥
सस्त्री शाकं द्वितकं शिग्रशाकके नाम ३-शाक १ हरितक २ शिग्रु ३ ॥
-रस्य तुनाडिका॥३४॥कलम्बश्च कडम्बश्चशाककी डंकिके नाम ३-नाडिका १ ॥ ३४ ॥
कलम्ब २ कडम्ब ३ ॥

# वेसवार उपस्करः।

मसालेके नाम २-वेसवार १ उपस्कर २ ॥
तिन्तिडींक च चुकं च वृत्ताम्ळचूख ( श्रमचूरश्रादि ) के नाम ३-तितिडीक
१ चुक २ बृत्ताम्ल ३ ॥

—मथ बेळ्ळजम् ॥ ३५ ॥ मरीचं कोलकं कुःणमूषणं धर्मपत्तनम् ।

मिचके नाम ६--विल्लज १॥ ३५॥ मरीच १ कोलक ३ कृष्ण ४ छष्ण ५ धर्मपत्तन ६॥

जीरको जरणोऽजाजी कणा— जीरके नाम ४-जीरक १ जरग २ श्रजाजी ३ कगा ४॥ कृष्णे तु जीरके॥ ३६ ॥ सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुश्विका।

काले जीरेके नाम ६—॥ ३६॥ सुषवी १ कारवी २ पृथ्वी ३ पृथु ४ काला ५ उपकुष्टिका६॥

आईंक शृङ्बेरं स्या-

श्रदरखके नाम २-श्राद्देक १ श्वज्जबेर २ ॥

—दथ च्छ्त्रा वितुत्रकम् ॥ ३७॥ कुस्तुम्बुरु च धान्याक—

धनियेके नाम ४ – छत्रा १ वितृतक २ ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु ३ धान्याक ४ ॥

—मय शुण्ठी महोणधन्। स्त्रीनपुंस-कयोत्रिकं नागरं विश्वभेषजम्॥३८॥

सोंठके ना १ प-छुण्ठी १ महीषघ २ विच ३ नागर ४ वि-समेषज ५ ॥ ३८ ॥

त्रारनालकसौवीरक्रस्माषाभिषु तानि च। अवनि खोमधान्याम्लक्कुअज्ञानि च काञ्जिके॥३९॥

कांजीके नाम ७-व्यारनालक १ सौवीर २ कुल्माषाभिपुत ३ अवन्तिसोम ४ घान्याम्ल ५ कुक्कल ६ कांजिक ७ ॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि चतुकं बाह्नीकं हिंगु राम-त्रम्।

हींगके नाम ५-सहस्रवेधिन् १ जतुक २ बाह्रीक १ हिंगु ४ रामठ ५ ॥

नत्पत्री कारची पृथ्वी बाष्पिका क**बरी** पृथु: ॥ ४० ॥

हींगके वृक्तके पत्तेके नाम ५-कारवी १ पृथ्वी २ बाष्टिंपका ३ कवरी ४ पृथु ५ ॥ ४० ॥

निशास्त्र काश्वनी पीता हरिद्रा वरविभिन्ने।

हत्तदीके नाम ५—निशा १ कांचनी २ पीता ३ हरिदा ४ वरवार्णिनी ५ ॥

सामुद्रं यतु लवगामश्रीवं वशिरं च नतः॥ ४१॥ समुद्रकागके नाम २-श्रक्षीव १ विश्वर २ ।४१। सन्धवीऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थश्र सिन्धुते।

संघव नमकके नाम ४-सेयव १ शीतशिव २ माशिमन्य ३ सिन्धुज ४ ॥

रौमकं वसुकं--

सामरके नाम २-रीमक १ वमुक २॥

---पाक्य बिंडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥ ग्वारीक नाम २-पाक्य १ विड २ ॥ ४२ ॥

सौवर्चछेऽश्रहचके-

सचलखारके नाम ३—सीवचन १ श्र**सः २** इचक ३॥

--तिलकं तत्र मेचके।

--शर्करा सिता॥ ४३ <sup>॥</sup>

काले संचलखारके नाम २-तिनक १ मेचक २।

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकार

राजके नाम २-सत्स्यडी १ फाशित २॥

मिश्रीके नाम २-शर्करा १ सिता २ ॥ ४३ ॥

कृचिका क्षीरविकृतिः स्या-

मावेके नाम २-कूर्चिका १ चीरविकृति २ ॥

—द्रसाता तु मार्जिता ।

श्रीखण्डके नाम २-रसाला १ मार्जिता २ ॥

स्यात्तमनं तु निष्ठानं-

कढ़ोके नाम २-तेमन १ निष्ठान २॥

—िनिक्किन वासितावधेः ॥ ४४ ॥ वामितपर्व्यन्त शब्द तीनो निर्पामें होते है।४४।

शूलाकृतं भटित्रं च शूल्य—

लोहरालाकांसे पदाये हुए मांसकं नाम ३—-शूनाकृत १ भटित्र २ शून्य ३॥

—मुख्यं तु पैठरम्।

वटलोईमे पकाये हुए श्रत्नादिके नाम २---उट्य १ पैठर २ ॥

# प्रशातिसुपसंपन्न-

पकी हुई रसोईके नाम २-प्रणीत १ उपसम्पन्न २ —प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥ घृत तैलादिसे बनी हुई रसोईके नाम २-प्रयस्त १ सुसंस्कृत २ ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छि छं तु विजिछं-

पनीले भोजनके नाम २-पिच्छिल १ विजिल२।

—संमुष्टं शोधितं समे।

बीने हुए अन्नके नाम २-सम्मृष्ट १ शोधित २। चिक्कणं मसृग्रां स्निग्ध-

चिकनेके नाम ३-चिककण १ मस्या २ स्निग्ध ३॥

तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥

छोकी हुई वस्तुके नाम २-भावित १ वासित २॥४६॥

# ग्रापक्वं पौलिरभ्यूषो-

घृत आदिमें भुनी हुई वस्तुके नाम ३---आप-क्व १ पौलि २ अभ्यूष ३॥

—लाजाः पुंभुन्नि चात्तताः।

खीलोका नाम १-लाज १॥

पृथुकः स्याच्चिपिटको-पर्मलके नाम २-पृथंक १ चिपिटक २ ॥

-धाना भृष्टयवे खियः ॥ ४७ ॥

भुने हुए जौके नाम २-धाता १ मृष्ट्यव र्वा ४७ ॥

यूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्—

पुएके नाम ३-पूप १ अपूप २ ५िष्टक ३॥ -करम्भो द्धिसक्तधः।

दिधियुक्त सतुत्रीके नाल २-करम्भ १ दिध-

सक्तु २ ॥

भिस्सा खी भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽखी स दीदिविः॥ ४८॥

भातके नाम ६-भिस्सा १ भक्त २ अन्धस् ३ श्रन ४ श्रोदन ५ दीदिवि ६॥ ४८॥

# भिस्सटा दिग्धका-

जले अन्नके नाम २-भिरसटा १ दिग्धिका २ ॥

-सर्वरसाग्रे मण्डमिखयाम्।

मांड्का नाम १-मण्ड १॥

मासराचामनिस्रावा मण्डे अक्तसमु-द्धवे ॥ ४९ ॥

केवल भातके सांडके नाम ३-मासरा १ श्राचाम २ निस्नाव ३॥ ४९ ॥

यवागूरुष्मिका श्रामा विलेपी तरला

पतले भातके नाम ५-यवाग् १ उष्णिका २ श्राणा ३ विलेपी ४ तरला ५ ॥

गव्यं चिष्र गयां सर्वे—

गायसे उत्पन्न वस्तुका नाम १-गव्य १॥

—गोविट्गोमयमस्त्रियाम्॥ ५०॥

गौके गोवरके नाम २ -- गोविश् १ गोमय २ 11 40 11

तत्तु शुष्कं करीषोऽह्यी-

सुखे हुए गोबरका नाम १-करीष १॥

-दुग्धं क्षीरं पयः समभ्।

दूधके नाम ३-दुग्ध १ क्षीर २ पणस् ३ ॥

पयस्यमाज्यदध्यादि-

वृत दही श्रादिका नाम १-पयस्य १॥

इन्सं दधि घनेतरत्॥ ५१॥

पत्र दहीका नास १-इप्स १॥ ५१ ॥

ष्ट्रतमाज्यं हथिः सर्पि-

र्घकि नाम ४-वृत १ व्याज्य २ हविष् ३ सर्पिष् ४॥

-नंबनीतं नवोद्धतम्।

ूर मक्खनके नाम २ - नवनीत १ नवोदृष्टत

# ततु हैयङ्गबींव यद्धचोगोद्रौहोद्भवं भृतम्॥ ५२॥

नौनीषीका नाम १-हेयद्गवीन १॥ ५२॥
दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः।
मद्देके नाम ४-दण्डाहत १ कालशेय २ श्रिरिष्ट
३ गोरस ४॥

# तकं हुगुद्धिनमथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जळम् ॥ ५३॥

महेके भेद ३ — तक १ उद्क्वित २ मिथत ३॥५३॥

मण्डं द्धिभव मस्तु—
दहीके पानीका नाम १-मन्तु १॥
—पीयूषोऽभिनव पयः।
सीसका नाम १-पीयूप १॥
अश्वनाया बुभुत्ता क्षुर्—
भ्रतके नाम ३—अवताया ९ पुभुत्तार क्षुयू ३।
प्रासस्तु कवळः पुन्ताल् ॥ ५४॥
प्रासके नाम २-प्राम १ क्यत २॥ ५४॥
सपीतिः स्त्री तुरुयपःनं-

साथ पनिके नात २-सपीति १ एत्यपान २॥ सन्धिः श्ली सहभोजनम् ।

एकसाथ भोजन करनेके नाम २-सम्धि १ सह-भोजन २॥

# उद्न्या तु पिपन्सा सृट् तवीं-

प्यासके नाम ४-उदन्यः ९ विशासा २ तृष् ३ तर्प ४ ॥

—जिथिस्तु भी : १८०० १ ५ १ ॥
जैमने तेंद्र भाद्यार १ न्यार, स्थात १ दिन भोजगके नाम ७-ज. १ १ ने उत्त २ ॥ ५० ॥ जैमन ६ ठेट ४ ब्राटार ५ नि । १ ९ न्याद ७ । सौद्धित्यं तर्पणं छिन्तः —

तृप्तिके नाम ३-सौहित्य १ तर्पण २ तृप्ति ३॥

--फेला भुक्तसमुज्भितम् ।। ५६ ॥ भोजन ऋके त्यागी हुई वातुका नाम १-फेला

भोजन करके त्यागी हुई वस्तुका नाम १-फेला १ ॥ ५६ ॥

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्ट यथेप्सि-तम्।

इच्छाके नाम ६-काम १ प्रकाम २ पर्याप्त ३ निकाम ४ इष्ट ५ यथेप्सित ६॥

गोपगोपालगोसंख्यगोधुगाभीरबञ्चवाः ॥ ५७ ॥

श्रहीरके नाम ६ -गोप १ गोपात २ गोसंख्य ३ गोदुहु ४ ग्रामीर ५ वद्वव ६ ॥ ५७ ॥

गोमहिष्यादिकं पाद्बन्धनं-

घरमे वांघने जायक गाय भैस आदिका नाम १-पादवन्धन १॥

—द्वौ गवीश्वरे। गोमान्गोमी—

गायकं मालिकके नास ३-ग्राश्तर १ गोसत् २ गोमिन् ३॥

गोकुळं तु गोधन स्याद्भवां व्रजे ॥ ५८॥ गायोके समूहके नाम २-गोकुल १ गोधन २ ॥ ५८॥

विष्याशितं गवीतं तहायो यत्रशिताः ुरा।

जहां गैयाँ ग्राहिनो पहिले रिपलाया अया हो उस स्थानका नाम १-ग्रासिनगदीन १॥

उत्ता भद्रो वलीवर्द गृत्यभो वृत्रभो वृत्रः ॥ ५९ ॥ अनस्वान्सोरभयो ग्री—

वैतके नाम ६--उत्तन १ त २ वलीय है ३ ऋपम ४ द्वार ५ द्वार म ११ त ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ भारतेय ८ भार ॥

teat i stations.

वैला के सन्हरः चाम १- और ०१ ॥

गन्या गोत्रा गवाम्-

गावों के समूहके नाम २-गव्या १ गोत्रा २ ॥

−वराधेन्वोवश्यिक्षधेन्ते॥ ६० 🖟 ब एट्रोके रागूटका नाम १-वारराक १ ॥ धेनुख्रो के समूहका नाम १-धेनुक १॥ ६०॥ वृषी ५ शास्त्रहोत्तः स्याद्-बड़े बैलका नाम १-महोक्ष १॥ —वृद्धोत्त∗तु जरद्ववः । बूढ़े बैलके नाम २-वृद्धोत्त ५ जरद्रव २॥ उत्पन्न उक्षा जातीचः । जवान धैलका नाम १ जातीच १॥ –सद्योजातम्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥ छोटे वहरेका नाज १-तर्ण ह १ ॥ ६१ ॥ शकृत्कारेस्तु चर : स्याद्-बळ्डेमात्रके नाम २-शक्तकरि १ वत्स २ ॥ -दम्यवत्सतरौ समी। थों जे जवान बछ है के नाम २-दम्य १ वत्सतरशा द्यांषेभ्यः षण्डतायोग्यः--विवया करने लायकका नाम १-आर्थभ्य १॥ —षण्डा गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥ सांड्रके नाम ३-वण्ड १ गोपति २ इद्रचर ३॥६२॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः— वैलके कन्वेका नाम १-वह १॥

न्सास्ना तु गलकम्बलः । गैयोकं गलेमे जो मांस लटकता है उस मांसके नाम २-साम्रा १ गलकम्बल २॥

स्यात्रस्तितम्तु नस्योतः—
नाथवाले बैलके नाम २-नस्तित १ नस्योत २॥
—मष्टवाडू युगपार्श्वगः ॥ ६३॥
जिससे गार्डोमे जोतनके श्रर्थ वैल सधाये जाय
उस काष्ठके नाम २-प्रष्टवाड् १ युगपार्श्वग २।६३।
युगादीनां तु वोडारो युग्यमासंग्यशाकटाः ।

जुएके उठानेगांकका नाग १—युग्य १ ॥ जोड उठानेवांकका नान १—प्रायत्य १ ॥ इकट्रेके उठानेवाले बैलका नाम १—शाक्ट १ ॥

# खनिति तेन तद्वोढाऽस्येदं द्वाळिकसै-रिकौ॥ ६४॥

हलमं चलनेवालेके गाम े २ — हालिक १ सैरिक २ ॥ ६ ४ ॥

# धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीगाः सधुरंधरा।

वोक्ता टोनेवाल वैलक नाम ५-वृर्वह १ धुर्व्य २ घोरेय ३ धुरीसा ४ धुरन्धर ५ ॥

उन्तर्धेकञ्जरीग्रैक गुरायेकञ्जरावहे। ६५॥ एक बोबेक डॉनेग:लंके नाम ३-एकछरीमा १ एकछर २ एकमुरायत ३ ॥ ६५ ॥

स तु सर्वधुरीकः यात्रो वे सर्वधुरावदः जो सब बोक्सा ले बले उसके नाम २-सर्व-

जो सब बें।क्सा के चल्ले उसके नाम २-सर्व-भुरीगा १ सर्वधुरावह २॥

# माहेयी सौरमेयी गौठस्ना माता च श्रुङ्गिणी॥ ६६॥ ध्रर्जुध्न्यया रोहिणी स्यात—

गायके नाम ९-माहेयी १ सौरभंथी २ गो ३ उस्रा ४ माता ५ १२गिणी ६॥ ६६॥ श्रजुंनी ७ श्रध्न्या ८ रोहिणी ९॥

# उत्तमा गोपु नेचिकी।

श्रन्छी गायका नाग १-नेनिकी १॥

# वग्रादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधव-लाद्यः॥६७॥

चितप्रवरीका नाम १-शवली १॥ सफेद का नाम १-धवला १॥ ६७॥

# दिहायनी दिवर्षा गौ-

दा वर्ष्की गायके नाग २-द्विहायनी १ द्विवर्षाश --रेकाब्दा त्वेकदायनी।

एकवर्षवालीके नाम २-एकाब्दा १ एकहायनी२। चतुरब्दा चतुहीय-- चार वर्षकीके नाम २-चतुरब्दा १ चतुर्हायणी२

#### -ण्येवं भ्यव्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

तीन वर्षकी गौके नास २— त्र्यब्दा १ त्रिहा-यणी २ ॥ ६८ ॥

#### वशा वन्ध्या---

बांकके नास २-वशा १ वन्ध्या २ ॥

#### -- उवतोका तु स्रवद्गभी

जिसका अकस्यात् गर्भ गिर गया हो उस गाय-नाभ २-- अवतोका १ सवदर्भा २ ॥

—थ सिन्धिनी । स्राकान्ता वृषभेगा— वैलक साथ लगाई हुई गायका नाम १-सिन्धनी १॥

#### -थ बहुद्रभीपचातिनी ॥ ६९ ॥

बलके सयोगसे गमको गिरा देनेवाली गायके नाम २-वेहत् १ गर्भोपघातिनी २ ॥ ६९ ॥

#### काल्योपसर्या प्रजने--

जिसको गर्भ धारण करनेका समय हो उसका नाम १-उपसर्व्या १ ॥

# -प्रष्टौद्दी बालगभिगी।

महलौनका नाम १-प्रव्होही १।।

# स्यादचण्डी तु सुकरा-

बहुत दफे च्याई हुईके नाम २-बहुसूति १ बरेष्ट्रका २ ॥ ७० ॥

# चिरप्रसुता बष्कियग्री—

बकेन (बहुत दिनोमें ब्यानेवाली ) गायके नाम २-चिरप्रस्ता १ वध्कचिणी २ ॥

-धेतुः स्थात्रवस्तिका ॥ नई ब्याई हुईके नाम २-धेतु १ नवस्तिका २।।

# सुव्रता सुखसन्दोद्या-

जो सरलतासे दुही जाय उस गायके नाम २-सुत्रता १ सुखसन्दोह्या २ ॥

#### पीनोध्नी पीवरस्तनी॥ ७१॥

बड़े आयनवालीके नाम २--पीनोध्नी १ पीवर-स्तनी २।। ७१।।

# द्रोणशीरा द्रोणदुग्धा-

द्रोण (१२ सेर) दूध देनेवालीके नाम २--द्रोणचीरा १ द्रोणादुग्धा २।।

#### थेतुष्या **ब**न्धके स्थिता ।

गिरबी रक्ली हुईका नान १--धेनुष्या १।।

# समांसमीना सा यैव प्रतिवर्ष प्रसूयते।। ७२॥

प्रतिवर्षे ब्यानेवाली गौका नाम ५--समांस-मीना १।।७२।।

# ऊधस्तु क्लीबमापीनं-

श्रायन (श्रोहडी) के नाग २--ऊधमू १ श्रापीन २ ॥

# समी शिपककी नकी।

खुटेके नाम २ - शिवक १ कीलक २ !।

# न पुंसि दाम सन्दानं-

दुहनेके समय पांव बांधने की रस्सीके नाम २--दामन् १ सन्दान २ ॥

# —पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

पश्च वांयनेकी रस्सीक नाम २--पश्चग्उजु ? दारानी २ ।। ७३ ।।

# वेशाखमन्थमन्थानमन्थानोमन्थदण्डके-

गथनेका दटा व्यर्थात रहेके नाग ५-वैशाख १ गन्थ २ मन्थान ३ मधिन् ४ मन्यदण्डक ५ ॥

# कुठरो दण्डविष्कम्भो-

जिसमें रई वांबी जाय उप काष्ठके नाम २— कुठर १ दण्टविष्कम्म २ ॥

# -मन्थनी गर्गरी समे॥ ७४॥

मथनेके पात्रके नाम २--मन्थनी १ गर्गरी २ ॥ ७४ ॥

# उद्दे क्रमेलकमयमहांगाः-

कॅटके नाम ४- उष्ट् १ कमेलक २ मय १ महांग ४॥

#### करभः शिशुः।

**ऊँटके बच्चेके नाम २-करभ १ शिशु २ ॥** 

करभाः स्युः श्रङ्कलका दारवैः पाद्-बन्धनैः॥ ७५॥

काठसे पैर बधे हुए वच्चेका नाम १----श्हुलक १॥७५॥

#### अजा छागी-

वकरीके नाम २-श्रजा १ छागी २ ॥

# शुभच्छागबस्तच्छगलका अजे।

वकरेके नाम ५--शुभ १ छाग २ वस्त ३ छाग-लक ४ श्रज ५ ॥

# बेद्रोरभ्रोरगोणीयुभेषवृष्ण्य **एड**कं

मेडेके नाम ७--संग ९ उरश्र २ उरगा ३ छणाञ्ज ४ मेप ५ व्यांच्या ६ एडक ७ ॥ ७६॥

# , उष्ट्रोरञ्चाजदृन्दे स्यादौष्ट्रकौरञ्चकाज-कम् ।

कंटोंके समूहका नाम १-श्रीष्टक १ ॥ मेड़ोंके समूहका नाम १ -श्रीरश्रक १ ॥ श्रजों ( वकरों )के समूहका नाम १--श्राजक १ ॥

### चक्रीवन्तस्तु · बालेया रासभा गृर्द्भाः खराः ॥ ७७ ॥

गरेके नास ५--चक्रीवत् १ वांक्य २ रासम ३ गर्दम ४ खर ५ ॥ ७७ ॥

वंदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाशाजो विकतः। पण्याजीवो हापिकः क्रयवि-क्रयिकश्च सः॥ ७८॥

व्यापारीके नाम ८--वैदेहक १ सार्थवाह २

नेगम ३ वाणिज ४ वणिज् ५ पण्याजीव ६ आप-िए। ७८ ॥

#### विक्रेता स्पाद्धिक्रयिकः--

वैचनेवालंके नाम २-विकेतः १ विकयिक २॥ कायिककयिकौ समी ।

मोल लेनेवालेके नाम २-कायिक १ क्रयिक २॥ वाणिज्यं तु विशिज्या स्या--

व्यापारके नाम २-वाणिज्य १ विणिज्या १॥ न्मृत्यं वस्नोऽत्यवक्रयः॥ ७९॥

मोलके नाभ ३-मूल्य १ वका २ श्रवकाय ३ ॥ ७९ ॥

#### नीवी परिपगो मळधनं-

मूलधनके नास ३--नीबी १ परिपण २ म्लधन ३।।

लाभोऽधिक फलम्।
 नफेंके नाम ३-लाभ १ ऋधिक २ फल ३॥
 परिदानं परीवर्तां नैमेयनिमथाविषि
 ८०॥

श्रद्रेश वर्षके नाम ४-परिवास १ परीवर्त २ निमेग ३ निमण ४ ॥ ८० ॥

षु 😘 निकिशीसः—

धरोहरके ना । २-उपिधि ९ न्यांग ३ ॥

-- श्रिक्षानं सदर्पशाम ।

धरोहर लौटा दंनेक नाम २-प्रतिदान १ तद्र्भण २ ॥

# क्रथे प्रगारितं क्रध्यं—

्षेत्रकोऽश्चर्यद्वासम्बद्धाः सम्बद्धाः नामः ९-वरुषः १ ॥

—क्रेयं केप-दस्तवस्य ८१॥

द्यानपर रानं योग्य वानुका नाम ९─ केय १ ॥ ८९ ॥

# विक्रयं पिश्वतव्यं च पण्यं--

वैचने योग्य वस्तुके नाम ३-विकेय १ परिगतव्य २ पण्य ३॥

# —क्रय्यादयस्त्रिष्ठ ।

कव्य श्रादि शब्द तीनों लिंगों में होते हैं ॥

# क्लीवे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः श्चियाम् ॥ ८२ ॥

साई त्रर्थात् वयानेके नाम ३-सत्यापन १ सत्यङ्कार २ सत्याकृति ३॥ ८२॥

#### विपणो विक्रयः -

वैचनेके नाम २-विपरा १ विकय २॥

# -संख्याः संख्येथे ह्यादश त्रिष्ठ ।

एकसे अष्टादश पर्यन्त संख्या गिनने योग्य वस्तुमें रहती है और यह संख्या शब्द संख्येय शब्दवत् तीनों लिङ्गोमें होती है ॥

# विशारयाचाः सदैकत्वे सर्वाःसंख्येय-संख्ययोः ॥ ८३ ॥

विंशति ( वीस ) श्रादि सम्पूर्ण संख्या (गिनती) श्रीर संख्येय श्रथित गिनने योग्य वस्तुमें रहती है श्रीर विंशति श्रादि शब्द सदा एकवचन होते हैं॥ ८३॥

# संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्त-

केवल गिनती छर्थवाछे विंशति आदि शब्द द्विवचन छौर बहुवचनमें होते हैं॥

# —स्तासु चानवतेः श्चियः।

विंशति श्रादि नवतिपर्यन्त शब्द र्झीलिंग होते हैं॥

्रथस्तः शतस्त्रहरूदि क्रमादशगुणोत्त-रम्॥ ८४॥

दश संख्याका करूसे उत्तरोत्तर दश गुरा शत सहस कादि संख्याएँ होती हैं ॥ ८४ ॥

यौतवं हुवयं पारयमिति मानार्थकं त्रयस्।

तोलके नाम ३-यौतव १ द्ववय २ पाय्य ३॥ मानं लुलाऽङ्गुळिपस्थैं- ( तोल तीन प्रकारकी है ) तुलामान १ श्रंगुलि-मान २ प्रस्थमान ३ ॥

—र्गुआः पश्चाद्यमास्कः ॥ ८५ ॥ पांच रतीका शास्त्रोक्त माषा (मासा) होता है॥ ८५ ॥

# ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री-

सोलह मासेका एक श्रन्त होता है उसको ही कर्ष कहते हैं॥

चार कर्षका एक पल होता है ॥

मुवर्णाबिग्ती हेम्नोऽक्षे

कर्षभर सुवर्णके नाम २-सुवर्ण १ विस्त २ ॥

-कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

पलभर सुवर्णका नाम १-कुरुबिस्त १ ॥ ८६ ॥

तुला स्त्रियां पलशतं

सौ पलका नाम १-तुला ५ ॥

-भारः स्याद्धिशितस्तुलाः ।

वीस तुलाका नाम १-मार १ ॥

माचितो दश भाराः स्युः

दश भारका नाम १-माचितः ॥ ८७ ॥

शकटभर भारका नाम १-म्याचित १ ॥ ०

कार्षापणः कार्षिकः स्वात्— चार्दाके रुपयेके नाम २-कार्षापण १ कार्षिकर। -कार्षिके साखिके पुणः।

ैतामेका कार्यात्म अर्थात् पैसेका नाम १-पग्रा९ अस्त्रियामादकद्भोणी खारी वाहो निकु-श्राक्षकः ॥ ८८ । कुड्या प्रत्य इत्याद्याः परि-माग्रार्थकाः पृथक् ।

चार सेरका नाव १ – ब्राहक १ ॥ ब्राट ब्राहक का नाम – द्रोरा १ ॥ तीन द्रोराका नाम – खारी १ ॥ ब्राट द्रोराका नाम – वाह १ ॥ मुद्रीभरका नाम – निकुंचक १ ॥ ८८ ॥ पावभरका नाम – कुडव १ ॥ सेरमरका नाम-प्रस्थ १ ॥ दृःयादि धलग श्रलग तोलके नाम है ॥

पादस्तुरीयो भागः-

चौथे भागका नाम १-पाद १॥

-दशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

बाट अर्थात् भागके नाम ३- ग्रंश १ भाग २ बंटक ३॥ ८९॥

द्रव्य वित्त स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु । हिरण्यं द्रविणं यम्नमर्थरैविभवा स्त्रपि ॥ ९०॥

धनके नाम १३—द्रव्य १ वित्त २ स्वापतेय ३ रिक्थ ४ ऋकथ ५ धन ६ तमु ७ हिरण्य ८ द्रविशा ९ गुम्न १० ग्रर्थ ११ रे १२ विमव १३॥९०॥

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेम रूप्ये कृता-कृते।

भा गड़े, वा नहीं गड़ें हुए सोनं वा चांदीके नाम २— हिरण्य १ कोष २॥

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्य-

सोने चांदीसे श्रन्य ताम्रादि घातुका नाम १-कुप्य, १॥

— रूप्यंतद्द्यमाहतम् ॥ ९१ ॥ तांबा और चांदीके मिलाये हुएका नाम १— इप्य १ ॥ ९१ ॥

गारुश्मतं मरकतमश्मगभौ हरिन्मािः मरकतमणिके नाम ४-गारुःमत १ मरकत २ श्रासमाभ ३ हरिन्मणि ४॥

शोगारतं लोहितकः पद्मरागो-

पद्मरागमि के नाम ३-शोग्रारत १ लोहितक २ पद्मराग ३॥

—ऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥ मुक्ता— मोतीके नाम २-मोक्तिक ५ ॥ ९२ ॥ मुक्ता२। ऽथ विद्वमः पुलि प्रवालं पुंतपुंसकम्। मूंगेके नाम २-विद्युम १ प्रवाल २ ॥

रतनं माग्रिद्धंगोरश्मजाती सुक्तादिकेऽपि
च ॥ ९३ ॥

पद्मराग श्रादि पापाग्र जाति श्रीर मुक्ताफल श्रादिके नाम २-रतन १ मणि २ ॥ ९३ ॥

स्वर्गो सुवगा कनकं हिरण्यं हेम हाट-कम् । तपनीयं शातकुम्भ गांगेयं भर्म कर्बुरेम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातकपं महा-रजतकाश्वने । हम्मं कार्तस्वरं जाम्बून-दमष्टापदोऽख्यियाम् ॥ ९५ ॥

सुवर्णके नाम १९ स्वर्ण १ सुवर्ण २ कनक ३ हिरण्य ४ हेमन् ५ हाटक ६ तपनीय ७ शात-- कुम्भ ८ गांगेय ९ भर्मान् १० कर्नुर ११ ॥९४॥ चामीकर १२ जातकप १३ महारजत १४ कांचन १५ हक्म १६ कार्तस्वर १७ जांवूनद १८ प्रष्टापद १९॥ ९५॥

चांदीके नाम ५-दुर्वर्ण १ रजत २ रूप्य खजूर ४ रवेत ५ ॥ ९६ ॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रिया— पीतलके नाग २-रीति १ श्रारकूट २॥

—मध ताम्रकम् । , शुव्वं म्लेच्छमुखं द्वचष्टवरिष्टोदुम्बराग्रि च ॥ ९७॥

तांबेके नाम ६—त।म्रक १ ग्रुख्व २ क्लेच्छुमुख ३ द्वयष्ट ४ वरिष्ट ५ उदुबर ६ ॥ ९७ ॥

लोहोऽल्ली शक्षक तीश्रंग पिण्डं काला-यसायसी । अश्मसारो—

लोहेंक नाम ७-लोट १ शक्त हर तीक्ष्ण रे पिण्ड ४ कालायस ५ अयस् ६ अत्मसार ७ ॥

—य मण्डूरं सिंहाणमि तन्मले॥९८॥ लोहेके मल श्रर्थात् मंद्ररके नाम २-मण्डूर १ सिंहाण २ ॥ ९८ ॥ सर्वे च तेजसं छोह—

चांदी सोना लोहादि सर्व धातुश्रोंका नाम

१-लोह १॥

विकारस्त्वयसः कुशी।
लोहके फालका नाम १-कुशी १॥
जारः काचो-कांचके नाम २-जार १ काच २॥
---ऽथ चपलो रसः सृतश्च पारदे॥९९॥
पारेके नाम ४-चपल १ रस २ सूत ३ पारद
४॥ ९९॥

श्रवरखके नाम ३-श्रश्नक १ गिरिज २ अमल ३॥

स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जन-यासुने ॥ १०० ॥

सुमिक नाम ४---स्रोतोंऽजन १ सौबीर २ कापोतांजन ३ यासुन ४॥ १००॥

तुत्थाअनं शिखित्रीयं वितुन्नकमयूरके।
तूतिया (नीताथोथा ) के नाम ४-तुत्थाजन
१ शिखित्रीव २ वितुन्नक ३ मयूरक ४ ॥

कर्परी दार्विका क्वाथोद्भव तुर्थ--त्तियाके भेद ३-कर्परी १ दार्विका २ तुरथ ३॥
--रसाञ्जनम्॥ १०१॥ रसगर्भ ताक्ष्यशैर्छ-

रसोतके नाम ३-रसाजन १॥ १०१॥ रस-गर्भ २ ताक्येशैल ३:॥

-गन्धाश्मनि तु गन्धिकः। सौगन्धि-कश्च-

गन्धकके नाम ३-गन्धारमन् १ गन्धिक २ स्रोगन्धिक ३ ॥ –चक्षुष्याकुळाल्यौ तु कुलस्थिका ॥ १०३ ॥

काले सुर्मेके नाम २-चक्षुष्या १ कुलाली २ कुलिथक ३॥ १०२॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाः अनम् ।

पीतलको तपाके घिसनेसे जो अजन बने उसके नाम ४-रीतिपुष्प १ पुष्पकेतु २ पौष्पक ३ कुसुमांजन ४॥

पिश्वरं पीतन तालमाछं च हरितालके ॥ १०३॥

हरितालके नाम ५-पिछर १ पीतन २ ताल ३ स्राल ४ हरितालक ५॥ १०३॥

गैरेयमर्थ्य गिरिजमश्मंज च शिलाजतु शिलाजीतके नाम ५-गैरेय १ अर्थ्य २ गिरिज ३ श्रास्मज ४ शिलाजतु ५ ॥

बोलगन्धरसप्राण्पिंडगोपस्साः सुमाः ॥ १०४ ॥

गन्धरसके नाम ५-बोल १ गन्धरस २ प्राया ३ पिण्ड ४ गोपरस ५॥ १०४॥

डिण्डीरोऽव्धिकफः फेनः— समुद्रके भागके नाम ३—डिडीर १ श्रव्धिकफ २ फेन ३॥

सिन्द्रं नागसंभवम्।
सिद्रके नाम २-सिद्र १ नागसम्भव २॥
नागसीसकयोगेष्टवप्राणि-

सिसेके नाम ४---नाग १ सीसक २ थोगेष्ट ३ वप्र ४॥

—त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रङ्गचङ्गे— रांगके नाम ४-त्रपु १ पिचट २ ॥ १०५ ॥ रङ्ग ३ वंग ४ ॥

-ग्रथ पिचुस्तूलो--इस्के नाम २-पिचु १ तूल २॥ -ऽथ कमलोत्तरम्। स्वत्कुसुम्भं विह्न-शिखं महारजनमित्यपि॥ १०६॥

कुष्णुम्भके नाम ४-हमलोत्तर १ कुष्णुम्म २ विविशिख ३ महारजन ४॥ १०६॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः-

कनी कम्बलके नाम २-मेषकम्बल १ कर्णायुर्ध शशीर्ण शशलोमनि ।

खरगोशकी छ।के नाम २—शशोर्ग १ शशलोमन् २॥

मधु होद्र माक्षिकादि-

शहदके नाम ३---मधु १ क्षीद्र २ माक्षिक ३॥

-मधूच्छिङ्टं तु सिक्यकम्।। १०७॥ मोमके नाम २--मधूच्छिष्ठ १ सिक्थक २॥ १०७॥

मनःशिका मनोग्रप्ता मनोहा नागजि-हिका। नेपाली कुनटी गोला-

मैनिशितके नाम ७—मनःशिता १ मनोगुप्ता २ मनोह्वा ३ नागजिह्विका ४ नैपाली ५ कुनटी ६ गोला ७॥

-यक्ष्वारो यवाग्रजः ॥ १०८॥ पाक्यो-जवाखारके नाम ३-यवद्यार १ यवाप्रज २ ॥ १०८॥ पाक्य ३॥

-ऽय सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखर-र्चकः।सोवर्चछंस्यादुचकं-

सज्जीके नाम ५—सर्जिकाक्षार १ कापोत २ सुखवर्चक ३ सीवचल ४ रुचक ५॥

-त्यक्सीरी वशरोचना।। १०९ ॥ वंशलोचनके नाम २-त्वक्सीरी १ वंशरो-चना २ ॥ १०९ ॥

शियुजं श्वेतमरिचंसफेद मिर्चके नाम २-शियुज १ व्वेतमरिच१।
मोरटं मूलमेच्चचम्।
ईखकी बड़का नाम १-मोरट १।।

ग्रहिथकं पिष्पर्ला हन्दे चटकााशर **इत्यपि** ॥ ११०॥

पीपलामृतकं नाम ३—ग्रथिक १ पिप्पलीमृत २ चटकाशिरस् ३।। ११०॥

जोलोमी भूतकेशो ना-

जटामांसीके नाम २-गोलोमी १ भूतकेश २॥

पशङ्ग रक्तचन्दनम्।

पतंगके नाम २ - पत्राग १ रक्तचन्दन २॥

त्रिकटु श्यूषर्गा ध्योष-

सों ठि, पीपल, मिर्च इन तीनोंके समूहके नाम ३--- त्रिकटु १ त्र्यूषण २ त्र्योष ३ ॥

—त्रिफना तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

श्रांवला, हरड, बहेटा इन तीनोंके समूहके नाम र-त्रिफला १ फलत्रिक २ ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

ग्रथ शुद्रवर्गः १०.

शूद्राश्चावरत्रण्शिष्ठ वृषलाश्च जघन्यजाः। शूद्रके नाम ४-शूद्र १ श्रवरवर्ण २ वृषल ३ जघन्यज ४ :।

यावण्डालानु सङ्कीणी **भम्बष्टकर**— गादयः॥ १॥

ब्राह्मणीमें शूर्से उत्पन्न हो उसका नाम— चण्डाल ।। चण्डालसे रूकर श्रम्बए करणा श्रादि-कोका नाम १—संकीर्ण १ ॥ १ ॥

शूदाविशोस्तु करणी-

शृद्दामें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम १-करण १।

-अवन्त्रो वश्यादिजनमनीः।

बर्ननीमें ब्राह्मणसे उत्तर हो उसका नाम १-अभ्यष्ट १ ।।

शूद्रार्ज्ञात्त्रययोख्यो--

श्रदामें क्त्रियरो उत्पन हुएसा नाम १-डप्र १।

—मागधः क्षत्रियाविशोः॥२ ॥<sup>२</sup>

च्चित्रयाणीमें वैश्यसं उत्पन्न हुएका नाम-१ मागध ९ ॥ २ ।

# माहिष्योऽयक्षित्त्रययोः---

बनैनीमें चित्रियसे उत्पन्न हुएका नाम ५--माहिष्य १।।

-- चत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः।

बनैनीमे शूद्रसे उत्पन्न हुएका नाम ५- चृतृ १॥

#### ब्राह्मण्यां चित्रयात्सूत-

ब्राह्मणीमें चित्रियसे उत्पन्न हुएका नाम १-सूत १ स्तस्यां वेदेहको विशः॥ ३॥

ब्राह्मणीमें वैश्यसे उत्पन्न हुएका नाम १-वैदेहक १॥३॥

# रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः।

करणीमें माहिध्यसे उत्पन्न हुएका नाम १--रथकार १।!

# स्याचण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां बृष्-लेन यः॥ ४॥

ब्राह्मणीमे शृद्धसे उत्पन्न हुएका नाम १— चण्डात १ ॥ ४ ॥

#### कारुः शिल्पी-

कारीगरोंके नाम २-कार १ शिल्पिन् २॥

-संहतैस्तैद्वयोः श्रेणिः सजातिभिः।

कारीगरों के समूहका नाम १-श्रेणि १।।

# कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी-

कारीगरोंके श्रफसर श्रर्थात् मिस्तरीके नाम २— कुलक १ कुलक्षेत्री २।।

-मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५॥
मालीकं नाम २-मालाकार १ मालिक २॥५॥
कुम्भक्षरः कुलाळः स्यात् —
कुम्हारके नाम २-कुम्भकार १ कुलाल २॥

-पलगण्डम्तु लेपकः।

कमगरके नाम २-पत्तगण्ड १ छेपक २ ॥

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्-

जुलाहेके नाम २-तन्तुनाय १ कुविन्द २ ॥

तुत्रवायस्तु सौचिकः ॥ ६॥

दरजीके नाम २-तुन्नवाय ९ सौचिक २ ॥६॥

#### रङ्गाजीवश्चित्रकरः—

चित्रकारके नाम २-रङ्गाजीव १ चित्रकर २ ॥

—शस्त्रमार्जोऽसिधावकः॥

शिकिज्ञीगरके नाम २-शक्तमाज १ असि-धावक २ ॥

पादृकुच्चर्मकारः स्या —

चमारके नाम २-पादूकृत् १ चर्मकार २ ॥

-द्रयोकारो लोहकारकः॥७॥

लोहारके नाम २-व्योकार १ लोहकारक २ 1७।

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो हेक्म-कारकः।

सुनारके नाम ४-नाडिन्धम । स्वर्णकार २ कलाद ३ ६१मकारक ४ ॥

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः —

मनिहारने नाम २ शा इतिक १ काम्बविक २।

-शौरिवकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८॥

ठठेरेके नाम २-शौल्विक १ ताम्रकुटक २ ॥८॥

# —तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु-काष्ट्रतट्ट।

बर्ड्के नास ५-तत्त्वन् १ वर्षकी २ त्वन्त्र ३ रथकार ४ काष्ट्रतक्ष्म ५ ॥

# यामाधीनो यामतचः-

गावके बढ़ईके नाम २-- प्रामाधीन प्रमानत्त् २ ॥

-कौटतचोऽनधीनकः॥ ९ ॥

स्वतन्त्र बढ्ईका नाम १-कौटतत्त् १ ॥९॥ श्रुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनीपितान्ताव-सायिनः।

नाईके नाम ५-क्षुरिन् १ मुण्डिन् २ दिवाकीर्ति ३ नापित ४ श्रन्तावसायिन् ५ ॥ निर्गोजकः स्याद्रजकः—

ानगाजकः स्याद्रजकः— धोबीके नाम २-निर्गोजक १ रजक २ ॥ —शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥ कलालके नाम २—शौण्डिक १ मण्डहारक २ ॥ १० ॥

जाबालः स्याद्जाजीवी—
गढ़िरथेके नाम २-जाबाल १ अजाजीव २ ॥
-दैवाजीवस्तु दैवळः ।
पण्डाके नाम २-देवाजीव १ देवल २ ॥
स्यान्माया शाम्बरी—
इन्द्रजालके नाम २-माया १ शांबरी २ ॥
-मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥११॥
इन्द्रजाली अर्थात् वाजीगरके नाम २-मायाकार १ प्रतिहारक २ ॥ १ % ॥

शैलाढिनस्तु शैल्लषा जायाजीवाः कृषा-श्विनः । भरता इत्यपि नटा—

नटके नाम ६-शैलालिन १ शैलूष २ जाया-जीव ३ इशाश्विन् ४ भरत ५ नट ६ ॥

श्चारकास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥
करथकके नाम २-चारण १ कुशीलव २ ।१२॥
मिार्देगिका मौरजिकाः-मृदङ्गके बजानेवालेके नाम २-मार्देगिक १
मौरजिक २ ॥

—पाणिवादास्तु पाणिघाः। ताली बजानेवालेके नाम २—पा १ पाणिघर॥

वेणुध्याः स्युर्वेगाविका-

वांष्ट्ररी बजानेवाळेके नाम २—वेणुन्म ९ वैग्राविक २ ॥

-वीगावादास्तु वैगिकाः ॥ १३ ॥

वीग्या बजानेवालेके नाम २--बीग्यावाद १ वैग्याविक २ ।। १३ ।।

जीवान्तकः शाकुनिको-

चिड़ीमारके नाम २-जीवान्तक १ शाकुनिक२।
-द्वी वाग्ररिकजालिकौ।

व्याधके नाम २-वागुरिक १ जालिक २ ॥

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम्॥१४॥

कसाईके नाम ३—वैतिसिक १ कोटिक २ मांसिक ३॥ १४।

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकाऽपि सः। मजूरके नाम ४—भृतक १ मृतिभुज् २ कर्म-कर ३ वैतनिक ४ ॥

# वातिवहो वैवधिको-

बोक्ता ढोनेवालेके नाम २—भारवाह भारिक २॥ १५॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतस्तु पृथ-ग्जनः । निद्दीनोऽपसदो जाल्मः क्षुद्धकश्च-तरश्चसः ॥१६॥

नीचके नाम १०-विवर्ण १ पामर २ नीच ३ पाइट्त ४ पृथग्जन ५ निहीन ६ स्रपसद ७ जाल्म ८ सुस्रक ९ इतर १०॥ १६॥

भृत्ये दासेरदासेयदासगोध्यकचेटकाः। नियोज्यकिकरभैष्यभुजिष्यपरिचारकाः १७

दास वा टहळुएके नाम ११—मृत्य १ दासेर २ दासेय ३ दास ४ गोप्यक ५ चेटक ६ नियोज्य ७ किंकर ८ प्रेच्य ९ भुजिष्य १० परिचारक ११॥१७॥

# पराचितपरिस्कदपरजातपरेधिताः।

जो दूसरेसे पाला जाय उसके श्रर्थात् रहुश्राके नाम ४—पराचित १ परिस्कन्द २ परजात ३ · परैधित ४॥

मंद्रस्तुंद्परिमृज श्वालस्यः शीतकोऽल-सोऽतुष्णः ॥ १८ ॥

श्रालसीके नाम ६-सन्द १ तुन्दपरिमृज २ श्रालस्य ३ शीतक ४ श्रलस ५ श्रनुष्या ६॥ १८॥

द्त्रे तु चतुरपेशलपटवः स्त्थान उष्ण श्च ।

चतुरके नाम ६-दत्त १ चतुर २ वेशल ३ पट्ट ४ सूत्थान ५ उच्या ६ ॥

चण्डालप्लवमातंगदिबाकीर्तिजनंग-माः ॥ १९ ॥ निषादश्वपचावतेवासि-चाण्डालपुक्कसाः ।

चाण्डालके नाम १०-चण्डाल १ प्लव २ मातः ३ दिवाकीर्ति ४ जनगम ५ ॥ १९ ॥ निषाद ६ श्वपंच ७ श्रन्तेवासिन् ८ चाण्डाल ९ पुनकस १० ॥

भेदाः किरातशबर पुर्लिद्। म्लेक्ळ्जा-तयः ॥ २० ॥

म्लेच्छजातिके भेद जंगली गोमांस खानेवाले हेबूढे श्रादिके नाम ३—किरात १ शवर २ प्रलिन्द ३॥ २०॥

न्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्छेन्धकोऽ ऽपि सः।

मृग पकड़नेवालेके नाम ४—व्याध १ मृगव-धाजीव २ मृगयु ३ छुब्धक ४ ॥

कौलेयकः सारमेयः कुश्कुरो मृगद्श-कः ॥ २१ ॥ शुनको भषकः श्वा स्था-

कुत्तेके नाम ७-कीलेयक १ साग्मेय २ कुक्कुर ३ सृगदंशक ४॥२१॥ शुनक ५ मषक ६ इवन् ७॥

-दलर्कस्तु स योगितः।

प्रयोगसे उन्मत्त हुए कुत्तेका नाम १-अलर्क १
श्वा विश्वकद्भुर्मृगयाकुशलः —
शिकारी कुत्तेका नाम १-विश्वकद्भु १ ॥
सुरमा कुनी ॥ २२ ॥
कुतियाके नाम १-सरमा १ छुनी २ ॥ २२ ॥
विट्चरः सुकरो ग्राम्यो —
गांवके सूकरका नाम १-विट्चर १ ॥
वक्ररस्तरुगः प्रयुः ।
तरुग्पयुका नाम १-वर्कर १ ॥

आच्छ्रांदनं मृगव्य स्यादाखेटा मृगया श्चियाम् ॥ २३ ॥

शिकारके नाम ४-ऋाटकोदन १ मृगव्य २ श्राखेट ३ मृगया ४॥ २३॥

दक्षिण। हर्लु इधयोगाद्यक्षिणे मांकु रङ्गकः॥

ग्यापने जिस मृगके दिहने श्रंगमें मारा हो

उसका नाम १-दक्षिणेर्मन् १॥

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोचकाः
॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमस्निम्छचाः ।

चोरके नाम १०-चोर १ ऐकागारिक २ स्तेन ३ दस्यु ४ तस्कर ५ मोषक ६ ॥ २४ ॥ प्रतिरो-धिन् ७ परास्कन्दिन् ८ षाटचर ९ मितस्छच १०।

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं -- ने चौर्यः चौरीके नाम ४-चौरिका १ स्तैन्य २ चौर्यः ३ स्तेय ४॥

—लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥ चोरौके मालका नाम १ —लोप्त्र १ ॥ २५ ॥ वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् । पत्नी वा मृगोके पकड्नेकी सामग्री अर्थातः जालादिका नाम १ —वीतंस १ ॥

उन्माथः कूटयन्त्रं स्या-

कावकपींजरे श्रादिके नाम २-उन्माथ कृ

द्वागुरा मृगवन्धनी ॥ २६ ॥ जालके नाम २-वागुरा १ मृगवन्धनी २ ।२६॥ शुल्व वराटकं स्त्रीं तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुगाः ।

रस्सीके नाम ५-ग्रुल्व १ वराटक २ रज्जु ३ वटी ४ ग्रुग्स ५॥

उद्घाटन घटीयन्त्र सक्टिलोद्घाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

श्चरहटके नाम २-उद्घाटन १ घटीयन्त्र २ २७। पुंसि वेमा वायदण्डः-

जुलाहेके कपड़ा वुननेके ख्रीजारके नाम २---वंमन् १ वायदण्ड २॥

सुत्राणि नरि तन्तवः।

सूतके नाम २-सूत्र १ तन्तु २॥

वाणिव्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये—

कपड़े श्रादिके बुननेके नाम २-वाांग १ व्यूति २॥

पुस्त लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥

मिट्टी अदिसे लीपने पोतनेका नाम १---पुस्त १॥ २८॥

र्पाञ्चालिका प्र<sup>ञ्चि</sup>का स्याद्वस्त्रदृन्तादिभिः हृता ।

गुन्त्रिया श्रर्थात् वस्त्रकी बनाई हुई पुतलीके नाम २-पांचालिका १ पुत्रिका २ ॥

जतुत्रपुषिकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिष्ठ । लाखके विकारका नाम १-जातुष १॥ वंगके विकारका नाम १-त्रापुष १॥

पिटकः पेटकः पेटा मंजूषा-

पिटारेके नाम ४-पिटक १ पेटक २ पेटा ३ मैजूबा ४ ॥

—ऽय विहङ्गिका ।॥ २९ ॥ भारयष्टि— , बहुँगी ( खुँझी ) के नाम २-विहंगिका १ ॥ २९ ॥ भारयष्टि २ ॥

—दश्वादेस्ताडनी कथा।

कोडका नाम १-कशा १ ॥

चाण्डा लिका नु कण्डोलबीगा चण्डा-लवस्रकी ॥ ३१ ॥

किगरीबाजोंके नाम ३-चाण्डालिका १ कण्डो-तवीगा २ चण्डा ३१ ॥

# न।राची स्यादेषियका—

कांटा अर्थात् सोना श्रादि तोलनेकी तराज्के नाम २-नाराची १ एषियाका २

—शा**ग**म्तु निकषः कषः।

कसोर्टाके नाम ३-शाएा १ निकष २ कष ३॥

वश्चनः पत्रपरशु—

रेतीके नाम २-न्नश्चन १ पत्रपरज्ञ २ ॥

- रीषिका तूळिका समे ॥ ३२ ॥ सलाईके नाम २-ईषिका १ तूलिका २ ॥३२॥ तैजसा वर्तनी मुषा-

सुवर्ण इत्यादि घातु गलानेकी घरियाके नाम ३--तैजसा १ वर्तनी २ मूषा ३॥

—भह्या चर्मप्रसेविका।

फूँकनीके नाम २ मन्ना १ चर्मप्रसेविका २॥ स्थारफोटनी वेधनिका—

बर्में के नाम २ - श्रास्फोटनी १ वेधनिका २॥

कृपाणी कर्तरी समे॥ ३३॥ -एक प्रकारकी कैंबीके नाम २-कृपाणी १ कर्तरी २॥ ३३॥

# वृत्ताद्नी वृत्तभेदी-

बसूले श्रादिके नाम २---वृत्तादनी १ वृत्तमेदी२

—टंकः पाषा**णदारगाः**।

टांकी श्रर्थात् पत्थर फोड़नेके हथियारके नाम २-टंक १ पावागादारण २ ॥

#### क्रकचोऽस्त्री करपब-

श्रारेके नाम २---क्रकच १ करपत्र २॥

-मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥

श्रारीके नाम २--- श्रारा १ चर्मप्रमेदिका २ ॥

# सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा-

लोहेकी मूर्तिके नाम ३-सूर्मी १ स्थूणा २ अध्यःप्रतिमा ३॥

-शिहप कर्म कतादिकम् ॥ ३४॥
कारीगरीका नाम १-शिहप १॥३४॥

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया। प्रतिकृतिरची पुंसि प्रति-निध-

प्रतिमा त्र्यांत् तसवीकि नाम ८-प्रतिमान १ प्रतिबिक्व २ प्रतिमा ३ प्रतियातना ४ प्रतिच्छाया ५ प्रतिक्रति ६ अर्था ७ प्रतिनिवि ८॥

# -हपसोपमानं स्थात्॥ ३५॥

मिसाल श्रोर जिसकी मिसाल दी जाय उसके नाम २-उपमा १ उपमान २ ॥ ३५ ।

वार्च्यालेगाः समस्तुरुयः सदद्यः सदयः सदक् ॥ ३६ ॥ साधारणः समानश्र-

बराबरके नाम ७-सम १ तुल्य २ सहत्त ३ सहरा ४ सहग् ५ ॥ ३६ ॥ साधारण ६ समान ७

-स्युद्धत्तरपदे त्वमी । निभसंकाशनीका-शप्रतीकाशौपमादयः ॥ ३७ ॥

समानके नाम ५-निभ १ संकाश २ नीकाश ३ मतीकाश ४ उपमा ५ ॥ ३७ ॥ कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम् । भरण्यं भर्गां मूर्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

मजूरीके नाम ११ -- कर्मण्या १ विद्या २ स्ट्या ३ स्टित ४ भर्मन् ५ वेतन ६ भरण्य ७ भरखा ८ मृत्य ९ निर्वेश १० पर्या ११ ॥ ३८॥

मुरा इलिप्रिया दाला परिसुद्धवाः रमजा। गन्धोत्तमा प्रसन्नेरा कादम्बर्यः परिस्रुता॥ ३९॥ मदिरा कश्यमधे चा—

मदिरा अर्थात् शराबके नाम १३ — सुरा १ हिन्दि । प्रिया २ हाला ३ परिस्नुत् ४ वस्त्यात्मजा ५ गन्धोत्तमा ६ प्रसन्ना ७ इरा ८ कादम्बरी ९ परि-स्नुता १०॥ ३९॥ मदिरा ११ कस्य १२ मद्य १३

#### -प्यवदंशस्तु भन्नग्राम्।

मद्यपानकी एचि उत्पन्न करनेके जिए भूजा चना इत्यादि खानेका नाम १-श्रवदंश १॥

# शुण्डापानं मदस्थानं---

मिंदरा पीनेके स्थानके नाम २-शुण्डापप्न १ मदस्थान २ ॥

#### मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥

मदिरा पीनेके समयके नाम २-मधुनार १ मधु-कम२ ॥ ४० ॥

मध्यासवो माधवको मधु माष्वीक-मडयोः।

महुवासे ऊत्पन्न मिहराके नाम ४-मध्वासव १ माधवक २ मध्र ३ माध्वीक ४ ॥

# मैरेयमासवः सीधु-

गुड़सीराकी मदिराके नाम ३—मैरेथ १ श्रासव २ सीधु ३ ॥

-मेंद्को जगलः समौ ॥ ४१ ॥ महिराके फोकसके नाम २—मेदक १ जगल

संधानं स्याद्भिषवः—

२॥४९॥

मदिरा करनेके नाम २-संघान १ अभिषव २॥

# किण्वं पुंसि तु नग्नहूः।

तंदुलादि द्रव्यसे बने हुए मधके नाम २-किण्व १ नम्रह २॥

#### कारोत्तरः सुरामण्ड-

मदिराके मण्डके नाम २--कारोत्तर १ सुरा-मण्ड २॥

#### **आपानं पानगोष्टिका ॥ ४**२ ॥

दारू पीनेकी सभाके नाम २-आपान १ पान-नोष्टिका २॥ ४२॥

# चषकोऽह्यी पानपात्रं-

दारू पीनेके वर्त्तन ( प्याले ) के नाम २-वषक

# -सरकोऽप्यतुतणर्षम् ।

मदिरा पीनेके नाम २-सरक १ श्रज्ततर्षण २ ॥ धूर्तोऽच्हें वी कितवोऽक्षधूर्तो चूतकृत्स-माः ॥ ४३ ॥

जुज्ञारीके नाम ५-धूर्त १ अज्ञदेविन् २ कितव ३ अक्षधूर्त ४ चूतकत् ५ ॥ ४३ ॥

# स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः--

जामिनके नाम २-सप्रक १ प्रतिभू २॥

# -सीभेका वृतकारकाः।

जुवा खिलानेवालेके नाम २---सिमक १ शूत-कारक २॥

# ब्तोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पर्गा इत्यपि ॥ ४४॥

जुएके नाम ४ — श्र्त १ अक्षवती २ कैतव ३ पक्ष ४ ॥ ४४ ॥

# पणोऽद्येषु ग्लहो—

# परिग्रायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रि-याम् ॥ ४५ ॥

सारक इधर उधर फेरनेवालेका नाम १-परि-ग्राय १॥ ४५॥

#### ग्रष्टापदं शारिफलं-

बिसायती (चौपड़) के नाम २-श्रष्टापद १ शारिकत २॥

# -प्राणिषतं समाद्वयः ।

मुरगा श्रादि जीवोंकी तड़ाईह्प चूतके नाम २-प्राणिचृत १ समाह्वय २ ॥

# उक्ता भूरिप्रयोगत्वादैकस्मिन्नेव यौगि-काः॥ ४६ ॥ ताद्धम्यदिन्यतो वृत्ताबुद्धा ळिङ्जान्तरेऽपि ते।

इस वर्गमें जो यौगिक मालाकार मार्दिगिक वैगाविक श्रादि शब्द काव्यादिकोंके श्रिथिक प्रयोग के श्रनुसार केवल पुंलिगमें ही कहे है वे शब्द व्या-करगाके नियमानुसार स्त्रीलिंग नपुंसकलिंगमें भी होते हैं, जैसे मालाकारकी स्त्री मालाकारी श्रीर मालाकारका कुल मालाकार इसी प्रकार सर्वत्र जानना।

# इत्यमरसिंद्दकृतौ नामिलगानुशालने। भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः सांग एव सम-थितः॥ ४७॥

इति श्रीमदमरसिहविरचितामरकोशे ज्वाला-प्रसादकतभाषाटीकायां द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

इति द्वितीयः काण्डः ॥ २ ॥

# अथ तृतीयः काण्डः।

#### **--○={\$>=**-

#### ग्रथ विशेष्यनिध्नवर्गः १.

विशेष्यनिष्नैः संकीणैर्नानाथं रव्ययेरि॥ लिगादिसंग्रहैं वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

इम सामान्य तृतीयकाण्डमें स्वर्गादि वर्गोंके आश्रित राज्द विशेष्यनिष्टवर्ग, सक्षीर्णवर्ग, नानार्थ-वर्ग, अन्ययवर्ग, और लिगादिसंग्रहवर्गके द्वारा कहेंगे॥ १॥

स्त्रीदाराचैर्यद्विशेष्यं याद्यशः प्रस्तुतं पदः। गुणद्रन्याक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः॥

स्ती दार आदि विशेष्यभूत पदों में जो लिङ्ग और संख्या हो वही लिङ्ग और सख्या गुगा और द्रव्य त्तथा किया वाचकशब्दों में हो नेसे दार स्ती आदि शब्दों के गुगा द्रव्य कियावाचक शब्द विशेषगा हो सकते हैं. जैसे-सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कलत्रम्। दिष्डिनी स्त्री, दिष्डिनो दाराः, दिष्ड कलत्रम्। पाचिका स्त्री, पाचका दागः, पाचक कलत्रम्॥ २॥

# सुकृती पुण्यवान् धन्यो-

भाग्यवान् पुरुषके नाम ३-सकृतिन् १ पुण्यवत् २ धन्य ३ ॥

# -महेच्छस्तुं महाशयः।

उदारचित्त पुरुपके नाम २-महेच्छ १ महा-शय २॥

# हद्याङ्घः सुहद्यो-

श्रद्धचित्त पुरुषके नाम २-हृद्यालु १ सुहृद्य२

-महोत्साद्दो महोद्यमः ॥ ३॥

बहुत उद्यम करनेवाले पुरुषके नाम २—महाँ-त्साह १ महोद्यम २ ॥ ३ ॥

प्रविणे निषुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षि-ताः।वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि।।४॥

चतुर पुरुवके नास १०-भवीया १ निपुरा २ श्रमित ३ विज्ञ ४ निष्णात ५ शिक्षित ६ वैज्ञा-निक ७ कृतसुख ८ कृतिन ९ कुशल १०॥ ४ ॥

#### पूज्यः प्रतीक्ष्यः---

मान्य पुरुषके नाम २-पूज्य १ प्रतीक्ष्य ॥ २ ॥

#### सांशयिकः संशयापत्रमानसः।

संशय करानेवाली वस्तुके नाम २—सांश्रयिक १ संशयापत्रमानस २ ॥

# दक्षिणीयो दक्षिणाईस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि॥५॥

दक्षिणाके योग्य पुरुषके नाम ३--दक्षिणीय ९ दक्षिणाई २ दक्षिण्य ३ ॥ ५ ॥

# स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुपदे

श्रतिदानी पुरुषके नाम ४-वदान्य १ स्थूत-लक्ष्य-२ दानशोण्ड ३ बहुप्रद ४ ॥

# जैवातृकः स्यादायुष्मा-

दीर्घायु पुरुषके नाम २-जैत्रातृक १ आयुष्मत् ३

# नन्तर्वाशिम्तु शास्त्रवित ॥ ६॥

शास्त्रीके नाम २---- अन्तर्वाणि १ शाम्रविद् २॥६॥

परीक्षकः कारगािको-

परीक्षके नाम २-परीक्षक १ कारणिक२ ॥ ूर्ः -खरदस्तु समर्थकः।

वरदान देनेवालेके नाम २-बरद १ समर्थक २। हर्षमाणो विक्रवाणः प्रमना हष्टमानसः

। । १७ ॥

प्रसन्नके नाम ४-हर्षमाण १ विकुर्वाण २ प्रमनस् ३ हष्टमानस ४ ॥ ७ ॥

# दुर्मना विमना अन्तर्मनाः-

उटास पुरुषके नाम ३-दुर्मनस् १ विमनस् २ अन्तर्मनस् ३॥

#### -स्यादुरक उन्मनाः।

उत्कण्ठायुक्त पुरुषके नाम २--- उत्क १ उन्मनम् २॥

# दक्षिणे सरक्षोदारौ-

मीघे पुरुषके नाम ३---दिक्ष्या १ सरल २ उदार् ३ ॥

— सुकनो दातृभोक्तरि॥ ८॥ दानी और भोगी पुरुषका नाम १— सुकल १॥ ८॥

# तर्गरे प्रसितासका-

कार्य्यविशेषमें चित्त लगानेवाले पुरुषके नाम रूनतपुर १ प्रसित २ श्रासक्त ३ ॥

# –विष्टार्थोद्यक्त उत्सुकः।

श्रभीष्ट वस्तुके प्राप्त करनेमें तत्पर पुरुषके नाम ्र-इष्टार्थोद्युक १ उत्सुक २ ॥

#### प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ९॥

प्रसिद्ध पुरुषके नाम ६-प्रतीत १ प्रथित २ इच्यात ३ वित्त ४ विज्ञात ५ विश्वत ६॥९॥ गुणैः प्रवीते तुकृतलच्च्याहितळच्च्या ।

्र गुर्गोसे प्रसिद्ध पुरुषके नाम २-इतलद्वरण 🤊 आहितलद्वरण २ ॥

इभ्य ग्राहचो धनी-

घनी पुरुषके नाम ३-इभ्य १ आव्य २ घनिम्३

—स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥ अधिभूनीयको नेता प्रभुः परिवृद्धोऽधिपः ।

स्वामीके नाम १०-स्वामिन १ ईश्वर २ पति ३ ईशितृ ४॥ १०॥ श्रिधिभू ५ नायक ६ नेतृ ७ प्रभु ८ परिवृद्ध ९ श्रिधिप १०॥

#### ग्रधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात-

सम्पत्तिमान् पुरुषके नाम २----श्रियकार्धे 🤊 समृद्ध २ ॥

#### -कुटुम्बच्याष्ट्रतस्तु यः ॥ ११ ॥ स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्तुपाधिश्च पुमा-नयम् ।

कुटुम्बके पालन करनेमें तत्पर पुरुषके नाम ३--कुटुम्बन्यापृत १ ॥ ११ ॥ श्रम्यागारिक २ उपाधि ३ ॥

# वारांगरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः॥१२॥

श्रङ्ग श्रीर रूपसे श्रतिश्रेष्ठ पुरुषका नाम १— सिह्सहनन १॥ १२॥

# निवर्थिः कार्यकर्तायः सम्पन्नः स<sup>स्</sup>व-सम्पदा।

जो दुःखमें भी प्रसन्नताके साथ कार्य किया करता है उस पुरुषका नाम १-निर्वार्थ १॥

# ग्रवाचि मुको-

गूंगे पुरुषके नाम २ - अवाच् १ मूक २॥

-ऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३॥

जो पुरुष पिताके समान माना जाय उसः पुरुषके नाम २—मनोजवस् १ पितृसिन्निभ२ ॥१३॥

# सत्कृश्याकंकृतां कन्यां यो ददाति स कुकुदः।

जो बरको श्रादरपूर्वक वस्त्र भूपगा सहितः कन्यादान दे उस पुरुषका नाम १--क्रुकुद १ ॥

लक्ष्मीबां हुक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्-

शोभावानके नाम ४-लक्ष्मीवत् १ लक्ष्मेण २ श्रील ३ श्रीमत् ४॥

स्निग्धस्तु वत्सकः॥ १४॥

स्नेही पुरुषके नाम २-स्निग्ध १ वत्सल 2 11 98 11

स्याद्यालुः काश्रामकः कृपालुः सुरतः समाः।

दयावान् पुरुषके नाम ४-दयाछ १ कारुणिक २ कुपाछ ३ सूरत ॥ ४ ॥

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निर-वग्रहः॥ १५॥

स्वतन्त्र पुरुषके नाम ५-स्वतन्त्र १ अपावृत २ स्वैरिन् ३ स्वच्छन्द ४ निरवप्रह ५ ॥ १५ ॥

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

पराधीन पुरुषके नाम ४-परतन्त्र १ पराधीन २ परवत् ३ नाथवत् ४ ॥

ग्राधीनो निघ्न **ग्रायत्तोऽस्वच्छन्दो** ग्रह्मकोऽप्यसौ ॥ १६॥

श्रघीनके नाम ५-श्रघीन १ निझ २ श्रायत्त ३ श्रस्वच्छन्द ४ गृह्यक ५ ॥ १६ ॥

खलपुः स्याद्वहुकरो-बुहारने कारनेवाले मनुष्यके नाम २-खलपू १ बहुकर २ ॥

# दीर्घसुत्रश्चिरिकयः।

दीघेसूत्र (थोड़ी देरके कामको बहुत देरमें करनेवालों ) के नाम २-दीर्घसूत्र १ चिरिक्रय २॥

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात-

विना विचारे कार्य करनेवाले पुरुषके नाम २-जाल्म १ असमीक्ष्यकारिन् २ ॥

—कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः॥ १७॥ श्रालसी वा मूढ् पुरुषका नाम १-कुण्ठ १ १७। कर्मचमोऽलंकमीगाः--

कार्घ्य करनेमें समर्थ पुरुषके नाम २-कर्मज्ञम ९ अलंकर्मी ए २ ॥

क्रियाबान्कर्मस्रचतः।

कार्य करनेमें तत्पर पुरुषका नाम १-क्रियाबत् १

स कार्मः कर्मशीलो यः-

जो नित्य काममे लगा रहे उस प्रकाके नाम २-कार्म १ कर्मशील २ ॥

कर्मशूरस्तु कर्मठः॥ १८॥

प्रयत्नपूर्वक जो कार्यको समाप्त करे उस पुरुष के नाम २--कर्मशूर १ कर्मठ २ ॥ १८ ॥

—भर्ण्यभुक्कर्यकरः-

मजदूरके नाम २--भरण्यभुज् १ कर्मकर २ ॥

-कर्मकारस्तु तिक्वयः।

विना मजूरीके भी जो कार्य कर दे उस पुरुष का नाम १-कर्मकार १।।

अपस्नातो मतस्नात-

किसीके मरनेके अनन्तर झान किये हुए पुरुषके नाम २-श्रपस्नात १ मृतस्नात २ ॥

ग्रामिषाशी तु शोष्कुलः ॥ १९॥ े

मांस खानेवाले पुरुषके नाम २-श्राभिषाशिन् १ शौष्कुल २ ॥ १९ ॥

बुभुक्तितः स्यात्क्षुधितो जिघत्पुरशना-यितः ।

भूखे पुरुषके नाम ४-वुभुक्षित १ श्रुधित २ जिघत्स ३ श्रशनायित ४।।

परान्नः परिपण्डादो-

जो पराये ही अन्नसे जीता हो उस प्रक्षके नाम २-परान्न १ परपिण्डाद २ ॥

-अन्नको षस्मरोऽद्यरः ॥ २० ॥

राानेवालेक नाम ३-मक्षक १ घरमर २ श्रद्मर ३ ॥ २० ॥

अधूनः स्वादौद्रिको विजिगीपाविव-जिते ॥

त्रात्यन्त ही भूखे पुरुषके नाम २—श्राद्यन १ श्रीदरिक २ ॥

उभौ स्वात्मंभरिः कुक्तिभरिः स्वोद्र-पूरके ॥ २१ ॥

पेटको ही भरनेशले पुरुषके नाम २—श्चात्म-स्मरि १ कुक्षिस्मरि २ ॥ २१ ॥

# सर्वान्नीनम्तु सर्वान्नभोजी-

जो सब वर्गोका श्रन्न भोजन कर लेता हो उल पुरुषके नाम २—सर्वान्तीन १ सर्वान्नभोजिन् २ ॥

-गृध्नस्तु गर्धनः । लुब्धोऽभिलाषुक-स्तृष्णाकू-

लोसी पुरुषके नाम ५—गृष्टन ९ गधेन २ छुड्थ ३ अमिलाषुक ४ मृष्याच् ५ ॥

-समीलोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

श्रितिलोभीके नाम २-लोछप १ लोछम २ २२।

स्रोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्या—

उन्मत्तपुरुषके नाम २.—सोन्माद १ उन्मदिष्णु२।

-द्विनीतः समुद्भतः ।

अन्यायी पुरुषके 'नाम २-श्रविनीत १ समुद्भत २ ॥

# मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः

मतवालेके नाम ४-मत्त १ शोण्ड २ उत्कट ३ चीव ४ ॥

-कामुके कमिलाऽतुकः ,॥ २३॥ कम्नः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः।

कामीके नाम ९ — कामुक १ कमितृ २ अनुक ३ ॥ २३ ॥ कम्र ५ कामियतृ ५ अभीक ६ कमन ७ कामन ८ अभिक ९ ॥

#### त्रिधेयो विनयग्राही वचनेस्थित ग्रगश्र-वः॥ २४॥

वचन महरा करनेबाले पुरुषके नाम ४-विधेय १ विनयमाहिन् २ वचनेस्थित ३ स्राध्रव ४ ।२४।

वश्यः प्रणेयो-

वशीभूतके नाम २-वश्य १ प्रणेय २ ॥

—निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः।

ं नम्र पुरुपके नाम ३-निश्वत ९ विनीत २ प्रश्रित ३॥

# धृ**ष्टे** धृष्णिषियातश्च-

धीठ पुरुषके नाम ∙३—धृष्ट १ धृष्याज् २ वियात ३ ॥

प्रगहभः प्रतिभान्विते ॥ २५॥

श्रति घीठ निर्भर पुरुषके नाम २-प्रगल्म १ प्रतिभान्वित २॥२५॥

# स्यादधृष्टे तु शालीनो-

लज्जावान् पुरुषके नाम २-श्रधृष्ट १ शालीन २।

विलक्षो विस्मयान्विते।

अचम्भेमें पड़े हुए पुरुषके नाम २-विलक्त १ विस्मयान्वित २॥

#### प्रधीरे कातर—

व्हाकुल हुए पुरुषके नाम २-श्रधीर १ कात्तर २

स्रस्ते भी हभी हक भी छुकाः ॥२६॥

डरपोंकके नाम ४---- त्रस्त १ मीह २ मीहक ३ मीछक ४ ॥ २६ ॥

# आशंसुराशंसितरि-

इष्ट ऋर्थमाप्तिकी इच्छावाले पुरुषके नाम २— ऋार्थमु १ श्राशसितु २ ॥

# –गृहयाळुर्यहीतरि ।

लेनेके स्वभावयाले पुरुपके नाम २- गृहयाछ १ प्रहीपृ २ ॥

# श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते—

श्रद्धायुक्त स्वभाववाले पुरुषका नाम१-श्रद्धाछ१

—पतयाछुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

गिरनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २-पतयाछ १ पातुक २ ॥ २७ ॥

# लजाशीलेऽपत्रपिष्णु—

लज्जाशील पुरुषके नाम २—लज्जाशील १ श्रप-त्रपिष्णु २ ॥

#### -वन्दाहरभिवादके।

वन्दना करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २-वन्दारु १ श्रभिवादक २ ॥

#### शरारुषांतुको हिस्र:-

हिंसा करनेके स्वभाववाले पुरुषके नाम ुहै-शराह १ घातुक २ हिस्र है॥

—स्याद्धर्द्धरणुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥

बढ़नेके स्वभाववाले पुरुषके नाम २ वर्द्धिष्णु ५ वर्धन २ ॥ २८ ॥

# उत्पतिष्णुस्तूःपतिता-

कूदनेके स्वभाववालेके नाम २-उत्पतिष्णु १ उत्पतितृ २॥

#### —ऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः।

भूषणा श्रादि पहरनेके स्वभाववालेके नाम २-श्रतंकरिष्णु १ मंडन २ ॥

# भूष्णुभविष्णुर्भविता-

ह्मेनके स्वभाववालेके नाम १-भूष्णु १ भविष्णु २ भवितु ३॥

# वर्तिष्णुर्वर्तनः समी॥ २९॥

बर्त्ताव वरनेके स्वभाववालेके नाम २-वर्तिष्णु ९ वर्त्तन २ ॥ २९ ॥

# निराकरिष्णुः क्षिष्तुः स्यात-

तिरस्कार करनेके स्वभाववालेकेनाम २-निरा-करिष्णु १ चिप्तु २॥

# —सान्द्रस्निग्धस्तु मेद्रुरः।

सवन श्रीर चिकनेका नाम १-मेदुर १॥

# ज्ञाता तु विदुरो विन्दु ---

जाननेक स्वमाववालेके नाग ३-ज्ञातृ १ विदुर २ विन्दु ३॥

# षिकासी तु विकस्वरः ॥ ३०॥

खिलनेके स्वभाववालेके नाम २-विकासिन् १ विकस्वर २ ॥ ३० ॥

# विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसा-रिणि।

फलनेके स्वभाववालेके नाम ४—विद्यत्वर 9 विद्यमर २ प्रसारिन् ३ विसारिन् ४ ॥

## सहिष्णुः सहनः श्वन्ता तितिश्चः चमिता चमी ॥ ३१ ॥

सहनशीलवालेके नाम ६-सहिष्णु १ सहन २ चन्तृ ३ तितिश्च ४ चमितृ ५ क्षमिन् ६ ॥३१॥

#### क्रोधनोऽमर्धग्रः कोपी-

कोधके स्वभाववालेके नाम ३ - कोधन १ अर्भ-पण २ कोपिन् ३॥

#### —चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।

श्रत्यन्त कोधके स्वभाववालेके नाम २-चण्ड १ श्रत्यन्तकोपन २॥

#### जागरूको जागरिता-

जागनेक स्वभाववालेके नाम २—जागह्क ९ जागरितृ २॥

#### घूर्णितः प्रचलायितः॥ ३२॥

घूरनेवालेके नाम २-घूर्गित १ प्रचलायित २॥३२॥

# स्वप्नक्छयाछुनिद्राछु-

निद्रालुके नाम ३-स्वप्नक् १ रामालु २ निद्रालु ३ ॥

# निद्राणशयितौ समौ।

शयन करनेवालेके नाम २- निद्रागा शिवत र ॥ -

# पराङ्गमुखः पराचीनः—

विमुखक नाम २-पराङमुख १ पराचीन २ ॥

-स्यादवाङ्ख्धोमुखः ॥ ३३ ॥

नीचेको मुख करनेवालेके नाम २--श्रवात्र् १ श्रायोमुख २ ॥ ३३ ॥

# देवानश्वति देवब्रङ् —

देवताओंकी पूजा करनेवालेका नाम १--देव-

-विष्वद्राङ् विष्वगश्वति।

सब श्रोर जानेवालेका नाम १--विष्वद्यन् ॥

यः सहाश्वति सद्भयङ् सः—

साथ रहनेवालेका नाम १-- सध्यच् १॥

—स तिर्यङ् यस्तिरोऽश्वति ॥ ३४ ॥

टेढे चलनेवालेका नाम १--तिर्यच् १॥३४॥

वदो वदावदो वक्ता-

वक्ताके नाम ३--वद १ ददावद २ वक्तृ ३॥

-वागांशो वाक्पतिः समी।

चातुर्ययुक्त बोत्तनंबारुके नाम २--वागीरा ९ वाक्पति २॥

वाचोयुक्तिपदुर्वाग्मी वावद्कोऽतिव-क्तरि ॥ ३५ ॥

शास्त्रानुसार श्रत्यन्त वोत्तनेवालेके नाम ४--वाचोयुक्तिपटु १ वाग्यिमन् २ वावदूक ३ अति-वक्तृ ४ ॥ ३५ ॥

स्याजल्पाकस्तु वाचाछो वाचाटो बहुगर्श्ववाक् ।

श्रतिनिन्दित भाषया करनेवालेके नाम ४--जरुपाक १ वाचाल २ वाचाट ३ बहुगर्छवाच् ४ ॥

दुमुखे मुखराबद्रमुखी-

श्रृप्रिय बोलनेवालेके नाम ३—दुर्भुख १ मुखर २ ऋबद्धमुख ३॥

शक्तः प्रियं वदे ॥ ३६॥

प्रिय बोत्तनेवालेके नाम २--शक्त १ प्रियंवद ॥२॥ ३६

लोहलः स्यादस्फुटवा-

जो स्फुट न बोलता हो उस पुरुषके नाम २-खोहल १ ऋस्फुटवाच् २॥

गगर्बघादी तु कद्रदः।

निन्दित नाक्य बोलनेवाले पुरुषके नाम २--गर्ह्यवादिन् १ कट्टद २॥

समी कुवादकुचरी-

बुराई कहनेवालेके नाम २-कुवाद १ कुचर २ -स्यादस्तीम्यस्वरोऽस्वरः॥ ३७॥ हखे व्यरवालेके नाम २-असीम्यस्वर १ अस्वर २॥३७ ॥

रवयाः शब्दनो---

विल्लानेवालेके नाम २-रवरा १ शब्दन २ ॥

-नान्दीवादी नान्दीकरः समी।

नान्दीवादी ऋर्यात् नाटकके श्रारम्भमें स्तुति-विशेष करनेवालेके नाम २-नाग्दीवादिन् १ नान्दी-कर २ ॥

जडोऽज्ञ—

महामृर्खेक नाम २-जड १ श्रज्ञ २॥

एडमुकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिच्ति ॥ ३८॥ जो गूगा वहिरा दोनों हो उसका नाम १-एड-मुक १ ॥ ३८॥

तुष्णींशीलस्तु तृष्णीको-

मौन रहनेवाले पुरुषके नाम २-तृष्यींशील १ तृष्णीक २॥

नम्रोऽवासा दिगम्बरे।

नम पुरुपके नाम ३—नम्न श्रवासस् २ दिगम्बर ३॥

निष्कासितोऽवकृष्टः स्या-

निकाले हुएके नांम २---निष्कासित १ अव-इन्छ २ ॥

-दपध्वस्तस्तुधिक्कृतः ॥ ३९ ॥

धिक्कार दिये हुए पुरुषके नाम २—ऋपध्वस्त १ धिक्छत २ ॥ ३९ ॥

मात्तगर्बोऽभिभृतः स्या-

तिरस्कारको प्राप्त हुए पुरुषके नाम २—श्रात्तगर्वः १ श्रमिभूत २ ॥

-हापितः साधितः समी।

धनादि दिलाकर धशमें किये हुए पुरुषके नाम

२-दापित १ साधित २ ॥

# प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः॥ ४०॥

निरादरको प्राप्त हुए पुरुषके नाम ४-प्रत्यादिष्ट ९ निरस्त २ प्रत्याख्यात ३ निराक्टत ४॥ ४०॥

# निकृतः स्याद्विप्रकृतो-

बुरे रूपवालेके नाम २-निकृत १ विप्रकृत २॥

# -विप्रलब्धस्त वश्चितः।

ठगे हुए पुरुषके नाम २-विप्रलब्ध १ विचत २॥

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥

मनोहत पुरुषके नाम ४-मनोहत १ प्रतिहत २ प्रतिबद्ध ३ हत ४॥४१॥

#### अधिचिप्तः प्रतिक्षिप्तो-

जिसके उत्तर आक्षेप निया गया हो उस पुरुष के नाम २-अधिक्षिप्त १ प्रतिक्षिप्त २ ॥

# —बद्धे कीलितसंयती।

बांधे हुएके नाम ३-बद्ध १ की जित २ संयत ३

#### भ्रापत्र भ्रापत्माप्तः स्वात्-

श्रापत्तिको प्राप्त हुए पुरुषके नाम दूर-श्रापन्न १ आपत्प्राप्त २ ॥

#### कांदिशीको भयद्रतः ॥ ४२ ॥

भयसे भागे हुएके नाम २-कांदिशीक १ भय-द्भत २ ॥ ४२ ॥

# ग्राचारितः चारितोऽभिशस्ते-

मैशुनके निमित्त त्रथा दोष लगाये हुए पुरुषके नाम ३—श्रालारित १ क्षारित २ श्रमिशस्त ३ ॥

# -संकसुको>स्थिरे।

चंचल स्वभाववाले पुरुषके नाम २—संकसुक २ श्रस्थिर २॥

# व्यसनार्तोपरको द्वौ--

देवी श्रीर मातुषी पीड़ासे युक्त पुरुषके नाम २-व्यसनार्त्त १ उपरक्त २ ॥

# विहस्तव्याकुली समी॥ ४२॥

शोकादिसे व्याकुल पुरुषके नाम '२-विद्वस्त १ व्याकुल २ ॥ ४३ ॥

# विक्कवो विह्वलः-

विकल पुरुषके नाम २-िह्नव १ विह्नल २ ॥ स्यानु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः।

मरगाके समीप श्रानेसे जिसकी बुद्धि विपरित हो जाय उस पुरुषके नाम २-विवश १ श्रारिष्ट-दुष्टवी २॥

# कश्यः कशाहें-

वेत मारने योग्यके नाम २-कश्य १ कशाई २॥
-सन्नद्ध त्वाततायी वधोद्यते॥ ४४॥
मारनेको उद्यतका नाम १-आततायिन् १ ४४
द्वेष्ये त्विक्षामतो-

द्वेष करने लायकके नाम २---द्वेष्य **१**् श्रक्षिगत २ ॥

# -वध्यः शीर्षच्छेच इमौ समौ॥

शिर काटने योग्यके नाम २-वष्य १ शीर्षच्छेच २॥

# विष्यो विषेशा यो वध्यो-

विषकरके मारने योग्यका नाम १—विष्य १॥
सुस्रक्यो सुस्रक्षेन यः॥ ४५॥ सुस्रक्ते मारने योग्यका नाम १—सुस्रक्य
१॥ ४५॥

# शिश्वदानोऽकृष्णकर्मा -

पापकर्मन करनेवाले पुरुषके नाम २--शिम्बि-दान १ अक्रुच्याकर्मन् २ ॥

# चपलश्चिकुरः समौ।

बिना दोष विचारे मारनेवालेके नाम २---वपल १ चिकुर २॥

# दोषैकदक्पुराभागी-

केवल दोषकी ही दिष्ट करनेवालेके नाम २---दोवैक्ट्यू १ पुरोभागिन् २ ॥ निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६॥

कुटिलहृद्यके नाम २——निकृत १ श्रनृजु २ शठ३॥४६॥

कर्णेजपः सूचकः स्यात्-

चुगलखोरके नाम २-कर्गेजिप १ सूचक २॥

-पिशुनो दुर्जनः खलः।

श्रापसमें भेद करानेवालेके नाम ३-पिशुन १ दुर्जन २ खल ३॥

# नृशसो बातुकः क्रः पापो-

घातक श्रथवा कटोर पुरुषके नाम ४─नृशंस ९ घातुक २ क्रूर ३ पाप ४ ॥

—धूर्तम्तु वश्वकः ॥ ४७ ॥ ठगके नाम २-धूर्त १ वधक २ ॥ ४७ ॥

# प्रज्ञे म्हयथाजातमृक्षेत्रेषेयबाकिशाः ।

मूर्खके नाम ६-श्रज्ञ १ मूट २ यथाजात ३ मूर्ख ४ वैधेय ५ बालिश ६ ॥

कद्वयं कृ रणक्षुद्रिकंपचानमितंपचाः ४८ं इपगुके नाम ५-कदर्य १ इपग्रा २ क्षद्र ३ किंपचान ४ मितम्पच ५ ॥ ४८ ॥

# निस्वस्तु दुर्विधो दीनो द्रिहो दुर्ग-तोऽपि सः।

दिखे पुरुषके नाम ५-निःस्त्र १ दुर्विंघ २ दीन ३ दिखे ४ दुर्गत ५॥

# वनीयको याचनको मार्गणो याचका-र्थिनौ ॥ ४९ ॥

मांगनेवालेके नाम ५-वनीयक १ याचनुक २ मार्गेश ३ याचक ४ ऋर्थिन् ५ ॥ ४९ ॥

# ग्रहंकारवानहंयुः---

श्रहंकारयुक्त पुरुषके नाम २-श्रांङ्कारयत् १ श्राहंयु २ ॥

# -शुभंयुस्तु शुभान्वितः।

श्चमयुक्त पुरुषके नाम २०शंभयु १ श्चमान्वित२ दिव्योपपाङ्का देवा- देवताश्चोका नाम १—दिव्योपपादुक १ ॥
—नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥
मनुष्य, गी श्चादि 'जरायुज' कहलाते हैं ॥ ५०
स्वेदजाः कृमिदंशाद्या—
कीडा श्रोर डांस श्चादि 'स्वेदज' कहलाते हैं ॥
—पश्चिसपीद्योऽण्डजाः।
पन्नी, सर्पादि 'श्रण्डज' कहलाते हैं ॥
( हति प्राणिवर्गः)

उद्भिद्स्तहगुरुमाद्या— वृत्त, वेल, घास ग्रादि 'उद्भिद्' कहलाते हें॥ उद्भिद्धद्भिज्जमुद्भिद्म् ॥ ५१॥ उद्भिद्के नाम २—उद्भिद् १ उद्भिज २ उद्भिद् ३॥ ५१॥

सुन्दरं इचिरं चार सुषमं साधु शोभ-नम्। कांतं मनोरमं रूच्यं मनोजं मञ्जु मञ्जुलम्।। ५२॥

सुन्दरके नाम १२-सुन्दर १ रुचिर २ चारु ३ सुषम ४ साधु ५ शोमन ६ कान्त ७ मनोरम ८ इन्च ९ मनोज्ञ १० मञ्जु ११ मजुल १२ ॥५२॥

तदासेचतनकं त्रप्तेनीस्यन्तोयस्य दर्श-नात्।

जिसके देखनेसे तृप्तिके अन्तको प्राप्त न हो उसका नाम १-आसेचनक १॥

ग्रभीष्टेऽभीप्सितं हृंग्र द्यितं वह्नभं वियम् ॥ ५३ ॥

प्रियके नाम ६ — ऋमीष्ट १ श्रमीप्सित २ हवा ३ इयित ४ वस्त्रभ ५ प्रिय ६ ॥ ५३॥

निकृष्टपतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः । कुपूयकृत्सितावद्यवेटगृह्याग्रहाः समाः ॥ ५४ ॥

अवसके नाम १३-निकृट १ प्रतिकृष्ट २ अर्वेन् ३ रेफ ४ याप्य ५ अनम ६ अधम ७ कुपूर्य ८ कुत्सित ९ अन्य १० खेट १ गर्धा १२ अर्थाक १३॥५४॥ मलीमसं तु मिलनं कच्चरं मलक्षितम् मिलनके नाम ४—मलीमस १ मिलन २ कचर ३ मलद्षित ४॥

पूर्त पवित्रं मेध्यं च-

पवित्रके नाम ३ - पूत १ प वित्र २ मेध्य ३॥

—बींध्र तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

स्वभावसे निर्मलके नाम २—वीध्र ९ विमला र्थक २॥ ५५॥

# निर्णिक्त शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनव-करम्।

ग्रुद्ध किये हुएके नाम ५-निर्शिक्त १ शोधित २ मृष्ट ३ निःशोध्य ४ अनवस्कर ५ ॥

-ग्रसारं फल्गु-

श्रसार वस्तुके नाम २ - श्रसार १ फल्गु २ ॥
- शून्य तु वशिकं तुच्छिरिक्तके ॥ ५६ ॥
शून्यके नाम ४ - शून्य १ वशिक २ तुच्छ ३
रिक्तक ४ ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधान प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः। सुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवहींऽनवराध्यंवत् ॥ ५७ ॥ पराध्यांग्रप्राग्रहरप्राग्रयाग्रयाग्री-यमग्रियम् ।

प्रधानके नाम १७—प्रधान १ प्रमुख २ प्रवेक ३ अनुत्तम ४ उत्तम ५ मुख्य ६ वर्ष्य ७ वरेण्य ८ प्रवर्ह ९ अनवरार्ध्य १० ॥ ५७ ॥ परार्ध्य १९ अप्र १२ प्राप्तहर १३ प्राग्य १४ अध्य १५ अप्रीय १६ अप्रिय १७ ॥ ५७ ॥

श्रेयान् श्रेष्टः पुष्कतः स्यात्सत्तमश्चाति-शोभने ॥ ५८॥

श्रति सुन्दरके नाम ५-श्रेयस् १ श्रेष्ठ २ पुष्कल र् ३ सत्तम ४ श्रतिशोमन ५ ॥ ५८ ॥

स्युद्धत्तरपदे व्याञ्चग्रंगवर्षभकुञ्जराः। सिद्दशार्दूलनागाचाः पुंचि श्रेष्ठार्थगो-चराः॥ ५९॥

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुजर, सिंह, शार्दूल,

नागादि शब्दों के उत्तर आनेसे क्षेष्ठ अर्थके वाचक होते हैं जैसे पुरुष व्याघ्र, द्विजपुङ्गव इत्यादि ॥५९॥ अप्राय्यं द्वयहीं ने द्वे अप्रधानीपसर्जने । अप्रधानके नाम २-अप्रायथ श्रप्रधान २ उप-सर्जन ३ ॥

विशङ्कृटं पृथु षृहद्धिशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥ षडोहविपुलं—

चौड़ेके नाम ९-विशङ्कट १ पृथु २ बृहत् ३ विशाल ४ पृथुल ५ महत् ६ ॥ ६० ॥ वड्र ७ उरु ८ विपुल ९ ॥

-पीनपीवनी तु स्थूलपी वरे।

मोटेके नाम ४-पीन १ पीवन् २ स्थूल ३ पीवर ४॥

स्तोकालपश्चल्लकाः स्थमं श्लक्ष्णं दश्चं कृश-वतु ॥ ६१ ॥ स्त्रियां मात्रा त्रृटिः पुंचि स्वलेशक्षणाणवः ।

थोड़ेके नाम १४-स्तोक १ ऋत्प २ क्षुह्रक ३ सूक्ष्म ४ श्लक्ष्ण ५ दभ ६ इष्टरा ७ तत् ८ ॥६१॥ मात्रा ९ त्रुटि १० लव ११ ळेश १२ कर्णा १३ ऋणु १४ ॥

स्रत्यरुपेऽरिपष्टमरुपीयः कनीयोऽग्रीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

श्रति अल्पके नाम ४-अल्पिष्ठ १ श्रल्पीयसू २ कनीयस् ३ अणीयस् ४ ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदश्चे बहुलं बहु। पुरुद्दः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च॥६३॥

बहुत्के नाम १२--प्रभूत १ प्रचर २ प्राज्य ३ श्रद्भ ४ बहुत ५ बहु ६ प्रक्टू ७ पुरु ८ भूयिष्ठ ९ स्फार १० भूयस् ११ भूरि १२॥ ६३॥

परःशताद्यास्ते येषां परासंख्याशतादि-कात्।

जिनकी संख्या शतसे अर्थात सहस्रादिश्वे अधिक हो वह परःशत आदि कहताते हैं।

गगानीये तु गणेयं-

गिननेयोग्य वस्तुके नाम २-गणनीय १ गणेय २ ॥

# —संख्याते गणित—

गिने हुएके नाम २-संख्यात १ गणित २ ॥

—मध समं सर्वम् ॥ ६४ ॥ विश्वमशेषं कृत्स्तं समस्तिनिखिज्ञाखिलानि निःशेषम् । समग्रं सक्तं पूर्णमखण्डं स्याद्नूतके६५॥

सम्पूर्णके नाम १४ -- सम १ सर्व २ ॥ ६४ ॥ विश्व ३ श्रदेष ४ इतस्त ५ समस्त ६ निखित ७ अखिल ८ निःशेष ९ समग्र १० सकत ११ पूर्ण १२ अखण्ड १३ अनुनक १४ ॥ ६५ ॥

वनं निरन्तरं सान्द्रं—

घनेके नाम २-घन १ निरन्तर २ सान्द्र ३ ॥ पेलवं खिरलं तुनु ।

छितरे (छीदे) के नाम ३-पंतव १ विरत्त २ तनु ३ ॥

संमीपं निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडयत् । ६६॥ सदेशाभ्याशसविधसमयदिसवे-शवत् । उपकण्डान्तिकाभ्यण्भियत्रा-स्रप्यभितोऽज्ययम् ॥६७॥

समीपके नाम १५-समीप १ निकट २ आसन्न ३ सिन्नकृष्ट ४ सनीड ५ ॥ ६६ ॥ सदेश ६ अभ्याश ७ सनिघ ८ समर्योद ९ सनेश १० उप-कण्ठ ११ अन्तिक १२ अभ्यर्ण १३ अन्यम १४ अमितः १५॥ ६७॥

संसक्ते त्वव्यवहित नपदान्तरमित्यपि । मिले हुएके नाम ३-संसक्त १ अव्यवद्वित २ अपदान्तर ३॥

—नेदिष्टमन्तिकतमं—
श्रातिसमीवके नाम २—नेदिष्ठ १ श्रान्तिकतमं २।
—स्याद्द्रं विश्रक्षष्टकम् ॥ ६८ ॥
दूरके नाम २-दूर १ विश्रक्षष्ट<sup>3</sup>२॥ ६८॥
द्वीयश्च द्विष्ठं च सुदूरं-

श्रभ्यन्त दूरके नाम २~दवीयस् १ दविष्ठ २ सुदूर ३॥

-दीघमायतम्।

लम्बेकं नाम २-दीर्घ १ श्रायत २ ॥

वर्तुळं निस्तळं वृत्तं—

गोलके नाम ३-वर्तुल १ निस्तल २ वृत्त ३॥

बन्धुरं तुन्नतानतम् ॥ ६९ ॥

ऊँचेनीचेके नाम २-बन्धुर १ उन्नतानत १ ६९ उच्चमांश्रुवतोद्योच्चितास्तुङ्गे-

कॅचेके नाम ६~उचा १ प्रांद्य २ उन्नत ३ उदग ४ उच्छित ५ तुइत ६॥

-sय वामने । न्यङ्नीचखर्वद्वस्वाःस्यु-

बोने पुरुषके नाम ५-वामन १ न्यक् २ नीच ३ रार्व ४ हस्व ५॥

रवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥

नमे हुएके नाम ३—श्रवाप्र १ श्रवनत २ श्रानत ३॥ ७०॥

अरालं वृजिनं जिह्मपृमिमत्कुञ्चितं नतम्। भाविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक-मित्यपि॥ ७१॥

टेढ़ेके न'म ११-श्ररात १ वृजिन २ जिह्य ३ कार्भेमत् ४ कुष्टित ५ नत ६ श्राविद्ध ७ कुटिल ८ सुप्त ९ वेक्वित १० वक ११॥ ७१॥

ऋजावजिह्मप्रगुणी-

सीधेके नाम ३-ऋजु १ श्रजिहा २ प्रगुरा ३ ॥

-व्यस्ते त्व गुणाकुली।

व्याकुत्तके नाम ३-व्यस्त १ श्रप्रगुगा **२** श्राकुत ३॥

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनात-नाः॥ ७२ ॥

नित्यके नाम ५-शाश्वत १ श्वव २ नित्य ३ सदातन ४ सनातन ५॥ ७२॥

..स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेया—

श्रतिस्थिरके नाम ३—स्थास्तु १ स्थिरतुर २ स्थेयसु ३॥

-नेक ६पतया तुयः। कालव्यापी स कूटस्थः—

निश्चल रहनेवालेके नाम १-कूटस्थ १॥
स्थावरो जङ्गमेतरः॥ ७३॥
वृद्धादिकोंके नाम २-स्थावर १ जगमेतर२ ७३
चरिष्णु जङ्गमचरं चसमिङ्गं चराचरम्
चलनेवालेके नाम ६-चरिष्णु १ जगम २ चर
३ त्रस ४ इग ५ चराचर ६॥

चळनं कम्पन कम्प्रं चळं क्रोछं चला-चळम्॥७४॥ चश्रकं तरळं चैघ पारिष्ठः वपरिप्लवे।

कांपनेवालेके नाम १०--चलन १ कपन २ कस्प्र ३ चल ४ लोल ५ चलाचल ६ ॥ ७४ ॥ चश्चल ७ तरल ८ पारिप्लव ९ परिप्लव १० ॥

श्रातिरिक्तः समधिको— श्राधिकके नाम २-श्रातिरिक्त १ समधिक २ ॥ दृदसंधिस्तु सहतः ॥७५॥

मिलापके नाम २-हढसंघि १ संहत २॥ ७५॥

कर्कशं कठिनं क्र्रं कठोरं निष्दुरं दृढम् जठरं मूर्तिमन्मूर्ते—

कठिनके नाम ९-कर्कश १ कठिन २ क्रूर ३ कठोर ४ निष्ठुर ५ दढ ६ जठर ७ मूर्तिमत् ८ मूर्त्त ९॥

प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६॥

बढे हुएके नाम ३——प्रवृद्ध ९ प्रौड २ एधित ३॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रतनपुरातनचिरंतनाः ।

पुरानेके नाम ५-पुराया १ प्रतन २ प्रस्त ३ पुरातन ४ चिरन्तन ५ ॥

प्रत्यव्रोऽभिनवो नन्यो नवीनो नृतनो नवः॥७७॥ नृतनश्च- नथेके नाम ७-प्रत्यग्र ९ इप्रसिनव २ नव्य ३ नवीन ४ नूतन ५ नत्र ६ ॥ ७७ ॥ नूतन ७ ॥

# सुकुमार तु कोमळं मृदुळं मृदु।

सुकुमारके नाम ४-सुकुमार १ कोमल २ मृदुल ३ मृदु ४॥

स्रन्वगन्वश्रमतुगेऽतुपदं क्लीबमव्य-यम् ॥ ७८ ॥

पींछेके नाम ४ अन्वकू १ अन्वक्ष २ अनुग ३ अनुपद ४ ॥ ७८॥

प्रत्यंत्तं स्थादेन्द्रियक—

प्रत्यक्तके नाम २-प्रत्यक्त १ ऐन्द्रियक २॥

—मप्रत्यत्तमतीन्द्रियम् ।

जो न दीखे उसके नाम २——ग्रप्रत्यक् ९ श्रती-निद्रय २ ॥

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनाविषे ॥ ७९॥ अप्येकत्तर्गएकाऽप्येकाग्रचानग-गतोऽपि सः॥

एकाप्रके नाम ७—एकतान १ श्रनन्यवृत्ति २ एकाप्र ३ एकायन ४ ॥ ७९ ॥ एकसर्ग ५ एकान्य ६ एकायनगत ७ ॥

वुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाचा-

पहिलेके नाम ५-म्यादि १ पूर्व २ पौरस्त्य ३ प्रथम ४ म्राच ५॥

—ग्रथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥ ग्रन्तो जेघन्यं चरममन्त्यवाश्चात्त्यपश्चिमाः ।

पिछलेके नाम ६-॥८०॥ अन्त १ जघन्य २ े चरम ३ अत्य ४ पाश्चात्त्य ५ पश्चिम ६ ॥

मोंघ निरर्थकं-

व्यर्थके नाम २-मोघ १ निरर्थक २॥

-स्पष्टं रफुटं प्रव्यक्तसुरुवणम् ॥ ८१ ॥

स्पष्टके नाम ४-स्पष्ट १ स्फुट २ प्रन्यक्त ३ उल्बंगा ४॥८१॥

साधारणं तु सामान्य-

सामान्यके नाम २-साधारण १ सामान्य २ ॥
मेकाकी त्वेक एककः ।
श्रकेलेके नाम ३--एकाकिन् १ एक २ एकक ३
भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतराविष ॥ ८३ ॥

श्रन्थके नाम ६—भिन्न १ श्रन्थतर २ एक ३ त्व ४ श्रन्थ ५ इतर ६ ॥ ८२ ॥

उच्चावचं नैकभेद्—
श्रनेक प्रकारके नाम २—उषावच १ नैकमेद २
— मुच्चण्डमिवलम्पितम् ।
शीव्रके नाम २—उचण्ड १ श्रविलिम्बित २ ॥
ध्यखंतुद्स्तु मर्मस्पृ—
मर्मभेदके नाम २—श्रक्तुद १ प्रमस्पृश्च २ ॥
गवाधं तु निरर्गळम् ॥ ८३ ॥
जिसके कोई बाधा न हो उसके नाम २—श्रवाध
१ निर्गल २ ॥ ८३ ॥

प्रसन्धं प्रतिकूळं स्याद्पसन्यमपन्तु च। विपरीतके नाम ४—प्रसन्य १ प्रतिकृत २ ऋपसन्य ३ ऋपन्दु ४॥

वामं शरीरं सव्यं स्या—
वांग्रे श्रगका नाम १-श्रपसव्य १ ॥ ८४ ॥
द्रष्टसव्य तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥
दिहने श्रगका नाम १-श्रपसव्य १ ॥ ८४ ॥
संकटं ना तु संवाधः—
संकट (भीड़ मार्गश्रादि) के नाम २-सकट १
रसंवाध २ ॥

# किछं गहनं समे।

जो बडे ही दुःखसे प्राप्त होनेके योग्य हो उसके नाम २-कलिल १ गहन २॥

संकीण संकुलाकी ग्रे—

नाना जातिके लोगोंके एकत्र बैठनेके नाम ३--स्वकीर्ण १ संकुत २ आकीर्ण ३ ॥ सुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥ सुण्डे हुएके नाम १-सुण्डित १ परिवापित २ ॥ ८५॥

# ग्रन्थितं सन्दितं दब्धं-

ग⊿ठे हुएके नाम ३-प्रनिंथत ९ संदित २ इब्घ ३॥

फैले हुएके नाम ३-विस्तत १ विस्तृत २ तत ३

# -विसृतं विस्तृतं ततम्-

भ्रन्तर्गतं विस्मृतं स्यातः
भूले हुएके नाम २-श्रंतर्गत १ विस्मृत २ ॥
प्राप्तप्रिचितं समे ॥ ८६ ॥
रक्खे हुएके नाम २-प्राप्त १ प्रिचिह्त २ ॥८६॥
वेद्घितप्रेखिताधृतचाह्यताकम्पिताधृते ।
थोड़ा कांपते हुएके नाम ६-वेष्ठित १ प्रेखितः
२ श्राधृत ३ चित्तत ४ श्राकपित ५ धृत ६

#### तुत्ततुत्रास्तनिष्ठयूताविद्धितिरिताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रेरितके नाम ७--तुक्त १ नुझ २ अस्त ३ निष्ठचत ४ आविद्ध ५ क्षिप्त ६ ईरित ७॥ ८७॥

# परिक्षिप्तं तु निवृतं-

घेरे हुएके नाम २-परिक्षिप्त १ निवृत २॥

# -मूषितं मुषितार्थकम्।

नुराय हुएके नाम २-मूषित १ मुषित २ ॥ प्रवृद्धप्रसृते--

फैलनेके नाम २-प्रवृद्ध १ प्रस्तत २ ॥ न्यस्तिनिस्रष्टे-

फेंके हुएके नाम २-न्यस्त १ निस्रष्ट २॥ गुरियाताहते॥ ८८॥

गुणे हुएके नाम २-गुणित १ श्राहत २ ।।८८॥ निदिग्धोपचिते--

बढ़े हुएके नाम २-निदिग्ध १ उपचित २ ॥ -गूदगुप्ते- छिपे हुएके नाम २—गूढ १ गुप्त २ ॥

# —गुण्डितकथिते।

धूलिसे सने हुएके नाम २-गुण्ठित १ सिवत ?

# द्रुतावदीर्गे-

द्रवीभूतके नाम २-द्रुत १ श्रवदीर्ण २ ॥

# -उद्गृशींचते---

मारनेको उठाये हुए शस्त्रादिके नाम २---उद्गूर्ण १ उचत २॥

# -काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥

छीकेपर घरी हुई वस्तुके नाम २ — काचित १ शिक्यित २ ॥ ८९ ॥

#### -व्राणवाते-

स्ंघे हुएके नाम २- घारा १ घात २ ॥

#### -दिग्धलिप्ते-

बीपे हुएके नाम २-दिग्ध १ लिप्त २ ॥

#### -समुद्कोद्धृते---

क्पादिसे निकाले हुए जलादिके नाम २—समु-- दक्त १ उद्भुत २ ॥

#### -समे।

उपरोक्त शब्द समानलिंग होते हैं।

# वेष्टितं स्याद्धलयितं संवीतं रुद्धमाषु-तम् ॥ ९०॥

नदी त्रादिसे घेरे हुएके नाम ५-वेष्टित १ वलियत २ संवीत ३ रुद्ध ४ आवृत ५ ॥ ९०॥

# रुग्ण भुग्ने--

द्रटे हुएके नाम २-स्ग्रा १ भुन्न २ ॥

# -ऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते।

तेज किये हुएके नाम ४-निशित १ क्णुत २ शात हे तेजित ४॥

# स्याद्विनाशोनमुखं पक्व-

पके हुए मरने वा काटनेके घोग्य बातुके नाम २---विनाशोन्मुख १ पक्ष १ ॥

# -ह्वीणह्रीतौ तु लिजते॥ ९१॥

लज्जायुक्तके नाम ३-हीया १ ह्रीत २ लज्जितः ३ ॥ ९१॥

# वृत्ते तु वृतव्यावृत्ती-

वरण किये हुएके नाम ३—वृत्त १ वृत २ व्यावृत्त ३॥

# -संयोजित उपाहितः।

मिलाये हुएके नाम २-संयोजित १ उपाहित १॥

#### प्राप्य गम्यं समासाब-

प्राप्त करने योग्यके नाम ३---प्राप्य १ गम्य २ समासाय ३॥

#### -स्यन्नं रीगा स्तुतं सुतम् ॥ ९२ ॥

बहते हुएके नाम ४-स्थन्न १ रीए। २ स्नुत अ खुत ४ ॥ ९२॥

#### संगृष्टं स्यास्तंकलितो-

जोड़े हुए श्रंकादिके नाम २—संगूढ १ संकलित २॥

# -ऽवगीतः ख्यातगर्हणः।

निन्दितके नाम २-अवगीत १ ख्यातगईण १॥

### विविधः स्याद्वहुविधो नानारूपः पृथ-ग्विधः ॥ ९३ ॥

विविध प्रकारके नाम ४-विविध १ बहुविध २ नानारूप ३ पृथिविध ४।। ९३॥ :

# ग्रवरीगो धिक्कृतश्चा-

धिक्कारे हुएके नाम २-श्रवरीण १ धिक्कतर।

# -प्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः।

चूर्ण किये हुएके नाम २—श्रवण्यस्त के श्रवर्ची्रात २ ॥

#### यनायासकृते फाण्टं-

श्रनायाससे किये क्वायका नाम १-फाण्ट १ ॥

# स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥

जिसने शब्द किया हो उसके नाम १---स्त्रुनिहा १ व्यक्तित ३ ॥ ९४ ॥ बद्धे सन्दानित मृतमुह्ति सदितसितम्

बंधे हुएके नाम ६—बद्ध १ सन्दानित २ मूत ३ मुद्दित ४ सदित ५ सित ६ ॥

#### निष्पक्वे क्वथिते---

श्रन्छी त्ररह पकायं हुए काढ़े श्रादिके नाम २— निष्पक्र १ क्रिथित २ ।।

-षाके श्रीराज्यहाचिषां श्रुतम् ॥ ९५ ॥ पके हुए वृत, तुम्वादिका नाम १-श्वत १॥९५ निर्वाणो सुनिवहचादौ-

मुनि श्रप्ति श्रादिके मुक्त होनेका नाम १----

# निवातस्तु गतेऽनिछे।

जब वायु न चलता हो उस समयका नाम-१-निर्वात १ ॥

# पक्वं परियाते-

पके हुएके नाम २--पक्व १ परिशात २॥

,−गूनं हन्ने−

हगे हुएके नाम २--गून १ हन्न २ ॥ स्रीटं तु मुजिते ॥ ९६ ॥

मूते हुएके नाम २ मीड १ मूत्रित २ ४९६४
 पुष्टं तु पुषितं—

पोषणा किए हुएके नाम २--पुष्ट १ पुषित २ ॥

ं '--सोढे चान्त-

सहे हुएके नाम २--सोढ़ १ ज्ञान्त २ ॥

🕯 -मुद्धान्तमुद्रते ।

डाके हुए अन्नादिके नाम २--उद्घान्त १ उद्गत**२** 

दान्तस्तु दमिते—

ं दंसनं किये वृषभद्यादिके नाम २-दान्त १ दमित २॥

ेशान्तः शमिते-शमनको प्राप्त हुएकै नाम २-शांतं । शमितः -प्राधितेऽदितः ॥ ९७ ॥

मांगे हुएके नाम २-प्राधित १ व्यदित २ ॥९७॥

ज्ञामस्तु ज्ञिपिते
जाने हुएके नाम २-ज्ञप्त १ ज्ञपित २ ॥

-छ्न्नश्ळादिते
छायेके नाम २-छन्न १ छादित २ ॥

-पूजितेऽश्चितः ।

पूजा किय गयेके नाम २-पूजित १ अधित २ पूर्णस्तु पूरिते---

पूरेके नाम २-पूर्ण १ पूरित ३ ॥

—क्लिष्टः क्लिशिते—

क्लेशितके नाभ २-क्लिप्ट १ क्लिशित २ ॥

-ऽवस्तिते सितः ॥ ९८ ॥

समाप्तके नाम २-श्रवसित १ सित २ ॥९८॥

भुष्टप्छुप्टोषिता दग्धे—

जले हुएके नाम ४—- प्रुष्ट १ प्लुष्ट २ उषित ३ दग्ध ४॥

तष्टत्वष्टौ तनूकृतं ।

मूक्स किये गयेके नाम ३---तष्ट १ त्वष्ट २ तनुकत ३॥

वेधितच्छिद्रितौ विद्रे—

छेदे हुएके नाम ३-वेघित १ छिद्रित २ निद्ध ३ विन्निषित्तौ विचारिते॥ ९९॥

विचारं हुएके नाम ३—विन्न १ विला २ विचारित ३ ४ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ-

-विलीने विद्युतद्वृतौ ।

ं पिषल जानेके नाम ३— विलीन १ विद्वत २ द्वुत ३ ॥ सिंद्र निर्वृत्तनिष्पन्नी-

सिद्धके नाम ३-सिद्ध १ निर्श्त २ निष्पन्न ३॥ -दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १००॥

चीर हुएकं नाम ३—दारित १ भिन्न २ भेदित ३॥ १०० ॥

**डतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंत्रतेः** तंतुके विस्तारके नाम ३—इतः ९ स्यूत २ उत ३॥

स्याद्धिते नमस्यितं नमसितमपचायि-तार्चितापचितम् ॥ १०१ ॥

. पूजितके नाम ६-ऋहिंत १ नर्मास्यत २ नम-सित ३ अपचायित ४ ऋचिंत ५ अपचित ६ ॥ १०९॥

षरिवासिते वरिवस्यितसुपासित चोप-चरितं च ।

सेवा किये गयके नाम ४-वरिवस्ति १ बरि-वंस्थित २ उपासित ३ उपचरित ४ ॥

संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दुनश्च॥ १०२॥

तपाये हुएके नाम ५-सन्तापित १ सन्तप्त २ स्रूपित ३ भ्रृपायित ४ दून ५ ॥ १०२ ॥

हर्ष्टे मत्तरतृप्तः प्रह्नन्नः प्रमुदितः प्रीतः हर्षितके नाम ६-हष्ट १ मत्त २ तृप्त ३ प्रह्नन्न४ अमुदित ५ प्रीत ६ ॥

क्रिने छात सूर्व ईकृतं दातं दितं क्रित षुक्गाम् ॥ १०३ ॥

कार्टे हुएके नाम ८-छिन्न १ छात २ छून ३ इत्त ४ दात ५ दित ६ छित ७ दृश्या ८॥१०३॥

/ स्त्रस्तं ध्वस्त भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं चयुतं

गिलितम्।

चुये हुएके नाम ७—स्नस्त १ व्वस्त २ भ्रष्ट ३ स्कन्न ४ पन्न ५ च्युत ६ गलित ७ ॥

लब्धं प्राप्त विद्नं भावितमासादितं च भृतं च ॥ १०४ ॥ । पाये हुएके नाम ६—त्तब्ब १ प्राप्त २ विन्न ३ भावित ४ ब्यासादित ५ भूत ६ ॥ १०४॥

ग्रन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम्।

हुँढे हुएके नाम५-अन्वेषित १ गवेषित २ अन्विष्ठ १ मार्गित ४ मृगित ५ ॥

्याई साई क्रिनं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुतं च॥ १०५॥

ा मीजे हुएके नाम ७—माई १ साई २-क्लिन ३ तिमित ४ स्तिमित ५ समुन्न ६ उत्त ७ ॥ १०५॥

चातं चागं रक्षितमचितं गोपायितं च गुप्तं च ।

रच्चा किथे गयेके नाम ६-त्रात १ त्राण १ रिवत ३ श्रवित ४ गोपायित ५ ग्रुप्त ६ ॥

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभृते ॥ १०६॥

श्रपमान किये गयेके नाम ५-श्रवगणित १ श्रव-मत २ श्रवज्ञात ३ श्रवमानित ४ परिभूत५॥१०६॥

त्यक्तं हीन विघुत समुग्झितं **भूतमु**-रसृष्टे।

ं त्यागे हुएके नाम ६—त्यक्त १ हीन १ विद्युत ३ समुज्ञिकत ४ धृत ५ उत्सृष्ट ६ ॥

उक्त भाषितमुद्धितं जल्पितमाख्यातम-भिद्धितं लपितम् ॥ १०७ ॥

कहें हुएके नाम ७—उक्त १ भाषित २ उदितः ३ जल्पित ४ श्राख्यात ५ श्रीमहित ६ लिपतः ७ ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधित मनितं चिदितं प्रतिपन्नम-वसितावगते।

ं जाने गयेके नाम ७--- बुद्ध १ व्यथित २ मनितः ३ विदित ४ प्रतिपन्न ५ श्रवसित ६ श्रवगत ७ ॥

करीकृतसुररीकृतमंगीकृतमाश्रुतंप्रति-ज्ञातम् ॥ १०८ ॥संगीर्णविदितंसश्चतसमा-हितोपश्चतोपग्रतम् । श्रंगीकार किये हुएके नाम ११—स्रीकृत १ इरिकृत २ श्रंगीकृत ३ श्राश्चत ४ प्रतिज्ञात ५ ॥ १०८॥ संगीर्ण ६ विदित ७ संश्रुत ८ समाहित ९ इपश्रुत १० उपगत ११॥

# ईलितशस्तपणायितपनायितपणुतपणि-तपनितानि ॥ १०९॥ सम्मार्णवर्णिताभि-स्द्रतेडितानिस्तुतार्थानि ।

स्तुति किये गयेके नाम १२ — ईलित १ शस्त २ मध्यायित ३ पनायित ४ प्रणुत ५ पियात ६ पनित । १ १०९ ॥ श्रवगीर्ण ८ वार्यित ९ श्रमिण्डुत १० ईडित ११ स्तुत १२ ॥

# अज्ञितचर्वितलीड्यत्यवसितगिलितखा-दितप्सातम् ॥ ११०॥ अभ्यवहतान्नजग्ध-स्रस्तस्रस्ताशितंभुक्ते ।

खाये गयेके नाम १४—अक्षित १ नर्वित २ खीढ ३ प्रत्यवसित ४ गिलित ५ खादित ६ प्सात ७ ॥ १९०॥ अभ्यवहृत ८ अभ ९ जग्ध १० प्रस्त ११ गलस्त १२ अशित १३ सुका १४॥

# च्चेषिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंदि-ष्टाः ॥ १९१ ॥च्चिप्रश्चुद्राभीष्सितपृथुपीवर-बहुलप्रकर्षार्थाः ।

श्रितशय करके त्वरितका नाम—क्षेपिष्ठ १॥
श्रितशय श्रुद्रका नाम—क्षेदिष्ठ १॥ श्रितशय
श्रिमीप्सतका नाम—प्रेष्ठ १॥ श्रितशय प्रशुका
नाम—वरिष्ठ १॥ श्रितशय स्थूलका नाम—स्थिविष्ठ
१॥ श्रितशय बहुलका नाम—वंहिष्ठ १॥ १९१॥

# साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दि हाः॥ ११२॥ बाढव्यायतबाहुगुरुवामन-वृन्दारकातिशये।

श्रितशय बाढका नाम—साधिष्ठ १ ॥ श्रितशय दीर्घका नाम-द्राधिष्ठ १ ॥ श्रितशय अनुरका नाम-स्फेष्ठ १ ॥ श्रितशय गुइका नाम-गरिष्ठ १ ॥ श्रितशय इस्वका नाम-इसिष्ठ १॥ श्रितशय वृन्दा-रकका नाम-वृन्दिष्ठ १॥ ११९॥

# इति विद्योषयन्त्रिवर्गः ॥ १ ॥

# ग्रथ संकीर्णवर्गः २.

प्रकृतिप्रत्ययाथिः संकीणं लिङ्गमुन्नयेतः
प्रकृतिप्रत्यय श्रादिके श्रथेंकि द्वारा संकीर्णवर्गमें ै
लिग जानने ॥

#### कर्म क्रिया-

कियाके नाम २—कर्मन् १ किया २ ॥
—तत्सातत्ये गण्ये स्युरपरस्पराः ॥१॥
अपरस्परोके निरन्तर चलनेका नाम १—अपरस्पर १ ॥ १ ॥

# साकस्यासंगवचने पारायणपरायणे।

साकस्यके वचनका नाम १-पारायस १ ॥
आसंगके वचनका नाम १-परायस १॥

# यहच्छा स्वैरिता-

स्वतन्त्रताके नाम २-यदच्छा १ स्वैरिता २ ॥ देतुशून्या स्वास्या विकाशसम्॥ २ ॥ विना कारणकी स्थितिका नाम १---विलय्स

।वना कारगुका स्थातका नास ५---

शमथस्तु शमः शान्ति— शांतिके नाम ३-शमथ १ शम २ शांति ३ ॥

—दीन्तिस्तु दमधो दमः। इंद्रियोके रोकनेके नाम ३—दाति १ दमथ २ दम ३॥

# ग्रवदानं कर्मवृत्तं—

श्रच्छे कर्मके नाम २-श्रवदान १ कर्मकृत २॥

—काम्यदानं<mark></mark>≝प्रवारगाम् ॥ ३ ॥

कामना करके दान देनेके नाम २-काम्यदान १ प्रवारण २ ॥ ३ ॥

# वशकिया संवननं

वशीकरणके नाम २-वशिकया १ सेवनन २॥

—मृलकर्म तु कार्मग्राम्।

स्रोपधीकी जड़ श्रादिसे उचाटनके नाम २— सूसकर्म १ कार्नण १ ॥ विध्नतं विध्वतं —

कांपनेके नाम २-विधूनन १ विधुवन २ ॥

—तर्पणं प्रीगानावनम् ॥ ४ ॥

तृप्तिके नाम ३---तर्पण १ प्रीणन २ अवन ३॥४॥

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं इस्तधारणिम-न्यपि।

कोई किसीको मारता हो उसके रोक लेनेके अर्थ हाथ पकड़ लेनेके नाम ३-पर्याप्ति ९ परि-आषा २ हस्तधारण ३ ॥

सेवनं सीवनं स्यूति-

सीनेके नाम ३-सेवन १ सीवन २ स्यूति ३ ॥ विंदरः स्फटनं भिदा ॥ ५ ॥

**फटनेके** नाम ३—विदर १ स्कटन २ भिदा

3 N 4 K

आक्रोशनमभीषङ्गः---

गरियानेके नाम २-आक्रोशन १ अमीपक्र २ ॥

संवेदो वेदना न ना।

अनुमवज्ञानके नाम २-संवेद १ वेदना २ **॥** 

सम्मृर्क्छनमभिन्याप्ति-

सत्र ह्योरसे व्याप्तिके नाम २—सम्मुर्व्छन १ अमिन्याप्ति २॥

-यांच्या भिन्नाऽर्यनार्दना ॥ ६ ॥

भीखके नाम ४—याच्छ्रा १ मिक्षा २ व्यर्थना क्यारा ४॥६॥

वर्धनं छेद्ने--

कारतेके नाम २-वर्धन १ छेटन २॥

—ऽथ दे चानन्दनसभाजने । चाप्र-च्छन्न —

कुराल प्रश्न पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके नाम ३-आनन्द १ समाजन २ आप्रच्छन्न ३ ॥

-मथास्रायः संप्रदायः-

गुरुके उत्तम परम्परा उपदेश करनेके नाम २--म्राम्नाय १ सम्प्रदाय १ ॥

-श्रये चिया ॥ ७ ॥

स्य होनेके नाम २-स्य १ क्षिया २॥ ७॥

ग्रहे ग्राहो-

लेनेके नाम २-प्रह १ प्राह २ N

-वशः कान्तौ--

इच्छाके नाम २-वश १ कांति २ N

—रहत्त्वाचाणे—

रद्वाके नाम २-रक्षा १ त्राषा २॥

रगाः क्वजे ।

शब्द करनेके नाम २-रण १ वन्या २ ॥

व्यधो बेधे---

छेदनेके नाम २-व्यध १ वेध २ ।।

-पचा पाक-

अजादि पकानेके नाम २-पचा १ पाक र 🗯

-हनो हती-

बुलानेके नाम २-हव १ हृति २ ४

—वरो वृतौ ॥ ८॥

वरदानके नाम २-वर १ वृति २ ॥ ८ ॥

ओषः प्लोषे---

जलानेके नाम २-श्रोष १ प्लोष २ 🕻

—नयो नाये—

नीतिके नाम २-नय १ नाय २॥

--ज्यानिजींगौं--

जीर्णतांक नाम २-ज्यानि १ जीर्ण २ ॥

—श्रमो भ्रमौ।

अमके नाम २-अम १ अमि २ ॥

—स्फातिर्वृद्धौ**—** 

बबतीके नाम २-स्फाति १ वृद्धि २ ॥

-प्रया ख्याती-

प्रसिद्धताक नाम २-प्रथा १ स्थाति २ ॥ -स्पृष्टिः पृक्तौ-छनेके नाम र-स्पृष्टि १ पृक्ति २ ।। ः — स्तवः स्रवे ॥ ९ ॥ करने दे नाम २ — सव १ सव २ ॥ ९ ॥ एधा समृद्धी-वृद्धिके नाम २-एधा १ समृद्धि २ ॥ — म्फ्ररणे स्फ्ररणा— फडकनेके नाम २-एफरण १ स्फुरणा २ ॥ —प्रमिती प्रमा। यथार्थजानके नाम २—प्रसिति १ प्रगा २ ॥ प्रसृतिः प्रसचे--जन्म होनेके नाम २-प्रसृति १ प्रसव २ µ च्योते प्राधारः-घृतादिके चुश्रनेके नाम २-च्यात १ प्राघार २॥ ्—क्रमथः क्रमे ॥ १० ॥ ग्लानिके नाम र-वलमथ १ वल्म २ ॥१०॥ उत्कर्षोऽतिशये-प्रकर्षके नाम २-उत्कर्ष १ ऋतिशय २ ॥ संब्रिः श्लेषे-मिलापके नाम २-संधि १ इलेष २ ॥ विषय ग्राश्रये। श्राश्रयके नाम र्-विषय १ श्राश्रय २ । क्षिपायां द्वेपग्रा— फेंकने ( प्रेश्णे ) के नाम २-क्षिपा १ क्षेप्रारः

शुर्गाश्चमे ॥ ११ ति उद्यमके नाम, २-गुरमा १ उद्यम २ ॥ ११ ॥ उन्नाय उत्तये---

बीजने (निगर्जने ) के नाम २- गीर्शि १

-गीर्शिर्गिरी-

निरि२॥

छप्रको ले जानेकं नाम २-उन्नाय १ उन्नय २।

-श्रायः श्रयणे

सेनाके नाम २-श्राय १ श्रयण २ ॥

-जयने जयः ।

जीतके नाम २-जयन १ जय २ ॥

तिगादो निगदे

कहनेके नाम २-निगाद १ निगद २ ॥

-मादो मद

हर्षके नाम २-माद १ मद २ ॥

- उद्देग उद्धमे ॥ १२ ॥

घवडानेके नाम २-उद्देग १ उद्धम २ ॥ १२ ॥

कुकुम श्रादि मर्दनके नाम २-विमर्दन १ परिमत्त २ ॥

# ऽम्युपपत्तिरतुग्रहः ।

विमर्दनं परिमले-

् हित करने, ऋहित हटानेकी प्रवृत्तिक नाम २-अभ्युपपत्ति १ अनुप्रह २ ॥

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्या—

अनुप्रहसे विपरीतका नाम १-निप्रह १ ॥

—दभियोगस्त्वभिग्रहः॥ १३॥

लड़ाईमें ललकारनेके नाम : २--- अभियोग । अभिग्रह २ ॥ १३॥

# ूं ग्रुष्टिबन्धस्तु संग्राहो-

मूठीसे दढ़ पकड़नेके नाम २—मुहिबन्ध 🦠 संप्राह २ ॥

# —डिम्बे डमरविप्रवौ ।

मनुष्योके छुटनेके नाम ?- टिग्व १ टमर १ विप्लव ३ ॥

# बन्धनं प्रसितिश्चारः—

बाधनक नाम २-वन्धन १ प्रशिति २ चार है। स्पर्शः स्पष्टोपतस्रि ॥ १४८॥ सन्तापको प्राप्त हुए पुरुषके नाम ३-न्स्पुर्श १ स्पष्ट्र २ उपनप्तु ३ ॥ १४ ॥

#### निकारो विप्रकारः स्या--

अपकारके नाम २--निकार १ विप्रकार २ ॥ दाकारस्तिवंग इंगितम् ।

श्रभिप्रायके श्रनुसार चेष्टाके नाम ३--श्राकार १ इङ्ग २ इङ्गित ३ ॥

### परिगामो विकारो द्वे समे ·विकृतिवि-क्रिये॥ १५॥

प्रकृति बदल जाने के नात ४--परिग्रात १ विकार २ विकृति ३ विकिया ४ ॥ १५ ॥

#### श्रपहारस्त्वपचयः --

श्रपहरराके नाम २--श्रपहार १ श्रपचय २ ।।

#### समाहारः सबुच्चयः।

बटोरनेके नाम २-समादार १ समुच्य २ ।।

प्रत्याद्वार उपादानं —

**इन्द्रियोंके** खींबनेके नाम २--प्रत्याहार ९ **उपादान २**॥

# विहारस्तु परिक्रमः॥ १६॥

' खेलनेमें पैदल चलनेके नाम २--विहार १ परिक्रम २ ॥ १६ ॥

# ग्रभिहारोऽभिग्रहणं—

चौरी करनेके नाम २--श्रिभहार १ श्रिभग्रहण्:।

# निर्हारोऽभ्यवकर्षणम्।

युक्तिपूर्वक शस्त्रादि निकालनेक नाम २----निर्हार १ श्रभ्यवकर्पण २ ।।

# **अनुहारोऽनुकारः** स्या-

बिडम्बना अर्थात् नकल करनेके नाम २---अनुहार १ अनुकार २ ॥

द्यस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥ स्व करनेका नाम १--व्यय १ ॥ १० ॥ प्रवाहस्य प्रकृतिः स्यात् । ॥ -

जलश्रादिकी निरन्तर गतिके नाम २:-प्रवाह १ प्रवृत्ति २ ॥

# -प्रवहो गमनं बहिः।

बाहर जानेका नाम १--प्रवह ैं १

# वियामो विषमो यामो यमः संयामसं-यमौ॥ १८॥

संयमके नाम ६--वियाम १ वियम २ याम ३ यम ४ संयाम ५ सयम ६ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्नाभिचारः स्था-

मार डालंनेके नाम २--हिमार्क्य १ श्रनिचार २ जागर्या जागरा द्वयोः

जागनेके नाम २--जागर्या १ जागरा २ ॥

विक्नोऽन्तरायः प्रत्यृहः-

विष्तके नाम ३--विष्त १ अन्तराय २ प्रत्यूह३।

-म्यादुपच्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ **॥** 

समीपके त्राध्यके नाग २--उपन्न १ स्रितिकार व श्रय २ ॥ ९९ ॥

निवेंश उपभोगः स्या-

उपभागके नाम २ निवंश १ उपभोग २ ।।

-त्परिसर्पः परिक्रिया ।

परिवारके घेरनेके नाम २--परिसर्प १ परि--

# विधुर तु प्रविश्लेषो-

श्रस्यन्त वियोगके नाम २--विधुर १ प्रविश्लेष २

-ऽभिपायश्क्वन्द् ग्राशयः ॥ २० ॥

श्विभिप्राय अर्थात् मनकी वानके नाम ३---ग्रिभिप्राय १ छन्द २ आशय ३ ।। २० ॥

# संब्रेपणं सममनं-

संक्षेपके नाम २--महोपरा १ सगसन २ ॥

—पर्यवस्था विरोधनम्।

विरोधक नाम २-पर्यवस्था १ विरोधन २ ॥

परिसर्था परीसादः ా 👵 🛷 🧭

सबं श्रोर गमन करनेके नाम २--परिसर्वा १ परीसार २॥

स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥ श्रासनस्थितिके नाम ३---श्रास्या १ श्रासना २ स्थिति ३ ॥ २१ ॥

विस्तारो विग्रहो व्यासः—

विस्तारके नाम ३-विस्तार १ विद्रह २ न्यास ३॥

स च शब्दस्य चिस्तरः । शब्दके विस्तारका नाम १-विस्तर १ ॥ संवाहनं मर्दनं—

पांव श्रादिके दावनेके नाम २---संवाहन १ मर्दन २॥

-स्याद्धिशाशः स्याद्दश्वनम् ॥ २२ ॥ न देख पडनेके नाम २---विनाश १ श्रदशेन २ ॥ २२ ॥

—संनिधिः संनिकर्षग्राम् ॥ २३ ॥ े पड़ोस (निकट) के नाम २—सनिधि १ सनिकर्षग्र २ ॥ २३ ॥

लवोऽभिलावो लवने-

काटनेके नाम ३-लव १ श्रमिताव २ लवन ३ --निष्पावः पवने पवः।

श्रज्ञादि पञ्जोरने ( बरसाने ) श्रादिके नाम ३--जिल्लाव ९ पवन २ पव ३ ॥

मस्तावः स्यादक्षर्थः

प्रसङ्घके नाम २-प्रस्ताव १ अवसर २ ॥
- स्वास्यः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
जुलाहे लोग जिस तरह सूत्रको लटते हैं उस
कियाके नाम २-त्रसर १ सूत्रवेष्टन २ ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः-

गर्भिणी होनेके नाम २--प्रजन १ उपसर १ ॥

-प्रश्रयप्रणयौ समौ।

प्रेमके नाम २-प्रश्रय १ प्रण्य २ ॥

धीशक्तिनिष्क्रमो-

भी (बुद्धि) शक्तिके नाम २--भीशक्ति १ निष्कम २॥

-ऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः॥ २५॥ कठिन रास्तेके नाम १-संक्रम १ दुर्गसचर २॥ २५॥

प्रत्युरक्रमः प्रयोगार्थः-
युद्धके ऋर्थ तैयारी करनेके नाम २-प्रत्युत्कम १
प्रयोगार्थ २ ॥

प्रक्रमः स्याद्भुषक्रमः । स्याय्भ्यादान सुदात धारम्भः-

श्वारम्भमात्रके नाम ५-प्रक्रम १ उपक्रम १ अभ्यादान ३ उद्घात ४ आरम्म ५ ॥

संश्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥
वेगके नाम २-संश्रम १ त्वरा २ ॥ २६ ॥
प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भो-कार्य कक जानेके नाम २---प्रतिबन्ध १
प्रतिष्टम्म २ ॥

-- Sवनायस्तु निपातनम् ।

गिरनेके नाम २-श्रवनाय १ निपातन २ ॥
उपलम्भस्रवनुभवःसालात् करनेके नाम २-उपलम्म १ श्रतुभवः
--समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
चन्दनादिके लेपनके नाम :२--समालम्भ १
विलेपन २ ॥ २७ ॥

विमलम्भो विमयोगो—
वियोगके नाम २-विप्रलम्म १ विमयोग २॥
—विलम्भस्त्वतिसर्जनम्।
दानके नाम २-विलम्भ १ श्रतिसर्जन २॥
विश्रावस्तु प्रतिख्याति—
श्रतिप्रसिद्धिके नाम २-विश्राव १ प्रतिख्याति॰
—रवेचा प्रतिजागरः॥ २८॥

वस्तुओं के देखनेके नाम २—श्रवेचा १ प्रति-जागर २ ॥ २८ ॥

# निपाठनिपठौ पाठे-

पढ़नेके नाम ३—निपाठ १ निपठ २ पाठ ३ ॥

—तेमस्तेमौ समुन्दने।

गीला होनेके नाम ३-तेम १ स्तेम २ समुन्दन ३॥

#### षादीनवास्त्रवी क्लेशे-

क्लेशके नाम ३-आदीनव १ आसव २ क्लेश ३ मेळके सद्भसङ्गमी ॥ २९ ॥ मेळके नाम ३-मेलक १ संग २ संगम ३ १२९। संवीक्षणं विचयन मार्गणं मृगणा मृगः अच्छे प्रकार इँढ्नेके नाम ५-संवीक्षणं १ विचयन २ मार्गणं ३ मृगणा ४ मृग ५ ॥

परिरम्भः परि**षं**गः संश्लेष उपगृहनम्

प्रेमपूर्वक लिपट जानेके नाम ४-परिरम्भ १ परिष्वंग २ सुरुष ३ उपगृहन ४॥ ३०॥

निर्वर्णनं तु निष्पान दर्शनाळोकनेच्चणम् देखनेके नाम ५-निर्वर्णन १ निष्यान २ दर्शन ३ श्रालोकन ४ ईक्षण ५ ॥

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निरा-कतिः॥ ३१॥

निराकारके नाम ४-प्रत्याख्यान १ निरसन २ अत्यादेश ३ निराकति ४ ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्यायश्यनार्थकौ।

श्रतुक्रमसे पहरेपर जागने सोनेवालेके नाम रू-उपशाय १ विशाय २ ॥

स्रतंनं च ऋतीया च ह्याीया च ह्या-र्थकाः ॥ ३२ ॥

करुणा वा घिन।नेके नाम ४-व्यर्तन १ ऋतीया **२** हणीया ३ घृणा ४ ॥ ३२ ॥

#### म्याद्वचत्यासो विवर्यासो व्यत्ययश्च विवर्यये ।

विपरीतके नाम ४-व्यत्यास १ विपर्यास २ व्यत्यय ३ विपर्यय ४॥

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपा-त्ययः॥३३॥

किश्चित् विपरीतके नाम ४-पर्थय १ अतिकम २ श्रतिपात ३ उपात्यय ४॥ ३३॥

प्रेषणं यत्समाहूष तत्र स्यात्मतिशास-नम्।

टहरू श्रादिको बुलाकर भेजनेका नाम १----प्रतिशासन १॥

स संस्तावः ऋतुषु या स्तुति धूमिद्धिज-

यज्ञमें ब्राह्मशोषे स्तवनभूमिका नाम १---संस्ताव १॥ ३४॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठे स उद्घमः।

बहटन बठिहा (जिसके स्पर काष्ठ घरा जाता है) का नाम १-उद्धन १॥

स्तम्बन्नस्तु स्तम्बचनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

खुरपा श्रादिके नाम २-स्तम्बद्ग ९ स्तम्बद्यन २ ॥ ३५ ॥

ग्राविधो विध्यते येन--

बरमेका नाम १-श्राविध १॥

—तत्र विष्वक्समे निघः।

बराबर जले हुए प्रशादिकीका नाम १-निय १३

वाट॰य २॥

# उत्कारश्च निकारश्च द्वी धान्योश्चेपग्णा-र्थको॥ ३६ ॥

श्रनाज श्रादि निकालनेके नाम २--- उत्कार १ निकार २॥ ३६॥

# निगारोद्गारविचावोद्गाहास्तु गरणा-दिष्ठ ।

खानेका नाम-निगार १॥ उत्तर्धा करनेका नाम-उद्गार १॥ छींकनेका नाम-विक्षाग १॥ डकारका नाम-उद्गाह १॥

न्नारत्यदरतिविरतय उपरामे—

उगरागके नाम ४-प्रार्शन १ श्रवरित २ विरति ३ उपराग ४॥

— प्राह्मियां तु निष्ठेवः ॥ ३७ ॥ निष्ठचिर्तानेष्ठेषनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि।

शृक्तनेके नाम ४-निष्ठेव १॥ ३७॥ निष्ठ गृति २ निष्ठेवन ३ निष्ठीयन ४॥

#### जवने जुतिः-

वंगके नाम २-जवन १ जूति २॥

--गातिम्त्वत्रसाने स्या-श्रन्तके नाम २-याति १ श्रवसान २॥

-द्थ उवंग ज्ञतिः ॥ ३८॥

ज्वरके नाम २-जवर १ जूर्ति २॥ ३८॥

ज्वरके नाम २-जवर १ जूर्ति २॥ ३८॥

जुद्जस्तु पशुप्रेरणा-
पश्चोके हांकनेका नाम १-उदज १॥

--मकरागिरित्याद्यः शापे।

शापका नाम १-श्रकरिए १ इत्यादि॥

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्द्मित्योपम्बका
दिकम्॥ ३९॥

जिसके समीप गाये हो उसके समृहका नाम १-श्रीपगवक १॥ ३९॥

आपूर्षिकं शाष्क्रकिकमेवमाद्यमच-तसाम्।

प्त्रोंके समृहंका नाम-श्रापृपिक १ ॥ प्रियो हस सहका, नाम-श्रास्कृतिक १ स्वित ॥ माणवानां तु माणव्यं—

लउकों के समृहका नाम १ माणव्य १ ॥

सहायानां सहायता ॥ ४० ॥

भित्रों के समृहका नाम १—राहायता १ ॥ ४०॥

हल्या हलानां—

हलों के समृहका नाग १—हत्या १ ॥

— ज्ञाह्मण्यवाडच्ये तु द्विजन्मनाम् ।

वाद्मण्यवाडच्ये तु द्विजन्मनाम् ।

वाद्मण्यवाडच्ये तु द्विजन्मनाम् ।

द्वे पर्श्वकानां पृष्ठानां पार्श्वे पृष्ठचम्नु-कमात् ॥ ४१ ॥

पांसिंग्यो े समूहना नाम १-पार्च १ ॥ पीठ-के समूहका नाम १-प्रप्रच १ ॥ ४१ ॥ ४ भ

खळानां खिलिनी खल्यानलोके समूहका नाम २-निलनी १ लल्या २।
-ऽप्यथ माजुष्यके नृगाम् ।
सनुत्योके समूहका नाम १-मानुष्यक १॥
यामना जनना भूष्या प्राथा सम्मा

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या ग्रह्या पृथकपृथकु ॥

प्रामोके समूहका नाम--प्रामता १ ॥ जनोके समूहका नाम--जनता १ ॥ धूमके समूहका नाम--धूम्या १ ॥ फासियोके समूहका नाम--पार्था १ ॥ बढेकाशोके स॰ ना॰--गल्या १ ॥

# अपि साहस्रकारीषवार्मगाथर्वणादि-कम् ॥ ४२ ॥

सहस्रके समृहका नाम--माहस १॥ करसीके समूहका नाम--कारीप १॥ कवचों के समूहका नाम--वार्मण १॥ चमडों के समूहका नाम--वार्मण १॥ श्रथवंशों के समूहका नाम--श्राथवंशा १॥ ४२॥

॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

ग्रथ नानार्थवर्गः ३.

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेद्यात्र कीर्तिताः । भूरिप्रयोगा ये येषु पययिष्वपि तेषु ते ॥ १॥

कोई ककारान्तादि नानार्थके शब्द पूर्वोक्तवर्गोंमें कह चुके हैं, परन्तु उनका पूर्वोक्तवर्गोंमें को प्रयोग किया है सो जिस अर्थमें जो शब्द अधिक आता है उस एक ही अर्थमें कहा है, अब उन्हीं पूर्वोक्त वर्गोंमें कहे हुए शब्दों के यहां अनेक अर्थ वर्णन करते हैं॥ १॥

ग्राकाशे त्रिदिवे नाको-नाक--श्राकाश तथा स्वर्ग॥ े लोकस्तु भुवने जने। लोक--स्वर्गादि लोक तथा जन ॥ "पद्ये यशसि च श्लोकः-श्लोक-अनुष्टवादि पद्य तथा कीर्ति ॥ - गरे खड़े च सायकः ॥ २ ॥ 🗀 सायक-तीर तथा तलवार ॥ २ ॥ जम्बुको कोण्डवरुगी-जम्बुक-श्रगाल तथा वरुण ॥ पृथकौ चिपिटार्भकौ। पृथुक-चिवड़ा तथा बालक ॥ ग्रालोको दर्शनद्योती-्रश्रालोक-दर्शन तथा प्रकाश ॥ —भेरी पटहमानको ॥ ३ lr श्रानक-भेरी तथा नगाडा ॥ ३ ॥ उत्सङ्जिह्नयोरङ्कः-श्रंक-गोदी तथा चिह ॥ −व.ळंकोंऽकापवादयोः । कलंक-चिह्न तथा लांछन ॥ तत्तको नागवर्धक्यो-तक्षक-सर्प तथा बढ़ई ॥

-रकः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
श्रकं-स्फटिक सिण तथा सूर्य ॥ ४ ॥
मारुते वेधसि बन्ने पंसि कः कं शिको

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरो-अबुनोः॥

क-( पुँक्षिङ्ग ) वायु, ब्रह्मा, सूर्घ। क-( नष्ठे. ) शिर तथा जल ॥

स्यारपुलाकस्तुन्छधान्ये संत्तेषे भक्तः सिक्थके॥५॥

पुलाक-धानकी भूसी, संक्षेप तथा भातका सीत ॥ ५॥

उल्लंके करियाः पुच्छन्लोपान्ते चु पेचकः।

पंचक-उल्ल्पक्ती तथा हाथीके पुरीषद्वारका श्राच्छादक मांस ॥

कमण्डली च करकः-

ू करक--बनौरी ( श्रोला ) जें कभी कभी पानीके संग वरसती है तथा श्रनारफल ॥

-सुगते च खिनायकः ॥ ६ ॥ विनायक--बुद्ध, गणेश तथा गरुगा ॥ ६ ॥

किंग्कुईस्ते वितस्तौ च-

किष्कु--हाथ तथा वितस्ति॥

-श्ककीटे च वृश्विकः॥

वृश्चिक--बिच्छू तथा आठवी राशि॥

प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिप्वेकदेशे तु प्रस्य यम् ॥ ७॥

प्रतीक-प्रतिकूल ॥ ७ ॥

स्याद्भृतिकं तु भूनिम्बे कनूणे भूरत-णेऽपि च।

भूतिक- चिरायता ( श्रोषि । श्रौर गन्ध्र ( मृगाविशेष ) ॥

ज्योत्स्निकायां च योषे च कोशातकय-कोशातकी-एक प्रकारका फल परवर, तरकारी तथा चिचिड्रा वृद्ध् ॥ -थं कड्फछे ॥८॥ सिते च खिरो सोभवल्कः स्या---

सोमवल्क-सफेद खेर तथा कायफल श्रोषघ ८॥ -दथ सिद्धके। तिलकल्के च पिण्याकी-पिण्याक-सिल्क तथा तिलकी खरी॥

-बाह्मीकं रामठेऽपि च ॥ ९॥

बाह्वीक--रामठहींग तथा बाह्वीकदेशमें होने-वाला अन्य ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्जुळ्ळ्क व्यालग्राहिषु कौशिकः। कौशिक--इन्द्र, गुग्गुल, उल्छ् पदी तथा सांप का पकडनेवाला ॥

करतापशङ्कास्वातंकः—
आतंक--रोग, ताप तथा शका ॥
—स्वरंपेऽपि क्षुष्ठकिश्चिषु ॥ १०॥
अक्षक--छोटा तथा बीच,किन्छ और दिखा १०॥
जेवातृकः शशांकेऽपि—
-जेवातृक--वन्द्रमा तथा दीर्थांषु पुरुष ॥
—सुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।
-वर्तक--पोड़ेके खर तथा पन्नी ॥
ट्यांग्रेऽपि पुण्डरीको ना—

अपान्न अपान्न प्रमुख्य प्रमुख्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

शीलान्वयावनूके—
श्रन्क-स्वभाव तथा वंश ॥
—दे शहके शकलबहक हो ।
शहक-दुकड़ा तथा बकला ॥
साष्टे शते सुवणितां हम्म्युरोभूषणे पति
॥ १३ ॥ दीनारेऽपि च निष्कोऽह्वी-

निष्क--सोना एक प्रकारका गलेका भूषण तथा त्रसर्फी ॥ १३ ॥

-करकोऽस्त्री शमलेनसोः। दम्भे— कल्क--मलिन तथा पाप श्रीर पाखण्ड ॥ -प्यथ पिनाकोऽस्त्री श्रुलशकरधन्यनोः

पिनाक--श्रल तथा महादेवका धनुष ॥ १४ ॥

थेनुका तु करेण्यां च-धेनुका--हिषनी तथा नई न्याई हुई गौ ॥

--मेषजाळे च कालिका ।

कालिका--मेषका समूह तथा देवी ॥

कारिका यातमावृत्त्योः-कारिका--नरकपीज़ तथा करना ॥

कणिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥ करिइस्ते-ऽङ्गुळौ पद्मधीजकोश्यां-

कर्षिका--कानका भूषण ।। १९५ ।। हाथीबी सृद्धका श्राप्रभाग तथा कमलके बीज रहनेबा कमलका भाग ।।

–त्रिपूत्तरे।

H 38 H

श्रागे जो शब्द कहे जायँगे वे तीनों लिङ्गोर्ने होते हैं।।

वृन्दारको क्रयमुख्या-बन्दारक--देवता, सुन्दर तथा मुख्य ॥ -वेके सुख्यान्यकेवला ॥ १६ ॥ एक--सुख्य, अन्य तथा केवल ॥ १६ ॥ स्वाद्याम्भिकः कौक्कुटिको (यश्वाद्रेरि-तेन्नगः।

कीक्कुटिक-माया करनेवाला तथा समीपसे ही देखनेवाला ।।

लालाटिकः प्रभोभीलद्शीं कायीचमश्र यः॥ १७॥

लालाटिक--जो कार्य करनेसे श्रसमर्थ हो श्रीर स्वामीका मुख देखे ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

मय्खिस्तिवृद्धरण्वाला—

मय्ख-कान्ति, किरण तथा ज्वाला ॥

स्विलवाणी शिलीमुखी ।
शिखीमुख--भ्रमर तथा बाण ॥
शैखो निधी ललाटास्थ्न कम्बी न खी
शैख-एकनिधि, ललाटकी हड्डी श्रीर शहु ॥

—िन्द्रयेऽपि खम् ॥ १८ ॥

ख-ग्रन्य तथा इन्द्रिय ॥ १८ ॥

यृणिज्वाली अपि;शिखेशिखा—किरण, ज्वाला तथा चोटी ॥

॥ इति खान्ताः ॥

शैलवृक्षी नगावगी।

नग-श्रग-पर्वत श्रीर वृद्ध ॥

ग्राशुगी वायुविशिखीश्राशुग-वायु तथा वाया॥

-शर्राकविद्धगाः खगाः॥ १९॥

खग-वाया, सूर्योदि प्रह तथा पद्धी॥ १९॥

पतंगी पक्षिस्यों च-
पतंग-पूर्य तथा पद्धी॥

-पूगः क्रसुकवुन्द्योः।

पूग-सुपारी तथा समृह ॥

पश्चोऽपि सुगा-

मृग-हरिया, इंडना, पद्य ॥
- चेंगः प्रचाहजवयोरिय ॥ २० ॥
नेग-प्रवाह तथा जोरसे चलना ॥ २० ॥
परागः कौसुमे रेगों स्नानीयादी रज-स्यपि ।

पराग-पुध्यभूति, स्नान करनेके योग्य मसालाः तथा धूलि ॥

गजेऽपि नागमातंगा—

नाग-मातङ्ग-हाथी तथा चाण्डाल वा डोम ॥

-वपांगस्तिलकंऽिए च ॥ २१॥

अपांग-नेत्रोंके कोने, श्रङ्गहीन तथा तिलक२१।

सर्गः स्वभावनिमों सनिश्चयाच्याय—
सृष्टिषु ।

सर्ग—स्वभाव, त्याग, निश्चय तथा प्रन्थकाः अध्याय, सृष्टि ॥

योगः संनद्दनोपायध्यानसङ्गतियु-क्तिष्ठ ॥ २२ ॥

योग-कवच सामदानादि, ध्यान तथा मेल श्रीर युक्ति ॥ २२ ॥

भोगः सुखे **स्**यादिश्वताषदेश्वफणका-षयोः।

भोग-सुखदेनेवाला तथा सुख, वेश्या ,श्रादिको पालन करना वा भोल लेना,सर्पका फन श्रोर शरीर।

चातके द्वरिणे पुंसि सारङ्गः शवलेः विष्ठु॥२३॥

सारङ्ग-चितकवरा रङ्गनाला, चितकवरा रङ्ग, मृनदञ्ज, पद्मी, पपीहा पद्मी तथा मृगी ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवगः—

प्लवग-बन्दर, मेडक तथा सारिय ॥

-शापे त्वभिषंगः पराभवे ।

श्रभिषत्र-शाप तथा श्रनादर ॥

यानाचंगे युगः पुंसि युगं युग्मे हता---दिषु ॥ २५॥ युग ( पुंक्षिज्ञ )-जुँद्धाः, युग-( नपुंसक ) जोडा ( दो ), सत्ययुगादि तथा चार हाथ ॥ २४ ॥

स्वमेषुपञ्जवाग्वज्रदिङ्गनेत्रवृश्चिभ्जते । कत्तरहृचा क्षियां पंसि गौ—

गो—( पुॅलिङ्ग-स्नीलिङ्ग ) स्वर्ग, बाया, पशु--﴿ गाय बैल ), वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरया, भूमि तथा जल ॥

— लिंगं चिद्वशेकसोः ॥ २५॥
लिङ्ग-चिर्ह तथा शिश्र इन्द्रिय ॥ २५॥
म्हः प्राधान्यसान्वोश्यश्टङ्ग-प्रभुता श्रथात् प्रधानता तथा कंगूरा ॥
-घरांगं मूर्धगुद्धायोः ।
वराङ्ग-माथा तथा स्नीका मूत्रद्वार ॥
भगं श्रीकाममाद्दारम्यवीर्ययन्नार्ककीतिष्ठ ॥ २६ ॥

भग-तक्मी, इच्छा, एश्वर्य, वीर्य, उपाय, सूर्य, बड़ाई ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिधः परिधातेऽल्ल—

परिध—चारी श्रोरसे मारना तथा श्रद्ध ॥

—ऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रथे ।

श्रोध-समूह तथा जलका नेग ॥

मूल्ये पुनाविधावधीं—

श्रध-मूल्य तथा पूजामें जल देना ॥

"—ऽहोदुःखन्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

श्रध-पाप, दुःख, शिकार, जुश्रा खेलना
श्राहि ॥ २० ॥

त्रिष्विष्टेऽस्पे त्रचुः— तञ्ज-इष्ट और थोड़ा ॥

॥ इति घान्ताः ॥

काचाः शिक्यमृद्धेदद्युजः।
काच-जीका, काचका भेद तथा पेत्ररोग ॥

विपयसि विस्तरे च प्रपञ्चः

प्रपन्न-विपरीत तथा शब्दका विस्तार श्रीर जगत् तथा ठगना ॥

—पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

ञ्चिन्(पु॰) श्रमि ॥ २८ ॥ श्राषाढमास, राजाका मन्त्री, निष्कपट (त्रि॰) पवित्र तथा इवेतवस्तु ॥

स्रभिष्वंगे स्पृद्दाशां भ्रूच गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

रुचि-श्रातिगन करना, इच्छा तथा किरण २९

केकिताक्ष्यविद्यिजी—
श्रिह्युज्—मोर श्रीर गढ्ड ॥
—दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।
दिज—दांत, पन्नी तथा श्राह्मण ॥
स्प्रजा विष्णुहरच्छागा—
श्रज— विष्णु, शिव तथा वकरा ॥
गोष्ठाध्वितिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
त्रज—गोशाला, मार्ग श्रीर समृह ॥ ३० ॥
धर्मराजो जिनयमो—
धर्मराज— जिन (बुद्ध) श्रीर यमराज ॥
—कुओ दन्तेऽपि न ख्रियाम् ।
कुञ्ज—हाथीका दांत श्रीर सघन वन ॥
वलजे च्रेत्रपूर्दी रे वलजा वलगुद्शाना३१
वलज—(न०) खेत, नगरका दरवाजा (श्री)
सुन्दर स्ती ॥ ३९ ॥

समे हमांशे रणेऽप्याजिः— श्राजि-पृथ्बीका समान भाग श्रीर संप्राम ॥ —प्रजा स्यात्संततौ जने। प्रजा-संतान श्रीर जनसमृहः॥ " श्रव्जी शंखशशांकी च--- ^ श्रव्ज-शंख श्रोर चन्द्रमा ॥ स्वकै नित्ये निजं निष्ठु ॥ ३२ ॥ निज-(त्रि॰) श्रपना तथा नित्य ॥ ३२ ॥

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यातमनि प्रवीणे च चेत्रज्ञो वाच्य-जिंगकः।

चेत्रज-श्रात्मा श्रीर चतुर ॥ संज्ञा स्याच्चेतना नाम ःहस्ताचैश्वार्थः सुचना ॥ ३३ ॥

संज्ञा-चेतनशक्ति, नाम श्रीर इस्त श्रादिसे श्रमिप्रायका प्रगट करना ॥ ३३ ॥

प्र इति ञान्ताः प्र

काकेभगण्डौ करटौ-

श्वरे॥ ३४॥ 🛚

करट-काक और इस्तीका गण्डस्थल ॥ गजगण्डकटी कटौ । कटि-इस्तीका गण्डस्थल और कमर ॥ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्यमंशि महे-

शिपिनिष्ट—गङ्जा, खुदुरी हुई खाल श्रीर भिन्नजी ॥ ३४ ॥

देवशिल्पिन्यःपि त्वष्टा—
त्वष्ट्र—विश्वकर्मा, सूर्य श्रीर वढ्ई ॥
-दिष्टं देवेऽपि न द्वयोः।
दिष्ट-प्रारम्य श्रीर समय ॥

रसे कटुः कट्टकार्ये त्रिषु मत्सरती-क्ष्मयोः २५॥

कटु-(पु॰) रसविशेष ( न॰) **श्व**कार्य (त्रि॰) ऋहकार खोर तीक्षा ॥ ३५ ॥

रिष्टं च्वेमाञ्चभाभावे— रिष्ट-चेम, श्रश्चम श्रीर श्रमाव ॥ — प्वरिष्ट तु शुभाशुभे ॥ त्ररिष्ट-शुभ और बशुभ ॥

मायानिश्वलयन्त्रेषु केतवानृतराशिषु, ॥ ३६ ॥ ग्रयोधने शलगृंगे सीरांगे कूट-मस्त्रियाम् ।

कूट—माया, निश्चल, यन्त्र (स्ग फँसानेका जाल), कपट, झूठ, राशि॥ ३६॥ लोहेका घना पर्वतका कॅगूरा तथा हलका ऋप्रभाग॥

स्क्रमैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽस्पे संशयेऽपि सा ॥३७॥

त्रुटि-छोटी इलायची, काल (श्रद्धरका रह जाना)श्रत्य तथा मैशय॥ ३७॥

भार्त्युतकषाश्रयः कोट्यो — कोटि-धनुषकी टॉक, प्रकर्भ, कोना तथा करोड़-संख्या ॥

—मूले लग्नकचे जटा। जटा-वृत्तकी जड तथा केशोंकी जटा ॥ ब्युष्टिः खते समृद्धौ च— व्युष्टि-फल तथा सम्पदा ॥ द्रष्टिज्ञनिऽस्णिदशेने ॥ ३८ ॥ द्ष्टि-ज्ञान, नेत्र तथा देखना ॥ ३८ ॥ इष्टियगिच्छयोः-इष्टि-यज्ञ तथा इच्छा ॥ सुष्टं निश्चिते बहुनि त्रिष्ठ । स्ट्र-बहुत तथा निश्चय किया गणा। क्षरे तु कृच्छगहने-कष्ट-दुःख तथा गहन ॥ ---दन्नामन्दागदेषु च ॥ ३९॥ पट्ट-दत्त, तीक्षा तथा रोगहीन ॥ ३९ ॥ द्धौ वाच्यतिगी च— पट्ट और कष्ट शब्द वाच्यलिग हैं॥

<sup>'ं '</sup>इति टान्ताः ॥

-नीलकण्ठः शिवेऽपि च । नीलकण्ठ-मयूर तथा शिव ॥ पुंसि कीण्ठोऽन्तर्जठरं कुसुलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥

कोष्ठ-पेटका मध्यभाग, धान्यका स्थान, गृहके भीतरका भाग ॥ ४० ॥

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः-

निष्ठा-निष्पादन, न।श तथा श्रन्त ॥

—काण्डोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।

काष्टा—उत्कर्ष, स्थिति, दिशा तथा काल-विशेष ॥

त्रिष्ठु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि--

ज्येष्ठ-श्रत्युत्तम, श्रतिवृद्ध, बड़ा भाई तथा वैशासके उत्तरका मास ॥

—कनिष्ठोऽतियुषाल्पयोः ॥ ४१ ॥ कान्छ-श्रतिछोटा तथा छोटा भाई ॥ ४१ ॥ हति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्यास्-दंड-दंडा तथा सजा भादि ॥ ----गुडो गोळेश्चपातयोः । गुड्-गुड् तथा मिटीका भादिका गौला ॥ सर्पमांसात्पञ्च व्याडौ-

व्याड-सर्प तथा मांस खानेवाला पशु व्याघ्र श्रादि ॥

-गोभुव।चस्तिवडा इक्षाः ॥ ४२ ॥
इडा गेया तथा पृथ्वी, वाणी और नाडी ॥४०॥
श्वेडा वंशशजाकाऽपि—
श्वेडा-विष, सिंहनाह तथा बांसकी खपनी ॥
-नाडी नालेऽपि षट्शणे।
नाडी-नाडी अर्थात् वात, पित्त, क्ष इत्यादिके
विकारको जाननेवाकी उम्र तथा हा खला ॥

स्प्रण्डोऽस्त्री दण्डबागार्ववर्गावस्तरवा-रिष्रु ॥ ४३ ॥

काण्ड-दण्डा वा लाठी, बाग्रा खराव घोड़ा, परिच्छेद जैसे का प्रथम काण्ट श्रवसर तथा जल ॥ ४३॥

स्याद्धाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूळवागिग्धने

भाण्ड-पात्र वा बरतन, घोड़ोका गहना, बनियो का मूल धन वा पूजी ॥

इति डान्ताः॥

भृशमतिज्ञयोबदि

बाढ़-श्रत्यर्थ तथा प्रतिशा॥

-प्रगाढं भृशकुच्छ्योः ॥ ४४ ॥

प्रगाढ़-मजबूत तथा दुःख॥ ४४॥

शक्तस्थूली त्रिषु हटी-

हब-समर्थ तथा मोटा ॥

-व्युढौ विन्यस्तसंहतौ।

व्यूढ-विन्यस्त तथा संहत और पृथुल ॥

इति ढान्ताः ॥

भ्योऽर्भके द्वागर्भ-

भगा-बातक तथा स्त्रीका गर्भ ।

-वाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥

बागा-बागासुर तथा तीर ॥ ४५ ॥

कगोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे-

कर्ण-ऋत्यन्त सूक्ष्म तथा धान्यकरा॥

-संघाते प्रमधे गगाः।

गगा-समूह तथा शिवके अनुवर ॥

पणो यूतादिषुस्सृष्टे भृतौ मृत्ये धनेऽपि च ॥ ४६॥

पर्या-जुन्ना ऋदिमें लगाया हुन्ना धन, पैसा तथा मजूर वा तलवा। ४६॥

मीयां द्रव्याश्रिते सत्त्रशौर्यसम्ब्यादिके शुन्नः। गुग्-प्रत्यश्वारूप श्रादि, चोबीस सस्व श्रादि, शुक्त भादि, संधि श्रादि॥

निन्यीवारस्थितौ कालचिशेषोत्सवयोः स्त्राः ॥ ४७॥

क्षण-तीसकलासमय, उःसव, वेकाम बैठना तथा विश्राम करना ॥ ४७ ॥

# वर्णो द्विजादी शुक्लादी स्तुती वर्ण तु वार्चर ।

वर्ण--- ग्रुक्त पीतादि रग तथा वर्ण (पुं॰न॰) श्रक्षर, ब्राह्मसादि, स्त्रति ॥

प्रस्तो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदैऽपि च त्रिष्ठु॥ ४८॥

अरुण-सूर्य, सूर्यका सारिय, वर्णमेद ॥४८॥ स्थाणुः शर्वोऽप्यथ—

स्थाण-दूठा वृक्ष तथा ऋत्यन्त स्थिर श्रीर महादेव, खम्भा, वृत्त, पर्वत ॥

-द्रोगः काके-

द्रोग-काक तथा द्रोगाचार्य॥

–ऽप्याजी **र**वे रगाः।

रग्-संप्राम तथा शब्द ॥

ग्रामग्रीनंपिते पुंति श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिष्ठु ॥ ४९ ॥

श्रामणी-नाई, मुख्य श्रामाधिप ॥ ४९ ॥ **ऊर्णा मेषादिलोग्नि स्यादावर्ने चान्तरा** भुवोः ।

उर्णा-भेड़का वाल तथा दोनों भौके बीचकी भौरी ॥

इरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या॥ ५०॥

हरिणी-मृगी, सोनेकी मूर्ति तथा हरे रंगकी मूर्ति॥ ५०॥

त्रिष्ठ पाण्डी च इरिण:-हरिण---मृग तथा पाण्डर वर्ण ॥ स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः।
स्थूणा-खम्भा तथा लोहेकी मूर्ति॥
-तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे—
गृःणा-इच्छा (वाञ्छा ) तथा प्यास॥
—जुगुप्स करुणे गृणे॥ ५१॥
वृणा-जुगुप्सा वा निन्दा तथा करुणा॥५९॥
विणिवपथे च विपणिः—
विपणि-वाजारकी गली तथा दुकान॥
—सुरा प्रत्यक् च बारुणी।
वारुणी-मदिरा तथा पश्चिमकी दिशा॥
करेणुरिभ्यां खी नेभे—
करेणु-हाथी तथा हथिनी।।

न्द्रिचिग्रं तु बलं ध्तम् ॥ ५२॥ द्रविग्य-बल तथा धन ।। ५२॥ शरण गृहरक्षिजोः-

शरण-गृह तथा रद्मा करनेवाला ॥

-श्रीपर्ण कमलेऽपि च।

श्रीपर्या-कमल तथा श्रक्षियन्थ ॥

विषाभिमग्लोहेषु तीक्ष्यां क्लीवे खंद विषु ॥ ५३ ॥

तीक्षा-त्रात्यन्त गरम वस्तृ, श्रात्यन्त तीसी, विष, युद्ध तथा लोहा ॥ ५३ ॥

प्रमाणं हेतुमयीदाशास्त्रियतापमातृषु । प्रभाग-हेतु, मर्यादा, शास्त्रपरिच्छेद तथा इाता ॥

करणं साधकतमं च्चेत्रगात्रेन्द्रिये-ष्वपि॥ ५४॥

करण-खेत, करण कारक, शरीर, इन्द्रिय तथा वैश्य श्रुद्रास्त्रोसे उत्पन्न ॥ ५४ ॥

प्राण्युत्पादे संसरणमसंबायचम्गती । घण्टापथे-

संसरण-राजमार्ग, प्राणीका जन्म तथा बेरोक सेनाकी यात्रा ॥ —ऽथ वान्तान्ने ससुद्गिरणसुत्रये ॥५५॥ ससुद्गिरण-वमन किया हुन्ना सन्न तथा उखाडना तथा जटादिका निकालना ॥ ५५ ॥

#### धतस्त्रिष्ठ-

यहांसे आगे कहे हुए शाकागन्त शब्द तीनों लिगोमे होंगे॥

विषाण स्यात्पशुश्रुङ्गेभदन्तयोः। विषाण-पश्चश्रोके सींग तथा द्दाथीका दांत ॥ प्रवग्गः क्रमनिम्नोन्यी प्रद्वे ना तुः चतुष्पथे।। ५६॥

प्रवरा-नम्र, तत्पर, ढाल वा कमसे नीचा स्थान तथा चौराहा । ५६॥

सकीणी निचिताशुद्धा-सकीर्ण-त्रशुद्ध तथा वर्णसंकर ॥ वीरिण शून्यमूषरम् । वीरिण-शन्य श्रीर कषर ॥

॥ इति खान्ताः ॥
देवस्यौं विवस्वन्तौविवस्वत्—देव तथां सूर्य ॥
---सरस्वंतौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥
सम्स्वत्—नद तथा समुद्र ॥ ५७ ॥
पित्ताक्ष्यौं गरुतमन्तौगरुत्वत्—गरुड तथा पत्ती ॥
शकुन्तौ भासपिक्षणौ ।
शकुन्तौ भासपिक्षणौ ।
शकुन्तौ भासपिक्षणौ ।
धुमकेतु—अप्ति और धूममयी तारा ॥
--जीमृतौ भेषपवंतौ ॥ ५८ ॥

जीमूँत-मेघ श्रीर पर्वत ॥ ५८ ॥

इस्ती तुपाणिनचने-

इस्त-हाथ, तेरहवां नक्षत्र ॥

-महती पवनामरी। मस्त्-वायु, तथा देवता ॥ यन्ता हस्तिपके सूते-यन्तृ-हाथीवान् तथा सूत ॥ -भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥ भतृं-ब्रह्मा श्रीर पालन करनेवाला ॥ ५९ ॥ यानपात्रे शिशौ पोतः— पोत-नौका तथा लङ्का ॥ -- प्रंतः प्राण्यन्तरे मृते। प्रेत-परेत तथा मृतक ॥ ग्रहभेदे ध्वजे केतुः— केतु-ध्वजातथाएक प्रहकानाम ॥ -पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥ सुत-राजा तथा पुत्र ॥ ६० ॥ स्थपति: कारुभेदैऽपि-स्थपति-कंचुकी तथा कारमेद, काए चीरनेवाला -भूभृद् भूमिधरे तृ भूभृद्-पर्वत श्रीर राजा ॥ मूध भिषिको भूपेऽपि-मूर्वाभिविक-राजा धौर मन्त्री ॥ ं स्टूर्ध चा १६१॥ ऋतु-स्त्रीका मारिक धर्म श्रीर वसन्तादि ऋतु ॥ ६९ ॥ विष्णाव प्यजिताव्यक्ती---श्रजित, श्रव्यक्त-विष्णु श्रीर महादेव —सृतस्त्वष्टरि सारथी। सूत-सारथी तथा पारा धातु, त्वष्टा ॥ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि-

व्यक्त-पंडित तथा स्फुट ॥

—हष्टान्ताबुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२॥

दृष्टान्त-तर्कादि शास्त्र तथा उदाहर्या ॥६२॥

*f* •

# चत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे चित्रंयायां च भूद्रजे।

चन्न-सारिथ, ग्रह श्रीर चित्रियोसे उत्पन्न तथा द्वारपाल ॥

वृत्तान्तः स्यात्मकरणे प्रकारे कात्स्नर्य-वार्तयोः ॥ ६३ ॥

बृत्तान्त-प्रकरगा, प्रकार, सम्पूर्णता तथा वार्ता ॥ ६३ ॥

म्रानर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः।

श्रानर्त-श्रानर्त थेश, संप्राम तथा मृत्यका स्थान ॥

कृतान्तो यमसिद्धान्तदेवाकुशसक-र्मसु॥ ६४॥

कतान्त--यमराज, सिद्धान्त, भाग्य तथा पाप ॥ ६४ ॥

श्लेष्पादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः। इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्द-योनिश्च धातवः॥ ६५॥

वातु-वात, पित्त, कफ, पेटमें श्रन्न जाकर जो रस बनता है वह श्रीर रक्त इत्यादि, पंचमहाभूत ( पृथ्वी जल इत्यादि ) पांचीं महाभृतोंके गुण ( रूप रस गन्च इत्यादि ) इन्द्रिय, पत्थरका विकार ( शिलाजीत इत्यादि ), वर्णात्मक शब्दोंके कारण ( भू इत्यादि ) ॥ ६५ ॥

कत्तान्तरेऽपि शुद्धान्तो तृपस्यासर्व-गोचरे।

गुद्धान्त -राजधानी तथा राजाश्रोका जनाना ॥ काससामर्थ्ययोः शक्ति—

शक्ति-वरही तथा सामर्थ्य ॥ -मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥ मूर्ति-कठिनता तथा शरीर रू॥ ६६ ॥ विस्तारवस्त्रयोर्जति —

त्रतति--विस्तार तथा वल्ली।

र्वसती राश्चिवेशमनोः।

वसति--रात्रि तथा घर ।। स्वयार्चयोरपचिति:-

अपचिति-- च्य तथा पूजा ॥

—सातिद्गावसानयोः ॥ ६७ ॥

साति--दान तथा श्रन्त ॥ ६७ ॥

चर्तिः पीडाधत्रकोट्यो---

अर्ति-पीडा तथा धतुषकी कोटि ॥

जितः सामान्यजनमनोः ।

जाति-सामान्यजाति तथा जन्म ।।

मचारस्यन्दयो रीति-

रीति-लोकाचार तथा पीतल श्रीर लोहेका मला

—रीतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

ईति -ईति सात प्रकारकी होती है-अतिवृष्टि,
मुखा पड़ना, खेतोंमें मुसोंका लगना, टीड़ियोंका
उपद्रव, सुगोंसे हानि और स्वचक, परराजाओंसे
वैर, इन ७ को ईति कहते हैं तथा परदेशमें
वास ॥ ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्ति—

प्राह्नि--लाभ तथा उत्पत्ति ॥

—स्रेता त्वग्नित्रये युगे।

त्रेता-त्रेतायुग तथा ऋत्रित्रय ॥

वीगाभेदैऽपि महती--

महती--नारदकी वीगा तथा महत्वा करके युक्त भार्यादि॥

- भृतिभस्मिन संपिद् ॥ ६९॥ भृति--श्रणिमामहिमादि श्राठ ऐश्वर्य, भस्म तथा सम्पत्ति॥ ६९॥

नदीनगर्योनींगानां भोगवत्य-भोगवती--सर्पोकी नदी तथा नगरी॥

—थ सङ्गरे। संगे सभायां समितिः—

समिति -सङ्ग, सभा तथा संवाम ॥

-चयवासाविप क्षितिः॥ ७० ॥

न्निति-निवास, स्वयं तथा पृथ्वी ॥ ७० ॥

रवेरचिश्च शस्त्रं च वितिष्माला च हेतयः।
हेति--सूर्यकी प्रभा तथा शस्त्र श्रीर श्राग
की ज्वाला ॥

जगती जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१॥

जगती--लोक, एक प्रकारका छन्द तथा

पंक्तिश्क् न्दोऽपि दशमं—

पंक्ति-पाँती तथा दशत्रक्षरके पादका छन्द ।।

—स्यारप्रभावेऽपि चायतिः।

श्रायति-श्रानेवाला समय, प्रभाव तथा लम्बाई।
पत्तिर्गती च-

पत्ति-पैदत्त तथा चलना ।।
मृते तु पत्तिः पक्षभेदयोः ।। ७२ ।।
पक्षति--प्रतिपदा तिथि तथा पंतकी जड़ ।७२।
मकृतियौनिलिंगे च-प्रकृति-स्वभाव तथा योनि, लिंग ॥

-कैशिक्याद्याश्च मृत्तयः । वृत्ति--जीविका, सूत्रोका श्रर्थ तथा कैशिकी ॥

सिंकताः स्युवश्चिकापि— सिकता बाल—श्रोर सिकती ॥

-वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥ श्रुति--वेद, कान तथा सुनना । ३ ॥

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।

विनता—स्री तथा श्रत्यन्त प्यारी स्ती ॥
स्विदः चितिव्युदासेऽपि—
गुप्ति-रचा,भूमिका गह्दा तथा जेलखाना ॥
स्विधारणधेर्ययोः ॥ ७४ ॥
विति—वारण स्रोर वैर्य ॥ ७४ ॥

## षृर्देती श्चद्रवातीकी छःदोभेदो महत्यपि।

बृहती--क्षुद्रवार्ताकी, हन्दिवशेष, बड़ी ।। वासिता स्त्रीकरिण्योश्च-वासिता-स्त्री तथा हथिनी ॥ —वार्ता वृतो जनश्चतो ॥ ७५॥ वार्ता-जीविका, समाचार ॥ ७५॥ वार्त फल्गुन्यरोगे च न्नि-

्र वार्त-नीरोग, समाचार, जनश्रुति, जीवनो-पाय तथा कुशल ।।

ष्वष्मु च इतामृते। इत — घी, जल।। श्रमृत— जल, मोक्ष तथा विना मांगी मीख।।

कलधौतं रूप्यहेम्नो—
कलधौत—चांदी तथा सोन।॥
—निमितं हेतुलक्ष्मणोः॥ ७६॥
निमित्त—हेतु तथा चिह्न ।। ७६॥
श्वतं शास्त्रावधृतयो—
श्वत—शास्त्र तथा सुना गया॥
—र्युगपर्याप्तयोः कृतम्।
कृत—सत्ययुग पर्याप्ति तथा किया हुत्रा॥
सत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानवेश्चि च॥ ७७॥

श्रत्याहित-महाभय तथा साहस ॥ ७७ ॥ युक्ते क्ष्मादायृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिष्ठ ।

भूत प्रेत, प्रिथवी श्रादि पांच देवयोनि तथा न्याययुक्त कार्य श्रोर सत्य तथा प्राणी ॥

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते हढिनि— स्तळे ॥ ७८ ॥

इत-पद्य ( खोक) चरित्र, श्रतीत (भूतकाल) डढ़ तथा गोल ॥ ७८॥ महद्राज्यं चा-महत--राज्य तथा बृहत्॥

--वगींत जन्ये स्याद्गहिंते त्रिषु । श्रवगीत-लोकापवाद तथा जिसकी निंदा की गणी ॥

श्वेतं रूप्येऽपि-

इनेत-सफेद रङ्ग तथा चांदी श्रीर रुपया ॥
-रजंत हेम्नि रूप्ये सिते निष्ठु ॥ ७९ ॥
रजत-सोना, चांदी तथा उज्ज्वल ॥ ७९ ॥
निष्वतो-

यहासे लेकर तकारान्त सम्पूर्णशब्द तीनो विगोमें होते हैं।।

जगदिंगेऽपिजगत-लोक तथा प्राणी ॥
रक्तं नीरुपादिरागि च ।
रक्तः-नीलादि रङ्ग तथा रुधिर ॥
ग्रवदातःसिते पीते शुद्धेग्रवदात-शुद्ध, श्वेत पदार्थ तथा पीला पदार्थ॥
. —बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
सित-वँधा हुन्रा तथा श्वेत ॥ ८० ॥
ग्रुक्तेऽपि संस्कृते मर्षिण्यभिनीतोग्रुभिनीत-गुक्त, श्रत्यन्त प्रशस्त तथा भूषित
न्त्रीर शान्त ॥

-ऽथ संस्कृतम् । कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्य संस्कृत-संस्कारयुक्त, लक्षणयुक्त तथा कृत्रिम।। नन्तोऽनवधावपि ॥ ८१॥

श्रनन्त--श्रनविध (जिसकी मर्यादा न हो) विष्णु तथा शेषनाग।। ८९॥

ख्याते हुन्दे प्रतीतो-प्रतीत-प्रसिद्ध तथा हर्षित। ।

-ऽभिजातस्तु कुलजे बुधे। स्रमिनात-कुलीन और पण्डित।। विविक्तौ पूतविजनौविविक्त-पवित्र और विजन वा एकान्त ।।
-मृष्टिंछतौ मृदसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
मृष्टिंछत-मोहित तथा वढ़ा ।। ८२ ।।
दो चाम्ल पहषो ग्रुक्तौशुक्त-चुक तथा कठोर ॥
-शिती धवलमेचकौ ।

श्चिति—धवल ( शुक्ल ) तथा मेचक (कृष्ण-

सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽस्य**हिते** च सत् ॥ ८३ ॥

सत्—सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त तथा अभ्यहित ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते।

पुरस्कृत-पूजित, शत्रुसे पीडित श्रीर श्रावे किये हुए॥

निवातावाश्रयावातौ श्राह्माभे**वं च वर्म** यत् ॥ ८४ ॥

निवात—निवास, वायुरहित स्थान तथा शास्त्रोंसे अभेश कवच ॥ ८४ ॥

जातोत्रद्धप्रवृद्धाः स्युव्हिकृता- \*

उच्छिल्ल-उत्पन्न, ऊँचा, श्रहंकारयुक्तं तथा अत्यन्त बड़ा ॥

-उत्थितास्त्वमी । वृद्धिमत्त्रोद्यतोत्पन्नर्रं उन्त्थित-वृद्धिको प्राप्त होनेवाला तथा उदय को प्राप्त होनेवाला और उत्पन्न होनेवाला ॥

-आहतो सादराचितो ।। ८५ ॥ श्राहत-श्राहर किया हुआ तथा पूजित ॥८५₩ इति तान्ताः ॥

ष्मर्थोऽभिषेयरैवस्तुप्रयोजनिवृत्तिषु । अर्थ-शन्दका अर्थ, धन, यथार्थ, निवृत्ति ॥

# नित्रानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जल्ने गुरौ ॥ ८६ ॥

तीर्थ-निपान अर्थात् कृपके पासका होद वा जलाशय, शास्त्र, ऋपिसेवित जल तथा गुरु ॥८६॥ समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बद्धार्थे दिते-ऽपि च।

समर्थ-समर्थ वा वलवान् तथा सम्बन्धयुक्त पदार्थ तथा हित ॥

द्शमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ---दशमीस्थ-रसरहित श्रीर श्रीतब्रद्ध ।)

- वीथी पद्व्यपि ॥ ८७ ॥ वीथी-मार्ग तथा पिक्त ॥ ८७ ॥

म्रास्थानीयत्नयोरास्था-

श्रास्था-समा तथा उपाय ॥

—प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः। प्रस्थ-पर्वतकी चोटी तथा तोलनेका सेर ॥

• इति थान्ताः॥

म्रभिप्रायवशौ छन्दा-

छन्द-अभिप्राय तथा अधीन ॥

—वन्दौ जीमृतवत्सरौ॥८८॥

श्चिद्-मेघ तथा वर्ष ॥ ८८॥

स्रपवादौ तु निन्दाज्ञे—

श्चपपाद-निन्दा तथा श्रज्ञ ॥

-दायादी सुतबान्धवी।

दायाद--पुत्र तथा हाति (विरादरी)

षादा रश्म्यंब्रितुर्योशा-

पाद-किरसा, चरसा तथा चौथाई ॥

—श्रन्द्राग्न्यकस्तिमोनुदः ८९॥

तमोनुद--चन्द्र सूर्य तथा श्रमि॥ ८९॥

निर्वादो जनवादेऽपि---

निर्वाद--लोकापवाद श्रीर निश्चित बाद ॥

-शादो जम्बालशप्योः।

शाद--घास श्रीर कीचड़ ॥

त्र्याराचे रुदितं त्रातस्यिकिन्दो दाहणे रणे॥९०॥

व्याकन्द- त्रार्भराब्द, रोदन, रक्षण, भयकर तथा युद्ध ॥ ९० ॥

स्यात्प्रासादोऽनुरागेऽपि-

प्रासाद-- श्रनुमह ( प्रसन्नता ) श्रीर काव्यके गुरा ।।

सुदः स्याद्रचअनेऽपि च।

सूद-व्यक्षन श्रीर रसोई वरदारका नाम ॥ गोष्टाध्यक्षेऽपि गोविन्छो-

गाविन्द--कृत्सा तथा विष्णु और गेप्टवा स्वामी

हषेंऽध्यामोदवनमदः॥ ९१॥

श्राभोद--हर्प तथा निर्हारि गन्ध ॥ ९१ ॥

माधान्ये राजलिंगे च दृषांग ककुदोऽ-स्त्रियाम्।

व छद-प्रधान, राजविह तथा वेलका कन्धा ॥ स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाद्वियाह । राजिना-मसु ॥ ९२ ॥

संविद्--ज्ञान, सम्भापण, वर्म; नियम, युद्ध-श्रीर नाम ।। ९२ ।।

धर्मे रहस्युपनिषत-

उपनिषद्-धर्म, एवान्त और वेदान्त ॥

-रयाहतौ वत्सरे शरत।

शारद--क्वार कार्तिकका समय श्रीर वर्ष ॥

पदं ध्यवसितत्राग्यस्थानलक्ष्माङ्क्ष्रिय-स्तुषु॥ ९३॥

पद--व्यवसाय, रत्तास्थान, त्रिह्, चरणा तथा वस्तु ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते मारे-

गोष्पद-सेवित देश तथा भूमिपर गायके खरके हुआ गहुढा ॥ -प्रतिष्ठा कृत्यमास्पद्म् ।
श्रास्पद-प्रतिष्ठा, स्थान तथा कार्य ॥
त्रिष्वष्टमधुरो स्वादु—
स्वादु--इष्ट श्रीर मधुर ॥
--मृदु चातीक्ष्णकोमलो ॥ ९४ ॥
मृदु--श्रतीक्ष्ण तथा कोमल ॥ ९४ ॥
मृदु-त्र्पतिक्ष्ण तथा कोमल ॥ ९४ ॥
मृदाल्पापदुनिर्भाग्या मंदाः स्यु—
सन्द-मूर्ख, श्रालसी, श्रप्रवीण, श्रत्य तथा
निर्माग्य ॥

द्वों तु शारदो । प्रत्यग्राप्रतिभौ-शारद-डरपोक, छितिउन ( वृत्त ) जलपीपर श्रोषधी ॥

-विद्वत्सुपगलभौ विशारदौ ॥ ९५ ॥ विशारद-विद्वान्, चतुर श्रीर ढीठ प्रकृष ।९५। ॥ इति दान्ताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधा—

न्यग्रोध-वटब्रच्च तथा अकवार ॥

—वुत्सेधः काय उन्नतिः ।

• उत्सेध-देह तथा कॅवाई॥

पर्याद्वारश्च मार्गश्च विवधौ वीबधौ च तौ॥ ९३॥

विविध, वीवध-पर्याहार (ध्यानादि) तथा मार्ग ॥ ९६ :॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके।

परिधि-वृत्तकी परिधि वा गोलाई, सूर्थ वा चन्द्रके चारों श्रोरका मण्डल, पलाश इत्यादि यज्ञ-के वृत्तकी शाखा ॥

बन्धके व्यस्नं चेतःपीडाधिष्ठानमा-भयः॥९७॥

श्राधि-बन्धक, श्रापत्ति, मनकी पीडा तथा बैठना ॥ ९७॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्वसमाध्यः।

समाबि-चित्तके व्यापारका रोकना, श्रङ्गीकार, चुप रहना, नियम तथा घ्यान ॥

दोषोश्पादेऽतुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविन-श्वरे ॥ ९८ ॥

सुख्यातुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यातु, वर्तने।

श्रतुबन्ध—दोषका उत्पन्न करना, प्रकृति प्रत्यय, श्रादेश इत्यादिमें जिसका नाश हो गया हो वह ।। ९८ ।। पिता इत्यादि वड़ीका श्रनुसरया करनेवाला बालक, पार्क्क किया वस्तुका पर-म्परासे चलना ।।

विधुविष्णो प्रम्हमांस
विधु-विष्णु, चन्द्रमा, कपूर तथा राज्ञस ॥
-परिच्छेदे विलेऽवधिः॥ ९९॥
श्रविय -सीमा वा हद्द, गह्डा श्रोर काल ९९
विधिविधाने द्वेऽपि—
विधि-करना, माग्य, धर्मशास्त्र तथा श्राहादेना
—प्रिणिधि-करना, माग्य, धर्मशास्त्र तथा श्राहादेना
—प्रिणिधि-प्रार्थने चरे।
प्रिणिधि-प्रार्थना तथा चलनेवाला ॥
वुधवृद्धौ पण्डितेऽपि
वुध-पण्डित तथा एक प्रह, तथा वृद्ध पूरुष ॥
--स्कन्धः समुद्येऽपि च ॥ १००॥
स्कन्द-समुद्य, समूह, काण्ड, राजा तथा

देशे नदविशेषेऽज्धौ सिन्धुनी सरिति स्त्रियाम् ।

सिधु-समुद्र, एक नद, सिधुदेश तथा नदी ।।

विधा विधी प्रकारे च—

विधा-विधान प्रकार तथा बड़ाई।।

—साधू रम्येऽपि च त्रिष्ठ ॥ १०१॥

साधु-साधु, कुलीन, सुन्दर, रोजगारी तथा
सज्जन।। १०९॥

वधूजीया स्तुवा ह्यी च--

वधू-स्त्री, (विवाहिता स्त्री ) पुत्रकी बहु, सवरग श्रोषधी ।।

## -सुधा लेपोऽमृतं स्तुही।

सुधा--श्रमृत, च्ना, विजली, भोजन, श्रॅवरा, सेहुँड ॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा-

संघा--प्रतिज्ञा, श्रङ्गीकार, मर्यादा ।।

—श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृद्धा ॥ १०३ ॥

श्रद्धा-श्रादर, श्राकांत्वा तथा विश्वास ।१०२ ।

मधु मचे पुष्परसे चौद्रे-

मधु--मद्य, पुष्परस, शहद, चैत्र तथा महुत्रा ।।

--- ऽत्यन्धं तमस्यपि॥ अन्य--श्रन्धा तथा श्रिधियारा॥ स्मतस्त्रिष्ठ---

यहांसे 'लेकर धांतवर्गपर्थन्त शब्द तीनो' लिंगोंमें होते है।।

समुत्रद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥ समुन्नद्ध--श्रपनेको पंडित माननेवाला तथा गर्वयुक्त ॥ १०३ ॥

ब्रह्मबन्धुरधितेपे निर्देशे-

ब्रह्मबन्धु--श्रधिक्षेप, निदा योग्य ब्राह्मग्रा॥

्र-ऽथाविलम्बितः । अविदूरोऽष्यव-ष्टब्धः—

अवष्टब्ध--आश्रित,पासवाला तथा वैधा हुआ। प्रसिद्धी ख्यातभूषिती ॥ १०४॥ प्रसिद्ध--प्रसिद्ध वा स्थात तथा भूषित ॥१०४॥ ॥ इति धान्ताः॥

सूर्यवही चित्रभानू— चित्रमातुन-सूर्य और श्राप्त ॥

—भान् रश्मिदिवाकरौ।

मानु-किरण और सूर्थ ॥

मुतात्मानौ धातृदेहौ-भूतात्मन्-नह्या तथा देह ॥ मुर्खनीचौ पृथाजनौ ॥ १०५ ॥ पृथग्जन--मूखं श्रीर नीच ॥ १०५ ॥ यावाणौ शलपाषाणौ-प्रावन्-पर्वत तथा पत्थर ॥ -पत्रिणौ शरपक्षिशाौ। पत्रिन्-पत्ती, बाज पत्ती तथा बागा ॥ तकशैली शिखरिणी-शिखरिन्-वृत्त तथा शैल ॥ -शिखिनी बह्विबहिंगी ॥ १०६॥ शिखिन्-ग्रमि तथा मोर ॥ १०६॥ प्रतियन्नावभी छिप्सोपग्रहा— प्रतियत्न-लामकी इच्छा तथा सस्दार ॥ वथ सादिनौ। द्वी सारिथ इयारोही-सादिन्-सारिथ और घोडेका सवार ॥ —वाजिनोऽश्वेषुपित्तगाः ॥ १०७॥ वाजिन्-घोड़ा, बागा श्रीर पद्मी ॥ १०७॥ कुळेऽप्यभिजनौ जन्मभूम्याम-श्रभिजन-कुल तथा जन्मभूमि॥ प्यथ हायनाः । वर्षाचित्रीहिभेदाश्च-हायन-वर्ष, श्रांच तथा एक तरहका घान ॥ —चन्द्राग्न्यका विरोचनाः ॥ १०८॥ विरोचन-चन्द्रमा, श्रम्भि, सूर्थ ॥ १०८ ॥ क्लेशेऽपि वृजिनो-बुजिन-क्लेश, कुटिल तथा पाप ॥ -विश्वकमिकसुरशिहिपनोः। विश्वकर्मन्-सूर्य तथा विश्वकर्मा ॥ पारमा यरनो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो **मक्र** वर्ष चा ॥ १०९॥

श्रात्मन्-श्रात्मा, देहस्वभाव, बुद्धि ब्रह्म, उपार तथा धीरता वा धेर्य ॥ १०९ ॥

शको घातुकमत्तेभो वधुकाब्दो घना-घनः।

घनाघन-बरसनेवाला मेघ, इन्द्र तथा खूनी मत-बाला हाथी ॥

ग्रभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ ११०॥

श्रभिमान-धनादिका धमण्ड, ज्ञान, प्रस्त्य, नम्रता तथा हिसा ॥ ११० ॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मृतं निरन्तरे।

घन-कठोरवस्तु, सेघ, मूर्तिकागुरा, सुद्गर, कांसीका बना हुन्ना घंटा इत्यादि बाजा, मध्यतृत्य, गीतवाद्य ।

इनः सुय प्रभौ-

इन-सूर्य, प्रभु ॥

-राजा मृगांके चित्रये नृषे ॥ १११ ॥ राजन्-चन्द्रमा, क्षत्रिय तथा नृष ॥ १९१ ॥ वाणिन्यौ नर्तकी दृत्यौ-

• वाणिनी-नाचनेवाली स्त्री तथा दूती वा कुटनी॥

—स्रवन्त्यामपि वाहिनी॥

वहिनी-सेना, नदी, वाहिनीपति, समुद्र तथा सेनापति ॥

हादिन्यौ बज्रतडितौ-

हादिनी-वज श्रीर विजली ॥

-वन्दायामपि कामिनी॥ ११२॥

कामिनी-बहुत कामवाली वा कामकी इच्छा करनेवाली स्त्री, बादा (एक वृक्षका रेग ) तथा स्त्री॥ ११२॥

रवग्देहयोरिप ततुः-ततु-खाल, शरीर, थोड़ा और दुर्वल । -स्नाऽधोजिद्विकापि च । सूना—जिह्वाके तलेका स्थान श्रीर सारनेका स्थान ॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिष्ठ तुच्छके॥११३॥मन्देः

वितान—ऋतु, विस्तार, तुच्छ ॥ ११३ ॥ तथा मन्द ॥

- अथ केतनं कृत्ये केताबुपनि मन्त्रणे।

केतन-ध्वजा, घर, कार्य तथा उपनिमन्त्रण ॥

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विद्रः प्रजा-पतिः ॥ ११४ ॥

ब्रह्मन्-वेद, चैतन्य, तप, ब्रह्मा तथा ब्राह्मण श्रीर प्रजापति ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम्।

गधन-सूचना करना वा चुगली खाना, हिंसा तथा उत्साह देना वा भरोसा देना।

श्रातश्वनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

श्रातञ्चन-वेग, तप करना तथा दूधमें महा डालना॥ ११५॥

व्यञ्जन लाञ्क्कं श्मश्रुनिष्डानात्त्यवे-ष्ट्रापि ।

व्यक्षन-चिह्न, दाढी मुझ, निष्ठान तथा अङ्ग ॥ स्थात्कौलीनं जोकवादे युद्धे पश्चिद्दिप-चिषाम् ॥ ११६॥

कौलीन-लोकापवाद वा लोकर्निदा तथा पश्च सर्प पक्षीका युद्ध ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यान निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।

उद्यान-बगीवा, निकलना तथा प्रयोजन ॥

अवकाशे स्थिती स्थानं-

स्थान-अवकाश श्रीर स्थिति॥

-क्रीडादाविप देवनम् ॥ ११७ ॥ देवन-क्रीडा, व्यवहार तथा जीतनेकी इच्छा १९७

## उत्थानं पौरुषे तन्त्रे सनिविद्योद्दमेऽपि च

उत्थान-उठना वा राजा होना, उत्रोग, कुट्स्ब-कार्य, सिद्धान्त नथा उत्ता प्रेपध ।

च्युत्थात प्रतिराधि च विरौधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

व्युत्थान-तिरस्कार या श्रनादर, पिरोध करना ॥ ११८॥

मारणे मृतसंस्कारे गृती हृद्येऽर्थदापने। निर्वर्तनोपकरणानुब्रज्यासु च साधनम् ॥११९॥

साधन-पारा दृत्यादि त्सायनका बनाना, चलना पृथ्वी, जल दृत्यादि दृत्य, भन दौलत दिलवाना, धन दृत्यादि ॥ गैदा क्रना,उपाय, पीछे पीछे चलना पुरुषकी मूत्रईद्रिय, तथा मृतक वा श्रिप्तिस्कार ॥ ११९॥

नियातनं वैरञ्जुद्धी दाने न्यासापंणेऽपि च निर्यातन-वैरशोधन, दान तथा धरोहर देना ॥ व्यासनं विपद्धि श्रेशे दोषे दास्यकोत्यंत्र ॥ १२०॥

व्यसन-विपत्ति, श्रश, नाश वा पतन, कामज दोष तथा कोपज दोष ॥ १२०॥

पक्षमाचित्रोम्नि किजस्के तस्स्वाद्यशेऽप्य-गीयसि ।

पैक्सन्-नेत्रोंके पलक, केसर स्रतका टुकट्रा, श्रतिश्रहेंप ॥

तिथिभेदे ज्ञणे पर्व—
पर्वन्—श्रष्टमी दशे श्रादि तिथि उत्सव॥
-वत्मनेत्रच्छ देऽध्वनि॥ १२१॥ •
वर्त्मन्—माग वा रास्ता तथा श्रांखके पलकः॥ १२१॥

श्रकार्यगुद्धे कौपीनं-कौपीनं-अकार्य और गुद्ध तथा कौपीन ॥ -मैथुनं संगती रते। मशुन-की पुरुषका संयोग तथा रित ॥

#### प्रधानं परमारमा धी:-

प्रधान-प्रधान वा सुल्य तथा राजका सुख्य सहाय, परमान्मा, बुद्धि ॥

प्रज्ञानं बुद्धिचिद्वयोः ॥ १२२ ॥ प्रज्ञान-बुद्धि खोर चित ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयो-

प्रसून-फूल तथा फल॥

-र्तिधन कुळनाशयोः।

निधन-कुल श्रीर नाश ॥

क्रन्दने रोदनाहान-

क्रन्दन-राना, पुकारना तथा योद्धाञ्चाका धम-कीसे ललकारना ॥

-वर्ष देहप्रमाणयोः॥ १२३॥

वर्षन्-शरीर वा देह तथा प्रमाशा वा मापः ॥ १२३ ॥

गृहदेद्दित्वर्प्रभावा **धामा**—

धामन्-घर, देह, प्रभा वा प्रकाश तथा प्रभाव॥

-न्यथ चतुष्पथे । संनिवेशे च संस्थानं-संस्थान-किगी वस्तुके श्रवयवोका विभाग तथा

संस्थान-कियी वस्तुके श्रवयवीका विभाग तथा चौराहा श्रोर मरना वा नाश ॥

— लक्ष्म चिद्धप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
लक्ष्मन्-चित्त तथा प्रधान वा मुख्य ॥ १२४ ॥
स्माच्छादने संपिधानमपधारणमित्युभे।
श्राच्छादन-ढाकना, छिपना बस्न इत्यादिसे
वष्टन, बस्न तथा गुप्त होना ॥

आराधनं साधने स्याद्वाप्त**ै तोषणे-**ऽपि च ॥ १२५ ॥

श्रागधन-रान्तुष्ट करना, सिद्ध करना तथा लास ॥ १२५ ॥

अधिष्ठानं चकपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥ अधिष्ठान-पहिया, नगर, आक्रमण वा अमलमें कर लेना ॥

#### रतं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि--

रत-जवाहिर तथा स्वजातिमें श्रेष्ठ वा उत्तम ॥

—वने सलिलकानने ॥ १२६॥

वन-पानी श्रीर वन ॥ १२६ ॥

तिकनं विरते स्तोकं-

तिलन-विरत तथा थोडा ॥

वाच्यकिङ्गं तथोत्तरे।

यहांसे नांतवर्गकी समाप्ति पर्व्यन्त संपूर्ण शब्द वाच्यत्तिग होते हैं॥

समानाः सत्समैके स्युः-

समान-पटित, सम और एक ॥

—पिशुनौ खलसूचकौ∙॥ १२७ ॥

पिश्चन-सूचक वा चुगलखोर तथा खला।१२७।

हीनन्यूनाबूनगर्ह्यों-

हीन-थोड़ा, त्याग किया गया, न्यून--निन्दा करने योग्ध व किसी वस्तुसे रहित ॥

बेगिशूरी तरस्विनी।

तरस्विन्-वेगवाला तथा शर ।।

स्रभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तन्यापद्गता-वपि ॥ १२८ ॥

श्रभिपन्न-श्रपराधी, जीता गया तथा विपत्तिको श्राप्त हुन्ना ॥ १२८॥

॥ इति नान्ताः ॥

कलापो भूषणे बहें तूर्णीरे संहतावि ।

कलाप-समूह, मोरकी पूँछ, कोधनी तथा गहना श्रोर तरकस ॥

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सिळ्ल-स्थितौ॥१२९॥

परीवाप-तबू कनात इत्यादि सामग्री तथा बीजका बोना श्रीर थाला ॥ १२९ ॥

गोधुगगोष्ठपती गोपौ-

गोप-अहीर, गन्धरस, अनेक कामोको करने-

—हरविष्णू वृषाकपी।

वृषाकपी-महादेव तथा विष्णु॥

बाष्पमुष्माश्च--

बाध्य—भाक अर्थात् गरम वस्तुपर पानी डाल-नेसे धुत्रांके सदश क्रपर उठती हुई वस्तु, आंसू, गरमी ॥

— कशिषु त्वन्नमाच्छाद्नं द्वयम् ॥१३० कशिषु भोजन, अन्न, वस्न तथा तकिया ॥१३०॥

तल्पं शय्याहदारेषु --

तल्प-खाट, श्रदारी तथा दारा ॥

-स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम्।

विटप-शाखा पत्ता इत्यादिका समूह, घास तृगा इत्यादिका गुच्छा, दक्ष वा पेड़ ॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेचलिंगा अमी-

प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप -पडित तथा सुन्दर ॥ १३१ ॥

-कूर्मी बीगाभेदश्च कच्छपी।

कच्छनी-व छुट्टी श्रीर सारस्वती वीगा।

इति पांताः ॥

रवर्णे पुंसि रेफः स्याःकुत्सिते वाच्यलि-गकः ॥ १३२ ॥

रेफ-अध्यय वानीच तथा रेफ वा हल्, रकार एक वर्ण ॥ १३२॥

इति फांताः ॥

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्य-गायने।

गन्धर्व-विश्वावसु इत्यादि स्वर्गके गवैथे, घोड़ा, एक प्रकारका गन्धशुक्त सृग, सनुत्यादि प्राणी ॥

कम्ब्रनी घलये शंखे-

कम्बु-शख, कक्या वा कगन ॥

-दिजिद्वी सर्पस्चकी ॥ १३३ ॥

द्विजिह्न-सर्प तथा चुगलखोर॥ १३३॥
पूर्वोऽन्यल्याः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वणान्॥

पूर्व-पहिला (ली ), पूर्वपुरुप श्रशीत पुरुखा, श्रह्मा, पूर्वदिशा तथा पहिले ॥

इति बान्ताः॥

# कुम्मी घटेभमूर्धाशी-

कुम्स-गूगलका दृक्ष, घडा, हाथीका मस्तक-श्रेश, कुम्मराशि ॥

-डिम्भी तु शिशुबाछिशी ॥ १३४ ॥ डिम्म-बालक तथा मुर्ख ॥ १३४ ॥ स्तम्भी स्थूगाजडीभावी स्तम्म-खम्म, ठगमुरी ॥ -शम्म महात्रिछोचनी । शम्भ-ब्रह्मा श्रीर शिव ॥ कुव्हिम्लाभिका गर्भा

गर्भ-इतिके पेटका गर्भ; पेट, बालक नाट्यकी सीसरी संधि ॥

-विस्नम्भः प्रगायेऽपि च ॥ १३५ ॥
क्सिम्म-श्रहारकी प्रार्थना श्रीर विश्वास १३५।
स्याद्भेयाँ दुन्दुभिः पुंसि स्याद्शे दुन्दुभिः ख्रियाम् ।

दुन्दुभि--नगाडा तथा लटकोका एक प्रकार का खिलीना ॥

े स्यान्मद्दारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान्॥ १३६॥

कुमुस्म-कमण्डलु, कुसुम्मका फूल ॥ १३६ ॥ क्षत्त्रियेऽपि च नाभिर्ना—

नामि-टोड़ी, चत्रिय, मुख्य राजा, रथके चक-का मध्यभाग खोर कस्त्री ॥

सुरभिर्गिव च स्नियाम्। सुरभि-सुन्दरं ना मनोहर, सुनंपनुषा प्रसिद्धः

न्वपा ( पुष्पवृत्त् ), वसन्तऋतु, जायफल, कामधेतु सलईवृत्त्, सुवर्ण वा सोना तथा कमल (पुष्पवृत्त्) ॥

# सभा संसदि सभ्ये च-

सभा-सभा तथा घर॥

— त्रिष्वध्यक्षेऽपि बह्नभः ॥ १३७ ॥

वस्त्रभ-प्यारा-री, स्त्रीका पति, ऋष्यक्ष वर मास्त्रिक तथा कुलीन घोडा ॥ १३७ ॥

इति भांताः॥

# किरणप्रयहौ रश्मी-

रित्म-किरण वा प्रकाश तथा लगाम ॥
---कपिभेकौ ब्लवंगमौ ।
---कंगम-वानर तथा मेंडक ॥

इच्छामनोभवो कामी— काम-इच्छा श्रीर काम ॥

—शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८॥ पराक्रम-शरता तथा उपोग ॥ १३८॥

धर्माः पुण्ययमन्यायम्बभावाचारसी-मपाः।

धर्म-पुण्य, यमराज, न्याय, स्वभाव, श्राचार तथा सोमयह करके मोमवहीका रम पीनेवाला ॥

उपायपूर्व ग्रारम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

उपक्रम-उपायपूर्वक प्रारम्भ, प्रारम्भ तथा रिसवत ॥ १३९ ॥

विशावपथः पुरं वेदो निगमो---निगम-वापार, शहर तथा वेद ॥

—नागरो वागिक्। नैगमी द्रौ-

नेगम-वदसम्बन्धि वस्तु, नगरका रहनेवाला तथा बनियां श्रीर उपनिषद् ॥

--- बले रामो नीलचारु सिते निषु १४०॥ राम-सुन्दर वा मनोहर, नीली वस्तु, श्वेत वस्तु तथा परगुराम, रासचन्द्र, बसराम १४०॥

# शब्दादिपूर्वी वृन्देऽपि ग्रामः--

प्राम-( पु॰) गांव, ( इस शब्दके पूर्वमें जब ''शब्द'' इत्यादि शब्द रहते है तब यह समूहवाची होता है, जैसा-शब्दशाम, स्वग्शाम, यह शब्द कहीं स्वरवाची भी है)॥

न्कान्तौ च विक्रमः।

विकम-विकमगा तथा पराकम ॥

स्तोमः स्तोन्रेऽध्वरे वृन्दे-

स्तोम-समृह तथा स्तोत्र ॥

जिह्यस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४४॥

जिह्म-कुटिल तथा त्रालसी श्रीर वक ॥१४१॥

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च-

गुल्म-पिलही रोग, विना डालीका वृत्त तथा एक प्रकारकी सेना॥

जामिः स्वसृकुलिह्योः।

जामि-विद्वित तथा कुलस्त्री !

क्षितिचान्त्योः क्षमा युक्ते चर्म शक्ते हिते त्रिष्ठु ॥ १४२ ॥

च्नमा-पृथ्वी तथा क्षमा वा सहना ॥१४२॥

• त्रिषु श्यामौ इरित्कृष्णौ श्यामा स्या-च्छारिवा निशा।

स्थाम, स्थामा-हरा, कृष्णशतावरी और रात्रि॥ ललामं पुच्छपुड्राश्वभूषामाधान्यकेतुषु ॥ १४३॥

ललाम-पृंछ, घोड़ा, घोड़ेके माथेका एक चिह घोडेका गहना, प्रधान वा मुख्य, मनोहर, प्रभाव, पुरुष तथा भूषण श्रीर श्रम्वलिगी ॥ १४३ ॥

स्क्ष्ममध्यात्मम-

सूक्ष्म-छल तथा श्रव्यात्म ॥

प्यादी,प्रधाने प्रथम-

प्रथम-पहिला-ली, तथा प्रधान वा मुख्य ॥

—स्त्रिषु ।

यहांसे लेकर मान्तपर्यन्त सम्पूर्ण शब्द तीनी लिंगोंमें होते हैं॥ वामीवल्गुप्रतीपौ द्वा---

वाम-शोभित, उत्तटा तथा टेढ़ा ॥

वधमौ न्यूनबुत्सितौ ॥ १४४ ॥

श्रधम-न्यून तथा निन्दित ॥ १४४॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयामिमहं द्वयम्॥

यातयाम-पुराना-नी, (बासी श्रन्न इत्यादि) श्रीर भोजन करके त्याग किया गया-वा की गयी।

इति मान्ताः ॥

तुरंगगरडौ ताक्यों-

तार्स्य-घोडा तथा गरुड ॥

-निळ्यापचयौ चयौ ॥ १४५ ॥

क्षय-नाश, प्रलय, व्वयेरोग तथा घर ॥१४५॥

श्रह्मयों देवरश्याली-

श्चशुर्य-देवर तथा साला ॥

भ्रात्व्यौ भ्रात्जद्विषौ ।

भातृच्य-भतीना तथा शत्रु ॥

नर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ-

पर्जन्य-शब्दित मेघ तथा इन्द्र॥

—स्यादर्थः स्वामिवैश्ययोः १४६ ।

श्चर्य—स्वामी तथा वैश्य ॥ १४६ ॥

तिष्यःपुष्ये किष्ठयुगे—

तिष्य-पुष्य नत्तत्र और कल्युग ॥

-पर्यायोऽवसरे क्रमे।

पर्योय-श्रवसर तथा क्रम ॥

प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासद्देतुषुः ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्दे—

प्रत्यय---अधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास तथा। कारगा ॥ १४७ ॥ छिद्र और शब्द ॥

-ऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ।

अनुराय-बड़ा वेर तथा पश्चात्ताप

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते॥ १४८॥

स्थूलोचय-पर्वतका वड़ा ढॉका,अपूर्णता,हाथियो की गध्यम गति अर्थात् न जल्दी न धीरे ॥१४८॥

समयाः शपथाचारकातसिद्धान्त-संविदः।

समय—काल वा समय, शतथ वा किरिया, श्राचार वा श्रपने भतके सदश व्यवद्वार, सिद्धान्त श्रथीत् निर्णय किया हुआ पदार्थ तथा बात-चीत करना ॥,

व्यसनान्यशुभं देवं विपदित्यनया-स्रयः ॥ १४९ ॥

श्रनय—दुर्व्यसन, जुल्ला इत्यादि, दुष्ट भाग्य तथा विपत्ति ग्रीर ग्रनीति ॥ १४९ ॥

ग्रत्ययोऽतिक्रमे कुच्छ्रदोषे दण्डे—

ग्रन्यय-मरना, उद्धंपन, व्लेशदोष तथा दण्डं श्रीर नाश ॥

ऽप्यथापदि । युद्धापत्यो संपरायः--

सम्पराय-त्र्यापत्ति, युद्ध तथा उत्तरकाल या ऋगाड़ीका समय ॥

पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५०॥

पूज्य-पूजा वा श्रादर करनेके योग्य श्रीर समुर ॥ १५०॥

पश्चादवस्थ।यि बलं समवायश्च संनयौ।

सन्नय-श्रव्हा न्याय करनेवाला, सेनाके पीछे की सेना तथा समृह ॥

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः—

संस्त्याय-समूह, बैठक तथा विस्तार ॥

-प्रगापास्त्वमी ॥ १५१ ॥ विस्नम्भया च्जाप्रेमागाः--

प्रणय-प्रेंम वा प्रीति, मांगना तथा वि-श्वास ॥ १५१ ॥

-विरोधेऽपि समुच्छ्यः॥

सीमुच्छ्रय-कॅचाई तथा विरोध ॥

विषयो यस्य यो ज्ञातम्तत्र शब्दादि-केष्वपि ॥ १५२ ॥

विगय—जानी हुई वस्तु, रूप, रस, गन्ध, स्पर्ध शब्द थे प्रत्येक विषय कहलाते हैं, देश, स्थान श्रीर श्राश्रय ॥ १५२ ॥

## नियसिऽपि कषायोऽस्त्री-

कषाय-कंषेला रङ्गवाला-ली, कंपेला रङ्ग,काढा, विलेपन तथा नया श्रगराग श्रर्थात् टटका चन्दनादिक ॥

#### -सभायां च प्रतिश्रयः।

र्पातथय—समा, श्राधय वा श्रवलम्बन नथा श्रङ्गीकार ॥

#### प्राया भूम्न्यन्वगमने —

प्राथ-गंन्यागपूर्वक भोजनका त्याग, मृत्यु वा गरण श्रीर तुल्य ॥

# -मन्युर्देन्ये कतौ क्रधि ॥ १५३ ॥

मन्यु—क्रोध, दीनतावा गरीबी नथा चिन्ता वाशोक ॥ १५३ ॥

## रहस्योपस्थयोग्रह्यं-

गुरा–छिनानेके योग्य तथा स्त्री या पुरुष का मूत्रेन्द्रिय ॥

## -सत्यं शपथतध्ययोः।

सत्य-सञ्चा-गभी, मत्यभामा, सत्यना, कसम नथा सत्ययुग ॥

## वीर्य बले प्रभावे च-

वीर्य-चल श्रीर प्रभाव ॥

-द्रह्मं भन्ये गुगाश्रये ॥ १५४ ॥

इब्य-वन, मन्य श्रर्थात् सुंदर श्रीर स्थिर १५४

धिष्ण्यं स्थाने गृहं भेऽग्री-

धिण्य-स्थान, गृह्, नचुत्र तथा ध्रमि ॥

--भाग्यं कर्म शुभाशुभम्।

भाग्य-भाग्य वा पूर्वजन्मके किये हुए रश्रच्छे वा बरे कर्म ॥

## कशेरुहेम्नोगङ्गिय-

गांगेय-गंगासम्बन्धी वस्तु, भीष्म कौरवके पितामह, सवर्ण वा सोना, कष्टेरुफल वा वन्द ॥

—विशरवादिनिकाऽपि च ॥ १५५ ॥ विशरवा—गुङ्की श्रोषधी, इन्द्रपुष्पी श्रोषधी, श्राप्तकी शिखा वा श्रागकी लपट तथा दन्तिका श्रोषधी ॥ १५५ ॥

#### ्षाकपायी श्रीगौर्यो -

वषाकपायी-लक्ष्मी तथा पार्वती M

#### ··· रभिख्या नामशोभयोः ॥

श्रभिक्या-नाम तथा शोभा॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्र-भारणम् ॥ १५६ ॥ उपायः कर्म चेष्टा च चिकितसा च नव क्रियाः ।

क्रिया-किया आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिला, पूजन, विचार ॥ १५६ ॥ उपाय, कर्म, चेष्टा तथा दवाई करना ॥

् छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बम-नातपः ॥ १५७॥

छाया-सूर्यकी स्त्री वा शनैश्वरकी माता तथा शोभा श्रीर प्रतिबिक्ब ॥ १५७ ॥

क्ष्या प्रकोष्ठे हम्यदिः काञ्च्यां मध्ये-अवन्धने ।

कक्ष्या-राजाकी डेउढ़ी, श्लियोंके कमरका गहना, हाथीके मध्य शरीरका वन्धन ॥

कृत्या क्रियादैवतयोखिषु भेद्ये धना-दिभिः ॥ १५८॥

कृत्या-धन, स्नी, भूमि इत्यादि, फाँड्नेके योग्य शत्रुका पौरुष इत्यादि, तामसी देवता जिसको नोग शत्रुपर चलाते हैं तथा किया वा कर्म १५८॥

जन्यं स्याज्जनवादैऽपि--जन्य-जो पेदा होता है, निन्दित दचन वरके श्चर्थात् दामादके पत्त्वाले मित्र इत्यादि, वाजार तथा यद्ध ॥

#### -जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च।

जघन्य-सबसे पिछला-ली, श्रधम वा नीच तथा मूलेन्द्रिय ॥

#### गहाहिनों च वक्तव्यो-

वक्तव्य-बोलनेके योग्य, निन्दा करनेके योग्य, हीन ऋर्थात् किसी वस्तुसे रहित तथा ऋधीन वा परतन्त्र॥

#### -कल्यो सज्जनिरामयो॥ १५९॥

कल्य-कश्च धारण करनेवाला योद्धा तथा नीरोग ॥ १५९ ॥

#### श्रातमवाननपेतोऽर्थादध्यों---

श्रर्थ-ऋर्थसे च्युत वा दूर न हुआई,बुद्धिमान्-मती, और शिलाजीत ॥

#### पुण्यं तु च।र्वऽपि।

पुण्य-पुण्यवान्, मनोहर तथा धर्म ॥

#### —रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि—

रूप्य-रमणीय वा सुन्दर, रूपया वा चांदी, छुपी हुई चांदी वा सोना व्यर्थात् चांदी वा सोनेका रूपया॥

#### —वदान्यो वल्गुवागपि ॥ १६० ॥

वदान्य-दाता वा देनेवाला-ली, मीठा वोलने-वाला-ली॥ १६०॥

## न्याय्येऽपि मध्यं --

मध्य-विचला-ली वा बीचवाला-ली, श्रधम वा नीच, न्याययुक्त वा न्यायके सहरा, कमर तथा बीच ॥

# सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते।

सौम्य-सूधा-धी, सुन्दर, चन्द्रको निवेदन करनेके योग्य वस्तु, बुध (एक ग्रह् )॥

इति यांताः॥

#### निवहावसरौ वारी-

वार-सोम, मजल, बुध इत्यादि ७ वार. ऋवसर तथा समूह॥

संस्तरी प्रस्तराध्वरी ॥ १६१ ॥

संस्तर-कुशका विद्धीना, विद्धोना तथा यज्ञ ॥ १६९॥

#### गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ-

गुरु—भारी, बृहस्पति, बडेलोक (पिता ) इत्यादि ॥

—द्वापरी युगलंशयी।

द्वापर-संशय ( सन्देह ) ' द्वापर 1 युग ॥

प्रकारी भेदसाहश्ये-

प्रकार-मेद (तरह ) तथा तुल्यता ॥

—आकाराविङ्गिताकृती॥ १६२ ॥

श्राकार-चेष्टा तथा सूरत ॥ १६२ ॥

किशास सस्यश्केषू-

किंशारु-धन इत्यादिका द्वडा ( धुईके तुल्य अप्रभाग) तथा नाण और कंक पत्नी ॥

--मद धन्वधराधरौ।

मर्क-निजलदेश श्रीर पर्वत ॥

चईयो दुमशैलाकीः-

श्रद्रि-दृश्च, पर्वत तथा सूर्य ॥

—ख्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥

पयोधर—स्तन श्रौर मेघ ॥१६३॥

ध्वान्तारिदानवा वृश-

वन-बनासुर, (एक दैत्य ) श्रन्धकार तथा शत्रु प्र

-बळिहस्तांशवः कराः।

कर-हाय, इ। थीकी सूंड, किरण तथा महसूल ना कर भ

मद्रो भङ्गनारीकवाणा-

प्रदर-स्त्रियों का एक रोग (जिसके होनेसे मूत्र द्वारसे लोह बहता है )भंग (भन्नता )तथा बाखा।

–अस्ताः कचा अपि ॥ १६४॥

श्रस-केश, कोना श्रांस् तथा लोहू ॥ १६४॥ स्रजातश्रङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुनी च तुषरो ।

तृ वर-समयपर जिसके सींग न जमे हो ऐसा बैल | समयपर जिसके मूंछे न जमी हो ऐसा पुरुष॥

स्बर्गेऽपि राः-

रै-धन तथा सुवर्ण (सोना)॥

—परिकरः पर्यंकपरिवारयोः ॥ १६५॥ परिकर-पलॅग श्रोर क्रद्धम्व ॥ १६५॥

मुक्ताशुद्धी च तारः स्या-

तार-अचा शब्द, नत्तन्न, श्रांखकी पुतली मोती, सफाई, गोल मोती, गोल श्रीर निर्मल मोतीसे बना हार, जलसे पार उतरना, एक बानर का नाम तथा चांदी धातु॥

-च्छारो वायौ स तु निष्ठ । कर्बुरे--शार-चितकवरा-री, चौपड़ इत्यादिके खेलनेकी गुड़ी तथा वायु॥

- अथ भितज्ञाजिसंविदापत्सुसङ्गरः १६६

संगर-संप्रामका युद्ध, प्रतिज्ञा, सल्लाह तथा आपत्ति वा विपत्ति ॥ १६६ ॥

वेदभेदे ग्रप्तवादे मन्त्रो-

मन्त्र-मन्त्र वा सलाह, एक वेदका भेद तथा गुप्त बोलना ॥

—मित्रो रवावपि।

मित्र-सूर्य, मित्र, (दोस्त) तथा ऋपने सभी-पके राजासे व्यवहित राक्षा॥

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरू-

स्वर-इन्द्रका बज्र तथा यज्ञमें खम्मके छीलनेके समय उसमेंसे गिरा हुमा पहिला हुमड़ा ॥ ग्रह्मेऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥

धवस्कर-विष्ठा तथा स्त्री वा पुरुषका मूत्रेन्द्रिय ( उपस्थ ) ॥ १६७ ॥

स्राडम्बरस्तूर्यश्वे गजेग्द्रामां च गर्जिते श्राडग्वर-तैयारी, बाजेका शब्द तथा बड़े हाथियोका शब्द ॥

श्वभिद्वारोऽभियोगे च चौयें संनद्दनेऽपि च ॥ १६८ ॥

श्रभिहार-चौराना, कवच इत्यादिका धारण तथा नालिश इत्यादि शत्रुके नाशका उपाय॥१६८॥ स्याज्ञकुमे परीवारः खङ्गकौषे परि-च्छुरे।

परीशार-कुटुस्ब, नरवार इत्यादिका स्थान तथा लाव, लक्कर ॥

विष्टरो विटपी दर्भद्विष्टः षीठायमास-नम् ॥१६९॥

विष्टर-बैठनेका खासन, वृद्ध, दर्भमुष्ट ( एक प्रकारका परिमाण ) वा नाप ॥ १६९ ॥ द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे प्रतीहार, प्रतीहारिन् द्वार तथा द्वारपाल ॥ विपुले नकुले विष्णौ बश्चना पिंगळे विषु ॥ १७० ॥

बध-पीले रंगवाली वस्तु, पीला रंग, बड़ा नौला, विच्छु तथा एक यादव ॥ १७० ॥

सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं बरे त्रिष्ठ ।

सार-श्रेष्ठ वा प्रधान, बस, वस्तुका स्थिर भाग, बाहीर, सज्जा व चरबी, पानी, धन तथा उचित वा न्यायके कलसार ॥

हुरोदर-जुझारी, दाव (जो द्रव्य जुएमें लगाया स्राता है) हुआ। १७१॥

महारण्ये दुर्गपये कान्तारं पुंतपुंसकम् । १२ कान्तार-दुर्गम वा टेढा सार्ग, बड़ा धुवन एक प्रकारका ऊख॥

मत्तरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपग्रयोश्चिष्ठ ॥ १७२ ॥

मत्सर-ईर्ष्या वा डाह करनेवाला (ली) इपरा, तथा ईर्घ्या वा डाह ॥ १७२ ॥

देवाद्युते घरः श्रेष्ठे त्रिष्ठ क्लीवं मना-क्यिये।

वर-श्रेष्ठ वा प्रयान, वा मुख्य देवताने जी प्रसन्न होकर दिया, दृलह वा वर, केशर ॥

वंशांकुरे करीरोऽल्ली तहभेदे घटे च ना
॥ १७३॥

करीर-बांसका छकड़ा,√वरील वा टेटी वृत्त्, एक प्रकारका कांटेदार वृत्त् वा कीकर तथा घटना वा मेल ॥ ९७३ ॥

ना चम्बयने हस्ते सुत्रे प्रतिसरोऽ स्त्रियाम् ।

प्रतिसर-सेनाका पिछला हिस्सा, तथा मन्त्र-तन्त्रका डोरा ॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविण्युसिहां ग्रुवा-जिथु॥ १७४॥ ग्रुकाहिकपिभेकेषु इरिनां कपिले त्रिष्ठ ।

हरि-यम, वायु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, जिल्लु, सिंह, किरण, घोड़ा ॥ १७४ ॥ तोता,,साप, बन्दर, मेडक और हरा रङ्ग तथा कपिल रङ्ग और कुछ पीली वस्तु ॥

शर्करा कर्परांशेऽपि-

शर्करा—ठिकडी, कंकडी, खांड, रेता तथाः बहुत किड़िओंकी जमीन ॥

—यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥ यात्रा-गमन वा चलना तथा चालना ॥१७५॥, इरा भृवाक्सुराऽप्सु स्या—

इरा-मद्य, भूमि, बाणी तथा जल ॥

संद्री निद्राममीलयोः।

तन्द्री---निद्रा तथा श्रालस्य ॥

# धात्री स्याद्भुपमाताऽपि क्षितिरप्यामन-

भात्री-माता, श्रामला, प्रथ्वी तथा उपमाता श्रर्थात् दूध पिलानेवाली घाय ॥ १७६॥

# क्षुद्रा न्यङ्गा नटी वेश्या सरया कण्टका-रिका। त्रिष्ठ करोऽधमे उल्पेऽपि क्षुद्रं—

शुद्र-क्रूर, श्रधम, श्रल्प वा थोड़ा (डी) सूम, मधुमाछी, भटकटैया, हीन श्रंगवाली झी,नटी,वेश्या

#### ---मात्रा परिच्छदे ॥ १७७॥ घ्रस्पे च परिमाणे सा मात्रं कात्स्त्येंऽवधारणे।

मात्रा-परिच्छद व सामग्री ॥ १७७ ॥ परि-मापा, सूक्म वा पतला, सम्पूर्णता, तथा अव-धारण वा निश्चय ॥

#### ष्माहेख्याश्चर्ययोश्चित्र-

चित्र-चित्रविचिवरङ्गवाला-ली, आश्चर्ययुक्त, कई एक मिश्रितरङ्ग, एक नज्जन, मूसाकर्णी श्रोषध, एक तरहकी ककडी, अद्भुतरस, तसबीर तथा आक्चर्य ।

मुखाग्रे कोडह्तयोः पोर्च-

पोत्र- सूकरके मुखका अप्रभाग तथा इलका कद्मभाग ॥

—गोतं तु नाम्नि च॥ १८०॥
गोत्र—नाम, पृथ्वी, पर्वत तथा कुल ॥१८०॥
सनमाच्छादने यहा सदादाने वनेऽपिच
सत्र-हक्कन, यहा, सदादान, (सदावर्त)
धन, वन तथा धूर्तता॥

स्राजिरं विषये काये— श्राजिर-विषय, शरीर, वायु तथा श्रांगन॥ -ऽप्यम्बरं व्योग्नित वासस्ति॥ १८१॥ श्रम्बर-श्राकाश तथा वस्र॥ १८१॥ चक्रं राष्ट्रे-

चक-राज्य, चकवा पत्ती, समूह, रथका पहिया, कुम्हारका चाक तथा जलका भैंवर ॥

-ऽप्यत्तरं तु मोक्षेऽपि-श्रवर-भोच, हरफ, बहा तथा श्रोकार ॥ शीरमपुर च। चीर-दुग्थ तथा जल ॥ स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्री हो-भूरि तथा चन्द्र-सुवर्गा और सुन्दर॥ द्धारमात्रेऽपि गोप्ररम् ॥ १८२ ॥ गोपुर-नगरका द्वार तथा द्वारमात्र ॥ १८२ ॥ गुहादम्भो गहरे दे-गहर-गुफा श्रीर पाखण्ड ॥ -रहोऽन्तिक अपहरे : उपहर-एकान्त तथा समीप। पुरोऽधिकमुपर्यग्रा-अप्र-पुर, श्रधिक तथा कपर॥ ण्यगारे नगरे पुरम् ॥१८३॥ मंदिरं चा-.पुर-मंदिर-स्थान श्रीरं नगर ॥ १८३ ॥

ऽथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुषद्रवे ।
राष्ट्र-देश तथा उपद्रव ॥
इरोस्त्रियां भये अस्त्र—
इर-भय, गह्हा तथा थोड़ा वा सक्ष्म ॥
वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥१८४॥
कज्र-इन्द्रका वज्र, धेहुँदृश्च तथा हीरा ॥१८४॥
तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सुन्नवाये परिच्छदे ।

तंत्र-कुटुम्बका कार्य, सिद्धान्त, उत्तम श्रीषघ, अथान वा सुख्य, जुलाहा, एक प्रकारका शाख, सामग्री, एक प्रकारकी वेदकी शाखा, एसा हेतु जो बहार्थोंको सिद्ध करता हो ॥

चौशीरश्वामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयना-ंसने ॥ १८५॥

श्रीशीर-चॅवरका दण्ड, शयन श्रीर श्रासन । किसीके मतमें यह शब्द पृथकू २ शयन श्रीर आसनका वाचक है। १८५॥

पुष्करं करिइस्ताव्रे वाद्यभांडमुखे जले। ृं च्योम्नि खडूगफले पद्मे तीर्थोपधिविशेष-योः ॥ १८६ ॥

पुँष्कर—तजाव, कमल, श्राकाश, जल, पुष्कर-मूल, हाथीके सूंद्रका श्रप्रभाग, वाजेका मुख ॥ १८६॥

धन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभे-द्ताद्थ्ये । छिद्रात्मीयविनाबहिरवस्तरम -ध्येऽन्तरात्मनिच ॥ १८७ ॥

अन्तर-पहरनेके वस्त्रादि, आत्मसम्बन्धी वा अपनी वस्तु, बाह्य वस्तु, ऋहस्य वस्तु, अवकाश, अवधि, श्रद्धश्य होना, भेर, तादर्थ्य, छिद्र, विना अवसर, मध्य, अन्तरात्मा ॥ १८७ ॥

मुरहेऽपि पिठरं—

पिटर-मोथा, चास तथा मंथनदंड वा मथनिया
---राजकशेहण्यपि नाग्रम् ।

नागर-च रूर, नगरवासी, सीठ तथा नागरमोथा

शार्वरं त्वन्धतमसे वातुके भेचछिङ्ग-कम्॥१८८॥

शार्वर-मारनेवाला-ली धन वा वड़ा अन्धकार ॥ १८८ ॥

गौरोऽहणे सिते पीते-

गौर-श्वेत वा पीत वा लाल रंगवाली वस्तु, श्वेत रंग, पीला रंग लाल रंग, तथा रजीधर्मसे पहिली श्रवस्थावाली स्त्री॥

— त्रणकार्येऽप्यक्षकरः ।

श्रद्धकर-घान करनेवाला-ली, मेलाना ॥

श्रद्ध कितिऽपि स्या—

श्रद्ध कितिऽपि चाधरः ॥१८९॥

श्रधर-नीचे, नीचेका श्रोष्ठ, हीन तथा नीच

अनाकुलेऽपि चैकाय्रो— एकाप्र-एकाप्र वा तत्पर तथा स्वस्थवित्त ॥ " —व्यप्रो व्यासक्तः आकुले । व्यप्र-व्याकुल वा घबडाया-थी, दुश्चित्त ॥

उत्तर-उत्तर देशमें उत्पन्न हुआ-ई, श्रष्ठ मा मुख्य, उत्तरिह्शा, विराटका पुत्र, ऊपर, विरा-टकी पुत्री तथा उत्तर (जवाब)॥

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वष्युत्तरः स्या-

—दनुत्तरः ॥१९०॥ एषां विपर्यये श्रेष्ठे श्रुत्तर-श्रेष्ठ श्रोर श्रश्रेष्ठ ॥ १९०॥

—द्रानात्मोत्तमाः पराः ॥

पर-पराया-यी ( वस्तु ) श्रन्य-दूसरा-री, दूर, उत्तम वा श्रेष्ठ, शञ्जु, केवल तथा श्रगन्तर ॥

स्वादुिशयो तु मधुरी— मधुर-स्वादु श्रोरिशय ॥ -क्ररौ कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥ क्रर-कठिन श्रोर दयाहीन ॥ १९१ ॥ उदारो दातृमहतो-

उदार-दाता, बड़ा, सरल वा स्था॥

—रितरस्त्वन्यनीचयोः।

इतर-ग्रन्य तथा नीच ॥

मन्दरवच्छन्द्योः स्वैरः-

स्वेर-मन्द वा ढीला-ली तथा स्वन्छंद (श्रपने मनका काम करनेवाला )॥

— शुस्रमुद्दीमशुक्रयोः ॥ १९३ ॥

श्रुश्र—स्वेत वर्णकी वस्तु; उद्दीत वा प्रकाशमान तथा स्वेत रंग॥ १९२॥

इति रान्ताः॥

मृहा किरीटं केशाश्व संयता मौलयख्यः । मौलि-मस्तक, चोटी, मुक्ट वर्षे हूए बाल ॥ द्रुमप्रभेदमातंगकाण्डपुष्पाणि पीलवः १९३॥

पीड्ड-दक्षमेद, इस्ती, बाबा तथा पुष्य ॥१९३॥ कृतान्तानेहसोः काल-

काल-यमराज, मुत्यु तथा समय ॥

-श्रवर्धेऽपि युगे किछः।

कलि-चौथा युग, पुष्पकी वली,युद्ध तथा कलह

स्याःकरगेऽपि कमलः—

कमल-हिरन, जल, तांबा, कमल तथा आकाश

-प्राचारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४॥

कंबल—सर्पराज, गौके गलेका साम्रा तथा कम्बलवस्र ॥ १९४॥

करोबहारयोः पुंसि बन्निः प्राप्यङ्गजे स्थियाम् ।

बिल-महस्त तथा बुढ़ापेमें पुरुषके शरीरमें बढ़नेवाली सिकुड़न ॥

स्थीरवसामर्थसैन्वेषु वैद्धं में काकसी-रिजोः ॥ १९५ ॥ ू वल-मोटाई, सामर्थ्य, सेना, काकपदी तथा वजदेव॥ १९५॥

वात् छः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिष्ठ ।

वातृत्व— श्रंधी. बावला, तथा वायुको न सहनेवाला ॥

भेग्नलिंगः शडे व्यालः पुंसि श्वापदस-पंयोः ॥ १९६ ॥

व्याल-सर्प, दगाबाज तथा हिंसकपशु ॥ १९६॥

मलोऽस्त्री पापविद्रकिंहा-

मल-मैल, पाप तथा विष्ठा ॥ न्यस्त्री शुळं रुगायुधम् ।

श्रूल—रोग (जो पेटमें होता है) तथा श्रूल (एक शक्त)॥

शंकावपि द्वयोः कील:-

कील--- अभिकी ज्वाला वा लपट तथा लोहे आदिकी कील ॥

पास्टिः स्व्यश्यंकपंक्तिषु ॥ १९७॥ है पालि-खड्ग इत्यादिका टोका (कोना) धारा, चिक्र तथा पंक्ति ॥ १९७॥

कला शिल्पे कालभेदे-

कला-तीस काष्टाका एक समय, कारीगरी, मूलवन, वृद्धि,टुकड़ा तथा चन्द्रका सोलहवां भाग।

ऽप्याली संख्यावळी श्रपि।

श्रालि-सखी तंथा पंक्ति ॥

श्रव्ध्यम्बुविकृतौ वेस्रा कालमयौद्या-रपि॥ १९८॥

वेला-समुद्रका तीर, काल व समय तथा मर्योदा वा हद् ॥ १९८ ॥

बहुसाः कृतिका गाडी बहुलोऽग्री शिवी त्रिष्ठ ।

महुल-बहुल, काले रंगवाला सी, अपि वा

् आग, कृष्णपत्त्व, काला रङ्ग, नेवारीपुष्प, गैया," स्त्री, बड़ी इलायची और श्राकाश ॥

लीला विकासकिययो-

लीला-विलास या कीड़ा, किया तथा खेलना॥

—इपळा शर्करापि च ॥ १९९ ॥

इपला-पत्थर, रत्न तथा सिटकी ॥१९९॥

शोगितेऽम्भिस कीलाळं-

कीलाल-जल तथा रुविर ॥

-मूलमाचे शिकाभयोः।

मूल-जड़, पहिला, वृज्ञकी जटा तथा श्रामा और श्रादिकारण ॥

जालं समृह ग्रानायग्वात्तत्त्रारकेष्वपि ॥ २००॥

जाल-मत्स्यादि पकड़नेका जाल, समूह, करोखा तथा न फूली हुई कली ॥ २०० ॥

शीळं स्वभावे सद्वृत्ते-

शील-शुद्ध कर्म वा पवित्र काम तथा स्वभाव॥

—सस्ये हेतुकृते फत्रम्।

फल-इन्न इत्यादिका फल, नायफल, ढाल, इसके नीनेका काष्ठ (जिसका अग्रमाग लोहेका बना रहता है), हेतु, सिद्ध किया गया बायाका अग्रमाग, त्रिफला,परियाम तथा लाम वा नका॥

छुदिनेंचरजोः क्छीवं समृद्दे पटळं म मा॥२०१॥

पटल-समूह, खपड़ा तथा एक नेत्ररोग ।२०१॥

अधःस्वद्भपयोरञ्जी तलं-

तल-किसी वस्तुके नीवेका भाग तथा स्वह्म ॥

—स्थाचामिषे पलम्।

पल-एकदण्ड (२४ मिनट काल ) का साठवां हिस्सा, ६४ मासा, मांस, तथा जैनाईका माप ॥

चौवीनले शि कहाई-

श्राताच-पाताच तक्षा विकासका

-चैलं बह्मऽधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

चैल-नीव वा श्रवम तथा वस्र ॥ २०२ ॥

कुकूछं शंकुभिः कीर्णे श्वन्ने मा तु तुपा-नते ॥

कुकूल-करसीकी आग, कील व ख्टियोंसे भस हुआ गह्डा ॥

निर्णीते केचलमिति त्रिलिंगं त्वेककु-रस्तयोः॥ २०३॥

केवल-निर्णय किया गया 'एक ' संख्याः तथा संपूर्ण ॥ २०३॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशळं शिक्षिते त्रिष्ठाः

कुसल-चतुर, सामर्थ्ययुक्त, कश्याणवाला-सी, सामर्थ्य, च्रेम, पुण्य तथा कस्याण ॥

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री-

प्रवात नंतूगा, नया पत्ता, श्रकुर तथा वी**याका** दण्ड ॥

- निषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥ स्थूल-मोटा-टी, निर्कुद्धिः ना बुद्धिरहित तथा समृह ॥ २०४ ॥

कराको दन्तुरे तुङ्गे-

कराल-भगकर,ऊंचे दांतवाला-ली तथा ऊंचा-नी

-चारी दक्षे च पेशकः ।

पेशल-चतुर तथा मनोहर ॥

मूर्खेऽभकेऽपि बालः स्या-

बाल-लड़का, केश, बाल, मूर्ख तथा नैन्न-बाली श्रोषधी॥

-होतश्रकसरुष्णयोः ॥ २०५ ॥

स्रोल-चम्बल तथा लालची ॥२०५॥

इति लान्ताः 🛎

दवदावौ वनारण्यवद्गी-

द्भव-द्भाव, वन तथा वनकी भाग ॥

्र\_-जन्महरी अवी।

भव-संसार, जन्म, शंकर ॥

मन्त्री सहायसचिवौ-

भंत्रिन्-राजाका मन्त्री वा राजाको सलाह देनेवाला तथा सहायक ॥

-पतिशाखिनरा धवाः ॥२०६॥ वव-जीका पति, एक वृद्ध तथा पुरुष ॥२०६॥ प्रावयः शैलमेषाकौ-

श्रवि-मेढा, पर्वत, सूर्य तथा रजस्वला की ॥

-आज्ञाहानाध्यरा हवाः॥

इव-पुकारना,श्राह्मा वा हुक्म तथा यह वा याग ।

भावः सत्तास्वभाभिवापायचेष्टात्मब-न्मनु ॥ २०७॥

भाव-श्रिभिपाय वा तात्पर्य, विद्वान् वा पंडित, सत्ता वा रहनेवालेका धर्म-स्वभाव, आत्मा, जन्म उत्पत्ति, वेष्टा तथा मनका विकार ॥ २०७ ॥

स्यादुरपादे फले पुष्पे प्रसदो गर्भमोचने
 प्रसव—जनना, उत्पत्ति, फल तथा पुष्प वा फूल
 प्रविश्वासेऽपद्भवेऽपि निकृतावपि निद्वयः
 ११ २०८ ॥

ि निह्नव—ऋविश्वास, झ्ंठ बोलना तथा धूर्र्सपन ाधू २०८॥

उत्सेकामर्थयोरिच्छाप्रसदे मह उत्सदः।

उत्सव—उत्सव वा मंगलकार्य, श्रीद्धत्य वा गर्ने वा बढाई, कोप, इच्छाका वेग तथा श्रानन्द-का समय ॥

स्रतुभावः प्रभावे च सतां च मतिनि-स्रये॥ २०९॥

श्रतुभाव—प्रभाव, सत्पुरुषोक्षी बुद्धिका निरुचय॥ २०९॥

स्याजन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाचोप-

प्रभव-उत्पत्तिका स्थान, कारण, पराक्रम तथा

ै शुद्धायां विषयतनये शस्त्रे, पारशको मतः २१०

पारशब--- शहकी श्रीमें न। इ.शासे हुआ एक तथा शका। २१०॥

ध्रुषो अभेदै वलीबं तु निश्चिते शास्त्रते निषु ।

भ्रुव-स्थिर, नल्जनिविशेष, निश्चय तथा शासतः स्वो ज्ञाताचारमिन स्वं जिञ्चारमीके स्वोऽश्चियां धने ॥ २११॥

स्त्र—जातिके पुरुष, श्रात्मा, श्रपना तथा धन॥ २१५॥

खीकटीत्रखबन्धेऽपि नीवी परिपणे ऽपि च ॥

नीवी-क्रीके वस्नका बन्धन जो नाभिके समीप बांधा जाता है तथा मूलधन N

शिवा गौरीफेरवयो-

शिवा-पार्वती, सियार, शमीका दृज्, इर तथा आंवला ॥

र्द्धन्दं कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥ द्वन्द्व-कलह तथा भी पुरुषका जोडा ॥२१२॥

**द्रब्**यासुरुयवसायेषु सत्त्वमञ्जी **द्र** जन्तुषु ।

सत्त्व--- द्रव्य, प्रामा श्रत्यन्त उद्योग, जन्तु, सत्त्वगुमा तथा बता॥

क्छीवं इनर्डसके बच्डे वास्यलिगम-विक्रमे ॥ २१३॥

वलीय-नपुंसक लिङ्ग, नपुंसक पुरुप तथा परा-कमहीन ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ॥
द्वौ विशो वेश्यमजुजीविद-वेश्य मनुष्य तथा प्रवेश ॥
-द्वौ चराभिमरी स्पन्नो ।
स्परा-इत तथां संभाम ॥

हों राशी पुञ्जमेषाधी-राशि-समूह तथा मेषश्वादि राशि ॥ हो वंशी कुलमस्करी॥ २१४॥ वंश-कुटुम्ब तथा बांस ॥ २९४॥

रहः प्रकाशी वीकाशी— वीकाश-एकान्त तथा प्रकाश ॥ निवंशो भृतिभोगयोः । निवंश-नोकरी, भोग तथा मूर्ट्या ॥

कृतान्ते पुंसि कीनाशः श्चुद्रकर्षकयो-स्त्रिषु ४२१५॥

कीनाशः यमराज तथा किसान ॥ २१५ ॥ पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यातः — अपदेश-बहाना, निशाना वा लक्ष्य तथा निमित्त वा हेतु ॥

—कुशमप्तु च ।

कुश-कुश एक तरहकी घास तथा जल ॥

दशाऽवस्थानेकविधा—

दशा-श्रवस्था ( लडकई जवानी इत्यादि ) ॥

प्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥

श्राशा—बड़ी तृष्णा तथा दिशा ॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्याद्—

वशा—स्रो, बांक; गाय तथा हाथिनी और

केटी ॥

—हम्झाने झातिर विषु। स्यात्ककंशः साहसिकः कठोरामसृग्राधिष ॥२१७॥ कर्कश्य-कठोर, दुःस्पर्श, साहसी तथा क्याबेस् की और कवीला औषि॥२१७॥

प्रकाशोऽतिमसिद्धेऽपि—
प्रकाश-श्रतिप्रसिद्ध, धूप, उजाला ॥
शिशावज्ञे च बालिशः ।
बालिश-बालक तथा मुर्छ ॥
बारिश-बालक तथा मुर्छ ॥

#### सुरमत्स्यावनिमिषी-

श्रनिमिष-देवता तथा मत्स्य वा मछली ।

-पुरुषावारममानवी ॥ २१८ ॥

पुरुष-पुरुष वा नर श्रात्मा, नागकेशर वृद्ध तथा मनुष्य ॥ २१८॥

# काकमतस्यात्सगौ ध्वांची-

ष्वांत्र-कौवा तथा सतस्य पकड़नेबाला पत्ती (बगुला) इत्यादि॥

#### कसी तु त्याबी दधी।

कत्त्व-कांख वा बगुला तथा तृगा वा घासकी गंजी श्रीर लता॥

#### श्रभीषुः प्रग्रहे रश्मौ--

श्रभीषु-किरसा, डोरी तथा पगहा सगाम, इत्यादि॥

—प्रेषः प्रेषग्रामर्दने ॥ २१९ ॥

प्रैष-भेजना, मर्दन करना तथा श्राहा देना। १२९॥

#### पक्षः सद्वाये-

11 220 11

पन्न-पन्नियोंका पंख, वा श्राधा महीना, सहाय वैर, बल, मित्र, घर,शरीरकी श्रगलबगलकी पंसली तथा बड़ा हाथी श्रीर निकट ॥

-प्युष्णीषः शिरोवेष्टिक् रीटयोः । उच्जीष-पगडी तथा क्रिट व मुकुट ॥ इत्रक्रते सृषिके श्रेष्ठे सुक्रते सृषके वृषः

वृद्ग-सूपा, जन्तु, श्रेष्ठ वा मुख्य, अइसा एक काब्द, वृपमनासक औपध, वैल, अण्डकोष, धर्म, मेष आदि १२ राशियोमेंसे दूसरा राशि, सिगिया (एक विष) तथा एक सुरुष चूर्ण ॥ २२०॥

कोषोऽह्यी कुडूमले खडूगपिधानेऽथौं-घदिव्ययोः ॥

कोष- (श)-पुष्पकी कली, तलवारका घर वा म्यान, खजाना तथा शपथ (स्रोमंध ना कसम )। वृतेऽने शारिफलकेऽप्याक्तमं-

'प्रावर्ग-ज्या, गुन्योंके रखनेके लिय बलादिसे बना घर तथा पासा ॥

्ऽथात्तमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥ ना सुतांगे कषचके व्यवहारे किल्द्रिमे ।

श्रज्ञ—इंद्रिय ॥ २२१ ॥ पासा, सोलह मासा बहुड़ा, सोवरनोन ॥

कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुस्याभि-धायिनि ॥२१२॥

कषू-पासा, एक प्रकारकी तोल, पहिया, बहे-ड़ाफल, व्यवहार, करसीकी आग, जीविका तथा नदी ॥ २२२ ॥

पुंभावे तित्कयायां च पौरुषं-पौरुष-पोरसामर गहिरा-री, पौरुष पुरुषका धर्म ॥

-विषमप्तु च।

क्रिष-विष वा जहर तथा पानी ॥

उपादानेऽप्यामिषं स्याश्रामिष-मांस तथा द्य ॥

द्पराधेऽपि किल्बिषम् ॥ २२३ ॥

किल्विष-पाप, श्रपराव तथा प्रीति ॥ २२३ ॥

स्याद्वृष्टी लोकधारवंशे वश्सरे वर्षमस्विमाम्।

वर्ष-बरस वा देवताश्चोका एक दिन, दृष्टि वा वर्षा, जम्बूद्वीप तथा स्नान ॥

मेचा नृश्येचण प्रज्ञा—

मेचा-बुद्धि तथा देखना ॥

भिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥ २२४ ॥

भिक्षा-भीख, सेना, प्रार्थना वा मजूरी ॥२१४॥

रिवडू शोभाषि—

विक्यू-रोमा तथा गुणी ॥

-विद्य परे—

न्यच्र-श्रभ्यद्ध श्रीर रूख यह तीनो राज्द तीनो लिगोमें होते हैं॥

— न्यस् कात्स्न्यंनिकृष्टयोः ॥
-यदा—निकृष्ट या नीच तथा सपूर्णता ॥
प्रत्यक्तेऽधिकृतेऽध्यक्षो—
श्रम्यच्-प्रत्यक्ष तथा श्रधिकारी ॥
— कश्चस्वप्रेम्ण्यिक्कले ॥ २२५ ॥
क्व-प्रेमरहित क्ला ॥ २२५ ॥

॥ इति षांताः ॥

रविश्वेतच्छदौ इंसी-इंस-सूर्य श्रोर इंसपसी॥ सूर्यवही विभावसू। विभावसु-सूर्य तथा श्रप्ति॥ वस्सौ तर्णकवर्षो हो-

वत्स-बछवा, बचा वा सब्का, द्वाती तथा वर्ष वा वरिस ॥

-सारंगाश्व दिवीकसः॥ २२६ ॥ दिवोकस्-देवता तथा पक्षी ॥ २१६ ॥ ऋङ्कारादी विषे वीर्षे सुबे रंगे इवे रसः

रस-खड़ा मीठा इत्यादि ६ रस पारा, बातु, गन्धरस, श्वतार, बीर, करुणा इत्यादि साहित्यके रस, धीर्य वा घातु प्रीति वा प्रेम, बहर, स्वाद; पतलीवस्तु (जैक्षा पानी शरबत श्रादि)

पुंस्युत्तंसावतंसी द्वी कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२७॥

उत्तस, श्रवतंस-कर्णफल वा कानका भूषख तथा शिरपेंच॥ २२७॥

देवभेदेऽनले रश्मी वस् राने धने वसु । वसु-किरण वा प्रकाश, श्राप्त वा श्वाय, इवेर, गुरुमाभाजी, पानी, धन, तथा मणि ॥

विष्णी च श्रेशाः-वेवस्-त्रहा, विष्कु स्वा वीवतः॥ -स्त्री त्वाशीर्द्धिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥४२८॥ श्राशिस्-दूसरेके हितका चाहना और सपकी दंष्ट्रा॥ २२८॥

ळालसे प्रार्थनौरसुक्ये— लालसा-प्रार्थना तथा उत्कंठा वा बड़ी चाह ॥ -हिंसा चौर्यादिकर्म च । हिंसा-चोरी आदि बुरा कर्म तथा वध करना ॥ प्रसरशापि—

प्रसू-माता तथा घोड़ी ॥

--भृद्याचौ रोदस्यौ रोदसी च ते॥२२९।।
रोदसी-द्विवचनांत, भूमि तथा आकाश॥२२९
ज्वालाभासौ न पुंस्यचि--श्रविस्-ज्वाल। तथा प्रकाश॥

---ज्यौतिभैद्योतदृष्टिष्ठ ।

ज्योतिस्-ज्योतिर्विद्या, ताराप्रकाश तथा दृष्टि॥
पापापराधयोरागः-

श्रागसू-पाप तथा श्रपराध ॥

---सगबारकादिनोर्धयः ॥ २३० ॥ वयस्-पद्यी श्रोर बाल्य श्रादि श्रवस्था ।२३०॥ तेजःप्ररीषयोर्धर्ची--

वर्चस्-तेज या प्रकाश वा चमक तथा विष्ठा ॥

-महस्तुत्सवतेजलोः।

महस्—उत्सव तथा तेज ॥

रजो गुणे च ख्रीषुष्पे-

रजम्-धृत्ति श्रीर रजोगुगा तथा श्लीका इर महीनेका रुधिर ॥

-राहौ ध्यान्तेऽशुणे तमः ॥ २३१ ॥ तमस्-अन्धकार, राहुमह, तमोगुण श्रकान एका कोल ॥ २३१ ॥

श्रूष्टरः वंद्यश्रीभवाते कः--करात्-वय कीर व्यक्तिका क्रम केर स तपः कृच्छादिकर्म च।

तपस्—कच्छ्रादिवत तथा लोकांतर अर्थात् कोई लोक॥

सहो बळं सहा मार्गोसहस्-श्रगहन महीना तथा बल वा सामर्थ्य ॥
नभः खं श्रावणो नभाः ॥ २३२ ॥
नभस्-श्रावणमहीना तथा श्राकाश ॥२३२॥
खोकः सन्नाश्रयश्रोकाः—
श्रोकस्—श्राश्रय वा श्रवलंबन तथा घर ॥
पयः श्रीरं पयोऽम्बु च ।
पयस्-पानी तथा द्घ ॥
श्रोजो दीमो बळे—
श्रोजस्-बल तथा पकाश ॥
स्रोत इंदिये निम्नगार्ये ॥ २३३ ॥
स्रोतस्—स्रोत वा श्रापसे श्राप जलका बहना,

इन्द्रिय तथा नदीका वेग ॥ २३३ ॥ तेजः प्रभावे दीप्तौ ख बले शुक्रे-

तेजस-प्रभाव, प्रकाश, वीर्थ, तथा काम ॥

-ऽप्यतस्त्रिष्ठ ।

यहांसे धागे सान्तवर्गकी समाप्तिपर्यन्त सद

## विद्वान्विद्ध-

विद्वान्-पंडित वा खानकार तथा पत्र॥

-बीभत्सी हिंस्रो-

चीमत्स−जिसको देखकर घित्र उत्पन्न हुँ। ॥ घात करनेवाला, क्रूर वा कठोर तथा चीमत्स स ॥

-ऽप्यतिशये त्वमी ॥२३४॥ वृद्धप्रश-स्तयोज्यायान्-

ज्यायस्-महुत बुह्ढा--डेढी तथा भरयन्तः प्रशंसा करनेके योग्य ॥ २३४॥

करीवांस्य श्वस्त्रकारेः ।

कनीयसू—श्रत्यन्त जवान, श्रत्यन्त छोटा तथा छोटा भाई॥

#### वरीयांस्तुरुवरयोः---

नरीयस्-ऋत्यन्त गड़ा तथा ऋत्यन्त श्रेष्ठ ॥

—साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३५ ॥

साधीयस्-श्रत्यन्त साधुः ना भलाली तथा ऋत्यन्त बहुत ॥ २३५ ॥

इति साक्ताः ॥

## द्छेऽपि वर्द-

बहें—मोरके पंज वा पूँछ, पत्ता तथा करोदा श्रुख ॥

## -निर्वन्धोपरागाकदियो ग्रहाः।

मह-सूर्य इत्यादि ९ मह, महत्ता करना, यहके पात्र, महत्ता जो सूर्य चन्द्रको लगता है तथा आमह वा हठ॥

## द्वायपिडि क्वायरसे निर्म्हो नागद-न्तके॥ २३६॥

निर्व्यूह—ख्टी, शिरोवेष्टन ( पगड़ी सिरंपेच इत्यादि ) तथा द्वार श्रीर काढ़ा ॥ २३६ ॥

### तुलासुनेऽश्वादिरश्मौ प्रग्रादः प्रग्रहो-उपि च।

प्रमाह-प्रमह कदी जो चोर द्रस्यादि श्रपराधीका दण्ड है, पगहा वा पशु बांधनंकी छोरी, तराज् तथा घोडा इत्यादिकी लगाम ॥

#### परनीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३७॥

परिप्रह-पत्नी वा स्त्री, परिवार, श्रगीकार तथा बच्चादिकी जड़ श्रीर शाय ॥२३७ ॥

दारेषु च गृहाः—

गृह-पत्नी तथा घर ॥

# " -श्रोण्यामप्यारोहो **वर**श्चियाः।

भारोह-चढना, क्षेष्ठ झाँका कटिसाग वा श्रेष्ठ झी की कमर तथा इस्र इस्वाविकी क्षेत्राई अ

#### व्यूष्टो चून्दे-

च्यूह-समृह तथा एक प्रकारकी सेनाकी रचना॥

ऽप्यहिर्भुत्रो-

अहि-सर्प तथा दत्रनामा दैत्व ॥

- र्विमीन्द्रकरितमोऽपद्याः ॥ २३८॥ तमोऽपहा-चन्द्र, सूर्य तथा भ्रक्षि ॥ २३८॥

परिच्छदे नृपाईंऽधं परिवहाँ-

परिवर्ह-राजाका इत्र, चमर इत्यादि विद तथा सामग्री ॥

N इति हान्ताः H

#### --- ऽव्ययाः परे।

भव-इसके उपरांत भव्ययोका वर्णन करते हैं जो कि तीनों लिंग, सातों विभक्ति और एकवनम द्वितचन बहुवचनमें समान बने रहते हैं और उनमें इस विकार नहीं होता ॥

# भाक्तीषद्धेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातु-योगजे ॥ २३९ ॥

भाक् रंपत्, श्रीमन्यासि, सीमार्थ श्रीर बातुके योगार्थमें होता है ॥ २३९ ॥

भा मगुद्धयः स्मृती वाक्ये---

**या-स्मरण,** वावयपुरमामें ॥

-- प्रयास्त स्यासकोषपीडयोः ।

व्याः-कोपमं, पीडामं॥

# पापकुत्सेषद्धे कु-

छ-पाप, निन्दा तथा थोंे अर्थमें ॥

धिङ्गिर्भत्सननिन्द्योः ॥ २४० ॥

धिक्-ग्लानि देना वा शिवकारना तथा निम्दा॥ १४०॥

चान्द्राचयसमाहारतरेतरसमुखये । ' च-अन्वाचय, समाहार, इतरेतर और बहुवंबर्वें स्वस्त्वाचीः चेमग्रज्यादी— स्वस्ति-आशीर्वाद, कल्यागा, पुण्य श्रौर मझलमें

—प्रकर्षे छंघनेऽप्यति ॥ २४१ ॥

अति-श्रतिशय, बढाई, प्रकर्ष श्रीर लंघन अर्थमें ॥ २४१॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के:च--

स्तित्-प्रश्न वा पूँछना तथा तर्क करनेमें ॥

**—तु** स्याद्धेदेऽवधारणे।

तु-किन्तु, फेर, पादपूरणामें तथा श्रवधारणामें ॥ सक्तरसडैकवारे चा-

सकत्-साथ वा संग तथा एकवारमें ॥

—प्याराद्दुरसमीपयो: ॥२४२॥

श्रारात्-दूर तथा समीपमें ॥ २४२ ॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चा-

पश्चात्-पीछे, पिछला तथा परिचम दिशामें ॥

दुताप्यर्थविकल्पयोः।

उत-समुख्य श्रीर बिकल्पमे ॥

पुनः सहार्थयोः शश्व-

शश्चत्—सदा वा सर्वदा तथा निरन्तर वा इरदम श्रीर फिरमें॥

रसाद्वात्प्रत्यच्चुल्ययोः ॥ २४३ ॥

साक्षात्—प्रत्यच् श्रीर तुल्यमें ॥ २४३ ॥

खेदानुद्रम्पासंतोषविश्मयामन्त्रणं बता

बत-खेद, दया, संतोष, आश्चर्य, जैसी इच्छा हो वैसा करो ऐसी ऋाजा देना॥

इन्त हर्षेऽसुर म्पायां वावयारम्भिष्ठिषा-द्योः ॥ २४४ ॥

हन्त-हर्ष, दया, वावयारम तथा विषाद २४४

प्रति प्रतिनिधी वीप्सालच्यादौ प्रयो-गतः।

प्रति—मुख्यके समान व्याप्त करनेकी इच्छा, विद्व तथा विपरीत ॥ इति हेतुपकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु

इति-हेतु, प्रकरता, प्रकाश, आदि तथा समाप्ति॥ २४५॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽप्रत इत्यपि।

पुरस्तात्-पूर्वदिशा, प्रथम,पूर्वकाल तथा श्रागे । यावत्तावद्य साकल्येऽवधौ मानेऽवधा-रखो ॥ २४६॥

यावत्-तावत्-संपूर्णं, हद्द, तोल तथा निश्चय ॥ २४६॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकारस्न्यें **चथो** ग्रथ।

श्रथो-श्रथ-मंगल, श्रनन्तर, श्रारम्म, प्रश्न तथा संप्राता ॥

वृथा निरर्थकाविध्यो-

वृथा-निरर्थक, विधिहीन ॥

—निनानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ n

नाना-श्रनेक तथा उभयार्थक ॥ २४७ ॥

तु पुच्छायां विकल्पे च—

नु-प्रश्न तथा विकल्प ॥

-पश्चात्सादृश्ययोरनु ।

श्रनु-पीछे तथा सदशता ॥

प्रश्नावधारगाः तुज्ञा तुनयामः वणे ्न तु ॥ २४८ ॥

्ननु–प्रश्न, निश्चय, श्राज्ञा, शान्त करना तथा सबोधन ॥ २४८ ॥

गहसिसुच्चयम्भनशंकासंभावनास्वपि।

श्रपि-निन्दा, समुचय, प्रथ्न, शका तथा संमावना॥

उपमायां विकल्पे वा-

वा-उपमा तथा दिकस्य ॥

-सामित्वधं ज्राइप्सिते॥ २४९॥ सामि-श्राधा तथा निन्दित ॥ २४९ ॥ अमा सह समीपे च-श्रमा—साथ तथा समीप ॥ -कं वारिशा च मुर्धनि। कम्-जल तथा मस्तक॥ इवेरथमर्थयो स्वं-एवम्-इवार्थक तथा प्रकारार्थक ॥ -नृतं तर्केऽर्थनिश्वये ॥ २५० ॥ नूनम्—तर्केगा तथा अर्थनिश्वय ॥ २५० ॥ त्पग्रीमर्थे सखे जोष-जोषम्-खुप होना तथा छुख H −िक पृच्छायां जुगुप्सने । किम-प्रश्न तथा निन्दा करना ॥ ैनाम प्राकाश्यसंभाव्यकोधोपगमकुरसने ा ३५१ ॥

नाम-प्रसिद्धि, संभावना, क्रोध, सुन्द्र वेश बारख करना तथा सतकारना ॥ २५१ ॥

अक्टं भूषणयौतिशक्तिवारणवात्वकम्। स्रतम्-मृतंकार, परिपूर्णता, सामध्ये तथा मना करनी,॥

हुं वितक परिमश्ते—
हुम्-तर्कणाकरना तथा प्रश्न करना ॥
- समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
समया-समीर तथा मध्य ॥ १५२ ॥
पुनरमयमे भेदे—
हुनर्-प्रथमके झनन्तर तथा मेद ॥
निर्-निवय तथा निषेध ॥
स्यारमक विश्व किरातीत निकटानामिके

पुरा-प्रवन्ध द्यर्थात् निरन्तर, प्राभीन समीप तिथा होनेवाला ॥ २५३ ॥

अरर्थ्री चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ वयम्।

कररी-करी-उररी-विस्तार तथा श्रंगीकार करना
स्वर्ं परे च लोके स्व—
स्वर्-स्वर्ग तथा परलोक ॥
—वितिस्त्राञ्ययोः किल ॥ २५४ ॥
किल-वार्ता तथा संमावना ॥ २५४ ॥
निषेधवाक्यालंकार जिज्ञासानुनये साम्रा
राजु-विपेध, वाक्यालंकार, जिक्कासा तथा
श्रवनय ॥

समीपोभयतः शीव्रसाकल्याभिमुखेऽ-भितः॥ २५५॥

श्रमितः—समीप, दोनो श्रोर, शीघ्र, वारी श्रोर तथा समुख ॥ २५५ ॥

नामप्राकाश्ययोः प्रावु—
प्रावस्—नाम तथा प्रकट ॥

मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ।

मिथान्—परस्पर तथा एकांत ॥

तिरोऽन्तथां तिर्यगर्थे—

तिरान्—अन्तर्धान तथा टेढ़ा ॥

—हा विवादशुगतिषु ॥ २५६ ॥

हा—विवाद, शोक तथा पीडा ॥ २५६ ॥

प्राहटेत्यद्भुते खेदै—

श्रद्ध —अद्भुत तथा खेद ॥

—हि हेताववधारणे ।

[इ—हेतु तथा निक्षय ॥

इत्यनेकार्यवर्गविवरयाम् ॥ ३ ॥

अथाव्ययवर्गः ४.

चिराय चिररात्राय चिरस्याचाश्चिरा-र्थकाः।

बहुत कालवाचक श्रव्ययशब्द ६— चिराय १ चिररात्राय २ चिरस्य ३ श्रादि शब्दसे चिरम् ४ चिरेगा ५ चिरात्, चिरे ६॥

सुद्धः पुनःपुनः शश्वदभीश्र्यामसकृत्त-माः॥१॥

बारम्बार अर्थवाचक अञ्चय शब्द ५-मुहुः १ पुनःपुनः२ शबत् ३ श्रमीक्ष्णम् ४ श्रसकृत् ५॥१॥ स्वाम्मदिन्यश्रमादाय हाळ्यंश्व स्वपदि

स्राग्मिटित्यअसाह्राय द्राङ्गमं**श्च** सपदि इते।

शीव्रतावाचक अव्यय शब्द ८—स्नाक् १ मटिति १ अंजसा १ अन्हाय ४ दाक् ५ मंश्च ६ सपदि ७ दुतम् ८॥

बलवत्सुष्ठु किम्रुत स्वत्यतीव च निर्भरे॥२॥

श्रतिशयवाचक श्रव्यय शब्द ६— बलवत् १ सुष्ठु २ किमुत ३ सु ४ श्रति ५ श्रतीव ६ ॥२॥ पृथग्विनान्तरेगार्ते हिरुङ्कनाना स वर्जने

वर्जनवाचक वर्जनवाले श्रव्यय शब्द ६-पृथक् १ विना २ श्रंतरेगा ३ ऋते ४ हिरुक् ५ नाना ६॥

यत्रद्यतस्ततो हेता---

कारगावाचक श्रव्यय शब्द ४ यत् तत् २ यतः ३ ततः ४॥

— वसाकल्ये तु चिच्चन ॥ ३॥

श्रपूर्णतावाचक श्रव्यय शब्द २—चित् १ चन२॥३॥

कदाचिजातु-

किसी कालवाचक अव्यय शब्द २-कदाचित् १ जातु २ ॥

साधे तु साकं सवा समं सह।

साथ वाचक ऋव्ययशब्द ५-साकस् १ सार्धम् २ सत्रा ३ समम् ४ सह ५ ॥

चातुकूल्यार्थकं प्राध्वं---

श्रनुकूलतावाचक श्रव्यय शब्द १~प्राध्वम् १॥

-- ज्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥ ज्यर्थनाचक श्रव्यय शब्द २-वृथा १ मुघा २ ॥ ४ ॥

श्राहो उताहो किमुत चिकल्पे किं किमृत च।

विकल्पार्थवाचक श्रव्यय शब्द ६- श्राहो १ उत्ताहो २ किसुत ३ किस् ४ किसु ५ उत ६॥

तु हि च सम ह वै पाद्पूरणे-

श्लोककी पादपूर्णता बतानेवाल अव्यय शब्द६-तु १ हि २ च ३ स्म ४ ह ५ वे ६ ॥

-पूजने स्वती॥ ५॥

पूजावाचक अञ्चय शब्द २ छ १ ऋति २॥५॥ -दिवाही---

दिनका अर्थवाचक, अञ्चयशब्द १-दिवा १

—स्यथ दोषा च नकं च रजनाविति।

रात्रिके अर्थवाचक श्रव्यय शब्द २-दोषा १ नक्तम् २॥

तिर्यगर्थे साचि तिरो-

टेढे अर्थवाचक अव्यय सन्द र-साचि १·

-प्यथ संबोधनार्थकाः॥६॥स्युः प्याट्ट् पाडङ्ग हे है भोः—

. सम्बोधनार्थवाचक श्रव्यय शब्द ६-प्याद ९ पाद २ श्रग ३ हे ४ है ५ भीः ६॥ ६॥

—समया निकषा हिरुक्।

समीपवाचक श्रव्यय शब्द ३--- समचा १ निक्षा २ हिरुकू ३ ॥

पर्ताकते तु सहसा— श्रकस्मातका अर्थवानक अन्यय शब्द १—

सहसा १॥

—स्योतपुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७॥

श्चानोके अर्थवानक श्रव्यय शब्द ३- पुरः १ पुरतः २ श्रप्रतः ३ ॥ ७ ॥

# स्वाहा देवहविद्नि श्रीषट् वीषद् वषट्

देवताओं और पितरोके हव्य देनेके उपयोगी बानक अञ्यय शब्द ५-स्वाहा ५ श्रीषद २ वीषट ३ क्षद ४ स्वधा ५ पितरोके उपयोगी प्रसिद्ध है।

#### किंचिदीषनमनागरुपे-

अक्ष्यके वाचक अध्यय शब्द ३ — किंचित् १ ईषत् २ मनाक्॥ ३॥

—प्रत्यामुन भवान्तरे ॥ ८॥

जन्मान्तरवाचक श्रव्यय शब्द २- प्रेत्य १ श्रमुत्र

व वा यथा तथेवैवं साम्ये-

समतावाचक अध्ययराज्द ६-व १ वा २ यथा ३ तथा ४ इव ५ एवम् ६॥

#### -- ऽहो ही च बिस्मये।

विस्मयवाचक श्रव्यय शब्द २-श्रो १ ही ॥ मौने तु तुष्णीं तुष्णीकां---

मौनार्थवाचक श्राब्ययशब्द २-त्रूव्णीम् १ त्रूच्णीकाम्-२॥

—सद्यः सपदि तत्त्र्णे ॥ ९ ॥ तत्कालगवक अध्ययशब्द २-सदास् १ सपदि २ ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समु रजोषं चेत्यानन्दे— श्रानन्दवाचक अन्ययशब्द १-दिश्या

श्रानन्दवाचक श्रव्ययशब्द : २-दिष्ट्या १ समुपजीवम् २॥

—ऽथान्तरेऽन्तरा। ध्रन्तरेण च मध्ये स्युः—

मध्यवाचक श्रान्ययशब्द ३-श्रान्तरे १ श्रीन्तरा२ - श्रन्तरण ३॥

—मस्य तु इडार्थ हम् ॥ १० ॥ ·

हरार्थवानक अन्ययशब्द १-प्रसह्य १ ॥१०॥ युक्त द्वे सांप्रतं स्थाने-

युक्तार्थवानक श्रम्ययशब्द २—सांप्रतम् १ स्थाने २ ॥

#### -ऽभीक्षं शश्वदनारते।

निरन्तरवाचक अन्ययशब्द २-अभीक्षाम १ शक्त २॥

# स्रभावे नहा नो नापि-

ऋमाविवाचक ऋव्ययशब्य ४--निह १ श्र २ नो ३ न ४ ॥

मास्म माळं च वारणे ॥ १॥

नियेननायक अध्ययशब्द ूरे-मास्म १ मा २ अञ्जम् ३॥११॥

#### पद्मांतरे चेदादि च-

पद्मान्तर राजक प्रत्य प्रशब्द २-२ चेत् १ वदि २

-तत्त्वे स्वद्धा असा द्वयम् ।

तत्त्वार्यवाचक अ ययशब्द २-अदा १ अजसार

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्या---

प्रकटवावक अव्ययशब्द २-प्राद्स् १शावित्र दोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

प्रज्ञीकारवाचक श्रव्ययशब्द **३—स्रोम् ९ ॄँएवम्** २ परमम् ३ ॥ ९२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगि-त्यपि।

सब श्रोरव।चक श्रव्यवशब्द ४-समन्ततः परितः २ सर्वतः ३ विष्वक् ४ ॥

-किन्तित्वाममधेद्ने।
इत्वित प्रश्नवाचक १-किचत् १॥
तिःषमं दुःषमं गृद्धेविन्दितवाचक १-विःषमम् १ दुःषमम् १॥
-यथास्यं तु यथायथम्॥ १४॥
यथायोग्यवाचक २-यथास्वम् १ यथायभम्
२॥ १४॥
मृवा मिथ्या च वितथे-

मृता मिथ्या च वितथे
भिश्यावाचक २-मृषा १ मिथ्या २ ॥

-यथार्थ तु यथातथम् ।

ग्रत्यवाचक २-यथार्थम् १ यथातप्रम् ॥

स्युरेवं तु पुनवैवेत्यवधारणवाचकाः

॥ १५ ॥

निश्चयवाचक ५-एवम् १ तु२ पुनर ३ वे ४ बा५॥ १५॥

मागतीतार्थकं—

भतकालवाचक १-प्राक् १ ॥

-- नूनमवश्यं निश्चये द्वयम्।

अवस्यवाचक २-नृतम् १ श्रवस्यम् ॥ २ ॥ संवद्वर्षे---

वर्षवाचक १-सवत् १ ॥

—ऽवरे त्वर्वा—

प्रथमवाचक १-अर्वाक् १॥

—गामेव—

निश्चित अगीकारवाचक २-आम् १ एवम् २॥

-स्वयमारमना ॥ १६॥

भात्मवाचक १-स्वयम् १ ॥ १६ ॥

ग्रहपे नीचै-

श्राल्पवाचक भ्रान्ययशब्द १-नीचैस् १॥

-र्महत्युच्चै:-

कंवावाचक १—उचेम् १ N

-प्रायो भू-

बाहुत्य (श्रकसर) वाचक १-प्राय: १॥

-म्न्यद्वते शनैः।

मन्दवाचक श्रव्यय शब्द १-शनैस् १॥

सना नित्ये-

नित्यवाचक १-सना १ ॥

-बहिबश्चि-

बाहरवाचक १-बहिस् १॥

-स्मातीते-

भूतकालवाचक १-स्म १॥

—sस्तमदर्शने ॥ १७ ॥

श्रदरानवाचक १-श्रस्तम् १॥ १७ ॥

र्थास्त सत्त्वे-

भावार्थक ऋव्यय १-ऋस्ति १ ॥

--- हवोक्ताबु--

कोपवचनवाचक ५-छ १ ॥

-ऊं प्रश्ने-

प्रश्नवाचक १-सम् १॥

-ऽतुनये स्वयि ।

शान्त करनेमे १-ऋयि १ ॥

हुं तर्के स्या~

तर्कवाचक १-हुम् १॥

-दुषा रात्रेरवसाने-

प्रातःकालवाचक १-उषसू १ ॥

-नमो नतौ ॥ १८ ॥

नमस्कारवाचक श्रव्ययशब्द १-नमस् १ ॥१८।

**પુનર**ર્થેડङ्ग-

पुनर्वाचक १-- श्रङ्ग १॥

-निन्दायां दुष्ठ-

मिन्दावाचक १~दुरु १

-सुदु प्रशंसने।

प्रशंसावाचक १-सुब्हु १॥

साय साथे-

सायंकालवाचक १-सायम् १॥

मगे प्रातः प्रभाते-

प्रातःकालवाचक २-प्रगे १ प्रातर् २॥

-निकषाऽन्तिकं॥ १९॥

समीपवाचक ५-निकषा १॥ १९॥

परत्परार्थेषमोऽब्दे पूर्वं पूर्वतरे यति।

गतवर्षवाचक १-पस्त् १॥ गतवर्षसे पहले वर्षका वाचक श्रव्यय १-परारि १॥ वर्तमान-वर्षवाचक श्रव्यय १-ऐषमस् १॥

#### प्रधानाहच -

इस दिनका वाचक श्रव्यय १-श्रय १ ॥

-थ पूर्वेऽक्षीत्यादौ पूर्वीत्तरापरात्॥२०॥ तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्यराद्यः।

'प्रथमदिन' इत्यादि अर्थमें पूर्वआदि शब्दसे ''एशुस्'' प्रत्यय होकर पूर्व दिनका वाचक 'पूर्येषुः' उत्तर दिनका वाचक 'उत्तरेषुः' अपरदिनका वाचक 'अपरेशुः' इत्यादि शब्द बनत है जैसे-'अधरेषुः' 'अन्येषुः' अन्यतरेषुः' 'इतरेषुः' ॥ २०॥

र्डभयगुश्चोभयेषु.-

दोनी दिनके वाचक श्रव्यय २--उभयशुः १ उभयेशुः २॥

-परे त्वहि परेचावि ॥ २१ ॥

परदिनका वाचक १-परेद्यवि १ ॥ २१ ॥

द्यो गते-

व्यतीतदिनका वाचक श्रव्ययशब्द १-ग्रास् १॥

-sनागतेऽहि श्वः-

कलदिनका १-श्वसू १ ॥

-परम्बस्त परेऽहति।

श्वानेवाळे परसी दिनका वाचक १ म्ब्यूप्यः १ ॥

तदा तदानीं-

तिसकालके नाचक श्रव्यय २-तदा १ तदा-नीम् २॥

−युगपदेकदा–

एक समयके वाचक श्राव्यय २—युगपत् ९ एकदा २ ॥

सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

स्दाकालवाचक श्रव्यय २-सर्वदा १ सदार।२१ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा।

'इसी समय' इस अर्थके वाचक अव्यय शब्द '५-एतर्हि १ सम्प्रति २ इदानीम् ३ अधुना ४ सांप्रतम् ५॥

दिग्देशकाले प्रविदी प्रागुद्कप्रत्यगा-दयः॥ २३॥

पूर्विदिशा,पूर्विदेशश्चौर पूर्वकालमें प्राक् 'शब्दहै। उत्तर दिशा, उत्तरदेश श्चौर उत्तरकालवाचक श्रव्यथशब्द 'उदक्' पश्चिमदिशा पश्चिमदेश श्चौर पश्चिम-कातका वाचक श्रव्यय शब्द प्रत्यक्' इत्यादि २३। इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

छिंगादिसंग्रहवर्गः ५.

सिंछगशाक्षेः सन्नादिकृतव्वितसमाः सजैः। प्रवृक्तैः संग्रहं तिगैः नंकीर्णवदि-होन्नयेत्॥१॥

पाशिनिक कहे हुए लिज्ञानुशासनसहित (अर्थात् उनके अनुसार) सन्आदि प्रत्ययोसे उत्पन्न चिन्नीर्धा आदि शब्दोसे छदन्तसे उत्पन्न खपाक आदिको तदित प्रत्यय अण् आदिसे उत्पन्न, ''समासजैः'' 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः' इस आदिसे और बाहुल्यसे पहिले अनुक्त शब्दोंसे संग्रह किये जाते हैं, यहां वर्गासमह लिज्ञका ज्ञान किस प्रकार करें इस पर कहते हैं, 'संजीर्णनत्' यह जैसे संजीर्णनर्गमें प्रकृति आदिसे जाने जाते हैं, इसी प्रकार यहां भी जानने, तिनमें प्रकृत्यर्थसे जैसे 'अर्द्धचीः पुंसि क्ष' यहां प्रत्यवार्थसे जैसे 'क्षियां किन्नू' 'प्रकृतिमत्ययार्थायः' इस आवशन्दसे कियाविशेष गोंको नपुंसकत्व ,श्रीर एकवचनत्व होता है, जैसे-'शोभनं पचति' इत्यादि ॥ १ ॥

# निदुशेषविधिच्यापी विशेषेयंचनाधितः।

सन्नादि— इत्-तद्भित-समाससे उत्पन्न विषय
पूर्वोक्त शब्दके लिंगसं श्रन्यलिंग होना लिंगशेष है,
उसका विधि उत्सर्ग होनेसे काण्डन्नयका व्यापक
है, जो पूर्वोक्त श्रीर यहांके कहे विशेष विधियोंसे
बाधित न होने, तभी व्यापक होता है, क्योंकि
अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता
है इस कहनेसे लिंग विशेषविधिकों जो उत्सर्गभूत
का स्वर्ग श्रादि वग श्रपवाद है तिनमें पहिलेके
कहे हुए विशेषोंको फिर कहनेके दोप श्रीर विस्तारके डरसे फिर यहां विधान नहीं है. स्वर्गपर्थाय
यहां पुँक्षिग कहेंगे उसका '' द्योदिनों हे स्त्रियां
क्लीवे त्रिविष्टपम् '' यह पूर्वोक्त श्रपवाद है श्रीर
नीप्रसतिकोंके तो ' इतः कर्तरि ' इत्यादिसे कहेंगे,
यद्यि पहले लिंग कहा है तथापि श्रप्राप्तके प्रापर्णारकतासे लिंगानुशासन यहां भी प्रधान ही है ॥

# ै श्चियामीदृद्विरामैकाच् सर्योनिपाणिः नाम च ॥ २ ॥

'स्नियाम् 'यह श्रिषकार ' ससी ' ( श्रुहों ० १० ) शब्दपर्थंत जानना चाहिये 'ईद्दती ' ईकार श्रीर स्नकार ' विशम ' अर्थात् श्रवसानस्थ है जिनके ने, ईद्दिराम हैं ने श्रीर एकाच् ये दोनों ईद्दिरामेकाच् हैं । ईदन्त स्नदन्त वा जां एकस्वर शब्द—स्वरूप है ने स्नीलिंग है यह श्रर्थ हैं, जैसे धीः श्री: श्रू: भू:,नयतीति नीः,इन श्रादिमें 'इतः कर्तार' इसके बाध होनेसे वाच्यलिगत्व हैं, योनि भग हैं इनके सहित प्रशियों ने नाम ' स्नियाम् ' स्नीलिङ्ग हैं जैसे मातादुहिता—धेतु श्रादि, दार शब्द आदिमें तो ' दाराः पुंभूस्रीति ' यह बाधक पहिले कह चुके हैं, कलत्रम् श्रीर गृहं शब्दको ' कल्जं

श्रीणिभार्थयोः ' यहांका क्लीब पाठ बाधकं है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार कर लेना चाहिये॥२॥

# नाम वियुन्निशावङ्घीषीगादिग्भूनदीहि-याम्।

विद्युत् आदि हीशब्द पर्यन्त ८ आठ शब्दोंके जो नाम अर्थात् सज्ञा है वे स्नीलिङ्ग है, जैसे, विद्युत् — तडित्, निशा-रात्रिः, रजनिः, बह्नी,— व्रतिः, वीरुध्, वीर्षा,—विपश्ची हत्यदि ॥

#### अदन्तैद्धि ग्रेकार्थो-

श्रकारान्त श्रादि शब्दोंसे जो एकार्थ द्विग्रसमास है वह स्त्रीलिंग हैं, जैसे 'पंचाना मूलानां समाहारः पंचमूली' इसी प्रकार त्रिलोकी पडच्यायी उत्यादि॥

# -न स पात्रयुगादिभिः॥३॥

च पुनः पात्र, युग श्रादि उत्तरपद , श्रदन्तरा-व्होंके साथ एकार्थ द्विगुसमासको स्त्रीलिगत्व नहीं है जैसे पंचपात्रं, चतुर्युग, त्रिभुवनम् ॥ ३ ॥

तळ् वृःदे योनिकटचत्रा वैरमेधुनिका-दिवृत्। श्वीभावादावनिक्तिण्णबुळ्णाच्ण्व-च्वयव्युजिञङ्गिशाः ॥ ४॥ उगादिषु निक्ररीश्च ङ्वचावूङ्ग्तं चळं स्थिरम्।

भाव द्यादि द्रार्थमें विहित तत्त्रपत्यय स्त्रीलिंगमें होता है, तथा भाव अर्थमें जैस-गुक्रता, कर्म समृह ऋर्थमे ऋर्थमें ब्राह्मणता, शामता. स्वार्थमें देवता, घृन्दं समूह अर्थमें या-इनि 🎙 कुट्यच्-न्न-ये ४ चार प्रत्यय स्त्रीलिंगमे होते है, जैसे 'पाशादिश्यो यः ' पाशाना समृहः पाश्या, वात्या, 'खलादिम्य इनिः' म्वलिनी, पश्चिनी, ' रथादि+गः कट्यच् 'रथकट्या, इसी रीतिसे गोत्रा वर, रेथन श्रादि श्रर्थमें जो इन् प्रत्यय है सो ब्रीलिंग है तिनमें वैर विरोधार्थमे जैसे अधमहि-षिका, श्रम्ब श्रीर महिषीका यह वैर है, इस भाति काकोळकिका,मैथुनिका अर्थमें जैसे-अत्रिमरद्वाधिका

हिभरद्वा जिकी यह मैथुनिक विवाहरूपसम्बन्ध,इगी प्रकार 'क़रमध्य कृशिका च तयोमेश्रुनिका कृत्सकुशि-किका अन् महत्ता बुझा, उण वा अन्-अक उक् आदि वा उपलक्षण है, जैसे-वाशिका गार्गिक्या श्लाघते, हीं हु भी पाठ है, ब्रादिपदसे ची सा ब्रादिमें उनुका ग्रहण है ' स्त्रियां भावादिः स्त्रीभावादिस्त-स्मिन ' स्त्रियाम इसका अधिकार कर भाव आदि श्रर्थमं जो विहित प्रत्यय श्रनिक्तिन् (ति ) श्रादि हैं वे स्नीलिझ अर्थमें होते है, अनि जैसे ' आकोशे नञ्यनिः 'इस सूत्रसे ' श्रनि ' प्रत्यय होनेसे ' श्रकरिंगाः ' ' श्रजीवनिः ' ' फिन् ' से स्मृतिः, कृतः, गति., ' ए। ख् ' रो जीविका, प्रच्छिदिका, प्रवाहिका, श्रासिका, 'राच' रो त्यावकोशी स्वार्थिका, द्राचा, 'णुच्' में शायिका, इक्ष्य-चिका, 'क्यप् 'से ब्रह्महत्या, प्रज्या, उज्या, 'स्रीमावादी' क्यों कहा ! 'मृपोद्यं ब्रह्मभूर्यं' यहा देख श्रावेगा, 'युच्' से कारगा, श्रासना, मंडना,-उन्से वापिः, वासिः, कां कारिमकार्थीः 'इन्नू' यह इण्डक्का उपलक्ष्मणार्थ है, जैसे-प्राजिः, कृषिः, अ से पचा, त्रपा, भिदा, 'नि' से ग्लानिः, स्लानिः, हानिः, 'श' प्रत्ययसे किया, इच्छा ॥ ४ ॥उगादि कोमें निः-छः-ईः ये तीन प्रत्यय स्त्रीलिंगमें हैं, तिनमें 'नि' प्रत्ययान्तसे, श्रेगाः, श्रोणः, द्रोणिः, 'उगादिष्वनिः' इस पाठमें, श्रनिः, जैसे-अवनिः, घरणिः, धमनिः, सरणिः, 'ऊदन्तः' जैसे-चमुः, कर्षू:, ईदन्त जैसे-तन्त्रीः, तरीः, लक्ष्मीः, ड्यन्तम् श्राबन्तम, (डी श्राप् वा श्राङ) छङ्त श्रीर जो 'चर्ल' जंगम है वा जो 'स्थिर' स्थावर हैं वे स्त्रीलिंग हैं, जंगम जैसे-नारी, शिवा, ब्रह्मवधूः । स्थावर जैसे-कदली, नाला,कर्कन्धः ॥

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाळुवागा-दिक् ॥ ५ ॥

"तत् श्रीडायां" यहाके तत्शाब्दसे यहां मीष्ट्या-अरकात निर्देश है तिससे यह अर्थ है, वह सुष्टमा- दिक प्रहरण श्रर्थात् मारना जो कीटा वा खेल-में होत्र नो उस श्रथमें विहित 'गा' प्रत्यय झी-लिगमें हैं, दिक इस शब्दसे उक्तोदाहरणाड़ी श्रमिलाषा हैं, जिससे दाण्डा, मौसला ने उदाहरणा के योग्य है, मुप्तिसे प्रहार करना जिस कीडामें हैं उसे 'मौष्टा वा मौष्ट्या' श्रीर पश्चव हाथ वा पत्तेसं मारना जिस कीटामें हैं उसे "पाछवा' कहते है ॥ ५॥

घञो जाः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता-हिफाल्गुनी । स्येनेपाता च मृगया तैछं पाता स्वधेति दिक्त ॥ ६ ॥

यह घडान्तनाच्य दण्णपात श्रादिके श्रादि क्रिया इस फाल्गुनी श्रादिके श्रार्थमें घडान्तसे विहित जो ज्र प्रत्यय है सो स्त्रीलिंगमें ही है, उदाहरण 'दण्णपानं।ऽस्था फाल्गुन्यां दाण्डपाता फाल्गुनी' इसी प्रकार 'इनेनपानं।ऽस्था इयनंपाता मृगया' निल्पाने।ऽस्यां स्वधाकियायां तैलंपाता' इति राज्दसे 'मुगलपानोऽध्या भौगलपाता भूमिः' ये इत्यादि सिद्ध होते हैं. दिक्शब्दसे किसी देशमें फाल्गुन महीनेके पूर्शिमाको दण्डसे वा लादीसे क्रीण होती हैं इर्गालेथ 'दण्डपाता' श्रादि उदा-हरण मी होते हैं ॥ ६॥

स्री स्यारकाचिन्मृणाल्यादिर्विवचाप-चये यदि ।

यदि 'श्रपचये' श्रर्थात् श्रत्पत्वके कहनेकी इच्छा हो तो मृगाली श्रादि शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे— श्रत्प मृगाले मृगाली श्रादिशब्दसे जैसे—'हस्वो वंशो वंशी' गौरादि मानकर स्त्रीप् प्रत्यय होता है, इसी मांति कुम्मी—प्रगाली—छत्री पटी—मठी श्रादि / ये मी हैं, 'हस्वार्थे कन् प्रत्ययः क्रियां' जैसे— पेटिका, 'काचित्' यह क्यों कहा ? यहां दोष पड़ता है जैसे—'ग्रत्यो क्यों क्युकः' इत्यादि स्त्रीलिंग नहीं है।

# लंका शेकालिका टीका धातकी पेजि-काऽऽदकी ॥ ७॥

श्रा ख्यात्र्इन्तं इत्यादिसे कहे लिगवाती में से किसी शब्दके सुबसे लिंगज्ञानके हेनु, भिन्न कांतादि कमसे कहते है- १ लका-राक्षसपुरी २ शेफालिका-(फूलका भेद वा वृक्षभेद-निर्मुडी-निरसा यह प्रसिद्ध है, ३ टी का-किन पदकी व्याख्या, ४ धातकी-रुत्तभेद-(श्रांवरा) यह प्रसिद्ध है, ५ पंजिका-(निःशेष पदकी व्याख्या), ६ श्रांवकी-नुरई प्रसिद्ध है । ७ ॥

# सिधका सारिका हिन्का प्राचिकोल्का पिपीलिका । तिन्दुकी कियाका भंगिः सुरंगासूचिपाडयः ॥ ८॥

१ सिश्रका-श्रुत्तमेद, २ सारिका पचीमेद वा मयना, ३ हिक्का-स्वरमेद वा हिचकी, ४ प्राचिका पाचिका भी वनकी मक्ली वा 'पश्चिमेद' इति ध्वामी, ५ उन्का-तेकका समूइ,६ पिगीलिका कीडे-का मेद (चींडी-वाचींटा भी) 'शनैर्यातीति पिगीलिका' यह स्वामीके मतसे पुँक्लिंग भी है, ७ ति-दुकी ब्रुव्नेद (तेन्दुम्य यह प्रसिद्ध है), ८ कणिका—गरमाणु, ९ भंगि-क्वटिलताका मेद वा टेड्राई, १० सुरङ्गाजिल वा 'सुरग' यह प्रसिद्ध, है, १९ सूचिः सूई वा व्यवनी, १२ माडि:-पत्ते की सिरा॥ ८॥

# पिच्छाचितण्डाकाकिण्यश्चिषाः शाणी दुर्गा द्रत्। सातिः कन्या तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९॥

१ 'पिच्छा' शेमर यह प्रसिद्ध है, २ 'वितण्डा' वादमेद, २ 'काकिण्यः वा काकिणी' पर्याका चौथा भाग वा कोडी, ४ 'चूर्णिः वा चूर्णिचूर्णिका, ५ 'शाणी' शया-पटविशेष है, ६ 'दूणी' कर्णजलीका वा कछुही, ७ 'दरत' म्लेच्छुजातिः ॥ १ ॥'साति' दान श्रीर श्रवसानको कहते हैं, २ 'कंथा' प्राव-

रखान्तर वा दूसरा विछीना ३ 'आसन्दी' आसन-का मेद वा वेतका आसन वा कुर्जी, ४ 'नामी वा नाभिः' शरीरका अगविशेष वा टोडी, ५ 'राज-सभा' राह्वां सभा राजोकी सभा व कचहरी यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

# झ्ळुरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला। लाचा छिचा च गण्डूबा गुध्रसी चमसी मसी॥ १०॥

१ 'मल्लरी' वाजाका मेद वा भालर यह प्रसिद्ध है, 'चचरी' करशब्द वा हाथका शब्द वा हर्ष- कीडा, कईएक बाजे पढ़ते है, 'कर्कटी' छोटा वड़ा, ३ पारी वा वारी, हाथीके पांवकी रस्सी ४ 'होरा' लप्तका आधा वा लप्त, ५ 'लद्वा' प्रामच-टक, चिडावा विडी वा गरैया, है 'सिष्मला' मत्स्यविकार, ७ 'लाक्षा' जतु वा लाख, खाह प्रसिद्ध है. ८ 'लिक्षा यूकाड'—अर्थात् लीख प्रसिद्ध वा परिमायाभेद, ९ 'गण्ड्रषा' जल आदिसे मुखपूर्ण कुता प्रसिद्ध है १० 'ग्रध्नसी' वातरोगभेद यह कर्क्श सिन्धमें होता है, ११ 'चमसी' यज्ञपात्रभेद, १२ 'मसी' और भी पुं—'मसि' (कज्ञल)॥ ५०॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ॥

# पुंस्त्वे सभेदातुचराः द्वंसपयीयाः सुराः सुराः। स्वर्गयागाद्विमेषाविषद्वकातातिः शरारयः॥ ११॥

श्रव पुंलिगसंप्रह कहते हैं, ' पुंत्त्वे' इसका ( क्लोकं॰ २१ के ) 'पत्त्य्प्रह' शब्द पर्यन्त श्रधि-कार है, मेदाः तुषितसाच्य श्रादि' 'श्रत्वराः' धुनद श्रादि इनके सहित धुरं, श्रे श्रु श्रो देत्यके यह पर्यायके पुँक्लिंग हैं, सुरवर्याय केंसे-'श्रमरा निजेश देवा मरुतः' इत्यादयः, इनके मेद जैसे-तुषिता—सच्याः' इंद्रो मरुत्वान्मघवा'—सूदः सूर्यः; श्रप्यंमा हाहा हुद्दः तुम्बुरः इत्यादि, श्रत्वराः केंसे-विष्णुके श्रनुचर जयविजयप्रश्वित, रहके श्रनुचर

चर नदिकेश्वर श्रादि, इसो प्रकार-श्रमुरपर्याय दैन्य दानव इत्यादि इनके भेद बलि नमुचि आदि, अमु-रके अनुचर कूरमांच मुण्ड आदि, इस मांति सब स्थानमें जानना, इनके भी 'दैवतानि पंसि वा देवता क्षियाम्' श्रादि बाघकको स्मरण करावेगे । 'श्रबा-चिताः' इस वक्ष्यमागासे स्वर्ग श्रादि १९ श्रपने भेद और पर्यायके सहित पुहिंग है, १ स्दर्भपर्याय मेसे-स्दर्ग-नाक, दिवित इत्यादिक 'यो दिवी है, स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह बड़ा बलवान् वाधक है इनके विना पृष्टिग है, २ यागी यज्ञः वा मखः कतः इनके भेद-अधिम-वाजपंत्र आदि इनको बाधकत्व कहेगे, ३ श्रद्धिः गिरिः वा पर्वतः इनके भेद हैसे-मेर सहादि आदि उनके मध्यमे अपवाद हैं सो शैलवर्र में वह चुके हैं, ४ मेघः घन वा बादल चे इत्लादि पूर्वाय हैं, मेद भावतं आदि अमान तु अभ्र मेघ, यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अविधः समद्रका पर्यायमेद चीरोद आदि, ६७क्षःशार्था अति पर्यायक्रीर वट पीपल कादि मेद हैं, यहां भी कहीं ह्म सेद आदिसे 'पाटला'शिशपाः' अधिमें अपवाद कहा है, ७ 'काल: िष्ट: समय इस भकार पर्याय-है श्रीर दास आदि भेद हैं। श्रसि:खन्न-नन्दक आदि मेद, ( इत्यादी वाधः ) ९ 'शरः व गामेद नाराच श्रादि इष्टार्धर्द्वेयौरिति विशेषो दर्शितः' १० 'ऋरिः' शत्र भेद आततायी आदि ॥ ११ ॥

, करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्डवेशनकस्तनाः। अद्वाद्वान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसं-ख्यकाः॥ १२॥

'कर' राजप्रह्याके योग्य भाग 'रिश्म' और 'पाणि' 'दीधिति' ५ श्रादिको तो पुस्त्व बाधित है, 'गण्डः' कपोल वा गाल, श्रोष्ठः' श्रोष्ठ वा दंतच्छद दशनवसन श्रादि तो रूपभेदसे बाधित हैं, 'दोः' प्रवेष्ट 'शुजवाद्वोस्तु द्वयोरिति विशेषः' 'दंतः' दण्डः वेद जंभ 'कंटः' एकः 'समीमगद्भेवेषु रूण्डं जिड्ड विदुर्नुधाः' इति शाश्वतः 'कंशः' कचः वा वार, (बाल,) 'नस्तः' करहः नस्तोऽस्त्री उत्यादिना बाधितं, 'स्तनः'कुनः ये सब यथासम्भव समेद्द्र्यौर पर्ध्याय पुंक्षिग है, 'श्रद्धःश्रद्धश्र' ये है अन्तमें जिनके वे पुँक्षिग है जैसे-श्रद्धः पूर्व प्रश्वास्त्रश्वः पर पराहः, द्वे श्रद्धनी समाहते द्वयहः, २६वेडमेदाः विष-विशेष पुस्तव हे जैसे सौरान्द्रिकः यहां गरल विष पुंसि श्रीर वलीबमें काकोल है इत्यादिसे बाधित है, ३ रात्रान्ताः यह समासान्तके एकदेशका श्रद्धकरण है, इसी प्रकार श्रागे भी राष्त्र शब्द है अन्तमें जिनके वं जो प्राक्त श्र्यांग्यावाचक शब्दहों तो पुंसि है, जैसे-श्रद्धश्च राश्विश्वाहोरात्रः, रार्वरात्रः, पूर्दरात्रः वर्षरात्रः, श्रपरात्रः प्राक्त श्रंसम्यकाः यह क्यों कहा पंचरात्र गण्यात्रं दनमें दोप होगा, पुण्यरात्रको श्चर्यव्यद्धि पाठरो क्लीबत्व भी है ॥ १२ ॥

श्रीवेष्टाग्राश्च नियसा श्वसन्नन्ता अबा-धिताः। करोरुजतुबस्तृनि हित्वा तुरुवि-रामकाः॥ १३ ॥

१ 'श्रीवेष्ट' आदि ये निर्यास हैं अर्थात् इव वा गोन्द वा सारवाचक हैं वे पुँक्षिंग है, श्रीवेष्ट 'सरल' वा धूपकाछ, श्रीपिछ भी कहीं पाठ हैं, आवश्य्य्दरों श्रीवास एकधूप आदि, च शब्दसे गुगुलश्रादि, र'असन्त' 'असंत' पुँक्षिग हैं, असन्त जैसे-आगिरा वंधा-चंद्रमा श्रमंत जैसे-'इग्गुवत्मी मघवा' श्रादि, 'अवाधिता' क्यों कहा ? अपसरसः, जलीकसः, सुमनसः, इद वयः, इदं लोम, 'तुश्च स्थ तुरु' ये दोनो विराम अर्थात् अंतमें हैं जिनकेवे तुरु-विरामकाःकहलाते हैं, करोह, जतु, मस्तु इनको होटकर 'तु' शब्दान्त और 'रु' शब्दान्त पुँक्षिंग हैं, जैसे-हंतुः सेतुः वातुः मन्तुः तन्तुः इत्यादि, कुरुः मेरुः किंशारः इत्यादि, करोह आदि स्थलत्या है,—दार, सम्श्रु प्रभृतिका दिनमें करोह अस्थिविशेष वा स्थिविशेष, अत्र लाखा वा हाही ॥ १३॥

कष्णभमरोपान्ता यद्यद्वन्ता स्रमी अथ। पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्वरणाद्वयाः ॥ १४॥

क-प-ए। आदि ३ वर्ण उपान्ते इन्ह्यके नमीप में है जिनके पे नैसे यदि ये क आदि वर्णषटक उपान्त अदन्त हो नो पुँक्षिगमं होते है, जैसे-अंक., लोकः, स्फटिकः, शुल्कः, वल्कः श्रादि तो पहिले ही बाधित है श्रीर प्लोषमाष, प्लक्ष श्राटि पोपा-न्त है, वर्षी श्रादि शब्द तो पहिले ही बाधित है, पाषाया, ग्रेसा, किरल श्रादि सोपान्त शब्द विषास श्रादिसे बाबित हे, कौस्तुम, दर्म, शलम. आदि भोपान्त है, कुनुम्म श्रादिसे :वाबित हैं । होम, श्राम, व्यायान, गुल्म श्रादि मोपान्त, 'पद्मादेवी पुंसि' इत्यादिसे वाधित है. कर्कर, मीकर, सीर प्रमृति रोपानत है अजिर आदिक वाधित है, रादि-वर्णषदक उपान्त शब्द श्रवाधित हैं, ती पुँक्लिंग है यहां 'यद्यदन्ता' इम पूर्वोक्तका सम्बन्ध नहीं है, श्रथादित्वसे पकारोपान्त जैसे-यूप-बाध्य-कलाप श्रादि वावित हैं, थकारोपान्त-वेपथु, रोमन्थ श्रादि, नोपानत-इन, धन, भानु श्रादि, वनादि तो बाधित हैं, योपान्त-श्राय, व्यय, जायु, तन्तुवाय श्रादि, मृगया श्रादि तौ बाधित है, सोपान्त-रस, हास, श्रादि, विस श्रादि बाबित हैं, टोपान्त-घट, पट, त्रादि, किरीट श्रादिको बाधिन्व कहा है, गोत्र वशमें श्राख्या सज्ञा है जिनकी वे गोत्राख्य ऋपिसज्ञक है, गोत्रके आदि पुरुष ये ये प्रवरा-ध्यायमे पढे है और य अन्य अपत्यप्रत्ययके विना गोत्र वाचित्वसे लोकमें प्रसिद्ध है वे पुँक्षिग है जैसे-भरद्वाजः गोत्रमस्भाकम्' इस प्रकार करयप नत्स प्रमृति चरगाके श्रीर वेदशाखाकी नामवाली मंज्ञा पुँछिग है जैसे-कठ बहबूच उत्यादि॥ १४॥

नाम्न्यकर्तरि भाषे च घडाजब्नङ्गा-चाशुचः। त्युः कर्तरीमनिजुभावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः॥१५ ॥

नाम संज्ञामें और अर्वतरि च कारके भावमात्रमें भी विहिन घझ श्रादि सान प्रत्ययान्त पुँक्षिग हैं, भावे च इस चकारसे श्रमें स्थामें भी घन् गृहीत है घनान जैसे-'प्रसीदान्त मनांस्यस्मिन् प्रासादः, प्रास्यत इति भासः विदेति श्रनेन वेदः, प्रपतितः श्ररमादिति प्रपातः. भावमं जैसे-पाकः त्यागः श्रम् जैसे-जयः, चयः नयः, । श्रम् जैसे-करः ररः. लवः, एतवः, । नक् जैसे-यज्ञः, प्रश्नः, याच्या । यहा पुस्तब बाधित है, नक् उपलक्षण है 'म्बपो नन्' स्वप्नः । ग्पत्रत्यय जैसे-न्यादः, घप्रन्यय जैसे-उरच्छदः, अधुच् जैसे-'वेपधुः' ल्युः प्रन्यय कर्तामें नद्यादिन्वसे पुँक्षिंगमें होता है, जैसे-नन्दनः रमगाः, मधुमूदनः, भावमे पृथु श्रादिसे जा इमनिच् हैं सो पुँक्षिंग है जैसे-पृथोर्भावः प्रथिमा, प्रदिमा, भाव ऐमा क्यों कहा ? 'वृश्री-तीति वरिमा पृथ्वी' यहांका भावे यह शब्द दह-लीर्दीपकन्यायसे पूर्व श्रीर परमें सम्बद्ध होता है, भावमे क प्रत्यय जैसे-स्राख्त्थः, प्रस्थः, प्रादितः श्रीर श्रन्यतःसे पर जो घुसंज्ञक धातु है उससे बिहित जो किप्रत्यथ है सो पुँक्लिंग है 'दाप देपी विना' दारूप और धारूप भी धातु घुसंज्ञक हैं, प्रादितः जैसे-प्रधिः, निधिः, श्रादिः,श्रन्यतः जैसे-'जलिंधः' इषुधिस्तु द्वयोरिति बाधितत्व है 🚜५५.

द्वन्द्वऽश्ववडवाबश्ववडवा न समाहते। कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽषःपूर्वकोऽपि च् ॥ १६॥

द्वन्द्वे-समाहारसंज्ञकसे अन्यत्र ममास उन्द्व-मंज्ञकमें 'अध्ववडवी' पुमि है, आप उदाहरए' देते है. अधारच वडवाइच अध्ववडवाः, इसी रीतिसे अधिवडवानः, अध-वडवेः इन्यादि प्रयोगसे, ममः-हारे तु 'अध्ववडवम्' यह क्लीब है, सूर्य, चन्द्रके पर्याचपूर्वक कातशब्द पुंचि है, जैसे-'सूर्यकान्तः, अक्रकान्तः, चन्द्रकान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः श्रयस् वा श्रयोवाचक श्रर्थात् लोहवाचक पूर्वक भी कान्त शब्द पुंसि है, जैसे-'श्रयस्कान्तः लोह-कान्तः'॥ १६॥

वटकश्चातुवाकश्च रह्नकश्च कुढंगकः। ंखो न्यूंखः समुद्गश्च विटपष्टभटाः खटाः ॥ १७॥

श्रव पुॅलिंग विशेष पर्यन्त श्रतुक्त श्रीर श्रका-रान्तादि कमसे कहा है। १ वटकः—पिष्टकमेद वा (बरा), २ श्रतुवंकः—वेदका श्रवयव वा माग,३ रह्नकः—कम्बल वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुडश्नकः कुटंगकः—वृत्त्वताका समृह, ५ पुख—वासाका श्रवयव, ६ न्यूंखः न्युंखः सागवेदमें धरा श्रीकार, ७ समुद्रः—संपुट वा डिब्बा, ८ विटः—धूर्त्त वा ठग,९ पटः—काष्ठ श्रादिका बना श्रासनविशेष वा पाटा पीढ़ा, १० घटः तुला वा तराजू,१९ खटः श्रन्थकृप श्रादि वा कफ वा तृण ॥१०॥

कोहारेघहहृहाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत्। ग्रहुः करण्डो छगुडो वरण्डश्च किग्गो घुणः ॥ १८॥

१ कोटः—- हुर्ग-पुर-किला-गढ वा कोट्टारः,
१ अर्थचंटः -- क्र्पमेद-महाकूप वा उसके कपर वंधा
जलके निकालनेका काष्ट वा अरहट-पुरवट, तवघट, घाटाइ यहां प्रसिद्ध है, ३ हटः—क्रयविक्रयका
प्रधान वा हटिया बाजार यह प्रसिद्ध है, ४ पिंडः—
मिटी आदिका समूह, ५ गोंडः—नामि वा नीवृजातिमेद, ६ पिचण्डः—वा पिचिण्डः उदर वा पंट,
पिचण्डवत् यहांके वत् शब्दसे गटादि शब्द भी
पुँछिग हैं यह बोधित होता है, ७ गद्धः—गलगंड,
८ करण्डः—वास आदिका वना भाण्डका मेद वा
पिटारी वा पुष्पमाजन, ९ लगुडः—वांस आदिका
दण्ड वा लाठी, १० वरण्डः—मुखका रोग वा वदन
की व्यथा, ११ किगाः—मसिकी कांठिका मेद-व ह

भी जो भावड़ा, लाठी आदिके चलानेसे हाथ आदि में (घटा) स्पष्ट हैं त्रण और चिह्नको भी 'किए।' कहते हैं, १२ घुणः—काठका कीटा वा घुन यह प्रशिद्ध हैं॥ १८॥

हतिसीमन्तइरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बु-दाः। कासमर्दोऽबुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ॥१९॥

१ दितः—चामका दोना वा मसक (भिस्तीका)
२ सीमन्तः—केशवेश व चूटा णूंथा हुआ, ३
हरितः—पलाशनर्ण वा हरियर प्रसिद्ध हैं, ४ रोमन्थः—पशु जो जुगालिया नर्वण करते हैं (वा
वागुर), ५ उद्दीशः—गागवेद, ६ वृद्वुदः—जलका
विकार, ७ काममर्दः—गृत्मभेद वा रोगमेद, ८
ग्रावुदः—दशकोटि, ९ कुन्दः—पुष्पविकाष वा
श्रोजार रखनेका पात्र वा शिल्पभांट, १० फेनः—
जलविकार, ११ म्त्यः—वटक श्रादि, ये श्रोर यूव
यूपक वा "यूप" भी बरा पूथा श्राद्धि नाम हैं
॥ १९॥

आतपः चित्रे नाभिः कुगापक्षुरकेदराः पृरक्षुरप्रज्ञाश्च गोलहिंगुलपुट्टलाः ॥२०॥

१ आतपः— सुर्यका प्रकाश-वा उजियाता,
२ नाभिः— राजाविशेष-वा क्षत्रिय स्तित्रयवाचि
नाभिशब्द पुक्षिम है, ३ कृष्णपः— उनी प्रकार
कुष्णपः शवभेदः त्यक्तप्राणः, ४ क्षुरः— कशवपनह-व्य—नाईका शस्त्र— (खुरा) वा पशुकी कृषी, ५ केदरः-व्यवहारका द्रव्य वा पदार्थ, ६ पूरः— जलप्रवाह, ७ क्षुरप्रः— वाणाका भेद 'कुरप्रः' भी, ८ चुकः शाकका भेद, ९ गोत्तः— वर्तुलिपिण् वा गोल, १० हिगुलः— रामद्रव्यका भेद वा रक्तवर्ण, १९ पुद्रलः ना पुद्रल श्रात्मा॥ २०॥

वेतालभ्रह्महाश्च पुरां डाशोऽपि परिशः कुल्मापो रभस्थेव सकटादः पतर्गदः ॥ २१॥ १ वेतालः—भूताविष्ठितशव—मह्नविशेष २ शिव का श्रवुचर, ३ द्वारपाल ४, २ भहः—भाल, ३ महः—बाहुयुद्धकुशल वा माल प्रसिद्ध, ४ पुगेडाशः वा पुरोडाः (स्)—हिवष्मेद, ५ पि शः—श्रव भेद, ६ कुत्माषः वा कुत्मासः—श्रद्धिस्त्र यव वा कुत्सित माप, ७ रभसः—१ हर्ष, २ वेग, ३ उत्सु-कता, ४ वा पूर्वापर—विचार, ८ सकटाहः—कटाह के सिह्त कटाह शब्द भी पुँक्षिग है, कराही यह प्रसिद्ध है, ९ पतद्प्रहः—निष्ठीवनपात्र वा पीकः दान ॥ २९॥

# ॥ इति पुंह्रिगसग्रहः ॥

द्विहीनेऽन्यञ्च खारण्यपर्णश्वश्वहिमोद-कम्। शीतोष्यामांसरुधिरमुखाक्षिद्रिष्वेर्यं बलम्॥ २२॥

द्विहीन स्त्री श्रीर पुरुपसे हीन नपुसकका श्रधि-कार है वाह्निकशब्द पर्यन्त, श्लोकद्वयसे प्रधान करके निर्दिष्ट खादिशब्द २६ श्राने पर्यायोके सहित नपु-्सक हैं, यहां श्रन्यत् इस वावितसे जो भिन्न है वे क्लीब है यह सावधानका ऋर्थ कहा. चकारसे वस्र त्राभूषणका संप्रह है. १ लम्-१ इदिय २ व्योम वा देह, ३ शून्य, ४ श्रम्र—विन्दु, ५ पुर, ६ स्वर्ग, ७ सुख भी जैसे-छिद्र-नभः वियत् इत्यादि. २ श्ररण्य-विपिन-कानन-इसप्र० इत्यादि, ३ पर्शे पत्र वा पत्ता दलं इस० इत्यादि, ४ म्बभ्र तु पातालं ५ हिम-प्रालेय, ठण्ड, ६ उदक, जलं नीरं पानी इस० इत्यादि; ७ शीत शीतल, इस० इत्यादि, ८ उष्ण-तिगम इस० इत्यादि, शीतोष्ण गुणे क्लीवं तद्वति त्रिषु, ९ मास-पिशित तरस ये इत्यादि १० रुधिर-शोणित रक्त, ११ मुख वदन, वक्त्र, १२ त्र्यक्ति-नयन-नेत्र, १३ द्रविगा, धन, इस० इत्यादि,१४ बल-शक्ति सैन्य श्रादि, शक्तिमें जैसे-बर्ल ध्रुष्मेत्यादि सैन्य चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥

# फत्तहेमग्रुल्बलाहसुखदुःखग्रुभाग्रुभम्। जत्नपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेप-नम्॥ २३॥

१ फल फलमात्रं किपत्थं, इस० इत्यादि, हल भी, २ हेम-सुवर्ण, कनक, इस० इत्यादि, ३ शुल्बं-ताम्रम् इस० इत्यादि, ४ लोह कालायस, इस० इत्यादि, ५ सुख शर्म, शांतम्, इस० इत्यादि, ६ दुःख तु कुच्छ, कष्ट, ७ शुम-कल्याग्, कुशलं इस० इत्यादि, ८ शुम अकल्याग्, ९ जल पुष्पागि-कुमुद्द कमल-कहार-उत्पलानि आदि, १० लवग्य-सैन्धवं इस० इत्यादि, ११ व्यञ्चनिवशेषसे दिध तक आदिका प्रह्या हैं, १२ अनुलेपनं-कुंकुम आदि, यहां वाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा. आकाशो विहायाः, द्यौः, अप्रवी, आरण्यानी इस० इत्यादि, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचारना चाह्निये ॥ २३॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा त्तेषाः नियुतं च ततः। द्वचच्कमसिसुमन्नन्तं यदः नान्तम्कर्तरि ॥ २४॥

कोट्याः—कोटिशब्दके विना जो शतः श्रादि संख्या है वह क्लीवमें होती हैं लच्च शब्द वा विकल्पसे क्लीवमें हैं; पन्तमे स्नींचुंग हैं, तत्रशब्दसे लक्षका पर्याय नियुत यह श्र्य हैं, उदा-हरण जैसे-नियुत-शत-सहस्र-श्रयुतमित्यादि श्रसन्तं इसन्त उसन्त—श्रोर भन्नन्त जो द्वयच्क वे दिस्तर है वे क्लीवमें हैं, श्रसन्त जैसे-पयः, मनः, इसन्त जैसे-सिपः ज्योतिः; उसन्त जैसे-वपः, यजः, श्रन्नन्त जैसे-चर्म शर्म साम नाम इत्यादि, इसीसे क्लीब्द्व सिद्ध था श्रागे जो मर्मशब्दका उपादान हैं सो इसके श्रनित्यत्व झापनके श्रर्थ है, तिसमें, (गुणान्यकारशोकेष्ठ तमो राहो पुमानयम्; इत्यादि सिद्धम्) श्रकर्तरि श्रथंमे क्रतीसे श्रम्यत्र जो स्थात सम यह श्रन्तमे जिसके हैं वे क्सीव हैं,

िस गंभन, रास्मा, दाना, तरका, नरका, श्रक्तीर दात कहा १ अर २००० कुठारः, नरद्वतीति नरदनः॥ २४॥

बान्तं सलोपधं शिष्टं राधं गाउने स्वया-न्वितम्। पात्राचदन्तेरेकाथीं द्विगुर्छक्ष्या-नुसारतः ॥ २५ ॥

त्रान्त क्लीवमें है जैसे-पात्र-वहित्रं मित्र-वस्त्रं गात्र यत्रम ये उत्यादि, तकार श्रीर लकार उपधा अन्यसे पूर्ववर्ण है जिनके ने नजी मं है, मोपप जैक्षे-तुरं, विस, श्रन्धतागरां, लोपध देलें-कूल, मृतं इस० इत्यादि: शिष्टं यह जो प्रापृक्त थे भिन्न है वह और प्रायुक्त भी जो श्रमाधित है सो भी श्रांता-दिक क्लीबमें है, शिष्ट क्यों कहा है प्रतः-वृत्रः-हसः-कंसः-पनसः-शालः-कालः-गलः, सस्या-पूर्वक रात्रशब्द क्लीब हैं, ( सत्राहाहाः पुसि ) इस स्त्रसे पुंत्त्व प्राप्त या उसका यह श्रपदाद है, त्रिरात्रं, पंचरात्रः सख्याया यह वयो कहा १ शर्द्ध-रात्रः, मध्यरात्रः, पात्र श्रादि श्रदन्तशब्दोसे जे एकार्य द्विगु समास है वह क्लीव है, पंचरात्रं श्रादि पदसे न्वतुर्यगः; लक्ष्यानुसारतः-श्रर्थात् शिष्ट प्रयोगके श्रतुसार, इमसे पंचमूली त्रिलोकी इत्यादि श्रपवाद है, एकार्थ क्यों कहा १ पेचकपानः, पुराजशः, दिस यह तितार्थ है ॥ २५॥

द्वन्द्वेकत्वाब्ययीभावी पयःसंख्याव्यया त्परः । षष्ठचाश्ळायाबहूनां चेद्विच्छायं
 संदती सभा ॥ २६ ॥

१ द्वन्द्रसमासका एकत्व श्रीर श्रन्यवीभाव ममास क्लीवमें हे द्वन्द्रंक्यं जैसे-षाश्चिताद, शिरो-श्रीवं, मादिगक-पाश्चिकम्, श्रन्यवीभाव जैसे-श्रिष्ठि, यथाशक्ति, उपगंगं; संख्या श्रीर श्रन्यवसे वि देवे-विपशं, क्राप्तशं, सख्याव्ययादिति कि १ भर्मपश्चः योगपणः गट राभामांतका अनुकरता है, रामारामें पाठी विभारत्यन्तस परे जो छायाशब्द हैं सो क्लीय हैं, वह भी बहुतोंकी सम्बन्धिनी होय तो जैसे विनाम पक्षियां छाया विच्छायम्! दश्मां छाया श्वर अध्याम, बहुनां ऐसा क्यों कहा ! कृष्ण जाता के किला के लियां यह तो किला महानिपयमें सब शब्द क्लीब है यहां भी पछ्याः इसका अनुवर्तन करते है, जैसे—दासीनां समा दामीसभ, नृपसभं, रक्षःसभ, स्त्रीस-मिस्त्यदि; सहतों एसा क्यों कहा !दासीनां समा दासीसभा दासीसभा दारानुहं यह अर्थ है ॥ २६ ॥

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थाद्राज-कातः। दासीसभ नृपसंभ रक्षःसभिमा दिशः॥ २७॥

शालात् अर्थात् गृहात् अपिशन्दने समुदायात् मी जो सभा शब्द है वो आराजकात् राजशब्दसे वर्जित और राजा मनुष्य अर्थात् राजार्थक राज-पर्याय और अमन्त्र्यार्थक रक्षः आदि शब्दले और पष्ट्रचन्तसे परे होय तो क्लीबमें है, (शाका एह-मर्थोऽभिषेयो यस्याः सा शालार्था ) राजपर्यायसे जैसे-इनसभ, प्रभुसभ; श्रमनुष्यार्थसे जैसे-रक्तःमभ, पिशान्यसंभ, श्रातकात वयी कहा? राजमभा राजपर्यायके प्रहण्से यहां नहीं हुआ, बन्द्रग्भगमा, राजिन्छोप यह है, पप्रधाः यह म्बो कहा ? वृपतिविषयानमा वृपतिसभा वृशां प्रतिर्यस्यां सा चासी सभा चेनि वा तृपतिसभा, श्रमतुष्यार्थात यह क्यां कहा ! दासीसभा । दा-र्गानां शाला उत्यर्थः । इमा दिशः, यह दासीसभं .म श्रादि कमसे उदाहरण है, तिनमे दासीसमं यह समुदाय ही अर्थमें हैं. शेप दो शाला और महित अर्थमें हैं॥ २७॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादिरवप्रकाशनं ।

# कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनरनाम्सु ॥ २८॥

9 उपज्ञा श्रीर उपक्रमान्तके श्रादित्वके प्रका-शनमें उपज्ञान्त श्रीर उपक्रमान्त यह समास क्लीव में होता है, ( उपज्ञायते इति उपज्ञा, ॥ को ब्रद्धा तस्य उपज्ञा कोपज्ञं प्रजा ॥ कस्योपक्रमः कोपक्रमं लोकः), प्रजापतिने प्रथम बनाया था इससे उसी-ने श्रादिमें प्रजाको जाना था यह श्रर्थ है, उन्हीं नरोके मध्यमे षष्ठचन्तसे पर कथा क्लीवमें है, जैसे-सौशमीनां कथा सौशमिकन्थम्, उशीनरदेशवाचीसे श्रन्यत्र दाक्षिकन्थानामसु यह क्यों कहा <sup>2</sup> वी-रग्रकथा ॥ २८॥

भावे नणकचिद्धचोऽन्ये समृहं भावक-र्मग्रोः। स्रदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां स्वद्यः परः॥ २९॥

चकार इत्सज्जक है जिसका वह चित् है, 'नश्च शास्त्र करूव विच नग्रकवितः तेभ्योऽन्ये' अर्थात् इनसे भिन्न जो तन्य, क आदि अदन्तधातुप्रत्यय भावमें विहित हैं। वे क्लीबमें हैं तिनमें घातप्रत्यय जैसे-भवितव्य, भाव्यं, सहितं, भुक्त, नणकचित् क्यों कहा ? प्रश्न-, न्यादः, आख्राख्ः, वेपशुः, नगुक यह घडाका उपलक्ष्या है पाकः, भावे क्यों कहा ? कर्ममे दोष होगा, जैसे-'कर्तव्यो धर्मसंब्रहः, समृह अर्थमें' जैसे-भिजा्गा समृहो मैनं, गार्भिण, श्रीपगर्व, कांक, भावमें श्रदन्त जैस-गोर्भावः गो-त्व, शुचेर्भावः शौच, कर्मणि जैसे-शुक्कस्य कर्म शोक्त्यम् , राज्ञः कर्म राज्य चौर्घ्यं, तल् प्रत्ययको तो स्त्रीत्व कहा है, पुण्य श्रीर सुदिनशब्दसे पर वि-हितसमासान्त श्रहन् शब्द क्लीबमें है, श्रहाहान्त इस पुस्तवका ऋपवाद है, पुण्याहं, सुदिनाह; सुदिन शब्द प्रशस्तार्थक है ॥ २९ ॥

क्रियान्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतो-

टके। चोचं पिच्छं गृइस्थूण तिर्ीटं मर्म योजनम्॥३०॥

किया श्रंप अन्ययोका भेदक वा विशेषणा क्लीव श्रोर एकवचनमें होते हैं, कियाविशेषणा जैसे—मन्द पच, सुखं तिष्ठन्ति योगिनः, सलीलं गृत्यन्ति वालाः, श्रव्यय विशेषणा जैसे—रम्य खः सुखद प्रातः, श्रव कितने कटम्बरमे कहे हैं, उक्थ सामभेदः, तोटक बृत्तमेदः. चंच दाये फलका शेषं वा तालफल, केला श्रादिके फलको भी कोई कहते हैं, मोच श्रोर खेट भी; २ पिच्छं गुच्छा वा मोरकी पोछ वा चूडा—वा लांगूला वा शाल्मलीइक्ष—वा परम्परा श्रादि, उक्तउक्थ श्रोर मुक्त, ३ गृहस्थूण, घरका खम्मा वा थून्ही, ४ तिरीट, बैठन वा शिरोभ्यूषण, ५ मर्म, सन्धिस्थान वा हिंद्रयोके जोडका स्थान, ६ योजन कोशचतुष्टणं वा चार,कोश॥३०॥

राजसूर्यं वाजपेयं गद्यपये कृतौ कवेः।
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिअरम्
त ३१॥

१ राजसूयं श्रीर २ वाजपेय ये २ यज्ञके भेद हैं, (राज्ञा लतात्मकः सोमः सूयतेऽत्र राजस्यं, वाज पेष्टी छरा पीयते वा पेयमत्र वाजपेयमें ), ३ गयं, ४ पद्य ये कवेः इती श्रर्थात् किविकी निरुद्धन्द रचनाको गद्य, श्रीर पादसमूहकी रचनाको पद्य; कवेः इती ऐसा क्यों कहा-गद्या वाक्, पद्या, पद्यदिः, ५ माणिक्य, रत्नका सेद. 'मणिके मणि-पूराख्ये नगरे भव माण्यक्पं' ६ माष्य पदार्थविद्यति वा विवरण, (सूत्रार्थोवण्यंते यत्र वाक्यः सूत्रा-नुसारिमः । म्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्य माष्य-विदो विदुरिति ) ७ मिन्दूरं रक्त वा लालकुर्ण, ८ चीरं वस्त्रमेद, ९ चीवर मुनिश्चाः वा वस्त्र, १० पंजरं वा पिंजरम्-पक्ष्यादि बन्यनागार वा पिजरा ॥ ३१ ॥ लोकायतं इरितालं विदलस्थाल**बा**-क्किकम् गं

9 लोकायतं—चार्वाकशास्त्र, २ हरितालं-धातु-भेद, ३ विदलं-वांतका बना पात्रमंद, ४ स्थाल-पात्रमेद वा थार वा हांडी अन्नपात्र पाकपात्र आदि, ५ बाह्यिकं-छुंकुम वा देशभेद उस देशका उत्पन्न कुंकुम, बाह्यम् भी, 'बह्यदेशे भवं बाह्यं'

इति नपुंसकलिंगसंग्रहः ॥

पुत्रपुसकयोः शेषोऽधर्चपिण्याककण्ट-काः॥ ३२ ॥

श्रव चिक्तस शब्दपर्यन्त पुंगि श्रीर क्लीबमें हैं उससे भिन्नशेप हैं जैसे शंगा श्रीर पद्म ये दो निधिन्वाचक पुछिग हैं, कम्बु निलिनका वाची तो पुप्रप्-सकिलक्ष है तसे श्रवत्य शब्द भी पर्यायवाधित हैं उसमें पर्यायसे भिन्न हैं तो पुनपुसक लिक्ष होते हैं, १ श्रीद्वं श्रविंग-श्राधी ऋचा वेदभाग, २ पिण्यां-के-तिलकी धाल, ३ केटकः रोमहर्ष वा रोमांच ॥ ३२॥

मौद्कस्तण्डकष्टंकः शाटकः कर्पटोऽ-बुद्धः । पातकायोगचरकतमालामलकाः नडः ॥ ३३॥

१ मोदकः—भक्ष्यभेद वा (लढ्डू ), रिवत
"ण्डकः—उपतागिवशंष व। रोग विशेष, ३ टंकः वा

तकः—अश्मदारगः वा पत्थर गढनेकी टांकी, ४

शाटकः—पटभदः वा साडी प्रसिद्ध है, ५ कर्वटः वा
कर्पटः, वाजे पढते हैं "सर्वटः" स्थानभेद वा वस्रभेद, ६ अर्बुदः—संख्याभेद वा दशकोटि, ७ पातकंब्रह्महत्यादि, ८ उद्योगः—उत्साह, ९ चरकः वा

बरकः—वैद्यशास्त्र भेद, "करकः" यह भी पाठ हैं

इसका स्यूतवन्न अर्थ है, १० तमालः—इक्षभेद

(तसान्) प्रसिद्ध है, ११ आमन्नकः वा आमा-

लकः चात्रीफल वा त्रांवला प्रसिद्ध है, १२ नडः भीतरी बिल वा तृशाभेद ॥ ३३॥

क्रष्टं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम्। संगमं शतमानार्मशम्बलाज्य-यताण्डवम्॥ ३४॥

१ कुछं रोगभेद, पुस्कर वा कमल, २ मुण्डं— शिरः, ३ शीधु—मध, ४ घुस्त भूजा मांस वा कटहल श्राटिके फलका सार माग-'कहीं पुस्तं वा शस्तं पाठ हैं कहीं जुस्तं वा तुस्तं भी पाठ हैं' ५ क्षेत्रीं, बीरका किया सिंहनाद, ६ क्षेमकुशल क्षेमोऽस्त्री लब्धरक्षायें' मोक्षको भी, ७ कुहिमं—, गचका भंद, ८ रागभं—गयोग, ९ शतमान—मान-भंद, १० श्रमें—श्रिचरोग, १५ शम्बलं वा सम्बलं—वर्णका भंद, १२ ब्रव्ययं—स्वरादिनिपात वा विकारर्राहत, १३ ताण्डवं वा ताण्डव्यं— नाचका भेद ॥ ३४ ॥

कषियं छन्दकापरितं पाराधारं युगंध-रम्। पूर्वं प्रश्रीषपात्रीचे यूषं चमसचि-ककसौ॥३५॥

कियं-तोबड़ा लगाम वा बागडोर, २ कन्दं-कमलिनीकी जड वा मूल, कहीं कर्म यह पाठ हैं, ३ कार्पासं-कपास वा कई वक्षका कारया-श्रादि, ४ पारावार-वारं नदी श्रादिके दोनो पारको कमसे पार और वार कहते हैं, ५ युगन्धर-क्वरं-रथके जूशाके काठको पुष्ट करनेवाला काष्ठ वा पर्वत भेद श्रादि, ६ यूप यद्यातभेद-श्रथवा यहपशु बांधनेका काष्ठभेद, ७ प्रमीवं-दुमशीर्षम् वा करोगा-सुण्य-शाला खिडकी श्रादि, ८ पात्रीवं-पात्रीव वा यह-पात्रका भेद, ९ यूपं वा मापं-मागा यह प्रसिद्ध हैं, ( सुद्रामलक्ष्यूपस्तु प्राही पित्तकके हित हैंदित उक्ते वैश्वके) १०—चमसविकसी ये २ दो पात्रभेद हैं ॥ ३५ ॥ अर्धचिद्रौ घृतादीनां पुस्तवायं वैद्भिकं ध्रुवम् । तन्नोक्तमिह छोकेऽपि तच्चेद्रस्य-स्तु शेषवत् ॥ ३६॥

अर्घर्चि इस पुत्रपुंसकाधिकारवर्ममे घृतादिकों को प।णिनि आदिकोंने पुस्त्व आदि कहा है, वे तो वेदमे प्रसिद्ध वैदिक है इस हेतु उन्हे यहां नहीं कहा और लोकमे है तो वे शेषवत् अर्थात् उक्तसे मिन्नशेष हैं उनके समान शिष्टप्रयोगके अनुसार प्राह्म है ॥ ३६॥

इति पुत्रपुसकसँग्रहः॥

ग्रथ स्त्रीपुंसशेषसंग्रहः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदो-रगाः। जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सद्य मञ्जकः ॥ ३७ ॥

अपत्यप्रत्यय अन्तमें है जिनके व शब्द श्री
और पृंक्षिगमें होते है जैसे—'उपगोः, अपत्यं पुमान्
औपगवः, उपमोः अपत्य श्ली औपगवी, वैदेहः,
वैदेही, गार्ग्यः, गार्गीं, 'द्विचतुःषद्रपदोरगाः' द्विगद्द,
चतुष्पद और षद्पदवाची और भुजगवाची जातिमेद श्लीपुंस है तिनमें द्विपदणातिमेद जैसे—मानुषः
पुमान्, मानुषी श्ली, गोपः पुमान् श्ली गोपी,
ब्राह्मणः ब्राह्मणी, श्रद्धः श्रद्धा, अजादि मानकर टापू
है, चतुष्पदमेद जैसे—'गृगः, मृगी, हयः, हयी,
षद्वपद भेद जैसे—भृगः मृगी, मिथीतिव। विदर्श,
उरगः, उरगी, नागः, नागी, 'श्लियोगैः सह पुमास्थाः' अर्थात् श्ली—वाचक शब्दके थोगसे पुवाचक
शब्द श्री और पुंक्षिगमें होते हैं: जैसे—इन्द्रः

इन्द्राणी, मातुर्श्राता मातुलः तस्य स्त्री मानुली, पुंसिमें वर्त्तमान मातुलः स्त्रीयोगसे स्त्रीत्वमे भी है 'श्रद्धस्य स्त्री श्रुद्धी' 'मलक' आदि भी स्त्री श्रीर पुंमिमें हे, मलकः स्त्रीमे तो मलिका पुष्पवलिका मेंद है॥ ३७॥

कर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको साटि में तुः। मृषा सुपाटी कर्कन्धूर्यिष्टः शाटी कटी कुटी ॥ ३८॥

मुनिः यह भी पाठ है, यती इंगुदी-बुद्ध, पिहा-लब्रक्तभेद, पलाश श्रादि, किर्मि-तरंग, वराटकः— कोडी, स्नीलिगमे वराटिका, ३ स्वातिः-नक्षत्र, ४ वर्णकः—चन्दन विलेपन, ५ माटिलिः जाटिलः वा 'पाटिलिः' भी पाठ है, पलाशबृक्षके सदश है, ६ मनुः-स्वायंभुत श्रादि वा मन्त्र, ७ मृषा-धातु गलानेका पात्र वा घरिश्रा, ८ स्पार्टी-परिमाया-भेद सपाट वा स्त्री स्पार्टी वा श्रस्तपाटी-किवरकी नदी, ९ कर्कन्धः—वेरबृद्ध, १० यष्टिः-लाठी, ११ शाटी-पटमेद वा साडी, १२ कटिः वा कटः स्त्री॰ कटिः वा कटी-देहका श्रवयव वा कमर, १२ पुं० कृटिः, स्नीकृटिः वा बुटी, गृहविशेष वा पन्त्रमेका घर, यहां मूषा नकारान्त है ॥ ३८ ॥

इति स्नीपुसशेषसंप्रहः॥

अथ स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

ह्यीनप्रंसकयोभीविक्रययोः ष्यञ्रकचिच्च बुज्जु ॥ ग्रौचित्यमौचिती मैत्री मेंग्यं बुज्ज प्रागुदाहतः ॥ ३९ ॥

भाविक्रययोः अर्थात् भाव और कर्म अर्थमें वर्तमान व्यक्त प्रत्यय और इक् कही की और नपु

सकमें वर्रते हैं, तिनके सध्य भ्यञ्च प्रत्यन हा उदा-हरण भेरी-श्रीचित्वं यह 'उचितस्य भाव श्रीचि-त्यं श्रीर 'श्रीचिती भी' मित्रस्य कर्म मैत्र्य मैत्री बा, इसी प्रकार बाह्नेक, बाह्नेकी, सामय, सामयी, श्राहेत्यं, त्राहेन्ती, उद्या पत्यय नो नेन्से इन्सिवि धन इस भांति पहिले कहा है, जैसे भिशुनस्य भावः कर्मवा वेथुनिका मैथुनिके भी॥ ३९॥

( २०४ )

सेनाछाया शाला-षष्ठचन्त्रपाकपदाः सुरानिशाः ॥ स्याद्धाः नृत्रेनं श्वनिशं गो-शालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

नत्प्रकासमाससे पश्चान्त पष्टी विभक्त्यन्त प्राकृपद हैं जिनके एसे पष्टयन्त प्राकृपद सेना श्रादि शब्द ली श्रीर नपुरक्तमं होने उदाहरण जैसे -- नृणां सेना नृसेन विति विकल्पसे नृसेना भी इतरे भिन्न पद भी इसी प्रकार उदाहरण करना चाहिये; खनिश, गोशालं, यवसुरं, यवसुराः, **कुरपर्य छाया कु**डयच्छाय कु**रु**यच्छाया **बा** 'मष्ठी बहुयचनान्तसे पूर्वपदकी खाया हो तो क्लीवमें ही होने ऐसा पहिले दिखाया है ॥ ४० ॥

जाबन्नन्तोत्तरपदो द्विग्रधार्पसनश्च लग त्रिखर्वं च त्रिखर्बी च त्रितक्षं च त्रित-क्ष्यपि ॥ ४१॥

श्राबन्त उत्तरपद श्रीर श्रन्नन्त उत्तरपदक द्विगुसमास पुर्किंगमें नहीं है, किन्तु स्त्री नपुन हमें होते हैं, अन्नन्त उत्तरपदका जी अन्त नकार है उसका लुक् अर्थान लोग भी होता है, (न्नाप्-न्ना-अन् ) श्रावन्तपदका उदाहर्या जैमे-त्रिग्वटवं यह तिसः खदन्यः समाहताः त्रिखद्वं त्रिखद्वी भी, अनन्तोत्तरपद जैसे-त्रयस्तद्वायाः समाहताश्चि<sup>तद्य</sup>ः, त्रितची च; तद्मन् शब्दका श्रन्त्य नकार लाम ધુ ૫ ઠઠ ૫

॥ इति सीनप्रकशयः ॥

अथ विलिंगशेषसंग्रहः। त्रिषु पानी पुटी बाटी पेटी कुवल -दाडिमौ।

पात्र आदि और दाडिम शब्दांत त्रिलिंग हैं, पात्रः पात्री पात्रम्-व्यादिः पुटी पुटः पुट, वा पटः-टी-टं, पुटः महीका बता खब्बा वा भीषध पकाने-का पात्रमेद, दूध श्रादिके पीनेका पात्र दोना थादि, वाटी, 'वाट:-टी-रं, राम्ता वा मार्ग, पेटः टी वा टा-ट, पंटा-डा पंटी-डी घर पंटारा वा पंटारीका नाम है, कुत्रलः—ली-लं उत्पत्त, कमल, मोती श्रादि, दाडिमः--मी-मं, दाडिम्ब इक्ष वा श्रानार ॥

इति त्रिलिगशेषसंप्रदः ॥

परं लिगे स्वप्रधाने हन्द्रे तत्युरुषेऽपि तत्॥ ४२ ॥

इन्द्रेकत्वका और अध्ययीभाव गमासका लिंग पहिले कह चुके है स्वप्रधान अर्थात उभयपदप्रधा-नडतरेतराच्य इन्द्र रामासमें श्रीर तरप्रवय समासमें भी तो 'पर' परपद्धानिंग है नहीं निंग होता है. तहा द्वन्द्रसमासमें जैसे कुक क्टमपूर्याविमे, संयूरी-कुरकटाविमी, नल्हपगगायमं जैसे-धान्येनार्थी धान्यार्थः, सर्पाद्गीतिः सर्पभीतिः, मर्पभयं, बाप्य-न्यः, कुलविप्रः, कुलीर्नायप्रः, पुत्र्यकुलं, विप्रकृतं, माहायाका कल इत्यादि॥ ४२॥

ग्रर्थोताः प्राचल प्राप्तापत्र पूर्वाः पर्वो-पगाः । तिष्टितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामत-दन्तकाः ॥ ४३ ॥

उक्त तत्पुरुषके लिगका श्रपनाद कहा है, श्रर्थ इस पदसे, श्रर्थाताः अर्थात् अर्थ शब्द है अन्तमें जिनके वे परोपगाः परगामी वाच्यलिग हैं, अर्थ जैसे-द्विजायांच दिजार्थः सूपः, द्विजार्था यवागूः, वाह्यगार्थः--र्था--र्थ द्विजार्थ पयः. ' श्रर्थेन नित्यसमासोविशेष्य लिंगता वेतिवक्तव्य-यह वार्तिक भी हैं ( प्राय्तंप्राप्तापत्रपूर्वाःपरोपगाः ) पार विशेष्यको जाते है यह ऋर्थ है, प्रादि पूर्व जैसे श्रतिकांतो मालामतिमालो हारः श्रतिकांता माला-मतिमालेयम् । अतिमालिमदं, अवपृष्टः कौकिलया श्चवको वितः । श्चलपूर्वपद जैसे-श्चल कुमार्चे इत्यलं-क्रमारित्य, श्रतक्रमारितियम्, श्रतकुमारि इदम्, श्चलब्धजीयिक:, का-भ,प्राप्तजीविको द्विजः प्राप्त-र्जाविका स्त्री, प्राप्तजीविकितिदं, इसी प्रकार, श्रापन जीविक, 'तिदितायों दिगः' श्रयात तिदित अर्थमे द्विगुसंज्ञक समासँ वाच्यलिंग है, पचकपालः-ल-ला. परोडाश सख्याशब्द सर्वनामसंज्ञक श्रीर तदन्त भी परिनग्भावि है, संख्या जैसे एकः पुमान, एक कुलं, द्वी प्रमांसी, द्वे स्त्रियी, कुले च, त्रयःपुरुषाः तिम्नःश्रिय:, त्रीशि कुलानि, एव चत्वारः चतस्रः चत्वारि षद्रसंज्ञकोंको कहते हैं.विशति आदिकोंका लिग द्वितीय कांडमें कह चुके है, श्रीर शत आदिकोका तो नपसकके समझमें कह चुके हैं। सर्वताम जैसे-सर्वो देशः सर्वो नदी सर्वे जल इसी प्रकार पर:पुमान् 'सख्यान्तक जैसे छनत्रयः। क्रनतिस्रः क्रनत्रीणि' सर्वनामान्त् जैसे-परमसर्थः परमसर्वा परमसर्वम् ॥ ४३ ॥

बहुवीहिरदिङनाम्नामुन्नेयं तसुदाह्तम् । गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परग्रमिनः ॥ ४४॥

श्रदिश्वनान्नाम् अर्थात् दिशावाचक शब्दसे भिन्न
नामवालोका बहुर्बाहि ससासमें श्रम्यिलग होता है
इसके उदाहरण श्रापसे श्राप विचारना चाहिये जैसे
'बृद्धा मार्या यस्य स बृद्धमार्थः' बहुधनः बहुधाना बहुवन श्रदिह्नाम्ना ऐसा क्यों कहा? दिशिणस्याः
प्रवस्यास्य दिशोरन्तराल दिक्षणपूर्वा गुण्योगसे
द्रव्ययोगसे श्रीर कियायोगसे जो उपाधि श्रर्थात्
विशेषण है उनके धर्ममें जो प्रशत्त शब्द हैं वे
धर्मिके लिगयोग होवे, गुण्योगसे जैसे-ह्रुवलः
पटः शुक्ला शुक्ल र व्यती पृथ्वी गन्धवान् श्रस्मा,
गन्धवत् कुसुमं, हृत्यके योगसे जैसे-दण्डी दंडिनी
स्त्री, दि झल कियायोगसे जैसे याचक, याचिका;
याचकम् श्राटि॥ ४४॥

कुतःकर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि । त्रणाचन्तास्तेन रक्ताचर्ये नानार्थ्य-दकाः ॥ ४५ ॥

श्रसहामें जहां कर्ता अर्थमे कृत्संहक भ्रत्यय है वे वाज्यलिंग हैं, जैसे-करोतीति कर्ता पुमान । कर्जी ह्री । कर्तृ कलत्रं कुर्वन्, ती-त्, श्रसहादयः क्यों कहा प्रजा हरि:, कर्तरि क्यों कहा कृतिः, कर्म श्रर्थमें श्रीर कर्ताश्रयेमें वर्तमान कृत्य प्रत्यय परगामी होते हैं, कर्ममें जैसे मन्यः ( तकः )-न्या न्य, गन्तन्यः (प्रामः )-व्या-न्यं, कर्तन्या मिकः कर्तामें जैसे बसतीति वास्तन्योऽयं वास्तन्या सा वास्तन्यं तत्, कर्तरि कर्मणि क्यों कहा; भाव अर्थमें तो एधितन्य त्वा तेन रक्तं इस हत्यादि अर्थमें अणू आदि ति हा गाः याना श्रीर नाना अर्थके लहने वाठे वा अनेकार्थके विशेषभूत विशिष्ट होनेसे याच्यांता हैं जैये कगुम्मेन रक्ता शाटी कीम्मी कीम्भः पटः कीम्भं नागः, हेमः—हंमी मं, ऐन्द्र—ही—न्द्र 'तेन रक्त रागत' इसस अण् होता है और रक्तार्थ इसके आदि शब्दमे मशुरायां आगतारंऽय माशुरोऽयं वा माशुरोय आदि असा- यन्ता इस इत्यादि पदसे प्रामे भाः प्राम्यः पुमान् प्रामे भा प्राम्या श्री आदि, यहा यत् प्रत्यय होता है। ४५॥

षटसज्ञकाम्बिए समा युष्मदश्मिकः-च्ययम्। परं विरोधं शेष तु ज्ञंय शिष्टप्र-योगतः॥ ४६॥

पदमज्ञक अयांत् पान्त श्रीर नान्त ना राज्या, तथा कितशब्द भी त्रिष्ठ समा वा तीना लिगोमें छुन्य होने हे श्रीर नित्य ही बहुत्य श्रथेमें वर्तमान हैं इस कारणसे बहुत्यचनान्त हैं जैसे-विशे, पिटमाः विद्याः कित प्रमासः कित खियः कित खुलानि, युव्मद् श्रीर अस्मद् शब्द तथा तिकन्तपद श्रीर अव्ययनान्तक शब्द वे सब त्रितिक श्रीर समान है, युव्मद् शब्द जैसे-त्यं जी त्वं ग्रीमान् त्व कलत्रं; अस्मद् शब्द जैसे-त्यं जी प्रमासी श्रावां क्रियो; श्रावां कलन्ने; तिक जैसे-स्थाली मवति, घटो भवति, पात्रं भवति हसी प्रकार

दाराः भवन्तीत्यादि अव्यय जैसे-उक्षैः दाराः उक्षैः स्नी उच्चः कलत्रम् उक्षैः प्रामादः इत्यादि, परविरोधे-विप्रतिपेशं वा विधियोके परस्पर-विरोधमें
परिलक्षानुशासन होता हं, जैंग-मानुप शब्दक-प-ण
भ-म-र-इस प्रागुक्तविधिमें पुंस्त्र ही प्राप्त था,
द्विचतुः पट्यद इस उपरोक्त स्नीपुसविधिका निश्चय
किया है जैंग-मानुषोऽय, मानुर्षय;शेष जो नहीं कहा
गया नाम आदि वह शिष्ट महाकविष्रयोगश्रीर माध्यकार आदिके प्रयोगसे जानना चाहिये, यद्वा अनुक्तशब्दोंके निंग शिष्टप्रयोगसे जानने योग्य हैं, लिंगविधायक शास्त्र न करना चाहिये क्योंकि लिज्ञान
लोक वा गगारंगे जान प रना है यह भाष्यकारका
मत है ॥ ४६ ॥

टित निगादिमप्रहर्काः ॥ ५ ॥

इत्यमर्रासहक्ततौ नामालगानुशासने । सामान्यकाण्डम्तृतीयस्तांग एव सम-थितः ॥ ४७ ॥

इस प्रकार अगर्रामालकतनामिलक्षानुशा-सनमें सामान्य तृतीयकांड सांगनिष्पण करा ॥ ४७॥

इति श्रीमुर।दात्रादवास्तव्य पंडितरामस्बरूप-इतभाषाटीकासहितः नार्मालज्ञानुशापने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः ।

इत्यमरकोशः सम्पूर्णः ।

The University Library.
ALLAHABAD.
Accession No. 140627 Himshift.
Call No. 441-1:
(Form No. 28 L 50,000-51)